Stripping The Gurus

Sex, Violence, Abuse and Enlightenment

GEOFFREY D. FALK

गुरुओं का पर्दाफाश

यौन संबंध, हिंसा, दुर्व्यवहार और ज्ञानोदय

जियोफ्री डी. फाल्क

गुरुओं का पर्दाफाश

यौन संबंध, हिंसा, दुर्व्यवहार और ज्ञानोदय*

---- जियोफ्री डी. फाल्क

Table of Contents

अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V
अध्याय VI
अध्याय VII
अध्याय आठ
अध्याय 9
अध्याय X
अध्याय XI
अध्याय XII

अध्याय XIII
अध्याय 14
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय XIX
अध्याय XX
अध्याय XXI
अध्याय XXII
अध्याय XXIII
अध्याय 24
अध्याय XXV
अध्याय XXVI
अध्याय XXVII
अध्याय XXVIII
अध्याय XXIX
सिंगर और लालिच (1996) की पुस्तक क्रेज़ी थेरेपीज़ का अध्याय 7 उपरोक्त विषयों के समान विषयों को कवर करता है:
अध्याय XXX

गुरुओं का पर्दाफाश

यौन संबंध, हिंसा, दुर्व्यवहार और ज्ञानोदय*

रामकृष्ण एक समलैंगिक बाल यौन शोषण करने वाला व्यक्ति था।
उनके प्रमुख शिष्य विवेकानंद ने भारत में वेश्यालयों का दौरा किया था।

कृष्णमूर्ति का अपने एक करीबी दोस्त की पत्नी के साथ बीस साल से अधिक समय तक प्रेम संबंध रहा। चोग्याम ट्रुंगपा ने शराब पीकर असमय ही अपनी जान गंवा दी। आदि दा की नौ "पत्नियों" में से एक पूर्व प्लेबॉय मैगज़ीन की मॉडल रह चुकी हैं। भगवान श्री रजनीश नशे के लिए लाफिंग गैस का सेवन करते थे। गुरु और "व्हाट इज एनलाइटनमेंट?" पत्रिका के प्रकाशक एंड्रयू कोहेन ने खुद माना है कि कभी-कभी उन्हें "भगवान जैसा" महसूस होता है।

ये उन "ज्ञानी संतों" के विशिष्ट उदाहरण हैं, जिनके प्रति अन्यथा समझदार लोग अपनी भक्ति और बिना किसी प्रश्न के आज्ञापालन करते हैं, अपनी स्वतंत्रता, इच्छाशक्ति और जीवन भर की बचत को त्याग देते हैं, इस आशा में कि वे स्वयं उसी "ज्ञानोदय" को प्राप्त कर लेंगे, जैसा कि वे "पूर्ण, ईश्वर-प्राप्त" गुरु को प्रदान करते हैं।

क्यों?

क्या यह भावनात्मक रूप से कमजोर होने और "दिमाग धोए जाने" के कारण है, जैसा कि "पंथ-विरोधी" दावा करते हैं? या "जानबूझकर मनोवैज्ञानिक रूप से बहकाए जाने" के कारण, जैसा कि बचाव करने वाले लोग सहानुभूतिहीनता से जवाब देते हैं, इस विश्वास के साथ कि वे खुद इतने "समझदार" हैं कि कभी उसी जाल में नहीं फंसेंगे? या क्या अनुयायी भोलेपन से खुले दिल और प्यासी आत्माओं के साथ शक्ति और आज्ञाकारिता की अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक गतिशीलता में प्रवेश कर गए हैं, जो मिलग्राम से लेकर जिम्बार्डो तक के क्लासिक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में खुद को प्रकट करती है, और जिसके प्रति हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के हर दिन संवेदनशील होता है?

जैसे कि कथित तौर पर गर्वित "रूड बॉय" कोहेन ने अपने एक समर्पित अनुयायी के मानसिक रूप से टूट जाने पर हंसते हुए कहा था: "यह आप में से किसी के साथ भी हो सकता है।"

ऐसा आपके साथ न हो। धोखे में न आएं। तैयार रहें। जानकारी रखें। पता लगाएं कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक समुदायों में भी पर्दे के पीछे क्या चल रहा है।

आप इस पुस्तक को पढ़कर शुरुआत कर सकते हैं।

* स्ट्रिपिंग द गुरुज़ में किसी विशेष व्यक्ति को शामिल करने का यह मतलब नहीं है कि वह व्यक्ति स्वयं को गुरु के रूप में प्रस्तुत करता है, न ही इसका यह मतलब है कि वह यौन शोषण, हिंसा, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार या किसी अन्य अवैध या

अनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहा है।

गुरुओं को नंगा करने की प्रशंसा

अपनी हास्य-बुद्धि, अंतर्दृष्टि और अद्भुत शोध के बल पर, जेफ्री फाल्क ने उस धारणा को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है जिसमें ज्ञानी गुरु भक्तों को निर्वाण की ओर ले जा सकते हैं। यह मनोरंजक और साथ ही अत्यंत गंभीर पुस्तक उन सभी को पढ़नी चाहिए जो गुरु भक्ति के मार्ग पर चल रहे हैं या चलने की सोच रहे हैं।

—जॉन होर्गन,

तर्कसंगत रहस्यवाद के लेखक

'स्ट्रिपिंग द गुरुज़' एक शानदार किताब है—मैंने अब तक जितनी भी किताबें पढ़ी हैं, उनमें से यह अपनी तरह की सर्वश्रेष्ठ किताबों में से एक है। शोध बेहद बारीकी से किया गया है, लेखन आकर्षक है, और इसका मूल विचार बेहद सटीक है। एक उत्कृष्ट पुस्तक।

—डॉ. डेविड सी. लेन,

कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी

आध्यात्मिक गुरु का आदर करने वाले किसी भी व्यक्ति को यह मार्मिक और विचलित कर देने वाली पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

—सुसान ब्लैकमोर,

द मीम मशीन के लेखक

जॉफ्री फाल्क द्वारा धार्मिक पैगंबरों और उपदेशकों का मनमोहक लेकिन परेशान करने वाला पर्दाफाश, जिनके अनुयायियों की एक विशाल संख्या होती है, सभी धर्मों के गुरुओं और धर्मगुरुओं पर लिखे गए साहित्य में एक स्वागत योग्य योगदान है।

—डॉ. नरसिंह पी. सिल

पश्चिमी ओरेगन विश्वविद्यालय

समकालीन आध्यात्मिकता से जुड़े किसी भी व्यक्ति के लिए इस पुस्तक को नज़रअंदाज़ करना असंभव है। यह आधुनिक आध्यात्मिक आंदोलनों के काले पक्ष को उजागर करती है, उन शर्मनाक—कभी-कभी क्रूर या आपराधिक—तस्वीरों को जिन्हें इन आंदोलनों के नेता छिपाना पसंद करते हैं। हास्य और विनम्रता के साथ, और धर्म

के सत्यों का त्याग किए बिना, फाल्क ने ज्ञान और पारलौकिकता का प्रचार करने वाले समूहों की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है। इसे अवश्य पढ़ें!
— लेन ओक्स,
भविष्यवाणिय करिश्मा के लेखक

गुरुओं का पर्दाफाश

यौन संबंध, हिंसा,
दुर्व्यवहार और ज्ञानोदय*

जियोफ्री डी. फाल्क

* इस पुस्तक में किसी विशेष व्यक्ति का उल्लेख करने का यह अर्थ नहीं है कि वह स्वयं को गुरु के रूप में प्रस्तुत करता है, न ही इसका यह अर्थ है कि वह यौन शोषण, हिंसा, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार या किसी अन्य अवैध या अनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहा है।

मिलियन मंकीज़ प्रेस
कॉपीराइट © 2009 जेफ्री डी. फाल्क द्वारा। पूर्ववर्ती संस्करण © 2005–2008 जेफ्री डी. फाल्क द्वारा।

मिलियन मंकीज़ प्रेस द्वारा प्रकाशित
डाक बॉक्स 68586
360ए ब्लूर सेंट डब्ल्यू.
टोरंटो, ओंटारियो M5S 3C9
वेबसाइट: www.strippingthegurus.com
ISBN 978-0-9736203-3-7 (पीडीएफ)

ISBN 978-0-9736203-1-3 (कपड़ा)
आईएसबीएन 978-0-9736203-2-0 (पेपरबैक)
यह ईबुक कॉपीराइट से सुरक्षित है, और लेखक ज्योफ्री डी. फाल्क की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इसे मुद्रित या जिल्दबद्ध रूप में वितरित नहीं किया जा सकता है, न ही किसी अन्य रूप में (इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों सहित) बेचा जा सकता है।
ट्रेडमार्क: “टीएम” और “ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन” अमेरिकी पेटेंट एवं ट्रेडमार्क कार्यालय में पंजीकृत सेवा चिह्न हैं, जिनका लाइसेंस महर्षि वैदिक शिक्षा विकास निगम को दिया गया है। “कोक” कोका-कोला कंपनी का पंजीकृत ट्रेडमार्क है।
क्रेडिट और अनुमतियाँ परमिशन पेज (पृष्ठ 509) पर पाई जा सकती हैं, जो कॉपीराइट पेज का विस्तार है।

अंतर्वस्तु

परिचय .....
अध्याय
Iमैं किसी की बुराई नहीं करता 1
II थोड़ा बेवकूफ .....
6
III सुंदर बत्तख का बच्चा .....
12
IV प्यारी माँ .....
17
V कृष्ण .....
26
VI सेक्स और हिंसा की कला में ज़ेन .....
38
VII सेक्स, आनंद और रॉक 'एन' रोल .....
53
VIII छठा बीटल्स .....

58
IX यहाँ आ चुके हैं, वो कर चुके हैं, अब क्या? .....
69
X बिच्छू-आदमी .....
76
XI अगर ऐसा हुआ भी तो.... .....
82
XII मो' चिन-अप्स .....
86
XIII थाई सरप्राइज .....
92
XIV बैटलफील्ड टीजीएक .....
95
XV वर्नर का अनिश्चितता सिद्धांत .....
103
XVI कॉकरोच योगा .....
107
XVII एक जंगली और सनकी बुद्धिमान व्यक्ति 112
XVIII साठ मिनट .....
128
XIX द मैंगो किड .....
133
XX दा अवतार, दा बॉम्ब, दा बम .....
141
XXI कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 158

XXII नमस्कार, दलाई! 176

XXIII आसन की ओर 192
XXIV समलैंगिकता और गोमोराह .....
196
XXV गोभी और प्रकृति की परियों के बारे में .....
212
XXVI ... एक नन आश्रम के लिए .....
227
XXVII गुरु और कैदी .....
305
XXVIII आध्यात्मिक विकल्प .....
350
XXIX कठिन परीक्षा के बाद .....
367
XXX इसे बेहतर बनाएं .....
424
आवश्यक ऑनलाइन संसाधन .....
453
संदर्भ सूची .....
457
अनुमतियाँ .....
509
अनुक्रमणिका .....
511
लेखक के बारे में .....
523

परिचय

मेरी प्रिय, दिवंगत माँ की अपने बच्चों को सही व्यवहार सिखाने की कोशिश में कही

गई सबसे यादगार बातों में से एक यह थी: "सुनिश्चित रहो कि तुम्हारे पाप तुम्हें ढूंढ निकालेंगे।"

इसमें एक मिनट, एक घंटा, एक दिन, एक साल, दस साल या उससे भी अधिक समय लग सकता है, लेकिन अंततः किसी के व्यवहार के विवरण सामने आ ही जाते हैं। चाहे किसी का सार्वजनिक चेहरा संत का हो या पापी का, अंततः "सच सामने आ ही जाता है।"

यह पुस्तक उन कथित पापों से संबंधित है जो हमारी दुनिया के कई "संत और ज्ञानी" आध्यात्मिक नेताओं और उनके संबद्ध समुदायों के चमकदार मुखौटे के पीछे छिपे रहे हैं, और विशेष रूप से पिछली शताब्दी में उत्तरी अमेरिका पर ध्यान केंद्रित करती है।

लेकिन आखिर कोई ऐसी किताब क्यों लिखेगा? क्यों न सिर्फ "अच्छी बातों पर ध्यान केंद्रित किया जाए" और खुद के आत्म-परिवर्तन पर काम किया जाए?

सबसे पहले, मनुष्य इन आदर्शों का अनुसरण करते हुए अपना जीवन व्यर्थ करने से उत्पन्न होने वाले दुख से दूसरों को बचाना चाहता है। यहाँ तक कि दूसरों को दुख से मुक्ति दिलाने का सबसे बुनियादी बोधिसत्व व्रत भी हमें इस कार्य में अपना योगदान देने के अलावा कोई नैतिक विकल्प नहीं देता। इसी प्रकार, “मूर्ख करुणा” की प्रकृति की सबसे बुनियादी समझ भी हमें केवल “अच्छा” बनने या दूसरों को ठेस न पहुँचाने के लिए इन समस्याओं को अनदेखा करने से रोकती है।

कार्लोस कास्टानेडा की एक पूर्व अनुयायी ने अपने "आत्महत्या के भयावह सपनों" के बीच, उनके साथ अपने निराशाजनक और हताशा भरे अनुभवों की कहानी सुनाते हुए, इसे बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया:

v vi गुरुओं का पर्दाफाश

यदि कोई पाठक, कहीं, एक पल के लिए रुक जाए और
जब कोई व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा को दूसरे को सौंपने से पहले रुकता है, तो
इन सबका कुछ न कुछ महत्व होगा (वॉलेस, 2003)।

या, जैसा कि मार्जरी वेकफील्ड (1991) ने अपनी राय व्यक्त की:

यह बात भले ही घिसी-पिटी लगे, लेकिन अगर मैं एक भी व्यक्ति को बचा सकूं तो...
बेटे, विशेषकर एक युवा व्यक्ति को, इन सब से जूझने से बचाना।
साइंटोलॉजी का दुःस्वप्न खत्म हो जाए—तभी मुझे संतुष्टि मिलेगी।

दूसरा, मैंने व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन के सबसे बुरे नौ महीने परमहंस योगानंद के दक्षिणी कैलिफोर्निया स्थित स्वीकृत आश्रमों (अर्थात, आश्रमों/मठों) में बिताए हैं, और उस भयानक अनुभव से मैं अभी तक पूरी तरह उबर नहीं पाया हूँ। इसलिए मैं इसे अपनी उपचार प्रक्रिया का एक हिस्सा मानता हूँ। यानी, यह उस वातावरण में अपने वफादार, "ईश्वर-प्रेरित" अनुयायियों द्वारा दी गई "ज्ञान" के दुष्प्रभावों से निपटने का मेरा प्रयास है।

तीसरा, पूर्वी दर्शन में मेरी अपनी पृष्ठभूमि को देखते हुए, हम उम्मीद कर सकते हैं कि हम इसमें शामिल आध्यात्मिक विचारों को गलत तरीके से प्रस्तुत किए बिना यह सब कर पाएंगे। हालांकि, चाहे ऐसा हो या न हो, यहाँ मुख्य रूप से प्रत्येक मार्ग के सैद्धांतिक विचारों की वैधता का प्रश्न नहीं है। बल्कि, कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन विचारों का समर्थन करने वाले नेताओं ने उन्हें व्यवहार में कैसे लागू किया है, अक्सर अपने अनुयायियों के कथित नुकसान के लिए।

चौथा, "गुरु और कैदी" अध्याय में प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक फिलिप जिम्बार्डो के क्लासिक जेल अध्ययन के साथ आश्रम के कथित व्यवहारों का मानचित्रण, यहां सूचीबद्ध कथित समस्याओं की उत्पत्ति और व्यापकता में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पांचवीं बात, शर्लक होम्स के शब्दों में कहें तो, यदि हम हर उस चीज़ को हटा दें जो असंभव है, तो जो बचेगा, चाहे वह कितना भी असंभावित क्यों न लगे, वही सच होना चाहिए। इस प्रकार, हमारे संसार के "ऋषियों" और उनके प्रशंसकों से जुड़ी कथित समस्याओं से अवगत होने से, आध्यात्मिकता और धर्म के स्वरूप के संबंध में किसी के मन में उठने वाली कई सुखद लेकिन "असंभव" आशाएँ समाप्त हो जाती हैं।

यह पुस्तक संभवतः इसमें वर्णित किसी भी आध्यात्मिक व्यक्तित्व और मार्ग के किसी भी निष्ठावान अनुयायी का मन नहीं बदल पाएगी। वास्तव में, उन नेताओं द्वारा कथित दुर्व्यवहार या पाखंड के कितने भी सबूत क्यों न हों, वे अनुयायी जो आश्वस्त हैं कि उन्होंने अपने आध्यात्मिक नायक में "शरीरधारी ईश्वर" को पा लिया है, उनका मन नहीं बदल पाएंगे। प्रस्तावना 7

यह लेख शायद उन भक्तों को भी प्रभावित करे जो अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं को समझने की दिशा में आधा आगे बढ़ चुके हैं। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे उन लोगों को भी सचेत किया जा सकता है जो किसी विशेष

"ईश्वर-प्राप्त व्यक्ति" के दावों के झांसे में आ सकते हैं—जैसा कि मैं स्वयं एक समय धोखा खा चुका था। और इस प्रकार, यह उन्हें संबंधित संगठन(ओं) से जुड़ने से रोक सकता है।

अंततः, "बुराई को न देखो, बुराई को न सुनो, बुराई को न बोलो" वाला जीवन दृष्टिकोण केवल संबंधित समस्याओं को जारी रहने देता है। किसी को भी जालसाजी, व्यभिचार, बलात्कार या इसी तरह के धर्मनिरपेक्ष अपराधों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। और तो और, उन्हीं अपराधों को इतनी आसानी से माफ या क्षमा नहीं किया जाना चाहिए जब वे आध्यात्मिक संदर्भों में घटित होने का आरोप लगाते हैं। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण है जब ये अपराध उन नेताओं और अनुयायियों द्वारा किए जाने का दावा किया जाता है जो यह कहते हैं कि "ईश्वर उनके साथ है," और उनकी कथित गलतियों या सत्ता के दुरुपयोग के आरोपों का विरोध करना माया/शैतान से प्रभावित होने के बराबर है।

बुराई के सामने चुप रहना, आखिरकार, परोक्ष रूप से उसे स्वीकार करने के समान है। या यूं कहें कि, "इस दुनिया में बुराई की जीत के लिए, अच्छे लोगों का कुछ न करना ही काफी है।"

अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्दों में:

दुनिया रहने के लिए एक खतरनाक जगह है; इसका कारण यह नहीं है कि...
जो लोग दुष्ट हैं, लेकिन उन लोगों की वजह से जो ऐसा नहीं करते।
इसके बारे में कुछ भी।

जागरूक पाठक यह भी ध्यान देंगे कि हिडन वैली में मेरे अपने अपेक्षाकृत कम विवादास्पद (लेकिन फिर भी अत्यंत दर्दनाक) व्यक्तिगत अनुभवों के अलावा, यहाँ लगाए गए सभी आरोप—जिनमें से कोई भी, मेरी जानकारी के अनुसार, स्पष्ट रूप से उल्लेखित मामलों को छोड़कर, किसी भी न्यायालय में सिद्ध नहीं हुआ है—पहले ही अन्यत्र पुस्तकों और पत्रिका लेखों में प्रकाशित हो चुके हैं। उन सभी मामलों में, मैं संबंधित पत्रकारों और पूर्व शिष्यों के मौजूदा, प्रकाशित शोध की वैधता पर पूरी ईमानदारी से भरोसा कर रहा हूँ। मैंने मौजूदा रिपोर्ट किए गए आंकड़ों को बिना किसी अतिरिक्त हेरफेर के, चाहे तुलना के माध्यम से हो या किसी अन्य तरीके से, प्रस्तुत करने का हर संभव प्रयास किया है। आखिरकार, हर मामले में प्रकाशित (कथित) वास्तविकताएँ इतनी चौंकाने वाली हैं कि हमारे संसार के "धर्मगुरुओं" को मूर्ख साबित

करने के लिए किसी भी तरह के व्यंग्य या संदर्भ से हटकर बात करने की आवश्यकता नहीं थी।

दलाई लामा (1999) ने इस प्रकार की खोजी पत्रकारिता के महत्व के संबंध में अपनी राय व्यक्त की थी:

मैं मीडिया के हस्तक्षेप का सम्मान और सराहना करता हूँ... यह उचित है।
पत्रकारों का इधर-उधर ताक-झांक करना और छानबीन करना उचित नहीं है।
जहां भी उन्हें कोई गलत काम नज़र आता है, वे उसे उजागर करते हैं। हमें यह जानना ज़रूरी है।
जब कोई प्रसिद्ध व्यक्ति एक बहुत ही अलग बात छुपाता है
एक आकर्षक बाहरी रूप के पीछे का पहलू।

यहां जिन कथित "पापों" का अनुचित ढंग से वर्णन किया गया है, उनकी संख्या के संबंध में, कृपया यह समझें कि मैं स्वयं सामान्यतः न तो मादक पदार्थों, न शराब, न डिल्डो, न महिलाओं के छात्रावास तक जाने वाले गुप्त मार्ग, न वेश्यालय, न ही सामूहिक यौन संबंध आदि का विरोधी हूं। यह अब स्पष्ट हो चुका है कि इनमें से कोई भी बात, जब उन "ईश्वर-पुरुषों" के हाथों में पड़ जाती है जिन्होंने दुनिया में अपने लिए निरंकुश सत्ता के द्वीप बना लिए हैं, तो पहले से ही खतरनाक स्थिति को और भी बदतर बना देती है।

बेशक, तमाम विरोधों के बावजूद, इस तरह की जानकारी इकट्ठा करने और उसे सार्वजनिक करने का यही तरीका है कि ऐसा करने वाले को या तो कट्टरपंथी या फिर अपनी ही छवि को दूसरों पर थोपने वाला समझा जाएगा। आख़िरकार, गुरु-शिष्य के यौन संबंध आदि पर कोई आपत्ति क्यों करेगा, जबकि इस रिश्ते में "गैर-दिव्य" पक्ष अक्सर एक मनोवैज्ञानिक बच्चे की तरह होता है, जो "ना" कहने में असमर्थ होता है?

यह दिशानिर्देश कि "सहमत वयस्कों के बीच सब कुछ जायज़ है जब तक किसी को चोट न पहुंचे" काफी तर्कसंगत है। तो फिर इस किताब को पढ़ते समय खुद से यह सवाल पूछें: यहां वर्णित कितने वातावरणों में, यदि कोई है भी, किसी को चोट नहीं पहुंची है?

अंत में, यहाँ हास्य के प्रयोग के संबंध में, दिवंगत क्रिस्टोफर रीव ने इसे उपयुक्त रूप

से कहा था: "जब हालात वास्तव में खराब हों, तो आपको हंसना ही पड़ता है।"
जनवरी 2009, जेफ्री डी. फाल्क
टोरंटो, ओंटारियो www.geoffreyfalk.com

अध्याय 1

बुराई मत बोलो

दुष्ट लोग निःसंदेह दुष्ट होते हैं, और वे भटक जाते हैं, और
वे गिरते हैं, और उन्हें उनकी करनी का फल मिलता है। लेकिन कौन बता सकता है?
वे शरारतें जो स्वयं गुणी लोग करते हैं?
—विलियम मेकपीस थैकरे

हम यह मानना चाहेंगे कि हमारे विश्व के मान्यता प्राप्त संत और ऋषि अपने विचारों और कार्यों में सभी के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हैं।
कोई यह भी मानना चाहेगा कि वही "दिव्य प्रेम" और प्रबुद्ध व्यक्ति कभी भी अपने स्वार्थ के लिए सत्य को विकृत नहीं करेंगे, और न ही कभी अपने अनुयायियों का शोषण करने के लिए अपनी शक्ति का दुरुपयोग करेंगे (यौन या अन्य प्रकार से)। अर्थात्, वे उन गहरे मनोवैज्ञानिक विकारों, पूर्वाग्रहों, पाखंड और हिंसा से मुक्त होंगे जो आम मनुष्यों को प्रभावित करते हैं।
इसके अलावा, यह आशा की जाती है कि हमारे विश्व के सर्वश्रेष्ठ ऋषि वैध रहस्यमय अनुभूतियों और मात्र मतिभ्रमों के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे, और यह कि उनके द्वारा किए गए चमत्कार और उपचार वास्तव में घटित हुए हैं।
दुर्भाग्य से, इनमें से कोई भी उम्मीद बुनियादी तर्कसंगत जांच में भी खरी नहीं उतरती। इस प्रकार, आपके हाथों में एक अत्यंत बुरी किताब है।
1
2. गुरुओं का पर्दाफाश

ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह व्यापक दर्शकों के सामने उन कथित दुर्व्यवहारों के सबसे

बुरे पहलुओं को उजागर करने का प्रयास करता है, जो विभिन्न "धर्मगुरुओं" ने कथित तौर पर पिछली एक सदी या उससे अधिक समय में अपने अनुयायियों और पूरी दुनिया पर किए हैं।

पूर्वी दर्शन के पश्चिमी विचार और कर्म में प्रवेश से लेकर आज तक, उस पतन की रेखा को लगभग कालानुक्रमिक रूप से देखते हुए, हम निम्नलिखित "संतों और ऋषियों" से मिलेंगे:

• रामकृष्ण, जिनकी दिव्य माँ की पूजा

अपने स्वयं के लिंग के लिए तुलनीय अनुष्ठानिक पूजा, या अपने पुरुष अनुयायियों के जननांगों को सहलाने में समान रुचि को बाहर रखें।

• वेश्यालय जाने वाले विवेकानंद, रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य-

वह गुरु, जिन्होंने 1893 के विश्व मेले के माध्यम से सबसे पहले योग को अमेरिका में लाया, और इस प्रकार पश्चिम में आने वाले सभी पूर्वी गुरुओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

जिद्दू कृष्णमूर्ति, थियोसोफिकल सोसायटी के उत्सुक व्यक्ति-

उन्होंने “विश्व शिक्षक” बनने की उम्मीद की थी, लेकिन बाद में उन्होंने उस संगठन से नाता तोड़ लिया और उसे पूरी तरह से नकार दिया। इसके बाद उन्होंने एक महिला के साथ पच्चीस साल का प्रेम संबंध स्थापित किया, जिसे वे अपनी दिवंगत मां का पुनर्जन्म मानते थे।

• जापानी ज़ेन गुरु और विद्वान, जिन्होंने समर्थन दिया

युद्धकाल में जापानी सेना के प्रशिक्षण में ज़ेन सिद्धांतों का उपयोग और शांति काल में शिष्यों के साथ कथित शारीरिक दुर्व्यवहार हमें गंभीर रूप से सोचने पर मजबूर करता है।

• सच्चिदानंद, जिन्हें "वुडस्टॉक स्वामी" के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने अस्वीकार कर दिया था

ड्रग्स और रॉक एंड रोल का शौक तो था, लेकिन खबरों के मुताबिक अपनी महिला शिष्यों के साथ यौन संबंध बनाने का भी शौक बरकरार था।

• महर्षि महेश योगी, जो अपनी सक्रिय भागीदारी के लिए प्रसिद्ध हैं

बीटल्स के साथ उनके संबंध, मिया फैरो को बहकाने का उनका कथित असफल प्रयास, और दिवंगत जादूगर डग हेनिंग को उत्तोलन का "वास्तविक जादू" सिखाने के

उनके प्रयास, आदि।
• स्वामी राम, जो अपने कथित प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध हैं
1970 के दशक में एल्मर और एलिस ग्रीन के मार्गदर्शन में परा-मनोवैज्ञानिक क्षमताओं का अनुभव करने वाले एक अन्य "पवित्र ब्रह्मचारी" के रूप में, जो जाहिर तौर पर अपने वस्त्रों को संभाल नहीं पाते थे।
बुराई मत बोलो 3

• भगवान श्री रजनीश, जिन्होंने कथित तौर पर एक बार स्वीकार किया था,
नशे के लिए लाफिंग गैस सूंघते हुए, उसने कहा कि उसे "अब प्रबुद्ध होने का दिखावा न करने से बहुत राहत मिली है"।
• सत्य साई बाबा, जिनके कथित "चमत्कारों" में शामिल हैं
मृतकों को जीवित करना, अपने हाथों से "पवित्र राख" की धाराएँ निकालना—एक ऐसा कारनामा जिसे धर्मनिरपेक्ष जादूगर आसानी से दोहरा सकते हैं—और कथित तौर पर सैकड़ों युवा लड़कों का यौन उत्पीड़न करना।
• श्री चिन्मय, जिन्हें “आध्यात्मिक जगत का स्टंटमैन” कहा जाता है, जिनके
आज भी उनके शिष्य समय-समय पर उत्तरी अमेरिका के कैंपसों में पर्चे बांटते हैं जिनमें उनके मार्गदर्शन में ध्यान करने के कथित लाभों का प्रचार किया जाता है।
• थाईलैंड में बौद्ध भिक्षु, जो जाने जाते हैं
महंगी एंटीक कारों के संग्रह को गर्व से प्रदर्शित करना, भेस बदलकर स्थानीय कराओके बार में चुपके से जाना, और अश्लील सामग्री, शराब, यौन सामग्री और एक ही समय में एक से अधिक महिलाओं के साथ पकड़े जाना।
• साइंटोलॉजी के संस्थापक एल. रॉन हबर्ड, जिनकी एफबीआई फाइलों में...
उन्होंने इस टिप्पणी को स्वीकार किया, "मानसिक प्रतीत होता है"
• वर्नर एरहार्ड, एस्ट ग्रुप ट्रेनिंग के प्रवर्तक, जिन्होंने
इसी से हमें "साझा करने के लिए धन्यवाद" वाक्यांश मिला।
• योगी भजन, जिन्हें कथित तौर पर "सफेद टैन के एकमात्र जीवित गुरु" कहा जाता है-
दुनिया में त्रिक योग"
• चोग्याम ट्रुंगपा, जो तिब्बती बौद्ध धर्म को लेकर आए थे

अमेरिका गया और शराब पीकर अपनी जान गंवा दी।
• स्वामी मुक्तानंद, जिनके आश्रम के आवास इंडियाना में स्थित हैं-
बताया जाता है कि उस इमारत में पास के ही युवा लड़कियों के छात्रावास तक जाने का एक गुप्त मार्ग था जिसका खूब इस्तेमाल होता था।
• मुक्तानंद के नाम बदलने वाले शिष्य आदि दा (दा फ्री)।
जॉन, दा लव-आनंदा, आदि), जिनकी "अनोखी बुद्धिमत्ता" से जुड़े कारनामों के कारण उन्हें 80 के दशक के मध्य में यौन शोषण के आरोपों के बाद फिजी में निर्वासन झेलना पड़ा।
• एंड्रयू कोहेन, जिनकी स्वयं यहूदी माँ ने उन्हें
एक बंद सत्तावादी आध्यात्मिक समुदाय को "फासीवादी मानसिकता" का प्रतीक माना जाता है, जिसके सदस्य "गेस्टापो एजेंटों" की तरह व्यवहार करते हैं। (ऐसे बंद समुदायों में एकरूप विश्वास होते हैं, बाहरी दुनिया के साथ विचारों का बहुत कम आदान-प्रदान होता है।) 4 गुरुओं का सार उजागर करना

और समुदाय के सम्मानित सदस्य बने रहते हुए नेता से सवाल करने का कोई विकल्प नहीं होता। इसके अलावा, समुदाय को छोड़ना आमतौर पर "इस जीवन में ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र अवसर" गंवाने के समान माना जाता है [वैन डेर ब्राक, 2003]। उन्होंने कोहेन के ज्ञान प्राप्ति के दावों को खारिज करते हुए उनकी तुलना "पंथ" के नेताओं जिम जोन्स और डेविड कोरेश से की है, और यहाँ तक कि एडॉल्फ हिटलर से भी।
• केन विल्बर, जिन्हें "चेतना अध्ययन का आइंस्टीन" कहा जाता है, जिन्होंने
उन्होंने कई बार आदि दा और कोहेन दोनों के मार्गदर्शन में अनुशासन के प्रभावों के बारे में अदम्य उत्साह के साथ बात की है।
• योगी अमृत देसाई, जो पहले कृपालु योग केंद्र से जुड़े थे,
जब विवाहित देसाई और उनके भक्तों के बीच कथित यौन गतिविधियों की खबर सामने आई, तो वहां मौजूद उनके अनुयायियों ने कथित तौर पर उन्हें उस केंद्र को छोड़ने के लिए मजबूर करके अद्वितीय भेदभाव का प्रदर्शन किया, जिसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी।
• विभिन्न प्रकार के यौन रूप से सक्रिय रोमन कैथोलिक पादरी—बाल यौन शोषण फ़ाइल, इफ़ेबोफाइल और अन्यथा

• स्कॉटलैंड में फाइंडहॉर्न समुदाय, जो वास्तव में कार्य करता है-
गुरु-प्रतिनिधि के बिना किए गए कार्य, संभवतः इसी कारण से नुकसान से कहीं अधिक लाभ पहुंचाते हैं।
• परमहंस योगानंद, आध्यात्मिक क्लासिक के लेखक
एक योगी की आत्मकथा, जिनके अशांत आश्रमों के बारे में प्रस्तुत लेखक अपने प्रत्यक्ष अनुभव से बता सकते हैं।
कुछ अपवादों को छोड़कर, उपरोक्त व्यक्तियों ने किसी न किसी रूप में प्रामाणिक पूर्वी दर्शन का शिक्षण किया है। उन्हें उच्च स्तर की आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करने वाले के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है और उनका विधिवत प्रचार भी किया गया है। वास्तव में, पुस्तकों और मान्यता प्राप्त वेबसाइटों में इन व्यक्तियों और उनके मार्ग की प्रशंसा करने वाले निष्ठावान अनुयायी आसानी से मिल जाते हैं। (स्टीवन हसन की दोनों रचनाएँ)
www.freedomofmind.com साइट और रिक ए. रॉस इंस्टीट्यूट पर
www.rickross.com पर ऐसी कई "आधिकारिक" वेबसाइटों के लिंक मौजूद हैं। हालाँकि, उनमें से प्रत्येक के बारे में कथित "कमियों" को खोजने के लिए काफी अधिक प्रयास करना पड़ता है। फिर भी, ये कथित सबसे बुरे पहलू ही हैं, न कि अक्सर विज्ञापित सर्वोत्तम पहलू, जो कभी समर्पित शिष्यों को अपने टूटे हुए जीवन को समेटने और यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि वे आखिर कैसे इतने अंधे हो गए थे कि उन्होंने "परिपूर्ण गुरु" के प्रचार पर विश्वास कर लिया।
इसलिए, यह एक बहुत ही "गंदी" किताब है। क्योंकि, यह न केवल प्रतिनिधि (और, कुछ समय बाद, पूरी तरह से अविश्वसनीय)
बुराई मत बोलो 5

इस लेख में लगभग चालीस प्रमुख और गौण "प्रामाणिक" आध्यात्मिक हस्तियों के पूर्णता या ईश्वर-प्राप्ति के दावों के साथ-साथ उनकी कथित कमियों का भी वर्णन किया गया है, जिनका उनके अनुयायियों पर प्रभाव पड़ा है। स्पष्टतः, इन सभी को एक ही ग्रंथ में समेटने के लिए प्रत्येक "ऋषि" के केवल सबसे भव्य दावों और सबसे बुरी कमजोरियों और कथित दुर्व्यवहारों का ही उल्लेख करना आवश्यक है।
जब तक किसी को दूसरों को दुख में देखकर या स्वयं के मोहभंग की प्रक्रिया को

दोहराने में आनंद न आता हो, तब तक यह स्थिति सुखद नहीं होगी। क्योंकि इस वंश की पड़ताल करने पर हमें अनगिनत ऐसे मामले मिलेंगे जिनमें कथित तौर पर भावनात्मक, शारीरिक और यौन शोषण "ईश्वर के नाम पर" उन व्यक्तियों द्वारा किया गया है जो न तो शक्तिहीन हैं और न ही सर्वशक्तिमान, फिर भी स्वयं को "ईश्वर के साथ एक" होने का दावा करते हैं।

इस सारी अप्रियता के अंत में, कम से कम एक बात तो निश्चित रूप से स्पष्ट हो जाएगी। वह यह कि इन जैसे "देवताओं" के साथ हमें शैतानों की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि, हर वह बुराई जिसे कोई शैतान या माया से जोड़ सकता है, कथित तौर पर किसी न किसी "ईश्वर-प्राप्त अवतार" या दिखने में "पूर्णतम प्राणी" द्वारा की गई है।

निःसंदेह, आगामी चौंकाने वाले खुलासे से स्वाभाविक रूप से आज्ञाकारी अनुयायियों में भारी आक्रोश और आक्रोश उत्पन्न होगा। वास्तव में, यह विशेष रूप से प्रत्येक मार्ग के वफादार अनुयायियों के बीच अपेक्षित है, जिनके लिए अपने नेता की "पूर्णता" और अचूकता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता, भले ही वे यह स्वीकार करें कि यहाँ वर्णित अन्य "ऋषि" व्यक्ति अपने दावों के अनुरूप नहीं हैं। (इन सभी ढोंगों और कथित दुर्व्यवहारों को एक ही पुस्तक में संकलित करने का एक लाभ यह भी है कि इससे यह देखा जा सकता है कि अपने मार्ग के "अद्वितीय" दावे, समान रूप से निराधार रूप से, कई अन्य मार्गों द्वारा भी किए जा रहे हैं।) फिर भी, यदि हम वास्तव में सत्य में रुचि रखते हैं, तो हमें आध्यात्मिक सत्ता के पदों पर आसीन व्यक्तियों के पाखंड और (कथित) दुर्व्यवहारों को दुनिया के सामने उजागर करने का स्वागत करना चाहिए। अंततः, उन्हें जनता के सामने लाना ही उन्हें रोकने का एकमात्र तरीका है।

अतः, "आगे बढ़ते रहो और बुराई की ओर बढ़ो।"

अध्याय II

थोड़ी सी बेवकूफ
(SRI RAMAKRISHNA)

[रामकृष्ण] हाल के इतिहास की एक हस्ती हैं और उनका जीवन और

प्रेमपूर्ण किंवदंतियों से शिक्षाएं अभी तक धूमिल नहीं हुई हैं और
संदिग्ध मिथक (रामकृष्ण में, 2003)।
रामकृष्ण ने अपने भक्तों से मान्यता प्राप्त की और
उनके प्रशंसक उन्हें ईसा मसीह का अवतार मानते थे...
[महेंद्र नाथ गुप्ता, एक प्रमुख शिष्य] ने अपने गुरु को बताया-
इस तथ्य से कि वह यीशु और चैतन्य के समान व्यक्ति थे,
रामकृष्ण ने उत्साहपूर्वक कहा: "बिल्कुल! बिल्कुल!
निश्चित रूप से वही व्यक्ति" (सिल, 1998)।
मैं अवतार हूँ। मैं मानव रूप में ईश्वर हूँ (रामकृष्ण)।
[Nityatmananda, 1967]).

पश्चिम में योग और योगियों की कहानी—और सत्ता के उनके कथित दुरुपयोग की कहानी, जो अक्सर यौन उद्देश्यों के लिए किए जाते थे—वास्तव में स्वामी विवेकानंद के 1893 में शिकागो विश्व मेले में दिए गए व्याख्यानों से शुरू होती है।
हालांकि, विवेकानंद की कहानी उनके गुरु श्री रामकृष्ण से शुरू होती है, जिनका जन्म 1836 में भारत में हुआ था। ("श्री")

6
थोड़ी सी बेवकूफी 7

यह पूर्वी भारतीय भाषा में सम्मान का एक शब्द है, जो अंग्रेजी के "सर" के समान है।) इसलिए, हम सबसे पहले इसी पर ध्यान देंगे।
बचपन में, बालक रामकृष्ण—जिन्होंने बाद में कृष्ण और राम दोनों का अवतार होने का दावा किया—"लड़की की तरह कपड़े पहनना और व्यवहार करना पसंद करते थे" (सिल, 1997)। वास्तव में, उनके रिश्तेदारों ने उन्हें स्त्री वस्त्र और सोने के आभूषण खरीदकर इस गतिविधि में सहायता की, ताकि उनका अपेक्षाकृत स्त्री जैसा शरीर और मन इसके अनुकूल हो सके।
राम की मौजूदा तस्वीर से यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है-
कृष्ण [उदाहरण के लिए, रामकृष्ण (2003) पर ऑनलाइन] उनके पास था

काफी सुगठित और मजबूत स्तन—संभवतः यह एक मामला है
गाइनेकोमास्टिया....
रामकृष्ण को तकनीकी शब्दावली में इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
आधुनिक चिकित्सा मनोविज्ञान में, एक "स्त्री पुरुष" के रूप में, यानी एक पुरुष के रूप में
जो अपने पुरुष जननांगों के बावजूद, स्त्री मानसिकता रखता है।
और महिलाओं के स्तनों से मिलते-जुलते स्तन...
[सरदानंद] लिखते हैं, जाहिरा तौर पर इसके आधार पर
मास्टर की गवाही के अनुसार, उसे हर महीने रक्तस्राव होता था।
उसके गुप्तांग के बालों वाले हिस्से में... और खून बहना जारी रहा।
तीन दिन, बिल्कुल महिलाओं के मासिक धर्म की तरह (सिल,
1998).
और स्त्रीत्व सिद्धांत के सूक्ष्म पहलुओं के प्रति महान ऋषि की सराहना यहीं तक सीमित नहीं थी:
एक बार दोपहर की नींद के बाद वह अपनी लंगोटी अस्त-व्यस्त हालत में बैठा था।
वह चौंक गया। फिर उसने टिप्पणी की कि वह एक महिला की तरह बैठा है।
अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली थी। दरअसल, वह अपने बच्चों को दूध पिलाता था।
प्रिय [पुरुष] शिष्य राखल घोष...
उसने अपने प्रति खुलकर कामुक व्यवहार प्रदर्शित किया।
पुरुष भक्तों और शिष्यों के बीच... वह अक्सर उनकी प्रेमिका बनकर आता था।
दोस्त हो या माँ, हमेशा उन्हें प्यार से छूते या सहलाते थे।
इंगली (सिल, 1998)।
जो कोई भी किसी वयस्क को स्तनपान करा रहा है, वह स्पष्ट रूप से उस वयस्क को बच्चे के रूप में देख रहा है/उसके साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है। यदि ऐसे संदर्भ में "अभिभावक" का "बच्चे" के प्रति किसी भी प्रकार का यौन आकर्षण है, तो स्पष्ट मनोवैज्ञानिक बाल यौन शोषण के पहलू से बचना असंभव है, भले ही स्तनपान करने वाला व्यक्ति कानूनी उम्र का हो, जैसा कि अठारह वर्षीय घोष था। और यदि एक वयस्क पुरुष (रामकृष्ण के मामले में एक "स्त्री-पुरुष") किसी अन्य वयस्क पुरुष (अपने कनिष्ठ) को शिशु होने का नाटक करवा रहा है, ताकि उनमें से पहला दूसरे की

माँ होने का नाटक कर सके, और...8 गुरुओं का नग्न चित्रण

किसी अन्य संदर्भ में, इस व्यवहार की कामुक प्रकृति के बारे में कोई संदेह नहीं होगा। इसके अलावा, अपने प्रमुख शिष्य विवेकानंद से पहली बार मिलने के बाद, उस युवक को फिर से देखने की तीव्र इच्छा से ओतप्रोत होकर, रामकृष्ण ने स्वीकार किया:
मैं बगीचे के उत्तरी हिस्से की ओर भागा, जो अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध था।
मैं उस सुनसान जगह पर गया और वहाँ मैंने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाकर कहा, “हे मेरे
प्रियतम, मेरे पास वापस आ जाओ! मैं तुम्हें देखे बिना नहीं रह सकता!
कुछ समय बाद मुझे बेहतर महसूस हुआ। यह स्थिति कुछ समय तक बनी रही।
छह महीने। यहाँ कुछ और लड़के भी आए थे; मुझे लगा
उनमें से कुछ की ओर बहुत आकर्षित हुआ, लेकिन बिल्कुल भी नहीं।
जिस तरह से मैं [विवेकनंद] की ओर आकर्षित हुआ (शिष्य, 1979;
इटैलिक्स जोड़े गए)।
रामकृष्ण ने अपने प्रिय शिष्य का वर्णन विभिन्न प्रकार से किया, जैसे कि "एक विशाल लाल आंखों वाली कार्प मछली," "एक बहुत बड़ा बर्तन," "छेद वाला एक बड़ा बांस" और "एक नर कबूतर।"
बाद के दिनों में, असमय नपुंसक हो चुके विवाहित गुरु एक बार युवा विवेकानंद की पीठ पर सवार होने के बाद समाधि (अर्थात रहस्यमय परमानंद, जिसमें आम तौर पर शरीर के प्रति जागरूकता का अभाव होता है) में चले गए।
यदि इस चढ़ाई ने उन्हें ईश्वर की परमानंदमय अनुभूति तक न पहुँचाया होता, तो महान गुरु ने इसके लिए क्या बहाना दिया होता, इस बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है।
हम रामकृष्ण के गुदा के प्रति जुनून को नजरअंदाज नहीं कर सकते।
और अपनी बातचीत में बकवास करता है। यहाँ तक कि उसके अनुभव भी।
व्यक्ति के भीतर विद्यमान सर्वोच्च अनुभूति
परमात्मा, समस्त ज्ञान का भंडार, स्वयं ही था।
एक पतली छड़ी के साथ टिट्ठे को देखने से उत्पन्न हुआ।
जैसे कोई वस्तु उसके गुदा में डाली गई हो!...

उसे परमानंद (अर्थात समाधि जैसी अवस्था) की अनुभूति उसके स्पर्श से हुई।
अपने प्रिय युवा [पुरुष] भक्तों के लिए। उन्होंने कुछ रणनीतियाँ विकसित कीं।
शरीर को छूने या सहलाने के लिए (कभी-कभी लिंग को भी)।
जैसा कि विजयकृष्ण गोस्वामी के मामले में था, जिसका मुर्गा वह
भक्तों के उनके "स्पर्श" से शांत (सिल, 1998)।
बेशक, उपरोक्त संदर्भों में रामकृष्ण के दस्तावेजित समलैंगिक व्यवहारों में से कोई भी यह साबित नहीं करता कि वे एक सक्रिय समलैंगिक थे। हालांकि, ये व्यवहार उनके स्त्री शरीर के प्रति दृष्टिकोण से भी असंबंधित नहीं हो सकते, जिसे वे "रक्त, मांस, वसा, आंतें, कीड़े, पेशाब, मल और थोड़ी सी स्तन जैसी चीजों" से अधिक कुछ नहीं मानते थे।

जैसे" (निखिलानंद में, 1984)। वास्तव में, स्वयं "दिव्य माता के अवतार" ने यह प्रकट किया:
मुझे महिलाओं से बहुत डर लगता है... मैं उन्हें शेरनी की तरह देखता हूँ।
मुझे निगलने के लिए। इसके अलावा, मुझे बड़े छिद्र दिखाई देते हैं [cf. योनि के लक्षण-
उनके अंगों में उभार हैं। मुझे वे सभी राक्षस जैसे लगते हैं...
अगर कोई महिला मेरे शरीर को छूती है तो मुझे उल्टी जैसा महसूस होता है...
स्पर्श किए गए हिस्से में ऐसा दर्द होता है मानो किसी सींग वाली कैटफ़िश ने डंक मारा हो (निखिल में-
आनंदा, 1984)।
कहा जाता है कि किसी स्त्री को मात्र देखने मात्र से ही रामकृष्ण इतने उत्तेजित हो जाते थे कि वे...
या तो मंदिर की ओर भागो या भागने की रणनीति अपनाओ।
समाधि में लीन होना। युवा लड़कों के प्रति उनका आकर्षण जो संभवतः
मूक बाल यौन शोषण के रूप में माना जाना अक्सर इससे जुड़ा होता है
वृद्ध नपुंसक पुरुष...
महिलाओं के प्रति रामकृष्ण की घृणा मूलतः एक भ्रम थी।
एक असुरक्षित पुरुष का आत्म-मुग्ध रवैया, जो खुद को

एक महिला के रूप में, ताकि वह महिलाओं के प्रति अपने जन्मजात भय से लड़ सके। (सिल, 1998)।

अन्य अवसरों पर, रामकृष्ण को जिन वस्तुओं की इच्छा नहीं होती थी (जैसे भांग, शराब), उनका ज़िक्र होते ही वे समाधि में चले जाते थे; ऐसा ही उनकी तीव्र भावनाओं (जैसे क्रोध) के कारण भी होता था। जब उनके चचेरे भाई ने सुझाव दिया कि उनका यह विचित्र व्यवहार मनोवैज्ञानिक कारणों से हो सकता है, तो रामकृष्ण ने "सब कुछ समाप्त करने के लिए लगभग नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली" (सिल, 1998 में)।

* * *

इन विभिन्न कारकों के प्रभाव को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि रामकृष्ण के स्वयं के आध्यात्मिक अनुशासन ने कई विचित्र मोड़ लिए।

अपनी तपस्या के दौरान, रामकृष्ण ने पुनः-

शरीर में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। राम की पूजा करते समय।

भक्त हनुमान, रामायण के वानर सरदार,

उसकी हरकतें बंदर जैसी थीं.... [रामकृष्ण-

ना एक कुशल बाल अभिनेता भी थे।] उनकी जीवनी में-

रामकृष्ण की जीवनी, उपन्यासकार क्रिस्टोफर इशरवुड पैरा-

संत ने अपने विचित्र व्यवहार का जो वर्णन किया था, उसे इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

“मैंने यह अपनी मर्जी से नहीं किया; यह अपने आप हो गया। और

सबसे अद्भुत बात यह थी कि मेरी रीढ़ की हड्डी का निचला हिस्सा

लंबाई लगभग एक इंच बढ़ गई! बाद में, जब मैंने 10 स्ट्रिपिंग द गुरुज़ का अभ्यास करना बंद कर दिया

इस प्रकार की भक्ति धीरे-धीरे अपनी सामान्य स्थिति में लौट आई।

आकार” (मर्फी, 1992)।

काली के पुजारी के रूप में मेरे [“पवित्र”] पागलपन के दिनों के दौरान

दक्षिणेश्वर के मंदिर में] मैं अपने ही लिंग की पूजा करता था

शिवलिंग... एक जीवंत शिवलिंग की पूजा। मैंने इसे सजाया भी।

मोती के साथ (निखिलानंद में, 1984)।

और ऋषि की पूजा विधि केवल उनके जननांगों तक ही सीमित नहीं थी:
रामकृष्ण अपशब्दों को अर्थपूर्ण मानते थे।
उन्हें वेदों और पुराणों में विशेष रुचि थी और वे इनका विशेष रूप से शौकीन थे।
जप (माला की गिनती का अनुष्ठान) करते हुए मंत्रों का जाप करना।
शब्द “कंट” (सिल, 1998)।
वास्तव में, जैसा कि स्वयं उस कथित अवतार ने अपने भक्तों से कहा था:
जैसे ही मैं "कंट" शब्द का उच्चारण करता हूँ, मुझे ब्रह्मांडीय दृश्य दिखाई देता है-
जीना ... और मैं उसमें डूब जाता हूँ (सिल में, 1998)।
दरअसल, यह उतना अजीब नहीं है जितना कि पहली नजर में लग सकता है, क्योंकि "कंट" शब्द स्वयं कुंडा या कुंटी से लिया गया है - जो हिंदू देवी काली के नाम हैं, जो रामकृष्ण की प्रियतम देवी हैं।
फिर भी यह काफी अजीब है।
किसी भी रूप में, 1861 में नवविवाहित रामकृष्ण ने एक महिला गुरु योगेश्वरी के साथ तांत्रिक (यौन) योग का अभ्यास शुरू किया। (वास्तव में उनका विवाह एक पाँच वर्षीय बालवली से हुआ था, जिसे स्वयं तेईस वर्षीय योगी ने चुना था और बाद में उसे उसके माता-पिता के पास परिपक्व होने के लिए छोड़ दिया था।) उस साधना (अर्थात्, आध्यात्मिक अभ्यास/अनुशासन) के दौरान उत्सुक शिष्य द्वारा किए गए अनुष्ठानों में कुत्तों और सियार के भोजन के बचे हुए टुकड़े खाना शामिल था। साथ ही, "मानव खोपड़ी में मछली और मानव मांस का मिश्रण" खाना भी शामिल था (सिल, 1998)। हालाँकि, उन्हें किसी साथी के साथ अनुष्ठानिक यौन क्रिया में शामिल करने के प्रयास, जो तंत्र का एक अनिवार्य घटक है, कम सफल रहे। वास्तव में, वे स्वयं सुरक्षित रूप से समाधि में लीन हो गए, और बाद में उन्होंने केवल अन्य साधकों को अनुष्ठानिक यौन संबंध बनाते हुए देखा।
इसी तरह, जब उनकी पत्नी बालिग हुईं, तो रामकृष्ण ने उनसे प्रेम करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे, और अनजाने में ही "अपरिपक्व अतिचेतना" में डूब गए। (ऐसा प्रतीत होता है कि उनका विवाह वास्तव में कभी संपन्न नहीं हुआ।) हालांकि, इससे उस युवती का अपने आध्यात्मिक दावे करने का हौसला कम नहीं हुआ:

अपने पति को ईश्वर मानकर सरदा
उन्हें पूरा विश्वास था कि विवाहित पत्नी होने के नाते वह भी दिव्य होनी चाहिए।
अपने पति के इस दावे के बाद कि वह वास्तव में शिव की बेटी थी
बाद में पत्नी, सरदा ने दावा किया: "मैं भगवती हूं, दिव्य शक्ति।"
ब्रह्मांड की माता" (सिल, 1998)।
यह स्पष्ट रूप से उसके पति द्वारा उसे कई दिनों तक रसोई में बंद रखने, खाना पकाने और यहां तक कि शौचालय में शौच करने की अनुमति न दिए जाने के बदले में दिया गया मुआवजा था।
* * *
[रामकृष्ण] नौवें युग के वास्तव में महान संतों में से एक थे।
11वीं शताब्दी का भारत (फ्यूअरस्टीन, 1992)।
प्रत्येक निष्ठावान शिष्य अपने गुरु के प्रति जिस उच्च सम्मान का भाव रखता है, उसे प्रदर्शित करते हुए, विवेकानंद ने स्वयं घोषणा की कि रामकृष्ण "सभी अवतारों में सबसे महान" थे (सिल, 1997)। हालाँकि, यह मूल्यांकन महान संत को जानने वाले सभी लोगों द्वारा साझा नहीं किया गया था:
मास्टर के भतीजे और साथी हृदय ने वास्तव में पुनः-
उसे मूर्ख समझा (सिल, 1998)।
बाद में उस पूजनीय गुरु ने अपनी सांसारिक माता के बारे में भी यही राय बनाई।
बहरहाल, अपने कथित अवतार स्वरूप के तहत, रामकृष्ण को "परमहंस" की उपाधि से नवाजा गया, जिसका अर्थ है "सर्वोच्च हंस"। यह उपाधि स्वयं सर्वोच्च आध्यात्मिक उपलब्धि और विवेक का प्रतीक है, हंस के समान, जिसके बारे में दावा किया जाता है कि वह दूध और पानी के मिश्रण से केवल दूध ही निकाल सकता है (संभवतः उसे दही बनाकर)।
1885 के मध्य में, रामकृष्ण को गले के कैंसर का पता चला। 1886 में उनका निधन हो गया, और वे अपने पीछे कई हजार शिष्य छोड़ गए (सच्चिदानंद, 1977)। जैसा कि अपेक्षित था, विवेकानंद ने उन भक्तों का नेतृत्व संभाला।
इन सब के बाद, सिल (1998) ने "आधुनिक युग के लिए [ईश्वर या दिव्य माँ के] अवतार" का अपना संक्षिप्त मूल्यांकन दिया, और निष्कर्ष निकाला कि, रामकृष्ण की बेहोशी की हालत एक स्मारकीय सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में होने के बावजूद, वे फिर

भी "थोड़े बच्चे और थोड़े मूर्ख" थे।

अध्याय III

सुंदर
बत्तख़ का बच्चा
(SWAMI VIVEKANANDA)

[विवेकनंद] को केवल पुनरुत्थान के देशभक्त-पैगंबर के रूप में ही नहीं देखा जाता है-
भारत के सज्जन व्यक्ति, लेकिन इससे कहीं अधिक—शिव और बुद्ध के अवतार
और यीशु (सिल, 1997)।
जन्म से ही परिपूर्ण, विवेकानंद को आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी।
अपनी मुक्ति के लिए अनुशासन। चाहे वह किसी भी अनुशासन का पालन करे।
इन प्रथाओं का उद्देश्य उस पर्दे को हटाना था जो...
उन्होंने फिलहाल अपने सच्चे दिव्य स्वरूप और मिशन को छिपा रखा था।
संसार में। उनके जन्म से पहले ही प्रभु ने उन्हें चुन लिया था।
आध्यात्मिक उद्धार में उनकी सहायता करने के लिए उनके साधन के रूप में
मानवता (निखिलानंद, 1996)।

1863 में कलकत्ता में जन्मे विवेकानंद ने सात साल की उम्र में ध्यान करना शुरू किया और दावा किया कि उन्होंने आठ साल की उम्र में पहली बार समाधि का अनुभव किया था।
वह स्वयं को ब्रह्मचारी, एक ब्रह्मचारी विद्यार्थी मानता था।
हिंदू परंपरा में, जो कड़ी मेहनत करते थे, वे तपस्वी अनुशासन को महत्व देते थे।

वे पवित्र वस्तुओं का आदर करते थे और स्वच्छता का आनंद लेते थे।

शब्द, विचार और कर्म (निखिलानंद, 1996)।

एक सुंदर और मांसल, हालांकि कुछ हद तक मोटे और मजबूत जबड़े वाले युवक, उनकी पहली मुलाकात अपने गुरु रामकृष्ण से 1881 में अठारह वर्ष की आयु में हुई थी। उस "सर्वोच्च हंस" के प्रिय और अग्रणी शिष्य के रूप में, युवा "बत्तख के बच्चे" विवेकानंद,

उसे लगातार उसकी मुग्ध प्रेमिका द्वारा चापलूसी और दुलार मिलता रहता था।
समलैंगिक गुरु [अर्थात रामकृष्ण], जिन्हें वह श्रद्धापूर्वक भोजन कराते थे,
उन्हें गुरु के लिए काफी नियमित रूप से गाने गाने के लिए मजबूर किया जाता था।
रहस्यमय उल्लास, और उस बूढ़े व्यक्ति ने बताया कि वह एक
... अपनी ध्यान साधना के माध्यम से व्यक्ति को साकार किया ... [एक] शाश्वत-
अंततः व्यक्ति को यह अहसास हुआ... स्त्री के आकर्षण से मुक्त...
धन (सिल, 1997)।

विवेकानंदजी ने अपने गुरु की मृत्यु से कुछ समय पहले, सन् 1886 में संन्यास की प्रतिज्ञा ली और स्वामी बन गए। (पूर्वी भारतीय नामों और उपाधियों में सम्मान दर्शाने के लिए "जी" प्रत्यय जोड़ा जाता है।) "स्वामी" शब्द का अर्थ है "स्वयं पर स्वामी होना" और यह तेरहवीं शताब्दी में शंकराचार्य द्वारा स्थापित संन्यासी संप्रदाय का नाम है। इस उपाधि को ग्रहण करने के लिए ब्रह्मचर्य और निर्धनता की औपचारिक प्रतिज्ञा लेनी पड़ती है।

दिलचस्प बात यह है कि बाद के वर्षों में, विवेकानंद ने वास्तव में शंकराचार्य का पुनर्जन्म होने का दावा किया (सिल, 1997)।

बहरहाल, अपने प्रिय दिवंगत गुरु के प्रति बारह वर्षों की निरंतर भक्ति के बाद, विवेकानंद तीस वर्ष की आयु में अमेरिका आए। वहाँ उन्होंने 1893 में शिकागो में आयोजित धर्म संसद में अमेरिकी पुरुषों और महिलाओं के समक्ष हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया।

बहिर्मुखी, शिक्षित और दुनिया से पूरी तरह अनजान
धनी महिलाओं की उदारता और दयालुता से वह मोहित हो गया था।
और स्पष्ट रूप से कहें तो, उसके प्रति निःस्वार्थ प्रशंसा और जुनून।
एक सुंदर, युवा, बुद्धिमान और कुछ हद तक मनमोहक व्यक्ति के साथ
दूर देश से आया भोला-भाला कुंवारा पुरुष (सिल, 1997)।

रामकृष्ण द्वारा विवेकानंद को दी गई पवित्रता, "स्वच्छ कर्मों" का आनंद और "स्त्रियों के आकर्षण से मुक्ति" की पूर्व-प्रशंसित बातें प्रथम दृष्ट्या कुछ अधूरी प्रतीत होती हैं। क्योंकि, विवेकानंद ने एक बार स्वीकार किया था कि 1884 में अपने पिता की मृत्यु के बाद, 14 गुरुओं का अपमान

वह वेश्यालयों में जाता था और शराब का सेवन करता था।
अपने दोस्तों की संगति (सिल, 1997)।
सौभाग्यवश, विवेकानंद उन घरों में महिलाओं के साथ मौज-मस्ती नहीं करते थे। बल्कि, उनके स्वयं के बयान के अनुसार, उनके पिता की मृत्यु के बाद उनका मन बहलाने के लिए उनके मित्र उन्हें जबरदस्ती वहाँ ले गए थे। लेकिन कुछ घूंट पीने के बाद, उन्होंने उन्हें यह उपदेश देना शुरू कर दिया कि ऐसी अय्याशी के कारण परलोक में उनका क्या होगा। इसके बाद, उनके मित्रों ने उन्हें "मनहूसियत मिटाने वाला" कहकर घर से निकाल दिया और वे अकेले ही नशे में धुत होकर लड़खड़ाते हुए घर लौटे (सिल, 2004)।
तो बस कुछ ज्यादा ही शराब पी ली थी। एक वेश्यालय में। मानवता के उद्धार में "ईश्वर द्वारा अपने साधन के रूप में चुने गए" उद्धारकर्ता से ऐसी उम्मीद करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।
लेकिन दोनों ही स्थिति में, "अगर आप आग से खेलते रहेंगे" तो आप जल ही जाएंगे, जैसा कि स्वयं विवेकानंद ने कहा था:
एक बार मेरे भीतर वासना की भावना जागृत हुई। मुझे इतनी घृणा हुई
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं जलती हुई बारूद के ढेर पर बैठा था, और इसमें समय लगा...
घाव भरने में लंबा समय लगता है (सिल, 1997 में)।
* * *
हिंदू विचारधारा के माध्यम से विश्व को जीतना मेरी महत्वाकांक्षा है।
उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक हिंदुओं को देखना (विवेक-
नंदा, [सिल, 1997] में)।
उस घोषणा के कुछ ही समय बाद विवेकानंद ने गर्वपूर्वक दावा किया कि उन्होंने "वेदांत की उस लहर को आगे बढ़ाने में मदद की है जो दुनिया भर में फैल रही है।" उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि "दस साल बीतने से पहले ही अंग्रेजों का एक बड़ा

हिस्सा वेदांती हो जाएगा" (सिल, 1997 में)।
उत्साही युवा भिक्षु की वैश्विक परिवर्तन लाने की आशाएँ केवल "दुनिया भर के हिंदुओं" की आध्यात्मिक क्रांति तक ही सीमित नहीं थीं। बल्कि, उनके अन्य विशाल सपनों में सामाजिक रूप से प्रगतिशील, आर्थिक रूप से संप्रभु और राजनीतिक रूप से स्थिर भारत का सपना भी शामिल था (सिल, 1997)।
हालांकि, उन लक्ष्यों की प्राप्ति में स्वामी द्वारा अप्रत्याशित कुछ ठोस वास्तविकताओं का सामना करना पड़ा, जिनमें अपने विचारों को प्रकट करने में आगे की सोच रखने की आवश्यकता भी शामिल थी। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि विवेकानंद इस तरह के दृष्टिकोण के स्पष्ट विरोधी थे।
सुंदर बत्तख का बच्चा 15

योजनाएँ! योजनाएँ! इसीलिए तो आप पश्चिमी लोग कभी कुछ बना नहीं सकते-
किसी ने धर्म को खा लिया! अगर आप में से किसी ने कभी ऐसा किया भी हो, तो वह केवल कुछ कैथोलिक ही थे।
ऐसे आध्यात्मिक संत जिनकी कोई योजना नहीं थी। धर्म कभी भी, कभी भी नहीं था। योजनाकारों द्वारा प्रचारित! (निखिलानंद में, 1996)।
इसलिए, इस घृणा को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 1897 के अंत से पहले ही विवेकानंद अपने लक्ष्यों को छोटा करने लगे थे:
मैंने अपने बहुत से लोगों को प्रेरित किया है, और बस इतना ही।
वांछित (निखिलानंद में, 1996)।
इसके अलावा, जैसा कि चेलिशेव (1987) ने भोले-भाले भिक्षु द्वारा वकालत किए गए सामाजिक सुधारों के संबंध में देखा:
विवेकानंद ने इस समस्या के समाधान के लिए प्रयास किया-
आदर्शवादी समाजवाद की स्थिति से सामाजिक असमानता,
उचित व्यक्ति की सद्भावना और उदारता पर आशाएं रखते हुए-
समान स्तर की कक्षाएं।
स्वाभाविक रूप से, एक वर्ष के भीतर ही स्वामी को उस दृष्टिकोण की निरर्थकता का अहसास हो गया था:
मैंने फिलहाल अपनी शिक्षा योजना को छोड़ दिया है।

जनसमूह (सिल में, 1997)।
यह धीरे-धीरे होगा। अब मुझे एक जोशीले समूह की आवश्यकता है।
मिशनरियों को पढ़ाने के लिए मद्रास में एक कॉलेज होना चाहिए।
तुलनात्मक धर्म... हमें प्रेस और अखबारों की आवश्यकता है।
अंग्रेजी और स्थानीय भाषाओं में मुद्रित (विवेकनंद,
1947).
एक निराश भक्त ने अंततः कहा:
स्वामी के पास कई अच्छे विचार थे, लेकिन उन्होंने उनमें से किसी को भी अमल में नहीं लाया।
.... उसने केवल (सिल में, 1997 में) बात की।
* * *
विवेकानंद ने दावा किया कि उन्होंने 1898 में स्वयं शिव के दर्शन किए थे। उस परमानंद की अवस्था में, उन्हें "अमरनाथ, अमरता के स्वामी की कृपा प्राप्त हुई थी, कि वे स्वयं की इच्छा के बिना नहीं मरेंगे" (निखिलानंद, 1996)।
लगातार धूम्रपान करने वाले, मधुमेह से ग्रसित वह संत, जो जाहिर तौर पर "उस अंधेरी रात में शांति से विदा हो रहे थे," फिर भी कुछ ही वर्षों में दुनिया से चले गए।
16 गुरुओं का सार उजागर करना

बाद में, 1902 में, कई वर्षों से बिगड़ते स्वास्थ्य के बाद, केवल उनतीस वर्ष की अपरिपक्व आयु तक पहुँचकर, उन्होंने "इस प्रकार अपनी ही भविष्यवाणी को पूरा किया: 'मैं चालीस वर्ष का नहीं हो पाऊंगा'" (निखिलानंद, 1996)।
बेशक, भविष्यवाणियां होती हैं, और फिर पहले की भविष्यवाणियां भी होती हैं:
विवेकानंद ने गंभीरतापूर्वक घोषणा की: “इस बार मैं सौ दूंगा-
मेरे शरीर को कई वर्षों से कष्ट हो रहा है.... इस बार मुझे कई प्रदर्शन करने होंगे
कठिन कार्य... इस जीवन में मैं अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करूंगा।
जितना मैंने अपने पिछले जीवन में किया था, उससे कहीं अधिक” (सिल, 1997)।
* * *
उन अनेक असफलताओं के बावजूद, विवेकानंद ने अपनी शिक्षाओं के विश्व पर महान और स्थायी प्रभाव की भविष्यवाणी की थी:

बेलूर मठ से निकलने वाले आध्यात्मिक आदर्श [उनमें से एक]
विवेकानंद के मठों/विश्वविद्यालयों] के बारे में उन्होंने एक बार कहा था।
मिस मैकलियोड, के विचारों की धाराओं को प्रभावित करेंगी।
विश्व में 1100 वर्षों से...
“ये सभी दृश्य मेरे सामने उभर रहे हैं”—ये उनके थे
बहुत ही शब्द (निखिलानंद, 1996)।
वेदांत सोसाइटी, जो विवेकानंद के हिंदू धर्म के स्वरूप को संरक्षित रखती है, के वर्तमान में लगभग 22,000 सदस्य हैं और विश्व भर में इसके एक दर्जन केंद्र हैं। इसलिए, यह स्वामी द्वारा परिकल्पित भव्य और व्यापक "वैश्विक आध्यात्मिक पुनर्जागरण" के किसी बड़े हिस्से के रूप में शायद ही योग्य हो सकती है। विवेकानंद की वास्तविक विरासत का बड़ा हिस्सा, केवल संगठनात्मक प्रचार से परे, शायद यही है कि उन्होंने अगली शताब्दी में अमेरिका में उनका अनुसरण करने वाले अन्य पूर्वी शिक्षकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

अध्याय IV

मेरी प्यारी माँ
(अरविंद)

जब पूर्व में भी यह समझा गया कि महान
श्रृंखला [या अस्तित्व का सत्तात्मक पदानुक्रम, प्रकट होना]
कारण, सूक्ष्म और भौतिक क्षेत्रों के माध्यम से] वास्तव में अन-
समय के साथ परिवर्तित या विकसित होना, महान अरबिंदो ने इसका प्रतिपादन किया।
अद्वितीय प्रतिभा के साथ धारणा (विल्बर, 2000ए; इटैलिक्स)
जोड़ा गया)।

अपने उपन्यास बूमरिटिस के "साइडबार ए" में—जो मूल रूप से एक के रूप में लिखा

गया था
गैर-काल्पनिक रचनाओं की बात करें तो, केन विल्बर (2002), जिन्हें "चेतना अनुसंधान का आइंस्टीन" कहा जाता है, उनकी पुस्तक के एक पात्र ने अरबिंदो (1872-1950) को "विश्व का महानतम दार्शनिक-ऋषि" बताया है। यहां तक कि अपनी बहुत पहले की (1980) "आत्मन प्रोजेक्ट" में भी उन्होंने अरबिंदो को "भारत का महानतम आधुनिक ऋषि" बताया था। और, हाल ही में,
ए. एस. दलाल की (2000) पुस्तक 'ए ग्रेटर साइकोलॉजी' की प्रस्तावना में उन्होंने एक बार फिर कहा है कि "श्री अरबिंदो घोष भारत के सबसे महान विचारक थे।"
आधुनिक दार्शनिक-ऋषि।" इसी प्रकार, अपनी (2000) इंटीग्रल साइकोलॉजी में, उन्होंने अरबिंदो को भारत का "महानतम आधुनिक दार्शनिक-ऋषि" नियुक्त किया है।
तो, अगर हम किसी एक बात पर पूरी तरह से यकीन कर सकते हैं तो वो यही है...

17
18 गुरुओं का पर्दाफाश

योग विद्वान जॉर्ज फ्यूरस्टीन, अन्य लोगों के साथ, अरविंदो के बारे में विल्बर के प्रशंसात्मक मूल्यांकन से पूरी तरह सहमत हैं। हालाँकि, अगेनंद भारती (1976) ने कुछ अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया:
मैं उनकी कही हुई अधिकांश बातों से सहमत नहीं हूँ; और मेरा मानना है कि उनकी लाइफ डिवाइन... को इसके आकार के लगभग एक-पांचवें हिस्से में संकुचित किया जा सकता है।
विषयवस्तु और संदेश में कोई महत्वपूर्ण हानि हुए बिना...
रहस्यवादी अध्ययन करने वालों के लिए यह काफी उबाऊ पठन है।
और जीवन भर धार्मिक पठन करते हैं, लेकिन यह आकर्षक और परिपूर्ण है।
उन लोगों के लिए धर्म परिवर्तन की ऊर्जा, जिन्होंने ऐसा नहीं किया है, जो कुछ चाहते हैं-
जो आध्यात्मिक होते हैं और आसानी से प्रभावित हो जाते हैं।
भारती स्वयं एक विद्वान और रामकृष्ण संप्रदाय के स्वामी दोनों थे।
अरबिंदो को, चाहे वे "महान दार्शनिक" हों या नहीं, द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र देशों के

प्रयासों में उनके कथित योगदान को ध्यान में रखते हुए, यह कहा जा सकता है कि वे अपने दृष्टिकोण में काफी अस्थिर थे।
श्री अरबिंदो ने अपनी सारी [जैसे, सूक्ष्म] शक्ति सहयोगियों के पीछे लगा दी।
और विशेष रूप से चर्चिल। एक विशेष घटना जिसमें उन्होंने भाग लिया।
डनकर्क से सफल निकासी में उनका भी हाथ था।
कुछ इतिहास की किताबों में यह उल्लेख है कि जर्मन सेनाओं ने "इन- के लिए" परहेज किया था।
त्वरित प्रगति से "स्पष्ट कारण" जो कि हो सकता था
मित्र देशों के लिए घातक साबित हुआ (हुचज़र्मेयर, 1998)।
अरबिंदो के अन्य प्रशंसक (जैसे, गुरुनेट, 2003) मित्र देशों के उस पलायन को एक कोहरे द्वारा सहायता प्राप्त मानते हैं, जिसे योगी ने अपनी चेतना की शक्तियों के माध्यम से स्पष्ट रूप से पानी के ऊपर छाने में मदद की, जिससे पीछे हट रही सेनाओं को छिपाया जा सके।
अरबिंदो की आध्यात्मिक साथी, "माँ," के बारे में भी माना जाता है कि उन्होंने आध्यात्मिक साधनों के माध्यम से युद्धकालीन श्रम को आगे बढ़ाया था।
अपनी अलौकिक शक्तियों के कारण, माता गहराई से देख पाने में सक्षम थीं।
उसने हिटलर के व्यक्तित्व को गहराई से समझा और पाया कि वह उसके संपर्क में था।
एक असुर [आकाशीय दानव] जो युद्धों का मूल कारण है और
विश्व में आपदा के आगमन को रोकने के लिए हर संभव प्रयास करता है
एकता (हुचज़र्मेयर, 1998)।
जब हिटलर को लगातार सफलता मिल रही थी और माँ
वह विपरीत दिशा में कोशिश कर रही थी, उसने कहा कि चमकती हुई माँ - प्यारी माँ

हिटलर का मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति आश्रम में आया करता था।
समय-समय पर यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है। चीजें बदल गईं।
हालात बद से बदतर होते चले गए। माँ ने एक नई रणनीति अपनाने का फैसला किया।

उस चमकते हुए प्राणी का रूप धारण कर लिया, ऐसा प्रतीत हुआ-
हिटलर के लिए और उसे रूस पर हमला करने की सलाह दी। अपने रास्ते में
आश्रम लौटकर, उसकी मुलाकात उस प्राणी से हुई। वह प्राणी...
माँ द्वारा उससे आगे निकल जाने से वह उत्सुक था। हिटलर का
रूस पर हमले ने ही उसके पतन को सुनिश्चित कर दिया...
माँ ने ध्यान में देखा कि कुछ चीनी लोगों के पास
कलकत्ता पहुँचकर उन्होंने उस चेतावनी के खतरे को पहचान लिया।
अपनी अलौकिक दैवीय शक्ति का प्रयोग करते हुए, उसने खतरे को दूर कर दिया।
सूक्ष्म जगत। बहुत बाद में जब चीनी सेना थी
भारत की सीमा के करीब पहुँचते हुए, स्तब्ध भारत को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था।
किस दिशा में मुड़ना है। चीनियों ने स्वयं ही निर्णय लिया कि
दुनिया को आश्चर्यचकित करते हुए, माँ ने पीछे हट गई।
भारत के विरुद्ध आगे बढ़ने से रोकने के लिए उनके आदेश रद्द कर दिए गए।
सूक्ष्म लोकों में शक्ति (एमएसएस, 2003)।
और न ही दुनिया को बुराई के चंगुल से बचाने के वे सफल प्रयास, माता द्वारा दावा की गई सूक्ष्म गतिविधियों में सबसे प्रभावशाली थे:
उनका कई देवताओं से सीधा संपर्क था। दुर्गा आती थीं।
मैं नियमित रूप से माँ के ध्यान में लीन रहती हूँ। विशेष रूप से
दुर्गा पूजा के दौरान जब माता दर्शन देती थीं, तब दुर्गा आती थीं।
एक दिन पहले। एक बार माँ ने दुर को समझाया-
दुर्गा ने सर्वोच्च सत्ता के प्रति समर्पण के महत्व पर जोर दिया।
क्योंकि वह स्वयं एक देवी थी, इसलिए उसे कभी यह ख्याल नहीं आया कि
उसे किसी उच्च शक्ति के सामने आत्मसमर्पण कर देना चाहिए। माँ ने दिखाया
दुर्गा ने आत्मसमर्पण करके जो प्रगति हासिल कर सकती थी, उसका अनुमान लगाया।
दुर्गा ने सहमति जताते हुए उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
दिव्य (एमएसएस, 2003)।
उस महिला का यह भी मानना था कि वह अपने पिछले जन्मों में इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ थीं—जो सोलहवीं शताब्दी में हेनरी अष्टम और ऐनी बोलेन की पुत्री थीं।

साथ ही, वह रूस की कैथरीन (पीटर द ग्रेट की पत्नी), एक मिस्र की रानी, मूसा की माता और जोन ऑफ आर्क भी थीं।
उनकी डायरी में लिखी बातों से पता चलता है कि बीमारी के दौरान भी उन्होंने...
उसने अपनी साधना के माध्यम से गूढ़ प्रभाव डालना जारी रखा।
पुरुष और घटनाएँ (निरोदबरन, 1990)।
20 गुरुओं का पर्दाफाश

[माँ] दिव्य माँ हैं [अर्थात, एक अवतार के रूप में या
अवतार] जिसने अपने ऊपर अस्पष्टता का आवरण ओढ़ने की सहमति दी है-
पवित्रता, पीड़ा और अज्ञानता ताकि वह प्रभावी ढंग से
हमें—मनुष्यों को—ज्ञान, आनंद और असीम की ओर ले चलो।
दा और सर्वोच्च भगवान को (अरबिंदो में, 1953)।
[माँ] के व्यक्तित्व में, अरबिंदो ने इस प्रकार देखा-
सुपरमाइंड की गंध। उनका मानना था कि वह उसकी अवतार थी या
पृथ्वी तल में अवतरित होना। साकार महामन के रूप में।
वह उस चेतना को बदल रही थी जिस पर पृथ्वी टिकी हुई थी।
उसने खुद को पाया, और इस प्रकार उसका काम अचूक था.... वह करती है
उन्होंने एक अनुयायी को निर्देश दिया कि वे केवल ईश्वर का अवतार ही न बनें,
लेकिन वास्तव में ईश्वर ही मनुष्य के रूप में प्रकट होता है (माइनर,
1999; इटैलिक्स जोड़े गए)।
द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वयं अरविंदो ने सार्वजनिक भाषण में इस अवसर का उल्लेख किया।
15 अगस्त, 1947 स्वतंत्र भारत का जन्मदिन है। यह उस दिन की याद दिलाता है जब भारत स्वतंत्र हुआ था।
यह एक पुराने युग का अंत और एक नए युग की शुरुआत थी...
15 अगस्त मेरा जन्मदिन है और यह स्वाभाविक रूप से खुशी की बात है।
मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि इसने इतना व्यापक महत्व कैसे ग्रहण कर लिया।
कैंसर। मैं इस संयोग को आकस्मिक दुर्घटना नहीं मानता।

लेकिन यह उस दिव्य शक्ति की स्वीकृति और मुहर के रूप में है जो मार्गदर्शन करती है।
मेरे जीवन की शुरुआत के काम पर मेरे कदम, शुरुआत
इसके पूर्ण फलने-फूलने के बारे में (निरोदबरन में, 1990)।
इस प्रकार, मित्र देशों के साथ उनके कथित युद्ध प्रयासों के अतिरिक्त, यह "विश्व के सबसे महान दार्शनिक-ऋषि" की भव्य मानसिकता थी। ध्यान दें कि यह, मदर की डायरी प्रविष्टियों की तरह, अरबिंदो का स्वयं का दस्तावेजी दावा था, न कि उनके अनुयायियों द्वारा उनकी ओर से किया गया कोई संभावित अतिशयोक्तिपूर्ण कथन। हमारे विश्व के गुरु-पुरुषों के निजी अहंकार और आत्ममुग्धता के बावजूद, उनमें से किसी के लिए भी उपरोक्त अतिशयोक्ति की तरह इसे सार्वजनिक रूप से इतनी बेशर्मी से प्रदर्शित करना दुर्लभ है।
और, हमेशा की तरह, गुरु और उनकी माता के प्रति निष्ठा सुनिश्चित करने के तरीके हैं, जैसा कि स्वयं अरबिंदो (1953; इटैलिक्स जोड़े गए) ने उल्लेख किया है:
एक छात्र बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा था क्योंकि वह
उसने स्वयं को माँ के सामने खोल दिया; लेकिन अगर वह मूर्खताओं की अनुमति देता है
जैसे [किसी द्वारा की गई एक अनिर्दिष्ट, अपमानजनक टिप्पणी - प्रिय माँ 21]

अन्य भक्त के मन में माता के बारे में विचार आने पर, यह संभव है कि...
उसे प्रभावित करो, उसे माँ से दूर करो और उसकी प्रगति रोक दो।
जहां तक [उस शिष्य का सवाल है जिसने “मूर्खतापूर्ण” टिप्पणी की थी], अगर
उसने (माँ के बारे में) ऐसी बात कही और सोची।
इससे यह पता चलता है कि हाल ही में उनका स्वास्थ्य इतना खराब क्यों रहा है।
यदि कोई व्यक्ति शत्रुतापूर्ण शक्तियों का मुखपत्र बन जाता है और
अगर कोई व्यक्ति उनके झूठ को बढ़ावा देता है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि
उसके अंदर कुछ गड़बड़ हो जानी चाहिए।
एक अनुयायी ने बाद में पूछा, "शत्रु शक्तियों की क्रिया के कारण होने वाले कष्टों से बचने के लिए साधकों के लिए सर्वोत्तम साधन क्या है?" इस पर अरबिंदो (1953;

इटैलिक्स जोड़े गए) ने उत्तर दिया: "माता में आस्था और पूर्ण समर्पण।"
[माँ के साथ शारीरिक निकटता, उदाहरण के लिए, राख में रहने के माध्यम से-
साधना की पूर्णता के लिए राम अपरिहार्य है।
भौतिक तल। भौतिक और बाह्य का रूपांतरण।
अन्यथा अस्तित्व संभव नहीं है [इटैलिक्स जोड़े गए] (अरबिंदो,
1953).
इस प्रकार की शिक्षाएँ, निःसंदेह, आश्रम में रहने का एक ठोस कारण प्रदान करती हैं। ऐसे सभी मामलों में, नेताओं द्वारा इन प्रतिबंधों पर जोर देने के पीछे चाहे जो भी मूल प्रेरणाएँ रही हों, व्यवहार में इसका स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। अर्थात्, इससे उनके शिष्य अपने समुदाय को छोड़ने से डरते हैं, या यहाँ तक कि संबंधित "प्रबुद्ध" नेताओं की "अचूकता" पर प्रश्न उठाने से भी डरते हैं।
अन्य महत्वपूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्वों की तरह ही, अरबिंदो नामक महान दार्शनिक-ऋषि ने भी पिछले जन्मों में महानता प्राप्त किए बिना उस मुकाम तक नहीं पहुंचे थे।
श्री अरबिंदो अपने आश्रम में पुनर्जन्म के रूप में जाने जाते थे।
नेपोलियन। नेपोलियन का जन्मदिन भी 15 अगस्त को ही था... उनके
ऐसा माना जाता था कि पिछले जन्मों में वह लियोनार्डो दा विंची थे।
माइकलएंजेलो, कृष्ण और कई अन्य व्यक्ति भी।
श्री अरबिंदो से पूछा गया कि क्या वे शेक्सपियर की भूमिका में थे।
ठीक है, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिल सका (गुरुनेट, 2003)।
कृष्ण का अवतार होने के नाते, अरबिंदो भी एक अवतार ही होते, जैसा कि उन्होंने स्वयं स्पष्ट रूप से (1953 में) दावा किया था। हालांकि, जैसा कि हम आगे विस्तार से देखेंगे, अन्य आध्यात्मिक मार्गों में भी इन्हीं पुनर्जन्म संबंधी सम्मानों के लिए प्रतिस्पर्धा है।
22 गुरुओं का पर्दाफाश

इसके अलावा, दा विंची 1452 से 1519 तक जीवित रहे, जबकि माइकल एंजेलो 1475 से 1564 तक इस धरती पर रहे। इन दोनों जन्मों के बीच कालानुक्रमिक ओवरलैप को देखते हुए, यदि इस पुनर्जन्म को सत्य माना जाए, तो यह केवल "एक आत्मा का दो शरीरों में अवतरित होना" ही हो सकता है। अर्थात्, यह दा विंची का

स्वयं माइकल एंजेलो के रूप में पुनर्जन्म नहीं हो सकता था। इस प्रकार, माइकल एंजेलो की कला पूर्व जन्म के माइकल एंजेलो के कार्यों पर आधारित नहीं हो सकती थी।

या शायद किसी ने भी उन अतिरंजित दावों को करने और सार्वजनिक करने से पहले प्रासंगिक तिथियों को देखने की जहमत ही नहीं उठाई।

बहरहाल, दा विंची से कथित संबंध यहीं खत्म नहीं होता:

1940 की शुरुआत में, [अरबिंदो का एक शिष्य] आया और

मैंने माँ को प्रसिद्ध "मोना लिसा" की एक तस्वीर दिखाई, और उसके बाद निम्नलिखित संक्षिप्त बातचीत हुई:

माताजी: श्री अरबिंदो कलाकार थे।

चंपकलाल: लियोनार्डो दा विंची?

मां ने मीठी मुस्कान के साथ कहा: हां।

चंपकलाल: माँ, लगता है यह [चित्र] आपका है?

माँ: हाँ, क्या तुम्हें समानता नहीं दिखती? (लाइट, 2003)।

तो जाहिर है, अरबिंदो न केवल लियोनार्डो दा विंची के कथित पुनर्जन्म थे, बल्कि उनकी आध्यात्मिक साथी, मदर, ने भी मोना लिसा के चित्र का विषय होने का दावा किया था।

“पृथ्वी के इतिहास की शुरुआत से ही,” माँ ने कहा-

उन्होंने स्पष्ट किया, “श्री अरबिंदो ने हमेशा महान संगीत जगत की अध्यक्षता की है।”

सांसारिक रूपांतरण, किसी न किसी रूप में,

एक नाम या दूसरा” (पेन, 1998)।

लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, ऐसे बयान मुझे अपने बचपन की याद दिलाते हैं, जब मेरा एक बहुत ही चंचल चचेरा भाई था जो इस बात पर बहस करना बंद ही नहीं करता था कि "सबसे ताकतवर डायनासोर" कौन सा है। ऐसी बातों पर मेरा रवैया बस इतना ही होता है: "प्लीज़, बस करो। प्लीज़।"

बहरहाल, ऑरोबिंदो जैसे "महान सांसारिक परिवर्तक" भी स्पष्ट रूप से "अन्य आध्यात्मिक दिग्गजों के कंधों पर खड़े हैं":

यह सच है कि मुझे लगातार विवे की आवाज सुनाई दे रही थी।

1908 में, कन्नड़ ने जेल में मुझसे दो सप्ताह तक बात की।

मैंने अपने एकांत ध्यान में उनकी उपस्थिति का अनुभव किया (अरबिंदो, 1953).

अरबिंदो और उनकी माता ने एक बार फिर दावा किया कि उन्होंने अकेले ही द्वितीय विश्व युद्ध का रुख मोड़ दिया था, और कहा कि पूर्व संत अनादि काल से "महान सांसारिक परिवर्तनों के स्वामी" रहे हैं। यदि कोई इस बात पर विश्वास करता है, तो विवेकानंद की आत्मा द्वारा कथित तौर पर जेल में उनसे मिलने की घटना इसके सामने फीकी पड़ जाएगी। अरबिंदो को "विश्व का महानतम दार्शनिक-संत" मानने के विचार के लिए भी यही बात लागू होती है। क्योंकि योगी ने स्वयं इससे कहीं अधिक बड़े-बड़े दावे किए थे, और वास्तव में इसलिए वे अपनी महानता की समकालीन मान्यता को "कमज़ोर प्रशंसा के साथ निंदा" से अधिक कुछ नहीं मान सकते थे।

बहरहाल, अगर हम यह न मानें कि द्वितीय विश्व युद्ध में अरबिंदो और उनकी माँ की भूमिकाएँ ठीक वैसी ही थीं जैसा उन्होंने खुद दावा किया था, तो केवल दो ही निष्कर्ष निकल सकते हैं। या तो यह कि वे दोनों घोर भ्रम में थे और तथ्य-कल्पना या वास्तविकता-कल्पना में अंतर नहीं कर पा रहे थे; या फिर वे दोनों अपने जीवन की मनगढ़ंत कहानियाँ गढ़ रहे थे।

तो क्या आप मानते हैं कि दक्षिण भारत में एक "विश्व के महानतम दार्शनिक-ऋषि" और उनकी "अचूक" आध्यात्मिक साथी - जिनका स्वयं "कई देवताओं से सीधा संपर्क था," और इस प्रक्रिया में उन्होंने उन्हें शिक्षा भी दी - ने केवल आध्यात्मिक शक्ति और अन्य गुप्त शक्तियों के उपयोग के माध्यम से अभूतपूर्व तरीकों से मानव इतिहास की दिशा को मौलिक रूप से बदल दिया?

मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं मानता।

“भारत के महानतम आधुनिक संत” की उपाधि के लिए प्रतिस्पर्धा तो निश्चित रूप से है। उदाहरण के लिए, इनर डायरेक्शंस द्वारा प्रकाशित रमण महर्षि वार्ता के हालिया (2000) पुनर्प्रकाशन की प्रस्तावना में विल्बर ने स्वयं रमण महर्षि की तुलनात्मक रूप से उच्च प्रशंसा की थी।

“टॉक्स” महानतम ऋषि की जीवंत वाणी है [इटैलिक्स जोड़े गए]
बीसवीं सदी का।

यह सम्मान स्वाभाविक रूप से इस तथ्य के बावजूद दिया गया है कि विल्बर ने कभी महर्षि के साथ बैठकर बातचीत नहीं की, न ही उनसे कभी मुलाकात की, वे उन्हें केवल उनके मौजूदा, संपादित लेखों के माध्यम से ही जानते हैं।
महर्षि की सरल, सारगर्भित रहस्यवाद शैली, जिसमें वे स्वयं से केवल यह प्रश्न पूछते हैं, "मैं कौन हूँ?"—साक्षात्कारिक आत्म में विलीन होने के प्रयास में—साधारण हो जाती है, किसी को भी प्रभावित कर सकती है। इसी प्रकार, उनका यह कथन कि "प्रेम आत्मा से भिन्न नहीं है... आत्मा ही प्रेम है" (24 स्ट्रिपिंग द गुरुज़ में) भी सराहनीय है।

वॉल्श, 1999) निश्चित रूप से मन को सुकून और खुशी का एहसास दिलाएगा। फिर भी, वह व्यक्ति अपनी विलक्षणताओं से रहित नहीं था:
भारतीय ऋषि रमण महर्षि ने एक बार पॉल ब्रंटन से कहा था
कि उसे पवित्र पर्वत के नीचे बसे शहरों के दर्शन हुए थे।
अरुणाचला, जहाँ उन्होंने अपना पूरा वयस्क जीवन व्यतीत किया (फ्यूअरस्टीन, 1998).
दरअसल, श्री रमण महर्षि के साथ कुख्यात वार्ता (2000) के खंड 1 के वार्ता 143 में—जिस पाठ पर विल्बर ने ऊपर टिप्पणी की है—हमें यह मिलता है:
मैंने सपनों में गुफाएँ, गलियों वाले शहर आदि देखे हैं, और एक
इसमें पूरी दुनिया समाहित है... सभी सिद्ध ["पूर्णता प्राप्त प्राणी"]
वहाँ होने की अफवाह है।
यदि ऐसे भूमिगत शहरों को भौतिक स्तर पर विद्यमान माना जाए, तो वे न तो वर्तमान में और न ही अतीत में पूर्व के ऐतिहासिक "स्वर्ण युगों" और उनकी संबंधित सभ्यताओं के बिना अस्तित्व में आ सकते हैं, और वे सभ्यताएँ हमारी सभ्यता से कहीं अधिक उन्नत थीं। हालाँकि, इस विचार को आम तौर पर केवल जादुई/पौराणिक सोच और इसी प्रकार की अवधारणाओं का परिणाम माना जाता है।
रोमांटिक पारलौकिकवादी... आमतौर पर भ्रमित करते हैं-
आयु-तरीका चेतना और विकास-शीर्ष चेतना, या
औसत निम्न और वास्तव में उन्नत, [और] उस भ्रम का उपयोग करें
यह दावा करना कि बीते युग किसी प्रकार के स्वर्ण युग थे

जिसे हमने बाद में नष्ट कर दिया। वे जादू को भ्रमित करते हैं।
और मानसिक, मिथक और सूक्ष्म मूलरूप (विल्बर, 1983ए)।
तो सवाल यह उठता है: क्या आप मानते हैं कि “सभी सिद्ध” भारत के एक विशेष पर्वत के नीचे (यहां तक कि सूक्ष्म स्तर पर भी) शहरों और गुफाओं में निवास करते हैं? (वास्तव में, विश्वभर की संस्कृतियों में पर्वतों को पवित्र माना जाता है और उन्हें सूक्ष्म रीढ़ की हड्डी का प्रतीक समझा जाता है। हालांकि, उनकी पवित्रता और “आत्माओं के प्राकृतिक निवास” होने की बात को अक्षरशः स्वीकारना अत्यंत असामान्य है।) यदि नहीं, तो क्या “सदी के महानतम ऋषि” को मतिभ्रम हो रहा था? यदि हां...
या फिर, यदि ऐसा नहीं भी है तो:
महर्षि के आश्रम में सारा भोजन ब्राह्मणों द्वारा तैयार किया जाता था।
कुछ मिनटों के लिए ताकि यह संपर्क से दूषित न हो सके
निम्न जातियों और विदेशियों के साथ...
प्रिय माँ 25

भगवान हमेशा जातिगत रीति-रिवाजों के पालन पर जोर देते थे।
“यहाँ आश्रम में रहते थे, हालाँकि वे कट्टर रूढ़िवादी नहीं थे” [मिस ने कहा]
मर्स्टन, महर्षि के एक लंबे समय से भक्त] (मार्शल, 1963)।
महर्षि ने स्वयं को बुद्ध के समान पूजे जाने दिया।
(डेनिएलू, 1987)।
"महानतम ऋषि"—जिनके लिए "आत्मा प्रेम है," लेकिन निम्न जातियाँ और विदेशी स्पष्ट रूप से नहीं हैं, इसके बावजूद कि वे सभी चीजों को समान रूप से निष्पक्ष रूप से देखते थे, और इस तथ्य के बावजूद कि वे अन्यथा "कठोर रूढ़िवादी" नहीं थे या धार्मिक निषेधों का पालन करने पर आमादा नहीं थे।
दुर्भाग्य से, जैसा कि हम देखेंगे, इस तरह की क्रूर असंगति हमारे संसार के "महान आध्यात्मिक व्यक्तित्वों" से अपेक्षित ही होनी चाहिए।

अध्याय V

कृष्ण
(जिद्दू कृष्णमूर्ति)

मसीहा, या विश्व शिक्षक, को पत्राचार करने के लिए बनाया गया था
अवतार की पारंपरिक हिंदू आकृति के साथ, एक दैवीय व्यक्ति-
कुछ महत्वपूर्ण समयों पर दुनिया की निगरानी करने के लिए पुत्र को भेजा जाता है
एक नए धार्मिक युग का उदय (वर्नन, 2001)।
मेरे बचपन में किसी ने भी उस शब्द [अर्थात, "विश्व शिक्षक"] का प्रयोग नहीं किया था।
चूंकि मैं उनका नाम, कृष्णमूर्ति, ठीक से नहीं बोल पाता था, इसलिए उन्होंने
मुझे वह हमेशा से ही क्रिंश के नाम से जाना जाता था (स्लोस, 2000)।
मैडम बी
अड्यार में नीचे
मुझे मास्टर्स टूर्नामेंट बहुत पसंद आया...
लेकिन कृष्ण,
जो ओजाई में रहते थे,
नहीं!

जिद्दू कृष्णमूर्ति की खोज एक किशोर लड़के के रूप में थियोसोफिकल सोसाइटी के चार्ल्स लीडबीटर ने भारत के मद्रास में एक समुद्र तट पर की थी।

थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना स्वयं न्यूयॉर्क शहर में पूर्वी यूरोपीय "द्रष्टा" मैडम हेलेना पी. ब्लावत्स्की (एचपीबी) द्वारा 1875 में की गई थी। इसके सदस्यों की संख्या शीघ्र ही 100,000 से अधिक हो गई; 1882 में भारत के अड्यार में एक एशियाई मुख्यालय स्थापित किया गया।
थियोसोफिकल सोसाइटी... शुरू में बेहद सफल रही।

और इसने बौद्धिक स्तर के अनुयायियों को आकर्षित किया।
आविष्कारक थॉमस एडिसन और डार्विन के मित्र और सहयोगी-
टोर अल्फ्रेड रसेल वालेस (स्टोर, 1996)।
डी. टी. सुजुकी जैसे विद्वान भी इस विषय में कम प्रसिद्ध नहीं थे।
यह कहने के लिए तैयार हूं कि [ब्लावत्स्की की] बौद्ध धर्म की व्याख्या
द वॉइस ऑफ साइलेंस में दी गई शिक्षाएँ... एक दीक्षा की गवाही देती हैं।
महायान सिद्धांत के गहन पक्ष में (ओल्डमीडो,
2004).
शायद। और फिर भी—
डब्ल्यू. ई. कोलमैन ने दिखाया है कि [ब्लावत्स्की की आइसिस अनवील्ड]
इसमें लगभग एक प्रतिशत की निरंतर और बार-बार की गई साहित्यिक चोरी शामिल है।
सौ समकालीन ग्रंथ, मुख्य रूप से प्राचीन और
विदेशी धर्म, दानव विद्या, फ्रीमेसनरी और इसके पक्ष में तर्क
अध्यात्मवाद....
[द सीक्रेट डॉक्ट्रिन] ने एक बार फिर उसकी साहित्यिक चोरी को उजागर कर दिया, लेकिन
अब उनके स्रोत मुख्य रूप से हिंदू धर्म पर समकालीन रचनाएँ थीं।
वाद और आधुनिक विज्ञान (गुडरिक-क्लार्क, 2004)।
दिलचस्प बात यह है कि जब ब्लावत्स्की और उनके सह-संस्थापक, कर्नल हेनरी ओलकॉट, 1879 में भारत के लिए रवाना हुए, तो उन्होंने अमेरिका में थियोसोफिकल सोसाइटी का प्रभार जिस व्यक्ति को सौंपा था, वह बेसबॉल के आविष्कारक एबनेर डबलडे थे (फील्ड्स, 1992)।
ब्लावत्स्की ने स्वयं "उन्नत गुरुओं" के एक पदानुक्रम के अस्तित्व की शिक्षा दी, जिनमें भगवान मैत्रेय, विश्व शिक्षक भी शामिल थे, जिनके अवतारों में कथित तौर पर कृष्ण और यीशु दोनों शामिल थे। हालाँकि, उन्हीं गुरुओं को सार्वजनिक जीवन की वास्तविक हस्तियों पर आधारित किया गया था, उदाहरण के लिए, पूर्वी भारतीय राजनीतिक सुधार में शामिल व्यक्तियों पर (वर्नन, 2001)। उनसे अन्य तरीकों से भी धोखाधड़ी से संपर्क किया गया था:

[ब्लावत्स्की की गृहणी, एम्मा कटिंग ने प्रदर्शन किया]
कैसे उन्होंने और एचपीबी ने मिलकर एक गुड़िया बनाई थी, जिसे उन्होंने...
अर्ध-अंधेरे में एक लंबे बांस के खंभे पर हेरफेर किया गया-
गुरु के कथित दर्शनों को देखें। एम्मा ने भी 28 गुरुओं को नंगा किया था।

थियोसोफिकल प्रमुखों पर "अवक्षेपित" पत्र गिराए गए
छत में छेद थे, जबकि उसके पति ने फिसलने वाले छेद बना दिए थे।
मंदिर कक्ष में पैनल और छिपे हुए प्रवेश द्वार [समीपवर्ती]
एचपीबी के शयनकक्ष में] ब्लावत्स्की के आने-जाने की सुविधा के लिए
और सभी ब्रोच, बर्तनों के प्रतिस्थापन को संभव बनाना।
और अन्य वस्तुएं जिनका उपयोग उसने अपने प्रदर्शनों में किया [अर्थात,
कथित भौतिकीकरण या “आवंटन” के रूप में]....
रूसी पत्रकार वी.एस. सोलोविएफ़ ने दावा किया कि
ब्लावत्स्की को चांदी की घंटियों के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया
[संस में] खगोलीय संगीत का निर्माण किया... ब्लावत्स्की ने स्वीकार किया
सोलोविएफ ने साफ तौर पर कहा कि ये घटनाएँ धोखाधड़ी थीं।
उन्होंने आगे कहा कि लोगों पर शासन करने के लिए उन्हें धोखा देना आवश्यक है।
(वाशिंगटन, 1995)।
मैडम ब्लावत्स्की की मृत्यु 1891 में हुई थी। हालाँकि, उनकी मृत्यु से पहले ही, लीडबीटर ने ब्लावत्स्की के गढ़े हुए "गुरुओं" से स्वयं संदेश प्राप्त करने का दावा करना शुरू कर दिया था।
प्रसिद्ध भविष्यवक्ता लीडबीटर पर, इसके अलावा, किशोर लड़कों की एक श्रृंखला के प्रति अभद्र व्यवहार का आरोप पहले भी (और बाद में भी) लगाया गया था:
लीडबीटर के पसंदीदा लड़कों में से एक ने उस पर गुप्त रूप से आरोप लगाया।
गुप्त विद्या के प्रशिक्षण की आड़ में लड़कों को हस्तमैथुन करना सिखाना,
और यह संकेत दिया कि हस्तमैथुन केवल प्रस्तावना थी
समलैंगिक कामुकता की संतुष्टि (वाशिंगटन, 1995)।
बहरहाल, युवा "समुद्र तट पर कृष्ण" कोई सामान्य किशोर नहीं थे, जिन्हें ऐसे सांसारिक पाठों की आवश्यकता हो, जैसा कि उस दिव्यदर्शी ने बखूबी देखा था।

वास्तव में, उनके औरा का अध्ययन करने पर, लीडबीटर ने कृष्णमूर्ति को एक अत्यंत परिष्कृत आत्मा पाया, जो स्पष्ट रूप से स्वार्थ, अर्थात् अहंकार से पूरी तरह मुक्त थे। इसके कुछ समय बाद ही लीडबीटर ने कृष्णमूर्ति को भगवान मैत्रेय का वर्तमान "माध्यम" घोषित कर दिया और थियोसोफिकल समुदाय में उन्हें तदनुसार प्रशिक्षित किया। (इससे पहले लीडबीटर ने एक अमेरिकी लड़के को इसी पद के लिए आगे बढ़ाया था, लेकिन बाद में उन्होंने अपना विचार बदल दिया। फिर लीडबीटर ने एक और पूर्वी भारतीय युवक को विश्व शिक्षक की उपाधि के लिए प्रस्तावित किया। वह लड़का, राजगोपाल, कृष्णमूर्ति के वित्तीय मामलों का प्रबंधन करने लगा, जबकि उसकी पत्नी ने जिद्दू के अन्य मामलों को संभाला, जैसा कि हम आगे देखेंगे।)
दोनों भाई [अर्थात कृष्णमूर्ति और उनके छोटे भाई]
डाउट को लीडबीटर के स्वभाव में होने वाले उतार-चढ़ाव समझ में नहीं आते थे।
कृष्ण 29

एक पल वे प्यार से पूजे जाते, दुलार किए जाते, आदर्श माने जाते, और
अगले को किसी गूढ़ नीतिशास्त्र के उल्लंघन के लिए फटकारा गया।
वे क्वेट को नहीं समझ पाए (वर्नन, 2001)।
इस पुस्तक में हम ऐसे अनेक उदाहरण देखेंगे जिनमें विद्यार्थियों और शिष्यों को उनके गुरुओं और गुरुओं द्वारा समान परिस्थितियों में डाल दिया जाता है। ऐसी मनोवैज्ञानिक उलझनों में, जिन व्यक्तियों के लिए अपने "गुरु" की स्वीकृति प्राप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, वे यह समझ नहीं पाते कि उस स्वीकृति को कैसे प्राप्त किया जाए, जिसके अक्सर दुखद परिणाम होते हैं। वास्तव में, इस प्रकार के अनियमित पुरस्कार/दंड के प्रति दो चरम प्रतिक्रियाएँ संभव हैं, जहाँ व्यक्ति यह निश्चित नहीं कर पाता कि पुरस्कार किस स्थिति में प्राप्त होगा या दंड क्या होगा। अर्थात्, व्यक्ति या तो अपनी सभी प्रतिक्रियाओं को त्याग कर क्षण की "विकल्पहीन जागरूकता" में जी सकता है; या, अक्सर, "सही अनुमान लगाने" की उस असंभवता को मनोविकार, हिंसा या घोर अवसाद में बदल सकता है।
वास्तव में, पावलोव के स्वयं के छात्रों द्वारा प्रासंगिक प्रयोग किए गए हैं (विन, 2000), जिनमें कुत्तों को पहले पुरस्कार और दंड के माध्यम से वृत्त और दीर्घवृत्त में अंतर करना सिखाया गया था। फिर, वृत्तों को धीरे-धीरे चपटा किया गया और

दीर्घवृत्तों को अधिक गोल बनाया गया, जब तक कि प्रयोग में शामिल जानवर उनमें अंतर करने में असमर्थ नहीं हो गए। इस प्रकार कुत्ते संबंधित पुरस्कार प्राप्त करने के लिए "सही प्रतिक्रिया" देने में असमर्थ हो गए, इसके बजाय उन्हें "यादृच्छिक रूप से" पुरस्कृत और दंडित किया गया। जानवरों पर इसका प्रभाव यह हुआ कि पहले खुश और उत्साहित कुत्ते हिंसक हो गए और अपने प्रयोगकर्ताओं को काटने लगे। इसके विपरीत, अन्य पहले "शांत और बेफिक्र" जानवर सुस्त हो गए और किसी भी चीज की परवाह नहीं करने लगे।

बहरहाल, लीडबीटर द्वारा खोजे जाने से पहले भी, जब कृष्णमूर्ति भारत की सरकारी स्कूल प्रणाली में थे, उनकी स्वयं की शिक्षा एक दर्दनाक अनुभव रही थी:

कृष्ण कभी भी शिक्षकों को खुश करने में रुचि नहीं रखते थे।

अपनी कमियों के लिए उसे बेरहमी से दंडित किया गया और उसे मंदबुद्धि करार दिया गया।

चिली (वर्नोन, 2001)।

पढ़ाई न कर पाने के कारण उसे लगभग हर दिन बेंत से पीटा जाता था।

पाठ। स्कूल में उसका आधा समय आँसुओं में बीतता था।

रैंडा (लुटियंस, 1975)।

इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बाद के वर्षों में कृष्णमूर्ति ने शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति बहुत कम सम्मान दिखाया:

30 गुरुओं का पर्दाफाश

[नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिक विज्ञानी डेविड बोहम] ने मानव जाति के बारे में बात की थी-

कृष्णमूर्ति के हाथों उन्हें जो उत्पीड़न झेलना पड़ा था

जिसने उनकी उपस्थिति में "प्रोफेसरों" के बारे में चुटीले चुटकुले सुनाए।

और उन्होंने बोहम के काम के महत्व को स्वीकार नहीं किया...

कृष्णमूर्ति के अनादर के कारण उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा।

उसे, जो कभी-कभी स्पष्ट रूप से दिखाई देता था (पीट, 1997)।

* * *

कृष्णमूर्ति के समकालीन रूप से पृथ्वी पर प्रकट होने से थियोसोफिस्टों को "मानव

जाति के उद्धार" की आशा मिली। वर्षों तक विश्व गुरु के रूप में उनकी भूमिका के लिए प्रशिक्षित किए जाने के बाद, थियोसोफी के गुरुओं की सुरक्षा और लीड-बीटर के इस संबंध में दिए गए मार्गदर्शक दर्शनों में कृष्णमूर्ति का विश्वास 1925 में उनके छोटे भाई की अप्रत्याशित मृत्यु से चकनाचूर हो गया। (जिद्दू को पहले सूक्ष्म जगत में गुरुओं के साथ अपनी कथित मुलाकातों में आश्वासन दिया गया था कि उनका भाई इस बीमारी से बच जाएगा।) इसके बाद, उन्होंने अपने स्वयं के दर्शनों सहित उन सभी दर्शनों को केवल व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति के रूप में देखा और गुरुओं के गुप्त पदानुक्रम को अप्रासंगिक माना (वर्नन, 2001)।

हालांकि, इसका यह मतलब नहीं था कि कृष्णमूर्ति ने सामान्य रूप से रहस्यवाद को अस्वीकार कर दिया था:

1926 की शरद ऋतु तक [कथित कुंडलिनी जागरण के बाद-
[जो 1922 में शुरू हुआ] कृष्णा ने यह स्पष्ट कर दिया... कि एक
कायापलट हो चुका था। [कुंडलिनी एक सूक्ष्म शक्ति है]
माना जाता है कि ऊर्जा रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से में निवास करती है। जब
“जागृत” होकर रीढ़ की हड्डी से होते हुए मस्तिष्क तक निर्देशित होकर, यह आगे बढ़ता है-
[उत्साहपूर्ण आध्यात्मिक अनुभूति उत्पन्न करता है।] उसका पूर्व व्यक्तित्व
उससे सब कुछ छीन लिया गया था, जिससे वह लगातार तनाव की स्थिति में था।
और ईश्वरत्व के साथ अपरिवर्तनीय मिलन (वर्नन, 2001)।

या, जैसा कि स्वयं कृष्णमूर्ति (1969) ने विश्व शिक्षक के रूप में अपनी स्थिति को खुले तौर पर घोषित करते हुए कहा था:

मैं प्रियतम के साथ एक हो गया हूँ। मैं उनके साथ एक हो गया हूँ।
कृपया। मैं उनके कारण महिमावान हुआ हूँ।
[कृष्णमूर्ति] का मानना था कि उनकी चेतना थी
वह अपनी प्रेमिका में विलीन हो गया, जिसका अर्थ था समस्त सृष्टि।
(स्लोस, 2000)।

अगस्त 1929 में, यह तर्क देते हुए कि संगठन स्वाभाविक रूप से सत्य को सीमित और प्रतिबंधित करते हैं, चौंतीस वर्षीय कृष्णमूर्ति ने (कृष्णमूर्ति 31)

उन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी की "ऑर्डर ऑफ द स्टार" शाखा को औपचारिक रूप से भंग कर दिया, जिसका नेतृत्व वे 1911 से कर रहे थे।
हालांकि, वहां भी, विश्व शिक्षक या मसीहा के रूप में उनकी स्वयं की भूमिका की बजाय, संगठन और उसके "परमेश्वर" पर आधारित दर्शन को ही अस्वीकार किया जा रहा था। स्वयं कृष्णमूर्ति ने विघटन के बाद इस बात को स्पष्ट किया:
जब मानवता के लिए एक नए रूप में ग्रहण करना आवश्यक हो जाता है
प्राचीन ज्ञान से, जिसका कर्तव्य है उसे दोहराना।
ये सत्य (मिशेल, 1992 में) मूर्त रूप में प्रकट होते हैं।
या, जैसा कि वर्नन (2001) ने पुष्टि की:
कृष्णमूर्ति ने कभी भी विश्व स्वरूप होने से इनकार नहीं किया।
शिक्षक, बस इतना ही कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन था या क्या था।
1932 में, कृष्णमूर्ति और राजगोपाल की पत्नी के बीच प्रेम संबंध शुरू हुआ जो पच्चीस वर्षों से अधिक समय तक चला। महिला, रोज़ालिंड, कई बार गर्भवती हुई, गर्भपात का सामना किया और कम से कम दो बार गुप्त/अवैध गर्भपात भी करवाया। इस रिश्ते की विचित्रता जिद्दू के उसी महिला के प्रति पूर्व प्रेम से कम नहीं होती। क्योंकि, वह और उसका भाई दोनों मानते थे कि रोज़ालिंड उनकी लंबे समय से खोई हुई माँ का पुनर्जन्म है... जबकि उनकी माँ की मृत्यु रोज़ालिंड के जन्म के केवल दो वर्ष बाद ही हुई थी (स्लोस, 2000)।
1930 के दशक के उत्तरार्ध में, कृष्णमूर्ति ओजई, कैलिफ़ोर्निया में सेवानिवृत्त हो गए और एल्डस हक्सले के साथ घनिष्ठ मित्र बन गए। हालाँकि, इस स्नेहपूर्ण संबंध के बावजूद, जिद्दू ने हक्सले के पीठ पीछे उनका अपमान करते हुए कहा कि उनका दिमाग "कूड़ेदान जैसा" है (स्लॉस, 2000)। हक्सले ने 1961 में स्विट्जरलैंड में कृष्णमूर्ति का भाषण सुनने के बाद उस व्याख्यान के बारे में लिखा: "यह बुद्ध के प्रवचन को सुनने जैसा था" (पीट, 1997 में)। इसके अलावा, जब एल्डस का घर और पुस्तकालय आग में नष्ट हो गए, तो कृष्णमूर्ति की 'कमेंट्रीज़ ऑन लिविंग' उन पुस्तकों में से पहली थी जिन्हें उन्होंने प्रतिस्थापित किया।
"कचरे का डिब्बा," सचमुच।
उत्तरी लॉस एंजिल्स के निकट होने के कारण, जिद्दू ने संगीतकार इगोर स्ट्रविंस्की, लेखक थॉमस मान और दार्शनिक-गणितज्ञ बर्ट्रेंड रसेल से भी मुलाकात की और

फिल्म जगत के दिग्गज ग्रेटा गार्बो और चार्ली चैपलिन के साथ पिकनिक का आनंद लिया।
रोसलिंड के साथ चल रहा प्रेम प्रसंग, आश्चर्य की बात नहीं है, उस अर्ध-मसीहा की स्वयं की शिक्षाओं के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाता था: 32 गुरुओं का पर्दाफाश

कृष्णमूर्ति ने कभी-कभी युवाओं से कहा था कि ब्रह्मचर्य...
प्रजनन क्षमता महत्वपूर्ण थी, जो यह दर्शाती है कि इसने पीढ़ी दर पीढ़ी विकास को प्रोत्साहित किया।
अत्यधिक ऊर्जा और तीव्रता का संचार जो मनोवैज्ञानिक आघात का कारण बन सकता है।
सांस्कृतिक परिवर्तन। कृष्णमूर्ति ऐसा प्रतीत होता है कि
डेविड बोहम के सामने भी यह मामला उठाया गया, और चिकित्सक ने...
सिस्ट का मानना था कि भारतीय शिक्षक ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते थे (पीट, 1997).
बोहम की पहली मुलाकात कृष्णमूर्ति से 1961 में हुई थी और वे उनके सबसे प्रसिद्ध अनुयायियों में से एक बन गए (1984 में उनके अलग होने तक)। उन्होंने जिद्दू के साथ मिलकर आध्यात्मिक विषयों पर संवादों की कई पुस्तकें लिखीं। बोहम इंग्लैंड में कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित एक स्कूल के बोर्ड में ट्रस्टी भी थे और कई लोग उन्हें कृष्णमूर्ति का संभावित उत्तराधिकारी मानते थे।
इसलिए, यह कहना कि कृष्णमूर्ति का रोज़ालिंड के साथ व्यवहार "बेईमान/पाखंडी" नहीं था, सिर्फ इसलिए कि उन्होंने अपना पूरा जीवन ब्रह्मचर्य या विवाह के लाभों का उपदेश देने में नहीं बिताया, खोखला लगता है। इसके विपरीत, यदि हम पीट की रिपोर्ट पर विश्वास करें कि कृष्णमूर्ति ने "बोहम से ब्रह्मचर्य के महत्व के बारे में बात की थी", तो कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं और उनके जीवन में स्पष्ट रूप से विरोधाभास था। ऐसा तब भी है जब रोज़ालिंड के साथ उनका पच्चीस साल का प्रेम प्रसंग, चाहे जो भी कारण रहे हों, बोहम से मिलने के समय तक समाप्त हो चुका था।
इस स्थिति को देखते हुए, कृष्णमूर्ति के व्यवहार के संबंध में एकमात्र संभावित निष्कर्ष स्पष्ट पाखंड का ही है।
* * *

कृष्णमूर्ति के स्वयं के दुर्व्यवहारपूर्ण स्कूली अनुभव को देखते हुए, यह शायद ही आश्चर्यजनक है कि उन्होंने अपने छात्रों पर भी उसी चक्र को जारी रखा, यह बहाना बनाकर कि वे जानबूझकर संकट पैदा कर रहे थे ताकि उनमें परिवर्तन और विकास को बढ़ावा दिया जा सके।
गोपियाँ [कृष्णमूर्ति की प्रारंभिक, युवा महिला शिष्याएँ]
भगवद् गीता में कृष्ण के अनुयायियों के साथ सादृश्य]
वे उनसे निजी साक्षात्कार करने की कोशिश करते थे, जिसके दौरान वे
उन्होंने निर्दयतापूर्वक उनकी रक्षापंक्ति को ध्वस्त कर दिया और उन्हें नंगा कर दिया।
गलतियाँ, जिनका अंत हमेशा लड़कियों के फूट-फूटकर रोने से होता है।
बाहर, लेकिन यह महसूस करते हुए कि यह सबसे अच्छा होना चाहिए (वर्नन, 2001)।
कई वर्षों बाद भी, दूसरों को जगाने के लिए उन्हीं "कुशल/क्रूर साधनों" का प्रयोग करते हुए, कृष्ण 33

कृष्णमूर्ति ने बोहम का सामना उस तरह से किया जैसा कि बाद में अन्य लोगों ने किया।
इसे "क्रूर" बताया गया है (पीट, 1997)।
जैसा कि हम आगे देखेंगे, यह विश्व के आध्यात्मिक मार्गों में एक आम समस्या है, जहाँ शिष्य अपने गुरुओं के कठोर अनुशासन को सहने के बाद दूसरों के साथ उसी तरह का बुरा व्यवहार करने का अधिकार समझ लेते हैं, जैसा उनके साथ स्वयं किया गया था। वहाँ बहाना हमेशा यही होता है कि ऐसा दुर्व्यवहार दूसरों के "आध्यात्मिक लाभ" के लिए है, भले ही यह दावा किसी भी तरह से सत्य न हो।
राजागोपाल को कृष्ण की जो बातें याद हैं, उनके कारण झगड़े हुए।
बार-बार झूठ बोलना और उसे नीचा दिखाना, कृष्ण का इस बात से सहमत होना
राजा की पीठ पीछे प्रस्ताव रखना और ऐसे वादे करना कि
इसे संभालना संभव नहीं हो सका, कई महीनों बाद इसकी हालत इतनी गंभीर हो गई।
दक्षिण अमेरिका, जहाँ कभी कृष्ण, जो केवल इतना ही ले जा सकते थे
बहुत आलोचना होने पर राजा ने थप्पड़ मारा। यह एकमात्र घटना नहीं थी।

ऐसा हो सकता था, लेकिन यह पहली बार था (स्लोस, 2000)।
कृष्णमूर्ति में सामान्य मानवीय करुणा और दया का अभाव था।
वह उन लोगों के प्रति असहिष्णु, यहाँ तक कि तिरस्कारपूर्ण भी था जो
वह अपने ही उच्च स्तर तक नहीं पहुंच सका (वर्नन, 2001)।
“जन्म से ही मेरा दिल बहुत छोटा है,” इत्यादि।
हालांकि, जिद्दू की शुरुआती "गोपियों" में से कम से कम एक ने आध्यात्मिक अनुशासन के लिए उसके भद्दे, "दयालु होने के लिए क्रूर" प्रयासों को समझ लिया था:
इन कथित रूप से विशेषाधिकार प्राप्त और लाभकारी सत्रों में शामिल थे
कृष्ण द्वारा बार-बार सुप्रसिद्ध दोषों की ओर इशारा करने के बारे में और
हर उस चीज़ पर नुक्ताचीनी करना जो नुकसानदायक हो और किसी के आत्मविश्वास को कमज़ोर करे-
डेंस (लुटियंस, 1972)।
कम से कम एक बार, कृष्णमूर्ति को भी अनजाने में दूसरों के बारे में बिना उकसावे के, अपमानजनक टिप्पणी करते हुए सुना गया था ... उनके बेडरूम में, विवाहित रोज़ालिंड के साथ (स्लॉस, 2000)।
न तो राजगोपाल और न ही रोजालिंड कभी कृष्णमूर्ति के भक्त थे। डेविड बोहम भी नहीं थे, जिनकी कृष्णमूर्ति के (अनचाहे) कठोर सार्वजनिक अनुशासन पर प्रतिक्रिया - ऐसे संदर्भ में जहां उनसे संवाद की अपेक्षा की जा रही थी, न कि गुरु-शिष्य संबंध की, और जिद्दू द्वारा बाद वाले को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करना - बेहद दुखद थी:
34 गुरुओं का पर्दाफाश

भौतिक विज्ञानी निराशा में डूब गया। नींद न आने के कारण, वह...
विचारों में डूबा हुआ वह लगातार कमरे में इधर-उधर टहल रहा था।
वह बिंदु जहाँ उसने आत्महत्या करने के बारे में सोचा। एक समय पर उसे विश्वास हो गया था
उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसके मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर सक्रिय हो रहे हों...
उनकी निराशा जल्द ही इस हद तक पहुंच गई कि उन्हें
अवसादरोधी दवाएं...

उन्होंने एक बार [फ्रिट्ज़ विल्हेम] को लिखा था कि उन्हें लगता है कि
उनके सीने में दर्द कृष्णमूर्ति के कारण था।
उसके साथ दुर्व्यवहार करना। "के के साथ यह समस्या सचमुच
मुझे कुचल रहा है" (पीट, 1997)।
* * *
कृष्णमूर्ति 1986 में अपने निधन तक व्याख्यान देते रहे और लोगों को अनुशासन सिखाते रहे। इन गतिविधियों के दौरान, उन्होंने धीरे-धीरे अपनी शिक्षण शैली को ब्रह्मांडीय सत्यों का बखान करने वाले उद्धारकर्ता से एक व्यक्तिगत परामर्शदाता की शैली में परिवर्तित कर दिया, और अपने व्याख्यानों की विषयवस्तु को चेतना में विषय और वस्तु के बीच विभाजन पर केंद्रित किया।
जब मनुष्य अपने स्वयं के अंतर्मन की गति के प्रति सचेत हो जाता है...
चेतना में वह विचारक और चेतना के बीच विभाजन देखेगा
विचार, प्रेक्षक और प्रेक्षित, अनुभवकर्ता
और अनुभव। उसे पता चलेगा कि यह विभाजन एक
भ्रम। तभी शुद्ध अवलोकन संभव है, जो अंतर्दृष्टि है।
अतीत की किसी भी छाया से मुक्त। यह शाश्वत अंतर्दृष्टि लाती है
मन में एक गहरे मौलिक परिवर्तन के बारे में (कृष्णमूर्ति,
[लुटियंस, 1983]).
उस व्यक्तिगत अनुभूति के माध्यम से, कृष्णमूर्ति ने (पूरी तरह से निराधार रूप से) यह दावा किया कि वे अपनी परवरिश से अप्रभावित हैं और वास्तव में, उन्होंने (सुविधाजनक रूप से) अपने अतीत का अधिकांश भाग "भूल" दिया है। फिर भी, उनकी शिक्षाओं में बुद्ध और उपनिषदों दोनों के साथ बहुत कुछ समानता है। संयोगवश नहीं, जिद्दू ने अड्यार में अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान इन दोनों दर्शनों का गहन अध्ययन किया था (स्लोस, 2000)।
विचार और ज्ञान की प्रकृति पर अपने संकीर्ण विचारों के अनुरूप, कृष्णमूर्ति ने ध्यान की संरचनात्मक/विषयवस्तुगत तकनीकों में कोई निर्देश नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने ध्यान को "बिना किसी प्रेरणा, बिना शब्दों और बिना विचार की गतिविधि के एक गति" के रूप में सिखाया और अभ्यास कराया।
उन्होंने कहा कि मंत्रों का जाप करना और गुरुओं का अनुसरण करना, आदि-

समय बर्बाद करने के विशेष रूप से मूर्खतापूर्ण तरीके (पीट, 1997)।
कृष्ण 35

और कृष्ण, जिनके कृष्ण-पैर ओजई में काफी गर्म थे,
उन्होंने कहा, “स्वतंत्र बनो, मेरे तरीके से ध्यान करो!”
गुरुओं के बिना स्वतंत्र रहें!
मंत्रों के बिना स्वतंत्र रहें!
बिना किसी मान्यता, इरादे या तंत्र के स्वतंत्र रहो!
जिद्दू स्वयं नाम के अलावा हर मायने में गुरु थे। उनके सत्तावादी बयान, असहमति के प्रति असहिष्णुता और अहंकार उन अन्य "प्रबुद्ध" व्यक्तियों में से किसी से भी आ सकते थे जिनसे हम जल्द ही परिचित हो जाएंगे। हालांकि कृष्णमूर्ति स्वयं गुरु-शिष्य संबंध से "परेशान" थे, फिर भी वे कहते थे, "अगर कोई गुरु जैसा दिखता है, गुरु जैसी बातें करता है और गुरु जैसा व्यवहार करता है..."
इतने वर्षों तक एक करीबी समूह से घिरे रहने के बाद, जैसे कि
सम्राट अपने दरबारियों से घिरे हुए थे जो उनकी पूजा करते थे और उनका सम्मान करते थे।
उसे विश्वास था कि वह कोई गलती नहीं कर सकता, वह इस बात से ऊब चुका था कि
खंडन किया (वर्नन, 2001)।
[ई]वन जब वह व्यक्ति के महत्वपूर्ण महत्व पर जोर दे रहा था-
व्यक्तिगत खोज, उनके साथ हुई बातचीत के प्रतिलेख
उनके स्कूलों के विद्यार्थियों से पता चलता है कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जो निर्दयतापूर्वक धमकाता था।
अपने वार्ताकारों को अपने दृष्टिकोण को स्वीकार करने के लिए राजी करना (वाशिंगटन-
टन, 1995)।
कृष्णमूर्ति ने स्वयं को आलोचना और प्रतिक्रियाओं से अलग कर लिया।
“ठीक वैसे ही जैसे वह हर किसी की आलोचना कर रहा था,” [जोएल] क्रेमर [सह-द गुरु पेपर्स के लेखक ने कहा, और उन्हें "आखिरी" की आवश्यकता थी।

हर बात पर शब्द" (होर्गन, 1999)।
अपनी मृत्युशय्या पर पड़े हुए, अग्नाशय कैंसर से जूझते हुए भी, कृष्णमूर्ति ने दृढ़ता से कहा कि "जब तक वे जीवित थे, वे 'विश्व शिक्षक' थे" (वर्नन, 2001)। (यह घातक बीमारी उनके हाथों से उपचार करने की क्षमता के दावे के बावजूद हुई, जो बोहम के हृदय रोग को ठीक करने के उनके अपने पूर्व प्रयासों में भी उतनी ही अप्रभावी साबित हुई थी।) वास्तव में, कृष्णमूर्ति विश्व में अपनी शिक्षण भूमिका से इतने मुग्ध थे कि उन्होंने अपनी मृत्यु से मात्र दस दिन पहले निम्नलिखित कथन दर्ज किया:
मुझे नहीं लगता कि लोगों को इस बात का एहसास है कि इसमें कितनी जबरदस्त ऊर्जा और उत्साह है।
इस शरीर से बुद्धि गुज़री है... आपको ऐसा दूसरा शरीर नहीं मिलेगा।
इस तरह का शरीर, या वह सर्वोच्च बुद्धि जो 36 गुरुओं को छीनने में कार्यरत है

यह शरीर कई सौ वर्षों तक रहेगा। आप इसे दोबारा नहीं देखेंगे (भविष्य में)।
लुटियंस, 1988)।
कहा जाता है कि कृष्णमूर्ति ने कहा था कि वह तो महान भी हैं।
बुद्ध या ईसा मसीह से भी अधिक (स्लोस में, 2000)।
और फिर क्या हुआ...?
खैर... अड्यार में तो यही कहते हैं।
कि विश्व शिक्षक का प्रमुख
उस दिन मेरा साइज तीन साइज बढ़ गया!
बेशक, कृष्णमूर्ति द्वारा स्टार ऑर्डर का विघटन अक्सर भोलेपन से उनकी गहरी विनम्रता का संकेत माना जाता है। हालाँकि, जैसा कि हम आगे आने वाले सभी "ऋषियों" के संदर्भ में देखेंगे, "प्रबुद्ध" व्यक्ति के भाषण और कार्यों के चयनात्मक प्रस्तुतीकरण में व्यापक संपादन के माध्यम से ही उनमें से कोई इतना विनम्र और पवित्र प्रतीत होने लगता है।
जिद्दू की अपनी विरासत क्या हो सकती है, उनके विपुल और नीरस लिखित और अभिलेखीय उपदेशों से परे, इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने स्वयं ही दे दिया है:
अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले भारतीय शिक्षक ने घोषणा की थी
कि किसी ने भी उनकी शिक्षा को सही मायने में कभी नहीं समझा था; किसी ने भी

नहीं।
इसके अलावा स्वयं ने भी परिवर्तन का अनुभव किया था (पीट, 1997)।
यह भी इस संसार के “महान गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्तियों” के साथ एक लगातार बनी रहने वाली समस्या है—वे अपनी “कुशल” शिक्षा के बावजूद आम तौर पर अपने समान एक भी शिष्य तैयार करने में असफल रहते हैं। इससे भी स्पष्ट रूप से कहें तो, कोई भी साधारण, गैर-सांसारिक शिक्षक जो खुले तौर पर यह स्वीकार कर ले कि उसके किसी भी छात्र ने कभी भी उसकी शिक्षा को “वास्तव में नहीं समझा”, वह इस संबंध में अपनी क्षमताओं पर ही सवाल उठाने लगता। लेकिन यह सांसारिक शिक्षक स्पष्ट रूप से आत्म-मूल्यांकन की ऐसी किसी आवश्यकता से ग्रस्त नहीं था।
कृष्णमूर्ति को जीवन भर उत्तम, सुसंगठित वस्त्रों का शौक रहा। उनके मनोविज्ञान में भारतीय जाति व्यवस्था के स्पष्ट निशान आसानी से देखे जा सकते हैं, जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था (वर्नन, 2001)। वास्तव में, उस पृष्ठभूमि ने उन्हें इस हद तक प्रभावित किया कि उन्होंने दूसरों की इस्तेमाल की हुई किताबों को पढ़ने से पहले पोंछने पर जोर दिया। अपनी मृत्यु की योजना बनाते समय, उन्होंने यह निर्देश भी दिया था कि श्मशान की भट्टी को उनके उपयोग से पहले अच्छी तरह से साफ किया जाए, और उस सफाई की पुष्टि उनके किसी अनुयायी द्वारा की जाए। स्पष्ट रूप से, यह कृष्णमूर्ति के लिए था।

यह सुनिश्चित करना कि किसी और की "अशुद्ध" राख उनके अपने पवित्र, ब्राह्मण जाति के अवशेषों के साथ न मिल जाए।
क्या हम सभी को अपने "भूले हुए" अतीत से इतना "मुक्त" नहीं होना चाहिए?
जब मैंने कृष्णमूर्ति से ही इस पूरे मामले के बारे में पूछताछ की
विश्व माता का मामला [अर्थात, थियोसोफिकल सोसाइटी का संक्षिप्त-
एक चयनित संगठन के तहत वैश्विक आध्यात्मिक उत्थान के लिए एक जीवंत कार्यक्रम।
कृष्ण के लिए "विश्व शिक्षक" योजनाओं के बाद सेन महिला-
मूर्ति का मामला बिगड़ गया था], उसने अचानक कहा, "ओह, बस यही सब था।"
पकाया हुआ—” इससे पहले कि उसे एहसास होता कि
वह अपने प्रारंभिक जीवन की घटनाओं की यादों को स्वीकार कर रहा था।

जिसे बाद में उन्होंने अपने पास होने से इनकार कर दिया (स्लॉस, 2000)।
[एमिली लुटियंस] ने कहा कि वह जानती थी कि कृष्णा जन्मजात झूठा था।
लेकिन फिर भी वह उसे हमेशा प्यार करती रहेगी...
मेरी माँ ने एक बार उससे पूछा कि उसने झूठ क्यों बोला, तो उसने जवाब दिया
आश्चर्यजनक स्पष्टता के साथ, "डर के कारण" (स्लॉस, 2000)।
कृंश गुस्से से भर गया। उसकी आवाज़ एकदम बदल गई।
तीव्र क्रोध के प्रति औपचारिक उदासीनता। यह लगभग तीखी हो गई।
“मुझमें कोई अहंकार नहीं है!” उसने कहा। “तुम खुद को क्या समझते हो, जो मुझे
क्या तुम मुझसे इस तरह बात करोगे? (स्लोस, 2000)।
एक दिन इतिहास सब कुछ उजागर कर देगा; लेकिन विभाजन
कृष्णमूर्ति स्वयं उन सभी पर एक बहुत ही गहरा साया डालेंगे।
जो कुछ भी कहा या लिखा है। क्योंकि पाठक सबसे पहले यही देखेंगे।
कहते हैं, “अगर वह इसे जी नहीं सकता, तो कौन जी सकता है?” (स्लोस में, 2000)।
फिर कृष्ण ने धीरे-धीरे अपनी विश्व शिक्षक वाली टोपी उतार दी।
“अगर मेरी शिक्षा,” उसने सोचा, “अक्सर असफल हो जाती है....”
शायद पढ़ाना... शायद... वो चीज़ नहीं है जिसमें मैं अच्छा हूँ।"

अध्याय VI

कला में ज़ेन
यौन संबंध और हिंसा

ज़ेन परंपरा में प्रसिद्ध शराबी कवियों का इतिहास रहा है और
मास्टर्स.... कई जगहों पर शराब पीने के लिए सार्वजनिक प्रोत्साहन
जिन समुदायों में शिक्षक शराबी था, वहां कई समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।
छात्रों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित किया गया, और कुछ बौद्ध और हिंदू धर्मानुयायियों को भी।

समुदायों को एए समूह शुरू करने की आवश्यकता पड़ी है ताकि वे इस समस्या से निपटना शुरू कर सकें।
उनकी नशे की लत की समस्याओं के साथ...
आध्यात्मिक समुदायों में प्रवेश करने वाले छात्र कल्पना नहीं करते-
उन्हें इस तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा (कॉर्नफील्ड,
1993).
यह ज्ञात हुआ कि माएज़ुमी [ज़ेन केंद्र के रोशी/गुरु]
लॉस एंजिल्स में रहने वाले उस व्यक्ति के कई महिलाओं के साथ संबंध थे।
छात्र और शराब की लत छुड़ाने वाले क्लिनिक में भी भर्ती हुए थे।
(रॉलिंसन, 1997)।
1975 और 1979 में, और बाद में 1982 में, ज़ेन अध्ययन
ईडो रोशी के कथित कारनामों की अफवाहों से समाज में हलचल मच गई थी।
महिला छात्रों के साथ यौन संबंध...
और ये आरोप केवल यौन दुर्व्यवहार तक ही सीमित नहीं थे।
वे वित्तीय कुप्रबंधन और गलत व्यवहार तक फैल गए।
व्यवहार (ट्वोरकोव, 1994)।

ज़ेन बौद्ध धर्म को पश्चिम में एलन वाट्स और डी. टी. सुज़ुकी जैसे व्यक्तियों के लेखन के माध्यम से व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाया गया है, साथ ही फिलिप कपलेउ की 'द थ्री पिलर्स ऑफ ज़ेन' और यूजीन हेरिगेल की 'ज़ेन इन द आर्ट ऑफ आर्चरी' का भी उल्लेख किया जा सकता है। ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में, यह मुख्य रूप से ज़ाज़ेन ध्यान का उपयोग करता है - बैठकर अपनी सांसों को गिनना/देखना - और "एक हाथ से ताली बजाने की आवाज़ क्या है?" जैसे कोआन का उपयोग करता है। इसका रिंज़ाई संप्रदाय विशेष रूप से शिष्यों को उनकी सामान्य अवस्था से प्रबुद्ध जागरूकता में लाने और छात्र के "अहंकार की मृत्यु" में सहायता करने के उद्देश्य से व्यवहारों का उपयोग करता है - जिसके लिए वे "छड़ी" का भी उपयोग करते हैं।

ज़ेन शिक्षकों के पास छात्रों से निपटने का एक उत्कृष्ट तरीका है।
वे छात्र जो खुद की तुलना बुद्ध या भगवान से करने लगते हैं [af-
केन विल्बर कहते हैं, उनके प्रारंभिक ज्ञानोदय के अनुभवों के बाद।
“वे लाठी उठाते हैं और तुम्हारी जमकर पिटाई करते हैं। और उसके बाद
पांच या दस साल तक ऐसा करने के बाद, आखिरकार आप खुद पर काबू पा लेते हैं” (होर-
(गान, 2003ए)।
लेकिन यह तो आध्यात्मिकता के नाम पर की जाने वाली शारीरिक हिंसा का एक हास्यास्पद रूप से रोमांटिक चित्रण मात्र है। वास्तविकता में, इस तरह का "हिंसक" व्यवहार केवल उन व्यक्तियों के स्वभाव और हिंसा की प्रवृत्ति को दर्शाता है जिन्हें उनके अनुयायी भोलेपन से आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध मानते हैं।
रिचर्ड रम्बोल्ड, एक अंग्रेज ज़ेन उत्साही, जिन्होंने अपना समय बिताया
क्योटो के शोकोकुजी मठ में लगभग पांच महीने बिताए।
इसमें मुखिया द्वारा की गई कुछ क्रूर पिटाई का वर्णन है।
भिक्षु और उसके सहायक को मामूली अनुशासनात्मक अपराधों के लिए दंडित किया गया।
(कोस्टलर, 1960)।
इस तरह की क्रूर अनुशासनात्मक कार्रवाई आसानी से पूरी तरह से नियंत्रण से बाहर हो सकती है। दरअसल, यह एक सच्ची कहानी है जो जानविलेम वैन डे वेटेरिंग को सुनाई गई थी।
(1999) 1970 के दशक के आरंभ में क्योटो में एक जापानी ज़ेन मठ में अपने दीर्घकालिक प्रवास के दौरान उन्होंने यह बात कही:
टोक्यो में कुछ ज़ेन मठ भी हैं। उनमें से एक में
इन मठों में... एक ज़ेन भिक्षु था जो संयोगवश...
वह बहुत अहंकारी था। उसने पादरी की कोई भी बात सुनने से इनकार कर दिया।
वह उसे बताने की कोशिश कर रहा था और उसने सुबह-सुबह के समय का इस्तेमाल किया।
गुरु के साथ विचार-विमर्श करने के लिए ताकि वे अपने सभी पसंदीदा सिद्धांतों को प्रकट कर सकें। गुरु

इस प्रकार के विद्यार्थी के लिए हमारे पास एक विशेष छड़ी है। हमारे शिक्षक के पास है।
एक और, आपने देखा होगा, एक छोटी मोटी छड़ी। एक सुबह-40 गुरुओं को नंगा करना

गुरु ने भिक्षु को इतनी जोर से मारा कि भिक्षु को होश ही नहीं आया।
अब वह उठ नहीं सकता था, क्योंकि वह मर चुका था...
मुख्य भिक्षु ने घटना की सूचना पुलिस को दी, लेकिन
उस मास्टर पर कभी कोई आरोप नहीं लगाया गया। पुलिस को भी यह बात पता है।
गुरु और पुत्र के बीच एक असाधारण संबंध है।
विद्यार्थी, कानून के बाहर का रिश्ता।
इसी प्रकार, बौद्ध धर्म में पश्चाताप समारोह के दौरान,
दो युवा भिक्षु ऊंघ गए। समारोह के बाद, डोकूजिकी
वे चीखते हुए उनके पीछे-पीछे भिक्षुओं के कक्ष, सोडो तक गए।
क्रोधित होकर डोकूजिकी ने क्योसाकु [छड़ी] पकड़ी और उसके पीछे चल दिया।
युवा भिक्षुओं ने... डोकूजिकी ने बार-बार दोनों पर प्रहार किया
सर्दियों की मोटी छड़ी से डरे हुए नन्हे पक्षी... डोकू के बाद से-
जिकी अधिकारिक पद पर था, कोई उससे एक शब्द भी नहीं कहता था।
उसके अपराधों के बारे में...
कुछ लोग आपको बताएंगे कि यह एक कठिन प्रकार का खेल है।
नॉर्मन ने कहा, "बौद्ध करुणा, लेकिन इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है।"
इसका बौद्ध धर्म या करुणा से कोई लेना-देना नहीं है। यह एक विकृति है कि
इसे अस्वीकार कर देना चाहिए...
“यहां तक कि छड़ी भी छोड़ देनी चाहिए। छड़ी और यह सब।”
मूर्खतापूर्ण मर्दाना रवैया” (चैडविक, 1994)।
दरअसल, “बेवकूफी भरी मर्दाना सोच” की बात करें तो, ज़ेन गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों की “बुरी तरह पिटाई” करने की प्रशंसा से बढ़कर शायद ही कोई और उदाहरण हो। फिर भी विडंबना यह है कि विल्बर, जिनका ठीक इसी संदर्भ में पहले उल्लेख किया गया था, ने चैडविक के उपरोक्त लेख का समर्थन करते हुए

उत्साहपूर्वक कहा, “मुझे यह किताब बहुत पसंद है!”
जैसा कि रॉबर्ट बसवेल (1992) आगे बताते हैं, इस तरह की हिंसा वास्तव में ज़ेन दर्शन के लिए बिल्कुल भी पराई नहीं है, यहाँ तक कि इसके अनुयायियों के कथित रूप से वैध अनुशासन के बाहर भी। क्योंकि, 1950 के दशक में कोरियाई युद्ध की समाप्ति के बाद कोरिया में बौद्ध मठों पर नियंत्रण के लिए ब्रह्मचारियों और गृहस्थों के बीच हुए संघर्ष के दौरान, ब्रह्मचारी भिक्षुओं ने...
कभी-कभी विवाहित जोड़ों को हटाने के लिए शारीरिक बल का सहारा लिया जाता था।
मठों के भिक्षु; वास्तव में, वृद्ध भिक्षु [ब्रह्मचारी]
भिक्षुओं ने] ... ब्रह्मचारियों द्वारा युवाओं को दीक्षा देने की कई कहानियाँ सुनाईं।
अपने आंदोलन को ताकत देने के लिए वे सड़कों से गुंडों को हटा रहे हैं...
ब्रह्मचारियों के प्रमुख समाचार पत्र के अनुसार...
विवाहित भिक्षुओं ने अपने पक्ष में झूठे सबूत पेश किए
भिक्षुओं द्वारा कब्जा किए गए मंदिरों पर अवैध रूप से अतिक्रमण करने और दावे करने का आरोप लगाया गया।
पाइड, उन्हें वापस लेने की कोशिश कर रहे हैं।
सेक्स और हिंसा की कला में ज़ेन 41

इस तरह के व्यवहार से निश्चित रूप से ज़ेन पुजारी और विद्वान डी. टी. सुज़ुकी को आश्चर्य नहीं हुआ होगा, और न ही यह सामान्य रूप से "प्रबुद्ध" ज़ेन गुरुओं के दृष्टिकोण के विपरीत था।
अपनी अक्सर तस्वीरों में दिखने वाली सौम्य और बुद्धिमान छवि के साथ
बाद के वर्षों में, सुजुकी को पश्चिम में कई लोगों द्वारा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
ज़ेन का सच्चा अनुयायी। फिर भी उन्होंने लिखा कि "धर्म को सबसे पहले..."
सभी, राज्य के अस्तित्व को संरक्षित करने का प्रयास करते हैं," इसके बाद
यह दावा कि चीनी लोग "अशांत विधर्मी" थे,
जापान को “धर्म के नाम पर” दंड देना चाहिए। ज़ेन मास-
तेर हाराडा सोगकु, अंग्रेजी लेखन में अत्यधिक प्रशंसित।

फिलिप कप्लू, मेज़ुमी ताइज़न, और अन्य
हाकुगेन [एक रिंझाई ज़ेन पुजारी और विद्वान जो शिक्षा देते हैं] द्वारा उद्धृत।
क्योटो में हनाज़ोनो विश्वविद्यालय में]। 1939 में उन्होंने लिखा: "[यदि या-
मार्च करने के लिए प्रेरित किया गया: ट्रैम्प, ट्रैम्प, या गोली चलाना: बैंग, बैंग। यह है
ज्ञानोदय की सर्वोच्च बुद्धिमत्ता की अभिव्यक्ति।
मैं जिस ज़ेन और युद्ध की एकता की बात कर रहा हूँ, वह सुदूर तक फैली हुई है।
पवित्र युद्ध की चरम सीमाएँ [जो अब चल रहा है]" (विक्टोरिया,
1997).
ऊपर उद्धृत किए गए डाइज़ेन विक्टोरिया स्वयं कोई असंवेदनशील बाहरी व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक अभ्यासशील सोतो ज़ेन बौद्ध भिक्षु हैं।
जैसा कि सुजुकी के स्वयं के "पूर्णतः प्रबुद्ध ज़ेन गुरु" सोएन/सोयेन/सो-ऑन ने कहा था—जो पहले 1893 के धर्म संसद में भाग ले चुके थे (फील्ड्स, 1992)—:
उन चीजों में सामंजस्य स्थापित करने के साधन के रूप में जो
असंगत हैं, हत्या और युद्ध आवश्यक हैं (विक्टोरिया में)।
1997).
रिनज़ाई ज़ेन गुरु नान्टेम्बो (1839-1925) निश्चित रूप से इस बात से सहमत होते:
करुणा से बढ़कर कोई बोधिसत्व साधना नहीं है।
जीवन लेने की प्रथा (विक्टोरिया में, 2003)।
इसी प्रकार, विद्वान ओमोरी सोजेन के लिए भी यही बात लागू होती है, जिन्हें "आधुनिक समय के सबसे महान ज़ेन गुरु" के रूप में सराहा जाता है, जिनका जीवन ही "ज़ेन कला की एक उत्कृष्ट कृति माने जाने योग्य" है।
"जीवनदायिनी तलवार" से चिंतित गुरु के बजाय...
ज़ेन के संदर्भ में, हम एक ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जिसने 1920 के दशक से ही एक संसद को खत्म करने के अति-दक्षिणपंथी एजेंडे में सक्रिय भूमिका - 42 गुरुओं को पदच्युत करना

घरेलू स्तर पर राजनीतिक हत्या के माध्यम से उपदेशात्मक लोकतंत्र
और विदेशों में जापान के साम्राज्यवादी उद्देश्यों को बढ़ावा देना। संक्षेप में,
वह व्यक्ति जो अपने राजनीतिक मार्ग में आने वाले हर किसी को मारने को तैयार था

अपना एजेंडा रखते हुए भी, बुद्ध के ज्ञानोदय को अपना श्रेय देने का दावा करना।
अपना....
होसोकावा डोगेन लिखते हैं: “ओमोरी रोशी का जीवन ही वह आदर्श है जो
पारंपरिक और सच्चे ज़ेन की अभिव्यक्ति” (विक्टोरिया, 2003)।
फिलिप कपलेउ के गुरु, यासुतानी हाकुउन, जिन्हें द थ्री पिलर्स ऑफ ज़ेन में अमर कर दिया गया है, लेकिन कुछ इतिहासकारों द्वारा तब से उन्हें अपने गुरु की तरह ही "कट्टर सैन्यवादी" माना जाता है।
डेज़ेन विक्टोरिया (2003) की राय:
हाकुगेन को यह लिखना चाहिए था: "यासुतानी तो और भी अधिक था।"
कट्टरपंथी सैन्यवादी, जातीय कट्टरतावादी और लिंगभेदी भी।
और अपने स्वामी से भी अधिक यहूदी-विरोधी!
2001 तक रिंझाई ज़ेन की किसी भी शाखा ने द्वितीय विश्व युद्ध और अन्य समय में जापानी सैन्यवाद के प्रति अपने उत्साही समर्थन को स्वीकार नहीं किया और न ही उसके लिए माफी मांगी, क्योंकि उन्होंने उस सैन्यवाद को "बुद्ध" के साथ समतुल्य माना था।
धर्म” (विक्टोरिया, 2003)।
युद्ध के दौरान प्रमुख ज़ेन गुरुओं और विद्वानों ने दावा किया,
अन्य बातों के अलावा, चीनियों की हत्या करना एक अभिव्यक्ति थी
बौद्ध करुणा का उद्देश्य बाद वाले को उनके
“अपमान” (विक्टोरिया, 2003)।
ज़ेन दर्शन ने, बारहवीं शताब्दी में जापान में इसके आगमन से पहले भी, इस विचार को अपनाया है कि प्रबुद्ध प्राणी अच्छे और बुरे से परे होते हैं।
एक ज़ेन गुरु ने मुझे बताया कि नैतिक उपदेश बहुत ही महत्वपूर्ण थे।
छात्रों के लिए इसका पालन करना महत्वपूर्ण है, लेकिन, बेशक, ज़ेन गुरुओं के लिए भी।
आपको उनसे परेशान होने की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे "मुफ्त" थे।
कल्पना भी नहीं की जा सकती कि बाद में उस समुदाय को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा होगा।
(कॉर्नफील्ड, 1993)।

फिर भी, कॉर्नफील्ड द्वारा वर्णित समकालीन दृष्टिकोण, पूर्व में एक हजार वर्षों से प्रचलित "शुद्ध ज़ेन" ही हैं। हम इस तरह की बेतुकी बातों पर सवाल उठा सकते हैं और उठाना भी चाहिए, लेकिन ऐसा करने से हम ज़ेन को उसके मूल/पारंपरिक रूप में वापस नहीं ला रहे हैं। बल्कि, हम आधुनिक समय के लिए स्वीकृत तौर-तरीकों को अपना रहे हैं। आख़िरकार, कोई एक ओर यह दावा नहीं कर सकता कि ज़ेन का अर्थ है यौन और हिंसा की कला में ज़ेन।

कि “प्रबुद्ध प्राणी अब बौद्ध धर्म के उन नैतिक बंधनों के अधीन नहीं हैं जो अप्रबुद्धों पर लागू होते हैं,” और फिर जब पश्चिम में बसे उनके अनुयायियों के साथ-साथ पूर्व में उनके अपने पारंपरिक समुदायों पर भी “मुसीबतें” आती हैं तो वे आश्चर्य जताते हैं! स्पष्टत:, इस प्रकार की “नैतिक बंधनों की अवहेलना” आसपास के सामाजिक नियमों को अप्रासंगिक बना देगी: यदि कोई कानूनों से बंधा नहीं है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वही कानून दूसरों पर लागू होने पर सख्त हैं या ढीले। दूसरे शब्दों में: गति सीमा क्या है, या आप कितनी तेज़ी से गाड़ी चला रहे थे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यदि आपको उन कानूनों को तोड़ने के लिए अभियोजन से राजनयिक छूट प्राप्त है जो दूसरों पर लागू होते हैं लेकिन आप पर नहीं।
अक्सर यौन प्रकृति के वे घोटाले, जिन्होंने एक समाज को हिलाकर रख दिया है
अमेरिका में ज़ेन (और अन्य बौद्ध) केंद्रों की संख्या...
शताब्दी वर्ष ज़ेन-समर्थित दुनिया से बिल्कुल अलग लग सकते हैं।
जापानी सैन्यवाद। हालाँकि, अंतर उतना स्पष्ट नहीं हो सकता है।
हालांकि यह पहली नजर में बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि मेरा सुझाव है कि सामान्य कारक यह है
ज़ेन की लंबे समय से चली आ रही और स्वार्थपूर्ण उदासीनता, या
बौद्ध धर्म के नैतिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता (विक्टोरिया, 2003)।
एक बार फिर, यह अप्रिय लेकिन असाधारण रूप से अंतर्दृष्टिपूर्ण टिप्पणी एक दीक्षित ज़ेन पुजारी की ओर से आई है।
दिलचस्प बात यह है कि, हालांकि पूरी तरह से अलग कारणों से, न तो वैन डे वेटेरिंग और न ही बसवेल (जिन्होंने कोरिया में एक ज़ेन भिक्षु के रूप में पांच साल बिताए) डी. टी. सुजुकी या कपलेउ के काम की सकारात्मक रूप से प्रशंसा करते हैं। बल्कि, वे

क्रमशः यह संकेत देते हैं कि ज़ेन पर वे लेखन, समकालीन एशिया में इसके वास्तविक अभ्यास को गलत तरीके से प्रस्तुत करते हैं।
कोरिया में [आधुनिक ज़ेन] भिक्षु एक व्यापक नेटवर्क के भीतर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।
धार्मिक चिंतन और अभ्यास के... ये भिक्षु जानते हैं कि
जबकि ज़ेन गुरु अचानक ज्ञानोदय की शिक्षा देते हैं, वे अनुसरण करते हैं
उनकी दैनिक दिनचर्या में प्रशिक्षण का एक कड़ाई से निर्धारित कार्यक्रम शामिल होता है।
वे जानते हैं कि हालांकि ज़ेन ग्रंथ सिद्धांतों से बचने का दावा करते हैं-
त्रिविध समझ के लिए, भिक्षुओं से अपेक्षा की जाती है कि वे पहले एक ठोस ज्ञान प्राप्त करें।
ध्यान अभ्यास शुरू करने से पहले बौद्ध ग्रंथों का गहन अध्ययन करना आवश्यक है।
टाइस....
पश्चिमी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत ज़ेन की दृष्टि-
जहाज ज़ेन धार्मिक अनुभव की गुणवत्ता को विकृत करता है क्योंकि यह
अपने अनुयायियों द्वारा जिया गया (बसवेल, 1992)। 44 गुरुओं का सार उजागर करना

एशिया में ज़ेन भिक्षुओं के वास्तविक जीवन और मानसिकता की बात करें तो, एक प्रशिक्षु के रूप में मठ में प्रवेश पाने के इच्छुक भिक्षु पहले घंटों या दिनों तक द्वार पर साष्टांग प्रणाम करते हैं।
जब उनसे पूछा गया कि वे मठ में प्रवेश क्यों करना चाहते हैं, तो
भिक्षु को उत्तर देना चाहिए, “मुझे कुछ नहीं पता। कृपया मेरी बात स्वीकार करें।”
खोज!” यह दर्शाता है कि उसका दिमाग एक कोरे पन्ने की तरह है-
प्रति, जिसे उसके वरिष्ठ अधिकारी अपनी इच्छानुसार अंकित कर सकते हैं। यदि एक भिक्षु सही उत्तर देने में विफल रहता है, उसे बार-बार पीटा जाता है।
क्योसाकु से तब तक लड़ते रहो जब तक उसके कंधे काले और नीले न हो जाएं और वांछित मानसिक स्थिति प्राप्त हो जाती है (विक्टोरिया, 1997)।
उस "वांछित मानसिकता" के साथ समुदाय में स्वीकार किए जाने के बाद, यहां तक

कि जो भिक्षु कुछ ही घंटे पहले प्रवेशित हुए हैं, वे भी नवदीक्षित पर अधिकार का प्रयोग करेंगे, भोजन के समय और अन्य अर्ध-औपचारिक या औपचारिक अवसरों पर उससे पहले उपस्थित रहेंगे।

वे वरिष्ठ भिक्षु जो 20 से अधिक वर्षों से प्रशिक्षण में हैं
नए प्रवेशकर्ता को एक या दो साल बेहतर प्रतीत होते हैं।
इंग्स (विक्टोरिया, 1997)।

* * *

तो फिर, उस व्यापक ज्ञानोदय का क्या होगा जिसे आदर्शवादी रूप से ज़ेन के अभ्यासकर्ताओं को श्रेय देना चाह सकते हैं?

मैंने एक बार काटागिरी रोशी से पूछा था, जिनके साथ मेरा पहला ब्रेक हुआ था-
...कितने महान चान और ज़ेन गुरुओं के माध्यम से
ऐतिहासिक रूप से ऐसा होता आया है। बिना हिचकिचाए उन्होंने कहा,
“कुल मिलाकर शायद एक हजार।” मैंने एक और ज़ेन गुरु से पूछा।
कितने सच्चे प्रबुद्ध—गहरे प्रबुद्ध—जापानियों ने...
अगर वे जापानी ज़ेन गुरु आज जीवित होते, तो उन्होंने कहा, "नहीं"
एक दर्जन से अधिक” (विल्बर, 2000ए)।

इस प्रकार, एक सहस्राब्दी से अधिक समय से ज़ेन शिक्षक नियमित रूप से अपने असंख्य शिष्यों को कठोर दंड देते आ रहे हैं, ताकि केवल एक हजार (अर्थात वैश्विक स्तर पर प्रति वर्ष लगभग एक) प्रबुद्ध व्यक्ति उत्पन्न हो सकें। हालाँकि, किसी भी प्रकार के "दुख के आकलन" के अनुसार यह एक उचित समझौता नहीं हो सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस प्रकार का ज्ञान मुख्य रूप से केवल उस विशिष्ट व्यक्ति को ही लाभ पहुँचाता है जिसे यह प्राप्त होता है, न कि संपूर्ण विश्व को।

फिर भी, ज्ञानोदय में "अहंकार की मृत्यु" ज़ेन और अन्य जगहों पर ध्यान करने वालों के लिए एक मजबूत प्रेरणा बनी हुई है।

ध्यानमग्न भिक्षु के लक्षणों में से एक [इसके विपरीत]
मठ के प्रशासकों आदि को पुराने ढके हुए कपड़े पहनने चाहिए।
पैच की परत दर परत के साथ। जबकि ऐसे वस्त्र

माना जाता है कि यह भौतिक संपत्तियों से उनकी वैराग्य को दर्शाता है।
वे अक्सर एक प्रकार के मठवासी प्रतिष्ठा प्रतीक के रूप में काम करते हैं।
कई मौकों पर तो मैं ऐसे भिक्षु को भी जानता था जो ध्यान में नया-नया था।
पॉलिस्टर के नए बाथरोब के बदले पुराने बाथरोब का आदान-प्रदान करने के लिए एक हॉल में।
पैचवर्क वाले कपड़े। अपने खाली समय में, वे ध्यान करते हैं।
भिक्षुओं को अक्सर अपने कपड़ों में और भी पैच जोड़ते हुए देखा जा सकता है।
वस्त्र (बसवेल, 1992)।
अधिक सटीक रूप से कहें तो, अन्य लोगों के अहंकार का अंत दुनिया भर के ध्यानियों के लिए एक मजबूत प्रेरक कारक बना हुआ है, और उनकी सम्मानित शक्ति का लाभ उठाना न केवल इसे प्रभावित करने का काम करता है, बल्कि उनकी अपनी इच्छाओं की पूर्ति में भी सहायता करता है।
मो-सान का जाल असल में उनकी "लापरवाह लगन" ही साबित हुआ।
मैंने सुना है कि लगभग दस साल बाद वह एक स्थानापन्न खिलाड़ी बन गया।
पश्चिमी तट पर स्थित एक अमेरिकी ज़ेन मंदिर में गुरु।
अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने प्लेटफॉर्म सोल वाले जूते पहनकर अपनी कम लंबाई को छुपाया।
लंबे वस्त्रों के नीचे और इस बात पर जोर दिया कि उनके गृहस्थ शिष्य
उसे एक कैडिलैक खरीद दो ताकि वह उसमें शान से घूम सके। उसने एक विवाद खड़ा कर दिया।
लंबे कद के लोगों के साथ अंतरंग मुलाकातों के बदले अंतर्दृष्टि साझा करने की कोशिश कर रहा हूँ
गोरे लोग (वैन डे वेटेरिंग, 2001)।
या, हाइकु में व्यक्त करें:
लंबी, गोरी, ऊंची हील वाली सैंडल, वाह!
क्या यह रेशम का लंबा गाउन है?
आपको देख कर खुशी हुई
हमें शायद ही आश्चर्य होना चाहिए कि कठोर "पूर्वी सत्यों" को भौतिकवादी और अनियंत्रित पश्चिम में स्थानांतरित करने से उनके परिवर्तनकारी मूल्य में कमी आएगी।

लेकिन उनके मूल, पवित्र पूर्व में?
उनके अधिकांश छात्रों को जिन भयावह समस्याओं का सामना करना पड़ा, उसके बावजूद-
जापान में ज़ेन का अध्ययन करने के प्रयास का विरोध करते हुए, [शुनर्यु] सुजुकी [के]
सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर, दस लाख से अधिक बिकने वाली पुस्तक के लेखक
ज़ेन माइंड, बिगिनर्स माइंड] ने संभावनाओं का पता लगाना जारी रखा-
योग्यता.... सुजुकी ने उनके जाने से पहले एक दंपत्ति को पुरोहित बनाया था।
जापान। पत्नी ने मठ में अच्छा जीवन व्यतीत किया, लेकिन उसके पति का हाल बुरा था।
जबरन बेहोश करके सोटो मुख्यालय से बाहर भेज दिया गया,
ईहेइजी में स्थित पर्वतीय मठ। ज़ेन सेंटर 46 की एक महिला गुरुओं के कपड़े उतार रही है।

जापानी मंदिरों में उसके इतने भयानक अनुभव रहे थे कि वह
उन्होंने बौद्ध धर्म को पूरी तरह से त्याग दिया, एक विग खरीदी और लॉस एंजिल्स चले गए।
(चैडविक, 1999)।
स्वयं "लिटिल सुजुकी" ने 1966 में सैन फ्रांसिस्को से तीन घंटे दक्षिण-पूर्व में स्थित तस्साजारा गर्म झरनों में एशिया के बाहर दुनिया का पहला बौद्ध मठ स्थापित किया था। सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर (SFZC) और तस्साजारा के आगंतुकों और करीबी सहयोगियों की सूची में अमेरिकी बौद्ध (वास्तविक और दिखावटी) आध्यात्मिकता के दिग्गजों की सूची शामिल है: एलन वाट्स, बीट कवि एलन गिन्सबर्ग और पुलित्जर पुरस्कार विजेता गैरी स्नाइडर। इसके अलावा, अनुवादक थॉमस क्लीरी, सामाजिक अर्थशास्त्री ई. एफ. शूमाकर और स्टीवर्ट ब्रांड (होल अर्थ कैटलॉग के सह-संस्थापक)। साथ ही, हार्वर्ड से स्नातक, हॉलीवुड की देवी उमा के विद्वान पिता और स्वयं को "एशिया का पहला हिप्पी" घोषित करने वाले रॉबर्ट थुरमन, जिन्हें स्वयं दलाई लामा द्वारा पहले अमेरिकी तिब्बती बौद्ध भिक्षु के रूप में दीक्षा दी गई थी। इसके अतिरिक्त, जोन बेज़, मिक जैगर और रोलिंग स्टोन रिकॉर्ड्स के (पूर्व) प्रमुख अर्ल मैकग्राथ भी

शामिल हैं। इसके अलावा, मानवविज्ञानी ग्रेगरी बेटसन, कैलिफोर्निया के पूर्व गवर्नर और 1992 के अमेरिकी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जेरी ब्राउन, और कई अन्य प्राप्तकर्ता भी थे जिन्हें बाद में सुजुकी के उत्तराधिकारी रिचर्ड बेकर द्वारा (गंभीरता से) ऑटोग्राफ किए हुए फ्रूटकेक भेंट किए गए थे।

दरअसल, 1971 में निधन से पहले, सुजुकी-रोशी ने बेकर को अपना एकमात्र अमेरिकी "धर्म उत्तराधिकारी" या गुरु से शिष्य को बौद्ध "प्रसारण" प्राप्त करने वाला व्यक्ति नामित किया था। (बेकर ने स्वयं 1966 में संयुक्त राज्य अमेरिका में पहला बड़ा एलएसडी सम्मेलन आयोजित किया था।)

“ट्रांसमिशन का क्या मतलब है?” मैंने सुजुकी से पूछा... “क्या यह
इसका मतलब यह है कि रिचर्ड बेकर पूर्णतः प्रबुद्ध हैं, और यह कि
क्या उनका मन बुद्ध के मन के समान है? क्या उनकी समझ...
क्या स्थिति पूरी हो गई है?

“अरे नहीं नहीं नहीं,” सुजुकी ने कहा। “इसे इतना बड़ा मुद्दा मत बनाओ।”
इसका मतलब है कि उसे अच्छी समझ है। अच्छी समझ-
और पूर्ण प्रतिबद्धता”....
यह शिक्षक का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के समकक्ष था।
सुजुकी ने व्याख्यानों में कहा था, "ट्रांसमिशन कोई विशेष चीज नहीं है-"
"वास्तव में, प्रसारित करने के लिए कुछ भी नहीं है" (चैडविक,
1999).
सेक्स और हिंसा की कला में ज़ेन 47

हालांकि, बेकर ने स्वयं अपनी आध्यात्मिक विरासत के महत्व के बारे में कुछ अधिक आत्म-प्रशंसात्मक समझ प्रदर्शित की:

संचार की प्रक्रिया पहचान और अहंकार की सीमाओं से परे होती है।
यह तथ्य कि एक मान्यता प्राप्त गुरु आपको एक शिष्य के रूप में स्वीकार करता है
ज़ेन मास्टर का अर्थ है "आप अब बौद्ध नहीं हैं; आप जो कुछ भी हैं
बौद्ध धर्म का पालन करना ही सही तरीका है” (डाउनिंग, 2001; इटैलिक्स जोड़े गए)।

तो फिर, "बौद्ध धर्म क्या है"?

सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर के मठाधीश के रूप में, मठाधीश के बीच
सामुदायिक स्वामित्व वाले आवासों और पुनर्विकास के बजट और उपयोग
सूत्रों के अनुसार, [बेकर] एक ऐसी जीवनशैली में रहते थे जिसे वे अनुमान लगाते हैं कि
लगभग वार्षिक वेतन वाले एक निजी नागरिक द्वारा इसकी प्रतिकृति बनाई गई।
प्रति वर्ष आधा मिलियन डॉलर तक (ट्वोरकोव, 1994)।
उस समय प्रसारित "फ्रिस्को ज़ेन मास्टर" के अधीन अनुशासन में कथित तौर पर (डाउनिंग, 2001) निम्नलिखित शामिल थे:
• बेकर अपने अनुयायियों को निर्देश दे रहा था कि वे किसके साथ संबंध बना सकते हैं या नहीं।
यौन संबंधों में शामिल नहीं हो सकते थे
गुरु ने अपने अनुयायियों को "पंक्तियों में खड़े होकर प्रणाम करने" के लिए कहा।
वह तस्साजारा से एक "शानदार ड्राइविंग अनुभव" वाली बीएमडब्ल्यू में रवाना हुए, जिसके कारण कम से कम उनके एक शिष्य ने उन्हें "ज़ेन का रिचर्ड निक्सन" मान लिया।
• तस्साजारा बोर्ड के दिखावटी तौर पर "आजीवन" सदस्य
बेकर की इच्छाओं का पर्याप्त समर्थन न करने पर निदेशक अनजाने में "अवकाश पर चले जाते हैं"।
एक वरिष्ठ पादरी ने कहा, "बेकर ने जो संदेश दिया, वह शक्ति थी।"
और अहंकार और यह रवैया कि 'यह मेरे पास है और तुम्हारे पास नहीं है'।
(ट्वोरकोव, 1994)।
सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर में, जो समस्याएं सामने आईं
1983 में एक मामले में गुरु-शिष्य के कई यौन संबंध शामिल थे।
मामलों के साथ-साथ कथित दुरुपयोग का एक जटिल पैटर्न भी सामने आया है।
अधिकार और करिश्मा, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक दोनों रूप से
(एंथोनी, एट अल., 1987)।
अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, हार्वर्ड से शिक्षित और विवाहित बेकर को "एक विवाहित छात्रा के साथ अपने अफेयर के फिर से सामने आने के बाद इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया था।"

"प्रकट" (श्वार्ट्ज, 1996)। धनी, फुर्तीली महिला का उन्मत्त पति 48 गुरुओं को नंगा करना

जिस गोरी महिला की बात हो रही है—जिसके बारे में बेकर ने कथित तौर पर दावा किया था कि उसने उसे बहकाया था (काश हम सभी को ऐसी किस्मत मिले)—वह पॉल हॉकेन नाम की एक लेखिका थी। वह खुद स्मिथ एंड हॉकेन के बागवानी उपकरणों (और अन्य) के प्रतिष्ठित कैटलॉग के लिए मशहूर थी, और समुदाय में उसे रिचर्ड का सबसे अच्छा दोस्त माना जाता था, यहाँ तक कि बेकर ने खुद भी उसे इसी नाम से संबोधित किया था (ट्वोरकोव, 1994)।
रिपोर्ट के अनुसार, रिचर्ड ने बर्खास्तगी के बाद कम से कम दो अन्य महिलाओं को मानसिक रूप से अस्थिर बताकर बेरहमी से बदनाम किया।
उनके साथ कथित यौन संलिप्तता (डाउनिंग, 2001)।
इन सब के बाद, 'द तस्साजारा ब्रेड बुक' के लेखक ने बेकर के बारे में अपनी राय व्यक्त की:
मेरे एक दोस्त ने इसे सबसे अच्छे तरीके से कहा: मैं डिक बेकर को धन्यवाद देता हूँ।
हर दिन इतनी बुरी तरह से गड़बड़ करने के लिए कि इसने मुझे
मुझे अपना जीवन वापस मिल गया, क्योंकि मैंने इसे उसे दे दिया था (डाउनिंग में)।
2001).
वरिष्ठ पादरी सार्वजनिक सभाओं में शारीरिक स्थिति के बारे में गवाही दे रहे थे।
रिचर्ड ने कथित तौर पर शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार किया था।
इलाज किया गया....
रिचर्ड के करीबी दोस्त और सलाहकार, एस्लेन के माइकल
मर्फी ने रिचर्ड से कहा कि "पूरा वैकल्पिक आंदोलन
ज़ेन सेंटर में जो कुछ हुआ उससे वह बुरी तरह प्रभावित हुआ था" (डाउनिंग,
2001).
और फिर भी, आज तक, बेकर कथित तौर पर इस बात पर जोर देते हैं:
ज़ेन सेंटर में हुई एकमात्र शर्मनाक घटना यह है कि
मेरे साथ कैसा व्यवहार किया गया (ट्वोरकोव में, 1994)।
ज्ञानोदय, गहन ज्ञान प्राप्ति और महान बोधिसत्व प्रतिज्ञाओं का दावा करने वाले निडर

व्यक्तियों में दूसरों को "कोई हानि न पहुँचाने" का अर्थ समझने की कमी, एक ऐसी समस्या है जिसका सामना हमें आने वाले अध्यायों में लगातार करना पड़ेगा। इससे भी बुरी बात यह है कि जिन लोगों का जीवन उनके गुरुओं द्वारा तबाह कर दिया गया है, और जिन्होंने बोलने का साहस जुटाया है, उन्हें "पागल" आदि कहकर खारिज कर दिया जाता है और उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाए जाते हैं। इसके अलावा, उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसा कि अनाचार या बलात्कार के धर्मनिरपेक्ष पीड़ितों के साथ किया जाता है, यदि वे आगे आने का साहस करते हैं।
बेकर की स्वयं द्वारा 1983 में स्वयं पर थोपी गई "प्रलय" से उबरने की प्रक्रिया में नोबेल शांति पुरस्कार के नामांकित व्यक्ति का एक पत्र भी शामिल था, जो सेक्स और हिंसा की कला में ज़ेन था।

वियतनामी बौद्ध धर्मगुरु थिच न्हाट हान ने बेकर द्वारा समुदाय से की गई सच्ची माफी की पुष्टि की। इसके अलावा, दलाई लामा द्वारा उन्हें उत्तरी भारत में शरण लेने का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया, और गायिका लिंडा रॉनस्टैड के साथ डिज्नीलैंड की यात्रा का भी जिक्र है।
शाम को बाहर जाने की तैयारी करते हुए, [बेकर] अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाता है।
और दुख भरे स्वर में कहती है, "जब मैं छोटी थी तब मैंने पर्याप्त नृत्य नहीं किया।"
ज़ेन केंद्र। मुझे और नाचना चाहिए था" (ट्वोरकोव, 1994)।
या फिर, जैसा कि स्वयं नीरो ने हजारों साल पहले अपने साम्राज्य को जलते हुए देखकर कहा होगा: "मुझे और ज्यादा बांसुरी बजानी चाहिए थी।"
और "पारंपरिक" सुदूर पूर्व में बेकर के कथित व्यवहारों को लेकर उत्पन्न सभी असंतोष को कैसे संभाला जाता?
व्यक्तिगत छात्रों के साथ व्यवहार करना संबंधित अधिकारी के अधिकार क्षेत्र में था।
शिक्षक। यह पारंपरिक मॉडल था। चाहे कुछ भी हो जाए-
खुले तौर पर, आप कह सकते हैं कि यह एक शिक्षण था (डाउनिंग, 2001; इतालवी-
आईसीएस जोड़ा गया)।
इसके अलावा, 1983 के "विस्फोट" के बाद,
जापान से लोग आए और उन्होंने हमें यह समझाने की कोशिश की कि अगर हम

अगर हम शिक्षक से नाखुश हैं, तो हमें चले जाना चाहिए, और शिक्षक
रहना चाहिए (यवोन रैंड, [डाउनिंग, 2001] में)।
असंतुष्ट छात्रों को बाहर भेजने और पवित्र गुरु को वहीं रहने देने का यह दबाव, इस निराधार धारणा से गहराई से जुड़ा है कि गुरु-शिष्य संबंध "परंपरागत रूप से" कारगर रहे हैं। (इसमें निहित निराधार दावा यह है कि कृषि प्रधान पूर्वी देशों में ऐसे संबंधों में "नियंत्रण और संतुलन" की व्यवस्था थी, जो कथित तौर पर गुरुओं के व्यवहार को इस प्रकार नियंत्रित करती थी जो पश्चिम में नहीं है।) क्योंकि, रैंड के उपरोक्त अवलोकन स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि "परंपरागत" समाजों ने अपने गुरुओं/राजाओं/सम्राटों के व्यवहार पर आधुनिक और उत्तर-आधुनिक पश्चिम की तुलना में कहीं कम व्यावहारिक नियंत्रण और संतुलन बनाए रखा है।
मुझे स्कूल में सिखाया गया था कि [जापानी सम्राट]
[sic] भगवान और मैं दस साल की उम्र तक विश्वास करता रहा और युद्ध
[अर्थात द्वितीय विश्व युद्ध] समाप्त हो गया....
हम चीनी लोगों को हीन और गोरों को शैतान समझते थे।
केवल ईश्वर, हमारा ईश्वर ही युद्ध जीत सकता था (चैडविक, 1994 में)। 50 गुरुओं का सार उजागर करना

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक जापान की "दिव्य भूमि" में वास्तव में एक सामंती समाज विद्यमान था, जहाँ गुरु समान, दिव्य सम्राट—"सर्वोच्च सत्य का अवतार"—के प्रति बिना किसी प्रश्न के आज्ञापालन किया जाता था। अतीत और वर्तमान समाज एवं संस्कृति में नागरिकों पर इसके प्रभावों को समझने के लिए विक्टोरिया (1997) की पुस्तक "ज़ेन एट वॉर", वैन वोल्फेरेन (1990) की पुस्तक "द एनिग्मा ऑफ जापानी पावर" और बैरी (1992) की पुस्तक "डेव बैरी डज़ जापान" देखें।
इसके अलावा, दिवंगत शुनर्यु सुजुकी के जापानी शिक्षक ग्योकुजुन सो-ऑन के निजी जीवन पर भी विचार करें। सुजुकी 1917 में तेरह वर्ष की आयु में सो-ऑन के शिष्य बने। उन्हीं वर्षों में, सो-ऑन का एक स्थानीय (जापानी) व्यापारी की पत्नी के साथ प्रेम संबंध चल रहा था।
हर कोई उनके रिश्ते के बारे में जानता था... किसी ने कुछ नहीं किया।
उनकी गुप्त मुलाकातों को रोकने के लिए कदम उठाए गए, लेकिन आम तौर पर

इसका विरोध हुआ।
यह सो-ऑन में छात्रों की कमी का एक कारण था (चाड-
विक, 1999)।
ध्यान दें कि इस नियम-उल्लंघन पर केवल एक हल्की-फुल्की "सामान्य अस्वीकृति" ही दिखाई गई, न कि कोई अनुशासनात्मक कार्रवाई, सार्थक निंदा या करियर में ऐसी बाधाएँ जो इसे रोकने के लिए पर्याप्त हों। यह बात इस तथ्य से अप्रभावित है कि कोई व्यक्ति इस तरह की "सामान्य अस्वीकृति" के स्थानीय सांस्कृतिक प्रभाव को मानहानि आदि के रूप में कुछ भी प्रस्तावित करे। इसके अलावा, इस व्यवहार में, सो-ऑन स्वयं एक लंबे समय से चली आ रही "परंपरा" को ही आगे बढ़ा रहा था:
ईदो काल [1600 – 1868] में बौद्ध पुजारियों ने विवाह नहीं किया।
लेकिन मंदिर व्यस्त स्थान थे, और कई मंदिरों में पुजारी मौजूद रहते थे।
मामले कुछ हद तक सांसारिक थे। महिलाएं रहने लगीं
मंदिरों में जाने के लिए, काम करने के लिए और कभी-कभी प्यार करने के लिए।
उन्होंने यह नहीं दिखाया
उनके चेहरे पर हैरानी के भाव थे क्योंकि उन्हें शुरू से ही वहां नहीं होना चाहिए था।
(चैडविक, 1999; इटैलिक्स जोड़े गए)।
ओटोरी [1814 – 1904] ने यह माना कि बड़ी संख्या में बौद्ध-
नियमों के बावजूद, बौद्ध पुजारी पहले से ही विवाहित थे।
इस पर प्रतिबंध लगाते हुए (विक्टोरिया, 1997; इटैलिक्स जोड़े गए)।
जापान के ज़ेन मठों में... पुरुषों के बीच यौन संबंध लंबे समय से प्रचलित हैं।
यह एक सामान्य प्रथा होने के साथ-साथ एक निषिद्ध गतिविधि भी रही है।
(डाउनिंग, 2001; इटैलिक्स जोड़े गए)।
हर शाम ठीक उसी समय, एक हल्की सी गंध आती थी।
अंधेरे कब्रिस्तान से धुएँ का गुबार। यह तीसरे ज़ेन इन द आर्ट ऑफ़ सेक्स एंड वायलेंस 51 तक नहीं था।

चौथे दिन मुझे एहसास हुआ कि भिक्षु वास्तव में धर्मनिष्ठ नहीं थे।
पुराने उस्तादों की कब्रों पर अगरबत्तियां जलाना; वे
वे चुपके से एक निषिद्ध सिगरेट पी रहे थे [इटैलिक में जोड़ा गया]

काई से ढके कब्रों की छायाएँ...
जब मैं उस दलदल से निकला तो आसपास कोई नहीं था, लेकिन मुझे लगा कि मैं
भूलभुलैया के भीतर से महिला के हंसने की आवाज सुनाई दी।
पतली दीवारों वाले कमरों को देखकर, मैं सोचने से खुद को रोक नहीं पाया कि क्या
जब रोशी शहर से बाहर होते थे तो अन्य नियमों में ढील दी जा सकती थी।
मैं टेराकोटा के आंगन से बाहर निकला, और जैसे ही मैं
कुत्ते के घर के पास से गुजरते हुए मैंने देखा कि [कुत्ते के] बर्तन में कुछ था-
साधारण मटमैले रंग के दाने। इससे मेरा संदेह पुष्ट हो गया।
चूल्हे पर [बौद्ध आहार में निषिद्ध] मांस
कुत्ते की वजह से तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं हुआ था (बोहम, 1996)।
इस प्रकार के पूर्णतः दंडमुक्त समकालीन नियम के अनुरूप-
ब्रेकिंग, जेनविलेम वैन डी वेटरिंग (1999) क्योटो में अपने स्वयं के अनुभवों से संबंधित है:
मैंने देखा कि युवा भिक्षुओं ने तोड़ने के तरीके खोज लिए थे।
मठ के नियम... जब वे सूट और एक
टोपी के ऊपर से कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा, और मैंने उन्हें चढ़ते हुए देखा।
रात में दीवार।
"जब आप दीवार के उस पार पहुँच जाते हैं तो आप क्या करते हैं?"
सबसे छोटे भिक्षु हान-सान ने पूछा, जो मेरा बन गया था।
दोस्त।
“जब तक तुम किसी को नहीं बताओगे,” हान-सान ने कहा। “हम चलते हैं।”
सिनेमा देखने जाते हैं, और कभी-कभी पब में जाकर थोड़ी सी साके पीते हैं।
लेकिन यह मुश्किल है क्योंकि हमें सुबह 3:30 बजे उठना पड़ता है।
गुरु से मिलने जाओ और हमारे शरीर से शराब की गंध नहीं आनी चाहिए। और
कभी-कभी हम वेश्याओं के पास जाते हैं।
ज़ेन पुरोहित और भिक्षु, बौद्ध धर्म की अन्य शाखाओं (जैसे थेरवाद) के विपरीत, वास्तव में ब्रह्मचर्य की शपथ नहीं लेते हैं। फिर भी, उपर्युक्त गुप्त गतिविधियाँ, यहाँ तक कि उन अप्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा भी जो "अच्छे और बुरे के नियमों से परे" होने का दावा नहीं कर सकते, निश्चित रूप से एशियाई समुदाय/समाज के नियमों का उल्लंघन

थीं। इसके अलावा, उन्हें मठ के नेताओं द्वारा कोई दंड भी नहीं दिया गया—जिन्होंने स्वयं भी अपने युवावस्था में निश्चित रूप से इन्हीं नियमों का उल्लंघन किया होगा।
यहाँ मुद्दा स्पष्ट रूप से यह नहीं है कि "नियमों का पालन किया जाना चाहिए"—जैसा कि सुकरात ने प्राचीन न्यायाधिकरण द्वारा दी गई अन्यायपूर्ण मृत्युदंड को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करके स्पष्ट रूप से कहा होगा (अस्केनासी, 1978), या उस सत्ता के "केवल आदेशों का पालन" करना। 52 गुरुओं का सार उजागर करना

दरअसल, इन सभी उदाहरणों से जो मुख्य बात सामने आती है, वह यह है कि यह दावा कि आध्यात्मिक साधक पूर्वी कृषि प्रधान क्षेत्रों में नियमों का पालन करते थे, दस्तावेज़ों में दर्ज जानकारी से बिल्कुल मेल नहीं खाता। यह बात "गुरु-प्रधान विद्या" से भी पूरी तरह संबंधित है, क्योंकि इसी मान्यता का इस्तेमाल अक्सर इस गलत धारणा को पुष्ट करने के लिए किया जाता है कि गुरु-शिष्य संबंध उन संदर्भों में कारगर थे, भले ही हमारे समाज और संस्कृति में वे ठीक से काम न कर रहे हों।
और न ही वैन डे वेटेरिंग द्वारा ऊपर सूचीबद्ध आनंदों को खोजने के लिए बाहर जाने की आवश्यकता थी:
लड़कियों ने निमंत्रण पत्र लेकर सोडो के आंगन में पत्थर फेंके।
लाल रिबन से बंधा हुआ... एक बार मेरे सिर पर पत्थर लग गया था
(वैन डे वेटेरिंग, 2001)।
गीली रात, एक चट्टान, ओह!
उसका प्यार लाल रिबन की तरह लहराता है
आकाश से गिरना
लेकिन ऐसी “ज्ञान प्राप्ति” से बहुत दूर... जहाँ महान, पूजनीय गुरु और उनके विनम्र शिष्य लकड़ी काटते हैं, पानी भरते हैं और अवैध यौन संबंध बनाते हैं... वहीं एक ज़ेन तीरंदाज की शांत, सहज सुंदरता है, जिसका प्रदर्शन डच टेलीविजन पर प्रसारित होता है—
वस्त्र पहने एक जापानी तीरंदाज, झुकते हुए, घुटने टेकते हुए, नृत्य करते हुए-
उसने धनुष की डोरी खींचने से पहले प्रार्थना की... और उसका
तीर लक्ष्य से पूरी तरह चूक गया (वैन डे वेटेरिंग, 2001)।
लेकिन क्योटो मठ की दीवारों पर पत्थर फेंकने वाली युवतियां—जिनके प्रेम के मीठे

प्रस्ताव नरम लाल रेशमी रिबन से बंधे होते थे—हर बार निशाने पर लगते थे।

अध्याय VII

सेक्स, आनंद,
और रॉक 'एन' रोल
(स्वामी सच्चिदानंद)

स्वामी सच्चिदानंद वर्जीनिया के बकिंघम काउंटी में स्थित योगविले आश्रम के संस्थापक थे, जिसकी स्थापना 1979 में हुई थी, और इसके अलावा न्यूयॉर्क, सैन फ्रांसिस्को और अन्य जगहों पर इसके उपग्रह अभिन्न योग संस्थान भी स्थापित किए थे।
उनका जन्म 1914 में दक्षिण भारत में हुआ था और उन्होंने कम उम्र में ही शादी कर ली थी, लेकिन अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने बच्चों को छोड़ दिया और अट्ठाईस वर्ष की आयु में पूर्णकालिक आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़े।
1949 में, उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु, प्रसिद्ध स्वामी शिवानंद द्वारा स्वामी दीक्षा प्राप्त की। शिवानंद ने भारत के पहाड़ों और जंगलों में खोजबीन करके ऋषिकेश में उस संत को खोजा था। उनका मठवासी नाम, सच्चिदानंद, का अर्थ है "अस्तित्व-ज्ञान-आनंद"।
वह 1966 में साइकेडेलिक कलाकार पीटर मैक्स के अतिथि के रूप में न्यूयॉर्क आए थे।
जल्द ही यह बात फैल गई कि सच्चिदानंद ने एक गिलास पानी को आशीर्वाद देकर अपने एक शिष्य की गुर्दे की बीमारी ठीक कर दी थी।
उन्होंने 1969 में वुडस्टॉक में भाषण दिया था, जहां उन्हें ऐतिहासिक संगीत समारोह को आशीर्वाद देने के लिए हेलीकॉप्टर से लाया गया था।

मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि हम सब मिलकर कुछ बनाने के लिए एकत्रित हुए हैं।
कुछ लोग ध्वनियाँ "व्यक्त" करते हैं, ताकि उनके माध्यम से शांति और आनंद प्राप्त किया जा सके।
दिव्य संगीत। मुझे यह अवसर मिलने पर गर्व है।
इस शानदार संगीत समारोह (शनिवार-) के उद्घाटन का अवसर
चिदानंद, [वीनर, 1972] में)।
वुडस्टॉक से पहले भी, सच्चिदानंद कार्नेगी हॉल में हाउसफुल शो करते थे और उन्हें आध्यात्मिक जगत में "सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों" में से एक माना जाता था।
पिल्सबरी कॉर्पोरेशन ने पोषण संबंधी उनके विचारों को जानने का प्रयास किया था।
1970 के दशक की शुरुआत तक, संयुक्त राज्य अमेरिका के पंद्रह केंद्रों में हजारों इंटीग्रल योग के अनुयायी अध्ययन कर रहे थे। 1977 के अंत तक, सच्चिदानंद के अनुयायियों की संख्या लाखों में पहुंच गई थी। इस समूह में स्वास्थ्य और आहार विशेषज्ञ डॉ. डीन ऑर्नेश, मॉडल लॉरेन हटन, जेफ "द फ्लाई" गोल्डब्लम और कैरोल "यू हैव गॉट अ फ्रेंड" किंग शामिल हैं, जिन्होंने योगी के संगठन को कनेक्टिकट में जमीन दान की थी।
वर्जीनिया में योगाविले के लिए अन्य, अधिक गर्म भूमि प्राप्त करने के बाद, वहां शिवानंद हॉल का निर्माण किया गया, जिसमें हॉल के एक छोर पर एक बड़े मंच के ऊपर गुरु के लिए एक लकड़ी का सिंहासन स्थापित था। हालाँकि, उस 600 एकड़ के आध्यात्मिक साम्राज्य में गरीब "प्रजा" का जीवन स्पष्ट रूप से शाही नहीं था:
संन्यासियों [भिक्षुओं] के अनुष्ठानिक त्याग में निम्नलिखित शामिल थे:
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपना पूरा जीवन समर्पित करूँगा और सभी चीजों का त्याग करूँगा।
जिसे मैं श्री गुरुदेव के चरणों में अपना कहता हूँ [अर्थात, सच्चिद]
नंदा]। इसमें मेरा शरीर, मन, भावनाएँ, बुद्धि शामिल हैं,
और मेरे पास मौजूद सभी भौतिक सामान।" हालाँकि वे
उनसे भोजन और आवास जैसी बुनियादी चीजों के लिए भुगतान करने की उम्मीद नहीं की जाती थी।

उन्हें जर्जर ट्रेलरों में रहने के लिए मजबूर कर दिया गया था, जो कभी-कभी कीड़ों से भरे होते थे।
चूहे या जूँ (काट्ज़, 1992)।
अपने अनुयायियों की कथित गरीबी के बावजूद, सच्चिदानंद ने स्वयं एक प्राचीन कैडिलैक और एक चेरी लाल रंग की रोल्स-रॉयस कार खरीदी थी।
इसके अलावा, और सचीदानंद की वुडस्टॉक पृष्ठभूमि को देखते हुए कुछ हद तक अजीब बात यह है कि आश्रम में ही
रॉक एंड रोल के दर्जनों पूर्व बच्चे एक साथ बैठकर कुछ बनाने के लिए बैठ गए।
प्रतिबंधित किए जाने वाले "आपत्तिजनक" गीतों और टेलीविजन शो की सूची
योगाविले की सीमाओं के भीतर। इसके तुरंत बाद, ऐश-सेक्स, ब्लिस और रॉक 'एन' रोल 55 के बीच डेटिंग।

हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी होने तक बच्चों को राम खिलाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
फिर आश्रम विद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चों से कहा गया कि वे
एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करना जिसमें वे यह वचन देते हैं कि वे डेटिंग नहीं करेंगे, संबंध नहीं बनाएंगे।
यौन संपर्क करना, प्रतिबंधित संगीत सुनना या प्रतिबंधित सामग्री देखना
टेलीविजन धारावाहिकों।
सच्चिदानंद ने कभी औपचारिक रूप से इस पर टिप्पणी नहीं की।
नए प्रतिबंधों पर, लेकिन निवासियों को समझ आ गया था कि
नियमों पर उनकी अप्रत्यक्ष स्वीकृति थी (काट्ज़, 1992)।
इन प्रतिबंधों के लागू होने के बाद, आश्रम के एक सदस्य के खिलाफ ब्रूस स्प्रिंगस्टीन का एल्बम सुनने के लिए शिकायत दर्ज की गई।
इन सब बातों को देखते हुए, यह बात और भी अजीब लगती है कि पावर-पॉप बैंड वीज़र के मुख्य गायक रिवर्स कुओमो ने अपने पहले दस वर्षों का अधिकांश समय योगाविले में बिताया।
* * *
कुछ लोग तांत्रिक भाषा का फायदा उठाते हैं।

शास्त्रों के अनुसार, वे कहते हैं, "मैं तुम्हें तांत्रिक योग सिखाने जा रहा हूँ।"
“आओ मेरे साथ सो जाओ।” भारी मन से मैं तुमसे यह कहता हूँ कि
कुछ तथाकथित गुरु ऐसा करते हैं, और मैं उनसे कहता हूँ, "अगर आप चाहें तो..."
जब आप यौन संबंध बनाना चाहें, तो खुलकर बोलें, ‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ, बच्चे, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।’
आप, मेरे भक्त...
योग भिक्षु स्वतः ही ब्रह्मचारी हो जाते हैं जब वे
परम ईश्वर को जानने की प्यास रखें, और यह महसूस करें कि...
ऐसा करने के लिए उन्हें भौतिक शरीर और उससे ऊपर उठना होगा।
इंद्रियाँ (सच्चिदानंद, [मंडेलकोर्न, 1978] में)।
गुरु की विशिष्ट पहचान यह है, जैसा कि श्री स्वामीजी ने कहा है [अर्थात]
सच्चिदानंद कहते हैं, "अपने शरीर पर पूर्ण नियंत्रण।"
और मन, हृदय की पवित्रता, और बंधन से पूर्ण मुक्ति-
इंद्रियों का युग” (सच्चिदानंद में, 1977)।
संन्यास की प्रतिज्ञा लेने की प्रक्रिया, जिसमें "स्वामी" की उपाधि प्रदान की जाती है, में स्वाभाविक रूप से ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा भी शामिल होती है। हालाँकि, यह गंभीर प्रतिज्ञा "वुडस्टॉक स्वामी" को, जैसा कि वे कहते हैं, स्प्रिंगस्टीन के द राइजिंग के माध्यम से या किसी अन्य तरीके से "मस्ती करने" से नहीं रोक पाई होगी:
1991 में कई महिला अनुयायियों ने कहा कि उसने इनका इस्तेमाल किया था।
उनका आध्यात्मिक गुरु बनकर उनका यौन शोषण करना।
आरोपों के सार्वजनिक होने के बाद कई भक्तों ने साथ छोड़ दिया।
सचीदानंद और सैकड़ों छात्रों ने आईवाईआई छोड़ दिया।
स्कूलों में, लेकिन स्वामी ने कभी भी किसी भी गलत काम को स्वीकार नहीं किया।
56 गुरुओं को नंगा करना

परिणामस्वरूप, इंटीग्रल योगा संगठन का आकार घट गया।
एक तिहाई से अधिक। हीलिंग थ्रू नामक एक संगठन।
ट्रूथ नेटवर्क का गठन हुआ और कम से कम आठ अन्य
महिलाओं ने यौन शोषण के दावों के साथ आगे आकर शिकायत दर्ज कराई (एस.

कोहेन,
2002ए)।
[सुसान कोहेन का दावा है कि] सच्चिदानंद ने फायदा उठाया
जब वह 1969 से छात्रा थी [जब वह आठ साल की थी]
ईन] से 1977 तक (एसोसिएटेड प्रेस, 1991)।
एक अन्य अनुयायी, उन्नीस वर्षीय सिल्विया शापिरो, साथ में-
स्वामी जी के साथ विश्व यात्रा पर गए।
"मनीला में, उन्होंने [अपनी दिन में दो बार की मालिश] को बदल दिया
मुझे मुख मैथुन के लिए प्रेरित किया," सुश्री शापिरो ने कहा (एसोसिएटेड प्रेस, 1991)।
दिसंबर [1990] तक जॉय ज़करमैन यहाँ रह रही थीं।
योगाविले, जहां उन्हें स्वामी कृपानंद के नाम से जाना जाता था।
एक दोस्त द्वारा यह बताए जाने के बाद कि सच्चिदानंद
पिछले गर्मियों में सुश्री ज़ुक ने उनके साथ यौन दुर्व्यवहार करने की कोशिश की थी।
केरमन ने कहा (मैकगीही, 1991)।
* * *
गुरु वह होता है जिसके पास स्थिर ज्ञान होता है... वह व्यक्ति जो पुनः प्राप्त कर सकता है।
स्वयं को साकार करें। उस अनुभूति के होने पर, आप इतने सक्षम हो जाते हैं।
स्थिर; तुम कभी घबराते नहीं हो। तुम हमेशा शांत रहोगे।
कोई भी चीज़ आपको हिला नहीं सकती (सच्चिदानंद, 1977)।
हालांकि, सच्चिदानंद के स्वयं के ड्राइवर ने स्वामी में इन पवित्र गुणों के अलावा अन्य गुण भी पहचाने:
घंटों ट्रैफिक जाम में बैठे रहने के बाद, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का अवलोकन किया।
मास्टर को रियरव्यू मिरर में देखते हुए, हैरी ने फैसला कर लिया था कि श्री
स्वामी सच्चिदानंद न केवल शांत स्वभाव से बहुत दूर थे, बल्कि वे
एक चिड़चिड़ा और बेहद गुस्सैल बूढ़ा आदमी। एक बार भी नहीं
हैरी ने सच्चिदानंद के साथ अपने आध्यात्मिक बंधन को और मजबूत होते हुए महसूस

किया।
तमाम आलोचनाओं के बावजूद, चाहे उनका उद्देश्य कितना भी शिक्षाप्रद और पितृवत रहा हो।
होना (काट्ज़, 1992)।
कहते हैं ना, "कोई भी व्यक्ति अपने नौकर की नजर में महान नहीं होता।"
एक "स्थिर" व्यक्ति दुनिया को कैसे देखेगा, इसका वर्णन करते हुए, साच्चिदानंद (1977) ने भगवद् गीता से कृष्ण के उद्धरण भी दिए:
सेक्स, आनंद और रॉक 'एन' रोल 57

आत्मज्ञानी पुरुष ब्राह्मण को समान दृष्टि से देखते हैं।
[अर्थात, एक आध्यात्मिक व्यक्ति] जो ज्ञान और विनम्रता से परिपूर्ण हो,
एक गाय, एक हाथी, एक कुत्ता और एक बहिष्कृत व्यक्ति।
हालांकि, सिद्धांत और व्यवहार के बीच हमेशा विरोधाभास रहता है:
लोरेन [सच्चिदानंद के] काडिल के बगल में खड़ी थी।
लाख... जब खूबसूरत मॉडल [लॉरेन हटन] और
गुरु बाहर आए और अंदर चढ़ गए। सच्चिदानंद अंदर नहीं गए।
लोरेन की उपस्थिति को नज़रअंदाज़ करने के अलावा और कुछ नहीं किया, सिवाय उसे घूरने के।
उसने चिड़चिड़े पिता की आवाज में कहा, "दरवाजा जोर से बंद मत करो।"
(काट्ज़, 1992)।
* * *
सच्चिदानंद का निधन अगस्त 2002 में हुआ था। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने अपने ऊपर लगे यौन दुराचार के आरोपों के बारे में यह कहा था:
“वे जानते हैं कि यह सब झूठ है,” [सच्चिदानंद] ने कहा था।
आठ साल पहले [यानी 1991 में]। "मुझे नहीं पता कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं।"
ये सब बातें कहते हुए। मेरी जिंदगी एक खुली किताब है। इसमें कुछ भी छिपा नहीं है। मेरे लिए छिपने के लिए” (एस. चोपड़ा, 1999)।
वहीं दूसरी ओर, योगाविले अभी भी पूरी तरह से जीवंत है, हालांकि हाल ही में एक विश्वविद्यालय से जुड़े कथित "दिमाग नियंत्रण" घोटाले के बीच।

शहर की उम्र की महिला, कैथरीन चेंग (एक्स्ट्रा, 1999)।

अध्याय आठ

छठा बीटल्स
(MAHARISHI MAHESH YOGI)

भौतिक विज्ञानी जॉन एस. हेगेलिन ने भविष्यवाणी की है कि महर्षि के...
इतिहास पर उनका प्रभाव आइंस्टीन के प्रभाव से कहीं अधिक होगा।
या गांधी" (गार्डनर, 1996)।
आप महर्षि से बिना उनकी पहचान जाने नहीं मिल सकते थे।
उनकी ईमानदारी बेहद महत्वपूर्ण है। उनकी आंखों में देखिए, आपको वही नज़र आएगी।
(बकमिन्स्टर फुलर, [फोरम, 1973] में)।
महर्षि का संपूर्ण आंदोलन उनके प्रति आस्था पर आधारित है...
कथित सर्वज्ञता (स्कॉट, 1978)।

1918 में जन्मे महर्षि महेश योगी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिकी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके तुरंत बाद, उन्होंने अपने गुरु देव स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती से ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन (टीएम) की विधि ग्रहण की, जो भारत में योग के प्रमुख स्तंभों में से एक थे और देश के चार योग गुरुओं में से एक थे। उन्होंने गुरु देव के मार्गदर्शन में तेरह वर्षों तक योग का अभ्यास किया, जो 1953 में उनकी मृत्यु तक जारी रहा। इसके बाद महर्षि (महान ऋषि) 1959 में लंदन गए और वहां एक शाखा की स्थापना की।

वहाँ स्थित अंतर्राष्ट्रीय ध्यान समाज का उद्देश्य टीएम की शिक्षाओं का प्रसार करना है।

ध्यान साधना स्वयं मंत्र योग का एक उदाहरण है। विद्यार्थी प्रत्येक सुबह और शाम कम से कम बीस मिनट तक मन ही मन संस्कृत शब्दों की एक श्रृंखला का जाप करता है। (कहा जाता है कि ऐसे मंत्र विद्यार्थी की उम्र के आधार पर चुने जाते हैं। और ये मंत्र सस्ते नहीं होते।)

महर्षि ने अन्य सभी विद्याओं को हतोत्साहित करने में तत्परता दिखाई। “सभी

पिछले सौ वर्षों से इन प्रणालियों की गलत व्याख्या की गई है।

“कई सालों से,” उन्होंने कहा। “उनके साथ समय बर्बाद मत करो। अगर तुम

यदि आप हठ योग में रुचि रखते हैं, तो कृपया तब तक प्रतीक्षा करें जब तक मुझे पुनः उत्तर देने का समय न मिल जाए।

इसकी व्याख्या करो। पारलौकिक ध्यान का कोई सानी नहीं है।

किसी भी ज्ञान क्षेत्र में सिद्धांतों या व्यवहार में किसी भी प्रकार का परिवर्तन।

किनारा” (एबोन, 1968; इटैलिक्स जोड़े गए)।

महर्षि को न केवल टीएम के प्रसार के लिए, बल्कि विश्व पर इसके समग्र प्रभाव के लिए भी बहुत आशाएं थीं:

उन्होंने न्यूयॉर्क के श्रोताओं से वही बात कही, जो उन्होंने अनगिनत लोगों से कही थी। अन्य लोगों ने इससे पहले कई विश्व भ्रमणों में इसे अपनाया था-

विश्व की 10% या यहाँ तक कि 1% आबादी द्वारा भी उनकी शिक्षाओं का पालन करना...

यह प्रक्रिया युद्ध की शक्ति को बेअसर करने के लिए पर्याप्त होगी।

हजारों वर्षों” (एबोन, 1968)।

[टीएम] आंदोलन ने सिखाया कि प्रबुद्ध व्यक्ति क्या करता है

उसे आलोचनात्मक चिंतन का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, वह प्रकृति के अनुरूप जीवन जीता है।

“असीम सार्वभौमिक चेतना।” वह कोई गलती नहीं करते।

लेता है, उसका जीवन त्रुटि रहित है (पैट्रिक एल. रयान, [लैंगोन,

1995]).

1967 की शरद ऋतु में, परम पूज्य ने लंदन में एक व्याख्यान दिया, जिसमें बीटल्स भी उपस्थित थे। उस व्याख्यान के बाद, फैब फोर—मिक जैगर और मैरिएन फेथफुल के साथ—महर्षि के निमंत्रण पर उनके साथ ट्रेन से बांगोर, उत्तरी वेल्स तक गए।

बांगोर के रेल प्लेटफार्म पर पहुँचते ही, सैकड़ों चीखते-चिल्लाते प्रशंसकों ने उन्हें घेर लिया, जिन्हें महर्षि ने बड़े ही आकर्षक ढंग से यह मान लिया कि वे उन्हें देखने आए हैं।
रवि शंकर की तरह, महर्षि भी अनभिज्ञ थे।
समूह की प्रतिष्ठा से अवगत होते हुए भी, प्रासंगिक जानकारी से लैस।
रिकॉर्ड्स के आधार पर, उन्होंने उनके संगीत का एक क्रैश-कोर्स किया और...
उन्होंने अपने भाषणों को उनके गीतों के उद्धरणों से स्पष्ट करना शुरू किया। फ्लैट-60 स्ट्रिपिंग द गुरुज़

हालांकि वे निराश थे, लेकिन बीटल्स उनकी बातों से आश्वस्त नहीं थे।
यह तर्क कि यदि वे ध्यान के प्रति गंभीर होते, तो वे
उन्हें अपनी आय का एक निश्चित प्रतिशत अपने स्विस कोष में दान करना चाहिए।
बैंक खाता। क्योंकि उन्होंने वास्तव में मना नहीं किया था, इसलिए मा-
हरिशी ने अमेरिकी निवेशकों को आश्वासन दिया कि चारों होंगे
उनके बारे में बनी एक टीवी डॉक्यूमेंट्री में सह-कलाकार के रूप में (क्लेसन, 1996)।
ऐसी खबरें थीं कि महर्षि ने बीटल्स को दीक्षा देने के लिए फीस ली थी।
उनमें से प्रत्येक से एक सप्ताह का वेतन लिया गया—यह एक बहुत बड़ी रकम थी।
(क्लेन और क्लेन, 1979)।
फरवरी 1968 के मध्य में, जॉन, पॉल, जॉर्ज और रिंगो अपनी-अपनी पत्नियों और प्रेमिकाओं के साथ भारत में महर्षि के ऋषिकेश ध्यान केंद्र पर पहुँचे। उनके साथ बीच बॉयज़ के माइक लव और "मेलो येलो" डोनो-वान, साथ ही हाल ही में सिनात्रा से अलग हुई मिया फैरो और उनकी छोटी बहन प्रूडेंस भी थीं। (द डोर्स और ग्रेटफुल डेड के गिटारवादक बॉब वेयर भी टीएम के प्रति उत्साही थे, लेकिन उन्होंने ऋषिकेश यात्रा में भाग नहीं लिया।) महर्षि के समकालीन अनुयायियों में अभिनेत्री हीथर ग्राहम और नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिक विज्ञानी ब्रायन जोसेफसन शामिल हैं। साथ ही दीपक चोपड़ा भी।
[देखें ट्रान्सनेट, 2004], जिसकी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक क्वांटम हीलिंग महर्षि को समर्पित थी। साथ ही, एक समय क्लिंट ईस्टवुड और क्वार्टरबैक जो नामथ भी इससे जुड़े थे।

जैसा कि खुद रिंगो ने कहा था:
हम चारों की जिंदगी बेहद व्यस्त रही है। हम सभी के पास...
लगभग हर वो चीज़ जो पैसे से खरीदी जा सकती है, लेकिन ज़ाहिर है कि बस इतना ही।
कुछ समय बाद इसका कोई महत्व नहीं रह जाता। लेकिन अब हमें कुछ मिल गया है। जो वास्तव में कमी को पूरा करता है, और वह प्रभु है (गिउलियानो में)।
1986).
द बीटल्स का 1968 में ऋषिकेश में प्रवास मूल रूप से तीन महीने तक चलने वाला था।
जैसा कि उम्मीद थी, रिंगो और उनकी पत्नी मॉरीन दस दिन बाद सबसे पहले चले गए। उन्होंने "हॉलिडे कैंप" जैसा माहौल, खाने का तीखापन, अत्यधिक कीड़े-मकोड़े और दोपहर की उमस भरी गर्मी को इसका कारण बताया। आखिर ये भारत ही तो था —अगर जानलेवा तीखा खाना, मच्छर, खटमल और असहनीय गर्मी की उम्मीद न होती, तो वे और क्या ही उम्मीद कर रहे थे? अगर उन्हें सादा खाना और सुहावना मौसम चाहिए था, तो उन्हें लिवरपूल में ही रुक जाना चाहिए था, जहाँ सॉसेज और मैश आसानी से मिल जाते हैं।
छठा बीटल्स 61

पॉल मैककार्टनी और जेन एशर ने एक महीने बाद घर की याद आने का बहाना बनाकर कार्यक्रम रद्द कर दिया।
हालाँकि, जॉन, सिंथिया, जॉर्ज और पैटी ने हार नहीं मानी और जॉन और जॉर्ज ने कई गीत लिखे जो बाद में व्हाइट एल्बम में शामिल हुए। वास्तव में, उस एल्बम के तीस से अधिक गीतों में से अधिकांश महर्षि के आश्रम में रचे गए थे। उदाहरण के लिए, "डियर प्रूडेंस" मिया फैरो की बहन के लिए लिखा गया था, जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए इतनी तत्पर थीं कि उन्हें अपने शैले में तीन सप्ताह के ध्यान-वासना के बाद बाहर आने के लिए प्रेरित करने का काम जॉन और जॉर्ज को सौंपा गया था।
हालांकि, वहां की समग्र शांति जल्द ही विभिन्न संदेहों से भंग हो गई:
चाहे सही हो या गलत, वे इस बात से आश्वस्त हो गए कि महा-
ऋषि की अपने एक प्रतिष्ठित शिष्य के प्रति स्पष्ट रूप से सांसारिक योजनाएँ थीं।

सहपाठियों में अभिनेत्री मिया फैरो भी शामिल थीं। उन्होंने उसका सामना किया।
अप्रत्यक्ष तरीके से, इस आरोप के साथ, और जब वह अन-
इसका उत्तर देने में सक्षम होना, या यह भी पता लगाना कि वास्तव में यह क्या था,
वे लंदन वापस चले गए (गिउलियानो, 1986)।
फैरो (1997) के स्वयं के विवरण के अनुसार, यह महज़ एक साधारण गलतफहमी हो सकती है, जो महर्षि द्वारा उनकी गुफा/तहखाने में निजी ध्यान सत्र के बाद उन्हें बिना अनुमति के गले लगाने पर आधारित थी। हालांकि, इससे कम स्पष्ट हैं वे रिपोर्टें कि उसी संत ने अपने शाकाहारी आश्रम में कम से कम एक महिला छात्रा को मुर्गी भेंट की थी, कथित तौर पर उसका स्नेह पाने के प्रयास में (क्लेसन, 1996)।
बीटल्स का महर्षि से मोहभंग उनके
1968 में भारत में उनके साथ रहने के दौरान मा पर आरोप लगे थे-
हरिशी ने एक अमेरिकी छात्र (एंथनी) के साथ यौन संबंध बनाए।
एट अल., 1987)।
बाद में "सेक्सी सैडी" की रचना परम पावन की उन कथित कमजोरियों के सम्मान में की गई थी।
बहरहाल, एक सप्ताह के भीतर ही मिया फैरो भी बाघ के शिकार पर अश-राम को छोड़कर (ऋषिकेश) वापस नहीं लौटीं।
महर्षि ने अचानक बीटल्स के जीवन में प्रवेश किया और उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाया।
केवल पंद्रह मिनट के समर्पण की कीमत वाला एक कार्य।
उस दिन। पॉल कार्टनी ने बाद में कहा, "यह सच होने के लिए बहुत अच्छा लग रहा था।"
उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, "मुझे लगता है कि ऐसा ही था" (गिउलियानो, 1989)।
62 गुरुओं का पर्दाफाश

द बीटल्स ने 1969 में महर्षि से सार्वजनिक रूप से विदा ली।
उन्होंने टिप्पणी की कि उन्हें "पैसे की लत" थी (क्लेन और क्लेन,
1979).
दिलचस्प बात यह है कि जॉन और योको को बाद में यह विश्वास हो गया कि वे क्रमशः रॉबर्ट और एलिजाबेथ बैरेट ब्राउनिंग के पुनर्जन्म हैं। (उनके संयुक्त एल्बम

मिल्क एंड हनी में योको के एक गीत का शीर्षक है, "लेट मी काउंट द वेज़।")
अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि रिंगो कौन हो सकता था।
जॉर्ज जल्द ही हरे कृष्णा समुदाय से गहराई से जुड़ गए—जैसा कि उनके एकल गीत "माई स्वीट लॉर्ड" के कोरस से स्पष्ट हो सकता है—हालांकि अंततः उन्होंने अपनी वसीयत में उन्हें पूरी तरह से बाहर कर दिया। वास्तव में, एक समय हरे कृष्णा समुदाय के सदस्यों ने एप्पल रिकॉर्ड्स के साथ "राधा कृष्णा टेंपल" के रूप में अनुबंध किया था। उन्होंने उस लेबल पर कम से कम एक मंत्रोच्चार वाला एकल गीत जारी किया, जो सितंबर 1969 में "टॉप 20" में शामिल हुआ। लंदन में कृष्णा समुदाय का भक्तिवेदांत मनोर मुख्यालय भी वास्तव में हैरिसन का उपहार था—जिसे उन्होंने एक बार योगानंद के आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप को हस्तांतरित करने की धमकी दी थी, जब कृष्णा समुदाय को इसमें कोई स्थान नहीं मिला था।
मैदानों को उनकी संतुष्टि के अनुरूप बनाए रखना (गिउलियानो, 1989)।
भक्ति और मंत्र योग पर आधारित हरे कृष्ण आंदोलन की जड़ें अत्यंत पितृसत्तात्मक वैदिक संस्कृति में निहित हैं। इसे 1960 के दशक के मध्य में दिवंगत भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में लाया गया था। प्रभुपाद ने जल्द ही सैन फ्रांसिस्को में ग्रेटफुल डेड, जेफरसन एयरप्लेन और जेनिस जोप्लिन के साथ एक रॉक कॉन्सर्ट में प्रस्तुति दी। प्रभुपाद के गुरु को अवतार माना जाता था। (जॉर्ज, जॉन और योको ने 1969 में प्रभुपाद के साथ एक विस्तृत साक्षात्कार में भाग लिया था, जिसे कृष्ण संगठन ने कई वर्षों तक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित रखा था। हैरिसन ने प्रभुपाद की पुस्तक, कृष्ण: द सुप्रीम पर्सनैलिटी ऑफ गॉडहेड की प्रस्तावना भी लिखी थी।)
हरे कृष्णा समुदाय के भीतर कथित तौर पर घटित भयावह गतिविधियों के संबंध में, जिनमें बाल यौन शोषण, मादक पदार्थों की तस्करी और हथियारों के भंडारण के व्यापक आरोप शामिल हैं, निम्नलिखित विवरण लंबे समय से मौजूद हैं:
संस्था के संस्थापक, स्वर्गीय प्रभुपाद, भी थे-
कथित तौर पर नाबालिगों के शारीरिक और यौन शोषण के बारे में बताया गया।
1972, वह समय जब संस्था पर उनका पूर्ण नियंत्रण था।
पीड़ितों का आरोप है कि उसने और अन्य लोगों ने अल-
कथित अपराधों को सार्वजनिक रूप से उजागर होने के डर से छिपाया गया था,

जिससे खतरा पैदा हो सकता था।
आंदोलन की व्यवहार्यता (एस. दास, 2003)।
छठा बीटल्स 63

[प्रभुपाद की मृत्यु के बाद] हरे कृष्ण आंदोलन का पतन हुआ-
कई प्रतिस्पर्धी [तथाकथित] पंथों में परिवर्तित हो गए जो
हत्या, महिलाओं और बच्चों के साथ दुर्व्यवहार, नशीली दवाओं के सेवन के मामलों को जानते हैं।
ऐसे सौदे और धोखाधड़ी जो माफिया डॉन को भी प्रभावित कर दें (हब-
नेर और ग्रुसन, 1990)।
इस आंदोलन का [प्रभुपाद के बाद का] नेतृत्व सबसे पहले था
मई में एक बैठक में दुर्व्यवहार के पीड़ितों का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ा
1996 में, जब कृष्णा स्कूल के दस पूर्व छात्रों के एक पैनल ने गवाही दी
कि उन्हें स्कूल में नियमित रूप से पीटा और बेंत से मारा जाता था,
चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता थी और समलैंगिकों के साथ यौन उत्पीड़न और बलात्कार किया गया।
चाकू की नोक पर यौन उत्पीड़न (गुडस्टीन, 1998)।
या, जैसा कि ह्यूबनर और ग्रुसन (1990) ने आरोप लगाया:
लड़कों को कक्षा के सामने आकर बैठने का आदेश दिया गया।
[उनके शिक्षक] श्री गलीमा की गोद में। फिर श्री गलीमा ने गुदा मैथुन किया।
उन्होंने कक्षा के सामने ही उनका बलात्कार किया। अन्य लड़के भी...
कक्षा के बाद रुकने की हिम्मत की। श्री गलीमा ने उनके हाथ बांध दिए।
डेस्क को डक्ट टेप से लपेटकर फिर उसी जगह पर उनके साथ मारपीट की।
रास्ता।
रात में, श्री गलीमा के सहायक फ्रेडरिक डीफ्रांसिस्को,
लड़कों के स्लीपिंग बैग में घुसकर उसने उनके साथ ओरल सेक्स किया।
उन्हें।
जॉर्ज हैरिसन पर 1999 के अंत में उनके लंदन स्थित घर में एक ऐसे व्यक्ति ने चाकू से हमला किया था, जो मानता था कि बीटल्स "चुड़ैल" हैं। दिलचस्प बात यह है कि

हत्या के प्रयास को जारी रखने के लिए हमलावर द्वारा दिए गए कारणों में से एक यह था कि हैरिसन लगातार "हरे कृष्ण, हरे कृष्ण" का जाप कर रहे थे - जिसे उनके विक्षिप्त हमलावर ने शैतान का श्राप समझा।

बहरहाल, महर्षि महेश योगी के मिशन पर लौटते हुए: 1967 से 1974 तक ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन (टीएम) का अभ्यास करने वालों की संख्या में लगभग घातीय वृद्धि हुई। 1975 तक अमेरिका में आधे मिलियन से अधिक लोग इस तकनीक को सीख चुके थे, विश्व स्तर पर दस लाख से अधिक लोग, और महर्षि टाइम पत्रिका के कवर पेज पर भी छप चुके थे। यदि यह घातीय वृद्धि जारी रहती, तो 1979 तक पूरा संयुक्त राज्य अमेरिका टीएम का अभ्यास कर रहा होता। वर्तमान स्थिति में, घटते प्रतिफल के नियम और अन्य कारकों को ध्यान में रखते हुए, विश्व स्तर पर ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन के अभ्यासी चार मिलियन हैं।

1973 में, महर्षि अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (एमआईयू) की स्थापना सांता बारबरा, कैलिफोर्निया में हुई, और एक साल बाद यह अपने पूर्व-64 STRIPPING THE GURUS में स्थानांतरित हो गया।

फेयरफील्ड, आयोवा में स्थायी स्थान। दिलचस्प बात यह है कि जब महार-इशी पहली बार अपने गुलाबी हवाई जहाज में उस स्थान पर उतरे, शायद बीटल्स के साथ अपने संपर्क से प्रभावित होकर ("अमेरिकी स्वाद आपको कैसा लगता है?/हमें नहीं पता, हमने अभी तक किसी को चखा नहीं है," आदि), उन्होंने विचित्र ढंग से घोषणा की: "हम फेयरफील्ड में हैं, और हमें यहाँ एक अच्छा मैदान मिला है।"

वर्तमान में लगभग एक हजार छात्र टीएम का अभ्यास करते हैं और उस "सुविधाजनक क्षेत्र" में वैदिक सिद्धांत का अध्ययन करते हैं, विशेष रूप से यह सिद्धांत स्वीकृत अकादमिक विषयों, जिनमें कठोर विज्ञान भी शामिल हैं, से कैसे संबंधित है। एमआईयू का नाम बदलकर महर्षि प्रबंधन विश्वविद्यालय (एमयूएम) कर दिया गया है। वर्तमान में, शहर के 10,000 निवासियों में से एक-चौथाई ध्यान करते हैं।

* * *

1976 में, महर्षि ने उन सिद्धांतों की खोज की जिनसे टीएम सिद्धि कार्यक्रम का जन्म हुआ—जो पतंजलि के योग सूत्र में वर्णित सिद्धियों या शक्तियों पर आधारित है। इनमें योगिक उड़ान या उत्तोलन की तकनीक... या "योगी पथ पर कूदते हुए आगे बढ़ना"

शामिल है।
योगिक उड़ान के पहले चरण के दौरान, शरीर - प्रेरित
केवल सिद्धि तकनीक की सहज मानसिक प्रेरणा से ही संभव है।
—आनंदमय उछालों की एक श्रृंखला में हवा में ऊपर उठता है (महर्षि,
1995).
“यह एक प्रकार का उत्तोलन है, जिसमें आपको वास्तव में एक या दो फीट ऊपर उठा लिया जाता है।”
उस उत्साह से, जिसे कुछ लोग "उबलते आनंद" के रूप में वर्णित करते हैं।
ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन के प्रवक्ता जोसेफ ने समझाया
बॉक्सरमैन (एसोसिएटेड प्रेस, 2003)।
[टैक्सी के एंडी कॉफ़मैन को] ट्रांस के प्रति अटूट निष्ठा थी-
आध्यात्मिक ध्यान... उनका मानना था कि इसने उन्हें सिखाया था
उत्तोलित करना (ब्लैंको, 2000)।
स्वयं गुरु ने 1978 में टीवी पर घोषणा की ("द मर्व
ग्रिफिन शो”) के अनुसार उन्होंने लगभग चालीस हजार छात्रों को नामांकित किया था।
इस [सिद्धि] पाठ्यक्रम में कुछ कमियां हैं! ग्रिफिन ने तब स्वाभाविक प्रश्न पूछा।
प्रश्न: कितने लोगों ने हवा में उड़ना सीख लिया था? घोषित किया गया
महान गुरु: "हजारों!" (रंडी, 1982)।
संशयवादी श्री रैंडी द्वारा उस उत्तोलन के दस्तावेजी और विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त करने के बार-बार किए गए प्रयास असफल रहे। हालाँकि, उन्होंने (1982) निम्नलिखित स्वीकृति प्राप्त करने की सूचना दी - द सिक्स्थ बीटल्स 65

श्री ओर्मे-जॉनसन, जो टीएम के अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र के निदेशक हैं, की ओर से एक सूचना:
उन्होंने कहा, "हम यह दावा नहीं करते कि कोई भी वहां मंडरा रहा है।"
वायु।"
फिर भी, अभ्यास छूट जाने के संभावित प्रभावों को दुनिया पर हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए था, चाहे ऐसा हो या न हो।
एमआईयू में और पूरे [टीएम] आंदोलन के दौरान, अपराधबोध का इस्तेमाल किया

गया।
छात्रों को इस तरह से बरगलाना कि वे कभी भी उड़ान सत्र न चूकें।
जब ईरानियों ने अमेरिकी दूतावास पर कब्जा कर लिया, तो एक एमआईयू
एक छात्र मित्र, जो उड़ान सत्र में अनुपस्थित था, को बुलाया गया।
डीन के कार्यालय में ले जाया गया और बंधक बनाने की घटना के लिए उन्हें दोषी ठहराया गया।
ईरान (पैट्रिक एल. रयान, [लैंगोन, 1995] में)।
इन सब बातों के बावजूद, 1994 तक "योगिक फ्लाइंग" की तकनीक दुनिया भर में 100,000 से अधिक लोगों को सिखाई जा चुकी थी।
महर्षि ने यह भी दावा किया है कि उन्नत साधक
अदृश्यता, मन पढ़ने और पूर्णता की शक्तियां विकसित कर सकता है।
स्वास्थ्य और अमरता (एपस्टीन, 1995)।
परम पूज्य ने आगे "महर्षि प्रभाव" का दावा किया, जिसके अनुसार अपेक्षाकृत कम संख्या में ध्यानियों द्वारा विश्व की घटनाओं को सकारात्मक और उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करने की क्षमता होती है। यह घटना वाशिंगटन डीसी और कोसोवो (अगस्त 1999 में) जैसे क्षेत्रों में अपराध दर में उल्लेखनीय कमी लाने में भी सहायक मानी जाती है, जो ध्यानियों की "संचित सकारात्मक ऊर्जा" के माध्यम से होती है।
जैसा कि वेबसाइट पर एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है, "जब समूह
लगभग 350 योगिक फ्लायर्स तक पहुँच गया, [कोसोवो] विनाश
समाप्त हो गया" (क्राउस, 2000)।
90 के दशक की शुरुआत में, महर्षि के चार हजार अनुयायी
उन्होंने वाशिंगटन में आठ सप्ताह बिताए और बड़े पैमाने पर समूह बैठकें आयोजित कीं।
ध्यान। उनका दावा था कि इससे अपराध कम करने में मदद मिली।
उस समय। लेकिन जिले का पुलिस विभाग असंबद्ध था।
जीत लिया (पेरेज़-रिवस, 2000)।
प्रासंगिक आंकड़ों के अधिक विस्तृत विश्लेषण में, रैंडी (1982) ने तथाकथित महर्षि प्रभाव की वास्तविकता पर गहराई से सवाल उठाने के लिए कई अतिरिक्त, मात्रात्मक कारण प्रस्तुत किए हैं।

हालांकि, इन आलोचनात्मक विश्लेषणों को एक तरफ रखते हुए, विश्व इतिहास के पाठ्यक्रम पर टीएम के लाभकारी प्रभावों के बारे में विद्वानों के बीच शायद ही कोई संदेह प्रतीत होता है:

सभी सामाजिक भलाई—संभावित विश्व से दूर जाना—
वैश्विक ज्ञानोदय की दिशा में व्यापक आपदा—जिसने विकसित किया है-
पिछले कुछ वर्षों में खुले विचारों को मैं स्वाभाविक रूप से पुन: मानता हूँ-
अधिक लोगों द्वारा ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन का अभ्यास करने का परिणाम।
आखिरकार, महर्षि ने कहा था कि ऐसा होगा।
उस समय [अर्थात् 1950 के दशक के उत्तरार्ध में], और ऐसा हुआ है (ऑलसन, 1979)।
हाल ही में, महर्षि ने कहा कि उनका इरादा दुनिया भर में हजारों पूर्णकालिक अभ्यासकर्ताओं के साथ विशाल ध्यान केंद्र स्थापित करके विश्व शांति लाना है।
(फाल्सानी, 2002)।
महर्षि समझाते हैं कि प्रत्येक सरकार, केवल बनाकर
और योगिक फ्लायर्स के एक समूह को बनाए रखना, इसे साकार करेगा।
प्रशासन का आदर्श [प्राकृतिक कानून का “संविधान का
ब्रह्मांड"], सरकार के प्रशासन का सर्वोच्च गुण-
प्रत्येक पीढ़ी में सरकार (महर्षि, 1995 में)।
“प्राकृतिक नियम” से तात्पर्य “प्रकृति के उन व्यवस्थित सिद्धांतों—नियमों—से है जो परमाणुओं से लेकर हर जगह प्रकृति के कामकाज को नियंत्रित करते हैं।”
पारिस्थितिकी तंत्र से आकाशगंगाओं तक” (महर्षि, [क्राउस, 2000] में)।
इसके अलावा, सरकारी “प्रशासन”
यह विशेषज्ञ बुद्धिमत्ता का मामला है। इसे उजागर नहीं किया जाना चाहिए।
सड़क पर मतदाता [अर्थात, लोकतंत्र के लिए] (महर्षि, [वेट-
टिग, 2002]).
जल्द ही हर सरकार योगियों का अपना समूह बनाएगी
राष्ट्रीय प्रशासन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में फ्लायर्स।

और प्रत्येक राष्ट्र को प्राकृतिक कानून का समर्थन प्राप्त होगा।
पृथ्वी पर सभी कष्ट दूर की यादों में विलीन हो जाएंगे, और
प्रत्येक नागरिक परिपूर्णता और संतुष्टि के साथ जीवन व्यतीत करेगा।
हर राष्ट्र के लिए, आज और आने वाली अनगिनत पीढ़ियों के लिए
(महर्षि, 1995)।
इस तरह की प्रत्याशित "सभी परेशानियों का दूरगामी स्मृति में विलीन हो जाना" निस्संदेह 1992 में एमआईयू/एमयूएम परिसर में राजनीतिक रूप से "हरित" प्राकृतिक विधि पार्टी के गठन से प्रेरित हुआ होगा। इस पार्टी ने तब से अमेरिकी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है, द सिक्स्थ बीटल्स 67

और कैलिफोर्निया में विधायी पद के उम्मीदवार। दिवंगत जादूगर और शिष्य डौग हेनिंग, जो लंबे समय से एक गंभीर टीएम अभ्यासी और "योगिक फ्लायर" बनने का प्रयास कर रहे थे, वास्तव में ब्रिटेन और टोरंटो दोनों में एनएलपी के बैनर तले चुनाव लड़े थे।
11 सितंबर, 2001 की घटना के बाद, धर्मनिरपेक्ष समस्याओं से अपेक्षित मुक्ति के अनुरूप,
महर्षि ने घोषणा की कि यदि कोई सरकार उन्हें
एक अरब डॉलर से वह आतंकवाद का अंत कर शांति स्थापित करेगा।
40,000 योगिक फ्लायर्स की भर्ती की जा रही है जो पूर्णकालिक रूप से उड़ान भरना शुरू करेंगे। कोई सरकारी आवश्यकता नहीं।
सरकार ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, जिससे वे स्पष्ट रूप से नाराज हैं।
(कार्लसन, 2002)।
फिर भी, महान ऋषि द्वारा अनुमानित युद्ध और अन्य परेशानियों से मुक्ति की भी एक कीमत चुकानी पड़ती है:
मैंने महर्षि को कई बार यह कहते सुना है कि समाज में वे
कल्पना करता है कि अगर कोई मुस्कुरा नहीं रहा है या खुश नहीं है तो वह
ध्यान करने वाली पुलिस वैन में बिठाकर ले जाया गया
उचित टीएम उपचार के लिए सुविधा की जाँच करना और फिर पुनः-
पट्टे पर दिया गया (स्कॉट, 1978)।

* * *

टीएम के प्रमुख विक्रय बिंदुओं में से एक हमेशा से इसकी कथित "वैज्ञानिक" प्रकृति और इसके लाभकारी प्रभावों की पुष्टि करने वाले अध्ययनों का दावा रहा है। हालाँकि: राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद द्वारा किया गया एक तीन वर्षीय अध्ययन
मानव प्रदर्शन में सुधार पर किए गए शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि "टीएम में-
मानव प्रदर्शन में सुधार लाने में प्रभावी" और यह कि समर्थक-टीएम
शोधकर्ताओं की कार्यप्रणाली में गंभीर खामियां थीं (रॉस,
2003ए)।
टीएम और ध्यान के अन्य रूपों के कथित प्रभावों, या उनके अभाव के संबंध में अतिरिक्त जानकारी के लिए होम्स (1988) से परामर्श करें।

* * *

युवा सुश्री फैरो की महर्षि के आश्रमों में मुखर उपस्थिति हो या न हो, योगिक "छठे बीटल्स" के 3.5 अरब डॉलर के वैश्विक उद्यम को विवादों का सामना करना जारी है। (दिवंगत पूर्व गिटारवादक स्टुअर्ट सटक्लिफ को "पांचवें" के रूप में जाना जाता था।)
68 गुरुओं का पर्दाफाश

भारत में स्थित उनका परिसर [द इल में] आरोपों का केंद्र था।
[भारत का सचित्र साप्ताहिक, 17 जुलाई, 1988] "बाल यौन शोषण" के संबंध में
उत्पीड़न, दुर्व्यवहार और उपेक्षा से मृत्यु" (रॉस, 2003ए)।
पिछली मीडिया रिपोर्टों में आरोप लगाया गया था कि कम से कम पांच लड़के
रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो गई थी और उसके बारे में
विद्यापीठ में भर्ती कराए गए 10,000 बच्चों में से 8000 बच्चे
पिछले पांच सालों से वह कथित तौर पर आश्रम से भागा हुआ था।
अंदर उन्हें जिस तरह की "यातना" का सामना करना पड़ा था, उसकी वजह से...
आश्रम प्रशासन के लिए स्थिति और भी कठिन बनाने के लिए-
stration, [local MLA Mahendra Singh] Bhati and an ayur-
वैदिक चिकित्सक, डॉ. गोविंद शर्मा, जो पहले कार्यरत थे
आश्रम ने आरोप लगाया कि कुछ लड़के भी यौन शोषण के शिकार थे।
शिक्षकों द्वारा यौन शोषण का शिकार बनाया गया (दत्त, 1988)।

आश्रम ने स्वयं उसी लेख में इन सभी आरोपों का खंडन किया है।
और दिवंगत महान संत के प्रभाव क्षेत्र में अतीत में उत्पन्न हुई अन्य समस्याओं का समाधान कैसे किया गया? यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन
आप पूछते हैं; स्कोल्निक (1991) ने उदाहरण के तौर पर रिपोर्ट किया:
मुझे झूठ बोलना और छोटे-मोटे नियमों से बचने का तरीका सिखाया गया था।
अनुकूल रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए 'अज्ञानी' का प्रयोग किया गया।
“डिया,” [एक पूर्व, उच्च पदस्थ अनुयायी] कहता है। “हम थे
उन्होंने पत्रकारों के भोलेपन और आकर्षण का फायदा उठाना सिखाया।
विदेशी चीजों के प्रति आकर्षण, विशेषकर पूर्व से आने वाली चीजों के प्रति।
हमें लगा कि हम कुछ गलत नहीं कर रहे हैं, क्योंकि हम थे
यह बताया गया कि अज्ञानी लोगों को धोखा देना अक्सर आवश्यक होता है।
दुनिया को बचाने के लिए हमारे गुरु की योजना को आगे बढ़ाएं।"

अध्याय 9

इतनी देर से हूं,
इसे किया,
अब क्या करें?
(राम दास, आदि)

यहां यह याद रखना उपयोगी है कि आपका गुरु, भले ही
आप उनसे उनके प्रत्यक्ष रूप में (अर्थात शारीरिक रूप से) नहीं मिले होंगे।
यह फॉर्म... आपके बारे में सब कुछ जानता है... हर एक बात-
वस्तु (दास, 1971)।

राम दास, जिन्होंने 'बी हियर नाउ' नामक पुस्तक लिखी है, जो पश्चिम में पूर्वी दर्शन और गुरुओं के प्रति व्यापक रुचि जगाने वाली प्रमुख पुस्तकों में से एक है, इन सब के बावजूद एक नेक दिल इंसान हैं। उन्होंने अपनी ईमानदारी से कई लोगों का दिल जीत

लिया है। अपनी गलती स्वीकार करने की उनकी क्षमता भी समकालीन महिला आध्यात्मिक गुरु मां जया सती भगवती के साथ उनके अनुभवों के संदर्भ में काफी उपयोगी साबित हुई है।

रिचर्ड एल्पर्ट का जन्म 1931 में हुआ था। दास ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने टिमोथी लेरी के साथ मिलकर मानसिक अवस्थाओं में परिवर्तन पर एक शोध कार्यक्रम में भाग लिया।

हार्वर्ड में अपेक्षाकृत अनियंत्रित परिस्थितियों में भारी मात्रा में एलएसडी का उपयोग करते हुए उन्होंने चेतना पर शोध किया। इन्हीं गतिविधियों के कारण उन्हें 1963 में उस संकाय से निकाल दिया गया था।

चार साल बाद, अल्परट ने भारत की यात्रा की, जहाँ उनकी मुलाकात दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों से हुई: भगवान दास, और वह व्यक्ति जो जल्द ही उनके गुरु बन गए - नीम करोली बाबा या "महाराजजी" ("महान राजा")।

भगवान दास कैलिफोर्निया के लगुना बीच में पले-बढ़े थे, अठारह वर्ष की आयु में 1964 में अकेले भारत आए और बाद में राम दास के शिक्षकों में से एक बन गए। राम ने स्वयं अपनी पहली मुलाकात का वर्णन इस प्रकार किया:

मैं इस आदमी से मिला और मेरे मन में कोई संदेह नहीं था [कि वह]
“जान लिया”]। यह किसी चट्टान से मिलने जैसा था। यह बिल्कुल ठोस था, पूरी तरह से।
रास्ता मिल गया। मैंने जहाँ भी दबाया, वह वहीं था! (दास,
1971).

बेशक, दास ने ग्रेटफुल डेड के जेरी गार्सिया को भी "बोधिसत्व" माना था (मेयर, 1992), इसलिए इस संदर्भ में "स्रोत पर विचार करें"। और वास्तव में, मानो हमें उस खाई के बारे में आगाह करने के लिए जो अक्सर किसी गुरु या शिक्षक की वास्तविक स्थिति और उनके अनुयायियों द्वारा उन्हें दिए गए सम्मान के बीच मौजूद होती है।

स्वयं दास ने वर्षों बाद (1997 में) अपनी पूर्व आध्यात्मिक स्थिति का अपना ईमानदार मूल्यांकन दिया:

राम दास [बी हियर नाउ में] मेरा वर्णन इस प्रकार करेंगे मानो मैं
किसी प्रबुद्ध, पौराणिक प्राणी की तरह। लेकिन मैं तो बस एक
खोया हुआ बच्चा, अपनी माँ के पास घर लौटने का रास्ता ढूंढ रहा है...
दुर्भाग्यवश, राम दास के साथ मेरे काम के कारण और
क्योंकि मैं महाराजजी का साधु था, इसलिए कई लोग
पूर्वी भारतीय मेरी क्षमताओं को जरूरत से ज्यादा आंकने लगे थे।
अन्य समयों पर, ऐसी "शक्तियों" के वरदानों में दास का अपने नेपाली गौशाला के बिस्तर के एक तरफ सत्रह वर्षीय गोरी लड़की (स्वीडिश) और दूसरी तरफ लंबे, काले बालों वाली एक शांत, युवा फ्रांसीसी महिला को देखकर जागना शामिल था।
बहरहाल, भगवान दास जल्द ही उस हरे-भरे स्वर्ग को छोड़कर काठमांडू में अल्बर्ट के साथ एलएसडी लेने चले गए, और फिर अनिच्छा से उसके साथ सड़क यात्रा करते हुए भारत लौट आए। उन्होंने जल्द ही अपने उस नए रूढ़िवादी, उभयलिंगी (और "उसमें कुछ ज़्यादा ही दिलचस्पी रखने वाले") दोस्त को करोली से मिलवाया।
बाबा—आंशिक रूप से उससे छुटकारा पाने की उम्मीद में (दास, 1997)। करोली को दास ने अल्परट के दोस्त की लैंड रोवर गाड़ी दी, जबकि अल्परट खुद दावा करता है कि उसने एक बार गुरु को बारह सौ माइक्रो-बीन हियर, डन दैट, व्हाट नाउ? 71 खिलाए थे।

एलएसडी की ग्राम मात्रा—जो कि "सुरक्षित" मात्रा से कई गुना अधिक है—का कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं दिखा।
कुछ लोगों ने कहा कि उन्होंने [नीम करोली बाबा का] शरीर सचमुच बढ़ते हुए देखा था।
वह बहुत विशालकाय था, और अन्य लोगों का दावा था कि उन्होंने उसे बहुत छोटा होते हुए देखा था।
छोटा। और फिर कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने कसम खाकर कहा कि उन्होंने उसे देखा था।
[बंदर देवता हनुमान के अवतार के रूप में] पूंछ के साथ
(दास, 1997)।
[नीम करोली बाबा] भगवान हैं; वे सब कुछ जानते हैं (मुकेर में-
जीई, 1996)।

निःसंदेह, महाराजजी की इतनी उच्च प्रशंसा स्वाभाविक रूप से उनके प्रति अत्यधिक श्रद्धा और प्रशंसा के भाव से ही आई थी। इसके विपरीत, एंड्रयू कोहेन के पूर्व गुरु, एच. डब्ल्यू. एल. पूंजा ने उसी संत के बारे में एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो या तो अधिक संतुलित है, या अधिक असंतुलित, जिसका निर्णय पाठक स्वयं कर सकते हैं।

जब मैंने [पूंजा] से पूछा कि अब के बारे में उनकी क्या राय है
प्रसिद्ध दिवंगत गुरु नीम करोली बाबा के बाद, उन्होंने आगे चलकर...
लेखक ने विस्तार से बताया कि वह उससे कैसे मिला था और वह उसे जानता था
कि वह पूरी तरह से पागल और "विक्षिप्त" था, लेकिन कई
लोगों ने उसके पागलपन को ज्ञानोदय समझ लिया... कई
कई वर्षों बाद [कोहेन और पूंजा के कड़वे अलगाव के बाद]
जब नीम करोली के भक्त [पूंजा] जाते थे तो वह
उन्हें सर्वोच्च मानकर उनकी प्रशंसा करें (कोहेन, 1992)।

बाबा की एक महिला शिष्या द्वारा बताई गई निम्नलिखित कहानी, पागलपन बनाम ज्ञानोदय के प्रश्न का समाधान करने में कोई मदद नहीं करती है:

पहली बार जब वह मुझे अकेले कमरे में ले गया तो मैं सोफे पर बैठ गई।
उसके साथ एक नीचा लकड़ी का बिस्तर था, और वह सात लोगों जैसा था।
एक किशोर एथलीट जो थोड़ा तेज था! मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पचास साल का हूँ।
किशोर और मासूम। उसने मेरे साथ चुंबन करना शुरू कर दिया, और यह
वह बहुत प्यारी और मासूम थी। मैं कुछ पलों के लिए उसमें खो गया था।
फिर वह घबरा गया: “रुको! ये तो मेरे गुरु हैं। इनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता।”
अपने गुरु के साथ ऐसा करना!” इसलिए मैं उससे दूर हट गया। फिर मा-
हरज्जी ने अपना सिर एक तरफ झुकाया और अपनी आंखें सिकोड़ लीं।
उसने कोमल, मनमोहक और जिज्ञासु भाव से अपनी भौंहें सिकोड़ीं। उसने कुछ नहीं कहा।
कुछ भी हो, लेकिन उसका पूरा अस्तित्व मुझसे कह रहा था, "क्या तुम ऐसा नहीं करोगे?"
मेरी तरह?"

लेकिन जैसे ही मैं उस विशेष दर्शन से बाहर निकला
[वह आशीर्वाद जो मात्र दर्शन मात्र से ही प्राप्त होता है]
एक संत के बारे में], मैं इतना बीमार होने लगा कि दिन के अंत तक 72 गुरुओं को नंगा करना

मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपने अंदर मौजूद हर चीज को उल्टी और मल के जरिए बाहर निकाल दिया हो।
मेरे बगल में। मुझे आश्रम से बाहर ले जाना पड़ा। रास्ते में,
हम महाराजजी के कमरे में रुके ताकि मैं प्रणाम कर सकूँ।
मैंने उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया। मैं टकेट के पास घुटने टेककर बैठ गया और
मैंने अपना सिर उसके पैरों के पास झुकाया—और उसने मुझे लात मारी।
सिर हिलाते हुए, "उसे यहाँ से बाहर निकालो!"...
यह पहली बार था, और मुझे वहां दो बार रहना था।
कई साल। वहां मेरे आखिरी महीने के दौरान, मैं उसके साथ अकेला था।
हर दिन कमरे में... कभी-कभी वह मुझे छू लेता था
मेरे स्तनों पर और मेरी टांगों के बीच, यह कहते हुए, "यह मेरा है,
यह मेरा है, यह मेरा है। सब कुछ मेरा है। तुम मेरी हो। तुम कर सकते हो।
आप इसे अपनी इच्छानुसार समझ सकते हैं, लेकिन इन दर्शनों के अंत के करीब,
ऐसा लगता था मानो वह मेरा बच्चा हो। कभी-कभी मुझे ऐसा महसूस होता था जैसे
हालाँकि मैं एक नन्हे बच्चे को दूध पिला रही थी (दास में, 1979)।
बेशक, समलैंगिक बाल यौन शोषण करने वाले रामकृष्ण के समर्पित शिष्यों ने उनकी
"दिव्य" मातृत्व/स्तनपान संबंधी प्रवृत्तियों को भी उतना ही सकारात्मक रूप से देखा।
बहरहाल, नीम करोली बाबा के चरणों में कुछ ही महीनों के प्रवास के बाद, राम दास
करोली के कहने पर पढ़ाने के लिए अमेरिका लौट आए।
हिल्डा [चार्ल्टन] ने [राम दास] को "द्वार" के रूप में संदर्भित किया।
"अमेरिका के लिए ज्ञानोदय," युग के लिए अवतरित,
एक समय वह विश्वामि के क्रम में सात ऋषियों में से एक थे।
tra: एक पूर्ण मास्टर (ब्रुक, 1999)।
सन् 1974 में, अपनी प्रसिद्धि के चरम पर, राम ने न्यूयॉर्क शहर में एक महिला

आध्यात्मिक गुरु, जोया संताना (अब मां जया सती भगवती), के साथ काफी समय बिताया। जोया संताना खुद को कलंकित मानने वाली और करोली बाबा की अनुयायी मानती थीं। जैसा कि दास स्वयं कहानी सुनाते हैं:
जोया बार-बार यही दोहराती रही कि वह पृथ्वी पर केवल इसलिए आई है ताकि...
विश्व आध्यात्मिक नेता के रूप में मेरी तैयारी के लिए एक साधन
और अंततः वह मेरे चरणों में बैठेगी...
जोया ने स्वयं को दिव्य माँ होने का दावा किया।
(दास और लेविन, 1977)।
हालांकि, मां की वह छवि स्पष्ट रूप से दास के ओडिपस कॉम्प्लेक्स और इसी तरह के मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण के साथ पर्याप्त रूप से मेल नहीं खाती थी, जिससे जोया और उसके बीच कथित रूप से होने वाली अपेक्षित घटना को रोका जा सके:
यहां आ चुके हैं, वह कर चुके हैं, अब क्या? 73

उसने यौन संबंध को जायज ठहराने का एक जटिल तरीका भी ढूंढ लिया।
जोया के साथ जहाज [जिसके होने से वह इनकार करती है], इसके बावजूद
यह तथ्य कि उसने अपने सभी छात्रों से एक कठोर शपथ लेने की अपेक्षा की थी
जोया ने ब्रह्मचर्य का पालन किया और सार्वजनिक रूप से स्वयं भी ब्रह्मचर्य का पालन किया।
शारीरिक इच्छाओं को स्वीकार करते हुए, राम दास ने स्वेच्छा से उसकी पूर्व प्रेमिका को स्वीकार कर लिया।
यह स्पष्टीकरण कि साथ में यौन संबंध बनाने से, वह वास्तव में
उसे शारीरिक इच्छाओं से उतना ही अनासक्त होना सिखाना
जैसा कि उसने दावा किया था (श्वार्ट्ज, 1996)।
सीखने का वह कथित "रोमांच", दुर्भाग्यवश, ज्यादा देर तक नहीं टिक पाया:
बहुत सारे "संकेत" थे, जैसे कि वो क्षण जब जोया
मैं और वह साथ में समय बिता रहे थे तभी फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाया।
उसने रिसीवर उठाया और दर्द भरी फुसफुसाहट में कहा, "मैं बात नहीं कर सकता।"
अब, मैं बहुत अकड़ा हुआ हूँ" [अर्थात समाधि में], और प्राप्तकर्ता को
फिर बिना किसी झिझक के उसने हमारी बातचीत जारी रखी।

ऐसा व्यवहार किया मानो कुछ हुआ ही न हो। मुझे एहसास हुआ कि मैंने कितनी बार ऐसा किया है।
फोन के दूसरे छोर पर वही व्यक्ति था...
मुझे अपने अनुभवों के बीच समानता दिखने लगी।
मैंने अन्य आंदोलनों के बारे में जो कहानियां सुनी थीं,
जैसे कि रेवरेंड मून का समूह, जिसे जीसस फ्रीक्स के नाम से जाना जाता है,
और कृष्ण चेतना का दृश्य। प्रत्येक दृश्य पूर्णतः भिन्न प्रतीत होता था।
वास्तविकता जिसने भागीदारी को एक प्रतिबद्धता बना दिया जो अस्वीकार करती है-
कम बदलाव...
ऐसा प्रतीत हुआ कि [जोया की] अविश्वसनीय ऊर्जाएँ नहीं आ रही थीं
पूरी तरह से आध्यात्मिक स्रोतों से प्राप्त लेकिन [कथित तौर पर] उनमें वृद्धि हुई थी।
ऊर्जावर्धक गोलियों के जरिए। उसके सबसे करीबी विश्वासपात्रों ने अब कबूल कर लिया है।
कई बार उन्हें मुझे फोन करके भयानक घटनाओं की रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया था।
वे जानते थे कि ये बातें असत्य हैं। फिर भी उन्होंने उनका पालन किया क्योंकि
जोया ने उन्हें यकीन दिला दिया था कि यह मेरे भले के लिए है।
धोखे की ऐसी कहानियाँ तेज़ी से सामने आने लगीं। मैं
(दास और लेविन, 1977)
खुशहाल दिनों में, विवाहित भगवान दास भी कुछ समय के लिए जोया के साथ उसी ऊर्जावान "माहौल" का हिस्सा रहे थे:
हम एक बहुत बड़ी बैठक कर रहे थे और जोया ने कहा, “भगवान
दास, उठो!” मैं खड़ा हो गया और उसने कहा, “शिवया उठो!”
शिवाय, भगवान दास को अभी के अभी वेश्यालय ले जाओ!
मुझे होश ही नहीं आया कि मैं मैनहट्टन के एक वेश्यालय में था।
क्रिसमस के दिन (दास, 1997)।
"यह एक बहुत ही बढ़िया जिंदगी है।"

* * *

तो अब वे कहाँ हैं?

खैर, नीम करोली बाबा का निधन 1973 की शरद ऋतु में हुआ था।

राम दास स्वयं दुर्भाग्यवश 1997 में एक गंभीर स्ट्रोक का शिकार हो गए, जिसने उन्हें बुढ़ापे पर एक मार्मिक और (सौभाग्य से) अपेक्षाकृत गैर-रहस्यमय पुस्तक - स्टिल हियर - को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत पृष्ठभूमि प्रदान की।

साठ वर्ष से अधिक उम्र की जोया, निकट भविष्य में राम दास के चरणों में बैठने की स्थिति में बिल्कुल भी नहीं हैं, और फ्लोरिडा स्थित अपने काशी आश्रम में अध्यापन कार्य जारी रखे हुए हैं। उस आश्रम और उसकी "मां" के बारे में स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समाचार पत्रों में कई बार आलोचनात्मक लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

और 70 के दशक के मध्य से पत्रिकाओं में, जैसा कि www.kashi पर प्रलेखित है।

Ashram.com. टोबियास और लालिच (1994) की पुस्तक 'कैप्टिव हार्ट्स, कैप्टिव माइंड्स' भी देखें।

और अमेरिका में "पौराणिक व्यक्तित्व" भगवान दास का क्या हुआ?

मैंने खुद को हजारों लोगों के सामने मंच पर पाया।

मैंने बच्चों के नाम रखे, लोगों को आशीर्वाद दिया और लोग मेरे चरणों में गिर पड़े।

मुझे अपने संरक्षकों और फिल्मी सितारों के बीच एक राजा जैसा महसूस होता था, लेकिन मैं

अभी भी बच्चा, पच्चीस साल की उम्र में गुरु, बाघ की खाल पर बैठा हुआ।

मैनहट्टन टाउन हाउस...

तीन साल के "आध्यात्मिक जीवन" के बाद जो वास्तव में एक

पार्टी [नशीली दवाएं, ग्रुपियां, आदि], मैं इससे तंग आ गया था और इससे दूर रहना चाहता था।

अपने बच्चों के साथ घर पर। मैं दुनिया में फिर से शामिल हो गई और [विडंबना यह है कि,

लैंड रोवर की घटना को देखते हुए] सांता क्रूज़ में पुरानी कारें बेचीं।

मैं एक व्यवसायी बन गया, और धीरे-धीरे मैंने अपनी समझदारी खो दी।

[दिव्य] पूरी तरह से (कॉर्नफील्ड में, 2000)।

व्यापार जगत में उस भयावह पतन के दौरान, एक समय ऐसा भी आया जब क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु के एक अत्यंत मार्मिक दर्शन का अनुभव करने के बाद, दास वास्तव में एक पुनर्जन्म प्राप्त ईसाई बन गए, और इस प्रकार अपने परिवार की एपिस्कोपलियन जड़ों की ओर लौट आए।
अब मैं आधिकारिक तौर पर बाइबल कॉलेज में दाखिला ले चुका था, और मैं एक बाइबल छात्र बनने जा रहा था।
पादरी...
मैंने अपनी बाइबिल के अलावा सब कुछ हटा दिया, जिसकी मैं पूजा करता था।
मैं अपनी बाइबिल लेकर बिस्तर पर जाता था, उसके साथ सोता था और उसे गले लगाता था।
और भगवान ने मुझे रात के अलग-अलग समय पर जगाया...
मैं अपनी बाइबिल लेकर डेनी के रेस्टोरेंट में जाता था,
मैं लगातार उद्धार करने के लिए आत्माओं की तलाश में रहता हूँ। मैंने पढ़ने के अलावा कुछ नहीं किया।
बाइबल और प्रार्थना (दास, 1997)।
यहाँ आ चुके हैं, वो कर चुके हैं, अब क्या? 75

इसके बाद भगवान ने अपने स्थानीय, पॉलिएस्टर कपड़े पहने अनुयायियों के सामने "अजीबोगरीब भाषा में बोलना" शुरू किया। साथ ही, उनका एक गोरी, किशोरी गायिका के साथ प्रेम प्रसंग भी हुआ, जिसने "नीली जींस" पहनी हुई थी। इस घटना के चलते दास (जो उस समय चालीस वर्ष के थे) को चर्च द्वारा "व्यभिचारी" करार दिया गया और उन्हें कानूनी सलाह दी गई।
हालांकि, उस बाद की बदनामी में से कोई भी बात पूर्व योगी की आंतरिक शांति को भंग नहीं कर सकी:
मुझे पूर्णतः मुक्ति और पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव हुआ। मुझे जो स्वतंत्रता मिली थी उस तांत्रिक यौन अनुभव में उस गायिका के साथ जो महसूस हुआ वह था...
जैसे मरियम और यीशु के साथ होना (दास, 1997)।
वाहवाही! “मुझे वो पुराने जमाने का धर्म दो,” “त्रिमूर्ति का मिलन,” आदि।
इसके अलावा, दास के स्वयं के (1997) स्वीकारोक्ति के अनुसार: शराब की लत,

एए (अल्कोहलिक्स एनोनिमस), बीमा बेचकर लगभग छह अंकों की आय, एक और "जंगली और बेपरवाह" स्कैंडिनेवियाई किशोर, और फिर से गांजा और मैजिक मशरूम का सेवन। अंततः उन्होंने आध्यात्मिक जागृति प्राप्त की, आत्म-जागरूकता विकसित की और व्यापार जगत से बाहर निकल गए, स्वयं को "भगवान दास" रहस्यवादी के रूप में पुनः स्थापित किया, एक और अठारह वर्षीय लड़की से संबंध स्थापित किया जिसे उन्होंने प्रेमिका और शिष्या दोनों के रूप में स्वीकार किया, इत्यादि।
यह सब, यह स्वीकार करना होगा, कम से कम कैलिफोर्निया के मानकों के अनुसार, दास द्वारा अपने योग साधना के दिनों में अपने दो बच्चों के जन्म के बाद अपनी पत्नी के लिए (ऊर्जा-स्थानांतरण करने वाला) नाल का सूप पकाने की तुलना में काफी कम आश्चर्यजनक है (जिसे उन्होंने और उनकी पत्नी ने खाया था)।
“यहाँ आ चुका हूँ, वो सब कर चुका हूँ... अब क्या?”
सचमुच, "अब क्या?"

अध्याय X

बिच्छू-आदमी
(सत्य साई बाबा)

दिल्ली में मेरी जान-पहचान की एक कुलीन भारतीय लड़की के शब्द मेरे मन में गूंज रहे थे।
मेरे कानों में गूंज रहा था, “तुम विदेशी तो किसी को भी गुरु मान लेते हो—
महर्षि जैसे लोग चाय की तरह ही निर्यात की आम वस्तु हैं।
लेकिन हम भारतीयों का उनसे कोई लेना-देना नहीं होगा। [द मा-
हालांकि, हरिषी भी गैर-ब्राह्मण हैं (मंगलवाड़ी, 1992)।
शायद इसी कारण से स्वदेशी लोगों में काफी हद तक अनिच्छा है।
उसे और उसकी शिक्षाओं को स्वीकार करने की स्थिति।] केवल एक ही है मैं
मैंने सुना है कि भारतीय किस पर भरोसा करते हैं, वह साईं बाबा हैं” (ब्रुक,
1999).

स्वामी अमृतानंद, भगवान रमण माँ के साथी-
हर्षी [1879 – 1950] को पूरा विश्वास था कि श्री सत्य साई बाबा
अपने अनुभव में वह किसी और से बेहतर योग विज्ञान को जानता था।
(कस्तूरी, 1971)।
हालांकि साईं बाबा ने केवल तीन साल की उम्र तक ही स्कूल में पढ़ाई की थी।
किशोरवय होने के बावजूद, उन्हें धर्मग्रंथों का पूर्ण ज्ञान है, सभी धर्मग्रंथों का।
विज्ञान, कला, भाषाएँ—अध्ययन के सभी क्षेत्रों में।
दरअसल, वह सब कुछ जानता है—भूतकाल और वर्तमान भी।
और हम सभी के जीवन का भविष्य (वार्नर, 1990)।

76 बिच्छू-आदमी 77

साईं बाबा कहते हैं कि वे अवतार हैं, या ईश्वर के दिव्य पैगंबर हैं।
हमारे समय के लिए (गिउलियानो, 1989)।
अवतार एक ही है, और इस एक शरीर को ईश्वर धारण करते हैं।
अवतार (साई बाबा, [हिसलोप, 1978] में)।
1963 तक बाबा यह दावा करने लगे थे कि वे स्वयं ईश्वर के अवतार हैं।
शिव और शक्ति की अवधारणा... पश्चिमी लोगों के आने के बाद से
उसका अनुसरण करने के लिए, उसने यह भी घोषणा की है कि वह यीशु मसीह है।
जो फिर से आ गया है (मंगलवाड़ी, 1992)।
जब यह स्पष्ट हो गया कि मैं इसे छोड़कर नहीं जा रहा हूँ
साईं बाबा द्वारा कथित यौन शोषण का मुद्दा
अकेले में ही, कुछ [राष्ट्रीय समन्वयकों] ने मुझे फोन किया।
उन्होंने कहा कि हां, मैं सही था और उन्हें इस बारे में पहले से ही पता था।
वर्षों। "लेकिन वह ईश्वर है, और ईश्वर जो चाहे कर सकता है।"
(बेली और बेली, 2003)।

पिछले पचास वर्षों से सत्य साई बाबा भारत के सबसे प्रतिष्ठित धर्मगुरु रहे हैं।
“सबसे प्रसिद्ध और सबसे शक्तिशाली संत” (ब्राउन, 2000), जो विभूति या “पवित्र

राख” के उत्पादन और “अचानक” वस्तुओं के प्रकट होने के कई अन्य दावों के लिए जाने जाते हैं।
साईं बाबा का जन्म कथित तौर पर 1926 में दक्षिण भारत में एक निष्कलंक गर्भाधान के माध्यम से हुआ था।
तेरह वर्ष की महज उम्र में उन्हें बिच्छू ने काट लिया। इसके बाद उन्होंने घोषणा की कि वे शिरडी साई बाबा के नए अवतार हैं, जो सत्य के जन्म से आठ वर्ष पहले दिवंगत हुए एक संत थे।
कुछ कथाओं के अनुसार, उनके शरीर में पहले रहने वाले जीव की उस डंक से मृत्यु हो गई थी, और साईं बाबा की आत्मा ने उस खाली स्थान पर शरीर धारण कर लिया था, न कि उनके जन्म से ही शरीर में रहने की बात कही गई है। (आदि दा, जिनसे हम आगे मिलेंगे, दावा करते हैं कि साधना के दौरान उन्हें उसी आत्मा द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था।)
बहरहाल, स्पाइडर-मैन जैसी अपनी साधारण शुरुआत से, साईं बाबा ने दुनिया भर में अनुमानित दस से पचास मिलियन अनुयायियों को आकर्षित किया है, और उनकी संस्था का कुल मूल्य लगभग 6 बिलियन डॉलर है। इन शिष्यों में हार्ड रॉक कैफे के सह-संस्थापक इसाक टिग्रेट भी शामिल हैं; उस श्रृंखला का आदर्श वाक्य "सभी से प्रेम करो - सभी की सेवा करो" बाबा का ही एक उद्धरण है। इसके अलावा, जैज़ ट्रम्पेट वादक मेनार्ड फर्ग्यूसन भी उनके शिष्यों में से एक हैं—जिन्होंने कथित तौर पर साईं बाबा से अपने 78 बच्चों के स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना की है।

धीरे-धीरे सुनने की क्षमता कम होती जा रही है, लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा है—और सारा फर्ग्यूसन, प्रिंस एंड्रयू की पूर्व पत्नी।
ऐसा माना जाता है कि गुरु ने एक बार [जॉर्ज] हैरिसन को यह वरदान दिया था।
भारत में उनके अनंतपुर आश्रम में दुर्लभ व्यक्तिगत मुलाकात।
70 के दशक के मध्य में किसी समय। जॉन और योको ने साई से भी मुलाकात की।
उस समय बाबा भी वहीं थे। इसी अनुभव से उन्हें यह प्रेरणा मिली।
लेनन ने बाद में व्यंग्यात्मक टिप्पणी की, "गुरु पॉप हैं।"
भारत का सितारा। पॉप स्टार पश्चिम के गुरु हैं” (गिउलियानो,
1989).

रोचक बात यह है कि महान जैज़ संगीतकार जॉन कोल्ट्रेन की दूसरी पत्नी, एलिस (अब स्वामी तुरियासंगीतानंद), अपने स्वयं के दर्शनों के आधार पर दावा करती हैं कि "भगवान ने साईं बाबा को 'मेरे पवित्र अवतारों में से एक' के रूप में वर्णित किया है" (रॉलिंसन, 1997)। कोल्ट्रेन को स्वयं उनके पियानोवादक बिल इवांस द्वारा कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं से परिचित कराया गया था।

* * *

हमारे समय का कोई भी "दिव्य पैगंबर" बिना अनेक "चिन्हों और चमत्कारों" को प्रकट किए इस प्रकार अवतरित नहीं होगा।

ईसा मसीह की तरह, साईं बाबा ने भी भोजन की रचना की थी।

असंख्य लोगों के बीच; संकट के समय शिष्यों के सामने "प्रकट" होना

या आवश्यकता। चंगाई के अनगिनत किस्से हैं, और

कम से कम दो बार उसने लोगों को मुर्दों में से जीवित किया है (ब्राउन,

2000).

हालांकि, साईं बाबा के प्रकट होने के चमत्कारिक रूप से कम होने के पहले व्यापक संकेत तब मिले जब एक पूर्वी भारतीय प्रधानमंत्री ने उनके आश्रम का दौरा किया, जिसमें साईं बाबा ने उपहार के रूप में एक सोने की घड़ी प्रकट की।

जब भारतीय राज्य टेलीविजन कर्मचारियों ने फिल्म चलाई

घटना को धीमी गति में देखते हुए, उन्होंने देखा कि चमत्कार एक

यह एक छल-कपट का धोखा था। यह क्लिप भारत में कभी प्रसारित नहीं हुई।

लेकिन वहां वीडियोटेप पर इसे व्यापक रूप से प्रसारित किया गया है (केनेडी,

2001).

यह बात उन संशयवादी जादूगरों के लिए बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं होती, जिन्होंने अतीत में साईं बाबा द्वारा पवित्र राख के "चमत्कारी" उत्पादन और अन्य चमत्कारों पर सवाल उठाए थे और परिणामस्वरूप उन्हें खारिज कर दिया था: बिच्छू-आदमी 79

साईं बाबा की वास्तविक यात्राओं की फिल्मों और वीडियोटेपों की जांच

प्रदर्शनों से पता चलता है कि ये केवल हाथ की सफाई है, पूर्व-

अन्य भारतीय जादुवालों द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रकार के बिल्कुल समान।

लास, या "सड़क के जादूगरों" के सामने साईं बाबा ने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया।

नियंत्रणों के तहत उनकी क्षमताओं की जांच, इसलिए उनके दावे
ये पूरी तरह से अप्रमाणित हैं (रैंडी, 1995)।
साईं बाबा की एक पूर्व समर्पित, करीबी शिष्या ने स्वतंत्र रूप से इन सभी बातों की पुष्टि की है। यानी, फेय बेली का दावा है कि उन्होंने स्वयं "अंगूठियां, घड़ियां और अन्य छोटी-मोटी चीजें हथेली में छिपाकर या कुर्सी के गद्दों के किनारे से निकाली जाती हुई" और "विभूति की गोलियों को साईं बाबा की उंगलियों के बीच कुचलकर 'प्रकट' होते हुए" देखा है।
[साईं बाबा का] प्रमुख और सबसे अधिक प्रचारित "चमत्कार" है-
उसके जाहिरा तौर पर खाली हाथ से किसी पदार्थ का उत्पादन
जिसे “विभूति” (“पवित्र राख”) के नाम से जाना जाता है, विश्लेषण करने पर पता चलता है
गोबर की पिसी हुई राख को धूप के साथ मिलाकर बनाया जाता है। गली
भारत में जादूगर (जादूवाले) इस ट्रिक को पहले से तैयारी करके करते हैं।
राख की छोटी-छोटी गोलियों को छीलकर उन्हें आधार में छिपाना
फिर अपनी उंगलियों से, मुट्ठियों से गोलियों को पीसकर चूर्ण बना देते हैं।
और बारीक राख का प्रवाह उत्पन्न करते हैं। उनकी तरकीब यह है कि वे इसे पहचान नहीं पाते।
साईं बाबा के चमत्कार से सक्षम (रैंडी, 2000)।
साईं बाबा के बारे में कई अद्भुत कहानियां प्रचलित हैं।
कथित शक्तियां, लेकिन पांच साल की खोज में मुझे कुछ नहीं मिला
एक को वास्तविक पाया गया (बेली और बेली, 2003)।
बेयरस्टीन (1994) ने साईं बाबा के अलौकिक दावों का और अधिक विस्तृत, आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
* * *
साईं बाबा से जुड़ी चिंताएँ केवल उनके "चमत्कारों" की प्रामाणिकता से संबंधित प्रश्नों तक ही सीमित नहीं हैं। वास्तव में, 1976 में ही, टाल ब्रूक (1999) ने ईसाई धर्म में परिवर्तित होने से पहले, 60 के दशक के उत्तरार्ध में बाबा के एक करीबी शिष्य के रूप में अपने दो वर्षों के अनुभवों की कहानी सुनाई थी।
बाबा की कमर का हल्का सा हिलना बंद हो गया। अचानक एक हाथ ने ज़िप खोल

दी।
मेरी मक्खी, फिर, शाम के समय घर लौटते हुए एक सांप की तरह, हाथ
अंदर घुस गया।
80 गुरुओं का पर्दाफाश

कम बैंगनी (लेकिन शायद अधिक टाई-डाई रंग) वाले रंग के साथ, ब्रुक की एक दोस्त ने आगे निम्नलिखित कहानी सुनाई, जिसके बारे में दावा किया गया कि यह लगभग एक साल बाद घटी थी:
जब बाकी सब चले गए और बाबा पैट्रिक को अकेले छोड़ गए...
इसके बाद जो हुआ वह यह था कि एक सहज गति में,
बाबा ने नीचे झुककर पैट्रिक की पैंट की ज़िप खोली और उसे खींचा।
उसने अपना औजार बाहर निकाल लिया...
उसने खूब हंगामा मचाया, और फिर अगली बात यह हुई कि
जो हुआ है वो वाकई आपके होश उड़ा देगा। बाबा ने अपना हाथ उठाया।
उसने चोगा उतारा और उसमें वह चीज़ डाल दी। बिल्कुल सही। शायद उसके पास कुछ है।
वहाँ स्त्री का अंग और पुरुष का अंग है। हाँ, एक स्त्री का अंग-
मैफ्रोडाइट। लेकिन उसने ईमानदारी से इसे डाला। पैट्रिक ने कहा कि यह महसूस हुआ।
ठीक औरतों की तरह।
इससे भी ज्यादा गंभीर बात यह है कि गुरु की कथित तौर पर युवा लड़कों में रुचि है:
स्वीडन के जाने-माने फिल्म अभिनेता कोनी लार्सन का कहना है कि
साईं बाबा ने न केवल समलैंगिक प्रस्ताव रखे
उसे, लेकिन उसे युवा पुरुष शिष्यों द्वारा भी बताया गया था-
गुरु ने उन पर जो बदलाव किए थे (ब्राउन, 2000)।
लार्सन का स्वयं दावा है कि गुरु ने पांच वर्षों की अवधि में नियमित रूप से उनके साथ मुख मैथुन किया और बदले में इसकी मांग भी की। “1986 तक, श्री लार्सन ने कई युवा पुरुष शिष्यों से बात की थी, जिनमें से अधिकांश आकर्षक गोरे पश्चिमी थे, जिन्होंने उन्हें बताया कि वे भी ऐसा ही करते थे।

साईं बाबा के साथ यौन संबंध बनाए थे" (बी. हार्वे, 2000ए)। वह कहते हैं कि अब उन्हें पीड़ितों से प्रतिदिन बीस से तीस ईमेल प्राप्त होते हैं, जिनमें वे "मदद के लिए गुहार लगाते हैं"।
मदद" (ब्राउन, 2000)।
हंस डी क्रैकर... जिन्होंने सबसे पहले साईं बाबा के आश्रम का दौरा किया था।
1992 में, गुरु ने कहा कि वह नियमित रूप से अपने जननांगों पर तेल मलते थे।
इसे धार्मिक सफ़ाया बताते हुए, अंततः कोशिश की गई
उसे मुख मैथुन करने के लिए मजबूर करना (पी. मर्फी, 2000)।
एक अन्य सोलह वर्षीय लड़के ने, जिसके माता-पिता दोनों साईं भक्त थे, अपनी कहानी उन्हें सुनाई:
उन्होंने कहा कि साईं बाबा ने उन्हें चूमा था, उनके साथ स्नेह से पेश आए थे और...
उसे मुख मैथुन करने के लिए मजबूर करने का मन हुआ, यह समझाते हुए कि
यह "शुद्धिकरण" के लिए था। लगभग हर अवसर पर साईं बाबा
स्कॉर्पियन-मैन 81 में उसे घड़ियाँ, अंगूठियाँ, गहने और नकदी उपहार में दी गई थीं।

कुल मिलाकर लगभग 10,000 डॉलर। उसने उसे अपने बारे में कुछ भी न कहने के लिए कहा था।
अभिभावक....
1998 में [अर्थात अठारह वर्ष की आयु में], [लड़के के अनुसार], साई
बाबा ने उसके साथ बलात्कार करने का प्रयास किया (ब्राउन, 2000)।
हालांकि, उपरोक्त आरोपों में से किसी ने भी साईं बाबा के करीबी लोगों की आस्था को अनुचित रूप से प्रभावित नहीं किया है:
[ब्रिटिश कोलंबिया साईं बाबा के अध्यक्ष नामी] त्यागरत्नम
... उनका कहना है कि उन्हें इस बात पर आश्चर्य नहीं है कि लोग इसे बर्बाद करने की कोशिश कर रहे हैं।
ऐसे अद्भुत व्यक्ति की प्रतिष्ठा। आखिरकार, वह कहते हैं, लोग
उन्होंने यीशु मसीह और बुद्ध को भी सताया (टॉड, 2001)।
डॉ. माइकल गोल्डस्टीन, अमेरिका के प्रभावशाली राष्ट्रपति
साईं बाबा संगठन ने इस वर्ष सभी आरोपों को खारिज कर दिया।

उनका कहना है कि ये अविश्वसनीय हैं और साईं बाबा ने...
ईश्वरीय रूप से शुद्ध, केवल "निस्वार्थ प्रेम" से परिपूर्ण।
गोल्डस्टीन के अनुसार, संदेह करने वालों के लिए उत्तर यह है कि वे और अधिक दिखाएँ।
विश्वास (टॉड, 2001)।
या, जैसा कि बाबा ने स्वयं कहा था (दास, 1971 में):
मानसिक गतिविधियों के कारण गुरु का प्रभाव बाधित होता है।
अपने स्वयं के प्रयासों पर निर्भरता और हर प्रकार के आत्म- प्रयास द्वारा-
चेतना और आत्मप्रयास।
साईं बाबा ने हाल ही में अपने भक्तों से कहा था:
“मुझे समझने की कभी कोशिश मत करो” (हारपुर, 2001)।
साई संगठन की कम से कम एक विदेशी शाखा के प्रमुख ने पुट्टपर्थी में बाबा के आश्रम में बच्चों को ले जाने वाले परिवारों को बाल यौन शोषण की खबरों के बारे में चेतावनी देने से साफ इनकार कर दिया है।
साईं बाबा, जो शायद ही कभी मीडिया को साक्षात्कार देते हैं, ने संकेत दिया।
पिछले साल एक संबोधन में उन्होंने स्वयं इन आरोपों का खंडन करते हुए कहा था,
“कुछ श्रद्धालु इन झूठी सूचनाओं से परेशान प्रतीत होते हैं-
वे सच्चे भक्त बिल्कुल नहीं हैं” (गोल्डबर्ग, 2001)।
आखिरकार, "भगवान" होने का मतलब है कि आपको कभी माफी नहीं मांगनी पड़ेगी।

अध्याय XI

भले ही
घटित हुआ....
(स्वामी राम)

स्वामी राम का जन्म कथित तौर पर 1925 में हुआ था और कहा जाता है कि वे उत्तरी भारत में एक अनाथ के रूप में पले-बढ़े। जल्द ही उन्हें कथित तौर पर "हिमालय

के महानतम गुरुओं में से एक" बंगाली बाबा ने गोद ले लिया था।
कहा जाता है कि चौबीस वर्ष की आयु में उन्हें करवीरपीठम के शंकराचार्य का पद दिया गया था—जो हिंदू धार्मिक पदानुक्रम में चार प्रमुख व्यक्तियों में से एक है। हालांकि, महज दो साल बाद ही उन्होंने यह पद त्याग दिया और बिना किसी सूचना के पहाड़ों में ध्यान करने चले गए।
रामा ने यह भी दावा किया कि उन्होंने बाद में हैम्बर्ग और उट्रेक्ट में पढ़ाई की थी।
और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में। हालाँकि, यह पता चलता है (वेबस्टर, 1990) कि स्वामी की आधिकारिक जीवनी में महत्वपूर्ण तत्व शायद "मनगढ़ंत" ही थे।
बहरहाल, रामा निश्चित रूप से 1969 में संयुक्त राज्य अमेरिका आए और जल्द ही कंसास के टोपेका में मेनिंगर फाउंडेशन में एल्मर और एलिस ग्रीन के मार्गदर्शन में बायोफीडबैक प्रदर्शनों में भाग लेने लगे। वहां उन्होंने अपने स्वायत्त (अनैच्छिक) तंत्रिका तंत्र के विभिन्न पहलुओं को सचेत रूप से नियंत्रित करने की क्षमता प्रदर्शित की।
82
अगर ऐसा हुआ भी तो.... 83

1971 में, स्वामी ने इलिनोइस में हिमालयन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (जिसे "एचआई" कहा जाता है और जो योगा इंटरनेशनल पत्रिका का प्रकाशक है) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान को समकालीन शब्दों में प्रस्तुत करना था। 1977 तक, यह संगठन पूर्वोत्तर पेंसिल्वेनिया के पोकोनो पहाड़ों में स्थित एक आश्रम में स्थानांतरित हो गया था, जिसमें सौ से अधिक निवासियों और मेहमानों के साथ-साथ संस्थान का मुख्यालय भी था।
और उस रमणीय वातावरण में, अमर गुरु-शिष्य संबंध विकसित हुआ, जिसमें राम के शिष्य यह मानते थे कि वह उनके मन को पढ़ सकते हैं और अपनी अतिचेतना की शक्ति से बीमारियों को ठीक कर सकते हैं, इत्यादि।
हालांकि, यह बिल्कुल सामान्य बात है: शिष्यों द्वारा गुरु के बारे में कम सोचना उन्हें "अविश्वासी" बना देगा, जो मायावी संदेह से ग्रस्त होगा।
* * *
दिसंबर 1990 में, योगा जर्नल ने रामा के खिलाफ यौन शोषण सहित दुर्व्यवहार के

आरोपों का विस्तृत विवरण देते हुए एक खुलासा प्रकाशित किया।
इस घटना में शामिल महिलाओं में से एक ने ऋषि के साथ सार्वजनिक रूप से हुई एक गैर-यौन मुलाकात का विस्तृत वर्णन किया। आरोप है कि स्वामी ने एक महिला के गले में कुत्ते का पट्टा और रस्सी बांध दी और वहां मौजूद अन्य वफादार अनुयायियों के मनोरंजन के लिए उसे घुमाया। उन पर यह भी आरोप लगाया गया कि उन्होंने अन्य महिलाओं को नितंबों पर लात मारी।
खरपतवार निकालते हुए, वे पहले से ही अपने हाथों और घुटनों के बल नीचे झुके हुए थे (वेबस्टर, 1990)।
पंडित राजमणि तिगुनाइत, जो उस समय होन्सडेल आश्रम के निवासी आध्यात्मिक निदेशक और संस्थान के सदस्य थे।
शिक्षण कर्मचारियों ने कथित तौर पर (वेबस्टर, 1990 में) यौन शोषण के आरोपों पर इस प्रकार प्रतिक्रिया दी:
अगर ऐसा हो भी गया तो इसमें बड़ी बात क्या है? लोग कहते हैं कि
महात्मा गांधी महिलाओं के साथ सोते थे। भगवान जाने यह बात सच है या नहीं।
यह सच था या नहीं, और अगर यह सच भी था, तो यह एक सामान्य घटना है।
नाम....
अगर मुझे पता भी चल जाए तो मैं कैसे पता लगा सकता हूँ? क्योंकि मुझे पता है
पता नहीं लगाना चाहता। पता लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है, अगर मैं
मुझे पता है कि यह पूरी तरह गलत है।
स्वामी राम के समुदाय की ओर से महिलाओं द्वारा उनके अनुचित व्यवहार के आरोपों पर जो प्रतिक्रिया सामने आई, वह ठीक वैसी ही थी जैसी उम्मीद की जा सकती थी। यानी, कथित तौर पर उन्हें 84 गुरुओं को नंगा करने के आरोप में खारिज कर दिया गया।

“भावनात्मक रूप से विक्षिप्त,” या अन्यथा कथित तौर पर “झूठे” माने जाने वाले (वेबस्टर, 1990)।
* * *
जैसा कि तिगुनाईट ने ऊपर बताया है, महात्मा गांधी अपने जीवन के अंतिम समय में किशोरियों (जिनमें उनकी चचेरी बहन की पोती भी शामिल थी) के साथ शारीरिक

संबंध बनाते थे। हालांकि यह सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन सभी रिपोर्टों के अनुसार, दोनों पक्ष सचमुच एक-दूसरे के बगल में सोते थे, ताकि वे अपनी यौन इच्छा के प्रतिरोध का परीक्षण कर सकें।

अपनी बात स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने कहा कि यह वास्तव में

यह सच है कि उसने महिला कामगारों को अपने बिस्तर का इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी, लेकिन

कभी-कभी इसे आध्यात्मिक प्रयोग के रूप में किया जाता है। भले ही

उसमें उस जुनून का कोई निशान नहीं था जिसके वह आदी था।

सचेत रहते हुए, यह असंभव नहीं था कि कुछ अवशेष बच जाए।

और इससे उन लड़कियों के लिए परेशानी खड़ी हो जाएगी जिन्होंने इसमें भाग लिया था।

उनका प्रयोग [तुलना करें "गैर-में परिपूर्ण व्यक्ति की उपस्थिति में-

किसी भी प्राणी में हिंसा, शत्रुता उत्पन्न नहीं होती"—पतंजलि

योग सूत्र] (बोस, 1974)।

ब्रह्मचर्य के अपने व्रत का उल्लंघन किए बिना भी, उस घटना का लड़कियों पर पड़ने वाले संभावित मनोवैज्ञानिक प्रभाव महात्मा गांधी के लिए चिंता का विषय नहीं प्रतीत होता है।

निश्चित रूप से, गांधी जी के (अन्यायपूर्ण) क्रोध के सहज मानवीय प्रदर्शन ही यह दर्शाने के लिए पर्याप्त थे कि वे अहिंसा में अभी तक पूर्ण रूप से निपुण नहीं हुए थे। उनके इस क्रोध के प्रकोप का वर्णन उनके तत्कालीन सचिव, प्रख्यात मानवविज्ञानी एन. के. बोस ने किया था, जिन्होंने महात्मा गांधी के उपरोक्त "प्रयोगों" पर आपत्ति जताते हुए सचिव पद से इस्तीफा दे दिया था। गांधी जी द्वारा स्वयं स्वीकार की गई "इंद्रिय सुख से घृणा" भी एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक हिंसा ही थी। क्योंकि आसक्ति से संबंधित आध्यात्मिक प्रश्नों के संदर्भ में, घृणा आकर्षण से बेहतर नहीं है।

बोस (1974) की पुस्तक 'माई डेज़ विद गांधी' का अध्याय 18वां और कोस्टलर (1960) की पुस्तक 'द लोटस एंड द रोबोट' का अध्याय 4, गांधी जी द्वारा ब्रह्मचर्य पर दिए गए जोर के पीछे के मानवीय मनोवैज्ञानिक कारणों का तर्कसंगत विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। इनमें महात्मा गांधी द्वारा अपने पिता को उनकी मृत्युशय्या पर छोड़कर उनकी युवा पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने के लिए चले जाना भी शामिल है,

जिससे वे अपने पिता की मृत्यु के समय मौजूद नहीं रह सके, जिसके लिए वे स्वयं को कभी क्षमा नहीं कर पाए।
कोस्टलर ने इसी पुस्तक में गांधीजी द्वारा अपने बच्चों के साथ किए गए निराशाजनक व्यवहार का भी वर्णन किया है। उस व्यवहार में महात्मा गांधी का यह कथन भी शामिल है: "भले ही ऐसा हुआ हो..." 85

अपने बड़े बेटों को अपने जैसा ढालने के प्रयास में, उन्होंने उन्हें व्यावसायिक शिक्षा से वंचित कर दिया। बाद में, पिता की मनाही के विरुद्ध विवाह करने के कारण सबसे बड़े बेटे को गांधीजी ने त्याग दिया; और एक व्यापारिक घोटाले में संलिप्तता के लिए गांधीजी द्वारा सार्वजनिक रूप से आलोचना किए जाने के बाद, वह शराब की लत से बुरी तरह टूटकर मर गया।
तो फिर महात्मा गांधी के "किशोरी लड़कियों के साथ किए गए प्रयोगों" की कहानियां इतनी व्यापक रूप से क्यों नहीं जानी जातीं?
गांधीवादी हर निशान मिटाने में इतने दृढ़ थे
बोस की किताब न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों में भी अनुपलब्ध है, यह एक घोटाला है।
दीया में, बल्कि ब्रिटिश संग्रहालय में भी (कोस्टलर, 1960)।
* * *
स्वामी राम का देहांत 1996 में हुआ था, उनके परिवार में ये लोग जीवित हैं।
कम से कम एक बच्चे का सुझाव दिया गया (वेबस्टर, 1990)।
1997 की शरद ऋतु में, पेंसिल्वेनिया के जूरी सदस्यों ने होन्सडेल, पेंसिल्वेनिया में हिमालयन इंस्टीट्यूट की एक पूर्व महिला निवासी को 1.875 मिलियन डॉलर का हर्जाना दिया। महिला ने दावा किया कि 90 के दशक की शुरुआत में योगिक प्रेम की गर्मियों के दौरान राम ने उसके साथ पूरे तीस बार यौन उत्पीड़न किया था। उस समय वह उन्नीस साल की कुंवारी थी और अभी-अभी हाई स्कूल से निकली थी। फिर भी, जैसा कि रिपोर्ट किया गया है...
फेल्प्स (1997) के अनुसार, संस्थान ने कथित दुर्व्यवहार को रोकने के लिए कुछ नहीं किया, जबकि उसे न केवल उन कथित हमलों के बारे में बल्कि अन्य महिला शिष्यों द्वारा दर्ज की गई इसी तरह की शिकायतों के बारे में भी सूचित किया गया था।

पंडित तिगुनाइत, जिन्होंने भारत में एक शिशु के रूप में ही राम को अपना गुरु स्वीकार किया था, अब "हिमालयी संस्थान के आध्यात्मिक प्रमुख" हैं और वहां स्वामी राम के "आध्यात्मिक उत्तराधिकारी" के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।
“भले ही ऐसा हो जाए....”

अध्याय XII

मो चिन-अप्स
(श्री चिनमोय)

श्री चिनमोय एक पूर्णतः सिद्ध आध्यात्मिक गुरु हैं जो समर्पित हैं।
जीवन में गहरा अर्थ तलाशने वालों को प्रेरित करना और उनकी सेवा करना
(चिनमोय, 1985)।
संप्रदाय के सदस्यों का मानना है कि चिनमोय एक "अवतार" हैं (आइज़न-
शहर, 1993)।

बांग्लादेश के मूल निवासी चिनमोय कुमार घोष 1964 में संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचे, इससे पहले वे भारत में श्री अरबिंदो आश्रम में दो दशकों तक रहे थे। तीन साल बाद, उन्होंने न्यूयॉर्क के क्वींस में अपना खुद का ओम ध्यान केंद्र शुरू किया।
वॉल स्ट्रीट जर्नल द्वारा एक बार "आध्यात्मिक जगत का स्टंटमैन" के रूप में वर्णित चिनमोय ने अपने कई "शक्ति प्रदर्शन" के माध्यम से इस उपाधि को कई बार अर्जित किया है।
परमेश्वर नहीं चाहता कि तुम पचास बार संतुष्ट हो जाओ।
वह चाहता है कि तुम इक्यावन मीटर, बावन मीटर दौड़ो।
चौवन मीटर... अन्यथा, यदि आप हमेशा एक ही लक्ष्य पर निशाना साधते हैं
लक्ष्य, यह नीरस हो जाता है (चिनमोय, [जैक्सन, 1996] में)।

भारोत्तोलन "आध्यात्मिक जीवन का एक उत्तम उदाहरण है।"
एक भक्त समझाते हैं, “जैसे मृत भार उठाया जाता है, वैसे ही
किसी व्यक्ति के निचले, अप्रकाशित शरीर को एक स्तर तक उठाया जा सकता है
बढ़ी हुई शांति, प्रकाश और आनंद का” (रे, 1991)।
चिनमोय के चर्चित भारोत्तोलन करतबों में (एक नॉटिलस जैसी मशीन की सहायता से, जो अधिकांश काम करती है) निम्नलिखित शामिल हैं:
• ऑस्ट्रेलिया में एक हजार भेड़ों को उठाना (एक बार में चार-चार करके)
• एक पैर पर संतुलन बनाए रखते हुए पाइपर एरो विमान को उठाना
• आइसलैंड के प्रधानमंत्री को सैन फ्रांसिस्को के दो लोगों ने सम्मानित किया।
49ers, चार नोबेल पुरस्कार विजेता, हास्य कलाकार एडी मर्फी ("बेकार बोझ" की बात करते हुए), रेवरेंड जेसी जैक्सन, एक फोर्ड पिकअप ट्रक, एक हाथी और एक छोटा स्कूल भवन (अलग-अलग) हवा में। साथ ही, नेल्सन मंडेला, डेसमंड टूटू, मुहम्मद अली, सुसान सारंडन, जेफ गोल्डब्लम, योको ओनो, स्टिंग और रिचर्ड गेरे (अलग-अलग)।
और इस व्यक्ति की उपलब्धियां केवल भारोत्तोलन तक ही सीमित नहीं हैं। बल्कि, अगर चिनमोय के अनुयायियों की मानें तो उन्होंने कम से कम 1200 किताबें, 62,000 कविताएं और 14,000 गीत लिखे हैं।
1974 में उन्होंने चौबीस घंटों में 360 कविताएँ लिखीं, फिर
अगले साल एक ही दिन में 843 छंद खेले। एक सौ में-
नवंबर 1974 से फरवरी 1975 तक के दस दिनों में उन्होंने...
उन्होंने 10,000 "कलाकृतियाँ" पूरी कीं—कलम और स्याही से बनी कलाकृतियाँ, अमूर्त ऐक्रेलिक चित्र,
जलरंग (जैक्सन, 1996)।
दरअसल, "अवतार" के स्वयं के अनुमान के अनुसार, उन्होंने पक्षियों के चार मिलियन से अधिक चित्र और कुल मिलाकर 150,000 से अधिक पेंटिंग बनाई हैं।
चिनमोय सत्तर वर्ष के हैं, इसलिए चार मिलियन चित्र प्रतिदिन 150 से अधिक होंगे - या हर दस मिनट में एक, यदि उन्होंने नींदहीन जीवन के दौरान "पक्षियों के चित्र

बनाने" के अलावा कुछ नहीं किया होता।
बहुत ही शानदार। वास्तव में, इतना सब करने के बाद भी ध्यान या व्यायाम के लिए समय निकालना, इसके लिए तो दिन में चौबीस घंटे से भी अधिक समय की आवश्यकता होगी।
ईश्वर के लिए इस तरह के रिकॉर्ड तोड़ने वाले कार्यों का प्रभाव चिनमोय के कम से कम एक शिष्य, श्री अश्रिता फुरमान पर भी पड़ा है, जिनकी गतिविधियों में 88 गुरुओं को नंगा करना शामिल है।

एक साथ जॉगिंग और जगलिंग (छह घंटे, सात मिनट):
तीन गेंदें); लंबी दूरी तक कलाबाजी (12.3 मील) करते हुए
वही मार्ग जो पॉल रेवरे ने बोस्टन से होकर लिया था; और अन-
पानी के नीचे पोगो-स्टिकिंग (तीन घंटे, चालीस मिनट)
अमेज़न नदी (अरेड्डी, 1989)।
बाद वाले स्टंट के लिए, "पिरान्हा मछलियों पर नजर रखने के लिए एक पहरेदार तैनात किया गया था।"
उनकी स्वयं की स्पष्ट उत्पादकता और प्रदर्शित शक्ति के अंतर्निहित आध्यात्मिक विकास और वर्षों के ध्यान के संबंध में, चिनमोय (1978) बताते हैं:
सर्वोच्च को प्राप्त करने और सचेत होने के बाद
परम सत्ता से एक हो जाने पर, व्यक्ति को प्रार्थना करने या कुछ और करने की आवश्यकता नहीं रहती।
ध्यान करो। लेकिन मेरे कई शिष्य हैं, इसलिए मैं उनके लिए ध्यान करता हूँ।
उन्हें वैसे ही ध्यान करना सिखाया जाता था जैसे मैं स्वयं कई साल पहले किया करता था।
चिनमोय अपने शिष्यों के विकास में अपनी भूमिका के महत्व को लेकर कोई संदेह नहीं छोड़ते हैं:
गुरु के पास अपने शिष्यों के लिए कर्म के नियम को निरस्त करने की शक्ति होती है।
शिष्य (चिनमोय, 1985)।
गुरु के बिना आपकी प्रगति बहुत धीमी और अनिश्चित होगी।
टेन....

सर्वोत्तम प्रकार का ध्यान तब प्राप्त होता है जब आप उसमें प्रवेश करते हैं।
मेरी चेतना तब जागृत हुई जब मैंने अपनी एक तस्वीर देखी जो तब ली गई थी जब मैं मैं उच्च ध्यानात्मक चेतना में हूँ (चिनमोय, 1978)।
* * *
चिनमोय स्वयं एक प्रतिभाशाली संगीतकार हैं। दरअसल, अगर उनके प्रेस विज्ञप्तियों पर विश्वास किया जाए तो उन्होंने पिछले बीस वर्षों में तीस देशों में लगभग पांच लाख लोगों के लिए लगभग तीन सौ संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।
यह उल्लेखनीय है क्योंकि चिनमोय और उनके समर्थकों ने...
यह स्वीकार करना होगा कि वह एक प्रतिभाशाली संगीतकार नहीं है; वह कभी-कभी गलतियाँ करता है
गलतियाँ करता है और फिर से शुरू करता है, और आम तौर पर धुन में सुधार करता है।
मौके पर ही मृत्यु हो जाती है (गैलोवे, 1991)।
संगीत समारोह स्थलों में लंदन का रॉयल अल्बर्ट हॉल, कार्नेगी हॉल, टोक्यो का निप्पॉन बुडोकान (जिसे 1970 के दशक में चीप ट्रिक ने पश्चिम में प्रसिद्ध किया था) और सिडनी ओपेरा हाउस शामिल हैं।
मो चिन-अप्स 89

चिनमोय की वेबसाइट के अनुसार, "एक ही संगीत कार्यक्रम में सबसे अधिक वाद्ययंत्रों" का उनका अपना व्यक्तिगत रिकॉर्ड, मानव शरीर में कथित सूक्ष्म ऊर्जा केंद्रों - उग्र चक्रों को शांत करने के लिए संगीत बजाने का, अब 150 तक पहुंच गया है।
कुछ संगीत ऐसा भी होता है जो हमारे आंतरिक मन को सचमुच नष्ट कर देता है।
यह संगीत स्थूल भौतिक या निम्न स्तर से आता है।
महत्वपूर्ण। अदैवीय संगीत हमारी निम्न प्राणिक चेतना को जगाने का प्रयास करता है।
चेतना और हमें उत्साह की दुनिया में ले जाओ (चिन-
मोय, 1978)।
इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह दिलचस्प है कि चिनमोय के अनुयायियों में ग्रैमी पुरस्कार विजेता संगीतकार और "गिटार के भगवान" कार्लोस सैन्टाना भी शामिल थे, जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ 1972 से 1981 तक नौ वर्षों तक पूरी निष्ठा से

चिनमोय का अनुसरण किया। इसके अलावा, क्लेरेंस "बॉर्न टू ब्लो" क्लेमन्स (ब्रूस स्प्रिंगस्टीन के सैक्सोफोन वादक), रॉबर्टा फ्लैक और शीना ईस्टन भी उनके अनुयायी थे।

मेरे गुरुजी सुबह की ट्रेन लेते हैं...

* * *

चिनमोय का दावा है कि विश्व भर में उनके सात हजार तक शिष्य हैं,

इनमें दिवंगत ज़ेन गुरु रामा या फ्रेडरिक लेंज़ भी शामिल हैं। (लेन्ज़ की पहली पुस्तक चिनमोय को समर्पित थी, उनके अलग होने से पहले।) उन छात्रों के लिए यौन संबंध और आध्यात्मिकता के बारे में उनकी कथित शिक्षाएँ स्पष्ट हैं:

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य अत्यंत आवश्यक है।

सैरी....

ईश्वर प्राप्ति और यौन जीवन एक दूसरे के मेल की तरह हैं।

चीनी और नमक। अगर हम इन्हें एक साथ मिलाने की कोशिश करें तो हम ऐसा नहीं कर सकते।

स्वाद भी...

जो लोग वास्तव में उन्नत अवस्था में हैं, वे पाते हैं कि कम महत्वपूर्ण ऊर्जा स्तर...

उनमें आवश्यकता का कोई स्थान नहीं होता। उनके लिए सुखमय जीवन ही सर्वोपरि है।

आराम की जगह वास्तविक आनंद से भरा जीवन आ जाता है। और स्वाभाविक रूप से, एक बार फिर से-

जब ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो प्रलोभन उन पर कभी हावी नहीं हो सकता (में

रॉस, 2003डी; इटैलिक्स जोड़े गए)।

हालांकि, यह स्थिति स्वयं गुरु के खिलाफ लगे यौन दुराचार के कई आरोपों के विपरीत है।

www.chinmoycult.com वेबसाइट के प्रशंसापत्र अनुभाग के माध्यम से उठाया गया। यह निम्नलिखित आरोपों से भी मेल नहीं खाता: 90 गुरुओं को नंगा करना

चिनमोय पर लगे आरोपों के बीच उनके कुछ अनुयायी उन्हें छोड़कर चले गए...

वह अपने शिष्यों की पत्नियों के साथ यौन दुर्व्यवहार करने की कोशिश कर रहा था।

प्लेस (ओच्चियोग्रोसो, 1996)।
बीस साल तक पूर्व सदस्य रहीं ऐनी कार्लटन ने बताया कि
[न्यूयॉर्क] पोस्ट घोष [अर्थात चिनमोय] ने उसे तलब किया
दो लंबी अवधियों में यौन संबंध—एक 1991 में
और एक अन्य घटना 1996 में हुई।
फिर, 2000 में, घोष ने [कथित तौर पर] उसे काम पर फोन किया और
उसने उससे कहा कि वह एक अन्य महिला शिष्या के साथ यौन संबंध बनाए जबकि वह
देखा (गिन्सबर्ग, 2004)।
चिनमोय ने अपने वकील के माध्यम से उन यौन आरोपों का खंडन किया है।
बेशक, उस आदमी की प्रवृत्ति को देखते हुए, जो गुणवत्ता के बजाय मात्रा को प्राथमिकता देता है—यानी, "जितना ज़्यादा उतना बेहतर"—कोई भी पॉल बनयान जैसी यौन विजय की कहानियाँ/आरोप सुनने की उम्मीद कर सकता है। उदाहरण के लिए, चौबीस घंटे की अवधि में 1200 महिलाओं के साथ सोने का किस्सा, साथ ही लगातार कज़ू बजाना और तरह-तरह के जलपक्षियों आदि के हजारों चित्र बनाना।
और चिनमोय ने स्वयं उन व्यवहारों के बारे में क्या कहा, जिन पर उन पर आरोप लगाए गए हैं?
तथाकथित मानवीय कमजोरियाँ एक बात हैं; लेकिन अगर मास-
यदि कोई व्यक्ति निम्नतर जीवन, यौन जीवन में लिप्त रहता है, तो वह स्वामी
बहुत बुरा है और आपको उसे छोड़ देना होगा (चिनमोय, 1985)।
गुरु को अपने द्वारा सिखाई गई बातों का एक आदर्श उदाहरण होना चाहिए।
उसका बाहरी स्वरूप उसके वास्तविक व्यक्तित्व का पूर्ण उदाहरण होना चाहिए।
कहते हुए। अन्यथा वह गुरु नहीं है... एक की जिम्मेदारी
गुरु महान हैं। यदि गुरु एक आदर्श उदाहरण नहीं हैं तो...
यदि उनकी शिक्षाओं के अनुसार वह सच्चे गुरु नहीं हैं, तो वह तो बस एक सामान्य गुरु हैं।
चिकित्सा जगत में वे उसे "झोलाछाप" कहते हैं (रॉस में, 2003डी)।
अच्छा, अगर यह दिखने में बत्तख जैसा है, बत्तख की तरह ध्यान करता है और बत्तख की तरह वजन उठाता है...

* * *

कार्लोस सैंटाना का, उदाहरण के तौर पर, अब चिन-मोय या उनके समुदाय से कोई संबंध नहीं है।

समूह छोड़ने के बाद ऐसा लगता है कि श्री चिनमोय "काफी

"वह प्रतिशोधी था," सैंटाना याद करते हुए कहते हैं। "उसने मेरे सभी दोस्तों से कहा कि वे चिन-अप्स न करें।"

मुझे फिर कभी फोन करना, क्योंकि मैं अंधेरे सागर में डूबने वाला था।

उसे छोड़ने के लिए अज्ञानता" (हीथ, 2000)।

या फिर, जैसा कि सैंटाना—स्वयं मिस्टर सुपरनैचुरल, जिनकी पूर्वी दर्शन के प्रति गहरी सहानुभूति आज भी बनी हुई है—ने उसी रोलिंग स्टोन साक्षात्कार में चिनमोय के मार्ग के बारे में बात करते हुए कहा था: "यह सब मेरे लिए नहीं है।"

अब बात कुछ और है!

अध्याय XIII

थाई सरप्राइज

कन्फ्यूशियस कहते हैं, "जो व्यक्ति हवाई अड्डे के टर्नस्टाइल से एक तरफ से गुजरता है-"

बैंकॉक जाने के रास्ते।

थाईलैंड (राजधानी बैंकॉक) के 65 मिलियन नागरिकों में से लगभग 95% बौद्ध हैं। थाईलैंड के 35,000 मंदिरों में 350,000 से अधिक भिक्षु और नौसिखिए रहते हैं—औसतन प्रत्येक मंदिर में दस भिक्षु। इन धर्मनिष्ठ भिक्षुओं पर लागू नियमों में मादक पदार्थों या महिलाओं को कभी न छूने का सख्त निषेध शामिल है।

स्पष्ट है कि इस तरह की पाबंदियां आसान या रोमांचक जीवन का आधार नहीं बनेंगी। इस एकरसता को तोड़ने के लिए, हमारे सामने एक संन्यासी भिक्षु हैं जिन्होंने गर्व से

साठ से अधिक पुरानी कारों का प्रदर्शन किया—जिनमें से कई मर्सिडीज-बेंज थीं। इनमें से कुछ कारें दान में मिली थीं, जबकि अन्य उन्होंने अपने मंदिर के कोष से खरीदी थीं, जिसका उद्देश्य (हालांकि उनकी व्यावसायिक सूझबूझ संदिग्ध थी) उस चर्च के लाभ के लिए एक संग्रहालय खोलना था।
एक भिक्षु भी कैमरे में कैद हुआ था, जो विग पहने हुए था और तेज आवाज में कराओके गाने, शराब पीने और अन्य गतिविधियों में लिप्त होकर रात की जिंदगी का आनंद ले रहा था।
वर्जित कृत्य" (एर्लिच, 2000)।

92
थाई सरप्राइज 93

इसके अलावा, एक अत्यंत सम्मानित पूर्व बौद्ध भिक्षु भी थे, जिन पर धन के संभावित गबन का आरोप लगा था और जिन्होंने प्रधानमंत्री के आध्यात्मिक सलाहकार के पद से इस्तीफा दे दिया था। उन पर अपनी कुछ महिला अनुयायियों के साथ यौन संबंध रखने और विलासितापूर्ण जीवन शैली जीने का भी आरोप लगा था। "उनके मठ में अत्याधुनिक ध्वनि उपकरण, भव्य साज-सज्जा और विलासितापूर्ण कारें मौजूद थीं।" (प्लैनेटसेव, 2001)।
वहां उप-मठाधीश भी थे जिनकी मधुर आवाज रिकॉर्ड की गई थी।
महिलाओं के साथ फोन सेक्स में संलग्न होना (थॉम्पसन, 2000)।
वहाँ कुछ भिक्षुओं पर एम्फ़ैटेमिन बेचने और अन्य अपराधों का आरोप लगाया गया था।
देश की 700,000 वेश्याओं में से कुछ को काम पर रखना (इकोनॉमिस्ट, 2000)। "हर भिक्षु के लिए दो लड़कियां।"
एक चिवस रीगल पीने वाला और मर्सिडीज चलाने वाला मठाधीश था, जिसे कथित तौर पर... दो महिलाओं के साथ एक ही समय में दो रातों तक लगातार कपड़े उतारने के आरोप में पद से हटा दिया गया था। वह भी सेना के विशेष बलों के कर्नल होने का नाटक करते हुए—जो एक गंभीर अपराध है।
बाद में उस साधु के निजी आवास की तलाशी में अश्लील सामग्री, अंतर्वस्त्र और

कंडोम बरामद हुए। स्वाभाविक ही था, क्योंकि वह साधु स्थानीय कानून प्रवर्तन अधिकारियों के बीच लगभग हर रात मौज-मस्ती करने के लिए कुख्यात था।
इसके विपरीत, संयमी स्वभाव वाले चालीस वर्षीय बौद्ध भिक्षु भी थे, जिन्होंने अपने देश के लोगों की पीड़ाओं के विरोध में बैंकॉक में बर्मी दूतावास की सीढ़ियों पर आत्मदाह करने की योजना बनाई थी।
जब वह बोल रहा था, तब मुझे एक आश्चर्यजनक बात पता चली: हालाँकि वह
उसने अपने साथ हुए घोर अन्याय के विरोध में आत्महत्या करने की योजना बनाई थी।
कई वर्षों तक इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी गई, लेकिन यह असली कारण नहीं था।
उसके इस फैसले के लिए। असली वजह यह थी कि वह प्यार में पड़ गया था।
इस युवती से प्रेम। वह तब से भिक्षु के वस्त्रों में था।
चौदह वर्ष की आयु में उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया और उनतीस वर्षों तक अपना जीवन समर्पित किया।
आदेश का पालन करना था। उसके पास कोई अन्य कौशल नहीं था और वह कल्पना भी नहीं कर सकता था।
वह स्वयं विवाहित था, उसका परिवार था, फिर भी वह उससे प्यार करता था। वह नहीं करता था
उसे पता था कि क्या करना है, इसलिए उसने राजनीतिक कारणों से खुद को जला दिया।
यही सबसे अच्छा रास्ता प्रतीत हुआ (कॉर्नफील्ड, 1993)।
जलने की बात करें तो, एक थाई भिक्षु था जो शिशुओं को बेरहमी से भूनता था—शुक्र है, वे पहले से ही मृत शिशु थे—ताकि उनसे प्राप्त तेल का उपयोग जादुई अनुष्ठानों में किया जा सके। ऐसा "शिशु भूत" बनाने के इरादे से किया गया था।
दूसरों पर काला जादू का प्रयोग करते हुए (एर्लिच, 2000)। 94 गुरुओं का पर्दाफाश

इससे भी अधिक भयावह बात यह थी कि एक भिक्षु पर ग्यारह वर्षीय लड़की के साथ बलात्कार का आरोप लगाया गया था।
एक बौद्ध मठाधीश को एक महिला की कथित हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, जिसके अवशेष सेप्टिक टैंक में तैरते हुए पाए गए थे।
पड़ोसी के घर पर टैंक (एर्लिच, 2000)।

अंत में, एक भिक्षु को अपने मंदिर के श्मशान के नीचे एक ताबूत में शव के साथ यौन संबंध बनाते हुए पकड़ा गया।
थाई आश्चर्य।

अध्याय 14

लड़ाई का मैदान
टीजीएक
(साइंटोलॉजी)

साइंटोलॉजी ही पूर्ण स्वतंत्रता और मुक्ति का एकमात्र मार्ग है।
ताल शक्ति (एल. रॉन हबर्ड, [बरोज़, 1995] में)।
एस्ट के लिए प्रसिद्ध वर्नर एरहार्ड ने एल. रॉन हबर्ड को कहा था
“बीसवीं सदी के महानतम दार्शनिक” (कोरीडन और
हबर्ड, 1998)।
हबर्ड को जिन अनेक बातों के लिए जाना जाता था, उनमें से एक यह भी थी कि...
निम्नलिखित का उपयोग किया गया था:
सभी पुरुष मेरे दास होंगे! सभी स्त्रियाँ मेरे आकर्षण के आगे झुक जाएँगी! समस्त मानवजाति मेरे सामने गिड़गिड़ाएगी।
पैर और पता नहीं क्यों! (वेकफील्ड, 1991)।
धार्मिक कट्टरपंथियों के रूप में, साइंटोलॉजिस्ट उन सभी से कहीं आगे हैं जो अब तक इस राह पर चले हैं।
इससे पहले। उनमें केवल यह गहरी आस्था नहीं है कि उनका ही एकमात्र सही है।
तरीका। वे एक बोधगम्य समग्रता प्रस्तुत कर सकते हैं; एक सर्व-
मानव जाति को परेशान करने वाली कई समस्याओं का समाधान अपनाना-
मैनिटी (वोस्पर, 1997)।

96 गुरुओं का पर्दाफाश

[साइंटोलॉजी] आज अस्तित्व में मौजूद एकमात्र संस्था है जो ऐसा कर सकती है
या तो समस्त सभ्यता के विनाश को रोकें या एक नई बेहतर सभ्यता का आगमन करें
एक (एल. रॉन हबर्ड, [वालिस, 1976] में)।

विज्ञानशास्त्र (अपने पूर्ववर्ती, डायनेटिक्स की तरह) की स्थापना 1950 के दशक में पल्प/विज्ञान कथा लेखक लाफायेट रॉन हबर्ड द्वारा की गई थी, जिन्होंने (संदिग्ध रूप से) इस धर्म की उत्पत्ति को पवित्र हिंदू वेदों से जोड़ा और आगे दावा किया कि वे बुद्ध के पुनर्जन्म हैं।
हबर्ड को उन्नत प्रकाशनों में प्रस्तुत किया गया है।
छात्रों को, जैसा कि माना जाता है कि मैत्रेय बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी
गौतम बुद्ध द्वारा प्रकट (वालिस, 1976)।
हबर्ड के हजारों अनुयायियों में से अधिकांश उन्हें मानते थे
आइंस्टीन से भी अधिक प्रतिभाशाली, बुद्ध से भी अधिक प्रबुद्ध,
और ईसा मसीह की तरह ही चमत्कार करने में सक्षम (अटैक, 1990)।
एल. रॉन को उनके समर्पित शिष्यों द्वारा इसी प्रकार देखा जाता था।
वही एकमात्र व्यक्ति है जो "दुनिया को बचा सकता है" (मिलर, 1987)।
लेकिन दुनिया को किससे बचाना है?
स्पष्टतः, साइंटोलॉजी की उच्च-स्तरीय शिक्षाओं से पता चलता है कि सत्तर मिलियन वर्ष पहले, हमारी पृथ्वी—जिसे तब टीजीएक कहा जाता था—एक आकाशगंगा-व्यापी संघ का हिस्सा थी जिस पर ज़ेनू (या
ज़ेमू), एक दुष्ट टाइटन (जिसकी भूमिका पूरी तरह से विषमलैंगिक जॉन ट्रा द्वारा निभाई गई है-
(वोल्टा)। अधिक जनसंख्या की समस्या का सामना करते हुए, ज़ेनू ने एकत्र किया था-
उसने अपने साम्राज्य के निकम्मों को ऊपर उठा लिया—उनमें जेना भी शामिल थी।
एल्फमैन, नारकोनॉन प्रवक्ता कर्स्टी एली (देखें रॉस [2004बी];
पेनी [1993]), और दिवंगत सन्नी बोनो। इसके बाद उन्होंने उन व्यक्तियों को

स्थलीय ज्वालामुखियों में कैद कर दिया, और परमाणु बमों का उपयोग करके बाद वाले (और पहले वाले) को विस्फोटित कर दिया। फिर उन पूर्व अक्षुण्ण प्राणियों की आत्माओं ("थेतान") को एकत्र किया गया, जमे हुए अल्कोहल में कैद किया गया, और मनुष्यों में प्रत्यारोपित कर दिया गया।
और यही, जैसा कि टॉम क्रूज़ भी स्पष्ट रूप से देख और समझ सकते थे, सभी मानवीय पीड़ाओं का कारण है। हालाँकि, इस तरह के गहरे दर्द को, सौभाग्य से, साइंटोलॉजी की "ऑडिटिंग" प्रक्रियाओं के माध्यम से कम किया जा सकता है—जिनमें ई-मीटर नामक एक सरल झूठ पकड़ने वाले यंत्र की सहायता ली जाती है। वास्तव में, इस महंगी प्रक्रिया के माध्यम से, साइंटोलॉजी "जीवन में आघातों से उत्पन्न मानसिक घावों को भरने का वादा करती है।"
वर्तमान या भूतकाल" (रिचर्डसन, 1993)।
साइंटोलॉजी के कथित तौर पर दुनिया भर में फैले सात मिलियन अनुयायियों में जैज़ पियानोवादक चिक कोरिया, जैज़ गायक अल बैटलफील्ड टीजीएक 97 शामिल हैं।

जारो, पॉप स्टार बेक, प्रिसिला प्रेस्ली, और बार्ट सिम्पसन की आवाज़, नैन्सी कार्टराइट। (विडंबना यह है कि बार्ट की बहन का नाम लिसा मैरी है, जो प्रिसिला की बेटी के नाम पर रखा गया है; और असली लिसा मैरी खुद प्रिसिला के साथ साइंटोलॉजी में सक्रिय हैं।) इसके अलावा, ट्रैवोल्टा की पत्नी केली प्रेस्टन, क्रूज़ की पूर्व पत्नी मिमी रोजर्स, दिवंगत एल्डस हक्सले—जिन्हें खुद हबर्ड ने ऑडिट किया था—और रिचर्ड डी मिल (निर्देशक सेसिल के बेटे)। जेरी सीनफेल्ड, पैट्रिक स्वेज़ी
और ब्रैड पिट भी साइंटोलॉजी से "जुड़े रहे" हैं (रिचर्डसन,
1993); मिखाइल बैरीश्निकोव, वैन मॉरिसन, एमिलियो एस्टेवेज़, रॉक हडसन, डेमी मूर, कैंडिस बर्गेन, इसाक हेज़, मेन्सा सदस्य शेरोन स्टोन और ओ. जे. सिम्पसन के अभियोजक मार्सिया क्लार्क भी शामिल हैं। इसके अलावा, 1970 तक, यह दावा किया गया था कि टेनेसी विलियम्स, लियोनार्ड कोहेन, मामा कैस इलियट, जिम मॉरिसन "और संभवतः
"बीटल्स" साइंटोलॉजिस्ट थे (कूपर, 1971)। महान जैज़ पियानोवादक डेव ब्रुबेक का भी मानना था कि साइंटोलॉजी की प्रक्रिया ने उनके संगीत करियर में मदद की थी (इवांस, 1973)।

चार्ल्स मैनसन ने भी कथित तौर पर लगभग 150 हत्याएं की थीं।
जेल में रहते हुए घंटों ऑडिटिंग की (अटैक, 1990)। वहाँ, कथित तौर पर उन्होंने अपने सामूहिक अपराध से पहले "क्लियर" का प्रसिद्ध स्तर हासिल किया।
हत्या का चरण (क्रास्नर, 1993)।
जेल में बंद मैनसन को बाद में एक साथी कैदी, एक पूर्व हरे कृष्णा अनुयायी ने पेट्रोल डालकर आग लगा दी थी। वह खुद अपने गर्भपात कराने वाले पिता की हत्या के आरोप में दोषी ठहराया गया था। यह घटना मैनसन द्वारा जेल में उसके लगातार ताने मारने के बाद हुई थी।
मंत्रोच्चार और प्रार्थनाएँ (मस्टर, 1997)।
हाल के वर्षों में, डस्टिन हॉफमैन और गोल्डी हॉन दोनों ने जर्मनी के चांसलर को एक खुला पत्र लिखकर वहां साइंटोलॉजिस्टों के खिलाफ भेदभाव का विरोध किया और अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से इसकी निंदा की।
द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों के साथ किए गए व्यवहार के समान उनके साथ व्यवहार करना (बार्ट,
1998).
फिर भी, टाई पहनने वाले हबर्ड ने स्वयं किसी काल्पनिक प्रलय का सामना नहीं किया, बल्कि अपने ही नियमों का पालन किया।
विशेषाधिकार प्राप्त, किशोर उम्र की महिला "संदेशवाहकों" की कहानी। चीयरलीडर जैसी खूबसूरत गोरी लड़कियाँ, जो वृद्ध हबर्ड का ध्यान आकर्षित करने के लिए होड़ कर रही थीं, ने अपनी खुद की वर्दी तैयार की थी, जिसमें हॉट पैंट, हॉल्टर टॉप, बॉबीसॉक्स और प्लेटफॉर्म सैंडल शामिल थे। कहा जाता है कि उनके ईर्ष्यालु कर्तव्यों में हबर्ड के बाल धोना, उन्हें मालिश देना और...
उसे कपड़े पहनने और उतारने में मदद करना (मिलर, 1987)।
एक आदमी धर्म अपना सकता है।
फिर भी, एक संदेशवाहक का जीवन केवल मौज-मस्ती और एस्ट्रोजन-युक्त खेलों से भरा नहीं था:
98 गुरुओं का पर्दाफाश

[हबर्ड] एक बार एक संदेशवाहक पर गुस्सा हो गई... क्योंकि उसने हद से ज्यादा...

मैंने किसी काम से कुछ पैसे खर्च कर दिए, इसलिए उन्होंने सब कुछ ले लिया।
कोरीडन में दस दिनों के लिए टॉयलेट पेपर की आपूर्ति
हबर्ड, 1998)।
और एलआरएच की दूसरों की वित्तीय और गुदा संबंधी गतिविधियों में रुचि केवल उन किशोरियों तक सीमित नहीं थी जो उनकी धड़कनें तेज कर देती थीं:
समलैंगिकता गैरकानूनी है; हबर्ड ने जोर देकर कहा कि इमो-
समलैंगिकों के प्रति राष्ट्रीय लहजे का स्तर "गुप्त शत्रुता" है: वे
वे पीठ में छुरा घोंपने वाले हैं, उनमें से हर एक (अटैक, 1990)।
अन्य क्षेत्रों में समानता के प्रति "रॉन" की सहनशीलता भी कुछ खास अधिक नहीं रही होगी:
मुझे नहीं लगता कि लोकप्रिय उपायों... और लोकतंत्र के बीच कोई संबंध है।
मैंने उस आदमी के लिए सब कुछ किया है सिवाय उसे और अधिक कीचड़ में धकेलने के...
लोकतंत्र ने हमें मुद्रास्फीति और आयकर दिया है (कॉरीडन में)
और हबर्ड, 1998)।
ऊपर से इस प्रकार के अपमान के बावजूद, समर्पित सदस्यों का अपने मुक्ति के स्रोत के प्रति कथित दृष्टिकोण बिल्कुल वैसा ही है जैसा कोई उम्मीद कर सकता है:
साइंटोलॉजिस्ट मानते हैं कि उनका अस्तित्व आध्यात्मिक प्राणियों के रूप में है।
यह पूरी तरह से लोगों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने पर निर्भर करता है।
चर्च (कॉरीडन और हबर्ड, 1998)।
साइंटोलॉजी में यह अफवाह खूब फैली हुई थी कि एक व्यक्ति के साथ बाहर निकलने पर...
पूर्ण स्तर की ऑडिटिंग के परिणामस्वरूप बारह दिनों के भीतर मृत्यु हो सकती है
दिन (वेकफील्ड, 1996)।
पुराने समय में, हबर्ड द्वारा प्रसिद्ध रसायनज्ञ जैक पार्सन्स के साथ काले जादू में हाथ आजमाने से स्वयं को "बीस्ट 666" कहने वाले एलेस्टर क्रॉली ने टिप्पणी की थी:
ऐसा लगता है कि पार्सन्स और हबर्ड या कोई और इसका निर्माण कर रहा है।
एक चंद्र संतान। जब मैं इस मूर्खता के बारे में सोचता हूँ तो मैं काफी घबरा जाता हूँ।
इन बदमाशों का ओसी (कॉरीडन और हबर्ड, 1998 में)।

हालांकि, इन सबमें एक स्वागत योग्य संतुलन लाते हुए, "सु-
क्रिस्टोफर रीव ने (2002 में) साइंटोलॉजी के भीतर अपने अनुभवों का वर्णन किया, जिसमें उनकी लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने की उनकी व्यावहारिक पद्धति भी शामिल है:
बैटलफील्ड टीजीएक 99

साइंटोलॉजी और मेरे प्रशिक्षण के बारे में मेरा बढ़ता संदेह
एक अभिनेता ने कमान संभाली। आँखें बंद करके, मैंने धीरे-धीरे शुरुआत की।
किसी दुखद अतीत के अनुभव से जुड़ी घटनाओं का विवरण याद रखना
जो प्राचीन ग्रीस में घटित हुआ था...
मुझे पता चल गया था कि मेरे ऑडिटर मेरी बातों से बहुत प्रभावित हुए थे।
कहानी सुनाते हुए और अपने पेशेवर आचरण को बनाए रखने की पूरी कोशिश कर रही है।
या फिर, मुझे लगा कि वह एक गहरा संबंध बना रही थी।
जब मैं यूनानी थी तब अपने पिता की मृत्यु पर मुझे किशोरावस्था का अपराधबोध था।
पिछले जन्म में योद्धा और पिता के साथ मेरा रिश्ता
वर्तमान।
और यहीं पर एक साइंटोलॉजिस्ट के रूप में मेरा प्रशिक्षण समाप्त हुआ।
मेरी कहानी दरअसल एक घटना का थोड़ा संशोधित विवरण थी।
प्राचीन ग्रीक पौराणिक कथा... मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरा ऑडिटर इससे परिचित होगा।
ग्रीक पौराणिक कथाओं के साथ; मैं बस उसकी क्षमता पर भरोसा कर रहा था।
ई-मीटर की सहायता से, सच्चाई का पता लगाने के लिए। तथ्य यह है कि मैं
एक स्पष्ट झूठ बोलकर बच निकला, जिससे मेरी प्रतिष्ठा पूरी तरह से गिर गई।
प्रक्रिया पर विश्वास।
कुछ अन्य लोगों ने तो साइंटोलॉजी के बारे में और भी कम सकारात्मक मूल्यांकन किए हैं। दरअसल, कई साल पहले, 1965 में, साइंटोलॉजी पर ऑस्ट्रेलियाई जांच बोर्ड ने एक रिपोर्ट तैयार की थी जिसमें कहा गया था कि "साइंटोलॉजी बुराई है; इसकी तकनीकें बुरी हैं; इसका अभ्यास समुदाय के लिए चिकित्सकीय, नैतिक और

सामाजिक रूप से एक गंभीर खतरा है; और इसके अनुयायी..."
दुर्भाग्य से भ्रमित और अक्सर मानसिक रूप से बीमार" (मिलर, 1987 में)। उसी रिपोर्ट में रॉन द्वारा 1952 में लंदन में स्थापित हबर्ड एसोसिएशन ऑफ साइंटोलॉजिस्ट इंटरनेशनल की आलोचना करते हुए कहा गया कि यह कथित तौर पर "अयोग्य व्यक्तियों का दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है जो खतरनाक तकनीकों का अभ्यास करता है जो मानसिक स्वास्थ्य के नाम पर प्रचारित होती हैं।"
चिकित्सा" (मिलर में, 1987)। (साथी विज्ञान कथा लेखक इसहाक असी-
इससे पहले mov ने हबर्ड की डायनेटिक्स को "बकवास" कहकर खारिज कर दिया था।
[मिलर, 1987 में] "मन के विज्ञान" की समीक्षा मार्टिन गार्डनर ने अपनी [1957] पुस्तक "विज्ञान के नाम पर भ्रांतियाँ और भ्रांतियाँ" में भी नहीं की थी।
मई 1991 के एक कवर स्टोरी (बेहर, 1991) में, टाइम पत्रिका ने साइंटोलॉजी को कथित तौर पर "एक बेहद लाभदायक वैश्विक रैकेट" के रूप में वर्णित किया, जो माफिया की तरह सदस्यों और आलोचकों को डराकर जीवित रहता है।
निम्नलिखित पुस्तकों में साइंटोलॉजी के भीतर और उसके आसपास के जीवन की कथित प्रकृति के बारे में कई अतिरिक्त परेशान करने वाले विवरण दिए गए हैं:
• जॉन एटैक (1990), ए पीस ऑफ ब्लू स्काई 100 स्ट्रिपिंग द गुरुज़

• पॉलेट कूपर (1971), द स्कैंडल ऑफ साइंटोलॉजी। इसके अलावा
उनकी (1997) डायरी देखें। चर्च द्वारा अठारह बार मुकदमा दायर किए जाने के बाद, समझौता करने के लिए कूपर ने कथित तौर पर "वादा किया कि वह [पूर्व, स्कैंडल] पुस्तक को दोबारा प्रकाशित नहीं करेंगी और एक बयान पर हस्ताक्षर किए जिसमें कहा गया था कि इसमें बावन अंश 'भ्रामक' थे" (रुडिन और रुडिन, 1980)।
• रसेल मिलर (1987), बेयर-फेस्ड मसीहा
• रॉबर्ट कॉफ़मैन (1995), इनसाइड साइंटोलॉजी/डायनेटिक्स
• सिरिल वोस्पर (1997), द माइंड-बेंडर्स
• जॉर्ज माल्को (1970), साइंटोलॉजी: द नाउ रिलीजन। माल्को-
रिपोर्ट के अनुसार, को की पुस्तक को बाद में "उसके प्रकाशकों द्वारा वापस ले लिया गया था, जिन्होंने कानूनी समझौता भी किया था" (वॉलिस, 1976)।

• मोनिका पिग्नोटी (1989), माई नाइन लाइव्स इन साइंटोलॉजी
• बेंट कोरीडन और एल. रॉन हबर्ड, जूनियर (1998), एल. रॉन हब-
कवि: मसीहा या पागल?
• मार्जरी वेकफील्ड (1991), साइंटोलॉजी को समझना;
(1993), द रोड टू ज़ेनू; और उनकी (1996) आत्मकथा, टेस्टिमोनी
• बॉब पेनी (1993), साइंटोलॉजी में सामाजिक नियंत्रण
• अधिक जानकारी के लिए, www.factnet.org वेबसाइट देखें।
उपर्युक्त बेहर (1991) ने आगे आरोप लगाया:
हबर्ड की नीतियों में से एक यह थी कि सभी कथित शत्रु
“उचित शिकार” और “धोखाधड़ी, मुकदमा या झूठ का शिकार” होने के अधीन।
नष्ट हो गया।" जो लोग चर्च की आलोचना करते हैं—पत्रकार, वृत्तचित्रकार—
अभियोजक, वकील और यहां तक कि न्यायाधीश भी अक्सर खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं-
मुकदमेबाजी में घिरे, निजी जासूसों द्वारा पीछा किए जाने वाले, काल्पनिक आरोपों में फंसाए जाने वाले-
राष्ट्रीय अपराधों के लिए मारपीट की गई या जान से मारने की धमकी दी गई।
अन्य लोगों ने भी इसी तरह के दावे किए हैं:
चर्च ऑफ साइनटोलॉजी अपनी तत्परता के लिए नहीं जाना जाता है।
बिना किसी कानूनी कार्रवाई के, इसे आलोचना के रूप में लिया जाता है।
मुकदमेबाजी के मामले में इसका रिकॉर्ड निस्संदेह बेजोड़ है।
आधुनिक दुनिया (वालिस, 1976)।
हबर्ड ने मानो किसी जादू-टोने के श्राप का आह्वान करते हुए कहा है कि कोई भी-
साइंटोलॉजी के खिलाफ कार्रवाई करने की हिम्मत करने वाला कोई भी व्यक्ति - बैटलफील्ड टीजीएक 101 - निश्चित रूप से खतरे में है।

अपने आप को एक लाइलाज पागलपन की आशंका में डाल देना, जिसके बाद...
दर्दनाक मौत (वोस्पर, 1997)।
1968 में साइंटोलॉजी पर अपने पहले लेख के बाद, [पॉलेट] कू-
उन्हें जान से मारने की धमकियों और बदनामी भरे पत्रों की बाढ़ आ गई;

उसके फोन की जासूसी की गई; उसके खिलाफ मुकदमे दायर किए गए; प्रयास किए गए
उन्हें उसके अपार्टमेंट में जबरदस्ती घुसने के लिए मजबूर किया गया; और उसे फंसा दिया गया।
बम की धमकी के लिए (अटैक, 1990)।
लॉस एंजिल्स सुपीरियर कोर्ट के न्यायाधीश पॉल जी. ब्रेकेन्रिज ने 1980 के दशक के मध्य में समूह के बारे में अपने स्वयं के परेशान करने वाले विचारों का खुलासा किया:
[साइंटोलॉजी] संगठन स्पष्ट रूप से सिज़ोफ्रेनिक है और
संदेहवादी, और यह विचित्र संयोजन एक प्रतिबिंब प्रतीत होता है-
इसके संस्थापक का चित्रण। साक्ष्य एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करता है [अर्थात, हब-
कवि] जो लगभग एक विकृत झूठा रहा है जब
अब बात करते हैं उनके इतिहास, पृष्ठभूमि और उपलब्धियों की।
साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत लेखन और दस्तावेज़ भी उनके बारे में दर्शाते हैं।
अहंकार, लोभ, लालच, सत्ता की लालसा और प्रतिशोध की भावना
उन व्यक्तियों के प्रति आक्रामकता जिन्हें वह अनुचित समझता है।
वफादार या शत्रुतापूर्ण (मिलर में, 1987)।
न्यायमूर्ति लेटे की संगठन के बारे में राय, जैसा कि उन्होंने 1984 के लंदन उच्च न्यायालय के अपने फैसले में व्यक्त किया था, इससे बेहतर नहीं थी:
साइन्टोलॉजी अनैतिक होने के साथ-साथ सामाजिक रूप से भी घृणित है... यह
भ्रष्ट, कपटी और खतरनाक (अटैक में, 1990)।
इसी प्रकार कॉनवे और सीगलमैन (1982) के प्रकाशित दृष्टिकोण के लिए भी यही बात लागू होती है:
हमारे सर्वेक्षण में जवाब देने वालों के अनुसार... साइंटोल-
किसी भी [अल-] के अनुष्ठानों में से सबसे अधिक दुर्बल करने वाले अनुष्ठान हो सकते हैं।
अमेरिका में एक पौराणिक पंथ।
अड़तालीस समूहों के सर्वेक्षण के बाद, कॉनवे और सीगलमैन
रिपोर्ट में बताया गया कि पूर्व साइंटोलॉजिस्टों में इसकी दर सबसे अधिक थी।

हिंसक आवेग, मतिभ्रम, यौन दुष्क्रिया और
आत्महत्या की प्रवृत्ति। उन्होंने अनुमान लगाया कि इससे पूरी तरह ठीक होने में समय लगेगा।
साइंटोलॉजी में औसतन [लगभग] 12.5 वर्ष का समय लगता है (अटैक, 1992)।
हाल ही में, एक गलत मौत का मुकदमा दायर किया गया (और निर्धारित किया गया-
(2004 में पूर्व सदस्य लिसा मैकफर्सन के परिवार द्वारा चर्च ऑफ साइंटोलॉजी के खिलाफ अदालत के बाहर दायर किया गया मुकदमा)। विवरण के लिए, रॉस 102 स्ट्रिपिंग द गुरुज़ देखें।

(2004b) और www.lisamcpherson.org साइंटोलॉजी की गतिविधियों में भाग लेने के अन्य समर्पित अनुयायियों पर कथित नकारात्मक प्रभावों के लिए।
अनुयायी, पॉलेट कूपर की (1971) पुस्तक 'द स्कैंडल' का अध्याय 21 देखें।
साइंटोलॉजी के अध्याय 14 और कोरीडन और हबर्ड (1998) के अध्याय 14 में कूपर की अपनी कहानी का संदर्भ दिया गया है। साथ ही, साइंटोलॉजी द्वारा वकील माइकल फ्लिन के साथ कथित दुर्व्यवहार के लिए उसी पुस्तक के अध्याय 22 का भी संदर्भ दिया गया है—जिन्होंने तब से अक्सर परमहंस योगानंद के आत्म-संकल्पना का प्रतिनिधित्व किया है।
रियलाइजेशन फेलोशिप अपनी कानूनी चिंताओं में (रसेल, 2001)।
हबर्ड की मृत्यु 80 के दशक के मध्य में हुई थी। अंत तक, वे काफी दुखी व्यक्ति बन चुके थे, हावर्ड ह्यूजेस की तरह दुखी जीवन जी रहे थे—कहा जाता है कि वे कई बार यह मानते थे कि उनके रसोइये उन्हें जहर देने की कोशिश कर रहे हैं; और वे मांग करते थे कि उनके गंदे कपड़ों को पहनने से पहले तेरह बार, तेरह अलग-अलग बाल्टियों में साफ झरने के पानी से धोया जाए।
मनोचिकित्सक फ्रैंक गेरबोड, जिन्होंने साइंटोलॉजी का अभ्यास किया
कई वर्षों से, ऐसा लगता है कि हबर्ड सिज़ोफ्रेनिक नहीं थे, लेकिन
बल्कि "पागलपन की प्रवृत्ति वाला उन्मादी"....हालांकि, जर्मन-
बोडे का सुझाव है कि सबसे अच्छा वर्णन सामान्य निदान है।
“पागल” (अटैक, 1990)।
एफबीआई ने हबर्ड को गंभीरता से नहीं लिया, एक समय तो ऐसा भी आया जब...

उनकी फाइल में "मानसिक प्रतीत होता है" का उल्लेख करते हुए (वेकफील्ड, 1991).
फिर भी, बेंट कोरीडन और एल. रॉन हबर्ड, जूनियर (1998) ने भी समान रूप से दावा किया है:
चर्च या उसके संस्थापक की आलोचना करना पागलपन है।
इतना ही आसान....
किसी भी असंतुष्ट व्यक्ति को "मनोविकारग्रस्त" करार देना आम बात है।
साइंटोलॉजी। यह हबर्ड की लिखित नीतियों द्वारा अनिवार्य है।
लेकिन अच्छी सलाह तो सभी जगहों में से एक से आती है - कई बार पुनर्वासित हो चुके अभिनेता और पोर्नोग्राफी के शौकीन चार्ली शीन से, जो केली प्रेस्टन के पूर्व प्रेमी हैं। (साथ ही, एक महत्वाकांक्षी कवि भी। "सौभाग्य से, इनमें से अधिकांश कविताएँ स्मैक के नशे में लिखी गई थीं, वरना ये सब धार्मिक खोखली बातें होतीं।") क्योंकि, जब उनसे साइंटोलॉजिस्टों द्वारा उन्हें अपने उद्देश्य के लिए भर्ती करने के कथित प्रयासों के बारे में पूछा गया, तो शीन - जो निश्चित रूप से हबर्ड के उभरते "संदेशवाहकों" के हॉट पैंट और हॉल्टर टॉप की सराहना करते - ने कथित तौर पर जवाब दिया:
मैं इस तरह की मूर्खता में शामिल नहीं हूं।

अध्याय पंद्रह

वर्नर का
अनिश्चितता
सिद्धांत
(est/FORUM/LANDMARK TRAINING)

वर्नेर एरहार्ड का जन्म जॉन पॉल रोसेनबर्ग के रूप में हुआ था। उन्होंने एक हवाई यात्रा के दौरान अपना नया नाम रखा, जो एक इन-फ्लाइट पत्रिका में पढ़े गए दो नामों का संयोजन था: क्वांटम भौतिक विज्ञानी वर्नेर हाइजेनबर्ग - हाइजेनबर्ग के अनिश्चितता

सिद्धांत के जनक - और पश्चिम जर्मनी के तत्कालीन अर्थशास्त्र मंत्री लुडविग एरहार्ड। उस व्यक्ति के चरित्र के बारे में, दिवंगत बकमिनस्टर फुलर ने न्यूयॉर्क टाइम्स में (फरवरी 1979 में) खुलकर लिखा था:

मुझे लाखों लोग सुनते हैं। और मैं कहता हूँ
वर्नर एरहार्ड ईमानदार है। वह अविश्वसनीय साबित हो सकता है, और
अगर वह ऐसा करता है तो मैं भी बता दूंगा।

यह समर्थन उसी भविष्यवक्ता से आया था, जिसने कुछ ही साल पहले महर्षि महेश योगी का पूरे दिल से समर्थन किया था। उस समय, फुलर और एरहार्ड अपने बीच हुई सार्वजनिक "वार्ता" से होने वाली आय को आपस में बाँट रहे थे।

एर्हार्ड की प्रशिक्षण प्रक्रिया की जड़ें कई अन्य प्रसिद्ध संस्थानों में निहित थीं।
चिकित्सा पद्धतियाँ और अनुशासन। वास्तव में, मार्क ब्रेवर (1975) ने साइकोलॉजी टुडे के लिए एक लेख में, एस्ट ("एरहार्ड सेमिनार प्रशिक्षण") की मूल शिक्षाओं में ज़ेन, साइंटोलॉजी (जिसका एर्हार्ड ने कभी अनुसरण किया था), डेल कार्नेगी और गेस्टाल्ट थेरेपी के अंश पाए।
इस प्रशिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसका अनुप्रयोग है।
दीक्षा और मानसिक स्थिति निर्धारण में शास्त्रीय तकनीकों का प्रयोग।
पावलोव के योग्य विचार।
फिर भी, कथित तौर पर "पूर्वी" चीजों की अपेक्षाकृत कम सांद्रता ने पूर्व प्रयुक्त कार विक्रेता, एरहार्ड को ब्रह्मांड में अपनी उच्च स्थिति पर विचार करने से नहीं रोका:

मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं यीशु मसीह का पुनर्जन्म नहीं हूँ?

एर्हार्ड ने एक बार एक दोस्त के बारे में सोचा (प्रेसमैन, 1993)।
अन्य समयों में, जिम जोन्स ने स्वयं से यही प्रश्न पूछा और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वह ठीक उसी पुनर्जन्म का प्रतीक है।
(लेटन, 1998)—साथ ही हाल ही में व्लादिमीर इलिच लेनिन भी रहे हैं। रॉक स्टार बनने की चाह रखने वाले और कथित बाल यौन शोषणकर्ता डेविड को-रेश—जो टेक्सास के वाको से थे, यानी ब्रांच डेविडियन कुख्याति से—का भी यही मानना था।

स्वयं को यीशु मसीह कहना (इंग्लैंड और मैककॉर्मिक, 1993); जैसा कि
हेवन गेट के मार्शल एप्पलव्हाइट (ललिच, 2004)।
हालांकि, कोई भी हमेशा उच्च लक्ष्य रख सकता है। इस प्रकार, 1977 की शरद ऋतु में, जैसा कि स्टीवन प्रेसमैन ने अपनी पुस्तक (1993) आउटरेजियस बिट्रेयल में बताया है, मोंटेरे में समुद्र तट पर आयोजित एस्ट सेमिनार नेताओं की एक बैठक के दौरान, एक प्रतिभागी खड़ा हो गया।
“कमरे में जो सवाल है वो कोई नहीं पूछ रहा,” उस आदमी ने कहा।
एर्हार्ड से गंभीरतापूर्वक पूछा, "क्या तुम मसीहा हो?"
जैसे ही एरहार्ड ने बाहर क्यूरी की ओर देखा, कमरा शांत हो गया।
उनके कुछ सबसे समर्पित शिष्यों के भावभंगिमाओं को देखकर। कुछ समय बाद
कुछ ही क्षणों में उसने उत्तर दिया, "नहीं, मैंने ही उसे भेजा है [अर्थात् ईश्वर ने]।"
मार्शल एप्पलव्हाइट की आध्यात्मिक साथी, बोनी लू नेटल्स भी स्वयं को ईश्वर पिता का अवतार मानती थीं।
(लालिच, 2004)।
पूर्व में विश्वकोश बेचने वाले "भगवान" - एर्हार्ड - और उनके सेमिनार प्रशिक्षकों के बीच ऊपर बताई गई भावनाओं को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रशिक्षुओं की कथित भयावह कहानियाँ जैसे कि निम्नलिखित सामने आएँ:
वर्नर का अनिश्चितता सिद्धांत 105

"हमारे क्लिनिक में मैंने जिन अधिकांश लोगों को देखा है—और वे आते हैं..."
काफी बड़ी संख्या में प्रशिक्षण के बाद—सफल रहे हैं-
प्रतिक्रियाएँ मध्यम से लेकर भयावह तक थीं।
न्यूयॉर्क शहर के लिंकन इंस्टीट्यूट के कार्यकारी निदेशक
मनोचिकित्सा के लिए 1978 में रिपोर्ट किया गया। "वे भ्रमित हैं और
असंतुलित, और वही पैटर्न—उत्साह, अवसाद, भावनाओं
सर्वशक्तिमानता के बाद असहायता की भावनाएँ—पुनः-
बार-बार पीटता रहा”....
मार्च 1977 में [अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकियाट्री]
दो लेखों में से पहला लेख प्रकाशित किया गया... जिसमें पाँच रोगियों का वर्णन

किया गया था।
जिन रोगियों में [कथित तौर पर] मनोविकार के लक्षण विकसित हो गए थे,
इसमें व्यामोह, अनियंत्रित मनोदशा में बदलाव और भ्रम शामिल हैं।
ईएसटी प्रशिक्षण लेने के बाद (प्रेसमैन, 1993)।
डेविड शाई (2004) ने अतिरिक्त प्रासंगिक प्रकाशित चिंताओं को सूचीबद्ध किया है।
एर्हार्ड ने स्वयं कथित तौर पर "ईस्ट प्रशिक्षण से किसी भी हानिकारक प्रभाव से इनकार किया है" (प्रेसमैन, 1993)।
एर्हार्ड के चार दिवसीय एस्ट सेमिनार के शुरुआती स्नातकों में जॉन "विंडी कंसास व्हीट फील्ड" डेनवर शामिल थे, जो गायन करियर छोड़कर एस्ट प्रशिक्षक बनना चाहते थे। इनके अलावा, डायना रॉस, अंतरिक्ष यात्री बज़ एल्ड्रिन और योको ओनो भी शामिल थे। हाल ही में, टेड डैनसन, वैलेरी हार्पर, रॉय "जॉज़" शाइडर और हॉलीवुड के कई अन्य सितारों ने एर्हार्ड के पाठ्यक्रम में भाग लिया है।
बहरहाल, यह तर्क देने के लिए कि किसी भी "पवित्र व्यक्ति" द्वारा अपने अनुयायियों के प्रति किया गया कठोर अनुशासन भावी पीढ़ियों के शिष्यों के साथ दुर्व्यवहार का एक चक्र शुरू कर देता है, हमारे पास निम्नलिखित आरोप है:
एर्हार्ड के सबसे करीबी लोगों ने अक्सर उनके खुद के व्यवहार को देखा था।
गुस्से भरी गालियों और चीख-पुकार के दौरों में शामिल होता था, और कभी-कभी नकल करने में भी खुद को स्वतंत्र महसूस करता था।
जब वे प्रभारी थे तब उनका अपना व्यवहार (प्रेसमैन,
1993).
एर्हार्ड के घरेलू जीवन में भी दुखद मोड़ आए होंगे। क्योंकि, वर्नर की बेटी डेबोरा ने एक बार आरोप लगाया था कि उसने
उसने अपनी एक बड़ी बेटी को यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया...
होटल के उस कमरे में उनके साथ यौन संबंध के दौरान, जिसे वे साझा कर रहे थे।
उनकी अक्सर होने वाली शहर से बाहर की यात्राओं में से एक (प्रेसमैन, 1993)।*
"जानकारी के लिए धन्यवाद।"
106 गुरुओं का पर्दाफाश

एर्हार्ड ने दुर्व्यवहार के सभी आरोपों से इनकार किया है। जेन सेल्फ की पुस्तक

(1992) "60 मिनट्स एंड द असासिनेशन ऑफ वर्नर एर्हार्ड" में मीडिया द्वारा एर्हार्ड की छवि को धूमिल करने वाले आरोपों के खिलाफ उनका जोरदार बचाव किया गया है। इसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि उनके पतन की साजिश चर्च ऑफ साइंटोलॉजी के भीतर रची गई थी। उसी पुस्तक में, एर्हार्ड की बेटियों के हवाले से कहा गया है कि उन्होंने पहले उन पर लगाए गए अनुचित व्यवहार के आरोपों को वापस ले लिया है, क्योंकि उन्होंने कथित तौर पर दबाव में आकर ये आरोप लगाए थे।
डॉ. सेल्फ एर्हार्ड के सेमिनारों के सबसे कमज़ोर प्रतिभागियों पर कथित नकारात्मक प्रभावों पर ध्यान नहीं देतीं और न ही, मेरी राय में, एर्हार्ड के खुद को मसीहा समझने के कथित दावे का ठोस खंडन करती हैं। (हालांकि, हैरानी की बात यह है कि वह और वर्नर के मित्र मार्क कामिन दोनों ही एर्हार्ड के सार्वजनिक पतन को उनके "सूली पर चढ़ाए जाने" के रूप में संदर्भित करते हैं।) प्रेसमैन (1993) के विपरीत, वह हंगर प्रोजेक्ट से जुड़े गंभीर, कथित पर्दे के पीछे के मुद्दों की गहराई में नहीं जातीं। (यह प्रोजेक्ट एर्हार्ड का 2000 तक भुखमरी को मिटाने का असफल प्रयास था।) इसके बजाय, वह इस विषय पर केवल "जनसंपर्क" वाली बात दोहराती हैं।

अध्याय सोलह

तिलचट्टा योग
(YOGI BHAJAN)

योगी भजन लॉस एंजिल्स में स्थित गैर-लाभकारी संस्था "स्वस्थ, खुशहाल, पवित्र संगठन" 3HO के सिख संस्थापक थे।
पंजाब में जन्मे, उन्होंने नई दिल्ली में एक सीमा शुल्क एजेंट के रूप में काम किया, और फिर 1968 में उनतालीस वर्ष की आयु में अपनी पत्नी के साथ उत्तरी अमेरिका चले गए, जहाँ उन्होंने कुंडलिनी और श्वेत तांत्रिक योग का अध्यापन शुरू किया।
श्वेत तंत्र का प्रयोग "मनुष्य को शुद्ध करने और उसका उत्थान करने" के लिए किया जाता है, जबकि काले तंत्र का प्रयोग "अन्य लोगों पर मानसिक नियंत्रण" के लिए या लाल तंत्र का प्रयोग "यौन ऊर्जा और इंद्रियों" के लिए या चमत्कार प्रदर्शित करने के

लिए किया जाता है।
क्लेस (एस. खालसा, 1996)।
योगी भजन ने कहा है कि कुंडलिनी योग ही सर्वधर्म योग होगा।
कुंभ युग की शुरुआत हुई थी और अगले पांच वर्षों तक इसका पालन किया जाएगा।
हजार वर्ष (सिंह, 1998ए में)।
गुरु तेरथ सिंह खालसा, जो [भजन के] वकील हैं और
प्रवक्ता का कहना है कि भजन "पोप के समकक्ष" हैं।
(टाइम, 1977)।
योगी भजन आध्यात्मिक गुरुओं में अद्वितीय हैं क्योंकि वे
वह इस युग के महान तांत्रिक भी हैं। इसका अर्थ यह है कि वह
विश्व में श्वेत तांत्रिक योग के एकमात्र जीवित गुरु,

क्योंकि किसी भी समय पृथ्वी पर केवल एक ही हो सकता है।
वह एक विश्व शिक्षक हैं, ईश्वर द्वारा भेजा गया एक अत्यंत विशिष्ट माध्यम हैं।
लाखों सोए हुए लोगों को जगाने के लिए नियुक्त और अभिषेक किया है-
इस ग्रह पर आत्माओं का अस्तित्व (एस. खालसा, 1996)।
हालांकि, इस विचार पर कि भजन वास्तव में किसी मान्यता प्राप्त वंश के माध्यम से "इस युग के महान तांत्रिक" हैं, उनके कुछ आलोचकों ने सवाल उठाए हैं।
बहरहाल, मैडोना, रोसन्ना आर्केट, मेलिसा एथरिज, सिंडी क्रॉफर्ड, कर्टनी लव और डेविड डुचोवनी सभी कथित तौर पर योगी योगी की शिष्या गुरमुख कौर खालसा से प्रभावित थे।
भजन के समर्पित अनुयायी (रॉस, 2002)। 1980 तक, भजन ने विश्वभर में लगभग ढाई लाख अनुयायियों का दावा किया था, जिनमें उनके आश्रमों में लगभग 2500 अनुयायी शामिल थे। बताया जाता है कि स्वयं योगी लॉस एंजिल्स में एक आलीशान घर में रहते थे।
दिवंगत (अक्टूबर 2004 में निधन) भजन की सिख धर्म की शैली को वास्तव में रूढ़िवादी सिख समुदाय ने अस्वीकार कर दिया है, लेकिन ऐसा लगता है कि इसका

कारण स्वयं शिक्षाओं या प्रथाओं के बारे में किसी चिंता के बजाय इसमें (हिंदू) कुंडलिनी योग के तत्वों को शामिल करना है।

* * *

एक गुरु के रूप में, एक योगी के रूप में, योगी भजन हमेशा महिलाओं को इस दृष्टि से देखते हैं—

और मनुष्य—ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण से। वह कभी नहीं भूलता कि हम

मूलतः हम आत्माएं हैं, अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं और अपने सबक सीख रहे हैं।

इन दो अलग-अलग रूपों में पुत्र...

मेरा मानना है कि जब तक स्त्री से जन्मे लोग पुनः उत्पन्न नहीं होते...

अगर कोई महिला का सम्मान किया गया, तो धरती पर शांति नहीं होगी।" [भजन ने कहा है]

कहा] (एस. खालसा, 1996)।

हालांकि, भजन के समुदाय में महिलाओं को दिया जाने वाला "सम्मान" का विशेष स्वरूप किसी प्रबुद्ध आदर्श से कुछ हद तक कम ही रहा होगा, जैसा कि उनकी एक महिला अनुयायी ने बताया:

जब मैं 70 के दशक में फिलाडेल्फिया के आश्रम में रहने आया,

मुझे 'फैसिनेटिंग वुमन' नाम की एक छोटी गुलाबी किताब दी गई।

हुड.... [यह] शादी के बारे में एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है।

एक महिला के दृष्टिकोण से लिखी गई यह कहानी एक मॉर्मन द्वारा लिखी गई है।

नारीवाद का दार्शनिक रूप से विपरीत, पूरी तरह से प्रतिबद्ध

यह मान्यता कि महिलाओं की आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त होती है

निःसंदेह सेवा और मनुष्यों के प्रति आज्ञापालन के माध्यम से...

अधिकांश मामलों में 3HO सदस्य अब इस तरह के चरम यौन संबंध नहीं बनाते हैं।

भूमिकाएँ। मुझे पुरुष भूमिकाएँ देखे हुए बहुत समय हो गया है।

आश्रम का मुखिया आराम कर रहा है जबकि एक प्यारी युवा लड़की

चीजें उसे पैरों की मालिश से संतुष्ट करती हैं (के. खालसा, 1990)।

बेशक, इसका तात्पर्य यह है कि एक समय ऐसा भी था जब आश्रमों में रहने वाली

आकर्षक युवतियां वहां के उच्च पदस्थ पुरुषों के पैरों की मालिश किया करती थीं।
“मनुष्य से मनुष्य” शीर्षक से व्याख्यानों की एक श्रृंखला में, योगी भजन
वह पुरुषों को महिलाओं के स्वभाव के बारे में समझाती है: "एक दिन वह बहुत
उज्ज्वल और आकर्षक, और कुछ दिनों बाद वह पूरी तरह से बदल जाती है।
मूक और संवादहीन। इसे 'सामान्य' कहा जाता है।
महिला का मिजाज। और क्योंकि महिलाओं का मिजाज इतना बदलता रहता है, इसलिए
महिलाओं को निरंतर सामाजिक सुरक्षा और निरंतर नेतृत्व की आवश्यकता होती है।
जहाज... जब आप नेता नहीं होते, तो वह संतुष्ट नहीं होती।
(पुनः, 1980)।
हालांकि, "पंद्रहवीं शताब्दी" (अर्थात, जब गुरु नानक द्वारा सिख धर्म की स्थापना की गई थी) में "महिलाओं" के प्रति ऐसे दृष्टिकोणों का हमेशा एक कथित नकारात्मक पहलू भी होता था:
भजन पर बार-बार महिलाओं के प्रति आकर्षित होने का आरोप लगता रहा है।
कॉलीन हॉस्किन्स, जिन्होंने उनके न्यू मैक्सिको स्थित कार्यालय में सात महीने काम किया था-
आईको निवास पर, ऐसी खबरें हैं कि वहां पुरुष शायद ही कभी दिखाई देते हैं। वह है
वह कहती हैं कि उनकी सेवा चौदह महिलाओं के एक समूह द्वारा की जाती है।
उनमें से कुछ लोग उनके स्नान में शामिल होते हैं, उन्हें सामूहिक मालिश देते हैं,
और बारी-बारी से उसके कमरे में रात बिताते हैं जबकि उसकी पत्नी
कहीं और सोता है (टाइम, 1977)।
जब सुश्री हॉस्किन्स निराश होकर 3HO समूह छोड़ने का फैसला किया, तो कथित तौर पर भजन ने उनसे कहा कि "वह
परमाणु प्रलय के लिए जिम्मेदार होंगे” (नमन, 1980)।
संभवतः ऐसी विपत्तियों की आशंका में भजन का आयोजन किया जाता है।
सुझाव दिया है (सिंह, 1998 में):
हमारे पास एक ऐसी जगह होनी चाहिए, जो पाँच हजार लोगों को समायोजित कर सके।
बच्चे, पाँच हज़ार महिलाएँ और एक हज़ार पुरुष।

बेशक, अगर हमने डॉ. स्ट्रेंजेलोव से एक बात सीखी है, तो वह यह है कि ऐसी महिलाओं का चयन उनकी "प्रजनन क्षमता" के आधार पर किया जाना चाहिए...

* * *

110 गुरुओं का पर्दाफाश

3HO के भीतर और अन्य जगहों पर गुरु के प्रति उचित दृष्टिकोण को स्वयं भजन ने समझाया था:

सलाह न्यायसंगत होनी चाहिए, आपका मन न्यायसंगत होना चाहिए।

और आपकी सलाह और उस सलाह के अनुसार आपकी कार्रवाई सही होनी चाहिए।

अगर कोई गुरु कहता है, "सुबह उठो और भगवान की स्तुति करो,"

करेगा क्या?

उत्तर: हाँ।

प्रश्न: यदि गुरु कहे, “सुबह उठो और चोरी करो,”

करेगा क्या?

उत्तर: हाँ।

प्रश्न: क्या गुरु की कही हर बात सही है?

उत्तर: अन्यथा वह गुरु नहीं है।

प्रश्न: क्या चोरी करना जायज है?

उत्तर: शायद वह परीक्षण कर रहा हो, कौन जाने। गुरु क्या होता है?

गुरु आपका ही एक अज्ञात अनंत स्वरूप है, अन्यथा कोई और मनुष्य...

मनुष्य आपका गुरु नहीं हो सकता (भजन, 1977)।

ध्यान दें कि यह उद्धरण संदर्भ से अलग नहीं लिया गया है: यह योगी भजन की उक्त पुस्तक के "संबंध" अध्याय में दिया गया एक पूर्ण अंश है।

इस तरह के रवैये का कथित परिणाम पूरी तरह से आश्चर्यजनक नहीं है:

योगी अपने योग शिष्यों द्वारा चलाए जा रहे व्यवसायों से पैसा कमाता है।

सिद्धांतों का उल्लंघन करने के बावजूद, उस पर "हमला, मारपीट, धोखाधड़ी और छल" का मुकदमा चलाया गया।

उन्होंने अदालत के बाहर समझौता करने का फैसला किया।

भजन के शीर्ष नेताओं और योग प्रेमियों में से एक थे

हथियारों और मारिजुआना की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया और फिर सजा सुनाई गई-
जेल जाने के लिए तनावग्रस्त (रॉस, 2003सी)।
और भाग्य में इस तरह के उतार-चढ़ाव के प्रति भजन की कथित प्रतिक्रिया क्या थी?
आलोचकों ने यीशु मसीह को भी नहीं बख्शा, उन्होंने बुद्ध को भी नहीं बख्शा।
धा, और वे मुझे नहीं छोड़ते (नमन में, 1980)।
* * *
न्यू मैक्सिको के सांता क्रूज़ में 1974 में आयोजित 3HO शिक्षक सम्मेलन में योगी भजन ने कथित तौर पर भविष्यवाणी की थी:
तिलचट्टा योग 111

अगले दस वर्षों में अस्पतालों में लोहे की खिड़कियाँ होंगी और
लोग बाहर कूदने की कोशिश करेंगे। बहुत सारे लोग बीमार पड़ेंगे।
दुख होगा। पृथ्वी पर दुख और त्रासदी होगी।
तुम्हारे शव इन सड़कों पर पड़े रहेंगे, तुम्हारे बच्चे
वे अनाथ हो जाएंगे, और कोई उन्हें लात नहीं मारेगा, बल्कि लोग
उन्हें जिंदा खा जाएगा! भयानक पागलपन होगा।
यह वह समय है जिसका हमें सामना करना पड़ेगा (सिंह, 1998 में)।
और उसी ऋषि द्वारा 1977 में (सिंह, 2000 में रिपोर्ट किया गया):
अब आप कहते हैं कि मंगल ग्रह पर जीवन नहीं है? मंगल ग्रह पर तो आबादी है...
जनसंख्या बहुत अधिक है। उत्पादन और कामुकता की दर इतनी अधिक है कि
भारी, और जीव—वे इतनी तेजी से बढ़ते हैं कि उन्हें
जाओ और बाकी सभी ग्रहों पर युद्ध छेड़ दो।
बृहस्पति ग्रह पर प्राणी रहते हैं। वहाँ एक पदानुक्रम है।
सूक्ष्म शरीर में ऊर्जा और हमारी ऊर्जा का परस्पर आदान-प्रदान होता है।
और यह बेहद प्रभावी है।
* * *
लंबे समय तक मैंने उन इक्का-दुक्का अजीब लोगों के बारे में ज्यादा चिंता नहीं की।
जिन्होंने 3HO छोड़ दिया। जब वे 3HO में थे तब भी मुझे वे ज़्यादा पसंद नहीं थे।

3HO इसलिए मुझे यह उचित लगा कि, त्याग करने के बाद
सच तो यह है कि वे सभी दलाल, वेश्या और ड्रग डीलर बन गए थे।
अफवाहों के अनुसार (के. खालसा, 1990)।
लेकिन फिर, भजन को खुद भी इन सब बातों का अंदाजा था:
योगी भजन ने हम सभी को, जो शिक्षक बनने वाले थे, चेतावनी दी थी।
कि, “आपकी परीक्षा तीन क्षेत्रों में ली जाएगी: पैसा, यौन संबंध या शक्ति।”
—संभवत: उन सभी में।" यह एक बड़ी जिम्मेदारी है और
कुंडलिनी योग सिखाने का सौभाग्य प्राप्त है। ऐसा कहा जाता है कि यदि कोई शिक्षक यदि वह अपने ऊपर रखे गए पवित्र विश्वास का उल्लंघन करता है, तो उसका पुनर्जन्म एक अन्य व्यक्ति के रूप में होगा।
तिलचट्टा! (एस. खालसा, 1996)।
कुंडलिनी योग। तांत्रिक सेक्स योग। दलाल योग। वेश्या योग ("3-HOs")□ ड्रग डीलर योग। बंदूक योग। परमाणु प्रलय योग।
तिलचट्टा योग।

अध्याय सत्रह

एक जंगली और पागल
बुद्धिमान व्यक्ति
(CHÖGYAM TRUNGPA)

1939 में जन्मे चोग्याम ट्रुंगपा, "पागल ज्ञान" के उन पहले गुरुओं में से एक हैं जिनके उत्तरी अमेरिकी आध्यात्मिकता पर पड़ने वाले प्रभाव पर हम विचार करेंगे।
मेरे गर्भधारण की रात मेरी माँ को एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना का सामना करना पड़ा।
सपने में उसने देखा कि एक प्राणी पल भर में उसके शरीर में प्रवेश कर गया था।
प्रकाश; उस वर्ष पड़ोस में फूल खिले थे।
हालांकि अभी भी सर्दी का मौसम था, निवासियों के आश्चर्य के लिए-

टेंट...
मेरा जन्म मवेशियों के बाड़े में हुआ था; जन्म आसानी से हुआ था।
उस दिन गाँव में इंद्रधनुष दिखाई दिया, एक बाल्टी
जिसमें पानी होना चाहिए था, वह अप्रत्याशित रूप से भरा हुआ पाया गया।
दूध, जबकि मेरी माँ के कई रिश्तेदारों ने सपना देखा कि एक
लामा उनके तंबुओं का दौरा कर रहे थे (ट्रुंगपा, 1977)।
ट्रुंगपा तुलकु के ग्यारहवें अवतार के रूप में, दूध से पोषित इस ऋषि को बचपन से ही पूर्वी तिब्बत के सुरमांग मठों के सर्वोच्च मठाधीश के रूप में पाला-पोसा गया था।

ट्रुंगपा की परंपरा में, तुलकु वह व्यक्ति होता है जो पुनर्जन्म लेता है।
पिछले जन्मों की यादों और मूल्यों को बरकरार रखते हुए" (बटरफील्ड,
1994)। चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उसी ट्रुंगपा तुल-कु (ट्रुंगपा कुंगा-ग्याल्टजेन) के एक पूर्व, चौथे अवतार के बारे में यह दावा किया गया है:
उन्हें मैत्रेय बोधि का अवतार माना जाता था।
सत्व, जो अगले विश्व चक्र के बुद्ध बनने के लिए नियत है,
डोम्भीपा, जो एक महान बौद्ध सिद्ध (विशेषज्ञ) थे, और मी-
लारेपा (ट्रुंगपा, 1977)।
मि-लारेपा और पद्मसंभव के वंश के उत्तराधिकारी के रूप में तिब्बत में सिंहासन पर आसीन होने के बाद, ट्रुंगपा ने चीनी कम्युनिस्ट सत्ता पर कब्ज़े से बचने के लिए 1959 में देश छोड़कर भारत की ओर रुख किया। वहाँ, दलाई लामा की नियुक्ति पर, उन्होंने आध्यात्मिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।
डलहौज़ी में यंग लामास होम स्कूल, 1963 तक (शंभला,
2003).
भारत से चोग्याम इंग्लैंड गए और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में तुलनात्मक धर्म और मनोविज्ञान का अध्ययन किया। (ट्रुंगपा के एक बाद के छात्र, अल संतोली, "सुझाव देते हैं कि ग्यारहवें ट्रुंगपा को ऑक्सफोर्ड में दाखिला दिलाने में सीआईए की भूमिका

हो सकती है" [क्लार्क, 1980])। उन्होंने अपने एक अन्य तुलकु प्रतिद्वंद्वी (अकोंग) के साथ टकराव करके काफी हलचल मचाई, जो ट्रुंगपा की तरह ही पश्चिम में अपने वंश का नेतृत्व करने की योजना बना रहा था।
स्थानीय सहायकों के एक छोटे समूह के आश्चर्य के लिए और
उन शक्तियों के लिए घोर शर्मिंदगी जिन्होंने उन्हें इंग्लैंड भेजा था।
भूमि पर, दोनों आदरणीय तुलकुओं के बीच तीखी बहस छिड़ गई।
उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपमानजनक टिप्पणियां कीं और एक-दूसरे को अपशब्द कहे। शुरुआती दौर में
उनकी पुस्तक, बोर्न इन तिब्बत, ट्रुंगपा के संस्करण में, अकोंग पार-
एनॉइड और स्कीमिंग (लेहनर्ट, 1998)।
बहरहाल, ट्रुंगपा और अकोंग ने स्कॉटलैंड में पश्चिमी गोलार्ध का पहला तिब्बती बौद्ध ध्यान केंद्र स्थापित किया, जहां 1971 में अमेरिकी कवि रॉबर्ट ब्लाई ने दौरा किया था।
ट्रुंगपा को याद है, “यह एक आगे बढ़ने वाला कदम था। फिर भी, यह
यह पूरी तरह से संतोषजनक नहीं था, क्योंकि गतिविधि का पैमाना
छोटा था, और जो लोग भाग लेने आए थे वे भी...
बात को थोड़ा सा नज़रअंदाज़ करना” (फील्ड्स, 1992)।
114 गुरुओं का पर्दाफाश

बाद में, जब पुलिस ने वहां नशीली दवाओं के दुरुपयोग के आरोपों की जांच शुरू की, तो वही केंद्र पुलिस के लिए महत्वपूर्ण हो गया। ट्रुंगपा, जो खुद बात को घुमा-फिराकर कहने के आदी नहीं थे, एक अस्तबल में छिपकर उस गिरफ्तारी से बच गए।
बौद्ध भिक्षुणी तेनज़िन पाल्मो (मैकेन्ज़ी, 1999 में) ने 1962 में इंग्लैंड में युवा चोग्याम के साथ अपनी पहली मुलाकात के अनुभवों का वर्णन किया। दोपहर की चाय और खीरे के सैंडविच के बीच, जब उन्होंने देखा कि चोग्याम के हाथ उनकी स्कर्ट के नीचे जा रहे हैं, तो ट्रुंगपा को उनके पवित्र पैरों पर एक नुकीली एड़ी का प्रहार मिला। उस पहली मुलाकात/छेड़छाड़ के बाद, बार-बार उन्हें बहकाने के उनके प्रयासों में, उन्होंने पाल्मो के प्रति अपना आकर्षण दिखाने का दावा भी किया। यह सब इस तथ्य के बावजूद था कि चोग्याम तेरह वर्ष की आयु से ही महिलाओं के साथ संबंध रखते थे

और उनका एक बेटा भी था।
1969 में चोग्याम एक दुखद कार दुर्घटना का शिकार हुए, जिसके परिणामस्वरूप उनके शरीर का बायां हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। कार एक मजाक की दुकान में जा घुसी थी (सचमुच); गाड़ी ट्रुंगपा चला रहे थे।
उस समय वह नशे में था (दास, 1997), यहाँ तक कि बेहोश हो गया था।
पहिया (ट्रुंगपा, 1977)।
ध्यान दें कि ट्रुंगपा बीस वर्ष की आयु तक तिब्बत से भारत नहीं लौटे थे, और अपनी शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाने के लिए उन्होंने चार वर्ष बाद ही प्रस्थान किया। इस प्रकार, उनके ग्यारह वर्षों तक महिलाओं के साथ संबंध रखना तिब्बती और उत्तरी भारतीय परंपराओं के अनुरूप था, जो भिक्षुओं आदि के लिए स्वीकार्य व्यवहार से संबंधित थीं। वास्तव में, ऊपर उल्लिखित पुत्र के अनुसार, तिब्बत में उनकी माता और ट्रुंगपा दोनों ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया हुआ था।
उनके मिलन का समय (डाइकेमा, 2003)। जब उन्हें सर्वोच्च मठाधीश के रूप में सिंहासनारोहित किया गया था, तब उन्हें सौंपे गए तीन सौ भिक्षुओं में से।
सुरमांग मठों के बारे में, स्वयं ट्रुंगपा (1977) ने टिप्पणी की थी कि
एक सौ सत्तर भिक्षु (पूर्णतः दीक्षित) थे।
भिक्षुओं सहित शेष श्रमणेर (नवसिखिए) होते हैं और
उपसाका के युवा छात्र जिन्होंने पहले ही प्रतिज्ञा ले ली थी
ब्रह्मचर्य।
स्पष्टतः, ट्रुंगपा (सर्वास्तिवादी) की परंपरा ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञाओं के बिना "मठवासी" परंपरा नहीं थी, जैसा कि ज़ेन के मामले में है।
इसके अलावा, स्वयं ट्रुंगपा ने इंग्लैंड में अपनी कार दुर्घटना के कुछ समय बाद तक "गृहस्थ शिक्षक" के रूप में काम करने के लिए औपचारिक रूप से अपने मठवासी व्रतों का त्याग नहीं किया था। यह इस बात का एक और स्पष्ट उदाहरण है कि पारंपरिक कृषि प्रधान समाज अब और अधिक कठोर सिद्धांतों को नहीं अपनाता है।

किसी भी "दिव्य ऋषि" के व्यवहार पर उसके उत्तर-आधुनिक, पश्चिमी समकक्ष की तुलना में अधिक प्रतिबंध होते हैं।
यूरोप और अमेरिका में ट्रंगपा ने भले ही खूब मौज-मस्ती की हो, लेकिन तिब्बत और

भारत में भी वे बिना किसी रोक-टोक के कई नियम तोड़ रहे थे। वास्तव में, यह तर्क दिया जा सकता है कि आनुपातिक रूप से, उन्होंने तिब्बत और भारत में उतने ही सामाजिक और सांस्कृतिक नियम तोड़े, जितनी कम निंदा के साथ उन्होंने बाद में अमेरिका में तोड़े। (तिब्बती बौद्ध समाज में आज भी हिंसक नियम तोड़ने वालों को भी किस तरह की मामूली सजा दी जाती है, इसके स्पष्ट उदाहरणों के लिए लेहनेर्ट की [1998] पुस्तक 'रोग्स इन रोब्स' देखें।) इसके अलावा, ट्रंगपा
(1977) ने चौदह वर्ष की आयु तक किसी के गुरु के रूप में कार्य करना शुरू नहीं किया था, लेकिन तेरह वर्ष की आयु से ही उनके स्त्रियों के साथ संबंध थे। इस प्रकार, उन्होंने "ईश्वर-समान" गुरु का दर्जा ग्रहण करने से पहले और बाद में, कृषि प्रधान 1950 के दशक के तिब्बत में, ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया।
1970 में, नवविवाहित ट्रुंगपा और उनकी सोलह वर्षीय पत्नी, डायना, जो घुड़सवारी की शौकीन थीं, ने संयुक्त राज्य अमेरिका में अपना स्थायी निवास स्थापित किया। वे जल्द ही कोलोराडो विश्वविद्यालय में पढ़ाने लगे और समय के साथ उनके लगभग 1500 शिष्य हो गए। इनमें लोक गायिका जोनी मिशेल भी शामिल थीं।
उन्होंने तीन बार तुलकु का दौरा किया, और जिनका गीत "शरण का"
"रोड्स" (1976 के एल्बम हेजिरा से) में गुरु के बारे में एक प्रारंभिक छंद है। समकालीन ट्रांसपर्सनल मनोवैज्ञानिक और लेखक-
जर्नल ऑफ ट्रांसपर्सनल साइकोलॉजी के संपादकीय मंडल के सदस्य थोर जॉन वेलवुड भी ट्रुंग-पा के लंबे समय से अनुयायी हैं।
1974 में, चोग्याम ने बोल्डर, कोलोराडो में मान्यता प्राप्त नारोपा संस्थान की स्थापना की—जो अमेरिका का पहला तांत्रिक विश्वविद्यालय था। नारोपा में प्रशिक्षकों और अतिथियों में मनोचिकित्सक आर. डी. लैंग, ग्रेगरी बेटसन, राम दास और एलन गिन्सबर्ग शामिल थे—जिनके नाम पर बाद में विश्वविद्यालय पुस्तकालय का नाम रखा गया। (गिन्सबर्ग ने पहले स्वामी मुक्तानंद के साथ समय बिताया था [माइल्स, 1989])। इसके अलावा, मैरिएन फेथफुल, अवांगार्द संगीतकार जॉन केज और विलियम "नेकेड लंच" बरोज़ भी थे, जो पहले एल. रॉन हबर्ड की 'साइंटोलॉजी' से मोहित हुए (1974, 1995) और फिर उससे विमुख हो गए। साथ ही, अत्यंत उबाऊ तिब्बती विद्वान और अनुवादक हर्बर्ट वी. गुएन्थर भी थे, जिनके लेखन, यहां तक कि नीरस अकादमिक मानकों के अनुसार भी, एक प्राकृतिक शामक के रूप में कार्य कर

सकते थे।
भगवान दास (1997) ने 70 के दशक में नारोपा में तीन महीने तक भारतीय संगीत पढ़ाते समय अपने अधिक जीवंत अनुभवों का वर्णन किया:
116 गुरुओं का पर्दाफाश

[ट्रुंगपा] के इर्द-गिर्द पार्टी की ऊर्जा बहुत प्रभावशाली थी। वास्तव में,
नारोपा मूल रूप से यही था: एक भव्य और धमाकेदार पार्टी।
चौबीसों घंटे...
मैं बहुत ही अजीबोगरीब स्थिति में था और पूरी तरह खोया हुआ महसूस कर रहा था।
एक दिन,...
तीन अलग-अलग महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाने के बाद, मैं बाहर नहीं निकल सका।
बिस्तर से उठ गई। मैं सदमे में थी। यह सब मेरे लिए असहनीय था।
जैक कॉर्नफील्ड ने वहां व्याख्यान देने के अपने दिनों का कम "दर्दनाक" वर्णन प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें 1973 में एक कॉकटेल पार्टी में ट्रुंगपा से मिलने के बाद पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया था।
हम सभी के मन में यह रोमांटिक, आदर्शवादी भावना थी कि हम
एक चेतना आंदोलन की शुरुआत जो वास्तव में
दुनिया को बदलने जा रहा है (श्वार्ट्ज में, 1996)।
विश्व-परिवर्तनकारी प्रयास के नेतृत्वकर्ता के रूप में, 1974 में परम पावन कर्मपा लामा द्वारा ट्रुंगपा को वज्रचार्य, या "सर्वोच्च स्तर के आध्यात्मिक गुरु" के रूप में पुष्ट किया गया था।
बाद में पश्चिम की उनकी पहली यात्रा (ट्रुंगपा, 1977)।
* * *
“अजीबोगरीब ज्ञान” का अभ्यास स्वयं निम्नलिखित सिद्धांत पर आधारित है:
यदि कोई बोधिसत्व पूर्णतः निस्वार्थ है, पूर्णतः खुला है
यदि व्यक्ति पारदर्शिता के अनुरूप कार्य करेगा, तो उसमें यह प्रवृत्ति नहीं होगी।
नियमों का पालन करना असंभव है; वह बस पुरानी आदतों में ढल जाएगा।
बोधिसत्व के लिए अन्य लोगों को नष्ट करना या हानि पहुँचाना संभव है,

क्योंकि वह अलौकिक उदारता का प्रतीक है। उसने अपने द्वार खोल दिए हैं।
वह स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर देता है और इसलिए इस मामले में कोई भेदभाव नहीं करता।
और वह। वह बस उसी के अनुसार कार्य करता है जो... [उसका]
उसका दिमाग इतना सटीक और इतना सही है कि वह कभी गलती नहीं करता।
[इटैलिक्स जोड़े गए]। उसे कभी अप्रत्याशित समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता।
कभी भी विनाशकारी तरीके से अराजकता पैदा नहीं करता (ट्रुंगपा, 1973)।
एक बार जब आपको दीक्षा प्राप्त हो जाए और आप गुरु-शिष्य संबंध स्थापित कर लें
समय के बंधन में, आपने स्वयं को गुरु के प्रति समर्पित कर दिया है।
गुरु के रूप में, और उसके बाद से, गुरु कोई गलती नहीं कर सकता, कोई गलती नहीं कर सकता।
चाहे कुछ भी हो। इसका तात्पर्य यह है कि यदि आप हर तरह से गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं।
इन चीजों में आप भी कोई गलती नहीं कर सकते। यही ओसेल का आधार है।
टेंडज़िन (ट्रुंगपा के भावी उत्तराधिकारी) की शिक्षा यह थी कि "यदि
आप अपना समय बनाए रखें, आप गलती नहीं कर सकते। वह थे
अपनी ही अहंकारी प्रवृत्ति में न बहते हुए, उन्होंने यह बात कही, एक जंगली और सनकी बुद्धिमान व्यक्ति 117

लेकिन मुख्यधारा के वज्र के सबसे आवश्यक विचार को दोहराते हुए-
याना [अर्थात, तांत्रिक बौद्ध धर्म] (बटरफील्ड, 1994)।
प्रश्न [छात्र]: यदि आपको किसी हिंसक कृत्य की आवश्यकता महसूस हो तो क्या होगा?
क्या इसका अंतिम उद्देश्य किसी व्यक्ति का भला करना है?
ए [ट्रुंगपा]: तुम बस इसे कर दो (ट्रुंगपा, 1973)।
ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का, सकारात्मक और बेबाक होने का एक उत्तम उदाहरण।
योगी गुण, वास्तव में ज्ञान का संचार था।
तिलोपा से [उनके शिष्य] नारोपा को। तिलोपा ने अपना सैन हटा दिया।

दाल और नारोपा के चेहरे पर थप्पड़ मारा (ट्रुंगपा, 1973)।
हम थ्री स्टूजेस से भी इतना कुछ सीख सकते थे, बेशक।
प्रश्न [छात्र]: क्या हमारे लिए एक आध्यात्मिक मित्र [जैसे, एक गुरु] होना आवश्यक है?
क्या हम खुद को उजागर कर सकते हैं, या क्या हम बस खुद को खोल सकते हैं?
जीवन की परिस्थितियों के लिए?
ए [ट्रुंगपा]: मुझे लगता है कि आपको इसे करते हुए देखने के लिए किसी की जरूरत है।
क्योंकि तब यह आपको अधिक वास्तविक लगेगा। इसे भूलना आसान है।
किसी ऐसे कमरे में कपड़े पहनना जहाँ आसपास कोई और न हो, लेकिन हमें इसमें कठिनाई होती है-
एक पंथ जिसमें लोगों से भरे कमरे में खुद को नग्न करना शामिल है (ट्रुंगपा, 1973).
जी हां, कपड़े उतारने का सिलसिला खूब चला। उदाहरण के लिए, 1975 की शरद ऋतु में एक वार्षिक संगोष्ठी के दौरान हैलोवीन कॉस्ट्यूम पार्टी में:
एक महिला को नग्न कर दिया गया, जाहिर तौर पर ट्रुंगपा के मजाक के कारण।
आदेश दिया, और उसके अंगरक्षकों द्वारा हवा में उठा लिया गया, और
यह बात हंसी-मजाक में कही गई थी, हालांकि महिला ने कहा कि
ऐसा नहीं सोचता (मरीन, 1995)।
शांतिवादी कवि विलियम मर्विन और उनकी पत्नी डाना भी उसी तीन महीने के आश्रम में शामिल थे, लेकिन उन्होंने भीड़ की मानसिकता में खुद को अलग-थलग रखने की गलती की, जिसे उनकी ओर से आपत्तिजनक "अहंकार" के रूप में देखा गया। परिणामस्वरूप, उनकी इस कथित अलगाव की भावना को समुदाय के अन्य सदस्यों ने पूरी गर्मी भर नापसंद किया... और बाद में स्वयं ट्रुंगपा ने इसे "प्रतिरोध" करार दिया।
इस प्रकार, मर्विन और उसका साथी उपर्युक्त हैलोवीन पार्टी में संक्षिप्त रूप से उपस्थित हुए, केवल एक-दूसरे के साथ नाचे और फिर अपने कमरे में वापस चले गए।

हालांकि, ट्रुंगपा ने एक दूत के माध्यम से जोर देकर कहा कि वे वापस लौटकर दल में शामिल हो जाएं। इसके जवाब में, विलियम और उसकी पत्नी ने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया, बत्तियाँ बुझा दीं... और जल्द ही खुद को क्रोधित, नशे में धुत आध्यात्मिक साधकों के एक समूह के निशाने पर पाया, जिन्होंने उनकी टेलीफोन लाइन काट दी, दरवाजा तोड़ दिया (ट्रुंगपा के आदेश पर) और एक खिड़की तोड़ दी (माइल्स, 1989)।

घबराए हुए, लेकिन यह जानते हुए कि टूटे हुए कांच की शक्ति कलम से कहीं अधिक होती है, कवि ने हमलावर शिष्यों में से कई पर बोतलें फोड़कर अपना बचाव किया, जिससे उसका एक मित्र घायल हो गया। फिर, हताश होकर और संघर्ष छोड़ते हुए, उसे और उसकी पत्नी को कमरे से बाहर घसीट कर ले जाया गया।

[दाना] ने गुहार लगाई कि कोई पुलिस को बुलाए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
गलियारे में मौजूद एक महिला ने उसका अपमान किया और
उस आदमी ने उसके चेहरे पर शराब फेंक दी (शुमाकर, 1992)।

और फिर, ज्ञानी गुरु के चरणों में, जब ट्रुंगपा ने "मर्विन से कहा कि उसने सुना है कि कवि बहुत परेशानी खड़ी कर रहा है":

[मर्विन:] मैंने उसे याद दिलाया कि हमने कभी आज्ञा मानने का वादा नहीं किया था।
उसने कहा, "अरे, लेकिन आपने आने के लिए कहा था" (माइल्स, 1989)।
इसके बाद बहस छिड़ गई, जिसके दौरान ट्रुंगपा ने मेर का अपमान किया।
विन की एशियाई पत्नी ने नस्लवादी टिप्पणियाँ कीं [जिसके बदले में]
उसने उसे "नाज़ी" कहा और साके का गिलास फेंक दिया।
कवि का चेहरा (फ़्यूरस्टीन, 1992)।

उस उच्च ज्ञान के शानदार प्रदर्शन के बाद, ट्रुंगपा ने अपने गुंडों से दंपति को जबरन निर्वस्त्र करवा दिया - दाना और कुछ साहसी दर्शकों में से एक के विरोध के बावजूद, जिसे उसके प्रयासों के लिए ट्रुंगपा ने खुद चेहरे पर घूंसा मारा और "हराम का बच्चा" कहा।

“गार्ड मुझे घसीटकर ले गए और ज़मीन पर गिरा दिया,” [दाना]
घटना के अपने विवरण में उन्होंने लिखा... “मैंने संघर्ष किया और पुकारा...
मेरे दोस्तों, उन पुरुषों और महिलाओं के चेहरे जो मैंने भीड़ में देखे,
पुलिस को बुलाओ। किसी ने नहीं बुलाया... [एक भक्त] मुझे निर्वस्त्र कर रहा था।

जबकि दूसरे मुझे पकड़े हुए थे। ट्रुंगपा उसे मुक्के मार रहा था।
सिर, उसे जल्दी करने के लिए कह रहा था। मेरे बाकी कपड़े
उन्हें फाड़ दिया गया था।
“देखा?” ट्रुंगपा ने कहा। “यह इतना बुरा भी नहीं है, है ना?” मर्विन और
डाना नग्न अवस्था में खड़ी थी, एक दूसरे को पकड़े हुए, डाना सिसक रही थी (माइल्स,
1989).
एक बेबाक और अनोखा ज्ञानी व्यक्ति 119

अंत में, अन्य लोगों ने स्वेच्छा से कपड़े उतार दिए और ट्रुंगपा, जाहिरा तौर पर संतुष्ट होकर, बोले "चलो नाचते हैं" (मरीन, 1995)। "और उन्होंने नाचना शुरू कर दिया।" और बच्चों, इसी को "प्रामाणिक तिब्बती बौद्ध धर्म" कहते हैं।
अपने माता-पिता को पता न चलने दें: जल्द ही वे आपको सोने से पहले प्रार्थना भी नहीं करने देंगे, इस डर से कि यह आपको गलत रास्ते पर ले जा सकता है।
उपरोक्त अपमान से उपजे विवाद को गंभीरतापूर्वक "महान नारोपा कविता युद्ध" के नाम से जाना जाने लगा। वास्तव में, टॉम क्लार्क (1980) की एक बेहद महत्वपूर्ण (हालांकि दुर्भाग्य से अब उपलब्ध नहीं) पुस्तक में भी इसी शीर्षक का उल्लेख है। यदि आप यह धारणा दूर करना चाहते हैं कि ट्रुंगपा एक "सत्ता-लोभी पूर्व सम्राट" और शराबी मूर्ख के अलावा कुछ और थे, तो यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। (दिलचस्प बात यह है कि 70 के दशक के अंत में नारोपा छात्र समाचार पत्र द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला कि उनके कविता विद्यालय के छब्बीस छात्रों में से नौ छात्र ट्रुंगपा को या तो "पूरी तरह से धोखेबाज" या लगभग वैसा ही मानते थे।)
अपने पत्रकारिता संबंधी प्रयासों के लिए, क्लार्क को "बहुत सारे फोन कॉल आए जिनमें फोन काट दिया गया", संभवतः यह ट्रुंगपा के वफादार अनुयायियों द्वारा डराने-धमकाने की रणनीति के रूप में किया गया था।
और अविश्वसनीय रूप से, ऊपर बताए गए दुर्व्यवहार को सहने के बाद भी, मर्विन और डाना ने ट्रुंगपा के बाद के वज्रयान व्याख्यानों के लिए सेमिनरी में ही रहने का विकल्प चुना।
बहरहाल, मर्विन घटना के काफी समय बाद भी, चोग्याम द्वारा अपने "सैमों" में होने

वाली गतिविधियों का स्वयं का (1977) वर्णन, उनकी वास्तविकताओं की तुलना में अनुमानतः फीका पड़ गया।
मैंने तीन महीने के वार्षिक वज्रधातु सेमिनरी की शुरुआत की।
परिपक्व छात्रों के लिए गहन अभ्यास और अध्ययन का केंद्र।
इन मदरसों में से पहला, जिसमें अस्सी छात्र शामिल थे, ने
स्थान... 1973 की शरद ऋतु में। पूरे दिन बैठने की अवधि।
नियमित रूप से ध्यान और अध्ययन कार्यक्रम का बारी-बारी से पालन किया जाता था।
बौद्ध शिक्षा के तीन यानों के माध्यम से प्रगति करना,
Hinayana, Mahayana and Vajrayana.
हालाँकि, "परिपक्व, व्यवस्थित प्रगति" शब्द सदमे से ग्रस्त दास या अनैच्छिक रूप से निर्वस्त्र किए गए मर्विन और उसकी पत्नी द्वारा पहले व्यक्त किए गए भाव को पूरी तरह से व्यक्त नहीं करता है।
तो फिर वज्रयान शिक्षाओं के संदर्भ में चोग्याम की "पाठ्येतर" गतिविधियों को कैसे समझा जाए? 120 गुरुओं का शुद्धिकरण

ट्रंगपा से जुड़ा कुख्यात मामला... हर तरह से पेश किया गया
उनके अनुयायियों द्वारा दी गई उच्च-स्तरीय व्याख्याओं में से किसी को भी वह समझ नहीं आया
सही उत्तर: ट्रुंगपा ने एक घोर, अक्षम्य और
पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण गलती, बस इतना ही (विल्बर, 1983)।
हालांकि, ट्रुंगपा का स्वयं का ज़ोर हमेशा यही रहता था कि वे और उनके जैसे प्रबुद्ध लोग "कभी गलती नहीं करते।" (ऊपर दिया गया स्पष्ट उद्धरण 1973 का है—विल्बर के असफल और पूरी तरह से विफल स्पष्टीकरण से पूरे एक दशक पहले का।) बल्कि, मर्विन "घटना" के अगले दिन, ट्रुंगपा ने रिट्रीट में उपस्थित सभी लोगों को एक खुला पत्र लिखकर पिछली रात के अपने व्यवहार को अपने "शिक्षण" का हिस्सा बताकर स्पष्ट किया। उन्होंने कोई माफी नहीं मांगी और निश्चित रूप से उन्होंने खुद को किसी भी तरह की "गलती" करने वाला नहीं माना (मरीन, 1995)। यहां तक कि 70 के दशक के अंत में भी, जब एलन गिन्सबर्ग ने ट्रुंगपा से पूछा, "क्या यह एक गलती थी?

उन्होंने कहा, 'नहीं'" (क्लार्क, 1980 में)। गिन्सबर्ग ने स्वयं भी कहा, "ट्रुंगपा ने शायद अविवेक की हो, लेकिन उन्होंने जिस तरह से व्यवहार किया, उसमें वे गलत नहीं थे" (शुमाकर, 1992)। और वास्तव में, कोई भी शिष्य जो ऐसे गुरु की अचूकता पर सवाल उठाता है, वह फिर से अपनी ही बेवफाई का प्रदर्शन कर रहा होगा। ऐसे में किसी भी आज्ञाकारी अनुयायी के लिए एकमात्र "विकल्प" स्पष्ट रूप से यही है कि वह उन गतिविधियों का कोई "उच्च स्पष्टीकरण" खोजे।

“मैं गलत था,” ट्रुंगपा ने शायद कहा होगा। या, “वह गलत था।”

गलत,” उनके शिष्यों ने शायद कहा होगा। लेकिन वे ऐसा नहीं कह सकते।

ऐसी बातें। इससे मिथक में बहुत ज्यादा दखलअंदाजी होगी।

ट्रुंगपा के अलौकिक ज्ञानोदय] उन्होंने चुना है

विश्वास....

मुझे हाल ही में हुई एक बातचीत याद आ रही है।

नारोपा के ग्रीष्मकालीन शैक्षणिक कार्यक्रम के निदेशक.... [जब]

बातचीत के दौरान, मैंने उनसे पूछा कि क्या ट्रुंगपा

गलती हो सकती है, उन्होंने जवाब दिया: "आप जानते हैं, एक छात्र गलती कर सकता है।"

उसे विश्वास है कि उसका स्वामी कोई गलती नहीं कर सकता। कभी-कभी

ट्रुंगपा शायद कुछ ऐसा कर दे जो मुझे समझ न आए। लेकिन मुझे करना ही होगा।

उनका मानना है कि वह जो कुछ भी करते हैं वह हमेशा सर्वोत्तम होता है” (मरीन, 1995)।

1978 में, भावुक एलन गिन्सबर्ग को इस सुझाव का सामना करना पड़ा कि "मर्विन घटना" में ट्रुंगपा के अनुयायियों की आज्ञाकारिता की तुलना जॉनस्टाउन सामूहिक आत्महत्याओं में भाग लेने वालों की आज्ञाकारिता से की जा सकती है। तब उन्होंने अपना ही तीखा और पूरी तरह से तर्कहीन विश्लेषण प्रस्तुत किया:

उस दृश्य के बीच में, [डाना के लिए] "पुलिस को बुलाओ" चिल्लाना

क्या आपको एहसास है कि यह कितना भद्दा था?

ईस्ट का अनावरण हो रहा है, और वह कह रही है, "पुलिस को बुलाओ!" मेरा मतलब

है,
धत् तेरे की! धिक्कार है उस बकवास पर! उन्हें नंगा करो, दरवाजा तोड़ दो!
कुछ भी—प्रतीकात्मक रूप से (क्लार्क में, 1980)।
हाँ। "प्रतीकात्मक रूप से।"
इसके अलावा, विल्बर के इस संकेत के संबंध में कि गुरु के कार्य एक अलग "गलती" थे: जब 1979 में ट्रुंगपा के समुदाय की एक पूर्व निवासी से पूछा गया कि क्या "मर्विन घटना" एक विशिष्ट घटना थी, या एक विलक्षण घटना, तो उसने जवाब दिया (क्लार्क में, 1980):
यह एक आम घटना है, यह कोई अलग-थलग उदाहरण नहीं है। हर बार
जहां तक मुझे पता है, सेमिनरी में एक टकराव हुआ था।
हिंसा।
किसी भी मामले में, चोग्याम बनाम मेरविन जैसी कार्रवाइयों को केवल "गलतियाँ" मानना, निश्चित रूप से उन कथित पूर्व नियोजित तरीकों की व्याख्या नहीं कर सकता है जिनके द्वारा ट्रुंगपा के समुदाय के भीतर शिष्यों को नियंत्रण में रखा जाता था।
हमें चेतावनी दी गई थी... कि हम अपने अभ्यास के बारे में बात न करें।
हमने कसम खाई, “अगर मैंने कभी भी इस बारे में बात की तो मैं तुरंत मुरझाकर सड़ जाऊंगी।”
इन शिक्षाओं को उन लोगों के साथ साझा न करें जिन्हें दीक्षा प्राप्त नहीं है।
उन्हें एक योग्य शिक्षक द्वारा प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।" मानो यह काफी नहीं था,
ट्रुंगपा ने हमें बताया कि अगर हमने कभी वज्रयान छोड़ने की कोशिश की,
हमें असहनीय, सूक्ष्म, निरंतर पीड़ा सहनी पड़ेगी, और
विपत्तियाँ हमें प्रलय की तरह घेर लेंगी...
ट्रुंगपा के करीबी लोगों में शामिल होने के लिए, आपको एक
उसने कसम खाई कि वह अपने कुछ कामों का कभी खुलासा नहीं करेगा और न ही उन पर कभी चर्चा करेगा।
यह व्यक्तिगत गोपनीयता गुरुओं में आम है, खासकर
वज्रयान बौद्ध धर्म। यह निष्क्रियता वाले परिवारों में भी आम है।
शराबियों और यौन शोषण करने वालों की पारिवारिक व्यवस्था। यह आंतरिक
गुप्त मंडली की गोपनीयता एक लगभग दुर्गम बाधा खड़ी कर देती है।

स्वस्थ संशयवादी मानसिकता...
मौन व्रत का अर्थ है कि आप उसके पास नहीं जा सकते।
जब तक आप स्वयं की धारणा को त्याग नहीं देते...
ज्ञानोदय और आपने खुद को उसके प्रति समर्पित कर दिया (बटरफील्ड,
1994).
गुरु के प्रति निष्ठा के महत्व पर पारंपरिक वज्रयान शिक्षाएं भी उतनी ही स्पष्ट हैं:
122 गुरुओं का पर्दाफाश

तांत्रिक समाया तोड़ना [अर्थात अपने गुरु को छोड़ना] अधिक गंभीर है।
अन्य प्रतिज्ञाओं को तोड़ने से भी अधिक हानिकारक। यह किसी ऊँची जगह से गिरने जैसा है।
हवाई जहाज की तुलना घोड़े से गिरने से की गई (तुलकु थोंडुप)।
([पंचेन और वांगयी, 1996] में)।
कई ग्रंथों में, गुरु से संबंध तोड़ने के परिणामों का वर्णन मिलता है।
इन्हें विस्तृत शब्दों में बताया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि एक बार
गुरु को छोड़ने पर शिष्य की आध्यात्मिक प्रगति "पूर्ण विराम पर पहुँच जाती है।"
"वीणा का अंत" क्योंकि "वह फिर कभी किसी आध्यात्मिक व्यक्ति से नहीं मिलता"
स्वामी," और वह "निचले स्तर पर अंतहीन भटकने" के अधीन है।
"धर्मक्षेत्रों में।" गुरु के प्रति अनादर के मामले में, ऐसा कहा जाता है कि
उन ग्रंथों में कहा गया है कि यदि शिष्य अपने गुरु का तिरस्कार करने लगे, तो वह
अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करता है और फिर अनुभव करता है-
हिंसक मौत का कारण बनता है" (कैंपबेल, 1996, [धर-] से उद्धृत)
gyey, 1974]).
शिष्य पर इस तरह की पाबंदियां गुरु के हाथों में बहुत अधिक शक्ति प्रदान करती हैं -
ऐसी शक्ति जिसका प्रयोग करने और उसे संरक्षित करने में ट्रुंगपा, अपने से पहले
और बाद के अनगिनत अन्य लोगों की तरह, जरा भी संकोच नहीं करते थे।
[ट्रुंगपा] को वज्र के नाम से जाने जाने वाले अंगरक्षकों द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती थी।
गार्ड, जो नीले ब्लेज़र पहनता था और विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करता था-

जिसमें हाइकू रचना और फूलों की सजावट शामिल थी।
एक बार, एक छात्र गार्ड की सतर्कता का परीक्षण करने के लिए, ट्रुंगपा ने
उसने सीढ़ियों से छलांग लगा दी, इस उम्मीद में कि उसे पकड़ लिया जाएगा।
गार्ड लापरवाह था, और ट्रुंगपा सिर के बल गिर पड़ा।
अस्पताल में संक्षिप्त दौरे की आवश्यकता (माइल्स, 1989)।
हम इंस्पेक्टर क्लूसो से भी इतना कुछ सीख सकते थे, बेशक।
या, हाइकू में व्यक्त किया जा सकता है (यदि फूलों की सजावट में नहीं):
साके पीकर जोश में आ गया
मैं खुद को सीढ़ियों से नीचे फेंक देता हूँ
मुझे पकड़ने वाला कोई नहीं है
मुझे ट्रुंगपा पर हंसने के लिए उनके एक शिष्य ने डांट लगाई थी।
वह एक सनकी आदमी था। लेकिन वे लोग बहुत नाराज हो गए...
उसके साथ काली पोशाक और ऊँची एड़ी वाली महिला अंगरक्षक थीं।
हील्स पहने हुए लोग ऑटोमैटिक बंदूकें लेकर उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे।
उन्होंने मुझे साके परोसते हुए बातचीत के लिए आमंत्रित किया।
विचित्र (गैरी स्नाइडर, [डाउनिंग, 2001] में)।
एक जंगली और सनकी ज्ञानी व्यक्ति 123

दिलचस्प बात यह है कि ट्रुंगपा एसएफजेडसी के शुनर्यु सुजुकी को अपना "आध्यात्मिक पिता" मानते थे, जबकि सुजुकी उन्हें अपना आध्यात्मिक पिता मानते थे।
"मेरे बेटे की तरह बनो" (चैडविक में, 1999)।
* * *
दरअसल, यह पता लगाने का एक बहुत ही आसान तरीका है कि क्या किसी "ऋषि" द्वारा दूसरों के साथ किया जाने वाला "अनोखा ज्ञान" वास्तव में उन लोगों को ज्ञान प्रदान करने का एक "कुशल साधन" है, जिनकी ओर यह निर्देशित है।
उदाहरण के लिए, हम किसी व्यक्ति को हाइपोकॉन्ड्रिएक (बीमारी का वहम करने वाला) नहीं मानेंगे, जब वह अस्पताल में भर्ती हो, निमोनिया या इससे भी बदतर बीमारी से पीड़ित हो और उसी के बारे में शिकायत कर रहा हो। बल्कि,

हाइपोकॉन्ड्रिएक तब प्रकट होता है जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ प्रमाणित हो जाता है, लेकिन फिर भी हर छोटे-मोटे दर्द को किसी गंभीर बीमारी का संकेत समझकर अत्यधिक चिंतित रहता है।

हम किसी भी लेखक के वाद-विवाद का मूल्यांकन उन स्थितियों में नहीं करेंगे जहाँ "उचित क्रोध" उकसाया गया हो और जिसे उन लोगों को "जागृत" करने के प्रयास के रूप में उचित ठहराया जा सकता है जिन पर यह निर्देशित है, या यहाँ तक कि उन्हें "उनके ही कर्मों का फल चखाने" के लिए भी। हालाँकि, यदि हम उसी वाद-विवाद को ऐसे संदर्भों में पाते हैं जहाँ यह स्पष्ट रूप से अकारण था, तो हम निश्चित हो सकते हैं कि लेखक की प्रेरणाएँ ऐसे कथित उच्च आदर्शों से कहीं अधिक हैं। अर्थात्, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह इसे अपने लाभ के लिए, अपनी भड़ास निकालने के लिए, या केवल उन लोगों का अपमान करने के आनंद के लिए कर रहा है जिनके विचारों को वह खतरा मानता है। संक्षेप में, इस प्रकार के अकारण वाद-विवाद हमें यह मानने का ठोस कारण देते हैं कि लेखक अपने क्रोध के कथित महान आधार के बारे में स्वयं के प्रति ईमानदार नहीं है।

हम उन “कुशल साधनों” का मूल्यांकन करने का प्रयास नहीं करेंगे जिनके द्वारा कोई तथाकथित “ऋषि” अपने अनुयायियों को उनके मूल गुरु-शिष्य संदर्भों में मनोवैज्ञानिक रूप से जकड़ लेता है, जहाँ ऐसे कार्यों को उचित ठहराया जा सकता है। बल्कि, हम यह देखेंगे कि गुरु-स्वरूप अन्य लोगों के साथ उन स्थितियों में कैसे व्यवहार करता है जहाँ उसके पाखंडी या कथित रूप से अपमानजनक कार्यों को उन्हें जागृत करने के प्रयास के रूप में उचित नहीं ठहराया जा सकता। यदि हमें उसके गैर-शिष्यों के साथ व्यवहार में वही अपमानजनक व्यवहार मिलता है जो हमें उसके करीबी अनुयायियों के साथ व्यवहार में मिलता है, तो सबसे उदार दृष्टिकोण यह है कि गैर-शिष्यों के साथ व्यवहार के “आधार” को गुरु-शिष्य के व्यवहार से “घटा” दिया जाए। यदि कथित “कुशल साधन” (क्रोध और कथित “अशिष्ट लड़के” दुर्व्यवहार) दोनों समूहों में समान रूप से मौजूद हैं, तो वे एक दूसरे को रद्द कर देते हैं, और इस प्रकार वे शुरू से ही “कुशल” नहीं थे। बल्कि, वे 124 गुरुओं को निथारना

यह तो बस पहले से मौजूद घृणित व्यवहारों को ऐसे संदर्भ में स्थानांतरित करना है जिसमें वे स्वीकार्य प्रतीत हो सकें।

वर्तमान संदर्भ में, चूंकि अकोंग कभी भी ट्रुंगपा के शिष्य नहीं थे, इसलिए चोग्याम द्वारा उनके प्रति किए गए दुर्व्यवहार को उन्हें जागृत करने के किसी "कुशल तरीके" के रूप में उचित नहीं ठहराया जा सकता। मर्विन और उनकी पत्नी भी ट्रुंगपा के शिष्य नहीं थे। इस प्रकार, हैलोवीन पार्टी में शामिल न होने पर उन्हें दंडित करना, गुरु द्वारा दूसरों को केवल अपने विकृत आनंद के लिए अपमानित करने का एक और उदाहरण है, न कि उनके आध्यात्मिक कल्याण के लिए।

आने वाले अध्यायों में, हम कई अन्य "अजीबोगरीब ज्ञान" या "रूड बॉय" गुरुओं और उनके समर्थकों के व्यवहार का मूल्यांकन करते समय इस "संदर्भगत तुलना" पद्धति का अच्छा उपयोग पाएंगे।

* * *

एलन [गिन्सबर्ग] ने ट्रुंगपा से पूछा कि वह इतना अधिक क्यों पीते हैं।

ट्रुंगपा ने बताया कि उन्हें उम्मीद है कि वे रोशनी का पता लगा लेंगे।

अमेरिकी शराबखोरी। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में, शराब-

होल मुख्य नशीली दवा थी, और वह अपने द्वारा अर्जित की गई दवा का उपयोग करना चाहता था।

नशे को ज्ञान के स्रोत के रूप में समझना (शुमाच-

यानी, 1992)।

[ट्रुंगपा का] स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। उन्होंने लगभग एक वर्ष का समय अस्पताल में बिताया।

डेढ़ साल तक अर्ध-कोमा में रहा, कुछ मौकों पर मौत के करीब पहुंच गया।

अंत में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई (शू-

माचर, 1992)।

1987 में तीव्र शराब की लत से मरने से पहले, ट्रुंगपा ने...

थॉमस रिच नामक एक अमेरिकी अनुयायी ने भी इस ओर इशारा किया।

ओसेल टेंडज़िन के नाम से जाने जाने वाले, उनके उत्तराधिकारी के रूप में। अमीर, एक विवाहित पिता-

चार में से एक की 1990 में प्रकाशित रिपोर्टों के बीच एड्स से मृत्यु हो गई।

कि उसने [सौ से अधिक] पुरुषों के साथ असुरक्षित यौन संबंध बनाए थे

और महिला छात्राओं को अपनी बीमारी के बारे में बताए बिना (होर-

(गान, 2003ए)।
टेंडज़िन ने एक बैठक में अपने व्यवहार के बारे में स्पष्टीकरण देने की पेशकश की, जिसमें मैं
उपस्थित थे। उनके सभी भाषणों की तरह, इसे भी एक शिक्षण भाषण माना गया।
धर्म के बारे में, और दान की मांग की जाती थी और अपेक्षा की जाती थी (लेकिन-
टेरफील्ड, 1994)।
आवश्यक 35 डॉलर की "भेंट" अदा करने के बाद, बटरफील्ड को टेंडज़िन की संदिग्ध
व्याख्या सुनने को मिली:
एक बेबाक और अनोखा ज्ञानी व्यक्ति 125

छात्रों द्वारा गहन पूछताछ के जवाब में, उन्होंने पहले शपथ ली।
हमें गोपनीयता (फिर से पारिवारिक रहस्य) के लिए कहा, और फिर कहा कि
ट्रुंगपा ने शुरू में ही उनसे एचआईवी परीक्षण कराने का अनुरोध किया था।
1980 के दशक में, मैंने उसे सकारात्मक परिणाम के बारे में चुप रहने के लिए कहा था।
टेंडज़िन ने ट्रुंगपा से पूछा था कि अगर छात्र
वह उसके साथ यौन संबंध बनाना चाहती थी, और ट्रुंगपा का जवाब यह था कि
जब तक वह वज्रयान शुद्धिकरण की साधना करता रहा, तब तक ऐसा ही रहा।
कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उन्हें यह बीमारी नहीं होगी।
ज़िन का संक्षिप्त उत्तर यह था कि उसने निर्देशों का पालन किया था।
उन्होंने अपने गुरु के उपदेशों का पालन किया। उन्होंने कहा कि हमें दुष्चक्र में नहीं फंसना चाहिए।
अच्छाई और बुराई के बीच का भेद कभी कलंकित नहीं हुआ, हमारा
क्रोध गुरु की करुणा है, और हमें सभी को शुद्ध करना चाहिए।
वे बाधाएँ जो हमें दुनिया को एक पवित्र स्थान के रूप में देखने से रोकती हैं
बुद्धों और बोधिसत्वों का मंडल।
फिर भी, इन सबके बावजूद, और व्यवहार संबंधी उन सभी गंभीर समस्याओं के व्यापक रूप से ज्ञात होने के काफी समय बाद भी, हमारे पास अभी भी यह अनसुनापन मौजूद है।

यह तर्कसंगत धारणा किसी और ने नहीं बल्कि केन विल्बर (1996) ने व्यक्त की है: "अनोखी बुद्धिमत्ता" अत्यंत सख्त नैतिक वातावरण में ही उत्पन्न होती है।
यदि उपरोक्त सभी घटनाएँ "अत्यंत सख्त नैतिक वातावरण" में घटित हो रही थीं, तो यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि अनैतिक वातावरण किस प्रकार की भयावहता को जन्म दे सकता है। वास्तव में, बाद में हम जिन व्यक्तियों से मिलेंगे, उनमें से एक अत्यधिक प्रशंसित व्यक्ति की बात करें तो, एक गुमनाम पोस्टकर्ता ने, जो कहीं अधिक समझदार है, निम्नलिखित स्पष्ट और स्वतः सिद्ध बात को सही ढंग से कहा:
“पागल-बुद्धिमान” शिक्षक की पूरी अवधारणा में एक समस्या है।
क्या यह है कि [आदि] दा किसी भी व्यक्ति या वस्तु का प्रतिनिधित्व करने का दावा कर सकता है,
किसी भी प्रकार के नैतिक विवाद में शामिल होना, और चाहे कुछ भी हो
शिष्यों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर, दा आसानी से यह दावा कर सकता है कि उसका कार्य प्रेरित था।
इसे “एक अन्य शिक्षा” के रूप में माना जाता है। इस प्रकार वह स्वयं को एक सकारात्मक स्थिति में रखता है।
ऐसी स्थिति जहां वह किसी भी नैतिक निर्णय से पूरी तरह मुक्त है
(बॉब में, 2000; इटैलिक्स जोड़े गए)।
स्पष्ट शब्दों में कहें तो, किसी भी "अजीबोगरीब ज्ञान" के वातावरण में "सख्त नैतिक वातावरण" जैसी कोई चीज हो ही नहीं सकती।
लेकिन शायद ट्रुंगपा और टेंडज़िन—जो सच्चिदानंद के पूर्व करीबी शिष्य थे और वास्तव में 70 के दशक की शुरुआत में उनके इंटीग्रल योग संस्थान के प्रभारी थे (फील्ड्स, 1992)—ने उस पारंपरिक "माहौल" को अपने स्वार्थ के लिए विकृत कर दिया था? दुख की बात है, नहीं: 126 गुरुओं का अपमान

कुछ पत्रकार, अन्य बौद्ध धर्मगुरुओं के हवाले से,
कुछ संप्रदायों ने यह संकेत दिया है कि ट्रुंगपा ने वास्तविक बौद्ध धर्म का उपदेश नहीं दिया था।
धार्मिक धर्म, लेकिन अमेरिकी उपभोक्ताओं के लिए इसका एक सरलीकृत संस्करण।

या यह कि उनकी शिक्षा उनके स्वच्छंद व्यवहार से दूषित हो गई थी।
देखो। वज्रयान अभ्यास करने के बाद, उन पर लिखे ग्रंथों को पढ़ना चाहिए।
तिब्बती अधिकारियों द्वारा, और बौद्ध केंद्रों का दौरा करना
संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में, मैं इस आरोप से संतुष्ट था-
यह कथन असत्य है। वज्रधातु में सिखाई जाने वाली प्रथाएँ वैसी ही हैं जैसी अन्य प्रथाओं में होती हैं।
बौद्ध जगत में किसी भी चीज़ की तरह वास्तव में बौद्ध...
तेंडज़िन कांड के बाद, दिलगो ख्येनत्से रिनपोचे ने...
sisted to Vajradhatu students that Trungpa had given them
उन्हें वास्तविक धर्म का पालन करना चाहिए, और ठीक उसी प्रकार उसका अनुसरण करते रहना चाहिए।
उन्होंने निर्धारित किया था (बटरफील्ड, 1994; इटैलिक्स जोड़े गए)।
दिलगो ख्येनत्से रिनपोचे—जिनमें "रिनपोचे" का अर्थ "प्रामाणिक व्यक्ति" होता है—1987 से लेकर 1991 में अपनी मृत्यु तक तिब्बती बौद्ध धर्म के सबसे पुराने न्यिंगमा या "प्राचीन लोगों" संप्रदाय के प्रमुख थे।
इन सब के बावजूद, पीटर मारिन (1995) - एक गैर-बौद्ध लेखक, जिन्होंने 1977 में नारोपा में कई महीनों तक पढ़ाया - ने सही ढंग से यह देखा कि नारोपा में गतिविधियाँ अन्य संप्रदायों में पाए जाने वाले दमन की तुलना में अपेक्षाकृत सौम्य थीं।
लेकिन अंत में, एंड्रयू हार्वे (2000) ने इसे अच्छी तरह से व्यक्त किया:
सामान्य तौर पर, मुझे लगता है कि लगभग हर वो चीज़ जिसे "पागलपन" माना जाता है
इसे "बुद्धि" कहा जाता है और गुरु और गुरु दोनों द्वारा इसे "पागल बुद्धि" कहकर उचित ठहराया जाता है।
और मंत्रमुग्ध शिष्य वास्तव में क्रूरता और शोषण है।
यह बिलकुल भी प्रबुद्ध ज्ञान नहीं है। "पागलपन भरे ज्ञान" के नाम पर।
गुरु और शिष्य द्वारा जघन्य अपराधों को तर्कसंगत ठहराया गया है।
सभी लोग एक समान हैं, और कई जिंदगियां आंशिक या पूरी तरह से तबाह हो गई हैं।
कहा गया।

इन सब के बाद भी, व्यक्ति को ट्रुंग का सम्मान करने की पूरी स्वतंत्रता है।
अपने "शराब पीने और अय्याशी करने" के बारे में खुलकर बोलने के लिए (डाउनटाउन में)
(2001), उन भोग-विलास को पाखंडी ढंग से छिपाने के बजाय, जैसा कि कई अन्य गुरु-प्रतिष्ठानों ने कथित तौर पर किया है। हालाँकि, वह मामूली शेष, स्पष्ट रूप से उस विरासत की तुलना में बहुत कम है जिसकी किसी स्व-घोषित "मैत्रेय बोधिसत्व के अवतार" से उचित रूप से अपेक्षा की जा सकती थी। वास्तव में, पाखंड रहित होने के उसी मानदंड के आधार पर, कोई औसत अश्लील लेखक की भी उतनी ही प्रशंसा कर सकता है। दुख की बात है कि इस पुस्तक के अंत तक, यह बात उन अनेक व्यक्तियों द्वारा और भी पुष्ट हो जाएगी, न कि जरा भी कम होगी, जिनका अन्य लोगों पर संदिग्ध प्रभाव है। - एक जंगली और सनकी ज्ञानी व्यक्ति 127

इन लोगों के जीवन ने उन्हें यहाँ शामिल किए जाने को उचित ठहराया है। ऐसा इसलिए है, चाहे उनके द्वारा स्वयं और दूसरों के साथ कथित दुर्व्यवहार के पीछे व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक प्रेरणाएँ कुछ भी रही हों।
आज भी, ट्रुंगपा को बीसवीं शताब्दी में पश्चिम में "पूर्वी आध्यात्मिकता के चार प्रमुख प्रचारकों में से एक" के रूप में व्यापक रूप से माना जाता है - अन्य तीन राम दास, डी. टी.
सुजुकी और एलन वाट्स (ओल्डमेडौ, 2004)। हालांकि, बौद्ध विद्वान केनेथ रेक्सरोथ (माइल्स में, 1989) जैसे अन्य लोगों ने कम प्रशंसात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है:
"कई लोगों का मानना है कि चोग्याम ट्रुंगपा ने निस्संदेह संयुक्त राज्य अमेरिका में बौद्ध धर्म को किसी भी जीवित व्यक्ति से कहीं अधिक नुकसान पहुंचाया है।"
* * *
कभी-कभी तो पूरा संस्थान ही एक बड़ा मजाक लगता है।
ट्रुंगपा द्वारा दुनिया पर खेला गया: एक अति-
वयस्क पुत्र को अपने लिए एक राज्य का पुनर्निर्माण करने के लिए।
सनक (मरीन, 1995)।
“राजा/गुरु और देश के लिए” के उस सारे प्रसिद्ध बेतुकेपन के बावजूद, नारोपा संस्थान/विश्वविद्यालय आज भी अपने “जैक केरोएक स्कूल ऑफ डिसएम्बोडीड

पोएटिक्स" के साथ कायम है। पहले यहाँ "खोजी कविता" के पाठ्यक्रम चलाए जाते थे—हालाँकि, दुख की बात है कि "बीट जर्नलिज़्म" का कोई संबंधित प्रशिक्षण नहीं है। साथ ही, उनके वार्षिक वसंतकालीन मिलन समारोह में "चिंतनशील बॉलरूम नृत्य" में भागीदारी भी होती है। (ऐसा माना जा सकता है कि इसमें नृत्य करते समय विपश्यना "माइंडफुलनेस" ध्यान का अभ्यास करना शामिल होगा। या शायद नहीं। जो भी हो।)

दरअसल, नारोपा की वेबसाइट (www.naropa.edu) और पूर्व छात्रों पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि 60 के दशक की संस्कृति अभी भी जीवित है और बोल्डर में सक्रिय है - हालांकि कॉलेज क्रेडिट के लिए मनोविज्ञान/पर्यावरण विषय के छात्रों के साथ।

अध्याय अठारह

साठ मिनट
(स्वामी मुक्तानंद)

झूठे गुरु क्यों मौजूद हैं? यह हमारी अपनी गलती है। हम खुद ही अपने गुरु चुनते हैं। हम गुरुओं का चुनाव वैसे ही करते हैं जैसे हम अपने राजनेताओं का। झूठे गुरुओं का प्रभाव...
केट का विकास इसलिए हो रहा है क्योंकि झूठे शिष्यों का बाजार बढ़ रहा है।
अपने अंधे स्वार्थ के कारण, एक झूठा गुरु लोगों को डुबो देता है।
और उसकी अंधी स्वार्थपरता और गलत समझ के कारण-
झूठा शिष्य जाल में फंस जाता है। सच्चा शिष्य कभी भी ऐसा नहीं करेगा।
एक झूठे गुरु के जाल में फंस जाना (मुक्तानंद, 1981; इटैलिक्स जोड़ें-)
संपादक)।
मुझे भारत में स्वामी मुक्तानंद के निजी दर्शन का अवसर मिला...
उनकी मृत्यु से तीन दिन पहले, और मुझे लगा कि वह एक महान व्यक्ति थे-
एक सौ प्रतिशत व्यक्ति, एक अविश्वसनीय रूप से प्यार करने वाला व्यक्ति (एंथनी

रॉबिंस,
[हैमिल्टन, 1999]).

भारत के मंगलौर में 1908 में जन्मे स्वामी मुक्तानंद, नीम करोली बाबा की तरह, आदरणीय गुरु भगवान नित्यानंद के शिष्य थे, जिनसे उनकी मुलाकात 1947 में हुई थी।
यह कोई संयोग नहीं था कि 1970 में राम दास ने मुक्तानंद को अमेरिका से परिचित कराया था।

128
साठ मिनट 129

कुंडलिनी योग के अभ्यास को आगे बढ़ाने के अपने विश्वव्यापी मिशन में सहायता के लिए, मुक्तानंद ने 1974 में SYDA (सिद्ध योग) फाउंडेशन की स्थापना की, जिसका मुख्यालय साउथ फॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क में है।
SYDA के प्रशंसकों में जेरी ब्राउन, कार्ली साइमन, जेम्स टेलर, डायना रॉस और इसाबेला रोसेलिनी शामिल हैं। इनके अलावा, रोसन्ना आर्केट, मेग रयान, द कॉस्बी शो की फिलिसिया रशाद, मियामी वाइस के डॉन जॉनसन और उनकी पत्नी मेलानी ग्रिफिथ, और मार्शा मैसन (नील साइमन की पूर्व पत्नी) भी शामिल हैं। साथ ही, गायक मैंडी पैटिनकिन, प्रसिद्ध गीतकार जिमी वेब—जिन्होंने "मैकआर्थर पार्क" और "अप, अप एंड अवे (विद माई ब्यूटीफुल, माई ब्यूटीफुल गुरु....)" दोनों गीत लिखे हैं —और अंतरिक्ष यात्री एडगर मिशेल भी इसके प्रशंसक हैं।
* * *
जिसने भी आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर ली है, उसने ऐसा कर लिया है।
अपने गुरु के माध्यम से। गुरु कृपा से परिपूर्ण जीवन प्रदान करते हैं,
पूर्ण स्वतंत्रता और आत्ममुक्ति। गुरु की कृपा
स्थायी प्राप्ति के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। गुरु के बिना यह संभव नहीं है।
मनुष्य दुखी रहता है; गुरु के साथ वह आनंद से परिपूर्ण हो जाता है। इसलिए समर्पण करो।

स्वयं को पूरी तरह से गुरु को समर्पित कर दें (मुक्तानंद, 1978; इटैलिक्स)
जोड़ा गया)।
गुरु में सभी गुण होने चाहिए... वह सच्चा गुरु नहीं हो सकता।
यदि गुरु इंद्रिय सुखों में लिप्त हो जाए तो...
गुरु के बिना किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह...
सत्य को समझो (मुक्तानंद, 1999)।
मुक्तानंद का वैवाहिक संबंधों के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण कथित तौर पर निम्नलिखित रूप में था:
मुक्तानंद ने अपने भक्तों को यौन संबंध से दूर रहने की सलाह दी... "क्योंकि
उन्होंने 1972 में साउथ फॉल्सबर्ग के श्रोताओं से कहा, "मध्यस्थता।"
आपको जिस चीज की जरूरत है... वह है वीर्य की प्रबल शक्ति। इसलिए मैं पूर्ण शक्ति पर जोर देता हूं।
आश्रम में रहने के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करें" (हैरिस,
1994).
लेकिन फिर, जाहिर है कि वे नियम केवल शिष्यों के लाभ के लिए हैं, न कि गुरु के लिए, जिन्हें अब उनकी आवश्यकता नहीं है।
भारत के गणेशपुरी स्थित उनके आश्रम में, "एक गुप्त मार्ग था-
उसके घर से युवा लड़कियों के छात्रावास तक का रास्ता," एक [पूर्व-
एक अनुयायी ने बताया, "वह जिसके साथ भी संबंध बना रहा था, उसके साथ उसका
उस छात्रावास में चले गए। [वहाँ] लड़कियाँ आती-जाती रहती थीं।
"पूरी रात उसके बेडरूम में" (रे, 1991)। 130 गुरुओं का पर्दाफाश

इस प्रकार कथित तौर पर जुलूस में शामिल लड़कियों में से एक - "जेनिफर" - ने दावा किया कि 1978 की शुरुआत में महान गुरु द्वारा उसके साथ बलात्कार किया गया था।
मुक्तानंद ने जेनिफर के साथ एक घंटे तक शारीरिक संबंध बनाए,
उसने कहा, और उसे इस बात पर काफी गर्व था। "वह बार-बार कहता था, 'साठ मिनट,'" उसने कहा (रोडार्मर, 1983)।
"एक बेहद प्यार करने वाला इंसान।"

हालांकि, कथित तौर पर ब्रह्मचारी गुरु की यौन सहिष्णुता, यौन मामलों में सहिष्णुता तक विस्तारित नहीं हुई थी:

“एक गुरु कभी रखैलियों के साथ इश्कबाजी नहीं करेगा या मेलजोल नहीं रखेगा-
"समलैंगिकों के साथ रहना," मुक्तानंद के 1976 के एक पत्र में लिखा है।
समलैंगिकों को नपुंसक माना जाता है—घिनौने, अनैतिक-
शुद्ध, और अशुभ” (च्यू, 1998)।

* * *

यदि शिव क्रोधित हों तो गुरु आपकी रक्षा कर सकते हैं, लेकिन यदि गुरु
क्रोधित हो जाओ, कोई तुम्हें बचा नहीं सकता (मुक्तानंद में, 1999)।

तो दुर्भाग्यवश उनके शिष्यों के लिए:

“मुक्तानंद का स्वभाव बेहद उग्र था,” रिचर्ड ने कहा।
ग्राइम्स, "और बिना किसी वजह के किसी पर चिल्लाती या चीखती थी-"
कारण बताते हुए।" वह [दावा करता है कि] उसने गुरु को लोगों को पीटते हुए देखा।
कई अवसरों पर (रोडार्मर, 1983)।

दरअसल, गुरु के सेवक नोनी पटेल ने कथित तौर पर एक बार अपने पेट में हुए एक अजीब घाव का इलाज करवाया था।

ग्राइम्स की पत्नी ने कहा, "शुरुआत में तो उसने यह नहीं बताया कि उसे यह कैसे मिला।"

लोटे ने याद करते हुए कहा, “बाद में यह बात सामने आई कि [मुक्तानंद] ने
उसे कांटे से गोद दिया” (रोडार्मर, 1983)।

यह शिष्टाचार का स्पष्ट उल्लंघन है।

* * *

पूर्व पत्रकार सैली केम्पटन, जिन्हें स्वामी दुर्गानंद के नाम से भी जाना जाता है, ने 1974 में मुक्तानंद का अनुसरण करना शुरू किया। पूर्णतः प्रबुद्ध मुक्तानंद और उनके उत्तराधिकारी के आश्रमों में दशकों बिताने के बाद, वह 2002 में अध्यापन कार्य करने के लिए धर्मनिरपेक्ष दुनिया में लौट आईं। तब से उन्होंने योग जर्नल के लिए स्तंभकार के रूप में काम किया है और कई पत्रिकाओं में उनका साक्षात्कार भी लिया गया है।

हालांकि, लिस हैरिस (1994) का एसवाईडीए पर लिखा लेख, दुर्गानंदा और मुक्तानंद के कथित व्यवहारों के उनके खंडन से संबंधित कई खंडों से युक्त है, और वे सभी पढ़ने लायक हैं।

* * *

मुक्तानंद के स्वयं के विद्वान गुरु नित्यानंद (जिनका निधन 1960 में हुआ) के बारे में निम्नलिखित जानकारी उपलब्ध है:

वे जन्मजात सिद्ध थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन इसी तरह व्यतीत किया।
चेतना की उच्चतम अवस्था में जीवन (मुक्तानंद,
1999).
वह सर्वज्ञानी थे; फिर भी वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो उन्हें कुछ पता ही न हो।
बहुत कुछ जानते हैं....
वह कभी-कभार ही बोलता था; हालाँकि, आप
उन्हें समझ नहीं पाते (मुक्तानंद, 1996)।
“वह सर्वश्रेष्ठ गुरु थे; वह सबसे बुरे गुरु थे,” इत्यादि।
जब वह बीस वर्ष का था, तो वह धैर्यपूर्वक पेड़ों के पीछे छिप जाता था।
वह अपने रास्ते में गाय के आने का इंतजार कर रहा था। जिस क्षण जानवर
जब वह गोबर गिराने के लिए खड़ा होता, तो वह तेजी से आगे बढ़ता और उसे उठा लेता।
हवा में गिरना, और फिर उसे निगल लेना (फ्यूअरस्टीन, 1992)।

वाह! और इस तरह के भोज से योगी की गायों और उनके मल-मूत्र में रुचि भी कम नहीं हुई:

वह कभी-कभी सड़क के बीच में दिखाई देता था (वहाँ
उन दिनों मोटर यातायात लगभग न के बराबर था), इसलिए
जमीन पर गिरने से पहले गाय से गिरते हुए, उसे उस पर रखते हुए
उसका सिर, और फिर रेलगाड़ी के इंजन की तरह सीटी बजाना और
बच्चों की तरह लगातार आगे बढ़ते रहना (हातेंगडी, 1984)।
“वू-वू! अगला पड़ाव, लूनी स्टेशन।”
[नित्यानंद] अक्सर भक्तों के बारे में बात करते थे।

जिसकी मानसिकता कौवे जैसी थी। स्वर्ग में भी कौवा ही था।
बाबा ने कहा, वह गंदगी खाने पर अड़ा हुआ है, क्योंकि उसके पास वही है।
जिसकी उन्हें आदत हो गई है। और ये लोग इसी तरह से कमियां निकालते हैं-
ing devotees behave (Muktananda, 1996).
गाय, कौवे, ट्रेन... और भी बहुत कुछ:
132 गुरुओं का पर्दाफाश

एक अन्य अवसर पर, उन्होंने अपने पूरे शरीर को सिर से पैर तक लेप से लपेट लिया।
[अर्थात, उसके होंठों सहित] मानव मल से सना हुआ था। वह पास में बैठा था।
शौचालयों के सामने मल के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए थे।
वह हर बार जब कोई भक्त उसके पास से गुजरता, तो उसे पुकारता,
"बॉम्बे हलवा—बहुत स्वादिष्ट—खाना चाहेंगे?
तौल कर आपको कुछ दे दूंगा" (फ्यूअरस्टीन, 1992)।
साउथ पार्क योगा।
* * *
मुक्तानंद की 1982 में मृत्यु के समय तक, उनके SYDA फाउंडेशन द्वारा विश्व भर में ग्यारह आश्रम और सैकड़ों ध्यान केंद्र संचालित किए जा रहे थे। प्रारंभ में, उनकी शिष्या गुरुमयी (1955 – वर्तमान) और उनके छोटे भाई ने उनका साथ दिया। हालाँकि, 1980 के दशक के मध्य में कथित सत्ता संघर्ष के बाद, जिसमें उनके छोटे भाई ने विवादित परिस्थितियों में संगठन छोड़ दिया, गुरुमयी ने संगठन छोड़ दिया।
मायी अकेले शासन करती है (हैरिस, 1994)।
SYDA द्वारा दुर्व्यवहार और उत्पीड़न के आरोप पाए जा सकते हैं
www.leavingsiddhayoga.net पर, साथ ही हैरिस (1994) में भी।

अध्याय XIX

द मैंगो किड
(भगवान श्री रजनीश)

[रजनीश] ने कहा कि उन्होंने स्वयं [ज्ञानोदय] प्राप्त कर लिया था।
इक्कीस वर्ष की आयु में... उन्होंने आगे घोषणा की।
कि... किसी भी समय केवल एक ही प्रबुद्ध गुरु थे-
विशेष समय, और वह वही व्यक्ति था (मिल्ने, 1986)।
रजनीश बाइबिल... वास्तव में "पहला और आखिरी धर्म" थी।
(गॉर्डन, 1987)।

भगवान श्री रजनीश, जिनका जन्म 1931 में हुआ था, ने चौदह वर्ष की आयु में अपनी पहली समाधि प्राप्त की। विश्वव्यापी मिशन पर निकलने से पहले, जिसने उन्हें दुनिया के सबसे प्रसिद्ध गुरुओं में से एक के रूप में स्थान दिलाया, उन्होंने 1950 के दशक के उत्तरार्ध और 1960 के दशक के आरंभिक वर्षों में मध्य भारत के जबलपुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।
1974 में, उन्होंने बॉम्बे के दक्षिण-पूर्व में स्थित पूना (पुणे) में अपना पहला आश्रम स्थापित किया।
खबरों के मुताबिक, रजनीश के अनुयायियों में जापानी संगीतकार किटारो और पूर्व फ्रांकोइस रुड्डी शामिल थीं। उन्होंने पहले अपने तत्कालीन पति अल्बर्ट के साथ मिलकर द गॉडफादर (फिट्ज़गेराल्ड, 1986) का निर्माण किया था। वे और भगवान रजनीश के अन्य शिष्य ऐसी शिक्षाओं का पालन करते थे जो "शरारती"/"पागल" का मिश्रण थीं।

"बुद्धि" व्यवहार, तांत्रिक यौन प्रथाएं, और अक्सर हिंसक (अर्थात, हड्डियां टूटने की हद तक) पश्चिमी मानव क्षमता आंदोलन (जैसे फ्रिट्ज पर्ल्स, आदि) मुठभेड़ समूह।
रजनीश को "योनि का गुरु" कहा जाता था, और कहा जाता था कि वे अपनी कुछ महिला शिष्यों के साथ शारीरिक संबंध बनाते थे, खासकर आंदोलन के शुरुआती वर्षों में उन्हें दिए गए "विशेष दर्शनों" के दौरान। विवेक, जो उनकी सबसे करीबी शिष्यों में से एक थीं, को मैरी मैग्डलीन का पुनर्जन्म माना जाता था (मिल्ने, 1986)।

कभी-कभी [भगवान] आकर्षक महिलाओं को कपड़े उतारने के लिए कहते थे।
उसके सामने नग्न अवस्था में लेटने के लिए कहा गया जबकि वह उन्हें घूरता रहा।
वह सावधानीपूर्वक जाँच करता। फिर, संतुष्ट होने के बाद, वह उनसे पूछता कि...
दोबारा कपड़े पहनो। उसने जोड़ों को सबके सामने प्रेम-प्रसंग भी करवाया।
उसमें तो ताक-झांक करने की प्रवृत्ति साफ झलकती है...
बाद के वर्षों में, पुणे में, कई यौन प्रयोग हुए।
कई महिलाओं पर मुकदमा चलाया गया। भगवान ने एक महिला को अपनी इस समस्या से उबरने का तरीका बताया।
चूहों का डर: उसे मुख मैथुन में लिप्त होना चाहिए.... दूसरे में
पुणे में आयोजित तांत्रिक सत्र में, पुरुष प्रतिभागियों को एक खाद्य पदार्थ खाना पड़ा।
अपनी महिला साथियों के पैरों के बीच से पका हुआ आम।
आम सभी लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय थे (मिल्ने, 1986)।
उस उत्सव के बीच, आश्रम के पुरुषों के लिए नसबंदी का "सुझाव" दिया गया - जिनमें से एक चौथाई ने इसका पालन किया।
1976 में, समलैंगिक विरोधी (एंड्रयू हार्वे [2000] के अनुसार और
स्टोर [1996]) रजनीश ने यह घोषणा की कि वह आश्रम से बारह महिला "माध्यमों" का चयन करेंगे, जो रात्रिकालीन, सीमित समूह "ऊर्जा दर्शन" के लिए उपस्थित रहेंगी। इसका उद्देश्य उनके माध्यम से उनकी ऊर्जा को समुदाय और व्यापक रूप से दुनिया में स्थानांतरित करना था।
भगवान अपने माध्यमों में जिन विशेषताओं की तलाश कर रहे थे, उनके बारे में उन्होंने जल्द ही स्पष्ट कर दिया:
केवल बड़े स्तनों वाली महिलाएं ही इस सम्मान की आशा कर सकती थीं।
कई जन्मों से छोटी छाती वाली महिलाओं द्वारा प्रताड़ित किया गया है
साथ मिलकर," उन्होंने चौंके हुए दर्शकों के सामने घोषणा की, "और मैं
इस जीवन में ऐसा मत करो!" (मिल्ने, 1986)।
उन बारह बुद्धा लिशियस बेब्स में से कम से कम एक को कथित तौर पर निर्देश दिया गया था कि वह रात के "ऊर्जा हस्तांतरण-रिंग" सत्रों में पैंटी न पहने।

रजनीश ने एक बार कहा था कि अंडरवियर बाधा उत्पन्न करता है
ऊर्जा के प्रवाह के साथ (गॉर्डन, 1987)।
पूर्व माध्यमों ने दावा किया था कि उनका यौन संबंध था
भगवान का उद्देश्य "हमारे निचले चक्रों को उत्तेजित करना" है।
...और "हमारी ऊर्जाओं को व्यवस्थित करने" के लिए (पामर और शर्मा,
1993).
वह मेरे जननांगों को सहलाता था, मुझे हस्तमैथुन करवाता था, लेकिन यह
ऐसा लग रहा था मानो वह मेरे सर्किट को फिर से व्यवस्थित कर रहा हो (गॉर्डन में, 1987)।
* * *
पश्चिमी देशों के लोगों के लिए आय अर्जित करने के कानूनी तरीके बहुत कम थे।
पुणे आश्रम में रहने के लिए पैसे, और जल्द ही कई
उन लड़कियों में से कुछ ने वेश्यावृत्ति का रास्ता अपना लिया...
उन दिनों पैसा कमाने का दूसरा मुख्य तरीका यह था कि...
ड्रग तस्करी करने के लिए (मिल्ने, 1986)।
इन्हीं वित्तीय कारणों से,
लंदन के सोहो से लेकर बड़ी संख्या में स्ट्रिपर्स काम कर रही हैं।
सैन फ्रांसिस्को के नॉर्थ बीच में संन्यासी रहते थे (स्ट्रेली,
1987).
रजनीश की शब्दावली में, संन्यासी/संन्यासी केवल दीक्षा प्राप्त शिष्य थे, न कि अनुभवी भिक्षु जैसा कि अन्य परंपराओं में इस शब्द का अर्थ होता है।
1970 के दशक के उत्तरार्ध और 80 के दशक के प्रारंभ तक, "आध्यात्मिक ज्ञानोदय का यह विशेष शहरी मार्ग" कुछ अनुमानित दुष्प्रभावों को दर्शाने लगा था:
तीन ब्रिटिश संन्यासियों को तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया।
1979 में पेरिस में लगे आरोप। सबसे महत्वाकांक्षी और जाने-माने आत्मसंतुष्ट व्यक्ति-
1979 में पचास किलोग्राम के साथ ग्लाइडिंग का प्रयास किया गया था।
मारिजुआना को एक कमरे के ढांचे और फर्नीचर में भरकर रखा गया था।
पुणे से यूरोप जा रही हिप्पी शैली की बस।

बीस शिष्यों ने सौदे में निवेश किया था और अन्य बीस
बस में काम करता था। हालाँकि, तस्करी का सामान बरामद कर लिया गया था।
युगोस्लाविया में तीन संन्यासियों को जेल में डाल दिया गया।
एक वर्ष के लिए (मंगलवाड़ी, 1992)।
एक संन्यासी ने झोपड़ी वाले गांवों में से एक में दूसरे संन्यासी की हत्या कर दी।
आश्रम से लगभग एक मील दूर, और एक अन्य व्यक्ति मृत पाया गया 136 गुरुओं का शव छीनना

पास के मुल्ला-मथा के नीचे कई चाकू के घावों के साथ
पुल (मिल्ने, 1986)।
इन कठिनाइयों के बीच, अपने काम का विस्तार करने और कथित तौर पर 4 मिलियन डॉलर के बकाया आयकर से बचने की इच्छा से, रजनीश 1981 में चुपचाप भारत छोड़कर संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए और एक 747 जेट विमान से न्यू जर्सी पहुंचे।
विमान से बाहर निकलते समय प्रस्थान सीढ़ियों के शीर्ष पर रुककर, उस ऋषि ने विस्तार से घोषणा की:
मैं वह मसीहा हूँ जिसका अमेरिका इंतजार कर रहा था (मिल्ने में)।
1986).
और यहीं से असली समस्याएं शुरू हुईं।
रजनीश सबसे पहले न्यू जर्सी के मोंटक्लेयर महल में बसे, और फिर पूर्वी ओरेगन में एक आश्रम ("रजनीशपुरम") की स्थापना की, जिसके लिए उन्होंने वास्को काउंटी में 120 वर्ग मील का बिग मड्डी रैंच खरीदा। (यह रैंच पहले जॉन वेन की कई पश्चिमी फिल्मों की शूटिंग का बंजर स्थान हुआ करता था।) उनका अंतिम लक्ष्य उस क्षेत्र में दस लाख की आबादी वाला शहर बसाना था।
अपने रूढ़िवादी पड़ोसियों को अनावश्यक रूप से चिंतित न करने के लिए, आश्रम से उपलब्ध प्रचार सामग्री की जांच और पुनर्मूल्यांकन किया गया। परिणामस्वरूप, रजनीश द्वारा "फक" शब्द के चालीस अलग-अलग संभावित उपयोगों की प्रशंसा और विस्तृत वर्णन करने वाले "द फक टेप" (मिल्ने, 1986) को "एक ऐसे प्रवचन के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया जिसमें भगवान मानवीय संबंधों पर चुटकुले सुनाते हैं।"

रजनीश ने रोल्स-रॉयस कारों का विश्व का सबसे बड़ा निजी संग्रह तैयार किया—कुल तिरानवे कारें। भगवान की सार्वजनिक चुप्पी, आश्रम समुदाय से उनका बढ़ता अलगाव और रोल्स-रॉयस कारों का विशाल संग्रह, जल्द ही "कार-शान" या चलते-फिरते आशीर्वाद देने की नई प्रथा के रूप में सामने आया। वहां, श्रद्धालु भगवान की दैनिक यात्राओं के दौरान उनकी एक झलक पाने के लिए कतार में खड़े होते थे—निकटतम कस्बे एंटेलोप (जनसंख्या उनतालीस) जो 45 मिनट की दूरी पर था।

इस बीच, ओरेगन और अन्य जगहों पर स्थित रजनीश आश्रमों/कम्यूनों के विशेषाधिकार प्राप्त निवासी और आगंतुक घुड़सवारी और हवाई जहाज की सवारी, नौका विहार, तैराकी और नदी राफ्टिंग का आनंद लेते थे।

क्लब मेड के आकर्षण को पूरा करने के लिए, डिस्को, बार लाउंज और
गेमिंग टेबल 1983 के अंत में उपलब्ध कराए गए थे (पामर और
शर्मा, 1993)।

और इस प्रकार कुछ सौभाग्यशाली लोगों के लिए "खाने-पीने और मौज-मस्ती करने" की मेज सज गई।

रजनीश के साढ़े तीन साल की उम्र से बाहर आने से कुछ ही समय पहले
एक साल की चुप्पी के बाद, उन्होंने बड़े नाटकीय अंदाज़ और सटीकता से भविष्यवाणी की।
कि मानवता का दो-तिहाई हिस्सा एड्स नामक बीमारी से मर जाएगा
वर्ष 2000 तक (पामर और शर्मा, 1993)।

वह निराधार भविष्यवाणी भगवान की नोस्ट्राडेमस के एक श्लोक की समझ पर आधारित थी। (इस कथित द्रष्टा के खंडन के लिए, रैंडी की [1993] पुस्तक 'द मास्क ऑफ नोस्ट्राडेमस' देखें।)

ओरेगन आश्रम के अंदरूनी सूत्रों द्वारा रजनीश की हत्या की साजिश रचने की आशंका जल्द ही जोर पकड़ने लगी। इसी कारण, 1984 के अंत में, भगवान और उनकी "दाहिनी हाथ" शीला ने कथित तौर पर रजनीशपुरम में हर महीने 100,000 डॉलर खर्च करके जासूसी उपकरण लगाने शुरू कर दिए (मिलने, 1986)।

आश्रम के बाहर की चिंताओं पर भी ध्यान देते हुए, उसी वर्ष अनुयायियों ने

पास के द डेल्स में दस रेस्तरां में स्पाइक्ड सलाद बार।
ओरेगन में साल्मोनेला संक्रमण फैला और लगभग 750 लोग बीमार हो गए।
(फ्लैकस, 2001)।
वहाँ का उद्देश्य स्पष्ट रूप से बड़ी संख्या में मतदाताओं को निष्क्रिय करना था, जिससे रजनीश समर्थित उम्मीदवारों को काउंटी चुनावों में जीत मिल सके। बताया जाता है कि रेस्तरां में ज़हर मिलाने के "परीक्षण" के बाद स्थानीय जल आपूर्ति को दूषित करने की योजना बनाई गई थी।
सैल्मोनेला संक्रमण के उस मामले की जांच से अंततः ओरेगन के पूर्व अमेरिकी अटॉर्नी चार्ल्स टर्नर की हत्या की कथित साजिश का खुलासा हुआ। हालांकि यह हमला वास्तव में कभी अंजाम नहीं दिया गया, लेकिन रजनीश के कुछ वफादार अनुयायियों ने अपनी अन्य गतिविधियों की जांच को पटरी से उतारने की उम्मीद में कथित तौर पर ऐसा किया।
उन्होंने 1985 में एक हत्यारा दल बनाया। उन्होंने बंदूकें खरीदीं, निगरानी की।
टर्नर के घर, कार्यालय और कार की तलाशी ली और उसकी हत्या करने के तरीकों पर चर्चा की।
sinate him (Larabee, 2000).
इन सब के बाद, और दुनिया के जल्द ही खत्म होने की उनकी भविष्यवाणियों के लगातार विफल होने के कारण—जैसा कि वे पहले 1978 और 1980 में भी विफल हो गई थीं—रजनीश को 1985 में आव्रजन नियमों के उल्लंघन के लिए अमेरिका से निर्वासित कर दिया गया। उन्हें कम से कम बीस देशों में प्रवेश से मना कर दिया गया, अंततः उन्हें वापस भेज दिया गया।

वह पुणे में अपने पुराने आश्रम की ओर लौट गया, जिससे अमेरिकी या तो अपने मसीहा के लिए और अधिक प्रतीक्षा करने के लिए मजबूर हो गए... या फिर उसके चले जाने से खुश हो गए।
भगवान के चले जाने के तुरंत बाद ओरेगन आश्रम बंद हो गया। (बाद में कई अनुयायियों को मारपीट और हत्या के प्रयास के आरोप में दोषी ठहराया गया।)
हत्या, वायरटैपिंग और खाद्य विषाक्तता के आरोप [लाराबी, 2000]। आज, यह किशोरों के लिए एक ग्रीष्मकालीन बाइबिल शिविर के रूप में कार्य करता है जो

सुरक्षित रूप से अपने स्वयं के, अधिक रूढ़िवादी रूप से स्वीकार्य (लेकिन फिर भी लंबे बालों वाले, चोगा पहनने वाले, "केवल एक प्रबुद्ध गुरु") मसीहा का अनुसरण करने के लिए समर्पित हैं।

* * *

पुणे और ओरेगन दोनों आश्रमों में चेतना बदलने वाली दवाओं के इस्तेमाल को कभी भी आधिकारिक तौर पर मंजूरी नहीं दी गई थी। इसके बावजूद, 1982 तक रजनीश कथित तौर पर रोजाना नशा करने के लिए नाइट्रस ऑक्साइड (यानी, लाफिंग गैस) का सेवन कर रहे थे। एक बार, ऐसा करते हुए छह महीने बीत चुके थे, और बताया जाता है कि वे अपनी 12,000 डॉलर की दंत चिकित्सक की कुर्सी पर लेटे हुए बड़बड़ा रहे थे।

भगवान ने आगे कहा: “मुझे बहुत राहत मिली है कि मुझे ऐसा नहीं करना पड़ेगा।”

अब ज्ञानी होने का दिखावा करने की कोई ज़रूरत नहीं। बेचारे कृष्णमूर्ति...

अभी भी दिखावा करना पड़ता है” (मिल्ने, 1986)।

कृष्णमूर्ति—जो वास्तव में गुरु-शिष्य संबंध के दुरुपयोग के लिए रजनीश को "अपराधी" मानते थे—एकमात्र ऐसे "ऋषि" थे जिन्हें रजनीश ने कभी अपने बराबर माना था। (स्वयं भगवान ने गुरु होने से इनकार किया था, लेकिन उनका इनकार कृष्णमूर्ति के इनकार से अधिक विश्वसनीय नहीं था।) वास्तव में, ओरेगन में बने अपने कृत्रिम, आयातित सफेद रेत वाले कृष्णमूर्ति झील के विपरीत, ज्ञानोदय उद्योग में अपने एक अन्य "मुख्य प्रतिद्वंद्वी" के प्रति खुलेआम तिरस्कार प्रदर्शित करते हुए, रजनीश ने वहाँ एक गंदे पानी के तालाब का नाम स्वामी मुक्तानंद के नाम पर रख दिया। स्वामी मुक्तानंद के स्वयं के गुरु, मल खाने वाले नित्यानंद, निश्चित रूप से इसे पसंद करते... और शायद उसमें डुबकी भी लगाते।

बहरहाल, भारत लौटने के बाद, भगवान की "ज्ञान प्राप्ति" शीघ्र ही इस हद तक बेहतर हो गई कि वे यह घोषणा कर सके कि

गौतम बुद्ध ने उनके शरीर में प्रवेश किया था, और यह कि

सबसे प्राचीन भविष्यवक्ताओं में से एक द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी।

जापान में शिंटो मंदिर (हैमिल्टन, 1998)।

गौतम बुद्ध के पुनर्जन्म के रूप में रजनीश उपयुक्त बैठते हैं।
हजार वर्षों के आगमन का प्रतीक द्वितीय आगमन का मॉडल
शांति का (पामर और शर्मा, 1993)।
हालांकि, स्वयं बुद्ध ने अपनी आध्यात्मिक साधना में एक साधारण वृक्ष से ही काम चलाया, क्योंकि उन्हें कभी भी ज्ञानोदय के "बोधि आसन" तक पहुंच प्राप्त नहीं हुई थी।
बेशक, रजनीश कथित तौर पर अपनी खोज में नाइट्रस ऑक्साइड का उपयोग करने वाले पहले "आध्यात्मिक साधक" नहीं थे:
विलियम जेम्स को लगा कि उन्होंने परम रहस्य को रिकॉर्ड कर लिया है।
टेरी नाइट्रस ऑक्साइड के प्रभाव में था। अपने घर लौटने पर,
सामान्य अवस्था में, उसने उत्सुकतापूर्वक उस कागज को देखा जिस पर वह
उन्होंने महान संदेश लिखा था (डेरोप, 1968)।
वह संदेश?
होगामस, हिगामस,
पुरुष बहुविवाह करता है।
हिगामस, होगामस,
महिला एकपत्नीत्व का पालन करती है।
* * *
रजनीश का 1990 में 58 वर्ष की आयु में हृदयाघात से निधन हो गया, लेकिन इससे पहले उन्होंने अपना नाम बदलकर "ओशो" ("प्रिय गुरु") रख लिया था, जिसके नाम से उनकी पुस्तकें वर्तमान में विपणित हो रही हैं। उनका पुणे स्थित आश्रम आज भी दुनिया भर से भक्तों की मेजबानी करता है—एक समय में 10,000 तक—और वहां का वातावरण एक रिसॉर्ट जैसा, "क्लब मेडिटेशन" जैसा होता जा रहा है। वास्तव में, वर्तमान में वहां झरने, एक विशाल स्विमिंग पूल, एक सौना और साइबर कैफे के साथ-साथ टेनिस कोर्ट भी हैं जहां "ज़ेनिस" (गैर-प्रतिस्पर्धी ज़ेन टेनिस) खेला जाता है।
“ओशो का नाम कॉकटेल पार्टी में भी जाना जाता है,” संजय भार ने कहा।
थी, चौंतीस वर्षीय, एक फ्रीलांस ग्राफिक डिजाइनर, जिसने वर्णन किया
ओशो की जीवनशैली को "इतना सौंदर्यपूर्ण, इतना जीवंत, इतना आधुनिक और
साथ ही साथ इतना शांतिपूर्ण” (वाल्डमैन, 2002)।

भारत में कभी उत्पीड़ित रहे रजनीश वर्तमान में देश के सबसे लोकप्रिय गायक हैं।
भारत के सबसे अधिक बिकने वाले लेखक। उनकी पुस्तकें संघीय संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।
संघीय संसद पुस्तकालय—यह सम्मान केवल एक को ही दिया जाता है
अन्य, महात्मा गांधी (हैमिल्टन, 1998)।
140 गुरुओं का पर्दाफाश

वास्तव में, विश्व भर में ओशो की पुस्तकों (44 भाषाओं में 2000 पुस्तकें) और ऑडियो-पुस्तकों की बिक्री अब सालाना 10 लाख डॉलर से अधिक हो गई है।
(मैककैफर्टी, 1999)। बेशक, उन सम्मानित पुस्तकों में इसका बहुत कम उल्लेख है।
• रोल्स-रॉयस
• समलैंगिकता विरोधी भावना
• वेश्यावृत्ति
• मादक पदार्थों की तस्करी
• कर की चोरी
• फोन टैपिंग
• साल्मोनेला
• हत्या की साजिशें
• नाइट्रस ऑक्साइड सूंघना, या
• चाशनी में डूबे आम...

अध्याय XX

अवतार से,
दा बॉम्ब, दा बम
(आदि दा, उर्फ दा अवतार, दा लव-
आनंद, दा अवभासा, दा अवधूत,
डाउ लोलोमा, मास्टर डा और फ्री जॉन

बुब्बा फ्री जॉन, फ्रैंकलिन जोन्स)

बुब्बा फ्री जॉन की रचनाएँ अतुलनीय हैं (विल्बर,
2001ए)।
ऐसा लगता है जैसे हमारे सामने कोई अवतार है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा, वह तो अवतार ही है।
सचमुच, मैं यहाँ हूँ। मैं पूरी ज़िंदगी से ऐसे ही किसी का इंतज़ार कर रहा था (एलन)
वाट्स, [डा, 1974] में)।
आदि दा... दिव्य विश्व-शिक्षक हैं, दिव्य ज्ञान के दाता हैं।
ज्ञानोदय, जिसने सभी मिथकों को अनावश्यक बना दिया है और
सभी अप्रचलित चीजों की तलाश में हैं....
दिव्य अवतार, "फ्रैंकलिन जोन्स" के वेश में,
कुछ ही लोगों को मुक्त कराने के लिए नहीं, बल्कि उन व्यक्तियों को भी जो शायद ऐसे रोंगटे खड़े कर देने वाले "साहसिक कार्य" के लिए योग्य समझा जाना। नहीं बिलकुल भी नहीं। वह सभी प्राणियों के पास आया था (दा में, 1995)।

141
142 गुरुओं का पर्दाफाश

[दा] ने हाल के महीनों में बार-बार कहा है कि वर्ष
2000 वह वर्ष है जब उन्हें दुनिया द्वारा मान्यता मिलेगी।
यहां तक कह दिया है कि ईसाई पहचान लेंगे
उन्हें ईसा मसीह के द्वितीय आगमन के रूप में (एलियास, 2000)।
दा लव-आनंद अपने शिष्यों से कहते हैं कि वे कोई गलती नहीं कर सकते।
और वे पूरी गंभीरता से उनमें ईश्वर का अवतार देखते हैं (फ्यू-
एर्स्टीन, 1992)।

1939 में न्यूयॉर्क के लॉन्ग आइलैंड में जन्मे, "फ्रैंकलिन जोन्स के रूप में" दो साल की उम्र तक एक आंतरिक अवस्था में रहे जिसे उन्होंने बाद में "द ब्राइट" कहा।
मुझे याद है कि बचपन में मैं सिर्फ जिज्ञासावश इधर-उधर रेंगता रहता था।

असीम आनंद, प्रकाश और स्वतंत्रता की भावना के साथ
मेरे सिर के बीचोंबीच... मैं एक दीप्तिमान रूप था, स्रोत था
एक ऐसी दुनिया के बीच ऊर्जा, प्रेम-आनंद और प्रकाश जो...
पूर्णतः ऊर्जा, प्रेम-आनंद और प्रकाश। मैं शक्ति थी।
वास्तविकता (दा, 1995; सभी बड़े अक्षर मूल में हैं)।
जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उस दृष्टिकोण के धीरे-धीरे लुप्त होने के बाद, भविष्य के गुरु ने 1961 में न्यूयॉर्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। एक समय, जब उनके चाचा रिचर्ड ने उनसे पूछा कि वह अपने जीवन में क्या करना चाहते हैं, तो दा (1995) ने "दुनिया को बचाने" की गंभीर इच्छा व्यक्त की।
और फिर भी, जैसा कि विल्बर (1983) ने स्वयं उल्लेख किया है:
दुनिया को बचाने के उद्देश्य से काम करने वाला कोई भी समूह संभावित रूप से समस्या पैदा कर सकता है।
यह एक विकृत मानसिकता है, क्योंकि यह एक पुरातन आत्ममुग्ध आधार पर टिकी हुई है।
देखने में तो यह "परोपकारी" या "आदर्शवादी" लगता है, लेकिन वास्तव में यह बहुत ही स्वार्थी होता है।
अत्यंत आदिम, और आदिम उद्देश्यों को प्राप्त करने में अत्यंत सक्षम
आदिम साधनों द्वारा।
1964 के अंत में, जोन्स ने न्यूयॉर्क शहर में मुक्तानंद के शिष्य "रुडी" (स्वामी रुद्रानंद) के अधीन कुंडलिनी योग का अध्ययन शुरू किया।
भावुक मूड में आकर, दा फ्री जॉन ने एक बार सोचा, "रूडी
मुझे मर्द पसंद थे और मुझे औरतें भी पसंद हैं। हम साथ में सेक्स कर सकते थे।
दुनिया" (लोवे, 1996)।
अवतार से, बम से, आवारा से 143

जोन्स ने 1968 में भारत में मुक्तानंद के आश्रम का दौरा किया। मई 1970 तक, उन्होंने इसी तरह की दो और यात्राएँ कीं। विदेशों में गहन ध्यान के दौरान जोन्स को जो अनुभव प्राप्त हुए, उनमें हिंदू देवी शक्ति का दर्शन भी शामिल था।

इसके बाद, 1970 की शरद ऋतु में हॉलीवुड के (रामकृष्ण-विवेक-नंद) वेदांत मंदिर में ध्यान करते समय, जोन्स को एक आध्यात्मिक "अनुभव हुआ जहाँ कोई अनुभव नहीं था।" इसके माध्यम से, वे "स्वाभाविक रूप से और स्थायी रूप से उस प्रबुद्ध अवस्था में पुनः जागृत हो गए जिसका उन्होंने जन्म के समय आनंद लिया था।" उस गैर-अनुभव का वर्णन करते हुए, जोन्स ने कहा है:

मुझे दिव्य शक्ति का साक्षात प्रकटीकरण महसूस हुआ, जो मेरे शरीर से सटी हुई थी।
मेरा अपना प्राकृतिक शरीर, और कुल मिलाकर, मेरे असीम के विरुद्ध
विस्तृत, और यहाँ तक कि निराकार रूप। उसने मुझे गले लगाया।
खुले तौर पर और पूरी तरह से, और हम एक दूसरे के साथ जुड़ गए
दिव्य (और गतिहीन, और सहज रूप से योगिक) "यौन
संघ" (दा, 1995; सभी बड़े अक्षर मूल में हैं)।

या, अधिक रंगीन ढंग से, उसी जागृति का जिक्र करते हुए:

देवी कहती थीं, "मेरी बात मानो," और मैंने उनके साथ संभोग किया।
दिमाग ढीले (फ्री जॉन, 1974)।

1972 में, जोन्स और उनके एक मित्र ने लॉस एंजिल्स के मेलरोज़ एवेन्यू पर आश्रम बुकस्टोर खोला, जिससे उनके पहले अनुयायी आकर्षित हुए।

"उनमें से कई सड़क पर रहने वाले लोग हैं" (लैटिन, 1985ए)।

1973 में भारत में मुक्तानंद से एक और मुलाकात के बाद, जोन्स ने अपना नाम कई बार बदला और बुब्बा फ्री जॉन बन गए। (70 के दशक के अंत में, फ्री जॉन ने "दा" उपाधि अपनाई - जो ईश्वर का एक प्राचीन नाम है जिसका अर्थ है "दाता" - और 1994 में इसमें "आदि" जोड़ दिया, इस प्रकार वे न केवल आत्मज्ञानी बन गए बल्कि उनका नाम जटिल हो गया।) उन्होंने कैलिफोर्निया के कॉब माउंटेन पर, लेक काउंटी में एक पूर्व रिसॉर्ट में अपना पहला आश्रम भी स्थापित किया। उनके अनुयायी आज भी उस स्थान को ध्यान का पर्वत कहते हैं।

अगले वर्ष, फ्री जॉन ने स्वयं को "डाय-" घोषित कर दिया।

"मानव रूप में अंगूर का भगवान" (गौर्ले और एडमिस्टन, 1997)।

जो लोग जोन्स का अनुसरण करते हैं, उनका मानना है कि वह एक "कुशल" व्यक्ति है।

जो शाश्वत ज्ञान से पहले से ही प्रबुद्ध होकर इस संसार में आए।

सत्य। इस संप्रदाय के प्रकाशनों में यीशु को "कुशल" भी कहा गया है, लेकिन
यह स्पष्ट करें कि जोन्स को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है (ले-
डेकर, 1985)।
144 गुरुओं का पर्दाफाश

इसके अलावा 1974 में, अपने "गार्बेज एंड द गॉडेस" दौर के दौरान, बुब्बा ने जाहिर तौर पर
उन्होंने अपना "यौन रंगमंच" शुरू किया, जिसमें अंगों की अदला-बदली शामिल थी।
अश्लील हरकतें, यौन सामूहिक यौन क्रियाएं, अश्लील फिल्मों का निर्माण और
तीव्र यौन व्यवहार (फ़्यूरस्टीन, 1996)।
मिल वैली रिकॉर्ड (कोलिन, एट अल., 1985) ने आगे बताया:
[जेम्स] स्टाइनबर्ग [हर्मिटेज सर्विस ऑर्डर के प्रमुख]
अश्लील फिल्मों को नष्ट करने की घटना एक अन्य घटना में घटी।
इन्हें बनाए जाने के कुछ महीनों बाद। स्टाइनबर्ग यह भी कहते हैं कि
चर्च के डिल्डो संग्रह को या तो बेच दिया गया या नष्ट कर दिया गया, उन्होंने कहा।
उसे पक्का पता नहीं है कि कौन सा।
“चर्च का डिल्डो संग्रह।” बेचा जाए या नष्ट किया जाए। आमीन।
“यदि अब आप अपनी भजन पुस्तिका का मध्य पृष्ठ खोलेंगे, तो आइए हम सब मिलकर गाएं, ‘हे ईश्वर, हे ईश्वर, मैं आ रहा हूँ।’”
दिलचस्प बात यह है कि दा की अधोवस्त्र मॉडलिंग करने वाली बेटियों में से एक,
शॉनी फ्री जोन्स हाल ही में एल.ए. कॉन्फिडेंशियल और बेवॉच में एक अभिनेत्री के रूप में दिखाई दी हैं।
बहरहाल, 1985 तक इस संप्रदाय के लगभग एक हजार सक्रिय सदस्य थे—जिनमें से एक तिहाई कैलिफोर्निया के मारिन काउंटी में रहते थे—और इसके अलावा 20,000 सदस्य इसकी मेलिंग सूचियों में शामिल थे। (आज भी सक्रिय सदस्यों की संख्या लगभग एक हजार ही है।) बताया जाता है कि वहां के सदस्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपनी आय का 10 से 15% हिस्सा नए चर्च को दान करें; आध्यात्मिक क्रम के उच्च स्तरों में, उनसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करने का अनुरोध किया जाता था।

हालांकि, उसी वर्ष, पूर्व शिष्यों की कथित चिंताएं सार्वजनिक रूप से सामने आने लगीं, जैसा कि सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल और एग्जामिनर में प्रकाशित लेखों की एक श्रृंखला में उजागर हुआ:

[दा, उनका दावा है] कि वे उन्हें अश्लील फिल्में दिखाते थे-
और गुदा मैथुन में संलग्न होती हैं—कभी-कभी उसके सामने भी, और
कभी-कभी उन्हें अपने बेडरूम में जाने के लिए कहते हैं (लैटिन में,
1985ए)।

बचपन में, [दा के एक भक्त] का यौन शोषण किया गया था।
पड़ोसी। उसकी यौन संबंधी चिंताओं से उबरने में मदद करने के लिए उसने कहा, दा
फ्री जॉन ने उसे समूह के तीन सदस्यों के साथ मुख मैथुन करने के लिए कहा।
उसके बाद गुरु ने खुद उसके साथ यौन संबंध बनाए।
“मैं बहुत परेशान थी,” उसने कहा। “सब खत्म होने के बाद, मैं चली गई।”
पार्किंग में जाकर एक खुली कार मिली, और उसमें DA AVATAR, DA BOMB, DA BUM 145 लिखा था।

खूब रोई और सो गई। मुझे गहरा सदमा लगा था। कई साल बीत गए।
बाद में मैंने इसे स्वीकार कर लिया” (बटलर, 1985ए)।
बाद के वर्षों में, दा पार्टी एनिमल के अनुयायियों के एक विवाहित जोड़े को कथित तौर पर उनके घर आमंत्रित किया गया था, लेकिन वहां उन्होंने गुरु को बिस्तर पर बीयर पीते हुए और सिगरेट के धुएं से घिरे हुए पाया।
कुछ ही समय में, अन्य अनुयायियों द्वारा पत्नी को कथित तौर पर गुरु द्वारा यौन शोषण के लिए तैयार किया गया। "और ऐसा ही हुआ।"
हालांकि, अपने "अतार्किक भावनाओं" को दबाकर, पति ने जल्द ही इसके लिए एक उपयुक्त तर्क ढूंढ लिया, और खुद को यह विश्वास दिला लिया कि गुरु उसे केवल अपनी पत्नी से भावनात्मक रूप से लगाव न रखने की शिक्षा दे रहे थे।
फिर भी, इस बात को लेकर संदेह बना हुआ है कि क्या इन्हीं पाठों को किसी आसान तरीके से सीखा जा सकता था, और इसके विपरीत भी।
एक बात है जो मुझे लगातार परेशान करती रही है
उस घटना ने मुझ पर शराब पीने का दबाव डाला।

मुझे शराब पिलाने की कोशिश में। मुझे अब भी लगता है कि मेरे साथ गलत हुआ। इस मामले में हेरफेर किया गया। मुझे भी यह कभी पूरी तरह समझ नहीं आया। हमें पूरी घटना को चुप रखने के लिए क्यों कहा गया (फ्यू में-
एर्स्टीन, 1992)।
जी हां, सभी प्रश्न रोचक हैं।
* * *
1980 के दशक के मध्य तक, दा गुरु के अनुयायी (दाइस्ट) न्यूयॉर्क के उत्तरी हिस्से में "शेरों का बगीचा" नामक एक स्कूल चलाते थे। वहाँ के विद्यार्थियों में से एक तेरह वर्षीय बच्चे और उसके सहपाठियों ने एक बॉलिंग बॉल को सजाया और उसकी पूजा की। जैसा कि स्वयं उस विद्यार्थी ने कहा:
मुझे हमेशा गेंद से एक प्रेम का भाव महसूस होता था और मैं उसी गेंद से खेलता था। यह याद रखते हुए कि गुरुजी इसे एक दिन जरूर स्पर्श करेंगे और
इस पर अपना ध्यान दें (लेक काउंटी में, 1985)।
जहां तक मेरी बात है, यह मुझे 70 के दशक के सिटकॉम, व्हाट्स हैपनिंग!! के साथ बड़े होने की याद दिलाता है। विशेष रूप से,
वह प्रकरण जिसमें रिरन एक "पंथ" द्वारा "ब्रेनवाश" हो गया और अंततः राल्फ नाम के एक सलाद के पत्ते की पूजा करने लगा।
तब यह बात अब से ज़्यादा मज़ेदार लगती थी। (यह पता नहीं कि दा की बॉलिंग बॉल का कोई नाम था या नहीं।)
146 गुरुओं का पर्दाफाश

* * *
किसी भी बंद समाज में, जिसका संचालन "मानव रूप में दिव्य स्वामी" द्वारा किया जाता है, यह निश्चित रूप से दुर्लभ होगा कि साथियों के दबाव में आकर कोई भी सदस्य "सम्राट के वस्त्रों की गुणवत्ता" पर खुले तौर पर सवाल उठाए। वास्तव में, जैसा कि दा के समुदाय के पूर्व निवासियों ने आरोप लगाया है:
जो कोई भी [आदि दा] के अत्याचारों के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत करता है,
जल्दी से वापस भेज दिया गया (एलियास, 2000ए)।
एलियास ने स्वयं 1970 के दशक के उत्तरार्ध में नारोपा में पढ़ाया (बॉब, 2000),

और बाद में 80 के दशक की शुरुआत में डॉन हॉर्स प्रेस में एक टाइपसेटर के रूप में काम किया।

एक अन्य अवसर पर, दा गुरु से उनके स्पष्ट अहंकार के स्रोत के बारे में पूछा गया। समुदाय के एक पूर्व सदस्य ने उनके जवाब का विवरण दिया:

मैं यह सब सिर्फ दिखावा करता हूँ... झील में हालात इससे कहीं ज्यादा खराब हो सकते थे।

काउंटी, 1985)।

दरअसल, जोन्स ने खुद कहीं और दावा किया है कि उनके व्यवहार सतही तौर पर चाहे जैसे भी दिखें, वे फिर भी "हमेशा सिखाते" रहते हैं।

फिर भी, जिन संदर्भों में वही कथित व्यवहार प्रकट होते हैं, लेकिन जिन्हें महज एक "कार्य" कहकर उचित नहीं ठहराया जा सकता, वे वास्तविक प्रेरणाओं को उजागर करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रतिद्वंद्वी गुरु द्वारा संचालित हवाई स्थित अपने आश्रम के निकट स्थित आश्रम से आने वाले शोर को लेकर हुए विवाद में दा की कथित प्रतिक्रिया पर विचार करें। जोन्स के अनुयायियों द्वारा नव वर्ष की एक बड़ी पार्टी में इतना शोर मचाने का असफल प्रयास किया गया कि उनका प्रतिद्वंद्वी शोर अध्यादेश का समर्थन करने के लिए बाध्य हो जाए।

जोन्स कथित तौर पर पूरी तरह से क्रोधित हो गए, गाली-गलौज करने लगे और आलोचना करने लगे।

जब वह उन्हें इस विचार के लिए दोषी ठहरा रहा था, तब उसने

उन्होंने स्वयं इसका समर्थन किया था।

“वह हमेशा यही उपदेश देते थे कि लोगों को ऐसे विचार नहीं लाने चाहिए।”

जीवन जीने की एक रणनीति या योजना। यहाँ वह मुझसे मांग कर रहा था, 'मुझे एक दो'

इस आदमी को पाने के लिए 'रणनीति'” (नेरी, 1985)।

या फिर जोन्स की कथित प्रतिक्रिया पर विचार करें (जिसकी रिपोर्ट मिल वैली रिकॉर्ड में छपी थी) जब एक निर्माण परियोजना पर काम करने वाले श्रद्धालु मजदूरों ने उनके लिए घर बनाने में कई दिनों तक सोलह-सोलह घंटे काम किया था:

काम के व्यस्त कार्यक्रम और कम वेतन ने उन पर बुरा असर डाला।
कार्यबल। क्रिसमस के दिन, [मार्क] मिलर का कहना है कि उन्होंने बताया
जोन्स कहते हैं, "लोग थक चुके हैं। उन्हें आराम की जरूरत है।" मिलर कहते हैं।
जोन्स ने जवाब दिया, "वे मेरे लिए तब तक काम करेंगे जब तक वे थककर गिर न जाएं।"
तब वे उठेंगे और थोड़ा और काम करेंगे" (कोलिन, एट अल., 1985)।
बेशक, करुणा की ऐसी स्पष्ट कमी पहले भी कई बार प्रदर्शित हो चुकी है - भले ही दा अवतार द्वारा नहीं, दा स्क्रूज द्वारा।
* * *
1980 में, केन विल्बर ने आदि दा की पुस्तक "ईश्वर के अस्तित्व का वैज्ञानिक प्रमाण जल्द ही व्हाइट हाउस द्वारा घोषित किया जाएगा!" के लिए एक चापलूसी भरी प्रस्तावना लिखी। (मैंने विल्बर के चरित्र, विचारों और समुदाय से जुड़ी समस्याओं पर इस पुस्तक के सहयोगी भाग में विस्तार से चर्चा की है।)
(यह वाली किताब, "नॉर्मन आइंस्टीन": केन विल्बर का विघटन।) इसका अधिकांश भाग यह तर्क देने में व्यतीत हुआ कि दा अपने चारों ओर कोई हानिकारक "पंथ" नहीं बना रहे थे, लेकिन विल्बर ने निम्नलिखित प्रशंसा को शामिल करने के लिए भी जगह निकाली:
मेरी राय में, हमारे पास दा फ्री जॉन के रूप में,
परम आध्यात्मिक गुरु और धार्मिक प्रतिभा के धनी।
मैं सहमत हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा यह कहने का मतलब हल्के में लेना नहीं है। मैं यूँ ही नहीं बोल रहा हूँ।
दा फ्री के कार्यों को "प्रचारित" करने के लिए शक्तिशाली वाक्यांशों का प्रयोग करना
जॉन, मैं बस आपको अपनी सोची-समझी राय दे रहा हूँ:
मेरे विचार से दा फ्री जॉन की शिक्षा किसी भी अन्य शिक्षा से अतुलनीय है।
किसी भी काल, किसी भी स्थान या किसी अन्य आध्यात्मिक नायक के बारे में।
किसी भी विचारधारा के समय।
अतिशयोक्ति या "मीठी भक्ति" का सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ है।
एक आलोचक (काज़लेव, 2003) ने इसे उचित रूप से कहा - 1985 में विल्बर ने आदि दा की पुस्तक 'द डॉन हॉर्स टेस्टामेंट' के शुरुआती अंश के लिए भावुक पाठ का

योगदान दिया:
यह महज मेरी निजी राय नहीं है; यह पूरी तरह से
यह एक स्पष्ट तथ्य है, जो किसी भी बुद्धिमान और संवेदनशील व्यक्ति के लिए उपलब्ध है।
और सत्यनिष्ठा: डॉन हॉर्स टेस्टामेंट सबसे अधिक है-
स्थिर, सबसे गहन, सबसे पूर्ण, सबसे मौलिक और सबसे
अब तक लिखे गए सबसे व्यापक आध्यात्मिक ग्रंथों में से एक और
मानव पारलौकिक आत्मा द्वारा स्वीकार किया गया।
स्पष्टतः, चेतना अध्ययन के क्षेत्र में सबसे सम्मानित "प्रतिभाशाली" (जैसा कि विल्बर को पिछले पच्चीस वर्षों से माना जाता रहा है) से इस तरह की उत्साहपूर्ण प्रशंसा को पढ़ने वाला कोई भी सच्चा साधक 148 गुरुओं का सार उजागर करना

शायद कोई व्यक्ति ऐसे अद्वितीय, "महानतम जीवित" सिद्ध पुरुष की शिक्षाओं का स्वयं अनुभव करने के लिए प्रेरित हो सकता है। वास्तव में, यदि मुझे अपनी (उस समय किशोरावस्था में) खोज के दौरान उन प्रशंसाओं का पता चला होता, और चेतना अध्ययन समुदाय में विल्बर की प्रतिष्ठा से अवगत और अत्यधिक प्रभावित होता, तो मैं स्वयं भी मूर्खतापूर्ण ढंग से ऐसी अतिशयोक्तियों को गंभीरता से लेकर आदि दा के सामुदायिक अनुशासन का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता था।
तो यह कितना परेशान करने वाला है कि 1987 में योगा जर्नल के साथ एक साक्षात्कार का पता चलता है, जो डॉन हॉर्स के स्खलन के कुछ ही वर्षों बाद का है, जिसमें विल्बर ने अपनी राय व्यक्त की थी कि आदि दा की "पूरी स्थिति
बहुत समस्याग्रस्त हो गया।" लगभग एक दशक बाद (1996a), उन्होंने समझाया: "'समस्याग्रस्त' वह व्यंजना थी जिसका उपयोग उस समय के समाजशास्त्री जॉनस्टाउन के लिए कर रहे थे।"
मैं स्वयं समाजशास्त्री नहीं हूँ, इसलिए मुझे उस "असुरक्षित शब्द" का अर्थ बिना किसी के द्वारा समझाए कभी समझ नहीं आता... भले ही यह बात मुझे यहाँ कई वर्षों बाद समझ आई। मुझे लगता है कि इस मामले में मैं अकेला नहीं हूँ।
कोई बात नहीं: तीन साल बाद, 1990 में, विल्बर दा की शिक्षाओं के लिए समर्थन देने के लिए वापस आ गए, इस बार विनम्रतापूर्वक शीर्षक वाली पुस्तक "द डिवाइन

इमर्जेंस ऑफ द वर्ल्ड-टीचर" के लिए:
हार्ट-मास्टर दा का आयोजन खुशी का अवसर है।
क्योंकि, निःसंदेह, वह पहले पश्चिमी व्यक्ति हैं।
विश्व के इतिहास में प्रकट होने वाला अवतार.... उनकी शिक्षाएँ
इसमें अलौकिक ज्ञान का सबसे सघन भंडार समाहित है।
मुझे विश्वास है कि यह डोम कहीं भी, आध्यात्मिक साहित्य में पाया जा सकता है।
दुनिया, आधुनिक हो या प्राचीन, पूर्वी हो या पश्चिमी (बॉन्ड में-
(1990; इटैलिक्स जोड़े गए)।
ध्यान दें कि उपरोक्त उद्धरण में, विल्बर स्पष्ट रूप से खुद को न केवल दूसरों के ज्ञान के स्तर पर राय देने के लिए, बल्कि "बिना किसी संदेह के" उनकी अवतार स्थिति की पुष्टि करने के लिए भी योग्य मान रहे हैं।
उपरोक्त लेखक बोंडर (2003) के बारे में—जिन्होंने आदि दा के आशीर्वाद के बिना स्वतंत्र रूप से शिक्षक का दर्जा ग्रहण कर लिया है—विल्बर ने हाल ही में घोषणा की है:
सैनियल बोंडर उन लोगों में से एक हैं जिनमें चेतन सिद्धांत विद्यमान है।
जागृत।
फिर से, इस कथन की भविष्यवाणीय प्रकृति पर ध्यान दें, यह केवल राय की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि एक निर्विवाद, स्पष्ट कथन है: DA AVATAR, DA BOMB, DA BUM 149

किसी दूसरे व्यक्ति के आध्यात्मिक ज्ञान का मूल्यांकन करना—मानो स्वयं विल-बर दूसरों के मन में झाँक सकता हो, या उनकी चेतना के विकास की डिग्री को अंतर्ज्ञान से जान सकता हो।
हालांकि, कुछ अन्य लोगों ने इस संभावना पर, यहां तक कि सैद्धांतिक रूप से भी, सवाल उठाया है कि कोई व्यक्ति इस तरह की अतिरंजित अंतर्दृष्टि को अंजाम दे सकता है:
रहस्यवादी और रहस्यवाद के प्रति सहानुभूति रखने वाले लेखक दोनों ही
अगर वे यह सोचते हैं कि यह पता लगाने का कोई तरीका है तो यह सरासर गलत है कि-

दूसरे व्यक्ति को कोई वास्तविक अनुभव हुआ हो या बस पहले से ही...
ऐसा लगता है कि उसके पास एक था...
एक व्यक्ति बिना कभी किसी पूर्व प्रेमी के भी उत्कृष्ट प्रेम कविताएँ लिख सकता है।
एक तुलनीय प्रेमी रहा है; यह लेखक का एक कुशल लेखक के रूप में कौशल है।
यही बात उनके शब्दों को विश्वसनीय बनाती है, न कि एक प्रेमी के रूप में उनका कौशल।
रहस्यवादी द्वारा अपने अनुभव के बारे में की गई बातचीत कुशल हो सकती है या अनाड़ीपन, लेकिन इससे उसकी वास्तविक स्थिति में कोई सुधार या कमी नहीं आती। अनुभव (भारती, 1976)।
उपरोक्त "समस्याग्रस्त" योग जर्नल लेख से महज सात साल पहले, विल्बर (दा, 1980 में) ने एक बार फिर विडंबनापूर्ण ढंग से प्रिंट में "बहुत अधिक विरोध" किया था कि आदि दा अपने आसपास कोई हानिकारक वातावरण नहीं बना रहे थे:
[डा] “पंथवादी” रवैये की इतनी आलोचना कहीं नहीं करता जितना कि
वह अपने आसपास के लोगों के प्रति ऐसा व्यवहार करता है... मैंने ऐसा कभी नहीं सुना।
दा फ्री जॉन किसी की भी उतनी ही ज़ोरदार आलोचना नहीं करते जितनी ज़ोरदार तरीके से वे करते हैं।
जो लगातार बचकाने रवैये से उसके पास आते थे
किसी "पंथिक नायक" का पक्ष जीतने की कोशिश करना।
दा के अन्य प्रशंसक—यहां तक कि वे भी जिन्होंने उन्हें "सभी धर्मों में निहित सत्य की परम अभिव्यक्ति" माना है—हालांकि, उनके अनुयायियों में ठीक वही पाते हैं जो विल्बर स्पष्ट रूप से देखना नहीं चाहेंगे:
समस्या यह थी कि वे बहुत ज्यादा मिलनसार थे, बहुत ज्यादा
खुशमिजाज, और हद से ज्यादा अच्छे। सीधे शब्दों में कहें तो, वे सभी व्यस्त थे।
अपनी ही खुशी का बेतहाशा पीछा करते हुए। इतना ही नहीं, बल्कि
अगर मेरी आंखें मुझे धोखा नहीं दे रही थीं, तो वे सभी शायद ऐसे ही दिख रहे थे।
वे एक ही मोहल्ले या एक ही कॉलेज से आए थे।
यह वाकई अजीब था। और बहुत ही बेचैन करने वाला भी। मेरा मतलब है,
वे सभी दिखने और बोलने में लगभग एक जैसे थे।

हे भगवान, ये तो पॉड लोग हैं, मैंने सोचा (थॉमस अल्बर्न,
[ऑस्टिन, 1999] में; इटैलिक्स जोड़े गए)। 150 गुरुओं को उजागर करना

हसन (1990) इस प्रकार की घटनाओं के लिए एक पूरी तरह से तर्कसंगत व्याख्या देते हैं:
एक कारण यह भी हो सकता है कि [कथित] पंथवादियों का एक समूह हमला कर दे।
एक भोले-भाले बाहरी व्यक्ति के लिए, जो उतना ही डरावना या अजीब है जितना कि हर किसी के पास सिम है-
उनकी अजीबोगरीब आदतें, पहनावे की शैलियाँ और बोलने का तरीका भी समान था।
बाहर से देखने वाला व्यक्ति नेता के व्यक्तित्व को देख रहा है।
मॉडलिंग की कई परतों से होकर गुजरा।
आदि दा और उनके अनुयायियों से मिलने से पहले, अल्बर्न ने न केवल दा की पुस्तकों के लिए संक्षिप्त टिप्पणी की थी, बल्कि उनमें से एक पुस्तक की प्रस्तावना भी लिखी थी। "मृत्यु के चरणों" की विशेषज्ञ एलिजाबेथ कुबलर-रॉस और बारबरा मार्क्स-हबर्ड ने भी पुस्तकों के लिए संक्षिप्त टिप्पणी की है। टाइम पत्रिका ने कुबलर-रॉस को बीसवीं सदी के "100 सबसे महत्वपूर्ण विचारकों" में से एक माना है। मार्क्स-हबर्ड, द फाउंडेशन फॉर कॉन्शियस इवोल्यूशन की अध्यक्ष और संस्थापक सदस्य हैं; बकमिनस्टर फुलर ने एक बार उन्हें "भविष्यवाद की अवधारणा पर सबसे अधिक जानकार व्यक्ति" कहा था।
बुरा बहुत बुरा।
विल्बर ने दा सेक्लूसिव अवतार (जो उस समय तक फिजी में एकांतवास में थे) के संबंध में अपनी उपरोक्त (1996a) चेतावनियों का समापन इस सापेक्ष सावधानी के साथ किया कि जब तक “विश्व शिक्षक विश्व में प्रवेश करने के लिए सहमत नहीं हो जाते”, तब तक दा के लेखन के विद्यार्थी के रूप में उनसे “सुरक्षित दूरी” बनाए रखना ही बेहतर होगा, न कि उनके समुदाय के निवासी के रूप में। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं किया गया कि आदि दा का अपने द्वीप एकांतवास से “विश्व में पुनः प्रवेश” उनकी शिक्षाओं के “समस्याग्रस्त” पहलुओं को कैसे कम करेगा।
तुलनात्मक रूप से, क्या जिम जोन्स का गुयाना में अपने एकांत कृषि समुदाय से

दुनिया में वापस आना उनकी शिक्षाओं को सुरक्षित बना देता? यदि नहीं, तो आदि दा के "समस्याग्रस्त" (विल्बर का शब्द) पहलुओं का समाधान इसी तरह का वापसी क्यों होता? क्या यह पूरी दुनिया के लिए बेहतर नहीं है—भले ही उनके दुर्भाग्यपूर्ण, पहले से ही धोखे में आए अनुयायियों के लिए नहीं—कि ये असंबद्ध लोग खुद को अलग-थलग कर लें?

बहरहाल, विल्बर की उपरोक्त किसी भी नरम चेतावनी को उनकी किसी भी पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है, जहाँ वे

शायद “एक लाख” लोगों तक पहुँच गया होगा (विल्बर, 2000a)□ बल्कि, kw द्वारा उस संस्करण को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों के संदर्भ में

वास्तविकता यह है कि (1996a) पत्र, इस लेखन के समय, केवल उनके प्रकाशक/लेखक की वेबसाइट पर मौजूद है... अभिलेखागार अनुभाग में छिपा हुआ है, उनके कई सम्मानों के साथ होम पेज साझा नहीं कर रहा है।

अवतार से, बम से, आवारा से 151

बाद में विल्बर (1998a) ने आदि दा समुदाय को एक व्याख्यात्मक खुला पत्र प्रस्तुत किया। वह पत्र गुमनाम रूप से पोस्ट किया गया था (अर्थात, स्पष्ट रूप से

यह लेख (स्वयं केन द्वारा नहीं) शम्भाला केडब्ल्यू फोरम के खुले चर्चा क्षेत्र में 8/1/01 को, घटना के पूरे तीन साल बाद प्रकाशित हुआ था। (यह फोरम स्वयं 2000 के आरंभ से अस्तित्व में है।) वहाँ उन्होंने दा रियलाइज़र पर अपनी स्थिति स्पष्ट की, 1996 से उनके द्वारा दिए गए किसी भी संभावित अनुमान से काफी पीछे हटते हुए, और स्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने दा को रियलाइज़र के रूप में देखने (या उनके प्रति प्रेम या भक्ति) का त्याग नहीं किया है। बल्कि, उन्होंने तर्क दिया कि दा के "विश्व शिक्षक" होने के नाते, उन्हें दुनिया में अपनी उपस्थिति बनाए रखने और समुदाय द्वारा "और भी अधिक आक्रामक प्रचार कार्यक्रम" शुरू करने की आवश्यकता है, न कि उनके निरंतर एकांतवास की।

एक "और भी आक्रामक प्रचार कार्यक्रम।" क्या किसी "समस्याग्रस्त" स्थिति को सकारात्मक रूप देने और अधिक लोगों तक बात पहुंचाने के लिए ऐसा किया जा रहा है, जिससे और अधिक नुकसान हो? या शायद संभावित अनुयायियों को यह चेतावनी दी जा रही है कि वे किस मुसीबत में फंस रहे हैं, मानो इससे समुदाय से जुड़ी सभी

समस्याएं दूर हो जाएंगी? (क्या "जिम जोन्स को चेतावनी लेबल लगाना" उनकी "समस्याग्रस्त" सनक का समाधान होता?)
फिर से, जैसा कि बॉब (2000) में पोस्ट करने वालों ने - जो स्वयं प्रतिभा का दावा नहीं करते हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से सामान्य ज्ञान में निपुण हैं - ने अंतर्दृष्टिपूर्ण ढंग से (और स्वतंत्र रूप से) बताया है:
मुझे यह हास्यास्पद लगता है कि विल्बर इसे अधिक महत्व देता प्रतीत होता है।
दा की सार्वजनिक मंचों पर उपस्थित न होने की आलोचना करने की तुलना में वह
यह विश्वास के गंभीर [कथित] दुरुपयोगों की जांच करता है।
और सत्ता का दुरुपयोग जो [कथित तौर पर] किया गया है
दा द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा के बहाने।
दा द्वारा उत्पन्न की गई समस्याओं के बारे में अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया गया है [रिपोर्ट की गई है]।
उसका अपना जीवन और उसके अनुयायियों का जीवन, यह पूरी तरह से असंगत है।
दा के किसी भी मूल्यांकन के लिए प्रासंगिक है, चाहे वह स्वीकार करे या न करे।
केन को दुनिया में बाहर निकलने की चुनौती दी गई है। किसे परवाह है!
कोई भी दा को अपना प्रभाव बढ़ाते हुए क्यों देखना चाहेगा?
क्या आप अधिक व्यापक श्रोताओं से बात कर रहे हैं?
एकदम सही।
विल्बर द्वारा दाइस्त समुदाय को लिखे गए उपरोक्त (1998a) खुले पत्र का पूरा पाठ, आध्यात्मिक जगत के "सबसे प्रतिभाशाली" लोगों द्वारा दी गई सलाह की गुणवत्ता के बारे में अपनी निराशा को दूर करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। संक्षेप में, विल्बर कहते हैं कि उन्हें अपने पिछले 152 गुरुओं को अपमानित करने के कार्यों पर न तो पछतावा है और न ही वे उन्हें वापस लेते हैं।

आदि दा के समर्थन में; यह केवल सांस्कृतिक और कानूनी कारणों से (अर्थात्, "जब हालात बिगड़ें तो स्पष्ट सुरक्षा के लिए") है कि वे अब सार्वजनिक रूप से लोगों को दा का अनुसरण करने की एकमुश्त सिफारिश नहीं कर सकते; कि वे प्रसन्न हैं कि उनके लेखन ने लोगों को दा अवतार तक पहुँचाया है और आशा करते हैं कि भविष्य में भी उनका यही प्रभाव बना रहेगा; और कि वे अब भी "तैयार छात्रों" को दा के शिष्य/

भक्त बनने की सलाह देते हैं।
उपरोक्त जानकारी को वितरित करने के डेढ़ महीने बाद
आदि दा समुदाय को ज्ञान प्रदान करने के संदर्भ में, विल्बर (1998b) ने एक अन्य खुले पत्र में अपनी स्थिति की पुनः पुष्टि की, जो इस लेखन के समय उनकी वेबसाइट पर प्रकाशित है। वहाँ, वे—शायद ही कभी देखने को मिलने वाली अस्पष्टता के साथ —कहते हैं कि "आदि दा के विचित्र मामले की वास्तविक कठिनाई यह है कि गुरु सिद्धांत को हमारी संस्कृति द्वारा न तो समझा जाता है और न ही स्वीकार किया जाता है" (इटैलिक में जोड़ा गया)। वे आगे कहते हैं (फिर से इटैलिक में जोड़ा गया) कि
उन व्यक्तियों के लिए जो इस बात को भली-भांति समझते हैं
साहसिक कार्य की जोखिम भरी प्रकृति के बावजूद, जो लोग इसके प्रति प्रबल आकर्षण महसूस करते हैं-
अपने जीवन को पूरी तरह से आध्यात्मिक शक्ति के प्रति समर्पित करना।
गुरुजी, मैं निश्चित रूप से आदि दा की सिफारिश कर सकता हूँ.... वे उनमें से एक हैं। मेरी राय में, वे सर्वकालिक महानतम आध्यात्मिक ज्ञानी हैं।
इसके अलावा ध्यान दें कि संबंधित शीर्षक, "द स्ट्रेंज केस ऑफ"
"फ्रैंकलिन जोन्स" शब्द का प्रयोग 1996 में डेविड लेन और स्कॉट लोवे ने दा/जोन्स और उनके आश्रम के माहौल का खुलासा करते हुए किया था। अगर यह 90 के दशक के मध्य में प्रचलित कोई आम मुहावरा नहीं था, तो ऐसा लगता है कि विल्बर को आदि दा के समुदाय के भीतर कथित तौर पर चल रही गतिविधियों पर उनके पहले के गहन विश्लेषण की जानकारी रही होगी। हालांकि, उस जानकारी को ठीक से आत्मसात करने के बजाय, उन्होंने स्पष्ट रूप से उसी का अपना, कथित तौर पर अधिक मूल्यवान संस्करण प्रस्तुत करना उचित समझा है—भले ही वे केवल एक सुरक्षित दूरी से देख रहे हों, न कि प्रत्यक्ष निवासी के रूप में। यह दुखद है, क्योंकि लोवे और लेन ने स्थिति की वास्तविक जानकारी दी है, जबकि विल्बर ऐसा करने में लगातार बुरी तरह विफल रहे हैं।
इसके अलावा, यह भी माना जा सकता है कि दा की आध्यात्मिक स्थिति की प्रशंसा करते हुए, विल्बर का तात्पर्य उस व्यक्ति की प्रारंभिक अंतर्दृष्टियों की तुलना में बाद की अनुभूतियों से अधिक था, जैसे कि निम्नलिखित:
मुझे याद है एक बार कुछ दिनों के लिए मुझे एक दुनिया का एहसास हुआ था

जो हमारे चंद्रमा पर जीवित रहने में कामयाब रहा। यह एक अलौकिक घटना थी।
या वह सूक्ष्म जगत जहाँ प्राणियों को जन्म लेने के लिए भेजा जाता था
पृथ्वी या अन्य दुनियाओं में, और फिर उनके शरीरों का आनंद लिया गया DA AVATAR, DA BOMB, DA BUM 153

चंद्रमा पर पुरानी पीढ़ी द्वारा नरभक्षी रूप से, या
उन्हें शारीरिक और मानसिक गुलामों की तरह काम करने के लिए मजबूर किया गया (दा,
1995).
लेकिन बाद में सामने आई बातों में भी अपनी समस्याएं हैं:
1993 में, आदि दा ने खुलासा किया कि रामकृष्ण और उनके सिद्धांत-
उनके प्रिय शिष्य स्वामी विवेकानंद, गहरे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं।
उनके शारीरिक मानव अवतार का वाहन (दा में, 1995)।
“रामकृष्ण, भाग II: बूबी की वापसी।”
बेशक, अगर कोई "महानतम जीवित ज्ञानी" आदि दा द्वारा वर्णित "आकाशीय चंद्र नरभक्षी दासों" के दर्शनों को गंभीरता से न ले, तो आदि दा की मानसिक स्थिरता पर गंभीर संदेह पैदा हो जाता है। आखिरकार, संशयवादियों ने लंबे समय से यह सही ही माना है कि किसी भी माध्यम (जैसे, ब्लावत्स्की) या सिद्धि प्राप्त प्रतीत होने वाले ऋषि के "वस्तुओं को प्रकट करने" में "धोखाधड़ी" करते पकड़े जाने का एक भी मामला उस व्यक्ति को पहले से दिए गए हर "चमत्कार" पर संदेह पैदा करता है। इसी तरह, यदि किसी व्यक्ति के ज्ञानोदय का एक भी पहलू मतिभ्रम के रूप में देखा गया हो और उसे वास्तविक मान लिया गया हो, तो यह संभावना बनी रहती है कि यह सब मनोवैज्ञानिक भ्रम का परिणाम हो, न कि आध्यात्मिक।
तो आपको खुद से यह सवाल पूछना होगा: क्या आपको विश्वास है कि हमारे चंद्रमा के खगोलीय समकक्ष पर बी-मूवी की तरह "नरभक्षी स्वामी/दास" मौजूद हैं?
विल्बर को कम से कम (दा, 1985 में) कुल मिलाकर कोई संदेह नहीं प्रतीत होता है: मुझे इस व्यक्ति के बारे में उतना ही यकीन है जितना कि मैंने अपने द्वारा लिखी गई किसी भी बात के बारे में है।
दस।

बहुत खूब कहा। मैं भी आदि दा के अद्वितीय ज्ञान, "आकाशीय चंद्रमा नरभक्षी दासों" और महान चरित्र के बारे में उतना ही आश्वस्त हूँ जितना कि विल्बर द्वारा लिखी गई किसी भी बात के बारे में।

* * *

पिछले कुछ वर्षों में, आदि दा ने कई "चमत्कारों" का श्रेय लिया है, जैसे कि "एक चमकदार कोरोना जो पूरे दिन सूर्य के चारों ओर बना रहा" (फ्री जॉन, 1974 में)। हालाँकि, कोई भी वैज्ञानिक या संशयवादी प्रकृति पर चमत्कारी नियंत्रण के प्रमाण के रूप में ऐसे किस्से-कहानियों वाले दावों को कभी स्वीकार नहीं करेगा। और इसका एक ठोस कारण भी है, विशेष रूप से लोवे के विचारों को देखते हुए।

(1996) उसी “चमत्कारी घटना” की प्रत्यक्षदर्शी गवाही: 154 गुरुओं का पर्दाफाश

मैं उस पूरी दोपहर बाहर ही था। मैंने न केवल देखा था
कुछ भी असामान्य नहीं था, लेकिन मेरे आस-पास कोई भी नहीं था जो मेरी बात सुन सके।
उस चमत्कार के बारे में किसी ने कुछ भी कहा था
उस समय ऐसा होने की बात कही जा रही थी! मैं भेदभाव करने की कोशिश नहीं कर रहा था-
पेचीदा या मंदबुद्धि, लेकिन यह मेरे लिए बहुत ज्यादा साबित हुआ। अगर एक महान चमत्कार हुआ था, उस समय इसका जिक्र क्यों नहीं किया गया?
मैंने कई श्रद्धालुओं से पूछा कि उन्होंने क्या देखा और क्यों।
उन्होंने इस ओर सबका ध्यान आकर्षित नहीं किया था, लेकिन उन्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।
संतोषजनक उत्तर मिले। धीरे-धीरे यह बात सामने आई कि मैं अकेला नहीं था।
इस चमत्कार को न देख पाने में; समुदाय पर मेरे संशयवादी साथियों को...
इसी तरह निति के हाशिये पर रहने वाले लोग भी अंधेरे में थे।
हो सकता है कि समुदाय के कुछ सदस्यों को कोई (प्राकृतिक) खगोलीय प्रभाव दिखाई दिया हो। और वे, अपने गुरु की दिव्यता की पुष्टि के लिए बेताब होकर, मामूली संयोगों, वायुमंडलीय अनियमितताओं और इसी तरह की चीजों के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर सकते थे। हालाँकि, इसे चमत्कार कहना भी मुश्किल होगा।

इससे लोवे जैसे समुदाय के उन सदस्यों के बारे में चिंता कम नहीं होती, जिन्होंने उस "प्रमाणित चमत्कार" को नहीं देखा, और जिन्हें कथित तौर पर उस वास्तविकता के समूह संस्करण से सहमत न होने के कारण तुरंत निचले पदों पर भेज दिया गया।
इन सब बातों से मनोवैज्ञानिक सोलोमन एश द्वारा 1950 के दशक में किए गए अनुरूपता पर शोध की याद आती है। उस शोध में, प्रयोग में शामिल प्रतिभागियों को अन्य अज्ञात सहयोगियों के बीच दो रेखाओं की लंबाई का मिलान करने के लिए कहा गया था। जब उन सहयोगियों ने जानबूझकर गलत उत्तर दिए, तो प्रतिभागियों से उनकी प्रतिक्रिया पूछी गई।
वे अक्सर एक ही गलत उत्तर चुनते थे, भले ही
वे इससे सहमत नहीं थे (ललिच, 2004)।
सामाजिक मनोविज्ञान का एक और प्रसिद्ध प्रयोग यह है कि एक प्रतिभागी शहर के व्यस्त फुटपाथ पर खड़ा होकर आसमान की ओर देखता रहता है, मानो किसी खास चीज़ को न देख रहा हो। जब केवल वही एक व्यक्ति ऐसा करता है, तो आस-पास से गुजरने वाले कुछ ही लोग ऊपर की ओर देखेंगे, और शायद ही कोई वास्तव में रुककर उसके साथ ऊपर देखेगा।
लेकिन अगर आप, एक प्रतिभागी के रूप में, अपने साथ कई दोस्तों को उसी स्थान पर ऊपर की ओर देखने के लिए लाते हैं, तो परिणाम बिल्कुल अलग होगा:
साठ सेकंड के भीतर, राहगीरों की भीड़ रुक जाएगी।
समूह के साथ अपनी गर्दन आसमान की ओर उठाने के लिए। उन लोगों के लिए-DA AVATAR, DA BOMB, DA BUM 155

जो लोग आपके साथ शामिल नहीं होते, उन पर ऊपर देखने का दबाव होता है।
कम से कम संक्षेप में लगभग अप्रतिरोध्य होगा (सियाल्डिनी, 2001)।
दरअसल, स्टेनली मिलग्राम और उनके सहयोगियों द्वारा किए गए एक प्रयोग में, 80% राहगीर खाली जगह को देखने के लिए आकर्षित हुए थे।
इस संदर्भ में, आदि दा के पहले "आम लोगों" के शिष्यों के महत्व को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। क्योंकि किसी भी आंदोलन की शुरुआत में, पहले अनुयायी कितने उच्च कोटि के हों, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे केवल "सहभागी" हों। जैसे ही इस प्रकार एक छोटा समूह बनता है, अन्य लोग कम से कम एक बार तो

ध्यान से देखेंगे, या पूरी तरह से रुककर देखेंगे, क्योंकि उन्होंने उस समूह के अस्तित्व में ही आपके नए मार्ग की वैधता का सामाजिक प्रमाण देख लिया है।

* * *

दा के "सूर्य कोरोना" के प्रकटीकरण को उनकी स्वयं-प्रकाशित (1974) पुस्तक, "गार्बेज एंड द गॉडेस" में एक दस्तावेजी "चमत्कार" के रूप में फिर से शामिल किया गया था, जिसे उन्होंने स्वयं ही अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार किया था। (यहाँ उल्लेखित लगभग सभी "प्रबुद्ध" हस्तियों ने अपनी रचनाएँ केवल स्वयं-प्रकाशन के माध्यम से ही प्रकाशित करवाई हैं।) और यदि, जैसा कि लोवे संकेत देते हैं, वह "चमत्कार" वास्तव में कभी हुआ ही नहीं, तो दा को यह बात शुरू से ही पता होती। फिर उन्होंने इसे प्रकाशित होने की अनुमति क्यों दी? किसी "पंथ जैसी" अनुयायी संख्या को कम करने की आशा में ऐसी किसी चीज़ को प्रकाशित करना वास्तव में एक दिलचस्प दृष्टिकोण होता, क्योंकि इसका ठीक विपरीत प्रभाव ही हो सकता था।

इसके अलावा, चूंकि विल्बर ने उपरोक्त 1980 और 1985 की प्रस्तावनाएँ लिखने से पहले वह पुस्तक पढ़ी थी—यह उनकी (1977) 'स्पेक्ट्रम ऑफ कॉन्शियसनेस' की ग्रंथसूची में सूचीबद्ध है—तो यह प्रश्न उठता है: क्या इसका अर्थ यह है कि वे उस स्पष्ट रूप से अस्तित्वहीन "चमत्कार" को वैध मान रहे थे? ऐसा मानना ही पड़ेगा, क्योंकि दूसरा विकल्प यह होगा कि विल्बर ने दा को अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों का सटीक वर्णन न करने वाला माना, फिर भी उन्होंने उनकी प्रशंसा में लिखी गई प्रस्तावनाएँ लिखने का विकल्प चुना।

दा का “कोरोना चमत्कार” किसी छल-कपट से नहीं, बल्कि उनके समुदाय के गवाहों की “सम्राट के नए वस्त्र” जैसी रूढ़िवादी मानसिकता के कारण हुआ प्रतीत होता है। फिर भी, यदि आदि दा का ऐसा ही एक “प्रमाणित चमत्कार”, जिसे उनके समाज के सभी सम्मानित सदस्यों ने “देखा” था, अमान्य सिद्ध हो जाए, और फिर भी स्वयं गुरु द्वारा वास्तविक बताया जाए, तो 156 गुरुओं का पर्दाफाश

क्या किसी को न केवल दा की "महान अनुभूति" के संबंध में समुदाय की आम सहमति पर, बल्कि स्वयं दा गुरु द्वारा किए गए शेष दावों पर भी भरोसा रखना चाहिए?

* * *

आदि दा के काम और परिवेश के बारे में विल्बर की विकृत व्याख्याओं को सुनने के बाद, यदि आप चाहें तो 1985 की खुलासा श्रृंखला पढ़ सकते हैं।
इसे www.lightmind.com पर डाइज़्म रिसर्च इंडेक्स में संरक्षित किया गया है।
फिर खुद तय करें कि इस सब पर विल्बर के दृष्टिकोण में कोई वैधता है या नहीं।
या, सीधे शब्दों में कहें तो, खुद से पूछिए कि इतनी आसानी से उपलब्ध जानकारी के बावजूद, कोई भी स्वस्थ दिमाग और शरीर वाला व्यक्ति आदि दा जैसे व्यक्ति के सामने दूसरों को "पूरी तरह से आत्मसमर्पण" करने की सलाह कैसे दे सकता है? भला कौन सा "प्रतिभाशाली" व्यक्ति किसी वातावरण की तुलना जॉनस्टाउन से करेगा, उसे (उसके अपने शब्दों में) "समस्याग्रस्त" बताकर, और फिर भी दूसरों को उसके ईश्वर-पुरुष नेता के सामने "पूरी तरह से आत्मसमर्पण" करने के लिए प्रोत्साहित करेगा?!
परंपरागत समाज के मानकों के अनुसार, [आदि दा] एक तरह से
पागलखाने में बैठा एक आदमी खुद को नेपोलियन बता रहा है जिसने...
उसने कुछ अन्य मरीजों को यह विश्वास दिला दिया कि वह बॉस है। लेकिन
लोग उसके लोक की दीवारों के बाहर घूम रहे थे [अर्थात, उसके]
दुनिया] खिड़कियों पर सलाखों के साथ कहते हैं “हाँ, आपको लगता है कि आप हैं नेपोलियन, लेकिन हमें ऐसा नहीं लगता। आप खुद को सबसे महान होने का दावा करते हैं।
प्रबुद्ध प्राणी सदा से था और सदा रहेगा, लेकिन हम नहीं।
मुझे ऐसा लगता है। यह बात समझ में नहीं आती। पारंपरिक धार्मिक मानकों के अनुसार-
डार्ड्स, तुम तो बिलकुल पागल हो, एकदम सनकी, बिलकुल दिमागी रूप से विक्षिप्त। एकदम सनकी और पागल इंसान..."
एक आदमी पूरी दुनिया के खिलाफ... और लगभग एक हजार लोग।
लोगों ने उसकी एकतरफा रैप (बॉब, 2000) को मान लिया है।
या, जैसा कि एक अन्य निराश पूर्व अनुयायी ने कहा:
कोई कल्पना कर सकता है कि दा ने पिछले जन्म में एक मामूली यूरोपीय नागरिक के रूप में जीवन व्यतीत किया होगा।
एक कुलीन व्यक्ति, अपने गरीब दासों का शोषण करते हुए, सो रहा है
अपनी पत्नियों और बेटियों के साथ, और एक शानदार जीवन व्यतीत करते हुए-

विलासितापूर्ण जीवन का आनंद लिया, सब कुछ ईश्वरीय अधिकार के नाम पर।
राजाओं के लिए। उनके जीवन के अंतिम समय में उचित व्यवहार के आदर्श के रूप में।
बीसवीं सदी में, दा न तो बेहतर प्रतीत होता है और न ही बदतर।
उदाहरण के लिए, मार्लन ब्रैंडो या कीथ रिचर्ड्स (लोवे, 1996)।
"शैतान के लिए सहानुभूति।"
* * *
अवतार से, बम से, आवारा से 157

सैल लुसियाना, जोन्स के साथ 1968 में विज्ञान-विज्ञान के दिनों से लेकर 1976 में उनके मतभेद होने तक घनिष्ठ मित्र थे। दा ने उन्हें "लगभग 'तत्काल ज्ञानोदय'" प्राप्त करने का श्रेय दिया था।
फ्री जॉन, 1974)। उन्होंने आगे (लैटिन, 1985ए में) जोन्स के विश्वदृष्टिकोण के अपने मूल्यांकन को इस प्रकार व्यक्त किया:
इस समय, मुझे लगता है कि वह सचमुच खुद को भगवान समझता है.... अगर आपके पास होता
1972 से अब तक हर इच्छा पूरी की गई है, आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?
अपने आप को?
और फिर भी, "वे उसे अनेक नामों से पुकारते हैं, जबकि वह एक ही ईश्वर है।"
फ्रैंकलिन जोन्स। फ्रैंकलिन, बेंजामिन। फ्रैंकलिन मिंट।
बुब्बा फ्री जॉन। बुब्बा लुई। दा क्विकड्रॉ।
और जॉन को रिहा करो। और पॉल को रिहा करो। और जॉर्ज को रिहा करो। और रिंगो को।
दा लव-आनंदा। दा लव-ब्लिस। दा लव्स-यू, ये-ये-
हाँ।
दाऊ लोलोमा. दाऊ ला'साम्बा. बा-दा-दा-दा-दा ला बाम्बा।
दा डू रन रीरन, दा डू रन रन।
दे डो डो डो, दे दा दा दा।
मास्टर दा। मास्टर जॉन। मास्टर बेट्स। दा डिल्डो।
आदि दा. दा अवतार. दा बम.

दा बम।
धत्।
ज़िपिटी डू डा.
दिवंगत दा हूगीवेसाहूट (नवंबर 2008 में निधन) ने 1980 और 90 के दशक का अधिकांश समय फिजी में रेमंड बर्र की पूर्व स्वामित्व वाली संपत्ति पर बिताया। बताया जाता है कि वहां उनके साथ तीस दीर्घकालिक भक्त और उनकी नौ (9) "पत्नियां" रहती थीं। उन "मामूली अन्य" में सितंबर 1976 के प्लेबॉय सेंटर-
व्हिटनी केन (जूली एंडरसन) का किरदार निभा रही हैं, जो एक पूर्व चीयरलीडर हैं, जिन्हें कथित तौर पर 1970 के दशक में दा अवतार ने उनके टेनिस खेलने वाले, हाई स्कूल के प्रेमी से छीन लिया था, जो उनका एक भक्त भी था।
अच्छा, “ला डी डा।”

अध्याय XXI

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है
भगवान की तरह
(एंड्रयू कोहेन)

एंड्रयू कोहेन सिर्फ एक आध्यात्मिक शिक्षक ही नहीं हैं—वे एक सर्वधर्म समर्थ व्यक्ति हैं।
एक प्रेरक घटना। 1986 में अपने आध्यात्मिक जागरण के बाद से उन्होंने
वह केवल एक ही चीज़ के बारे में जीता, सांस लेता और बोलता था: संभावना।
अज्ञान और अंधविश्वास के बंधन से पूर्ण मुक्ति के लिए-
स्वार्थ और स्वार्थ। उसके निरंतर निवेश को सीमित करने में असमर्थ।
जांच के दौरान, उन्होंने "ज्ञान के रत्न" को देखा है।
हर पहलू से, और एक ऐसी शिक्षा को जन्म दिया जो विशाल और
सूक्ष्म, फिर भी अतुलनीय रूप से प्रत्यक्ष और क्रांतिकारी अपने प्रभाव में-
समझौता (कोहेन, 1999 में “लेखक के बारे में” अनुभाग से);

स्वयं प्रकाशित)।

एंड्रयू कोहेन का जन्म 1955 में न्यूयॉर्क शहर में हुआ था।
उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्ष - या तो पांच से पंद्रह वर्ष की आयु तक (कोहेन, 1992), या तीन वर्ष की आयु से लेकर बीस वर्ष की आयु तक (टार्लो, 1997), यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस पर विश्वास करना चुनते हैं - मनोविश्लेषण से गुजरते हुए बिताए।

158
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 159

जब कोहेन सोलह वर्ष के थे, तब उन्होंने अनंत अंतरिक्ष में "सभी दिशाओं में एक साथ" चेतना के सहज विस्तार का अनुभव किया, साथ ही सभी जीवन की परस्पर संबद्धता और अविभाज्यता के बारे में एक "रहस्योद्घाटन" का भी अनुभव किया।
कुछ वर्षों बाद, परमहंस योगानंद के एक "प्रत्यक्ष शिष्य" (अर्थात, उस व्यक्ति द्वारा जो योगी को उनके जीवित रहते जानता था) ने उन्हें क्रिया योग (कुंडलिनी योग का एक प्रकार) में दीक्षा दी। छह महीने तक उस तकनीक का अभ्यास करने के बाद, कोहेन को कुंडलिनी ऊर्जा का क्षणिक अनुभव और प्रचंड सफेद प्रकाश का दर्शन हुआ।
संगीत के माध्यम से पूर्ण और स्थायी आध्यात्मिक सुख न मिलने की निराशा में (उनके अनुसार) या ढोल वादक के रूप में शीर्ष पर पहुँचने के लिए आवश्यक योग्यता न होने के कारण (उनकी माँ के अनुसार) उन्होंने संगीत की आकांक्षाओं को त्याग दिया और भारत की यात्रा की, जहाँ उनकी मुलाकात अपनी भावी पत्नी (अल्का) से हुई। 1986 में उसी देश में, पूर्व शिक्षकों द्वारा कई बार "धोखा" झेलने के बाद, उनकी मुलाकात अपने गुरु हरि वेंछ लाल (एच. डब्ल्यू. एल.) पूंजा से हुई। पूंजा स्वयं को विख्यात ऋषि रमण महर्षि का प्रबुद्ध शिष्य बताते थे। महर्षि ने स्वयं न केवल किसी और के ज्ञानोदय की पुष्टि नहीं की, बल्कि उनके कोई आधिकारिक शिष्य या मान्यता प्राप्त वंश भी नहीं थे।
चाहे वह आध्यात्मिक संबंध हो या न हो,

पूंजाजी ने मुझे उन लोगों की कई कहानियाँ सुनाईं जिनका विश्वास था
और उन्हें उनसे चमत्कारिक और अचानक ठीक होने का अनुभव हुआ था।
बीमारियाँ (कोहेन, 1989)।
कोहेन की पूंजा से पहली मुलाकात के दौरान, उन्हें "शून्यता" का एक गहन ज्ञानोदय अनुभव हुआ। पूंजा ने इसकी पुष्टि की और ऐसा लगता है कि इसने एंड्रयू और उनके गुरु दोनों को काफी प्रभावित किया।
पूंजाजी ने मुझसे कहा कि मेरी आँखों में भी वही भाव था जो उनकी आँखों में था।
गुरु रमण महर्षि ने ऐसा किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने ये सब देखा था।
अपने जीवन में केवल तीन बार ही आँखें देखीं: अपने गुरु की आँखों में, अपनी आँखों में और
मेरे में (कोहेन, 1992)।
जैसा कि पूंजा ने स्वयं कहा:
मुझे पता था कि ऐसा ही होगा—तुम ही हो जिसका मैं इंतजार कर रही थी
मैं पूरी जिंदगी मरता रहा और अब जब मैं तुमसे मिल चुका हूं तो मैं मर भी सकता हूं (कोहेन)।
2002).
160 गुरुओं का पर्दाफाश

बेशक, पूंजा की अंततः मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले उसने कई साल बाद एक महिला शिष्या से वही वाक्य दोहराया, "तुम ही वह हो जिसका मैं जीवन भर इंतजार कर रहा था", जिसे उसने कथित तौर पर एंड्रयू की गड़बड़ी को ठीक करने के लिए अमेरिका भेजा था।
लेकिन यह हमारी कहानी से आगे की बात होगी।
फिलहाल, गुरु और शिष्य दोनों एक-दूसरे से और ज्ञानोदय के विचार से बेहद प्रेम करते थे। दरअसल, जैसा कि पूंजा (कोहेन, 1992 में) ने एंड्रयू की माँ लूना टार्लो को बताया था, जो तब तक भारत में उनके साथ शामिल हो चुकी थीं:
आपको नहीं पता कि यह कितना दुर्लभ है। उसके जैसा कोई... केवल
ऐसा कई सौ वर्षों में एक बार होता है।
पूंजा ने उन सभी बुद्धों के नामों की सूची पढ़ी जो

इस दुनिया में आओ। जब वह सूची के अंत तक पहुंचा तो
उन्होंने मेरा नाम पढ़ा और फिर मेरी तरफ देखकर मुस्कुराए (कोहेन,
1992).
ज्ञान प्राप्ति के बाद, और केवल ढाई सप्ताह के प्रशिक्षण के बाद, पूंजा ने बड़ी उम्मीदों के साथ कोहेन को एक शिक्षक के रूप में दुनिया में भेज दिया। बताया जाता है कि एंड्रयू ने स्वयं अपनी माँ के सामने अपने जीवन के एक विशेष उद्देश्य - और वह भी काफी हद तक मसीहा जैसे उद्देश्य - की पुष्टि की।
"मानो या न मानो, पूंजा और मैं शायद अकेले ऐसे दो लोग हैं।"
पूरी दुनिया में हम जो [ज्ञानोदय] का काम कर रहे हैं, वही कर रहे हैं-
“इंग,” एंड्रयू ने कहा (टार्लो, 1997)।
जैसा कि कोहेन के एक अन्य प्रारंभिक शिष्य ने बताया है:
पूंजाजी ने उनसे कहा है कि वे उनके बीच क्रांति लाएंगे।
पश्चिम में युवा! “मैं अपनी जिम्मेदारी तुम्हें सौंपता हूँ,” पूंजाजी
कहा था (वैन डेर ब्राक, 2003)।
यदि गुरु से शिष्य को "जिम्मेदारी सौंपने" की यह प्रक्रिया आपको कुछ हद तक परिचित और परेशान करने वाली लगती है, तो इसका कारण यह है कि यही वाक्यांश बाइबिल के एलियाह और एलीशा के बीच भी आता है, ठीक उस समय जब एलियाह को अग्नि रथ में स्वर्ग ले जाया गया था, और उन्होंने एलीशा को अपने आशीर्वाद का "दुगुना हिस्सा" दिया था।
एलीशा ने एलियाह का वह चोगा भी उठा लिया जो उससे गिर गया था।
वह उसके पास गया, और वापस आकर जॉर्डन नदी के किनारे खड़ा हो गया (2
राजा 2:13)।
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 161

उस घटना के समकालीन अभिनय में, पूंजा ने स्वयं को एलियाह की स्थिति में रखा है —जो किसी पुनर्जन्म में—
राष्ट्र-आधारित व्याख्याओं (जैसे, योगानंद, 1946) में, जॉन द बैपटिस्ट की भूमिका भी निभाई गई है। दूसरी ओर, कोहेन एलीशा, या यीशु मसीह की भूमिका निभाते हैं। हालांकि, पूंजा को ऐसी तुलना शायद पसंद नहीं आती, क्योंकि वह अपनी

आध्यात्मिक उपलब्धियों के प्रति बेहद उत्साही और बेलगाम रवैया रखता था।
“मुझे सिर्फ एक आदमी से जलन है,” [पूंजा] ने कहा। “वह कौन था?”
मैंने पूछा। “बुद्ध,” उन्होंने उत्तर दिया, “वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो
मुझसे आगे निकल गया” (कोहेन, 1992)।
निःसंदेह, ऐसे महान व्यक्तित्व के अग्रणी शिष्य होने से व्यक्ति की आत्म-छवि में अद्भुत सुधार होना तय है। इस प्रकार, एंड्रयू के स्वयं के बताए गए, ज्ञानवर्धक शब्दों में (टार्लो, 1997 में):
दुनिया में मेरे जैसे बहुत कम लोग हैं। मैं किसी को भी नष्ट कर सकता हूँ।
व्यक्ति का कर्म... अगर आप मुझ पर भरोसा करते हैं, तो मेरे पास क्षतिपूर्ति करने की शक्ति है।
अपने अतीत को पूरी तरह से मिटा दो।
जो भी मुझसे प्रेम करता है... उसे ज्ञान की प्राप्ति निश्चित है।
लूना, तुम्हें पता है, कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ।
"लूना" के बारे में: कोहेन अपनी मां को उनके पहले नाम से ही संबोधित करते थे, यहां तक कि अपने "ज्ञानोदय" से पहले भी।
बहरहाल, ईश्वर तुल्य एंडी सी. ने शीघ्र ही अपनी पत्नी को शिष्या बना लिया और कथित तौर पर अपनी माँ (टार्लो, 1997) पर भी ऐसा करने का दबाव डाला—इस प्रकार इन दोनों रिश्तों में उन्होंने बेहद खराब निर्णय का प्रदर्शन किया। फिर भी, विशेष रूप से बाद वाली माँ को जल्द ही कोहेन की आध्यात्मिक उदारता का लाभ मिला, और दोपहर की चाय के दौरान उन्हें—स्वयं आश्चर्यचकित करते हुए—यह बताया गया कि अब उन्हें ज्ञान प्राप्त हो चुका है।
एक अन्य शिष्या, ड्वोरा, ने भी स्पष्ट रूप से इसी प्रकार लाभ उठाया, बताया जाता है कि एक सुबह एंड्रयू ने उसे सूचित किया कि "उसका ज्ञानोदय पूर्ण हो गया है" (टार्लो, 1997)। हालाँकि, इस प्रकार स्पष्ट रूप से पूर्ण रूप से प्रबुद्ध होने के बावजूद, ड्वोरा जैसी वफादार शिष्याओं को गुरु के हाथों अनुशासन से मुक्ति नहीं मिली। वास्तव में, ऐसा लगता है कि उसने इस बात का कड़वा अनुभव तब किया जब उसने एंड्रयू को अपने माता-पिता के घर लौटने, यानी भारत और कोहेन को छोड़ने के दबाव के बारे में निराशाजनक ढंग से बताया।

“तुम पाखंडी, झूठी और वेश्या हो,” एंड्रयू ने कहा।
ड्वोरा] शांत, संयमित लय में और वह उठा, और चला गया
वह अपने बिस्तर पर लेट गया और टीवी चालू कर दिया (टार्लो, 1997)।
ऐसा कहा जाता है कि कोहेन ने अपने अनुयायियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए "कुशल साधनों" का इसी प्रकार प्रयोग किया था।
यह बताना हमारी कहानी से आगे की बात होगी कि कोहेन की माँ अब खुद को प्रबुद्ध नहीं मानतीं। न ही वह अब खुद को पूर्व मसीहा एंड्रयू की "अपवित्र" माँ मानती हैं।
“मसीहा” उपाधि यहाँ बिल्कुल भी अनुचित नहीं है, क्योंकि कोहेन के अनुयायियों के बीच यह संभावना भी जताई गई थी कि वे बुद्ध के पुनर्जन्म हो सकते हैं। जैसा कि पूंजा ने स्वयं कहा था: “बीसवीं शताब्दी भाग्यशाली है कि उसने पूर्ण बुद्ध को पुनर्जन्म लेते हुए देखा, जो उनके साथ रहकर उन्हें इस दुखद संसार से मुक्ति दिलाएंगे” (कोहेन, 1992)। इससे भी आगे बढ़कर, कोहेन के शिष्यों ने कथित तौर पर यह भी सुझाव दिया कि एंड्रयू यीशु मसीह के पुनर्जन्म हो सकते हैं (टार्लो, 1997)।
विडंबना यह है कि मोंटी पायथन की फिल्म 'लाइफ ऑफ ब्रायन' में मसीहा का किरदार निभाने वाले ब्रायन का उपनाम भी कोहेन था। हालांकि, समकालीन ब्रायन संख्या के मामले में कहीं आगे हैं, जिनके लगभग एक हजार शिष्य हैं—हालांकि उनके संघ में केवल सौ ही जीवित हैं—जबकि काल्पनिक ब्रायन के शिष्यों की संख्या मात्र कुछ दर्जन ही है।
बेशक, आम तौर पर गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्तियों की तरह, हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि "सम्मान एंड्रयू का जुनून था।" जैसा कि उन्होंने खुद कथित तौर पर कहा था:
मैं अब एक साधारण जीवन जीने वाला साधारण व्यक्ति नहीं हूँ।
अब से कोई भी मेरे साथ समय नहीं बिताएगा जब तक कि वे
मेरे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करें (टार्लो में, 1997)।
जहां तक उस वफादारी की बात है जिसकी उम्मीद एंटीडेंजरफील्ड गुरु अपने अनुयायियों से करते थे, आंद्रे वैन डेर ब्राक (2003) एक प्रतिबद्ध छात्र का परेशान करने वाला उदाहरण देते हैं, जिसे कथित तौर पर "एंड्रयू को धोखा देने के बजाय जिंदा जलाए जाने" के लिए तैयार रहना पड़ता था।

दिलचस्प बात यह है कि पूंजा ने एक बार गुरु-शिष्य संबंध के बारे में एंड्रयू से कहा था, "शिक्षक से आसक्त मत रहो" (कोहेन, 1989 में)। हालाँकि, हाल के वर्षों में कोहेन का अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उस स्थिति के बिल्कुल विपरीत हो गया है:
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 163

किसी सच्चे प्रबुद्ध व्यक्ति पर अत्यधिक निर्भर नहीं रहा जा सकता।
कोहेन ने झुंझलाते हुए कहा, "बेटा, जितना अधिक तुम उससे लगाव रखोगे, उतना ही तुम उससे जुड़ते जाओगे।"
ऐसे व्यक्ति के साथ रहने से, आप सचमुच में और अधिक स्वतंत्र हो जाते हैं।"
कोहेन ने आम लोगों के महत्व का उपहास किया, और
विशेषकर पश्चिमी देशों के लोग स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं...
कोहेन का अपनी विशिष्टता पर विश्वास बार-बार सामने आता रहा।
इसलिए। उन्होंने कहा कि जो लोग प्रबुद्ध हैं, वे परिभाषा के अनुसार ऐसा कर सकते हैं।
कोई गलती नहीं। वे अब अज्ञानता के कारण ऐसा नहीं कर रहे हैं।
ऐसे तरीके जो दूसरों को पीड़ा पहुंचा रहे हैं" (होर्गन,
2003).
यह, निःसंदेह, सबसे खतरनाक धारणा है जो कोई भी मनुष्य धारण कर सकता है। फिर भी, यह किसी भी निष्ठावान शिष्य का अपने "परिपूर्ण" गुरु के प्रति सामान्य दृष्टिकोण होता है, जिसकी अपेक्षा गुरु द्वारा हमेशा की जाती है, जैसा कि हम पहले ही टुंगपा, दा और कई अन्य दुखी लोगों के साथ स्पष्ट रूप से देख चुके हैं:
महर्षि [महेश योगी] कोई गलती नहीं कर सकते (स्कॉट, 1978)।
[राजनीश] गलत नहीं हो सकते (बेलफ्रेज, 1981)।
* * *
हमने पहले जिन "अजीबोगरीब ज्ञान" के अभ्यासकर्ताओं के लिए संदर्भगत तुलना पद्धति का उपयोग किया है, उसी पद्धति के माध्यम से यह दिखाना आसान है कि कोहेन का कथित असभ्य व्यवहार, आदि दा और टुंगपा के व्यवहार की तरह, स्पष्ट रूप से किसी भी बुद्धिमान या नेक आधार से रहित है।
उदाहरण के लिए, 1997 में एम्स्टर्डम के एक अखबार ने कोहेन द्वारा दिए गए एक

व्याख्यान की आम तौर पर प्रशंसात्मक समीक्षा छापी। लेख का अंत इस व्यंग्यात्मक लेकिन फिर भी काफी मासूम टिप्पणी के साथ हुआ कि, हालांकि गुरु अपने छात्रों के सिर मुंडवाते थे, कोहेन के अपने बाल अच्छी तरह से संवारे हुए थे।
जब वह लेख एंड्रयू को अंग्रेजी में पढ़कर सुनाया गया, तो कोहेन ने कथित तौर पर "अंतिम पंक्तियों तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। फिर उन्होंने मुंह बनाया":
“वो इंटरव्यू लेने वाला तो बिलकुल ही घटिया आदमी था। वो तो ऐसा लग रहा था जैसे...
अच्छा आदमी है। हैरी, उसे फोन करो! उसे बताओ कि वह एक बदतमीज़ है।
जब हैरी समझदारी से उस जनसंपर्क संबंध को खराब करने से बचता है, तो कोहेन जाहिर तौर पर पलटवार करता है:
वह एक अयोग्य पत्रकार है। तो बस उसे बता दो कि वह कोई पत्रकार नहीं है।
अपने पेशे में अच्छा (वैन डेर ब्राक, 2003 में)।
164 गुरुओं का पर्दाफाश

यदि संबंधित पत्रकार एंड्रयू का औपचारिक शिष्य होता, तो इसमें शामिल सभी लोगों को कोहेन के कथित गुस्से को "कुशल रणनीति" के रूप में तर्कसंगत ठहराने में कोई कठिनाई नहीं होती। अर्थात्, उनके कथित क्रोध का उद्देश्य केवल पत्रकार को उसके अहंकार से जगाना होता। लेकिन यह काल्पनिक स्थिति बिल्कुल भी वास्तविक नहीं है। इसलिए, हमें इतनी मामूली उकसाहट पर कोहेन की कथित प्रतिक्रिया को बचकाना से अधिक कुछ नहीं मानना चाहिए। इसके अलावा, हमें इस तरह के कथित क्रोध को उस व्यक्ति के व्यवहार का "आधार" मानना चाहिए, जिसके आधार पर अन्य सभी संभावित "कुशल रणनीतियों" का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
मेरी अपनी राय यह है कि जब गुरु-शिष्य संदर्भ में कोहेन के बताए गए व्यवहारों से इस तरह के "शोर" के आधार को हटा दिया जाता है, तो दूसरों को जागृत करने के "कुशल साधन" के रूप में मानने के लिए कुछ भी नहीं बचता है।
* * *
कोहेन ने उत्तरी अमेरिका में कई आध्यात्मिक समुदायों या संघों की स्थापना की है। शुरुआत में, उन्होंने 1988 में मैसाचुसेट्स के एमहर्स्ट में अपने शिष्यों को किराए के मकानों में रखा। जल्द ही वे समुदाय को बोस्टन ले गए, और बाद में 1989 की

गर्मियों में कैलिफोर्निया के मारिन काउंटी में चले गए। फिर 1997 में मैसाचुसेट्स के बर्कशायर में स्थित 20 लाख डॉलर के "फॉक्सहॉलो" आश्रम में वापस आ गए। इस सुविधा के लिए, कथित तौर पर प्रत्येक शिष्य ने कोहेन के शिष्य के रूप में बिताए प्रत्येक वर्ष के लिए एक हजार डॉलर का भुगतान किया, जो अधिकतम पाँच हजार डॉलर तक था।

आंद्रे वैन डेर ब्राक ने 1987 में कोहेन का अनुसरण करना शुरू किया और ग्यारह वर्षों तक उनके संघ में रहे। उस दौरान, उन्होंने विभिन्न समयों पर समुदाय के संपादकीय विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया, विशेष रूप से 'व्हाट इज एनलाइटनमेंट?' पत्रिका और कोहेन की पहली पुस्तक, 'एनलाइटनमेंट इज ए सीक्रेट' के संपादक के रूप में।

उन्होंने आगे (2003) उस बदलते समुदाय के भीतर कोहेन के ज्ञानोदय संबंधी कार्यों के प्रति अपने प्रारंभिक, अतिरंजित उत्साह को इस प्रकार व्यक्त किया:

यह एक विकासवादी प्रयोग है; हम इसके अग्रदूत हैं।
एक विकासवादी लहर में जो पश्चिमी क्षेत्र को बदल देगी
आध्यात्मिक जगत!

हालाँकि, उस “विकासवादी” समुदाय के भीतर जीवन किसी स्वर्गिक तरीके से नहीं बीता। वास्तव में, समग्र रूप से विकसित दृष्टिकोण में व्यक्तिगत अधिकारों का हनन शामिल था। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 165

या एंड्रयू के नियमों को लागू करने के पक्ष में स्वतंत्र जीवन, और "संपूर्ण के लिए जीना" (वैन डेर ब्राक, 2003)।

लेकिन, हम व्यक्तिगत रूप से गलतियाँ करके ही सीख सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति जीवन भर दूसरों की गलतियों को दोहराता रहे, उनके निर्देशों और नियमों का पालन करता रहे, चाहे वे कितने भी गलत क्यों न हों, तो उससे सीखने की सबसे अच्छी उम्मीद यही की जा सकती है कि वह स्वयं सोचने के महत्व को समझे। और यह समझ, चाहे इसे पूरी तरह से समझने में कितना भी समय लगे, किसी व्यक्ति की पूर्ण मानवीय क्षमता के विकास की केवल शुरुआत है, अंत नहीं।

कोहेन के साथ वैन डेर ब्राक के एक दशक लंबे जुड़ाव के अंत की ओर, अनिवार्य संघ अनुशासन ने कथित तौर पर प्रत्येक सुबह छह सौ प्रणाम करने का रूप ले लिया, जो

प्रबुद्ध गुरु द्वारा बनाए गए एक मंत्र को दोहराते हुए किया जाता था: "कुछ भी न जानना, कुछ भी न होना, कोई भी न होना।"
यही वह संदेश है जिसे वह हमारे दिमाग में अंकित करना चाहता है (वैन डेर)
ब्राक, 2003)।
टार्लो (वैन डेर ब्राक, 2003 में) कोहेन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनमें "लगातार बढ़ता हुआ व्यामोह और नियंत्रण करने की प्रचंड इच्छा" थी। इस कथित मानसिकता के तहत, उनके समुदाय में अनुशासित जीवन का अर्थ समय-समय पर निम्नलिखित रहा होगा:
• अनुयायी दस घंटे में एक हजार तक प्रणाम करते हैं
कोहेन के आदेश पर प्रतिदिन एक निश्चित अवधि के लिए।
• गुरु अपने भक्तों को सिर मुंडवाने का निर्देश देते हैं और
अपने मार्ग के प्रति समर्पण साबित करने के लिए ब्रह्मचर्य संबंध बनाए रखते थे। एक समय, समुदाय का लगभग पाँचवाँ हिस्सा मुंडा हुआ ब्रह्मचारी था।
• शिष्यों ने जानबूझकर कोहेन के परिसर में 20,000 डॉलर से अधिक कीमत की कारों को नष्ट कर दिया।
और वास्तव में उनकी उपस्थिति में, उन्होंने अपनी अनासक्ति और ईमानदारी का प्रदर्शन किया।
• सफल चित्रकारों ने एंड्रयू की गलतफहमी के चलते अपनी कला का त्याग कर दिया।
वकील ने इसका विरोध करते हुए कहा कि यह कथित तौर पर "अहंकार का विस्तार" है, और इस प्रकार स्पष्ट रूप से ज्ञानोदय में बाधा है।
• अनुयायी अपनी धर्मनिरपेक्ष पुस्तकों को गंगा में फेंक रहे हैं।
और कोहेन की मांग पर आज्ञाकारी रूप से अपने जीवन भर के लेखन को जला दिया (बिना किसी ज्ञात बैकअप के)। 166 गुरुओं को लूटना

• शिष्य पाँच घंटे या उससे अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं
रात में कम नींद लेना, अपनी मर्जी से नहीं बल्कि समुदाय की अनिवार्य गतिविधियों के कार्यक्रम को पूरा करने की मजबूरी के कारण।
• ध्यान साधना शिविरों में भाग लेने वाले छात्रों को इसकी अनुमति नहीं है

निजी बातचीत में केवल कोहेन द्वारा अपने "पांच मूलभूत सिद्धांतों" में वर्णित शिक्षाओं के सारांश पर चर्चा करने की अनुमति थी।

• कोहेन द्वारा अपने शिष्यों को खुफिया जानकारी रखने से रोकने के लिए जारी किए गए निर्देश-

बौद्धिक गतिविधियों के बारे में। जैसा कि टार्लो (1997) ने कहा: "मैंने [एंड्रयू] से कहा कि मैंने [विल्बर की] 'अप फ्रॉम ईडन' पर एक नज़र डाली थी और उन्होंने मुझे किताब में आगे न पढ़ने के लिए कहा क्योंकि यह बौद्धिक रूप से उत्तेजक थी।"

• समुदाय से निष्कासन और पुनः प्रवेश के चक्र,

कोहेन की नजरों से गिर चुके भक्तों को एंड्रयू की कृपा वापस पाने के लिए दूसरा या तीसरा मौका दिया गया।

• और, जैसा कि हर आध्यात्मिक समुदाय के मामले में होता है, कोई भी व्यक्ति

जो व्यक्ति छोड़कर चला जाता है, उसे “तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। उसमें स्वयं का सामना करने का साहस नहीं था” (वैन डेर ब्राक, 2003)

इन सब के बाद, लूना टार्लो (1997) ने कोहेन के गुरुत्व के संबंध में अपने स्वयं के विचारों का सारांश प्रस्तुत किया:

मुझे तो ऐसा लगता है कि [एंड्रयू] खुद अपने ही धोखे का शिकार हो गया है।

प्रचार, जैसा कि उन सभी अन्य भाई-गुरुओं का भी था।

बाजार जिसने दुख से मुक्ति का वादा किया था—

हिटलर ने डेविड कोरेश से कहा।

ध्यान दें कि हिटलर से तुलना करने वाला यह पूरी तरह से नकारात्मक मूल्यांकन कोहेन की यहूदी माँ और पूर्व शिष्या की ओर से आया है। टार्लो अब भी उसे "अपने बेटे" की तरह प्यार करती है, लेकिन उसके "खुद को भगवान समझने" की भावना से उपजी गतिविधियों से दूर रहना उसका स्वाभाविक निर्णय है।

* * *

जैसा कि हमने ऊपर संकेत दिया है, केन विल्बर के लेखन ने पारंपरिक रूप से कोहेन के समुदाय के भीतरी दायरे में एक अद्वितीय उच्च स्तर की रुचि उत्पन्न की है। आंद्रे वैन डेर ब्राक ने वास्तव में विल्बर पर अपना मनोविज्ञान शोध प्रबंध किया था, जिससे विल्बर की गहन रचनाओं से भरी उनकी किताबों की अलमारियों ने कोहेन की जिज्ञासा को और बढ़ा दिया था, और समटाइम्स आई फील लाइक ए गॉड

परिणामस्वरूप, उन्होंने कथित तौर पर सामूहिक रूप से इस बात पर विचार-विमर्श किया कि विल्बर को कोहेन के छात्र के रूप में कैसे दाखिला दिलाया जाए।
हम इस बात पर अटकलें लगाते हैं कि वह मिलने के लिए तैयार क्यों नहीं है।
एंड्रयू। क्या उसे अहंकार की मृत्यु का डर है? (वैन डेर ब्राक, 2003; इतालवी-)
आईसीएस जोड़ा गया)।
उनकी निरंतर प्रेम कोशिशों का अंततः फल मिला, क्योंकि
हम कोहेन की (2002) पुस्तक 'लिविंग एनलाइटनमेंट' की विल्बर द्वारा लिखी गई प्रस्तावना पढ़ते हैं:
[रूड बॉयज़] करुणा के रूप में जीते हैं—वास्तविक करुणा, मूर्खता नहीं।
करुणा—और सच्ची करुणा अक्सर तलवार का इस्तेमाल करती है।
मिठाई से भी ज्यादा। वे अहंकार को बहुत ठेस पहुंचाते हैं (और जितना अधिक
अपराध, अहंकार जितना बड़ा)...
एंड्रयू कोहेन एक बदतमीज़ लड़का है। वह यहाँ कुछ भी देने के लिए नहीं है।
आराम; वह यहाँ आपको लगभग एक हजार टुकड़ों में फाड़ने आया है
टुकड़े... ताकि इन्फिनिटी आपको फिर से जोड़ सके...
मैंने जितने भी गहन ज्ञानवान शिक्षकों को जाना है, उन सभी में यह बात समान है:
एक बदतमीज़ लड़का या बदतमीज़ लड़की होना। मूल बदतमीज़ लड़के ये थे,
बेशक, महान ज़ेन गुरु, जो अभी भी
एक और अहंकार जो ज्ञानोदय की चाहत रखता है, उसे यह मिलेगा...
एक बड़ी सी छड़ी लो और उम्मीदवार की आँखों के ठीक बीचोंबीच जोर से मारो...
रूड बॉयज़ बुरी तरह से आपके पीछे पड़े हैं, वे सांस लेते हैं।
आग, गर्म कोयले खाओ, पल भर में तुम्हारी गांड भुन जाएगी
और इससे पहले कि आपको पता चले कि क्या हुआ, आपका अहंकार चूर-चूर हो जाएगा...
मैंने अक्सर सुना है कि एंड्रयू मुश्किल है,
बचाव करते हुए, बेचैन, और मुझे लगता है, "भगवान का शुक्र है।" वास्तव में, लगभग
मैंने एंड्रयू के बारे में जितनी भी आलोचनाएँ सुनी हैं, वे सभी एक ही बात को अलग-
अलग रूप में प्रस्तुत करती हैं,

"वह बहुत असभ्य है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"
बेशक, टार्लो (1997) द्वारा कोहेन पर किया गया खुलासा विल्बर द्वारा उन विचित्र छवियों के मिश्रण को लिखने से लगभग आधा दशक पहले प्रकाशित हो चुका था। यदि विल्बर ने इस बारे में ठीक से जानकारी प्राप्त की होती, तो उन्होंने निश्चित रूप से कोहेन की उन आलोचनाओं को सुना होता जिन्हें किसी भी तरह से केवल अत्यधिक संवेदनशील अहंकार की शिकायत के रूप में खारिज नहीं किया जा सकता था, जो पर्याप्त रूप से लाड़-प्यार न मिलने की शिकायत कर रहे थे। (कहने की आवश्यकता नहीं है, कोहेन अपनी माँ द्वारा अपने समुदायों में जीवन के दिए गए चित्रण की सटीकता पर विवाद करते हैं, और संभवतः वैन डेर से सहमत नहीं हैं।)
ब्राक द्वारा बनाया गया उसका रेखाचित्र भी ऐसा ही है। हालाँकि, "क्या ज्ञानोदय??!" वेबसाइट अन्य पूर्व शिष्यों की कई अतिरिक्त, आम तौर पर उतनी ही अपमानजनक कहानियाँ प्रस्तुत करती है।
यदि "अशिष्ट व्यक्ति" होने का अर्थ केवल अप्रिय सत्य बोलना है, तो हाँ, "प्रत्येक गहन ज्ञानी शिक्षक" के पास संभवतः 168 गुरुओं का चरित्र-चित्रण होता है।

ऐसा किया जा चुका है। हालाँकि, इस तरह का लाभकारी व्यवहार, ट्रुंगपा, आदि दा और कोहेन (अरबिंदो और रमण महर्षि के विपरीत) द्वारा कथित तौर पर किए गए व्यवहार से बिल्कुल अलग है।
इसके अलावा, महज इसलिए कि कोई "गुरु" दूसरों के प्रति "अशिष्ट" व्यवहार करता है, इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि स्वयं आदि दा द्वारा प्राप्त किए गए तथाकथित परम ज्ञान का परिणाम वही व्यवहार था जो उसने पहले झेला था! वास्तव में, न तो आदि दा, न कोहेन और न ही ट्रुंगपा ने अपने ज्ञानोदय को ऐसे व्यवहार का शिकार होने से उत्पन्न बताया है। यह तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यह तथ्य भी कि अपने "अशिष्ट" व्यवहार के बावजूद, न तो दा और न ही कोहेन, स्पष्ट रूप से, अपने दावे के अनुरूप एक भी शिष्य को उतना "प्रबुद्ध" नहीं बना पाए हैं जितना वे स्वयं होने का दावा करते हैं।
इस बिंदु पर इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि कोई भी
उन्नत और अंतिम चरणों में अभ्यासकर्ता (दा, में
[एलियास, 2000ए]).

कोहेन के छात्रों में से कोई भी मुक्त नहीं हुआ है (होर्गन,
2003).
इसके अलावा, आँखों के बीचोंबीच ज़ोरदार प्रहार करने की यह भयावह हिंसक घटना, जैसा कि हम देख चुके हैं, ज़ेन दर्शन का एक बेहद हास्यास्पद और अतिरंजित रोमांटिक चित्रण है। वास्तव में, यह सवाल मन में उठता है: क्या विल्बर को स्वयं कभी किसी भारी छड़ी से आँखों के बीचोंबीच इस तरह का लाभकारी और ज़ोरदार प्रहार सहना पड़ा था, या सचमुच उनकी बुरी तरह पिटाई हुई थी? क्या इसी से उन्हें अपने शुरुआती, "प्रमाणित" ज्ञानोदय या अद्वैत के एक स्वाद का अहसास हुआ था? यदि नहीं, तो उन्हें दूसरों को इस तरह के उपचार की सलाह देने का कोई अधिकार नहीं है।
इन सभी चिंताओं के बावजूद, अन्य पूजनीय आध्यात्मिक हस्तियाँ भी कोहेन के लेखन मात्र से ही उनसे उतनी ही प्रभावित हुई हैं, जितनी कि आसानी से उत्तेजित होने वाले विल्बर। वास्तव में, पेनोर रिनपोचे, जो तिब्बती बौद्ध धर्म के न्यिंगमा स्कूल के प्रमुख हैं, ने भी ऐसा ही कहा है।
1991, इसे (कोहेन, 2000 में) रखा गया:
मैं एंड्रयू कोहेन के कार्यों की सराहना करता हूँ।
आध्यात्मिक मार्ग की खोज, जो धर्म के सार का अन्वेषण करती है-
उनकी आस्था अद्भुत है। उनका काम जिज्ञासु लोगों के लिए बहुत लाभकारी है।
ज्ञानोदय को अंतिम लक्ष्य के रूप में मानने के बारे में। मुझे विश्वास है
स्वर्ग और पृथ्वी को गले लगाने से बहुत लाभ होगा
आध्यात्मिक साधना में लगे पाठक और साधक।
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 169

रिनपोचे का समर्थन भी 1997 में टार्लो द्वारा कोहेन के खुलासे के प्रकाशन के काफी बाद आया। हालांकि, इस मामले में वे और विल्बर अकेले नहीं हैं, जिन्होंने आत्मविश्वास से भरी राय देने से पहले प्रासंगिक शोध करने में विफल रहे। वास्तव में, इसी तरह की शर्मनाक स्थिति में अन्य लोगों में शिवानंद आश्रम के प्रमुख भी शामिल हैं, जिन्होंने दावा किया कि कोहेन "अंधेरे में प्रकाश की तरह चमकते हैं।" इसके अलावा, कृपालु के अध्यक्ष, विज्ञान कथा लेखक अमित गोस्वामी, लामा सूर्य दास

और नीत के स्वामी चेतानंद भी इसी श्रेणी में आते हैं।
यानंदा संस्थान। (बाद वाले के लिए, एलएनआई [2003] और रीड देखें)
[2001].) उन सभी व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक कोहेन का समर्थन किया।
(2000), जैसा कि "ईश्वर-प्राप्त" जॉन डब्ल्यू व्हाइट (cf. 1997) ने किया, जिन्होंने वहां कोहेन की प्रशंसा करते हुए उन्हें "रैम्बो-धिसत्व" या आध्यात्मिक शांति-योद्धा बताया।
संभवतः, "रॉकी ऑफ एजेस" - अपने भरोसेमंद, प्रशंसक साथी, "चेतना अध्ययन के बुलविंकल" के साथ - और "कोहेन द बार्बेरियन" जैसे शीर्षक पहले से ही लिए जा चुके थे।
बॉडी शॉप की संस्थापक अनीता रॉडिक भी हाल के वर्षों में एंड्रयू के मुक्ति के ब्रांड की दीवानी हो गई हैं - भले ही वह डिस्काउंट ब्रांड कितना भी असंगत क्यों न हो:
“मुझे बिना शर्त प्यार पसंद नहीं है,” [एंड्रयू] कहते हैं। “प्यार हमेशा
इसे अर्जित करना पड़ता है” (वैन डेर ब्राक, 2003)।
बेशक, इस तरह का मौलिक रूप से सशर्त प्रेम ही होगा-
यह डॉ. एलिजाबेथ डेबॉल्ड (कोहेन, 2000 में) द्वारा एंड्रयू के विचारों के बिल्कुल विपरीत है। क्योंकि वहाँ, वह "उनकी इस मांग की प्रशंसा करती हैं कि हम एक ऐसे प्रेम को समझें और जिएं जिसकी कोई सीमा न हो।"
असीम प्रेम तो स्पष्ट रूप से निःशर्त होगा और उसे "अर्जित" करने की आवश्यकता नहीं होगी, आखिर ऐसा ही तो है, है ना?
विल्बर जिस "वास्तविक करुणा" की इतनी निश्चितता से बात करता है, वह कथित तौर पर कोहेन के माध्यम से इस प्रकार प्रकट होती है:
मुझे अब आपकी व्यक्तिगत प्रगति की कोई परवाह नहीं है।
मैं बस आपको अपने समुदाय (वैन डेर में) के लिए उपयोग करना चाहता हूँ।
ब्राक, 2003)।
बेशक, हर कोई इस तरह के "दयालु, रूखे" अनुशासन पर सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देता। दरअसल, कोहेन के एक विशेष रूप से दुर्भाग्यपूर्ण शिष्य के कथित अनुभव, जो "लगातार घबराहट की स्थिति" में रहता था और कथित तौर पर अंततः "एक मनोचिकित्सक की देखरेख में, पूरी तरह से बेहोश" (टार्लो, 1997) हो गया, इस बात को उजागर करते हैं।

जैसा कि पावलोव ने स्वयं जानवरों को चपटे वृत्तों और लगभग गोल दीर्घवृत्तों के बीच अंतर करने का प्रयास करवाकर पाया, आरंभिक रूप से उत्तेजित कुत्ते लगातार घबराहट का अनुभव कर सकते थे, क्योंकि उन्हें यह नहीं पता होता था कि अपने "स्वामी" को कैसे प्रसन्न करें, जबकि स्वामी को प्रसन्न करना ही सर्वोपरि होता है, चाहे वह सम्मान के योग्य कितना भी न हो। स्पष्टतः, जब आध्यात्मिक शिष्य इस प्रकार की घबराहट और पागलपन की स्थिति में पहुँच जाते हैं, तो उस मानसिक टूटन का उनकी कथित "मनोवैज्ञानिक अपरिपक्वता" से कोई संबंध नहीं होता। न ही इसका उस घटनात्मक निरर्थक विचार से कोई संबंध है कि "हम इस तथ्य का सामना करने में असमर्थ हैं कि नग्न वास्तविकता, जो हमारे वैचारिक ढाँचे हटने पर प्रकट होती है, वास्तविकताओं और संभावनाओं की एक अकल्पनीय समृद्धि है" (फ्यूअरस्टीन, 1992)।

और इन सब बातों पर कोहेन की कथित तौर पर "गैर-मूर्खतापूर्ण करुणा" पर आधारित प्रतिक्रिया क्या थी?

“ज्ञानोदय और पागलपन बहुत करीब हैं।” फिर उसने

हँसते हुए उसने अजीबोगरीब लहजे में कहा, "ऐसा किसी के साथ भी हो सकता है।" आप” (टार्लो, 1997)।

* * *

अपनी शिक्षाओं को पुस्तकों और अपने आध्यात्मिक समुदाय के भीतर व्यक्तिगत परामर्श के माध्यम से फैलाने के प्रयासों के अलावा, कोहेन ने 1992 में "ज्ञानोदय क्या है?" पत्रिका की स्थापना की। यह द्विमासिक पत्रिका है।

(अब त्रैमासिक) पत्रिका की विल्बर (कोहेन में) द्वारा प्रशंसा की गई है।

2002) इस प्रकार है:

एंड्रयू की पत्रिका... एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसके बारे में मुझे पता है जो... पूछती है-

कठिन प्रश्नों को हल करना, अनावश्यक रूप से हिंसक नरसंहार करना-

फिर से, पवित्र गायों की छवि और उनसे निपटना

परिणाम चाहे जो भी हो, सत्य को नहीं भूलना चाहिए।

अग्रणी जीवविज्ञानी रूपर्ट शेल्ड्रेक भी इसी प्रकार राय रखते हैं।
(कोहेन में, 2005):
'ज्ञानोदय क्या है?' पत्रिका ज्ञानोदय के क्षेत्र में एक अनूठा मंच है।
एक ऐसी पड़ताल जो अन्य सभी से कहीं अधिक गहरी और व्यापक है।
मुझे पता है कि यह एक आध्यात्मिक पत्रिका है।
कोहेन के आध्यात्मिक समुदाय के अन्य पूर्व निवासियों ने, हालांकि, उसी "कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ" 171 के बारे में कहीं कम प्रशंसात्मक राय व्यक्त की है।

एक प्रकाशन ने इसे "विभिन्न विचारों का एक बेमेल संग्रह बताया जिसका कोई मतलब नहीं है। यह मानसिक आत्मसंतुष्टि का एक प्रयास मात्र है।"
लेकिन, चमकदार, रंगीन प्रति की 9 अमेरिकी डॉलर की पुरानी कीमत पर, मानसिक रूप से... उम... करने के और भी सस्ते तरीके हैं।
वैसे भी, कोहेन की अपनी पुस्तकें भी उत्कृष्ट साहित्य, चाहे वह आध्यात्मिक हो या अन्य, का उदाहरण नहीं हैं, क्योंकि उनमें बहुत सारे खाली पन्ने हैं और पाठ की पंक्तियों के बीच अनावश्यक रूप से बड़े-बड़े अंतराल हैं—आमतौर पर लगभग दोगुने अंतराल में लिखे गए हैं। उदाहरण के लिए, उनके स्वार्थपूर्ण (1999) लेख, 'गुरु सिद्धांत के बचाव में', के कुल बहत्तर पृष्ठों में से, जिनमें आगे और पीछे की सामग्री भी शामिल है, छब्बीस पृष्ठ खाली हैं, और चार पृष्ठों में केवल अनुभाग/अध्याय शीर्षक हैं। आठ पृष्ठ प्रस्तावना और भूमिका से भरे हुए हैं, जिससे पुस्तक को अविश्वसनीय रूप से "इसे पढ़ने की आवश्यकता नहीं है" की रेटिंग मिलती है, जो कि 38/72 = 53% है, भले ही इसमें लगभग दोगुने अंतराल में लिखी गई सामग्री को छोड़ दिया जाए।
कोहेन की उतनी ही व्यापक रूप से लिखी गई पुस्तक 'लिविंग एनलाइटनमेंट'—जिसे बारबरा मार्क्स-हबर्ड ने सराहा है—की रेटिंग थोड़ी बेहतर है, लगभग 30% के साथ। एक औसत पुस्तक के लिए 5% की रेटिंग अधिक सामान्य होती है। इन दोनों साधारण पुस्तकों के अलावा, कोहेन की 'एनलाइटनमेंट इज़ अ सीक्रेट' में मौजूद अत्यधिक खाली जगह को देखकर ही विश्वास होता है। क्या स्याही की कमी थी? या कागज की अधिकता थी?

जब आप खूब पढ़ते और शोध करते हैं, तो आपको ऐसी बातें नजर आती हैं। लेकिन जब आप इस तरह की खोखली रचनात्मक कला और पर्यावरण के प्रति असंवेदनशीलता के लिए पूरी कीमत चुकाते हैं, तो ये बातें और भी ज्यादा नजर आती हैं।

किसी शिक्षा को "शून्यता" के विषय पर केंद्रित करना एक बात है। लेकिन किताबों को मोटे, बिना लाइन वाले, खाली पन्नों से भरना—जो न तो नोट्स लिखने के काम आते हैं और न ही शौचालय के लिए—अत्यंत अति है। और कोई वास्तविक प्रकाशक इस तरह के स्पष्ट और वृक्षों को बर्बाद करने वाले तरीके को नहीं अपनाएगा—जिसे रॉडिक जैसे व्यक्ति को पहली नज़र में ही देख लेना चाहिए था और उस पर आपत्ति जतानी चाहिए थी।

बेशक, विल्बर (2000ए; इटैलिक्स जोड़े गए), हमेशा की तरह, चीजों को अलग तरह से देखते हैं:

जब तक पारिस्थितिकीविदों को यह समझ नहीं आ जाता कि ओजोन छिद्र, प्रदूषण...
विषाक्त अपशिष्ट और अन्य सभी चीजें मूल प्रणाली का पूर्णतः हिस्सा हैं।
वे स्वयं कभी भी प्रबुद्ध चेतना प्राप्त नहीं कर पाएंगे, जो
केवल एक ही व्यक्ति जानता है कि इन गंभीर समस्याओं से कैसे निपटा जाए।

हालांकि, इन मुद्दों की थोड़ी सी भी समझ रखने वाला कोई भी व्यक्ति आसानी से देख सकता है कि "आगे कैसे बढ़ना है" जानने का पहला कदम बस "नुकसान को रोकना" है। यदि कोहेन की "प्रबुद्ध जागरूकता" 172 गुरुओं को उजागर करना

इससे तो खून बहना और भी बदतर हो जाता है, यही तो अपेक्षित था। क्योंकि, इस संसार के आत्म-साक्षात्कार प्राप्त "ध्यान गुरु" कभी भी किसी भी लड़ाई, चाहे वह पर्यावरणीय हो या अन्य, की अग्रिम पंक्ति में नहीं रहे हैं। बल्कि, हमेशा से ही तिरस्कृत और "कम आध्यात्मिक रूप से उन्नत" कार्यकर्ताओं ने ही जोखिम उठाए हैं और उन परिवर्तनों को अंजाम दिया है। (दुर्लभ अपवाद: ज़ेन रोशी रॉबर्ट ऐटकेन, जिनके प्रयास कभी-कभी "जापानी ज़ेन परंपरा से पूरी तरह से अलग हो गए हैं, जिसमें राजनीतिक सत्ता का विरोध नगण्य रहा है और सविनय अवज्ञा अज्ञात रही है" [ट्वोरकोव, 1994]। परमाणु परीक्षण और लैंगिक असमानता के खिलाफ अपने प्रदर्शनों में, वे निश्चित रूप से उन कई अन्य लोगों के साथ खड़े रहे हैं जिनके लिए ज़ेन

और इसी तरह की चीजें दूर की जिज्ञासाओं से ज्यादा कुछ नहीं थीं। फिर भी, वे भी "आगे कैसे बढ़ना है" यह देखने में उतने ही सक्षम थे जितने कि वे थे। फिर भी, ऐटकेन और कोहेन दोनों ही प्रबुद्ध विल्बर से बेहतर कर रहे हैं, यदि कोई उनके काले चमड़े के फर को ध्यान में रखे।)
फर्नीचर [होर्गन, 2003ए] और थैंक्सगिविंग टर्की डिनर [विल्बर,
2000a] पशु अधिकारों के परिप्रेक्ष्य से। इस अक्सर आलोचनात्मक वैकल्पिक दृष्टिकोण से सहमत होना भी आवश्यक नहीं है, यह देखने के लिए कि विल्बर पारिस्थितिकीविदों या इसी तरह के लोगों को यह उपदेश देने की स्थिति में बिल्कुल भी नहीं है कि "उसके जैसा बनकर" एक बेहतर दुनिया कैसे बनाई जाए।
कोहेन की सभी पुस्तकें मोक्ष प्रेस द्वारा प्रकाशित की जाती हैं, जो कि उनकी शिक्षाओं का स्वयं-प्रकाशन माध्यम है। ऐसी स्थिति में, यह उम्मीद करना स्वाभाविक है कि प्रकाशन के लिए न केवल पाठ बल्कि प्रचार सामग्री भी लेखक-प्रकाशक द्वारा स्वयं जाँची-परखी जाए, भले ही वह स्वयं लेखक-प्रकाशक द्वारा लिखी न गई हो। इसलिए, इस अध्याय की शुरुआत में कोहेन की महानता का जो बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है, उसे उनकी पूर्ण स्वीकृति के बिना प्रकाशित करना संभव नहीं था।
* * *
कोहेन ने अंततः अपने गुरु पूंजा से नाता तोड़ लिया, जब उन्हें गुरु के आचरण में कई अनियमितताओं का पता चला, जिनमें कथित तौर पर एक गोरी बेल्जियम की शिष्या से एक बच्चे का पिता होना भी शामिल था। उन्होंने इस संवाद टूटने का कारण यह बताया कि वे स्वयं अपने गुरु से आगे निकल गए थे (कोहेन, 1992)।
बेशक, सारी विनम्रता को दरकिनार रखते हुए, पूंजा ने स्वयं को "गुरु से श्रेष्ठ" बनने का गौरव प्राप्त कर लिया था। क्योंकि रमण महर्षि को अपना गुरु और शिक्षा का वंश मानने के बावजूद, वह केवल बुद्ध को ही अपने से श्रेष्ठ मानता था। अर्थात्, पूंजा बुद्ध के बाद दूसरे स्थान पर तभी आ सकता था जब उसने अपने मन में अपने गुरु महर्षि को श्रेष्ठ मान लिया हो।
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 173

यदि एंड्रयू अब पूंजा से आगे निकल गया है, तो संभवतः वह महर्षि से भी ऊपर और स्वयं बुद्ध के बाद दूसरे स्थान पर आ गया है।

फिर, अपने विनम्र "क्रांति" के प्रति अप्रत्याशित प्रतिरोध का अनुभव करते हुए, परिप्रेक्ष्य की किसी भी शेष भावना को स्वतंत्र रूप से त्यागते हुए, कोहेन (1992) ने लिखा कि यह केवल दूसरों का "पाखंड और आत्म-धोखा" था जो उनके "सत्य" के सामने उनके प्रति भय उत्पन्न करता था।

हाल ही में, टार्लो द्वारा कोहेन के आध्यात्मिक समुदाय में अपने कथित अनुभवों के खुलासे के प्रकाशन के बाद, उस वातावरण की स्थिति को लेकर सार्वजनिक रूप से गंभीर चिंताएँ उठाई गईं। इसके जवाब में, एंड्रयू (1999) ने अपने आसपास मंडरा रहे विवादों की उत्पत्ति के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि यह केवल उनकी अपनी अटूट ईमानदारी का परिणाम था।

दुर्भाग्यवश, कथित तौर पर "अत्यधिक नियंत्रणकारी" दृष्टिकोण के तहत लागू की गई सत्यनिष्ठा, और उसी पद पर पूर्ण अधिकार का प्रयोग, आज भी एक भयावह अवधारणा है, जिसका परिणाम विनाशकारी ही होगा। ऐसे संदर्भ में "अपने आदर्शों के प्रति सच्चा रहना" वास्तव में एक ऐसी बात है जिसे किसी भी अधिनायकवादी शासन के नेता उतनी ही वैधता से दावा कर सकते हैं।

समाजशास्त्री हन्ना एरेंड्ट, जिन्होंने [नाज़ी] एडॉल्फ आइच के बारे में लिखा था-

मैन के मुकदमे में, यह मार्मिक बयान दिया गया: "दुखद और बहुत
मामले की असहज सच्चाई यह थी कि यह उसका पिता नहीं था।
राष्ट्रवाद नहीं बल्कि उनकी अंतरात्मा ही थी जिसने उन्हें प्रेरित किया।
उनके अडिग रवैये को अपनाओ।" आइचमैन ने कहा था।
उसने खुद कहा कि वह अपने पिता को भी गैस चैंबर में भेज देता।
यदि आदेश दिया जाए तो कक्ष (विन, 2000; इटैलिक्स जोड़े गए)।

* * *

कुछ समय पहले तक कोहेन कथित तौर पर यह सिखा रहे थे कि
“कोई दुर्घटना नहीं होती” (टार्लो में, 1997)। इसके विपरीत, वह (2000) सभी व्यक्तियों के लिए “अपनी संपूर्ण कर्मिक दुर्दशा की जिम्मेदारी लेने” की आवश्यकता पर जोर दे रहे थे:

इसका कारण यह है कि इच्छाशक्ति का नियम [दूसरा]

कोहेन के औपचारिक मार्ग के "पांच सिद्धांत" एक ऐसी चुनौती है-

शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ

हममें से अधिकांश लोग
हमें पूरा यकीन था कि हम हर चीज के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकते।
जो हम करते हैं। और यही कारण है कि हमें लगता है कि हम ऐसा नहीं कर सकते।
हम जो कुछ भी करते हैं, उसके लिए संभवतः जिम्मेदार होना ही एकमात्र कारण है।
क्योंकि हमें पूरा यकीन है कि हम पीड़ित हैं.... 174 गुरुओं का पर्दाफाश

वे लोग जो किसी भी चीज़ से ज़्यादा आज़ाद होना चाहते हैं
... पूर्णतः जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं-
बिल्कुल, वे जो कुछ भी करते हैं [इटैलिक में जोड़ा गया]।
हालांकि, यह घटना कुछ ही समय पहले की है:
कोहेन ने न्यू एजर्स द्वारा प्रचारित इस धारणा का उपहास किया और
परंपरागत विश्वासियों सहित सभी का मानना है कि जो कुछ भी घटित होता है
यह ईश्वरीय रूप से निर्धारित है या कम से कम ऐसा ही होता है।
एक कारण से। "इस तरह की सोच में जो आत्ममुग्धता होती है, वह इतनी अधिक होती है।"
सरासर झूठ, मेरा मतलब है, यह लगभग हास्यास्पद है।"
दर्द और पीड़ा अक्सर अनियमित रूप से घटित होते हैं।
कोहेन ने मुझे आश्वस्त किया। वह और उनकी भारतीय मूल की पत्नी, अल्का, थे।
कुछ साल पहले न्यूयॉर्क शहर में एक सड़क पार करते हुए [अर्थात,
1994 में जब उन्हें एक कार ने टक्कर मार दी और वे बाल-बाल बचे। “मैं था
मैं सोच रही थी, ‘ऐसा क्यों हुआ?’ और मुझे एहसास हुआ कि ऐसा नहीं हुआ।
ऐसा किसी विशेष कारण से नहीं होता। यह बस हो गया।" (होर्गन,
2003).
जहां तक "बाल-बाल बचने" की बात है, उस दुर्घटना में कोहेन को केवल दाहिना हाथ टूटना और दाहिनी पिंडली में चोटें आईं; उनकी पत्नी को सिर में चोट और जबड़े में फ्रैक्चर हुआ। कुल मिलाकर, हालात को देखते हुए ये मामूली चोटें थीं, यानी रीढ़ की हड्डी या आंतरिक अंगों को कोई नुकसान न होना भी सौभाग्य की बात हो सकती है। वास्तव में, कोई दूसरा व्यक्ति इसी घटना को इस बात का सबूत बना सकता था कि "ईश्वर उनकी रक्षा कर रहा था।" क्योंकि, यह देखते हुए कि वे "आसानी से मारे जा

सकते थे," क्या यह "चमत्कार" नहीं है कि वे इतनी मामूली चोटों के साथ बच गए?
इन सब बातों से अलग, दुर्घटना में कोहेन द्वारा निभाई गई ज़िम्मेदारियों से पल्ला झाड़ना—यानी, "अपने किए की पूरी ज़िम्मेदारी न लेना"—असल में बस इतना ही है कि वह चलते समय ध्यान नहीं दे रहा था। टैक्सी फुटपाथ पर तो नहीं चढ़ी थी; बल्कि एंड्रयू और उसकी पत्नी सीधे उसके रास्ते में आ गए थे, भले ही लाल बत्ती थी। लेकिन क्या हम सभी ने दस साल की उम्र से पहले ही सड़क पार करने से पहले दोनों तरफ देखना नहीं सीखा था, भले ही कम से कम किनारे से ही सही?
इसके अलावा, कोहेन द्वारा स्वयं के अंतर्निहित पीड़ित होने की स्थिति में जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने की प्रवृत्ति की तुलना, कहीं अधिक कठिन परिस्थितियों में दूसरों की कथित जिम्मेदारियों के प्रति उनके कथित रवैये से करें:
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं भगवान हूँ 175

स्वयं को बोधिसत्व घोषित करने वाले [कोहेन] बेहद अहंकारी थे।
मानवीय कमजोरी के प्रलोभन में। उसने मुझे इस बारे में शेखी मारी कि कैसे वह
एक सिज़ोफ्रेनिक छात्र को उसकी समस्या के लिए दोष देने पर फटकार लगाई थी।
अपनी मानसिक बीमारी की जिम्मेदारी लेने के बजाय, उसने अपनी समस्याओं को उसी पर केंद्रित कर दिया।
स्वयं (होर्गन, 2003; इटैलिक्स जोड़े गए)।
वही तिरस्कार, निश्चित रूप से, उसी "रूड बॉय" रवैये का हिस्सा है जिसे विल्बर कोहेन में इतने अक्षम्य रूप से महिमामंडित करता है।
कोहेन का स्पष्ट दृष्टिकोण यह है: उनके द्वारा स्वयं एक आती हुई गाड़ी के रास्ते में आ जाना निराधार है, और इसलिए उनकी कोई जिम्मेदारी भी नहीं है, जो उन्हें वास्तव में एक "पीड़ित" बनाती है। लेकिन दूसरों को प्रभावित करने वाली गंभीर मानसिक बीमारी पर काबू पाने के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करना आवश्यक है, जिससे वे स्वयं स्पष्ट रूप से कतराते हैं।
इसके अलावा, चूंकि कोहेन ने बिना किसी कारण के होने वाली अच्छी चीजों के कोई उदाहरण नहीं दिए हैं, इसलिए यह माना जा सकता है कि केवल बुरी चीजें ही आध्यात्मिक रूप से अकारण होती हैं। वास्तव में, अपना "आत्मीय साथी" पाना या न्यूयॉर्क टाइम्स की बेस्टसेलर सूची में किसी पुस्तक का होना—

कोहेन को इनमें से किसी भी बात का कोई खतरा नहीं है—संभवतः ये दोनों ही बातें किसी न किसी कारण से घटित होंगी। यानी, ये शायद किसी के आध्यात्मिक विकास के लिए या किसी के भव्य जीवन-लक्ष्य में परिकल्पित "क्रांति" के लिए घटित होंगी। और ऐसे बड़बड़ाते हुए "बुद्धों" के सामने, अपने सर्वोच्च लाभ के लिए, क्या हमें पूरी तरह से आत्मसमर्पण कर देना चाहिए?
कोहेन ज्ञानोदय को अज्ञानता के एक रूप के रूप में वर्णित करते हैं।
और फिर भी उनका गुरुत्व, उनका पूरा जीवन, उनके अस्तित्व के इर्द-गिर्द घूमता है- उसे अपनी अद्वितीय पूर्णता के ज्ञान पर भरोसा था।
दूसरे शब्दों में कहें तो, कोहेन एक अति-अहंकारी व्यक्ति हैं। उनका सहज व्यवहार हम जैसे साधारण, अहंकारी मनुष्यों के प्रति तिरस्कार भयावह है।
जैसा कि उनका मानना है कि एक प्रबुद्ध प्राणी के रूप में, जिसने पार कर लिया है- अच्छाई और बुराई से परे, वह किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। कोहेन शायद ऐसा नहीं है।
वह एक राक्षस है, जैसा कि उसकी माँ दावा करती है, लेकिन उसमें यह क्षमता है कि वह
एक हो जाओ (होर्गन, 2003; इटैलिक्स जोड़े गए)।
हालांकि, तमाम संभावित भयावहताओं को एक तरफ रखते हुए, कोहेन भी निश्चित रूप से इस बात से सहमत होंगे, अपने स्वयं के "दुर्घटनाओं" और कई "उत्पीड़नों" के बाद - और साथ ही अपनी यहूदी मां द्वारा उनकी तुलना हिटलर से किए जाने के बाद - कि "कभी-कभी आपको लगता है कि आप भगवान हैं... कभी-कभी नहीं।"

अध्याय XXII

हैलो, दलाई!
(दलाई लामा)

दलाई लामा तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग संप्रदाय के प्रमुख हैं।
“दलाई लामा” उपाधि स्वयं मंगोलियाई भाषा की है, जिसका अर्थ है “ज्ञान का

सागर" या "ज्ञान का विशाल भंडार"।
सन् 1391 में जन्मे पहले दलाई लामा से लेकर, प्रत्येक दलाई लामा को पूर्ववर्ती दलाई लामा का अवतार माना जाता है। उन्हें करुणा के बोधिसत्व/बुद्ध चेनरेज़िग का अवतार भी माना जाता है।
दलाई लामा के निधन के बाद, उनके भिक्षुओं ने एक संस्था की स्थापना की।
लामा के पुनर्जन्म की खोज, जो आमतौर पर एक छोटा होता है
बच्चा। पूर्व दलाई लामा की संपत्ति से परिचित होना।
लामा को पुनर्जन्म का मुख्य प्रतीक माना जाता है।
पुनर्जन्म की खोज में आमतौर पर कुछ साल लग जाते हैं।
जिसके परिणामस्वरूप दलाई लामाओं की सूची में एक अंतराल आ जाता है (विकिपीडिया-
(अर्थात, 2003)।
वर्तमान दलाई लामा—जो उस आध्यात्मिक परंपरा में चौदहवें हैं—तेनज़िन ग्यात्सो का जन्म 1935 में हुआ था। वे 1959 में तिब्बत पर चीनी आक्रमण से भागने के बाद से भारत के धर्मशाला में रह रहे हैं।
176
हैलो, दलाई! 177

उसी वंश के पूर्व अवतारों ने इतिहास पर अपनी-अपनी छाप छोड़ी है:
छठे दलाई लामा ... के बारे में कहा जाता था कि वे इस पद के लिए उपयुक्त नहीं थे। उनके कार्यालय में, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे कई महिलाओं से प्रेम करते थे, साथ ही साथ
जुए और शराब के प्रति लगाव (कार्नाहन, 1995)।
उन्होंने पूर्णतः दीक्षित पुजारी के नियमों का भी पालन नहीं किया।
वह नियमित रूप से शराब पीता था...
"तिब्बती काल में लामाओं और भिक्षुओं की पवित्र परंपराओं की अनदेखी करना..."
मुझे लगता है कि उसने सबसे पहले अपने बालों की देखभाल शुरू की, फिर उसने...
मादक पेय पदार्थों का सेवन, जुआ खेलना, और अंततः कुछ भी नहीं
लड़की या विवाहित महिला या किसी भी लिंग का सुंदर व्यक्ति

वह उसकी बेलगाम कामुकता से सुरक्षित था" (फ्रेंच, 2003;
इटैलिक्स जोड़े गए)।
प्रारंभिक दलाई लामाओं में से एक विशेष रूप से अपने लिए जाने जाते थे।
महिलाओं के प्रति प्रेम। यह घरों में आम बात थी।
जिसकी एक बेटी को दलाई लामा का सम्मान प्राप्त हुआ था
यौन संबंध के माध्यम से संचरण उनके ऊपर झंडा उठाने के लिए
घर। कहा जाता है कि हवा में झंडों का एक समुद्र लहरा रहा था।
शहर (कैपलान, 2002)।
छठे शासक, त्सांगयांग ग्यात्सो, कुछ सौ साल पहले, 1683 से 1706 तक, पारंपरिक कृषि प्रधान तिब्बत में जीवित रहे।
इस पुनर्जन्म की परंपरा को देखते हुए, हमें शायद ही आश्चर्य होना चाहिए कि वर्तमान दलाई लामा ने स्वयं यौन मामलों पर एक-दो विचार व्यक्त किए हैं। क्योंकि, जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने किन सामान्य अनुभवों को सबसे अधिक खोया है, तो सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त भिक्षु ने अपनी कमर की ओर इशारा करते हुए हँसते हुए कहा: 'मैं स्पष्ट रूप से
इसे चूक गया'" (एलिस, 2003)।
नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, जो अहिंसक विचारधारा के प्रतीक हैं, ने यह भी स्वीकार किया कि वे "एक अच्छे पिता नहीं बन पाते क्योंकि उनका स्वभाव बहुत गुस्सैल था"।
मैं पहले थोड़ा गुस्सैल स्वभाव का था और मुझे अचानक गुस्सा आ जाता था।
धैर्य और कभी-कभी क्रोध। आज भी, ऐसे लोग हैं।
बेशक, कई बार मैं अपना आपा खो देता हूँ। जब ऐसा होता है,
मामूली सी परेशानी भी बेवजह बड़ी हो सकती है और बढ़ सकती है-
मुझे काफी हद तक प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, मैं जाग सकता हूँ।
सुबह-सुबह बेचैनी महसूस होती है, वो भी बिना किसी खास वजह के।
मुझे लगता है कि जो चीज़ें मुझे आम तौर पर पसंद आती हैं, वे भी मुझे परेशान कर सकती हैं-178 गुरुओं का सार उजागर करना

मुझे बताओ। सिर्फ अपनी घड़ी देखने से ही मन में कई तरह की भावनाएं जाग उठती

हैं।
झुंझलाहट (लामा, 1999)।
बहरहाल, दलाई लामा के जन्म देश के अन्य लामाओं ने स्पष्ट रूप से यौन संबंध के मामले में उतनी कमी नहीं झेली है, जैसा कि तिब्बती बौद्ध धर्म की एक पश्चिमी महिला शिक्षिका और अनुयायी ने इस विषय पर अपनी भावनाओं को समझने की कोशिश करते हुए उल्लेख किया है:
यह बूढ़ा लामा, जो सर्वोच्च सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर चुका था, भला ऐसा कैसे कर सकता था?
महा मुद्रा के वज्रयान अभ्यासों में, तेरह या उससे अधिक का चयन करें।
मठ की चौदह वर्षीय नन को उसकी यौन साथी बनने के लिए।
क्या हर साल यौन संबंध बनाना उचित है? लामा की पत्नी इस बारे में क्या सोचती थी?...
मैंने कई पश्चिमी महिलाओं से बात की जो सो चुकी थीं।
अपने लामाओं के साथ। कुछ को यह अच्छा लगा—उन्हें खास महसूस हुआ। कुछ को लगा
इसका इस्तेमाल किया गया और इसने उन्हें अभ्यास से दूर कर दिया। कुछ ने कहा कि वे
उन्होंने लामा की मां की तरह उनका पालन-पोषण किया। लेकिन किसी ने भी इसे शिक्षा के रूप में वर्णित नहीं किया;
इसमें तांत्रिक जैसा कुछ नहीं था। यौन संबंध लामा के लिए था।
उन्हें नहीं (कॉर्नफील्ड में, 2000)।
बेशक, हर मुद्दे के दो पहलू होते हैं। इसी प्रकार, तेनज़िन पाल-मो, जिन्होंने स्वयं तिब्बत में सैकड़ों पुरुष भिक्षुओं के बीच एकमात्र (ब्रह्मचारी) महिला के रूप में कई वर्ष बिताए, ने इंग्लैंड में चोग्याम ट्रुंगपा के "व्यभिचारी हाथों" का मज़ाक उड़ाने के बाद टिप्पणी की:
कुछ महिलाएं "संगिनी" कहलाने पर बहुत प्रसन्न होती हैं।
उन्हें किस स्थिति में परिणाम भुगतने चाहिए? और कुछ
महिलाएं पुरुषों से केवल इसी तरह से संबंध बनाना जानती हैं। मैं कुछ हद तक...
कई बार हमें लगता है कि हम महिलाओं को इन पीड़ित पुरुषों से दूर रहना होगा।

वास्तविकता...
एक सच्चा गुरु, भले ही उसे लगता हो कि तांत्रिक संबंध रखना...
यह संबंध उस शिष्य के लिए लाभदायक हो सकता है, इससे उसे फायदा होगा।
यह अनुरोध इस समझ के साथ किया गया है कि इससे कोई नुकसान नहीं होगा।
अगर वह मना कर दे तो उनका रिश्ता टूट जाएगा। किसी भी महिला को कभी भी ऐसा नहीं करना चाहिए।
उसके अधिकार या उसकी भावना के आधार पर सहमत होना
आज्ञापालन। इसका अर्थ यह होना चाहिए कि "यदि वह चाहे तो,"
अच्छा; अगर नहीं, तो भी अच्छा," उसे एक विकल्प और एक एहसास देते हुए।
सम्मान। तब यह शोषण नहीं है (मैकेन्ज़ी, 1999 में)।
फिर भी, भले ही कोई इस बात से सहमत हो कि "पीड़ित मानसिकता से बाहर निकलना" आवश्यक है, लेकिन जब कोई "महान आध्यात्मिक सत्ता" या "अचूक ईश्वर" आपसे कुछ करने के लिए कहता है, तो आपको प्रसन्न होने, यहाँ तक कि उसका आनंद लेने का भी अधिकार है... और फिर भी, "ना" न कह पाने का भी। आखिरकार, अपनी "आज्ञाकारिता की भावना" को इससे अलग करना संभव नहीं है।
हैलो, दलाई! 179

और इन सब से मुक्ति की आवश्यकता, शायद उससे भी अधिक जब
ईश्वर "विनम्रता से पूछता है।" वेबस्टर (1990) ने ईमानदारी से कहें तो, एक दशक पहले ही इन सभी बिंदुओं को विस्तार से बताया था। केवल इसलिए कि सभी संकेत यही बताते हैं कि ये बातें अभी तक ठीक से समझ में नहीं आई हैं, इसलिए इन्हें यहाँ दोहराना उचित है।
हम इस मुद्दे पर बाद के अध्याय में फिर से चर्चा करेंगे।
किसी भी मामले में, जानविलेम वैन डे वेटेरिंग (2001) ने अठारहवें उच्च-लामा (अर्थात, वह व्यक्ति जिसे पहले सत्रह जन्मों में लामा के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी) के साथ आगे के अनुभवों का वर्णन किया है:
रिम्पोचे को उनके समर्थक समूह द्वारा एक कार दी गई थी।
लंदन स्थित समर्थकों द्वारा समर्थित और अक्सर महिला शिष्यों को साथ लेकर बाहर जाते थे।

समुद्र तट की ओर। एक महीने बाद, जब मैं एम्स्टर्डम में था-
बांध के पास एक दुर्घटना के कारण मंदिर की नियमित गतिविधियाँ बाधित हो गईं। रिम-
पोचे, पास के एक कस्बे में पब जाने के बाद घर वापस गाड़ी चला रहा था,
अपनी प्रिय प्रेमिका के साथ, वे एक पेड़ से टकरा गए। “शराब-
संबंधित"....
रिम्पोचे लगातार शराब पीते रहते थे और चिड़चिड़े हो जाते थे।
कई बार। मेरी पत्नी एक मक्खी को मारने ही वाली थी जो मुझे परेशान कर रही थी।
रात के खाने के दौरान वह और बेथ [पसंदीदा, मिनी-स्कर्ट वाली लड़की]
पेड़ चिल्लाया, "किसी सजीव प्राणी को मत मारो!" और उसे
रिम्पोचे ने उसके सिर पर वार किया और उसे चुप रहने को कहा।
उसकी आवाज धीमी हो गई।
जिस व्यभिचारी लामा की बात हो रही है, वह वर्षों के कठिन जीवन के बाद चालीस वर्ष की आयु में ही मर गया। उस व्यभिचार की कहानी को सुनने वाली मोहॉक भारतीय शमन ने अपना संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया:
“हां,” उसने कहा, “मैंने पहले भी ऐसा होते सुना है। शायद-”
यही एकमात्र तरीका था जिससे रिम्पोचे यहां रह सकते थे।
(वैन डे वेटेरिंग, 2001)।
इसमें हास्यास्पद विचार यह है कि आत्मा जितनी अधिक उन्नत होती है, उसे अपने शरीर को छोड़कर बार्डो लोकों या सूक्ष्म जगतों आदि में वापस जाने से रोकने के लिए स्वयं को पृथ्वी में उतना ही अधिक स्थिर करना पड़ता है।
इसके विपरीत, हालांकि अपने अधिक रूढ़िवादी वंश की शिक्षाओं के अनुरूप, वर्तमान दलाई लामा "शारीरिक सुखों" पर अच्छी तरह से परिभाषित सीमाओं का पालन करते हैं और उन्हें लागू करते हैं।
यौन नैतिकता पर उनका दृढ़ रुख पोप के रुख के काफी करीब है।
जॉन पॉल द्वितीय, एक ऐसा तथ्य जिसे उनके पश्चिमी अनुयायी अक्सर अनदेखा करते हैं।
शर्मनाक, और अनदेखा करना पसंद करते हैं। दलाई लामा का अमेरिका में 180 डिग्री का बदलाव, गुरुओं को अपमानित करना।

प्रकाशक ने उनसे निषेधाज्ञा हटाने के लिए भी कहा था।
उनकी [1999] पुस्तक एथिक्स फॉर द न्यू मिल- से समलैंगिकता का जिक्र।
अमेरिकी पाठकों को नाराज करने के डर से लेनियम का प्रयोग किया गया।
और दलाई लामा ने सहमति दे दी (फ्रेंच, 2003)।
इन प्रतिबंधों पर और विस्तार से बताते हुए, लामा (पी. हार-
वे, 2000) ने कहा है:
पुरुषों और महिलाओं के लिए यौन दुर्व्यवहार में मौखिक और
गुदा मैथुन... यहां तक कि अपनी पत्नी के साथ भी, मुंह या अन्य अंगों का उपयोग करके।
यह यौन दुराचार है।
जहां तक यौन संबंध होने के समय का सवाल है, यदि यह उस दौरान होता है
इसे दुराचार का एक रूप भी माना जाता है (लामा, 1996)।
सौभाग्यवश, कुछ "मनोरंजन" की अनुमति अभी भी है, हालांकि दिन के उजाले के दौरान नहीं:
आपके द्वारा भुगतान की गई वेश्या के साथ यौन संबंध बनाना और
दूसरी ओर, किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा नहीं किया जाना, इसका गठन नहीं करता है।
अनुचित व्यवहार (लामा, 1996)।
दिलचस्प। फिर भी, दूसरी ओर की बात करें तो:
हाथ का इस्तेमाल करना यौन दुराचार है (दलाई धर्म के अनुसार)।
लामा, [पी. हार्वे, 2000] में)।
हस्तमैथुन में ... किसी दूसरे व्यक्ति पर वीर्यपात करना शामिल है।
एक भिक्षु द्वारा किसी नौसिखिए से हस्तमैथुन करवाना, या स्वयं हस्तमैथुन करना-
एक सोते हुए नौसिखिए को पसलियां झुलाना, जिसमें शामिल हो सकता है
समलैंगिक कृत्य। यह प्रायश्चित का एक छोटा अपराध है [अर्थात,
प्रायश्चित], “असंतोष से व्याकुल” ननों के लिए थप्पड़ मारने के लिए
एक दूसरे के जननांगों को हथेलियों या किसी वस्तु से छूना,
थप्पड़ मारने वाला “संपर्क का आनंद ले रहा है” (पी. हार्वे, 2000)।
"ननें बस मौज-मस्ती करना चाहती हैं।"

पुनर्जन्म को लेकर वर्तमान दलाई लामा के विचार भी आध्यात्मिक मानदंडों से कुछ हद तक भिन्न हैं:

ऐसी संभावना है कि एक वैज्ञानिक जो बहुत अधिक रुचि रखता है-
उन्होंने अपना पूरा जीवन [कंप्यूटरों के साथ] बिताया, फिर अगला जीवन भी...
[उसका पुनर्जन्म कंप्यूटर में होगा], वही प्रक्रिया! फिर यह
वह मशीन जो आधी इंसान और आधी मशीन है, उसे फिर से बनाया गया है-
अवतरित (हेवर्ड और वरेला, 1992)।
हैलो, दलाई! 181

जेरेमी हेवर्ड और फ्रांसिस्को वरेला, दोनों ही लेखक चोग्याम ट्रुंगपा के अनुयायी रहे हैं। हेवर्ड ने नारोपा संस्थान/विश्वविद्यालय की स्थापना में सहयोग किया और वहाँ अध्यापन कार्य भी किया है; वे वर्तमान में फ्रांस के डेचेन चोलिंग ध्यान केंद्र में "आचार्य-इन-रेजिडेंस" हैं। वे प्रतिष्ठित जर्नल ऑफ कॉन्शियसनेस स्टडीज के संपादकीय मंडल में भी शामिल हैं। वरेला 2001 में अपने निधन तक इसी मंडल में रहे और विल्बर के इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्य थे। उनके पुनर्जन्म के बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं है, लेकिन अगर आपका नया एक्सबॉक्स या आईपॉड ठीक से काम नहीं कर रहा है...

हालांकि, मैं खुद उस प्रस्तावित पुनर्जन्म के परिदृश्य को बिल्कुल भी संभव नहीं मानता। लेकिन पूरी बात स्पष्ट कर दूं: मैं खुद भी कभी कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का काम करता था। फिर भी, उन साठ घंटे के लंबे सप्ताहों के बावजूद, मेरा "गैर-मानवीय" हिस्सा आज भी सेमीकंडक्टर से कहीं ज्यादा वल्कन जैसा है।

दिलचस्प बात यह है कि केन विल्बर (2001a) ने उपरोक्त पुनर्जन्म संबंधी सुझावों से बहुत ही निकट से संबंधित विषय पर अपनी राय प्रस्तुत की:

यह पूरी धारणा कि चेतना को डाउनलोड किया जा सकता है
माइक्रोचिप्स में रुचि ज्यादातर तकनीकी रूप से उत्साही किशोर लड़कों से आती है।
जो सेक्स नहीं कर पाते और रात भर जागते रहते हैं, घूरते रहते हैं।
कंप्यूटर स्क्रीन में, अलग होते हुए, अमूर्त होते हुए, घुलते हुए
निराकार चिंतन में।

खैर, “अजीबोगरीब किशोर लड़के”... और कुछ सम्मानित लामा। साथ ही, एक तरह

से, एलन गिन्सबर्ग के अर्ध-सुसंगत, निर्भीक रूप से स्त्री-द्वेषी मित्र और चोग्याम ट्रुंगपा के साथी प्रशंसक, विलियम एस. बरोज़। (बरोज़ ऑर्गेन के प्रशंसक और ऑर्गेज्म का जश्न मनाने वाले मनोवैज्ञानिक विल्हेम रीच के काम के भी बहुत बड़े प्रशंसक थे।) क्योंकि, जब वे अपनी दिवंगत पत्नी के साथ "विलियम टेल" खेलने में व्यस्त नहीं होते थे—और लक्ष्य चूक जाते थे, भले ही उस समर्पित व्यक्ति को न चूकें—तो बरोज़ (1974) निम्नलिखित पर विचार करते थे:

अब वे मानव शरीर के अंगों को बदलने में सक्षम हैं।
जैसे किसी पुरानी कार के खराब हो जाने पर होता है। अगली बात,
बेशक, इसमें मस्तिष्क का प्रत्यारोपण शामिल होगा। हम यह मान रहे हैं कि
अहं, जिसे हम अहंकार, मैं या तुम कहते हैं, कहीं स्थित होता है-
मस्तिष्क के मध्य भाग में, इसलिए बहुत जल्द ही हम ऐसा कर पाएंगे।
एक शरीर से दूसरे शरीर में अहंकार का स्थानांतरण। अमीर लोग होंगे
युवा शरीरों को खरीदने में सक्षम।

* * *

दिलचस्प बात यह है कि शांतिवादी विचारधारा के घोर विरोधी अभिनेता स्टीवन सीगल को पेनोर रिनपोचे ने पुनर्जन्मित लामा, यानी तिब्बती बौद्ध धर्म का एक पवित्र पात्र या तुलकु घोषित किया है। शायद इसी "गौरवशाली छवि" के चलते सीगल को एक बार लॉस एंजिल्स में दलाई लामा के प्रवचन में रिचर्ड गेरे से आगे, यानी मंच के करीब, सम्मानपूर्वक बैठाया गया था। बेशक, अगर पेनोर सीगल के बारे में गलत हैं, तो वे उतने बुद्धिमान या अंतर्ज्ञानी नहीं हैं जितना उनके अनुयायी मानते हैं। दूसरी ओर, अगर वे सही हैं और सीगल एक तुलकु हैं, तो यह केवल यह दर्शाता है कि ऐसे खिताबों (जिनमें पेनोर का खुद का रिनपोचे वाला खिताब भी शामिल है) का कितना कम महत्व है।

1994 में सीगल का कुसुम लिंगपा से कथित तौर पर अलगाव हो गया था।
निर्वासित तिब्बती लामा को ओलिवर स्टोन और अन्य लोगों का भी समर्थन प्राप्त था।
कई अन्य हॉलीवुड सितारों ने भी ऐसा ही किया, जब लिंगपा ने मना कर दिया।
उन्हें तुलकु घोषित कर दिया। फिर 1995 में, सीगल भारत गए और

तिब्बती मठों का दौरा करने के लिए एक विमान किराए पर लिया।
एक और आध्यात्मिक गुरु...
दलाई लामा के साथ उनकी मुलाकात के दौरान, उनके अनुसार
डोरा [एम.], सीगल को लगा कि कुछ "अद्वितीय" परिवर्तन हुआ है।
उनके और दलाई लामा के बीच मतभेद थे। उन्होंने दावा किया कि
“परम पूज्य ने झुककर उनके चरणों को चूमा,” उसने कहा। “और
सीगल ने इसका यह अर्थ निकाला कि दलाई लामा को घोषित किया गया था।
उसे देवता बना दिया” (शेल, 2000)।
जून 1997 में, देवत्व प्राप्त देव-पुरुष सीगल को पेनोर रिनपोचे द्वारा तिब्बती बौद्ध धर्म के न्यिंगमा संप्रदाय के संस्थापक चुंगड्रैग दोरजे के पुनर्जन्म के रूप में औपचारिक रूप से मान्यता दी गई थी।
पेनोर धर्म केंद्र स्थापित करने की प्रक्रिया में था।
जब सीगल ने उन्हें लॉस एंजिल्स आमंत्रित किया और फिर से दुनिया भर में...
कथित तौर पर उन्होंने अपने ... में एक महत्वपूर्ण [वित्तीय] योगदान दिया।
पश्चिम में सीट"....
बौद्ध पत्रिका ट्राइसाइकिल की संपादक हेलेन ट्वेर-
कोव [sic] ने अपनी शंकाओं के बारे में स्पष्ट रूप से कहा: "यह एक कठिन स्थिति है-"
क्योंकि स्टीवन सीगल को जानने वाला कोई भी व्यक्ति—जो रहा है
उसके आसपास मौजूद लोग—ऐसा लगता है कि वे सोचते हैं कि वह किसी भी उच्च स्तर का प्रदर्शन करता है।
आध्यात्मिक ज्ञान” (शेल, 2000)।
हालांकि, आध्यात्मिकता की इस स्पष्ट कमी ने जाहिर तौर पर तिब्बती बौद्ध मार्ग में निहित असंख्य मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों के प्रति सीगल के उत्साह को कम नहीं किया है:

अभिनेता स्टीवन सेगल ने घोषणा की, "मेरे चक्र घूमने लगे-"
निंग और फिर मेरे [शाओ-] को पहनने के बाद संतुलन में आ गया।

लिन] व्हील [ऑफ लाइफ पेंडेंट]" (रैंडी, 2003)।
बहरहाल, उपर्युक्त पेनोर रिनपोचे वही हैं जिन्होंने एंड्रयू कोहेन के काम के प्रति गहरी सराहना व्यक्त की है। ये वही पेनोर रिनपोचे हैं—जो अब न्यिंग-
मा वंश—जिनके बारे में स्वयं केन विल्बर (2000a) ने प्रशंसात्मक टिप्पणी की है:
हालांकि मैं लगभग पच्चीस वर्षों से ध्यान कर रहा हूँ
कई वर्षों से आध्यात्मिक साधना कर रहे हैं और दर्जनों विभिन्न आध्यात्मिक अभ्यासों को आजमा चुके हैं।
—इस समय मैं जो भी काम कर रहा हूँ, उनमें से अधिकांश मुझे प्राप्त हुए थे
लोंगचेन न्यिंगथिग, परम पावन पेमा नोरबू (पे-) द्वारा दिया गया।
न ही) रिनपोचे।
इसके अलावा, ये वही पेनोर रिनपोचे हैं जिन्होंने 1986 में कैथरीन बरोज़ को पहली अमेरिकी महिला तुलकु के रूप में मान्यता दी थी और कहा था कि "उनके मन का मूल आधार धर्म था" (शेरिल, 2000)। दिलगो ख्येनत्से रिनपोचे ने बाद में पुष्टि की कि बरोज़ सोलहवीं शताब्दी की तिब्बती संत, जेन-येनमा अखोन ल्हामो (जो न्यिंगमा स्कूल के अंतर्गत तिब्बती बौद्ध धर्म की पाल्युल परंपरा की सह-संस्थापक थीं) का पुनर्जन्म थीं। (ख्येन-त्से दलाई लामा के ज़ोगचेन गुरु थे। वे वही संत थे जिन्होंने ट्रुंगपा और तेंडज़िन के अनुयायियों को आश्वस्त किया था कि उन गुरुओं ने उन्हें प्रामाणिक धर्म दिया है, जबकि तेंडज़िन ने उनमें से कुछ को एड्स दे दिया था।) बुरोज़, जिनका नाम बदलकर जेट्सुनमा अखोन नोरबू ल्हामो रखा गया, ने लगभग सौ अनुयायी जुटाए - जो पेनोर रिनपोचे द्वारा अनुमानित पंद्रह सौ से काफी कम थे। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे बड़े तिब्बती बौद्ध मठ की स्थापना भी की, जो वाशिंगटन डीसी के बाहर स्थित है।
प्रसिद्ध महिला तुलकु ने कथित तौर पर पहले दावा किया था कि वह यीशु की एक महिला शिष्या का पुनर्जन्म है, जिसे प्राचीन काल में ज्ञानवादी ग्रंथों को आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा गया था। उन्होंने अपने भावी तीसरे पति को गुप्त सत्रों में यह भी बताया था कि उन दोनों ने पृथ्वी पर प्राचीन, अलिखित सभ्यताओं पर शासन किया था। यह भी माना जाता है कि उन्होंने पिछले जन्मों में एक साथ आकाशगंगाओं पर शासन किया था (शेरिल, 2000)।
यही कारण हो सकता है कि जेटसुनमा को स्टार ट्रेक और आम तौर पर विज्ञान कथा

फिल्मों से इतना लगाव है। 184 गुरुओं को निहारना

बहरहाल, इस वर्तमान जीवन में तुलकु को दी गई जिम्मेदारियां आकाशगंगा के नेतृत्व से कुछ ही कम प्रभावशाली थीं:
उन्होंने कहा, "पश्चिम में धर्म का भविष्य हम पर निर्भर करता है।"
उनके छात्र (शेरिल, 2000)।
धर्म भी पूर्व ब्रुकलिन गृहिणी के "आश्रय में" जाने के लिए पर्याप्त नहीं था। क्योंकि, जैसा कि कथित तौर पर उसकी आकर्षक, मजबूत शरीर वाली ट्रायथलीट महिला पर्सनल ट्रेनर (टेरी) को एक "बहुत ही निजी" रिश्ते के बीच पता चला:
हालांकि बौद्ध धर्म में धर्म प्रचार करना उचित नहीं माना जाता है, फिर भी लामा ऐसा करते हैं।
वे बहुत ही चालाक माने जाते हैं, और वे हर तरह की तकनीक का इस्तेमाल करते हैं।
किसी छात्र को बेनकाब करने के लिए चापलूसी, वादे, यहां तक कि झूठ जैसी तरकीबें अपनाई जाती हैं।
धर्म का पालन करना एक बहुत बड़ा आशीर्वाद माना जाता है। और यदि
एक लामा आपके साथ यौन संबंध बनाना चुनता है (शेरिल, 2000)।
मुख मैथुन और हस्तमैथुन, वर्जित। समलैंगिक यौन संबंध, मान्य।
"अत्यंत आशीर्वाद।"
इसके बाद कई और वित्तीय और व्यक्तिगत गड़बड़ियां सामने आईं, जिनमें चालीस से अधिक उम्र की जेटसुनमा द्वारा टेरी को छोड़कर उसके बीस साल के एक पुरुष शिष्य को अपना "साथी" बनाना शामिल था। हालांकि, उस शिष्य को भी एक साल बाद छोड़ दिया गया। अविश्वसनीय रूप से, उसे अपने लामा/गुरु के साथ यौन संबंध बनाने के कारण मिले "आशीर्वाद को बनाए रखने" के लिए भिक्षु बनने के लिए राजी किया गया, जिसके तहत उसे फिर कभी किसी "साधारण स्त्री" के साथ नहीं सोना था।
इसके कुछ ही समय बाद, अंतरिक्ष युग की जेटसन-मा, दूरस्थ आकाशगंगाओं की शासक, ने अपने से बीस दशक छोटे एक अन्य पुरुष शिष्य से सगाई कर ली। (उसके मध्य जीवन में कपड़ों के प्रति रुझान भी धीरे-धीरे टाइट जींस, काले चमड़े के बूट और कथित तौर पर विक्टोरियाज़ सीक्रेट कैटलॉग से बार-बार की जाने वाली खरीदारी की ओर बढ़ने लगे। ये सब कथित तौर पर छह अंकों के वार्षिक व्यक्तिगत भत्ते से चुकाए

जाते थे, जो कथित तौर पर लगातार संघर्षरत आश्रम के आधे के बराबर था।)
परिचालन व्यय [शेरिल, 2000]। वह नवीनतम, अस्थिर अनुयायी 1996 में जेटसुनमा से अलग हो गया, 1997 में फिर से मिल गया, 1998 की शुरुआत में फिर से अलग हो गया और उसी वर्ष बाद में एक बार फिर से मिल गया, फिर 1999 में फिर से अलग हो गया।
उभयलिंगी टेरी के साथ अपने "व्यक्तिगत संबंध" की शुरुआत में, जेटसुनमा अपने तीसरे पति से विवाहित थी, और यह रिश्ता उस समय से चला आ रहा था जब वह लगभग पूरी तरह से अज्ञात थी।
हैलो, दलाई! 185

यह तलाक समझौता यकीनन सबसे विचित्र समझौतों में से एक था, जिसमें उस पूर्व, कड़वे स्वभाव वाले पति को 2500 डॉलर नकद और एक "बड़ा क्रिस्टल बॉल" मिला —संभवतः इसलिए ताकि वह भविष्य में किसी भी ऐसी ही उलझी हुई महिला के साथ न उलझे। ऐसा लगता है कि उसी व्यक्ति ने बाद में कई वर्षों तक नारोपा इंस्टीट्यूट में जनसंपर्क विभाग में काम किया (शेरिल, 2000)।
खैर, "जितना आप मारा को जानते हैं, उतना ही बेहतर है," इत्यादि।
संदर्भगत तुलना के संदर्भ में, जेटसुनमा का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक उन अन्य "ऋषियों" से बेहतर नहीं है जिन्हें हमने पहले देखा है:
[उस समय जेटसुनमा के पति] ने उसकी दूरी महसूस की, और उसने
उसे उसके प्रति और अपने छात्रों के प्रति बढ़ती हुई घृणा का एहसास हुआ।
रात के खाने के समय वह उनकी नकल करती, उन पर चुटकुले सुनाती।
(शेरिल, 2000)।
शिष्यों के बारे में इस तरह की निजी नकलें और चुटकुले, जिनकी मुख्य गलती अपने गुरु को एक महान और पवित्र व्यक्ति मानना था, निश्चित रूप से किसी के आध्यात्मिक या मनोवैज्ञानिक लाभ के लिए नहीं बल्कि केवल स्वयं उनके अपने लाभ के लिए ही किए गए होंगे।
जेटसुनमा के मठ में प्रत्येक भिक्षु पर चार भिक्षुणियों का अनुपात था। इसलिए, उनके साथ और उस समुदाय के भीतर बताई गई समस्याओं के लिए केवल "पितृसत्तात्मक" या "पुरुषवादी" विचार जिम्मेदार नहीं ठहराए जा सकते। इसके अलावा, उन्हें (और

उनके जैसे लोगों को) निर्दोष पीड़ित मानना, जो केवल "मौजूद" [अस्तित्व] द्वारा भ्रष्ट हो गए हैं,

पितृसत्ता को चुनौती देने वाले इस विचार (हार्वे, 2000 देखें) को शायद ही कोई अधिक साहसी तेनज़िन पाल्मो स्वीकार कर पाती। क्योंकि, सभी संकेत यही बताते हैं कि जेटसुनमा स्वेच्छा से तिब्बती बौद्ध धर्म में शामिल हुईं और जानबूझकर हर कदम पर अपनी शक्ति बढ़ाती रहीं। दरअसल, उन्होंने कथित तौर पर पेनोर रिनपोचे पर उन्हें अवतार के रूप में मान्यता देने के लिए दबाव डाला, इससे पहले कि वे ऐसा करने को तैयार हों। वास्तव में, जब उनका पुनर्जन्म एक "अज्ञात" संत का निकला, तो वे कथित तौर पर खुले तौर पर निराश हुईं। औपचारिक मान्यता से काफी पहले, जब वे पहली बार रिनपोचे से मिलीं, तो ऐसा लगता है कि वे और उनके पति लगभग मिले ही नहीं थे।

वे जानते थे कि बौद्ध धर्म क्या था (शेरिल, 2000)। और शायद वे सीखने के लिए इतने उत्सुक भी नहीं होते, ऐसा संदेह है, अगर ऐसा करने से दुनिया में उनकी अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि न होती।

जेटसुनमा और उनके कई अनुयायी 90 के दशक के उत्तरार्ध में तटीय मैरीलैंड से एरिज़ोना के ऊंचे इलाकों में चले गए। यह होपी धर्म की भविष्यवाणियों की पूर्ति की प्रत्याशा में किया गया था— उस समय उनका नया प्रेमी एक अमेरिकी मूल निवासी तांत्रिक था— 186 गुरुओं को निहारना

कि भूकंप, बाढ़ और अकाल संयुक्त राज्य अमेरिका को प्रभावित करेंगे
1999 में राज्य (शेरिल, 2000)।

इस लेख को लिखते समय, सौभाग्य से अमेरिका की भौगोलिक स्थिति काफी हद तक सुरक्षित है, न तो बाढ़ का पानी अधिक है और न ही भोजन की कमी है। और अगर आपने हाल ही में धरती को हिलते हुए महसूस किया है, तो संभवतः वह रिक्टर स्केल पर दर्ज नहीं हुआ होगा।

इन सब के बाद, पेनोर रिनपोचे का जेटसुनमा और स्टीवन सीगल के साथ हुए अनुभवों से आहत होना स्वाभाविक था—स्टीवन सीगल की कथित "दिव्यता" को कई बौद्धों ने स्वीकार नहीं किया था। दरअसल, 1997 में मार्था शेरिल के साथ एक साक्षात्कार में, पेनोर ने घोषणा की थी कि वे "अब किसी भी अमेरिकी को तुलकुआ

के रूप में मान्यता नहीं देंगे।"
तो ऐसा लगता है कि रिचर्ड गेरे की किस्मत खराब है।
* * *
तुलकु घटना का अपना एक दिलचस्प और बहुत ही मानवीय इतिहास है।
पुनर्जन्म को मान्यता देने की प्रणाली तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में प्रथम कर्मापा लामा दुसुम ख्येनपा के अनुयायियों द्वारा स्थापित की गई थी। सदियों से तिब्बत के लामाओं के धार्मिक प्रभाव का आंतरिक रूप से और चीन के प्रभाव के माध्यम से राजनीतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाने लगा, जिसके परिणामस्वरूप नए तुलकुओं को मान्यता देने की प्रक्रिया पर स्वाभाविक रूप से प्रभाव पड़ा।
जांच-पड़ताल की पारंपरिक विधि जिसके द्वारा युवा आशा करते हैं-
पूर्वजों को अपने पिछले जन्मों से संबंधित वस्तुओं की पहचान करनी थी।
इस बात को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता था... ऐसा होना बिल्कुल भी असामान्य नहीं था।
दो या दो से अधिक उम्मीदवार—जिनमें से प्रत्येक को एक शक्तिशाली गुट का समर्थन प्राप्त है—
खुलेआम और हिंसक रूप से [इटैलिक में जोड़ा गया] किसी को चुनौती देना-
ज्ञात तुलकु सीट (लेहनेर्ट, 1998)।
इस तरह की साज़िशें केवल धुंधले और सुदूर अतीत में ही दबी नहीं रह गई हैं। क्योंकि, जब 1980 और 90 के दशक में एक नए (सत्रहवें) कर्मापा लामा को मान्यता देने का समय आया, तो कथित तौर पर इसके साथ ये बातें भी जुड़ी हुई थीं:
• पिछले कर्मापा का हृदय (शाब्दिक रूप से) चुराने का प्रयास
1981 में उनके अंतिम संस्कार समारोह के दौरान
• न्यूयॉर्क के वुडस्टॉक के एक तुलकु द्वारा किया गया एक अल्पकालिक दावा कि उसकी पत्नी
वह पुनर्जन्मित कर्मापा को जन्म देने ही वाली थी, लेकिन जब उसने एक बच्ची को जन्म दिया, तो उसकी उम्मीदें टूट गईं, क्योंकि पुरुष पुनर्जन्म की अपेक्षा थी। हैलो, दलाई! 187

• अरबों मंत्रों का जाप (संभावित विलंबकारी रणनीति के रूप में-)

(टिक) ने समर्पित अनुयायियों को कथित तौर पर "बड़ी बाधाओं को दूर करने" का आदेश दिया, ताकि नए अवतार का पुन: प्रकटीकरण हो सके।

• कर्मपाओं के नेतृत्व के लिए तख्तापलट का प्रयास

वंशानुक्रम, जिसके लिखित उत्तर प्रारंभ में (अप्रयुक्त) टॉयलेट पेपर पर चतुराई से दिए जाते थे।

• चालाक चीनी नागरिक के साथ भोले-भाले गुप्त सौदों की सूचना मिली।

अगले कर्मापा को सामूहिक रूप से मान्यता देने के लिए जिम्मेदार चार "अत्यधिक विकसित" वंश धारकों में से एक की ओर से चीनी सरकार पर आरोप लगाया गया था। इस लामा ने चीन में अपने दूत के रूप में अकोंग तुलकु को भेजा था - जो चोग्याम का पुराना प्रतिद्वंद्वी था - जिसे "वंश को विभाजित करने वाला मुख्य अपराधी" माना जाने लगा (लेहनेर्ट, 1998)।

• कथित तौर पर "जाली दस्तावेज़ बनाना, धोखाधड़ी करना और शीर्ष स्तर पर एक बड़ा संघर्ष होने वाला है"

वंश के बारे में कहा जाता है कि वहाँ के उच्च पदस्थ लामा "लालच, अभिमान और सत्ता की लालसा" प्रदर्शित कर रहे थे: "लोगों को डराया-धमकाया जा रहा था, याचिकाओं पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया जा रहा था; कुछ को पीटा भी गया था।" इसके विरुद्ध एक (यूरोपीय) लामा ओले निडाहल (लेहनेर्ट, 1998) की आवाज़ सुनाई दी।

दिलचस्प बात यह है कि 1984 में खुद ट्रुंगपा ने ओसेल का जिक्र किया था।

टेंडज़िन ने वज्रधातु के सदस्यों को पत्र लिखकर नायडाहल के प्रति आगाह किया। दरअसल, उस पत्र में नायडाहल की शिक्षण शैली को "हमारे द्वारा अब तक सिखाई गई और प्रामाणिक मानी गई हर बात के विपरीत" बताया गया था। ट्रुंगपा का यह भी मत था कि "श्री नायडाहल द्वारा बुद्धधर्म का घोर विकृतिकरण हो रहा है" (रॉलिंसन, 1997)।

बर्तन। केतली। तिब्बती बौद्ध। काला

• अंत में, दो अलग-अलग बच्चे, जिनमें से प्रत्येक को इस रूप में प्रचारित किया जा रहा है

वैश्विक तिब्बती बौद्ध समुदाय के विभिन्न गुटों द्वारा कर्मापा को मान्यता देने का प्रयास किया गया। एक गुट को राजनीतिक रूप से चालाक चीनी सरकार और धोखे में आए

दलाई लामा का समर्थन प्राप्त था। (बाद वाले ने कथित तौर पर झूठे सबूतों के आधार पर जल्दबाजी में अनौपचारिक रूप से मान्यता दे दी थी, इसलिए वे अपनी गलती स्वीकार नहीं कर सके।) दूसरे गुट को अधिक गंभीर खोज के बाद मान्यता मिली।
उस चल रहे विवाद के बारे में नवीनतम जानकारी www.karmapa पर उपलब्ध है। controversy.org.
188 गुरुओं का पर्दाफाश

दिलचस्प बात यह है कि उपर्युक्त चार वंश धारकों में से एक का दावा है कि उसने पूर्वी तिब्बत में पुनर्जन्मित ट्रुंगपा को पाया है। हालांकि, वही धारक न केवल चीन सरकार के साथ सौदे कर रहा था, बल्कि उसने महज कुछ वर्षों के भीतर तीन सौ से अधिक अन्य तुलकुओं को भी मान्यता दी थी।
हालांकि, यह तथ्य कि उनमें से अधिकांश तिब्बत में उनकी अपनी प्राथमिक सीट से सटे क्षेत्र से आए थे (लेहनेर्ट, 1998), एक निश्चित संदेह पैदा करता है...
फिर भी, अगर ट्रुंगपा सचमुच फिर से चलन में आ गया है, तो "चलो जश्न मनाते हैं!"
* * *
ऐसा नहीं है कि केवल "अग्रणी" लामाओं ने ही उन नियमों का उल्लंघन किया है जिन्हें अन्यथा उनके व्यवहार को नियंत्रित करने वाला माना जा सकता था। बल्कि, जैसा कि जून कैम्पबेल (1996) ने अपने अनुभव से बताया है:
1970 के दशक में, मैंने पूरे यूरोप और उत्तरी अमेरिका की यात्रा की।
अमेरिका में तिब्बती दुभाषिया के रूप में, संपर्क सूत्र प्रदान करते हुए,
भाषा के माध्यम से, मेरे लामा-गुरु [कालु रिनपोचे] के बीच,
1905 – 1989] और उनके कई छात्र। बाद में उन्होंने पुनः-
उसने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उसकी यौन साथी बनूँ और उसमें भाग लूँ।
उसके साथ गुप्त गतिविधियाँ, इस तथ्य के बावजूद कि बाहरी लोगों के लिए
वे काग्य वंश के एक बहुत उच्च पदस्थ योगी-लामा थे।
जो अपने मठ के मठाधीश के रूप में ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ले चुके थे।
बेसी। यह देखते हुए कि वह निर्वासन में रहने वाले सबसे पुराने लामाओं में से एक थे।
उस समय, उन्होंने स्वयं चौदह वर्ष एकांत कारावास में बिताए थे।
उनका व्यवहार सराहनीय था, और वे अपने छात्रों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वालों

को गिनते थे।
तिब्बत में लामाओं के बीच, उनकी अपनी स्थिति निर्विवाद थी।
बेतान समुदाय, और उनकी पवित्रता की गवाही सभी ने दी...
यह स्पष्ट रूप से कहा गया था कि मेरी ओर से कोई भी अविवेक [गलती]
हमारे अफेयर पर चुप्पी साधने से यह हो सकता है कि...
पागलपन, मुसीबत, या यहाँ तक कि मृत्यु [उदाहरण के लिए, जादुई अभिशापों के माध्यम से]
अविवेकी व्यक्ति पर रखा गया]।
और करुणा से परिपूर्ण, बोधिसत्व से भरपूर तिब्बती बौद्ध समुदाय ने ऐसे आरोपों पर कैसी प्रतिक्रिया दी?
कई लोगों ने कैम्पबेल के दावों को सरासर मनगढ़ंत बताकर सिरे से खारिज कर दिया।
किसी ऐसे व्यक्ति से आ रही टिप्पणी जो पूर्व में प्रसिद्धि पाने के लिए उत्सुक हो।
एक दिवंगत लामा का व्यय (लेहनेर्ट, 1998; इटैलिक्स जोड़े गए)।
* * *
हैलो, दलाई! 189

अच्छा, बौद्ध यौन संबंध की बातें बहुत हो गईं। अब बौद्ध हिंसा के बारे में क्या ख्याल है?
और अधिक विशेष रूप से, स्टीवन सीगल की फिल्मों में नियमित रूप से दिखाई जाने वाली ऐसी चरम समकालीन क्रूरता के अनुरूप, यह फुसफुसाया गया है कि
प्राचीन तिब्बत में... लामा सामंतवाद और अराजकता के सहयोगी थे।
मुस्कुराते हुए उन्होंने अंधा करने जैसी मध्ययुगीन सजाएँ दीं।
और कोड़े मारकर मृत्युदंड देना (हिचेंस, 1998)।
ल्हासा [तिब्बत] संग्रहालय का दौरा करते हुए, [पत्रकार एलेन जैकब]
मैंने "सूखी और चमड़ी से रंगी हुई बच्चों की खालें, विभिन्न कटे हुए अंग" देखे।
मानव अंग, चाहे सूखे हों या संरक्षित, और असंख्य
कुछ दशकों पहले तक इस्तेमाल में आने वाले यातना के उपकरण
पहले"....
ये वैन के स्मृति चिन्ह और उपकरण थे।

जेकब बताते हैं कि बौद्ध धर्म के तहत लामाओं ने यह साबित कर दिया कि बौद्ध धर्म के तहत-
तिब्बत में धार्मिक शासन "मध्य तक कायम रहा"
बीसवीं शताब्दी की सामंती प्रथाएँ, जो एक उद्देश्य की पूर्ति करती थीं,
सुस्थापित उद्देश्य होने के बावजूद, वे बेहद क्रूर थे।
“सुस्थापित उद्देश्य”? सामाजिक या-
चर्च-राज्य में (क्लार्क, 1980)।
बीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल में वियना में जन्मे खोजकर्ता जोसेफ रॉक तो और भी कम शब्दों का प्रयोग करते थे:
“यह मान लेना चाहिए कि प्रत्येक तिब्बती, कम से कम
इस दुनिया के इस हिस्से में रहने वाला कोई व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी लुटेरा रहा होगा," उसने कहा।
गोलकों [जनजाति] के बारे में व्यंग्यपूर्वक टिप्पणी की गई। “यहाँ तक कि लामा भी हालांकि वे किसी का गला काटने से भी परहेज नहीं करते, फिर भी वे ऐसा करना चाहेंगे।
किसी कुत्ते को मारने पर, या शायद किसी कीड़े-मकोड़े को मारने पर भी, घृणा महसूस करना।
(शेल, 2000)।
ऐसा प्रतीत होता है कि आज भिक्षुओं के स्तर में कोई खास सुधार नहीं हुआ है:
भारत और अन्य जगहों पर वस्त्र धारण करने वालों में से 90% से अधिक लोग...
प्रश्नकर्ताओं के अनुसार "धोखाधड़ी" कहाँ है?
"धोखाधड़ी" द्वारा टिप्पणी। यह विचार कि भिक्षु दूसरों से अधिक परिपूर्ण है
जो भिक्षु नहीं है, वह हठी है, और भिक्षुओं द्वारा उसे और भड़काया जाता है।
स्वयं। यदि पूर्णता का अर्थ है तो इसके प्रति अधिक समर्पण।
आध्यात्मिक मुक्ति की खोज में निस्संदेह सफलता मिलेगी।
भिक्षुओं में यह अधिक प्रचलित है। लेकिन मानवीय नैतिकता के संदर्भ में...
और मानवीय बुद्धि की बात करें तो, भिक्षु कहीं भी इससे अधिक परिपूर्ण नहीं हैं।
आम लोगों की तुलना में (भारती, 1980; इटैलिक्स जोड़े गए)।
190 गुरुओं का पर्दाफाश

बहुत से पुरुष बौद्ध भिक्षु बन जाते हैं, क्योंकि यह एक
अच्छा जीवन और उनमें भक्ति है। दलाई लामा ने प्रकाशित किया है-
लिकली ने कहा कि सौ भिक्षुओं में से केवल दस ही सच्चे हैं।
उम्मीदवार (मैकेन्ज़ी, 1999)।
जापानी ज़ेन के लिए भी यही बात लागू होती है:
मुझे ऐसा लगा कि सुइयेंजी में अधिकांश भिक्षु
अपनी स्थिति पर गर्व करने वाले, आलसी, मूर्ख, लालची, क्रोधी, भ्रमित,
या फिर इनका कुछ संयोजन। मुख्यतः वे मंदिर के पुत्र थे।
पुरोहित अपना अनिवार्य प्रशिक्षण समय पूरा कर रहे हैं ताकि वे
वे पापा के नक्शेकदम पर चल सकते थे। वे रेडियो सुनते थे।
रात में शराब पीते थे और दीवार पर पिन-अप तस्वीरें लगी होती थीं।
लेकिन असल में उन्हें सत्ता का नशा सवार था।
उन्हें इससे बाहर निकालने के लिए क्या किया गया... वरिष्ठ भिक्षु हमेशा दबाव डालते रहते थे।
कनिष्ठ भिक्षुओं के आसपास, जो बदले में धक्का-मुक्की कर रहे थे।
जो उनके बाद आए (चैडविक में, 1994)।
वार्ड (1998) में अजान चाह द्वारा संचालित एक मठ में एक थाई बौद्ध भिक्षु की टिप्पणियाँ भी कुछ खास प्रशंसात्मक नहीं हैं:
इस मठ में मौजूद पश्चिमी लोग जो इसे पुकारते हैं
स्वयं भिक्षु समाज से बहिष्कृत लोगों के समूह से अधिक कुछ नहीं हैं।
जिन्हें ऐसी जगह मिल गई है जहाँ मुफ्त खाना मिल सकता है, मुफ्त
आश्रय और मुफ्त सम्मान। वे आत्मसंतुष्ट हैं और उनका एकमात्र सहारा यही है।
चिंता का विषय पदानुक्रम के शीर्ष स्तर पर उन्हें मिलने वाले विशेषाधिकार हैं।
तिब्बती बौद्ध धर्म के बारे में और अधिक जानकारी के लिए, देखें
ट्रिमोंडी और ट्रिमोंडी (2003) द्वारा लिखित 'दलाइ लामा की छाया: तिब्बती बौद्ध धर्म में कामुकता, जादू और राजनीति'।
* * *
तिब्बती बौद्ध धर्म पर कोई भी चर्चा टी. लोबसांग रामपा (मृत्यु 1981) का उल्लेख

किए बिना पूर्ण नहीं होगी।
1950 और 60 के दशक में, रामपा ने तिब्बत में लामा के रूप में अपने बचपन के अनुभवों से संबंधित एक दर्जन से अधिक लोकप्रिय पुस्तकें लिखीं। इनमें 1956 में प्रकाशित उनकी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक 'द थर्ड आई' भी शामिल है, जिसमें रामपा द्वारा अपनी दिव्य दृष्टि क्षमताओं को विकसित करने के लिए कथित तौर पर कराए गए एक ऑपरेशन का वर्णन है।
उस साहित्यिक सफलता के बीच, हालांकि, यह पता चला कि रामपा वास्तव में एक छद्म नाम था।
आयरिश "प्लंबर का बेटा," सिरिल हॉस्किन्स (भारती, 1974)।
हैलो, दलाई! 191

हॉस्किन्स खुद कभी तिब्बत नहीं गए थे।
लेकिन हॉस्किन्स के समय में, कम से कम, औसत तिब्बती ने कभी भी घर के अंदर पानी की पाइपलाइन नहीं देखी थी।
तो शायद सब कुछ संतुलित हो जाएगा।
* * *
जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, ति-बेतान बौद्ध धर्म के कट्टरपंथी प्रबुद्ध अनुयायी सदियों से गिने जाते रहे हैं और आज भी उतने ही दुर्लभ हैं जितने कि किसी अन्य मार्ग पर।
जब मैंने तिब्बत के एक बुजुर्ग लामा से पूछा कि क्या ये
बुद्ध स्वरूप की जागृति के दस चरण [अर्थात भूमियों के] इस प्रकार हैं:
दरअसल, यह अभ्यास का एक हिस्सा है, उन्होंने कहा, "बेशक वे वास्तव में
अस्तित्व में है।" लेकिन जब मैंने पूछा कि उनकी परंपरा में किसने यह उपलब्धि हासिल की है...
उन्होंने उदास स्वर में उत्तर दिया, "इन कठिन समयों में मैं ऐसा नहीं कर सकता।"
एक भी ऐसे लामा का नाम बताइए जिसने द्वितीय चरण में भी महारत हासिल की हो।
(कॉर्नफील्ड, 2000)।
निडर होकर, वर्तमान दलाई लामा स्वयं प्रतिदिन छह घंटे ध्यान लगाकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे अहिंसक राजनीतिक गतिविधियों को भी जारी रखे हुए हैं,

जिनके लिए उन्हें 1989 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला था।
बेशक, इतना कम खाली समय होने से गतिविधियों को उचित प्राथमिकता देने में निश्चित रूप से मदद मिलेगी। फिर भी:
इस [आलोचनात्मक] लेख पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के बार-बार प्रयास विफल रहे।
परम पावन की ओर से उनके न्यूयॉर्क मीडिया प्रतिनिधि के माध्यम से-
उनके अनुरोधों को "बहुत व्यस्त" होने का जवाब मिला। फिर भी न्यूयॉर्क
टाइम्स ने बताया कि तिब्बती नेता ने किसी तरह समय निकाल लिया।
पॉप स्टार रिकी मार्टिन के साथ फोटो खिंचवाने के लिए (ज़ुप, 2003)।
जब कोई "लिविन' ला विदा लामा" (ला विदा लामा) जी रहा होता है, तो ऐसा ही होता है।
बहरहाल, परम पावन ने हमें इस संसार में "आध्यात्मिकता" कहलाने वाली दयनीय स्थिति से उबरने के लिए कम से कम एक अत्यंत अच्छा विचार दिया है, जिसका पालन करके हम जीवन यापन कर सकते हैं:
“जब भी शोषण, यौन शोषण या धन का दुरुपयोग होता है-
दलाई लामा कहते हैं, “कलम से लिखो, उन्हें सार्वजनिक करो” (लियोनार्ड,
2001).
अगले अध्याय में हम साहसी लोगों के एक समूह से मिलेंगे जिन्होंने ठीक यही किया, और इससे भी कहीं अधिक किया।

अध्याय XXIII

आसन को ऊपर उठाएं
(YOGI AMRIT DESAI)

योगी देसाई गहन अंतर्दृष्टि वाले एक प्रबुद्ध गुरु हैं।
और अंतर्ज्ञान (देसाई में, 1981; स्वयं प्रकाशित)।

योगी अमृत देसाई कृपालु योग के प्रवर्तक हैं और पूर्व में मैसाचुसेट्स के लेनोक्स में

स्थित कृपालु केंद्र के प्रमुख थे—जो अब "उत्तरी अमेरिका का सबसे बड़ा और सबसे प्रतिष्ठित योग केंद्र" है। उन्होंने उस केंद्र की स्थापना कैसे की और फिर कथित तौर पर अपने ही छात्रों द्वारा उसे छोड़ने के लिए कैसे मजबूर किया गया, यह हम जल्द ही देखेंगे।

देसाई का पालन-पोषण भारत में हुआ, जहाँ 1948 में सोलह वर्ष की आयु में उनकी मुलाकात अपने गुरु स्वामी कृपालवानंदजी से हुई, जो कुंडलिनी योग के एक प्रसिद्ध गुरु माने जाते थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कृपालवानंद के गुरु को "भगवान लकुलिश, कुंडलिनी योग के अट्ठाईसवें अवतार" के रूप में माना जाता था।

भगवान शिव" (कोप, 2000)। दिलचस्प बात यह है कि कृपालवानंद ने "योगिक हस्तमैथुन" का अभ्यास किया था, यानी ध्यान के संदर्भ में हस्तमैथुन, जिसका उद्देश्य रीढ़ की हड्डी में ऊर्जा का संचार करना था।

(एलियास, 2002)।

अमृत स्वयं 1960 में कला के छात्र के रूप में अमेरिका आए थे, और उन्होंने (1981 में) 1970 में विवाहित होने और फिलाडेल्फिया में रहने के दौरान कृपालु योग की अपनी खोज का वर्णन इस प्रकार किया:

192

आसन 193

हठ योग आसनों के अपने नियमित अभ्यास के दौरान मैंने पाया
उस समय मेरा शरीर सहजतापूर्वक और बिना किसी प्रयास के हिल रहा था।
उसी समय मैं गहन ध्यान में लीन होता जा रहा था।
मैंने अब तक जो अनुभव किया था, वह शक्ति और बुद्धिमत्ता थी।
उन्होंने मुझे इस विरोधाभासी अनुभव से उबरने में मार्गदर्शन किया।
ध्यान और गति ने मुझे विस्मय और आनंद से भर दिया। उस सुबह-
मेरा शरीर बिना मेरे निर्देश के, अपनी इच्छा से हिलने लगा।
स्वचालित रूप से प्रवाहमय गति की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रदर्शन करना-
इनमें से कई आसन मैंने पहले कभी नहीं देखे थे।
इससे पहले किसी भी योग पुस्तक में ऐसा उल्लेख नहीं था।
जैसा कि स्वामी कृपालवानंद ने समझाया (देसाई, 1981 में):

ये सभी असंख्य मुद्राएँ, गतिविधियाँ और आसन
[हाथ के इशारे] ... विकासवादी प्रक्रिया के दौरान स्वतः ही घटित होते हैं
योगी के शरीर में प्राण ऊर्जा जागृत हो गई है...
यह कुंडलिनी जागरण का एक अभिन्न अंग है।
देसाई ने अपने प्रारंभिक अनुभव और उसके बाद के अनुभवों से विकसित योग प्रणाली को "कृपालु" नाम दिया। यह नाम उन्होंने अपने गुरु अमृत के सम्मान में रखा, जिनकी विशेष कृपा को वे इस खोज का श्रेय देते थे।
उस आध्यात्मिक जागृति के बाद, देसाई ने 1970 में अपना पहला आश्रम स्थापित किया और 1975 में पेंसिल्वेनिया में दूसरा आश्रम स्थापित किया। 1983 में मैसाचुसेट्स में कृपालु सेंटर फॉर योगा एंड हेल्थ की स्थापना की गई, जिसकी शाखाएँ उत्तरी अमेरिका, यूरोप और भारत में हैं।
इन केंद्रों से योगी देसाई (या "गुरुदेव") ने अपने अनुयायियों के आध्यात्मिक लाभ के लिए अनुशासन और ज्ञान दोनों का वितरण किया।
जितना हो सके उतनी बार खुद से कहें, “मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं बस...”
कुछ भी नहीं। मैं अपने साथ कुछ भी नहीं लाया, और न ही कुछ ले जाऊंगा।
जब मैं जाता हूँ तो मैं कुछ नहीं करना चाहता। मैं अपने लिए कुछ भी हासिल नहीं करना चाहता।
मैं अपना जीवन ईश्वर और अपने गुरु को समर्पित करता हूँ”....
गुरु की एकमात्र इच्छा आपकी खुशी और उन्नति है (डी-
साई, 1985)।
अमृत के शिष्य राजेंद्र (1976) ने समुदाय में जीवन के विवरण को और अधिक स्पष्ट किया:
गुरुदेव किसी भी तरह से यौन प्रेम की निंदा नहीं करते—केवल उसके दुरुपयोग की निंदा करते हैं।
आश्रम में विवाहित जोड़ों के बीच यौन संबंध सीमित हो सकते हैं।
अपनी साधना के मार्ग को विचलित किए बिना जीवन व्यतीत करना। उन्मर-
जिन लोगों को नशा करने की इच्छा है, उनसे ऐसा न करने का अनुरोध किया जाता है।

इन और अन्य प्रतिबंधों और आश्वासनों के बावजूद, वफादार आश्रम नेताओं ने अनिच्छा से ही इसकी अनुमति दी।

[i] एक पल के लिए अत्यधिक आत्म-भोग में [एक आश्रम निवासी-

इससे गुरु के नेक आध्यात्मिक इरादों पर सवाल उठ सकते हैं।

(राजेंद्र, 1976)।

बिल्कुल सही। लेकिन जैसा कि कहा जाता है, "सिर्फ इसलिए कि आप शंकालु हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।"

इस प्रकार, कृपालु की स्थापना के एक दशक बाद, विवाहित रहते हुए और अपने अविवाहित शिष्यों को कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, देसाई एक विवाद में फंस गए। यह विवाद उन्हीं की देन था, और वास्तव में तब उत्पन्न हुआ जब यह पता चला कि वे गुप्त रूप से अपने "गहन अंतर्दृष्टि" का प्रदर्शन ग्रहणशील लोगों के सामने कर रहे थे।

उनकी तीन महिला शिष्याओं के बारे में (कार्लसन, 2002a) इसके बाद, उन्होंने 1994 में कृपालु के आध्यात्मिक निदेशक पद से इस्तीफा दे दिया। या, अधिक सटीक रूप से, कथित तौर पर उन्हें आश्रम के निवासियों द्वारा छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था, जिसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी।

वाह!!

उस प्रस्थान के बाद, कृपालु ने अपने संगठन का पुनर्गठन किया और इसका नेतृत्व एक पेशेवर प्रबंधन टीम द्वारा किया जाने लगा, "जिनमें से कई पूर्व आश्रम निवासी हैं।" इस प्रकार यह "गुरु-शिष्य मॉडल पर स्थापित पहला पारंपरिक योग आश्रम" बन गया है।

आध्यात्मिक शिक्षा के एक नए प्रतिमान में संक्रमण" (कृपालु,

2003).

बेशक, "पेशेवर प्रबंधन टीमों" के अधीन काम करने वाले हर व्यक्ति को पता है कि वे भी अपूर्ण होते हैं, और कई बार तो उनकी कार्यप्रणाली में स्पष्ट खामियां दिखाई देती हैं। लेकिन कम से कम यह सही दिशा में एक कदम तो है।

* * *

कृपालु, जहां देसाई को शामिल नहीं किया गया है, अब प्रति वर्ष 15,000 से अधिक मेहमानों को सेवा प्रदान करता है।
योगी अमृत की बात करें तो, सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने फिर से अध्यापन कार्य शुरू किया और हाल ही में उन्हें दीपक चोपड़ा द्वारा स्थापित किए जाने वाले एक नए आश्रम में "प्रमुख आध्यात्मिक शिक्षक" के रूप में आमंत्रित किया गया है।
(कोहेन, 2000ए)। वे वर्तमान में साल्ट स्प्रिंग्स, फ्लोरिडा में पढ़ाते हैं।
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि www.amrityoga.com पर देसाई की वर्तमान जीवनी में कृपालु सेंटर से संबंध या घोटाले का कोई उल्लेख नहीं है।
(इसी प्रकार, www.kri पर इतिहास अनुभाग में भी कोई शब्द नहीं है)
palu.org पर यह बताया गया है कि देसाई ने उन्हें क्यों छोड़ा। (दरअसल, उस नई साइट पर वह UP THE ASANA 195 हैं)

कृपालु में अपने चरम काल के दौरान उन्हें अत्यंत आदर के साथ "गुरुदेव" - अर्थात् "प्रिय शिक्षक" या "दिव्य गुरु" - के रूप में संबोधित किया जाता था।
और इस तरह, युवा, आदर्शवादी और आध्यात्मिक साधकों की अगली पीढ़ी को नई बोतलों में पुरानी, खट्टी शराब परोसी जा रही है - जो अक्सर उस खट्टी शराब के इतिहास से अनजान होती है।

अध्याय 24

लौंडेबाज़ी
और गोमोराह

जब भी कोई व्यक्ति प्रत्यक्ष पाइपलाइन का दावा करता है-
अगर आपके पास कोई जवाबदेही नहीं है तो भगवान के साथ संबंध टूट जाता है।
आज आपके पास जो तथाकथित पंथ है, कल आपके पास भी एक होगा (गेस्लर)। 1991).
एक [तथाकथित] विनाशकारी पंथ स्वयं को एक सामान्य पंथ से अलग करता है।

किसी सामाजिक या धार्मिक समूह के सदस्यों को अधीन करके
उन्हें अपने नियंत्रण में रखने के लिए बहकाना या अन्य हानिकारक प्रभाव डालना
समूह....
सदस्यों को इस विश्वास से पूरी तरह से अवगत कराया जाता है।
अगर वे कभी चले गए तो इसके भयानक परिणाम भुगतने पड़ेंगे।
उन्हें (हसन, 1990)।

तथाकथित पंथों में आमतौर पर देखी जाने वाली विशेषताओं में एक अचूक नेता की उपस्थिति और शिक्षाओं पर सवाल उठाने पर प्रतिबंध शामिल हैं। सम्मोहनकारी मंत्रोच्चार या इसी तरह की अन्य विधियों को अक्सर अनुयायियों को सहज, समाधि जैसी अवस्था में लाने और इस प्रकार उनके मन को नियंत्रित करने के साधन के रूप में बताया जाता है। इसके अलावा, अक्सर एक "छिपा हुआ उद्देश्य" भी पाया जाता है, जिसे भावी अनुयायियों को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं किया जाता है।

समूह के सदस्यों को यह बताया जाएगा कि यदि वे शामिल होने का विकल्प चुनते हैं तो उनसे क्या करने के लिए कहा जा सकता है।
इसके अलावा, समुदाय के निवासी अक्सर अत्यंत नियंत्रित जीवन जीते हैं—यहाँ तक कि अपने यौन जीवन पर भी उनका पूरा नियंत्रण होता है—उनका समय संगठन से संबंधित गतिविधियों में ही बीतता है, और उन्हें अपने कार्यों की नैतिकता पर विचार करने का समय नहीं मिलता। (“सदस्यों को इतना व्यस्त रखा जाता है कि उनके पास सोचने और चीजों की जाँच करने का समय ही न हो” [हसन, 2000])। साथ ही, अक्सर अनुयायियों को उत्पीड़न का अनुभव होता है, और वे यह मानने लगते हैं कि “पूरी दुनिया उनके पीछे पड़ी है,” संगठन को नष्ट करने की साजिशों के माध्यम से। उन्हें अपने वरिष्ठों को अपने “विचारों, भावनाओं और गतिविधियों” की रिपोर्ट करने या स्वीकार करने के लिए भी कहा जा सकता है।
इसके अलावा, सबसे समर्पित सदस्यों के लिए भी उचित चिकित्सा देखभाल की कमी अक्सर देखने को मिलती है, और अनुयायियों को समूह छोड़ने से रोकने के लिए उनमें

भय और डर भर दिए जाते हैं। साथ ही, समूह के लिए हानिकारक सूचनाओं का दमन और प्रलयकारी शिक्षाओं का प्रचलन भी देखा जाता है, जिसमें केवल संप्रदाय के सदस्यों को ही शाश्वत नरक से "बचाया" जाता है। यह समूह, यानी, "एकमात्र सच्चा मार्ग", अपने सदस्यों को स्वयं के अलावा किसी और सुख की कल्पना करने की अनुमति नहीं देता है, और उन्हें इस भय से वश में रखता है कि यदि वे समूह छोड़ने का विचार करेंगे तो उनका मोक्ष छिन जाएगा। इसके विपरीत, जो अनुयायी संगठन के कठोर नियमों और विनियमों का उल्लंघन करते हैं या नेता से आलोचनात्मक प्रश्न पूछते हैं, उन्हें समूह से निष्कासित या "बहिष्कृत" किए जाने का खतरा रहता है।
रोमन कैथोलिक चर्च की बात करें तो...
यहूदी धर्म के विपरीत, कैथोलिक धर्म निम्नलिखित को अपनाता और समर्थन करता है:
यह विश्वास कि यह एकमात्र सच्चा धर्म है (ब्रूनी और बुर-
चेन, 2002)।
और फिर इसके ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित नेता के बारे में:
एक पोप... का मानना है, साथ ही करोड़ों लोगों का भी।
विश्वासियों को पता है कि वह पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है...
धर्मशास्त्री जॉन हेनरी न्यूमैन, ब्रिटेन के सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति
उन्नीसवीं सदी में कैथोलिक धर्म में परिवर्तित होने वाले प्रसिद्ध व्यक्ति,
एक विनाशकारी फैसला सुनाया... : "[एक लंबे समय तक जीवित रहने वाला पोप] बन जाता है
वह एक देवता है, जिसका विरोध करने वाला कोई नहीं है, उसे तथ्यों का ज्ञान नहीं है, और
अनजाने में ही क्रूर काम करता है" (कॉर्नवेल, 1999)।
लेकिन उस "ईश्वर" के अधीनस्थों या करीबी लोगों के लिए भी, उनके अनुयायियों की नज़र में ईश्वर से दूरी शायद ही कोई अधिक होती है: 198 गुरुओं का पर्दाफाश

हमें सिखाया गया था कि [कैथोलिक पादरी] मसीह के प्रतिनिधि थे।
पृथ्वी पर प्रतिनिधि (बोस्टन ग्लोब में, 2003)।
पोप पायस IX ने 1870 में पोप की अचूकता (सिद्धांत, आस्था और नैतिकता के

मामलों में) की घोषणा की थी। उस "पूर्णता" की अपेक्षाकृत हालिया प्रकृति शायद हमें उनके कम से कम एक पूर्वज के व्यवहार को अधिक आसानी से समझने में मदद कर सकती है।

दसवीं शताब्दी में एक दुराचारी किशोर को भी निर्वाचित किया जा सकता था।

अपने पारिवारिक संबंधों के कारण पोप (जॉन XII) की मृत्यु हो गई।

एक दशक बाद एक विवाहित महिला के बिस्तर पर (विल्स, 2000)।

लेकिन मृत्यु सुखद रही...

जॉन XII अपनी एक रखैल, रेन से इतना मोहित हो गया था-

उस दौर में, उन्होंने प्रशासन का अधिकांश भार उसे सौंप दिया था।

होली सी के (एलन, 2004)।

“उनकी रखेलों में से एक।” कितनी रखेलों में से?

कुछ पोप तो भाग्य के धनी होते हैं।

संत ऑगस्टीन ने भी किशोरावस्था में ही विवाह से बाहर एक बच्चे को जन्म दिया था, जिसकी माँ के साथ वे पंद्रह साल तक रहे और उन्होंने यौन-संयम का अभ्यास किया। उस समय उन्हें मैनिचियन के रूप में स्वीकार किया गया था (विल्स, 2000)। इसके अलावा, उन्होंने कभी भी पापस्वीकारोक्ति नहीं की - एक संस्कार जो उन बीते दिनों में जीवन में केवल एक बार दिया जाता था (विल्स, 1972)। इसी तरह, पुरोहितों का ब्रह्मचर्य केवल एक मध्ययुगीन मांग थी, जिसे यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य किया गया था कि चर्च की संपत्तियाँ संतानों के हाथों में विरासत के रूप में न जाएँ।

चर्च की शुरुआत में कोई अनिवार्यता नहीं थी

ब्रह्मचर्य। पहले पोप, संत पीटर, विवाहित थे। पोप एन-

एस्टासियस प्रथम पोप इनोसेंट और पोप सर्जियस तृतीय के पिता थे।

पोप जॉन XI और पोप थियोडोर I एक के पुत्र थे।

बिशप (ब्रूनी और बर्केट, 2002)।

हाल ही में, 1980 में रिचर्ड वैगनर द्वारा एक सर्वेक्षण किया गया था। इसमें पचास ऐसे पुरोहितों को शामिल किया गया था जो दिखने में ब्रह्मचारी थे— जिनमें से आधे "दीक्षा से पहले ही जानते थे कि वे समलैंगिक हैं।" सर्वेक्षण में पाया गया कि उन पुरोहितों के "औसतन 226 यौन साथी थे, जो एक बड़ी संख्या है..."

वे केवल इसलिए इस मुकाम तक पहुंचे क्योंकि उनमें से 22% के पास 500 से

अधिक थे" (विल्स, 2000)।
आश्चर्यचकित हैं? या फिर: सोचिए कि अगर वे ब्रह्मचर्य और पवित्रता का पालन नहीं करते तो उनके कितने साथी हो सकते थे!

किसी भी सूरत में, विभिन्न कैथोलिक पादरियों द्वारा जिन वेदी सेवकों के साथ छेड़छाड़, यौन शोषण और अप्राकृतिक यौन संबंध बनाए गए, उन्हें निश्चित रूप से चर्च के लिए उनसे जो कुछ भी करने को कहा जा सकता था, उसके बारे में पहले से सब कुछ नहीं बताया गया था।
न ही पीछे।
क्या उन लोगों को उचित चिकित्सा देखभाल मिलनी चाहिए जिन्होंने इस उद्देश्य के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया? नहीं, अगर आप लिसीक्स की थेरेसे (1873-1897) हैं, जिनकी सत्ता का आनंद लेने वाली, प्रतिशोधी मठाध्यक्ष ने आपातकालीन चिकित्सा सहायता भेजने में देरी की। उन्होंने एक डॉक्टर के प्रतिदिन आने के सुझाव को भी तीन बार तक सीमित कर दिया, और इंजेक्शन लगाने पर रोक लगा दी।
मॉर्फिया के लक्षण जब थेरेसे तपेदिक से मर रही थी (फर्लोंग,
1987).
हाल ही में, 1930 के दशक में, आयरलैंड में तथाकथित सिस्टर्स ऑफ मर्सी द्वारा संचालित एक औद्योगिक स्कूल में रखी गई एक लड़की ने अपनी कहानी सुनाई:
मुझे बहुत सारे फोड़े हो गए थे... एक समय ऐसा आया जब मैं चल भी नहीं पा रहा था।
बेहोश हो जाना, खासकर सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान। जब मैं
जब मैं लगभग नौ साल का था, मैं बहुत बीमार था—मेरे पैर के नीचे एक बड़ी गांठ थी।
हाथ पर चोट लगी थी, और उन्हें उस पर पट्टी लगानी पड़ी। उन्होंने डॉक्टर को फोन नहीं किया।
डॉक्टर, क्योंकि उन्हें इसके लिए भुगतान करना पड़ता (राफ्टरी में)
और ओ'सुलिवन, 2001)।

इसी प्रकार मैसाचुसेट्स में ननों के जीवन के बारे में भी, जैसा कि एक आम सदस्य ने दर्ज किया है:
मैंने पुजारियों को कैडिलैक कारों में घूमते देखा था। मुझे याद है मैंने पढ़ा था-
एक ऐसी कहानी जिसमें बताया गया है कि ननों के पास पूर्ण स्वास्थ्य बीमा नहीं था
और बोस्टन में हुए उस अन्याय से वह बेहद क्रोधित था।
ग्लोब, 2003)।
क्या याचिकाकर्ताओं को शर्मनाक सवालों के भी ईमानदार जवाब मिल सकें, इसके लिए संगठन की सीमाओं से परे सूचनाओं का स्वतंत्र आदान-प्रदान संभव है? यह तो दैवीय रूप से संभव नहीं है।
कार्डिनल पोप के प्रति शपथ लेते हैं कि वे चर्च की रक्षा करेंगे।
घोटाले से बचाव—गलत जानकारी को फैलने से रोकना
सार्वजनिक (बेरी और रेनर, 2004; इटैलिक जोड़ा गया)।
ईमानदार गलतियाँ, अक्षमता, लापरवाही और जानबूझकर की गई गलतियाँ
उच्च नेतृत्व के लिए सभी कुकर्म घृणित हैं।
रोमन कैथोलिक चर्च]। सभी का खंडन किया जाता है, छिपाया जाता है और दबा दिया जाता है।
समान उत्साह के साथ राष्ट्रीयकरण किया गया। पादरी जगत वास्तव में मानता है
कि इसकी स्थापना ईश्वर द्वारा की गई है और इसके सदस्य 200 गुरुओं को निष्फल कर रहे हैं

सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा चयनित और कृपा प्राप्त... उच्चतर प्राधिकारी
इन आकृतियों को सभी लोग भय और विस्मय के मिश्रित भाव से देखते हैं।
उनके नीचे। सत्ता के घेरे बंद हैं, सबसे तंग घेरे...
बिशपों के बीच मौजूद लोगों के बीच... गोपनीयता प्रदान करती है
सत्ताधारी व्यक्ति और किसी भी अन्य व्यक्ति के बीच इन्सुलेशन की एक परत-
जो इसके प्रयोग पर सवाल उठाने के लिए प्रलोभित हो सकता है (डॉयल, 2003).
शिक्षाओं पर सवाल उठाने की स्वतंत्रता? बिलकुल!
फ्रांसीसी जेसुइट पियरे टेइलहार्ड डी चारडिन को इतना अपमानित किया गया था

उन्हें पवित्र कार्यालय द्वारा सामंजस्यपूर्ण आध्यात्मिकता की उनकी दृष्टि के लिए सम्मानित किया गया।
मानव विकास के साथ-साथ उनकी प्रमुख कृतियाँ, जो
लाखों पाठकों तक पहुंचने वाली ये रचनाएँ उनके जीवनकाल में ही दबा दी गईं।
कार्ल रहनर, जिन्होंने तर्क दिया कि धर्मशास्त्र का विकास होना चाहिए
उस समय की भावना, और यवेस कोंगनर, जिन्होंने भूमिका पर जोर दिया
एक विकसित होते चर्च में आम लोग हाशिए पर धकेल दिए गए थे।
1950 के दशक में पायस XII द्वारा, जिन्हें उनके विचारों की कोई आवश्यकता नहीं थी (बेरी और
रेनर, 2004)।
उसी बौद्धिक उत्पीड़न के तहत, डी चार्डिन को वास्तव में दो विकल्प दिए गए थे: या तो संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्वासित हो जाना, या किसी एकांतवास गृह में निगरानी में रहना; उन्होंने पहला विकल्प चुना। एक अमेरिकी जेसुइट ने टेइलहार्ड और उनके काम से प्रभावित अन्य लोगों के साथ किए गए व्यवहार की तुलना "स्टालिनवादी शुद्धिकरण" से की (कॉर्नवेल, 1999)।
सिद्धांत के अनुसार, यह अभी भी [1950 के दशक और 60 के दशक की शुरुआत में, इससे पहले] था
वैटिकन द्वितीय परिषद] पर कोई भी किताब पढ़ना पाप है [अनुक्रमणिका]
प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची, जिसमें वोल्टेयर, रूसो आदि शामिल हैं।
कांट, और विशेष रूप से डार्विन (सेनोट, 1992)।
आधुनिकता-विरोधी शपथ, जिसे पोप पायस X ने 1910 में अधिनियमित किया था।
और] आज कैथोलिक अधिकारियों द्वारा संशोधित रूप में शपथ ली गई-
नंदों... को पोप की सभी शिक्षाओं को स्वीकार करना आवश्यक था, और...
ऐसे अर्थ और भाव के लिए हर समय शांति बनाए रखना
पोप के निर्देशानुसार शिक्षा देना... इसकी कोई संभावना नहीं थी।
किसी भी प्रकार के असहमति के प्रति, चाहे वह आंतरिक ही क्यों न हो। अंतरात्मा शपथ लेने वाले व्यक्ति को न केवल यह स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया कि रोम ने प्रस्ताव रखा, लेकिन रोम ने जिस अर्थ में इसकी व्याख्या की, वह भी स्पष्ट नहीं है।

उन्होंने इसे संपादित किया। यह न केवल पारंपरिक कैथोलिक मान्यताओं के विपरीत था।
अंतरात्मा की भूमिका की समझ, लेकिन यह एक प्रकार का था
विचार नियंत्रण जो फासीवादी शासन के दौरान भी बेजोड़ था और
कम्युनिस्ट शासन (कॉर्नवेल, 1999; इटैलिक्स जोड़े गए)।
समलैंगिकता और गोमोराह 201

हाल के वर्षों में भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है:
अपने पोप पद के पहले वर्ष में, [जॉन पॉल द्वितीय, कैरोल वोज्टीला]
स्विस पादरी हंस कुंग का शिक्षण लाइसेंस रद्द कर दिया गया।
एक धर्मशास्त्री जिसने पोप की अचूकता को चुनौती दी है... 1997 में
वोज्टीला ने श्रीलंकाई लेखक-पुजारी टिस्सा को धर्म से बहिष्कृत कर दिया।
रोमन सैद्धांतिक रूढ़िवादिता को कमजोर करने के लिए बालासुरिया: बालासुरिया-
या के लेखन ने मूल पाप के सिद्धांतों पर संदेह पैदा कर दिया था।
और ईश्वर की माता की कुँवारी (कॉर्नवेल, 1999)।
इसके विपरीत:
रोम ने हिटलर के लेखों को कभी सूचकांक में नहीं डाला; फ्यूहरर
उनके शासनकाल के अंत तक उन्हें सदस्य बने रहने की अनुमति दी गई थी।
चर्च, यानी, उसे बहिष्कृत नहीं किया गया था (लेवी, 2000)।
क्या आप हर कीमत पर सच्चाई को सबके सामने लाना चाहते हैं? बिल्कुल सही...
दो महिलाएं अपने पादरी द्वारा किशोरों के प्रति किए जा रहे दुस्साहस को लेकर चिंतित थीं।
लड़कों को पता चला कि वह उनके कस्बे में एक
समझौता होने के बाद उपचार केंद्र में भर्ती कराया गया। एक लड़का जिसके साथ उसने दुर्व्यवहार किया था।
पिछले एक पल्ली में किसी ने उंगली काट ली और उसे मुआवजा मिला।
जब महिलाओं ने पिता को हटाने का अनुरोध किया, तो
बिशप ने न केवल उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया बल्कि एक स्लैन की धमकी भी दी।

अगर वे इसे सार्वजनिक मुद्दा बना देते तो मुकदमा दायर किया जाता (बेरी, 1992)। या, जैसा कि पत्रकार माइकल हैरिस (1991) ने कथित पादरी यौन शोषण के एक पीड़ित को बताया, जो अपनी कहानी सार्वजनिक करने वाला था, और उसे न्यूफ़ाउंडलैंड में क्रिश्चियन ब्रदर्स के माउंट कैशल अनाथालय के आसपास पुलिस और सरकार द्वारा समर्थित लीपापोती के बारे में चेतावनी दी थी:

इस कहानी में कई शक्तिशाली ताकतें शामिल हैं, जिनके लिए
सच्चाई तो बिल्कुल भी नहीं चाहिए। मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है।
बहुत से लोग आपको या मुझे बधाई देंगे
इस घिनौने मामले को सार्वजनिक रूप से सामने लाना।

मई 2002 में एक साक्षात्कार में कार्डिनल ऑस्कर रोड्रिगेज़ ने कहा था कि...

होंडुरास के माराडियागा को व्यापक रूप से एक प्रमुख उम्मीदवार के रूप में देखा जा रहा है।
अगला पोप बनने के लिए, अमेरिकी [बाल यौन शोषण] संकट को संबोधित किया-
उन्होंने अमेरिकी प्रेस पर “उत्पीड़न” का आरोप लगाया।
चर्च.... “केवल इसी तरह मैं [की] क्रूरता की व्याख्या कर सकता हूँ
कैथोलिक चर्च की प्रतिष्ठा पर हमले] जो 202 गुरुओं को छीनने की याद दिलाता है

मुझे नीरो और डायोक्लेटियन के समय का, और हाल ही में, का
“स्टालिन और हिटलर” [उन्होंने कहा]...
मेक्सिको सिटी के कार्डिनल नॉर्बर्टो रिवेरा कैरेरा... ech-
ओएड रोड्रिगेज की अमेरिकी संकट पर टिप्पणियाँ। "न केवल
संयुक्त राज्य अमेरिका में ही नहीं बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी, एक
ऐसा प्रतीत होता है कि हमले की एक सुनियोजित योजना चल रही है।
चर्च की प्रतिष्ठा। कई पत्रकारों ने इसकी पुष्टि की है।
उन्होंने कहा, "मेरे लिए इस संगठित अभियान का अस्तित्व ही महत्वपूर्ण है।"
(एलन, 2004)।

सिनसिनाटी के आर्कबिशप डैनियल पिलारज़िक ने पहले कैथोलिक पादरियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के मीडिया में उजागर होने को चर्च के खिलाफ "सामूहिक प्रतिशोध" का परिणाम बताया था। वहीं, फादर चार्ल्स फियोरे ने सुझाव दिया कि

ईसाई धर्म को कमजोर करने के लिए दृढ़ संकल्पित उदारवादियों द्वारा पादरियों के बीच बाल यौन शोषण करने वालों को नियुक्त किया गया था। इसके विपरीत, उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि कम्युनिस्टों का सफाया...
वह अपने पवित्र संगठन के खिलाफ साजिश को रोक देगा (ब्रूनी और
बर्केट, 2002)। और 2002 में ही, कार्डिनल जोसेफ रैटज़िंगर (अब पोप बेनेडिक्ट XVI) ने रोमन कैथोलिकों को बदनाम करने के लिए कथित तौर पर एक "सुनियोजित अभियान" के बारे में अपनी खुद की, उतनी ही सरल "षड्यंत्र सिद्धांत" के साथ अपनी राय रखी।
[वेटिकन मामलों के लेखक ओराज़ियो] पेट्रोसिल्लो ने तीन संकेत दिए।
संयुक्त राज्य अमेरिका में ऐसे समूह जिन्होंने शायद इस तरह की प्रेरणा दी हो।
अभियान: “मेसोनिक लॉज,” “यहूदी लॉबी,” और “समूहों”
स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र नैतिकता" जैसे कि समलैंगिक (एलन, 2004)।
लेकिन "अशुद्ध," माहवारी वाली औरतें भी, है ना? जब आप अपने ही परिवार के क्रूर पापों और दूसरों के दुख-दर्द के प्रति अक्षम्य उदासीनता के लिए बलि का बकरा ढूंढ रहे हैं, तो समलैंगिकों और यहूदियों तक ही क्यों रुकें—और (अरे बाप रे!) "स्वतंत्र विचारकों" का तो जिक्र ही न करें? जब धर्मयुद्ध करने वाला, डायन-शिकार करने वाला, धर्म जांच करने वाला कैथोलिक चर्च भी खुद को "पीड़ित" मानता है, तो समझ जाइए कि आप वाकई एक अजीब दुनिया में जी रहे हैं।
वास्तव में, पूर्वी गुरु-प्रतिष्ठानों के मीडिया में सामने आए खुलासों की थोड़ी सी भी जानकारी यह साबित करने के लिए पर्याप्त होती कि "ईश्वर-प्रेरित चर्च" और उसके "शैतानी" प्रतिद्वंद्वी, दोनों ही अपने कथित दुर्व्यवहारों की भारी मात्रा के अनुपात में बेनकाब हो रहे हैं। फ्रीमेसन, यहूदी और समलैंगिकों को - "आश्चर्यजनक रूप से" - इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता, ठीक उसी तरह जैसे हमारे विश्व के गुरुओं के कथित दुर्व्यवहारों को उजागर करने की किसी भी "षड्यंत्र" का स्रोत "एशियाई-विरोधी" पूर्वाग्रह नहीं हो सकता!
समलैंगिकता और गोमोराह 203

(नोट: मेरी ओर से बिना किसी सचेत प्रयास के भी, यह)
पता चलता है कि इस पुस्तक में जिन व्यक्तियों का गहराई से विश्लेषण किया गया

है, उनमें से लगभग 45% पश्चिमी मूल के हैं। "प्रामाणिक आध्यात्मिकता" में आमतौर पर पूर्वी दर्शन शामिल होता है। और गुरु-शिष्य की परंपरा, सामान्यतः, पश्चिम में पूर्व से ही आई है। इस प्रकार, इसके "सर्वश्रेष्ठ" अभ्यासकर्ताओं का प्रतिशत पश्चिम की तुलना में पूर्व से होने की संभावना अधिक है। इसलिए, इस पुस्तक में दर्शाए गए 50/50 के अनुपात से अधिक अनुपात की उम्मीद करना तर्कसंगत नहीं है। यदि मुझे फ्रीमेसन, यहूदियों, समलैंगिकों या उभयलिंगियों (जैसे साईं बाबा) के बीच गुरु-शिष्य जैसे संबंधों में दुर्व्यवहार के ऐसे ही खुलासे की जानकारी होती, जहाँ गुरुओं को व्यापक रूप से "प्रामाणिक, परिवर्तनकारी आध्यात्मिकता" का प्रसार करने वाला और अपने-अपने मार्ग में "सर्वश्रेष्ठ" माना जाता, तो मैं उन्हें सहर्ष शामिल कर लेता।

हालांकि, कथित पूर्वाग्रहों के संदर्भ में, कोषेर बूचड़खानों में जानवरों की अमानवीय परिस्थितियों के हालिया खुलासों को यहूदी धर्म पर "यहूदी-विरोधी हमला" के रूप में तर्कसंगत रूप से नहीं देखा जा सकता है।

धार्मिक प्रथाएं (साइमन में, 2004) ... ओय वे!

इसके अलावा, इस सुविधाजनक दावे के संबंध में कि यहूदी धर्म, उदाहरण के लिए, रोमन कैथोलिक चर्च की "पंथवादी" प्रवृत्तियों से बचता है, क्योंकि यह "एकमात्र सच्चा धर्म" होने का दावा नहीं करता है, इस प्रकार कथित तौर पर अनुयायियों को बिना किसी दंड के धर्म छोड़ने की अनुमति देता है:

ओलम हा-बा [अर्थात मसीहाई युग] में, पूरी दुनिया
यहूदी ईश्वर को एकमात्र सच्चा ईश्वर मानेंगे, और
यहूदी धर्म ही एकमात्र सच्चा धर्म है (रिच, 2001)।

इस पूरी परंपरा में व्याप्त "चुने हुए समूह" की भावना को देखते हुए, क्या इससे कम की उम्मीद की जा सकती थी? बेशक, यह "एकमात्र सच्चा धर्म" है! अगर ऐसा नहीं होता तो वे "चुने हुए लोग" कैसे हो सकते थे?

उपरोक्त प्रचलित मूर्खता, दोषारोपण और व्यामोह के बिल्कुल विपरीत, ब्रूनी और बर्केट (2002) की पुस्तक 'ए गॉस्पेल ऑफ शेम' में इस बात का अद्भुत, सुसंगत और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है कि अनिच्छा से क्षमा मांगने वाले कैथोलिक चर्च को अपने व्यापक पापों के मीडिया प्रस्तुतीकरण में इतनी बुरी तरह से आलोचना का सामना क्यों करना पड़ा। यही पुस्तक बाल यौन शोषण की प्रवृत्ति को जन्म देने वाले विभिन्न यौन और सामाजिक कारकों की सबसे अच्छी व्याख्या प्रदान करती है, जो

मुझे अब तक मिली है। इसमें उत्तरी अमेरिकी मीडिया द्वारा कैथोलिक पादरियों के दुर्व्यवहार की प्रारंभिक स्तर पर कम रिपोर्टिंग का सबसे अच्छा दस्तावेजीकरण भी शामिल है, जिससे यह साबित होता है कि उसी मीडिया में "कैथोलिक विरोधी पूर्वाग्रह" के दावे पूरी तरह से निराधार थे।
204 गुरुओं का पर्दाफाश

कैथोलिक चर्च में सदियों से चली आ रही स्त्री-द्वेष, सुनियोजित सत्ता हथियाने के प्रयास, सत्य के प्रति सामान्य हठधर्मी प्रतिरोध और उससे जुड़े व्यापक छल के लिए गैरी विल्स (2000) की आश्चर्यजनक पुस्तक 'पोपल सिन' देखें। इसी संगठन में, इसके सर्वोच्च नेताओं से लेकर निचले स्तर तक, यहूदी-विरोधी भावना के शर्मनाक इतिहास के लिए कॉर्नवेल (1999) की 'हिटलर का पोप' और लेवी (2000) की 'कैथोलिक चर्च और नाज़ी जर्मनी' देखें। वेटिकन और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद साम्यवाद के विरुद्ध लड़ाई में "नाज़ी तस्करी" के बीच संबंध के लिए एरॉन्स और लॉफ्टस (1998) की 'अपवित्र त्रिमूर्ति' देखें।
[एंटे] पावेलिक ... "स्वतंत्र" के पोग्लवनिक थे
क्रोएशिया, जर्मनी में फ्यूहरर के समान शक्तियों का प्रयोग करता है।
कई। उसने तो मौत की मशीन को चालू रखने में भी कामयाबी हासिल कर ली थी।
लगभग अंत तक संचालन करते रहे, जबकि जर्मन फ्रांसीसी थे-
वे धीरे-धीरे अपने सिस्टम को ध्वस्त कर रहे हैं...
भूमिकाओं के एक अजीब उलटफेर में, [पावेलिक] ने निंदा की
जर्मन यहूदियों के प्रति "उदार" व्यवहार के बारे में फ्यूहरर ने शेखी बघारी-
यह कहते हुए कि तुलनात्मक रूप से उसने यहूदी समस्या को पूरी तरह से हल कर लिया था।
क्रोएशिया में प्रश्न उठ रहे थे जबकि कुछ लोग तीसरे दौर में जीवित बचे थे
रीच....
पोप का स्वयं उस्ताशी हत्यारों के प्रति दृष्टिकोण
[आतंकवादी नेटवर्क] के नेता की लापरवाही महज़ मामूली लापरवाही से कहीं अधिक थी...
स्वयं पायस [XII] ने पावेलिच को अपना निजी धन देने का वादा किया था।

फिर से आशीर्वाद। इस समय तक, पवित्र सीट के पास प्रचुर मात्रा में था-
उनके शासनकाल में किए गए अत्याचारों के पुख्ता सबूत।
हिटलर के शासनकाल के दौरान उस पोप के मौन आचरण के अन्य पहलू भी किसी भी तरह से अधिक प्रशंसनीय नहीं थे:
इसमें कोई संदेह नहीं है... कि अगर चर्चों ने...
उन्होंने यहूदियों की हत्या और उत्पीड़न को इस प्रकार प्रस्तुत किया, जैसे कि वे जन्मजात पागल और बीमार लोगों की हत्या का विरोध किया।
कोई अंतिम समाधान नहीं होता (कॉर्नवेल में, 1999)।
यदि [पायस XII] को वेटिकन के बाह्य क्षेत्राधिकार के उपयोग का श्रेय दिया जाना है-
यहूदी धर्म के दौरान यहूदी धर्म के धार्मिक भवनों को सुरक्षित आश्रय स्थलों के रूप में इस्तेमाल किया गया।
यदि जर्मनी ने रोम पर कब्जा कर लिया है, तो उसे भी समान रूप से कार्रवाई करनी चाहिए।
सुरक्षित घरों के रूप में उन्हीं इमारतों के उपयोग के लिए दोषारोपण
नाज़ी और उस्ताशी अपराधी (कॉर्नवेल, 1999)।
या फिर, जैसा कि रोम के यहूदियों के जर्मन नरसंहार और निर्वासन से बची एकमात्र जीवित व्यक्ति सेटिमिया स्पिज़िचिनो ने 1995 में बीबीसी के साथ एक साक्षात्कार में कहा था:

मैं ऑशविट्ज़ से अकेले वापस आई। मैंने अपनी माँ को खो दिया।
दो बहनें, एक भतीजी और एक भाई। पायस XII के पास ये हो सकता था।
हमें जो होने वाला था उसके बारे में चेतावनी दी गई थी। हम शायद
रोम से भाग निकला और विद्रोहियों में शामिल हो गया। उसने दाहिनी ओर खेला।
जर्मनों के हाथों में। यह सब उसकी आँखों के सामने हुआ।
लेकिन वह एक यहूदी-विरोधी पोप थे, एक जर्मन-समर्थक पोप थे।
उन्होंने एक भी जोखिम नहीं उठाया। और जब लोग कहते हैं कि पोप
यीशु मसीह की तरह, यह सच नहीं है। उन्होंने एक भी व्यक्ति का उद्धार नहीं किया।

बच्चा। कुछ नहीं।
निःसंदेह, जब "शैतान" इस प्रकार पवित्र पुरुषों पर हमला कर रहा है—जैसा कि वर्तमान बाल यौन शोषण संकट में—"ईश्वर का कार्य" करने के लिए, तो किसी भी विश्वासी के पास एक अचूक बचाव होता है। वास्तव में, यही बचाव वर्तमान पुस्तक और लेखक के विरुद्ध भी समान रूप से अप्रभावी ढंग से निर्देशित किया जा सकता है:
हम [कैथोलिक विरोधी] मीडिया पर ईश्वर की शक्ति का आह्वान करते हैं।
(कार्डिनल बर्नार्ड लॉ, [बोस्टन ग्लोब, 2003] में)।
अपने अनुयायियों के यौन जीवन को नियंत्रित करना? गर्भनिरोधक के खिलाफ निषेधाज्ञा और व्यभिचार, गर्भनिरोधक और समलैंगिक गतिविधि को "घोर पाप" मानना निश्चित रूप से यही करेगा।
कई पादरी ब्रह्मचर्य से निराश थे, जिसे वे देखते थे
नियंत्रण के एक तंत्र के रूप में, चर्च के अधिकार के समान-
आम लोगों के यौन जीवन के प्रति सत्तावादी दृष्टिकोण (बेरी,
1992).
पायस XII ने जन्म नियंत्रण की निंदा को व्यापक रूप से प्रभावी बनाया।
कक्षाओं, पर्चों, स्वीकारोक्ति कक्षों से लगातार, एक
एक तरह की उन्मादी ज़िद। गर्भनिरोध एक घोर पाप था।
इसके पश्चाताप न करने वाले अभ्यासकर्ता नरक में जाएंगे (विल्स, 2000)।
मुख मैथुन और गुदा मैथुन ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार के यौन संबंध निषिद्ध थे।
उत्तेजना या स्थिति की विभिन्नता को अप्राकृतिक माना गया।
मैन-ऑन-टॉप परफॉर्मेंस को छोड़कर। सिंगल के साथ एक्ट।
लक्ष्य [अर्थात गर्भाधान] केवल एक ही तरीके से गर्भाधान करना था।
निष्पादन (वसीयत, 1972)।
और न ही यह आवश्यक था कि कोई व्यक्ति कानून के ईश्वर के विरुद्ध जाने के लिए "कैथोलिक रूलेट" (अर्थात गर्भनिरोधक के बिना यौन संबंध) या किसी अन्य प्रकार से अनुचित तरीके से "निष्पादन" करे:
206 गुरुओं का पर्दाफाश

1950 के दशक में अगर आप शुक्रवार को मांस खाते थे, तो मास्क नहीं पहनते थे।

चर्च जाते समय टोपी या घूंघट पहनना, या कम्युनियन से पहले नाश्ता करना,
इन पापों के लिए तुम नरक में जल सकते हो (बोस्टन ग्लोब, 2003 में प्रकाशित)।
मुख मैथुन और "मांस खाना", मना है। टोपी पहनो, और अपना वीर्य ज़मीन पर मत गिराओ। और फिर भी—
डॉ. विलियम मास्टर्स ने पाया कि सौ में से अट्ठानवे...
सर्वेक्षण में शामिल खूंखार पुजारियों को हस्तमैथुन करते हुए पाया गया (विल्स, 2000)।
और आपको यह भी पता है कि वे कम्युनियन से पहले चुपके से खाना खा रहे होंगे!
[दशक में] सभी इंद्रिय सुखों को एक साथ समेट दिया गया था।
[भाषण, अर्थात् दस आज्ञाएँ] निषेध के अंतर्गत
“अपने पड़ोसी की पत्नी पर बुरी नज़र रखने” के खिलाफ, एक ऐसा दृष्टिकोण जो
अत्यधिक भोजन, आलस्य और नशे को प्रत्यक्ष रूप से यौनिक बना दिया गया।
अपराध—वे अपराध जहाँ, कैथोलिक नैतिकतावादियों के अनुसार
पुराने जमाने में... सभी पाप अपने आप ही गंभीर या "नश्वर" माने जाते थे।
मैं एक ईमानदार युवक को जानता था जो सचमुच प्रेरित था-
इस विचार से पागल हो गया (विल्स, 1972)।
क्या निवासियों का जीवन पूरी तरह से संगठन को समर्पित किया जा रहा है? क्या वे लंबे समय तक काम करते हैं और उनके पास शिक्षाओं पर सवाल उठाने या अपने कार्यों के परिणामों पर विचार करने का समय नहीं बचता, बाहरी विचारों से उनका संपर्क बहुत कम होता है? जाहिर तौर पर ऐसा ही है:
ननें अत्यंत संयमित जीवन जीती थीं, उनके जागने का समय भी सीमित था।
सामूहिक प्रार्थनाओं, भक्तिमय अभ्यासों और देखभाल से भरा हुआ
मठ और पूजा कक्ष का, भारी शिक्षण कार्यभार, ट्रेन-
प्रथम भोज के लिए बच्चों का आगमन (या मई जुलूस, या
पुष्टिकरण), गायक मंडली का पूर्वाभ्यास और वेदी की तैयारी।
लड़कों को... उन्हें अक्सर कॉन्वेंट से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी—नहीं
यहां तक कि पुस्तकालयों का दौरा करने के लिए भी (विल्स, 1972)।
बार-बार, सम्मोहक मंत्रोच्चार? जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ:
[चर्च] की रस्मों में बहुत अधिकार होता है; वे सम्मोहित कर देती हैं। नहीं

कम से कम उनकी लैटिन भाषा की जानकारी के आधार पर। भाषाविदों का कहना है कि यह निश्चित नहीं है कि
“होकस-पोकस” शब्द मास में “होक एस्ट कॉर्पस” से लिया गया है;
लेकिन लैटिन वाक्यांश, अक्सर लयबद्ध होते हैं, प्रार्थनाओं में कहे जाते हैं और
संतों के नामों की सूचियाँ, दोहराई गई, प्रतिध्वनियों के रूप में हमारे सामने आ रही हैं
और ट्रिपल क्राईज़ (सैंक्टस, सैंक्टस, सैंक्टस) में जादू-टोना था
उनमें, हमें चुप कराने या मंत्रोच्चार के माध्यम से विवश करने के लिए (विल्स, 1972)।
समलैंगिकता और गोमोराह 207

प्रलय संबंधी मान्यताएँ? मुझे घुड़सवारों को गिनने दो।
आप चर्च, उसकी प्रार्थना सभाओं, पवित्र भोज और स्वीकारोक्ति को किसी भी समय छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं... बशर्ते कि आप अपने मन में बिठाए गए उस भय का सामना कर सकें जिसमें आपको यह डर है कि आपके "गंभीर पापों" के प्रायश्चित के बिना आपकी आत्मा को शाश्वत नरक में जाना पड़ेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आपको जो कुछ भी सिखाया गया है वह सच है, तो आप उस समूह को छोड़कर खुश और संतुष्ट नहीं रह सकते।
पवित्र चर्च के भ्रष्टाचार को उजागर करने का साहस करने वालों का उत्पीड़न और बहिष्कार? स्वाभाविक रूप से:
पैटी हैनसन के परिवार ने डियो के खिलाफ मुकदमा दायर किया।
फीनिक्स के नागरिक [अपने बच्चों के कथित यौन शोषण के लिए]
उनके पिता के हाथों]। उन्हें घृणित पत्र मिले जिनमें लिखा था
वे निर्दयी झूठे थे जो मनगढ़ंत आरोप फैला रहे थे।
और थोड़ी सी प्रसिद्धि और बहुत कुछ पाने के लिए अतिरंजित पीड़ा।
नकद। उन्हें सुबह 3 बजे परेशान करने वाले फोन कॉल आए और गुमनाम-
चूहों को जान से मारने की धमकियाँ (ब्रूनी और बर्केट, 2002)।
इन सब बातों का तात्पर्य यह है कि तथाकथित "पंथों" और "वैध" धर्मों की जितनी बारीकी से तुलना की जाए, उनमें उतना ही कम अंतर नज़र आता है। (तुलना करें: "हम 'पंथ' को एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित करते हैं जहाँ नेता

जिसे चुनौती न दी जा सके और जिसे अचूक माना जाता है" [क्रेमर और अल्स्टैड, [1993]। रॉबर्ट लिफ्टन [1989] द्वारा किसी भी समग्रतावादी समूह की आठ विशेषताओं की तुलना भी करें। फिर स्वयं निर्णय लें कि कैथोलिक चर्च उनमें से प्रत्येक पर खरा उतरता है या नहीं। यहां तक कि "भाषा के भार" के संदर्भ में भी, यह स्पष्ट है कि "स्वीकारोक्ति" और "साम्यवाद" की कैथोलिक परिभाषाएँ धर्म के बाहर इन शब्दों के उपयोग से काफी भिन्न हैं। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे साइंटोलॉजी के प्रमुख शब्दों की परिभाषाएँ उसी संगठन के बाहर उन्हीं शब्दों के उपयोग से भिन्न हैं। इसके अलावा, जब मोक्ष सुनिश्चित करने के साधन के रूप में नश्वर पापों की स्वीकारोक्ति हस्तमैथुन तक विस्तारित होती है, तो प्रकटीकरण की उस कथित आवश्यकता में कुछ भी स्वस्थ नहीं है, ठीक उसी प्रकार जैसे किसी तथाकथित पंथ में अपने वरिष्ठों के पढ़ने के लिए स्व-रिपोर्ट लिखना स्वस्थ नहीं हो सकता। यह अस्पष्ट अंतर पोप जॉन पॉल द्वारा मेक्सिको के फादर मैसिएल और उनके कथित रूप से यौन शोषण करने वाले लीजियोनेरीज ऑफ क्राइस्ट संगठन के स्पष्ट समर्थन से भी अलग है। वहाँ, उस समूह से बाहर निकलना—केवल धर्म को छोड़ना ही नहीं—स्पष्ट रूप से मोक्ष खोना था। फिर भी, कथित तौर पर, उसी वातावरण में:

मैसिएल की अपनी यौन इच्छाओं के लिए अनुमति प्राप्त करने की चाल
पोप पायस XII ने अचंभित सेमिनारियों को बताया, 208 गुरुओं को निथारना

कुछ तो अभी-अभी यौवन अवस्था से गुजरे थे, ताकि उनका यौन शोषण किया जा सके।
और खुद को संतुष्ट कर ले (बेरी और रेनर, 2004)।
या, अपने घर के करीब, जैसा कि एक कैजून कैथोलिक महिला ने अपने ही पल्ली पादरी के हाथों अपने अनुभवों के बारे में आरोप लगाया:

मुझे [फादर जॉन द्वारा] बताया गया था कि मुझे ईश्वर द्वारा चुना गया है।
यौन विषयों के अध्ययन में उसकी मदद करें क्योंकि वह जिम्मेदार था।
वयस्कों की मदद करने के लिए और उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था (में बेरी, 1992)।
जब फादर जे टिम को स्नानघर ले गए तो टिम ने कुछ नहीं कहा।
उसके माता-पिता के घर के कमरे में जाकर उससे मौखिक प्रदर्शन करने को कहा।

सेक्स....
पिता जे ने लड़के से कहा: "यह मामला सिर्फ तुम्हारे और मेरे बीच का है।"
यह कुछ खास है। भगवान इसे पसंद करेंगे।" और टिम...
उस पर विश्वास किया (ब्रूनी और बर्केट, 2002)।
इसी तरह के "ईश्वर द्वारा चुने गए" वाक्यांशों का प्रयोग कई गुरुओं ने अपने भ्रमित शिष्यों को बहलाने-फुसलाने के लिए किया है। संभवतः अन्य "ईश्वर के सेवकों" के विश्वसनीय, "निर्दोष चरित्र" का भी इसी तरह प्रयोग किया गया है।
[फादर ब्रूस] रिट्टर... अमेरिका की ओर से मदर ऑफ द मदर का जवाब थे।
टेरेसा....
जब फादर ब्रूस ने अपना ध्यान अपने एक छात्र की ओर मोड़ा
सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए गुमराह किए गए कोवेनेंट हाउस मिशन में सहायक —“बाल देखभाल का मैकडॉनल्ड्स”], वे अक्सर इसे “बाल देखभाल का मैकडॉनल्ड्स” बताते थे।
एक प्रकार की "चमक" या "गर्म रोशनी" उत्पन्न करते हुए। कई मायनों में, उनका पुनः-
धार्मिक निष्ठा न केवल ईश्वर के प्रति थी बल्कि फादर ब्रूस के प्रति भी थी—
उस व्यक्ति के इर्द-गिर्द व्यक्तित्व पूजा का माहौल, जिसके मिशन की वे जिम्मेदारी संभालते हैं।
(सेनॉट, 1992)
"अमेरिका की मदर टेरेसा" कहे जाने वाले इस व्यक्ति पर बाद में अपनी देखरेख में रहने वाले एक दर्जन से अधिक लड़कों का "यौन शोषण करने या यौन संबंध बनाने की कोशिश करने" का आरोप लगाया गया - एक ऐसा आरोप जिसे वह नकारता है।
हालांकि, अन्य सम्मानित कैथोलिक धर्मगुरु अपने कथित दुराचारों का खंडन करने में कम ही सफल रहे हैं:
पुजारी ने गुदा मैथुन, मुख मैथुन और सामूहिक यौन संबंध में लिप्त रहा।
एक समय में दो लड़कों के साथ, उन्हें गांजा पिलाया, कुत्ते से चटवाया
उनके जननांग (बेरी, 1992)।
अन्य जगहों पर भी:

लगभग दो सौ लोग [जिनमें से एक की उम्र मात्र चार वर्ष थी]
उस समय] जिन्होंने कहा कि उनके साथ बलात्कार या छेड़छाड़ की गई थी [अब-
दिवंगत रेवरेंड जॉन जे. जियोघन के खिलाफ दावे दायर किए गए हैं।
पिछले कुछ वर्षों में उन्हें और उनके पर्यवेक्षकों को। विशेषज्ञों का मानना है कि-
मेरा मानना है कि उसने संभवतः तीन से चार गुना अधिक लोगों का यौन उत्पीड़न किया होगा।
कृपया आगे आएं...
अधिकांश अनुमानों के अनुसार कम से कम पंद्रह सौ पुजारी [द्वारा
अब, चार हजार से अधिक (ज़ोल, 2005)] को सार्वजनिक अभियोगों का सामना करना पड़ा है।
मध्य से लेकर अब तक नाबालिगों के साथ यौन दुर्व्यवहार के कई मामले सामने आए हैं।
1980 का दशक (बोस्टन ग्लोब, 2003)।
फादर एंथोनी कॉर्बिन ने ... के साथ यौन संबंध बनाने की बात कबूल की।
एक आठवीं कक्षा का लड़का। कॉर्बिन ने अपने शिकार को धोती पहनाई।
क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए जा रहे ईसा मसीह से मिलता-जुलता (ब्रूनी और
बर्केट, 2002)।
कैथोलिक क्रिश्चियन ब्रदर्स द्वारा किए गए कुछ कार्यों में से कुछ इस प्रकार हैं।
और सिस्टर्स ऑफ मर्सी] एक असाधारण रूप से भ्रष्ट थीं।
इस स्थिति को इस कदर व्यक्त किया जाता है कि "यौन शोषण" जैसे शब्द इसे पूरी तरह से व्यक्त करने में असमर्थ हैं।
उदाहरण के लिए... एक ऐसे व्यक्ति का वृत्तांत जो बचपन में एक
टार्डुन में कुछ क्रिश्चियन ब्रदर्स का यह विशेष पसंदीदा स्थान था।
[ऑस्ट्रेलिया] जिन्होंने इस बात की होड़ लगाई कि कौन उसका सौ बार बलात्कार कर सकता है-
पहली बार भयानक दर्द में होने और खून बहने के उनके विवरण के बारे में बताया गया है।
हैरान और चकित (रैफ्टरी और ओ'सुलिवन, 2001)।

जब ऐसी "पवित्रता" और "शुद्धता" हो, तो अश्लीलता की क्या ज़रूरत है? जब ऐसे निर्दयी "संतों" और "धरती पर ईश्वर के प्रतिनिधियों" की बात हो, तो शैतानी पापियों की क्या ज़रूरत है?

कैथोलिक पादरियों द्वारा कथित यौन शोषण को छिपाने के लिए परिवार में होने वाले अनाचार जैसे प्रयास यह भी स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि उसी व्यवस्था के भीतर तथाकथित "नियंत्रण और संतुलन" वास्तव में कितने कम प्रभावी हैं। पीड़ितों को बदनाम करने के संबंधित और अत्यंत क्रूर प्रयास और उच्च पादरी वर्ग द्वारा पीड़ितों के प्रति संकीर्ण रवैया भी यही दर्शाता है। (थॉमस डॉयल ने चर्च की उस कथित दुर्व्यवहार पर प्रतिक्रिया को "धोखाधड़ी, टालमटोल और लोगों से सरासर झूठ बोलना" बताया [बेरी और रेनर, 2004 में])। क्योंकि वहाँ, दोषी पादरियों को, यहाँ तक कि यौन शोषण के ज्ञात और व्यापक इतिहास वाले पादरियों को भी, सार्थक निंदा किए जाने की तुलना में, अधिक संभावना थी कि उन्हें किसी अन्य पल्ली में स्थानांतरित कर दिया जाए—यदि साथ ही पदोन्नति, वेतन सहित निलंबन या पेंशन सहित सेवानिवृत्ति न दी जाए। ऐसा तब भी किया गया जब पीड़ित परिवारों को धार्मिक वरिष्ठों द्वारा स्पष्ट रूप से आश्वासन दिया गया था कि विशिष्ट, उचित कदम उठाए जाएँगे।

यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए गए थे कि ऐसा दुर्व्यवहार दोबारा कभी न हो। (बेशक, बाद में उन्हीं वादों को पूरी तरह से तोड़ा गया।)

कई लोगों ने तर्क दिया कि दुर्व्यवहार करने वाले पादरियों के मामले में उच्चाधिकारियों का रवैया

उन्होंने अपने चर्च में व्यवस्थागत समस्याओं का खुलासा किया। “यह सिर्फ इतना ही नहीं है

मुख्य बात; यही हमारा संचालन का तरीका है... संरचनात्मक पहलू भी हैं।

समस्याएँ। आखिर ऐसी क्या बात है जिसने हम पुरोहितों को इतना अनिच्छुक बना दिया है?

जब कुछ भयानक घट रहा हो तो आवाज़ उठाना, और चुप न रहना

क्या छुपाना है? (बोस्टन ग्लोब, 2003)।

आश्चर्य की बात है कि धर्म जांच के बाद भी, चुड़ैलों को बेरहमी से जलाए जाने के बाद भी, अनगिनत धार्मिक युद्धों और धर्मयुद्धों के बाद भी, हमारे विश्व के "सुरक्षित" और

पारंपरिक धर्मों द्वारा किए गए अत्याचारों और बुराई की गहराई हमें आज भी चौंका देती है—और इसके संभावित रूप से हानिकारक गैर-पारंपरिक समूहों की तो बात ही छोड़ दें। फिर भी, हाल ही में हुए कैथोलिक घोटालों जैसी घटनाओं में कुछ भी "नया" नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इसकी तुलना सदियों पुराने गुरु-प्रधान रीति-रिवाजों की भय-प्रधान पाबंदियों और "कुशल" क्रूरताओं से की जाती है, और "दयालु, सहिष्णु" बौद्ध धर्म और अन्य जगहों पर "दिव्य" गुरुओं द्वारा अपने ही शिष्यों के साथ कथित यौन शोषण के व्यापक मामलों से की जाती है। यह बात चर्च के अपने हजारों वर्षों पुराने नियमों के संदर्भ में भी सच है, जो उनके पादरियों के बीच बाल यौन शोषण को बढ़ावा देते हैं (और इस प्रकार इसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं)।

जब पोप अलेक्जेंडर VI [मृत्यु 1503] ने अंतिम विजय का जश्न मनाया
कैथोलिक स्पेन द्वारा मूरों पर विजय प्राप्त करने के दौरान, उन्होंने ऐसा किसी धार्मिक अनुष्ठान के बिना किया।
सेंट पीटर चर्च में, लेकिन उसके सामने वाले चौक में एक पार्टी के साथ।
गिरजाघर। सम्मानित अतिथियों के बीच शराब के प्याले बह रहे थे।
रोम के सबसे आलीशान वेश्यालयों की महिलाओं ने अपनी सेवाएं पेश कीं।
बिशपों के बीच बुराइयाँ और बच्चे स्वतंत्र रूप से सौंपे जाते थे और
पादरी लोग कैथोलिक धर्म की नवीनतम जीत का जश्न एक यौन-संबंधी आयोजन के साथ मना रहे हैं।
यूअल बैचैनालिया (ब्रूनी और बर्केट, 2002)।

लेकिन अगर हमने कैथोलिक चर्च से कोई एक बात विशेष रूप से सीखी है, तो वह यह है कि जब तक हमारे विश्व के धर्मों की बुराइयों को सार्वजनिक रूप से उजागर नहीं किया जाता, तब तक उनके बेहतर होने की कोई उम्मीद नहीं है।

आजकल कोई भी समस्या गुप्त रूप से हल नहीं होती, खासकर
कैथोलिक चर्च। समस्याएँ तभी हल होती हैं जब...
कैथोलिक लोग खुलकर और रिकॉर्ड पर वही कहते हैं जो बहुत से लोग कहते हैं...
वे निजी तौर पर सोच रहे हैं, और अपना संदेश सीधे समलैंगिकता और गोमोराह 211 को लक्षित करते हैं।

धार्मिक नेतृत्व में (एंड्रयू ग्रीली, [बेरी,

1992]).
और तब भी, 1980 के दशक के उत्तरार्ध और 90 के दशक के आरंभ में पहली बार सामने आए घोटाले सदी के मोड़ पर फिर से उभर आए, पादरियों द्वारा यौन शोषण के आरोपों की एक नई लहर के रूप में, जो काफी हद तक उन आरोपों के समान थे जिन्हें एक दशक पहले उस सम्मानित नेतृत्व द्वारा उचित रूप से सुलझा लिया गया था। और दुख की बात है कि इन दोनों लहरों ने केवल यह दिखाया है कि कैसे ये "पवित्र" संगठन आम तौर पर एकजुट होकर अपने पहले से ही टूटे हुए पीड़ितों के खिलाफ "मुकदमेबाजी के जरिए लड़ाई" लड़ते हैं। क्योंकि उन्हें सबसे बढ़कर अपनी "दिव्य संस्था" की पवित्र सार्वजनिक प्रतिष्ठा की रक्षा करनी होती है, जिसके माध्यम से ईश्वर अद्वितीय रूप से संवाद करता है।
इसके विपरीत:
इस घिनौनी कहानी में अगर कोई नायक है, तो वे पीड़ित ही हैं।
टिम्स, जिन्होंने अपनी आवाज़ पाई, जिन्होंने साहस पाया, इसके बाद
वर्षों तक चुपचाप और एकांत में पीड़ा सहने के बाद, अब इस दुनिया में कदम रखने के लिए...
रोशनी जलाकर, जैसा कि किसी ने कहा था, कहो, "यह मेरे साथ हुआ, और यह है गलत" (बोस्टन ग्लोब, 2003)।
और यह न केवल गलत है, बल्कि इसे रोकना ही होगा।

अध्याय XXV

पत्तागोभी का
और प्रकृति की परियाँ
(फाइंडहॉर्न समुदाय:
पीटर और एलीन कैडी)

“समय आ गया है,” कैडीज़ ने कहा।
कई विचारों को एक दिशा देने के लिए:

मोरे फ़र्थ और ट्रेलर पार्कों के बारे में
नन्हे बौनों के बारे में—और स्कॉट्स के बारे में—
पत्तागोभी इतनी बड़ी क्यों हो जाती है?
और क्या स्वीडिश लोग आकर्षक होते हैं?

नवंबर 1962 में, पीटर और एलीन कैडी अपने तीन छोटे बेटों और एक दोस्त, डोरोथी मैक्लीन के साथ, उत्तरपूर्वी स्कॉटलैंड में मोरे फ़र्थ के तट के पास बस गए। वहाँ वे एबरडीन और इनवरनेस से कुछ ही दूरी पर, एक ऐसे भूखंड पर बने एक छोटे से घर में रहते थे, जो आगे चलकर फाइंडहॉर्न समुदाय की नींव बनने वाला था।
उससे पहले, पूर्व सैन्य अधिकारी पीटर ने पांच वर्षों तक अपनी गुरु समान महिला, शीना का अनुसरण किया था, जो उनकी दूसरी पत्नी भी थीं। शिष्या के रूप में उनसे जुड़ने के लिए, आइलीन ने अपने पति और बच्चों को छोड़ दिया था। उस प्रस्थान के तुरंत बाद, "पीड़ित होकर"
212
गोभी और प्रकृति के परियों के बारे में 213

अपराधबोध और पश्चाताप से ग्रस्त होकर, उन्हें आवाज़ें सुनाई देने लगीं, अर्थात् “मार्गदर्शन” प्राप्त होने लगा। उन आवाज़ों का स्रोत एलीन की पहली पुस्तक के शीर्षक में स्पष्ट है: ईश्वर ने मुझसे बात की। बाद में उनके द्वारा कथित रूप से प्राप्त संदेशों में “सेंट-जर्मेन [और] सर फ्रांसिस बेकन से संदेश” शामिल थे (हॉकेन, 1976)।
बाद में पीटर और एलीन शीना से अलग हो गए और 1957 तक वे स्कॉटलैंड के फोर्रेस में एक होटल का प्रबंधन कर रहे थे, जो इमारत बाद में फाइंडहॉर्न समुदाय का हिस्सा बन गई।
फिर उन्हें वहां से एक और खस्ताहाल होटल में स्थानांतरित कर दिया गया ताकि उसे पुनर्जीवित किया जा सके। और, उस पद से अचानक बर्खास्त किए जाने के बाद, उन्होंने कूड़े के ढेर के बगल में स्थित फाइंडहॉर्न बे कारवां (यानी ट्रेलर) पार्क में अपना नया ठिकाना बनाया।
एलीन के आंतरिक मार्गदर्शन के अनुरूप, अग्रदूतों ने 1965 में ट्रेलर पार्क की "रेत

और झाड़ियों" वाली भूमि में एक छोटा सा बगीचा स्थापित किया।
विशेषज्ञों के आश्चर्य के लिए, उनके परिणाम अभूतपूर्व थे।
ऐसे पौधे उत्पन्न करना जिनकी विविधता और शक्ति का आकलन नहीं किया जा सकता था
परंपरागत रूप से समझाया गया (फाइंडहॉर्न, 1980)।
यह "अपरंपरागत" सफलता वास्तव में जल्द ही समुदाय के सदस्यों, और विशेष रूप से डोरोथी की, "पौधों और प्रकृति की आत्माओं/देवताओं से बात करने" की क्षमता के कारण सामने आई। बागवानी संबंधी अतिरिक्त सलाह एडिनबर्ग के एक व्यक्ति से मिली, जिसे "प्रकृति प्राणियों के अनुभव थे, जिन्होंने परियों और फ़ॉन, और ... स्वयं पैन का रूप धारण किया था" (रिडेल, 1990)।
इन सब का नतीजा चालीस पाउंड की पत्तागोभी थी, जिसके लिए यह समुदाय पहली बार प्रसिद्ध हुआ।
हालांकि, 70 के दशक के मध्य तक, जब पीटर ने बगीचे में काम करना बंद कर दिया, तो वनस्पति के कई असाधारण पहलू गायब हो गए।
यहां की वृद्धि पीटर कैड को दिखाने के लिए शानदार थी।
और दूसरों को यह विश्वास दिलाया कि यह संभव है। अब हम जानते हैं कि यह संभव है।
हम प्रकृति जगत के साथ काम करने में सक्षम थे, लेकिन अब हम ऐसा नहीं कर सकते।
ऐसे स्थान पर पौधा उगाने की आवश्यकता है जहाँ वह सामान्यतः नहीं उगता।
बढ़ना (हॉकेन में, 1976)।
समकालीन अमेरिकी चिकित्सक बारबा-
ऐन ब्रेनन (1993) ने फाइंडहॉर्न समुदाय में अपने बाद के विस्तारित प्रवास के प्रासंगिक पहलुओं का वर्णन किया है:
214 गुरुओं का पर्दाफाश

जब मैं वहां था, तो मैं प्रकृति पर आधारित एक पावर पॉइंट पैनल पर खड़ा था जिसे कहा जाता है
रैंडोल्फ्स लीप, फाइंडहॉर्न के पास एक जगह है जहाँ ड्रुइड्स रहते थे।

ऐसा माना जाता है कि वे प्रकृति की पूजा करते थे और उससे संवाद स्थापित करते थे।
आत्माओं से। मैंने प्रकृति की आत्माओं तक पहुँचने की अनुमति मांगी।
लगभग एक महीने बाद... मुझे प्रकृति के छोटे-छोटे दृश्य दिखने लगे।
मैं जहाँ भी जाता, मुझे आत्माएँ (या परियाँ) दिखाई देती थीं। वे मेरा पीछा करती थीं।
जब मैं संपत्ति के चारों ओर घूम रहा था, तब मुझे पता चला कि वे हमेशा थोड़े शर्मीले होते हैं।
और वह मुझसे कुछ फीट पीछे रहकर हंसती रहती थी।
समुदाय के मुख्य विकास से इतर, यूएफओ और "अंतरिक्ष प्राणियों" से संपर्क करने के लिए सहायक प्रयास भी किए गए।
1969 में, फाइंडहॉर्न में छह सौ पर्यटक आए... और वे सभी हमारे ही ग्रह से थे।
डेविड स्पैंगलर और उनकी महिला साथी 1970 के दशक की शुरुआत में फाइंडहॉर्न में तीन साल के लिए रहने आए थे। वे वहाँ के अंतिम "संस्थापक" थे, जो व्याख्यान देते थे और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते थे। उनके आने से समुदाय की जनसंख्या दो अंकों में पहुँच गई और वर्ष के अंत तक पैंतालीस हो गई।
उन शुरुआती दिनों में, लगभग 1972 तक,
पीटर इधर-उधर घूमकर हर किसी में खामी निकालता रहता था।
यह सुबह से लेकर शाम तक अंतहीन काम के सिवा कुछ नहीं था।
देर रात तक.... युवा सनकी लोग अपनी थकी-हारी जिंदगी से भाग रहे हैं
लंदन के लोगों को पीटर ने छोटी-छोटी बातों पर भी मौखिक रूप से बुरी तरह लताड़ा।
समुदाय की कठोर व्यवस्था और संरचना से विचलन
(हॉकेन, 1976)।
1973 में, लगभग साठ वर्ष के पीटर का दिल एक युवा स्वीडिश महिला के लिए खुल गया, जो उसी समुदाय में रहती थी। इसके बाद एलीन की प्रतिक्रिया ने फाइंडहॉर्न को अनिश्चितता के दौर में धकेल दिया। हालांकि यह संभावित विवाहेतर संबंध कभी पूरा नहीं हुआ, लेकिन जैसे-जैसे साल बीतते गए, पीटर और एलीन के बीच दूरियां बढ़ती गईं। अंततः पीटर ने 1979 में समुदाय छोड़ दिया।
फाइंडहॉर्न समुदाय की एक महिला सदस्य ने 70 के दशक के मध्य के समय का वर्णन इस प्रकार किया:

ऊर्जा का स्तर बहुत ऊंचा था, और खूब संगीत सुनने को मिला।
उस समय... प्रेम की एक सार्वभौमिक ऊर्जा थी, और
अचानक ही आपको किसी और के पार्टनर के साथ ऐसा अनुभव हो सकता है।
क्योंकि ईश्वर के प्रति हर बात के लिए खुलापन था।
किसी की दिशा में भेजता है, कुछ लोग तब... गोभी और प्रकृति के परियों के बारे में 215 में गोता लगाएंगे

इन रिश्तों के कारण वे खुद को एक उलझन में फंसा हुआ पाएंगे।
जटिलताओं से निपटने का कोई स्पष्ट तरीका नहीं है।
यह एक महामारी की तरह था... इसने समुदाय को सचमुच हिलाकर रख दिया।
इकाई (फाइंडहॉर्न, 1980)।
इस तरह के "गोभी के युग में प्रेम" के बावजूद - या शायद इसी वजह से - 1980 तक तीन सौ से अधिक लोग फाइंडहॉर्न कारवां पार्क की ओर आकर्षित हो चुके थे।
या फिर, अगर आप चाहें तो, धमाकेदार "फाइंडस्टॉक" भी सुन सकते हैं।
इन सब के दौरान, एलीन के मार्गदर्शन से धीरे-धीरे समुदाय के लिए दीर्घकालिक योजनाओं का खुलासा हुआ:
मैं चाहता हूं कि आप प्रकाश के इस केंद्र [अर्थात फाइंडहॉर्न] को एक के रूप में देखें।
प्रकाश की निरंतर बढ़ती हुई कोशिका। इसकी शुरुआत एक पारिवारिक समूह के रूप में हुई थी; यह
अब यह एक समुदाय है; यह एक गाँव में विकसित होगा, फिर एक कस्बे में और
अंततः प्रकाश के एक विशाल शहर में (कैडी, 1976)।
इस परियोजना का दायरा न तो इसके आरंभिक संस्थापकों से छिपा था और न ही उनके बाद आने वालों से।
किसी न किसी रूप में इस बात की गहरी जागरूकता रही है कि
फाइंडहॉर्न में जो कुछ भी तय किया जा रहा था, वह अत्यंत महत्वपूर्ण था।
पूरी दुनिया के लिए महत्व।
यह बेशक किसी व्यक्ति के बढ़े हुए अहंकार का परिणाम हो सकता है।
फाइंडहॉर्न में मौजूद लोगों की तरह—या यह एक बेहद साहसिक और शानदार प्रयास हो सकता है।

विश्वास का कार्य, कि ईश्वर के पास मानवजाति के लिए एक विशाल योजना थी, जो यदि
ज्ञात और अनुसरण किया जाने वाला, एक नए युग की शुरुआत कर सकता है, और वह खोज-
उस योजना में हॉर्न एक महत्वपूर्ण बिंदु था (कैडी, 1976)।
फाइंडहॉर्न समुदाय एक क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
एक ऐसा समाधान जो धीरे-धीरे दुनिया को बदल रहा है.... यह क्रांति
यह कुछ भी "नहीं करता"। यह आमतौर पर सुर्खियों में नहीं आता।
किसी भी समाचार माध्यम में, लेकिन यह ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करता है
जिसमें [प्रेम, आध्यात्मिकता, सहयोग और सद्भाव] पनप सकते हैं-
मानव जाति के बीच। शायद यही इसके लिए जिम्मेदार है।
80 के दशक के अंत में जो असाधारण परिवर्तन हुए,
शीत युद्ध के अंत और संक्रमणकालीन क्रांति की नींव रखी।
पूर्वी यूरोप का गठन। लेकिन अभी इसमें बहुत कुछ होना बाकी है।
(रिडेल, 1990)।
* * *
वर्तमान फाइंडहॉर्न समुदाय में एक स्वतंत्र स्टाइनर (यानी, "वाल्डोर्फ") स्कूल शामिल है, जो अतिरिक्त वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करता है। 216 गुरुओं को दरकिनार करना

वहाँ के बच्चों के लिए। छात्रों को अपनी गति से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, एक ऐसे शिक्षक के साथ घनिष्ठ संबंध में जो एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक कक्षा को जारी रखता है। अपने आप में, यह निस्संदेह एक शैक्षिक कार्यक्रम को संरचित करने का एक अद्भुत तरीका है। "घनिष्ठता-
हालाँकि, अर्नो फ्रैंक (2000) द्वारा लिखित "वाल्डोर्फ प्रकार का विकास" नामक लेख, सामान्य तौर पर उन स्कूलों के बारे में गंभीर चिंताएँ उठाता है, जैसा कि
जानकारी www.waldorfcritics.org पर प्रस्तुत की गई है:
अभिभावकों को यह बताया जाना चाहिए कि विज्ञान और इतिहास का पाठ्यक्रम-
यह रचना स्टाइनर की "आकाशिक पुनर्समन" की व्याख्या पर आधारित होगी।
"रस्सी" के अनुसार, "प्राचीन" लोगों के पास दिव्य दृष्टि थी।

एंथ्रोपोसोफिक दीक्षा छात्रों को जिन शक्तियों में सहायता कर सकती है
किसी दिन उन्हें यह प्राप्त हो जाएगा। उन्हें बताया जाना चाहिए कि वफादार स्टाइनर अनुयायी...
विद्वानों का मानना है कि मनुष्य कभी अत्त- नामक लुप्त महाद्वीप पर रहते थे।
लैंटिस.... उन्हें बताया जाना चाहिए कि शिक्षक मध्ययुगीन काल का अध्ययन करते हैं।
ऐसी योजना जिसमें नस्ल, रक्त और "चार स्वभाव" शामिल हैं।
इससे उन्हें अपने छात्रों के विकास को समझने में मदद मिलेगी।
(प्लान्स, 2004)।
स्टाइनर की पहली अटलांटियन उप-जाति का नाम रमोहाल्स रखा गया था।
जब एक रमोहाल्स व्यक्ति किसी शब्द का उच्चारण करता था, तो यह शब्द विकसित होता था-
इसने उस वस्तु के समान शक्ति का प्रयोग किया जिसे इसने निर्दिष्ट किया था।
इसी कारण उस समय शब्द उपचारात्मक थे; वे ऐसा कर सकते थे।
पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देना, जानवरों के क्रोध को वश में करना और
अन्य समान कार्य करना (स्टाइनर, 1959)।
रुडोल्फ स्टाइनर (1861-1925) ने स्वयं अपनी पुस्तक 'अटलांटिस एंड लेमुरिया' (1963) में हमारे काल्पनिक खोए हुए इतिहास के विवरणों पर विस्तार से चर्चा की है, और यह माना है कि अटलांटिस के समय में पृथ्वी का वातावरण वर्तमान की तुलना में कहीं अधिक घना था।
ऊपर उल्लिखित वायु का घनत्व गुप्त विद्या के लिए उतना ही निश्चित है।
आज के किसी भी तथ्य के रूप में इंद्रियों द्वारा दिए गए अनुभव को भी अनुभव माना जा सकता है।
हालांकि यह तथ्य भी उतना ही निश्चित है, बल्कि शायद उससे भी अधिक निश्चित है।
समकालीन भौतिकी और रसायन विज्ञान के लिए यह बात समझ से परे है कि
उस समय पूरी पृथ्वी पर पानी बहुत पतला था।
आज की तुलना में...
लेमुरियन काल में और यहाँ तक कि अटलांटियन काल में भी,
पत्थर और धातुएँ बाद की तुलना में बहुत नरम थीं (स्टाइनर,

1959).
गोभी और प्रकृति के परियों के बारे में 217

हमें अब यह सवाल उठाने की जरूरत नहीं है कि क्या ऐसा
घनत्व की स्थिति इस राय के अनुरूप है
आधुनिक विज्ञान, क्योंकि विज्ञान और तार्किक विचार कभी भी...
जो संभव है उसके बारे में अंतिम बात कहें (स्टाइनर, 1963)।
इस प्रकार सघन, विरलन और कोमल तत्वमीमांसा की खोज में भौतिकी को त्यागने के बाद, स्टाइनर (1963) ने आगे कहा:
मानव शरीर को एक आँख प्रदान की गई थी जो अब
अब वह अस्तित्व में नहीं है, लेकिन हमारे पास उस पूर्व की एक स्मृति चिन्ह मौजूद है।
एक आंख वाले साइक्लोप्स की पौराणिक कथा में वर्णित स्थिति।
और यही एकमात्र विसंगति नहीं थी जो हमारे ज्ञात संसार और प्राचीन काल के शरीरों के बीच पाई गई:
प्रथम जानवरों के रूप, आज के समय में,
वे हमें शानदार राक्षसों की तरह लगते हैं, उनके शरीर के कारण (और यह
(ध्यान में रखना आवश्यक है) हवा की प्रकृति के थे....
भौतिक प्राणियों के एक अन्य समूह के पास ऐसे शरीर थे जो...
इसमें वायु-ईथर, प्रकाश-ईथर और जल शामिल थे, और ये थे
पौधे जैसे जीव...
“काश मैं प्लांटिमल्स से बात कर पाता....” या खुद उनमें से एक बन पाता:
मनुष्य सूर्य में ही एक पौधे की तरह रहता था (स्टाइनर, 1959)।
स्टाइनर ने लेमुरियन महिलाओं के बारे में आगे दावा किया:
उनके लिए सब कुछ सजीव था और उन्हें स्वयं प्रकट हो रहा था।
आत्मा की शक्तियों और आभासों में... वह चीज़ जिसने उन्हें प्रेरित किया
उनकी प्रतिक्रिया के लिए "आंतरिक आवाजें" थीं, या पौधे, जानवर-
माल, पत्थर, हवा और बादल, पेड़ों की सरसराहट,
और इसी तरह, उन्होंने उन्हें बताया...
यदि मनुष्य अपनी चेतना से स्वयं को ऊपर उठा सके

वह अतिसंवेदी दुनिया में चींटी का अभिवादन करने में सक्षम होगा।
या फिर "मधुमक्खी की आत्मा" वहां पूर्ण चेतना में उसकी बहन के रूप में मौजूद है।
द्रष्टा वास्तव में ऐसा कर सकता है।
रुडोल्फ स्वयं थियोसोफिकल सोसाइटी की जर्मन शाखा के प्रमुख थे, लेकिन 1913 में सोसाइटी के नियमों के अनुसार "अवैध" गतिविधियों के कारण उन्हें निष्कासित कर दिया गया। इस विभाजन के बाद, उन्होंने अपनी स्वयं की एंथ्रोपोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की, जिसमें थियोसोफिकल सोसाइटी के पचपन पूर्व सदस्य शामिल थे, और यहीं से वाल्डोर्फ दर्शन का व्यापक विकास हुआ।
218 गुरुओं का पर्दाफाश

स्टाइनर का परिचय 1880 के दशक में थियोसोफी के माध्यम से हुआ था।
सिननेट और ब्लावत्स्की की रचनाएँ, जिनमें से अधिकांश को उन्होंने बाद में पुनः प्रस्तुत किया।
द सीक्रेट डॉक्ट्रिन को छोड़कर, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था।
इसे सबसे उल्लेखनीय गूढ़ ग्रंथ माना जाता है (इसके अलावा)
(स्वयं द्वारा) आधुनिक काल में प्रकाशित...
स्टाइनर के थियोसोफिकल व्याख्यानों के श्रोता थे
शुरू में बहुत छोटा था। खुशी की बात है कि स्टाइनर ने कोई चिंता नहीं दिखाई।
यह दावा करते हुए कि दर्शकों की संख्या अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति से बढ़ गई थी।
प्राणी और मृत आत्माएं, गुप्त ज्ञान के लिए उत्सुक हैं।
ऐसा प्रतीत होता है कि वह दूसरी दुनिया में इसे प्राप्त नहीं कर सका (वाशिंगटन-टन, 1995)।
'द सीक्रेट डॉक्ट्रिन' मैडम ब्लावत्स्की की डार्विन-विरोधी व्याख्या थी, जिसमें पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति को सात "मूल जातियों" के माध्यम से समझाया गया था, जिनका कथित रूप से चंद्रमा से आए आध्यात्मिक प्राणियों से वंशज होने का दावा किया गया था। इस पुस्तक को कम ज्ञात 'बुक ऑफ ज़्यान' की पंक्तियों की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया गया था - जो स्वयं सेन्ज़ार भाषा में लिखी गई थी, जो किसी भी भाषाविद् के लिए अज्ञात थी।
इस बीच, स्टाइनर ने अरिमन नामक एक दुष्ट सत्ता, अंधकारमय मुख वाले स्वामी के

अस्तित्व का उपदेश दिया—जो भौतिकवाद की आत्मा थी। उनका मानना था कि वह विघटनकारी प्राणी "1879 से ही दुनिया में परेशानी पैदा कर रहा है, जब महादूत माइकल ने मानव जाति का दिव्य मार्गदर्शन संभाला और ज्ञानोदय की एक ब्रह्मांडीय प्रक्रिया शुरू की।"
“पर्यावरण” (वाशिंगटन, 1995)।
स्टाइनर (1947) ने आगे बढ़ते हुए छात्र के "उच्चतर लोकों में आरोहण" का वर्णन करते हुए कहा कि इसमें "दहलीज के संरक्षक" से मुलाकात शामिल है:
दहलीज का संरक्षक एक (आकाशीय) आकृति है, जो प्रकट होती है-
यह स्वयं को विद्यार्थी की जागृत उच्च दृष्टि के अनुरूप ढालता है... यह एक
दहलीज के संरक्षक को बनाने के लिए जादुई प्रक्रिया को कम करें-
पुराना भी शारीरिक रूप से दिखाई देता था। यह एक उत्पादन द्वारा प्राप्त किया गया था।
महीन पदार्थ का बादल, एक प्रकार का लोबान जो इससे उत्पन्न होता है
अनेक पदार्थों का एक विशेष मिश्रण। विकास-
जादूगर की खुली शक्ति तब फ्रैंक को आकार देने में सक्षम होती है।
धूप को आकार देना, उसे अभी तक अमुक्ति प्राप्त लोगों से जीवंत करना
व्यक्ति का कर्म...
यहां जो कुछ भी कथात्मक रूप में दर्शाया गया है, वह नहीं होना चाहिए
रूपक के अर्थ में समझा जाए, लेकिन एक अनुभव के रूप में
गूढ़ विद्या के विद्यार्थी को प्राप्त होने वाली सर्वोच्च संभव वास्तविकता के बारे में।
अधिक व्यक्तिगत स्तर पर, रुडोल्फ ने कहा:

दिव्यदृष्टि रखने वाला व्यक्ति... हर प्रकार की सोच का वर्णन कर सकता है।
और प्रकृति के प्रत्येक नियम के लिए, एक ऐसा रूप जो उन्हें व्यक्त करता है।
उदाहरण के लिए, प्रतिशोध की भावना तीर जैसी आकृति धारण कर लेती है।
एक कांटेदार रूप में, जबकि एक दयालु विचार अक्सर एक कांटेदार रूप में बनता है।
खिलता हुआ फूल, इत्यादि। स्पष्ट, महत्वपूर्ण विचार हैं।
आकार में नियमित और सममित, जबकि विचार उलझे हुए हैं

इनकी रूपरेखा लहरदार होती है।
और "लहरदार रूपरेखाओं" की बात करें तो:
एंथ्रोपोसोफिकल चिकित्सा आंशिक रूप से इस पर आधारित प्रतीत होती है
पत्राचार के जादुई सिद्धांत—उदाहरण के लिए हैजा एक
आत्मविश्वास की कमी के लिए दंड और चेचक के लिए
स्नेह का अभाव। आज एंथ्रोपोसोफिस्ट क्लीनिक चलाते हैं, एक
मानसिक अस्पताल, और दवाओं का एक कारखाना जो बाजार में फैल चुका है-
कैंसर का इलाज संभव हो पाया (वेब, 1976)।
स्टाइनर के समग्र विचार स्तर के बारे में, स्टॉर (1996) संक्षेप में कहते हैं:
उनकी विश्वास प्रणाली इतनी विचित्र है, और सबूतों से इतनी निराधार है,
यह इतना स्पष्ट रूप से विचित्र है कि तर्कसंगत संशयवादियों को इस पर विश्वास करना ही होगा।
इसे भ्रम समझिए...
उसकी तथाकथित सोच, उसकी कथित अलौकिक शक्ति-
इंद्रियजन्य बोध ने विश्व, ब्रह्मांड के एक दृष्टिकोण को जन्म दिया।
और ब्रह्मांडीय इतिहास का, जो किसी भी आधार से पूरी तरह से असमर्थित है।
सबूत, जो व्यावहारिक रूप से हर उस चीज़ के विपरीत है जो
आधुनिक भौतिकी और खगोल विज्ञान ने यह खुलासा किया है, और जो कि
यह किसी और चीज की तुलना में विज्ञान कथा जैसा अधिक लगता है।
कुछ हद तक सौम्य लहजे में, रॉबर्ट कैरोल (2004d) ने निष्कर्ष निकाला:
इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्टाइनर ने योगदान दिया।
कई क्षेत्रों में, लेकिन एक दार्शनिक, वैज्ञानिक और कलाकार के रूप में वे
यह शायद ही कभी औसत दर्जे से ऊपर उठ पाता है और इसमें मौलिकता की कमी साफ तौर पर देखी जा सकती है।
हालांकि, केन विल्बर (2000b) ने बेचारे रुडोल्फ के बारे में अपना अधिक सकारात्मक मूल्यांकन इस प्रकार व्यक्त किया:
[स्टाइनर] एक असाधारण अग्रणी थे... और उनमें से एक थे
सबसे व्यापक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण-
अपने समय के मेष राशि के व्यक्ति।

दरअसल, स्टाइनर के भोले-भाले अनुयायी भी उन्हें "बारह क्षेत्रों में एक प्रतिभाशाली व्यक्ति" मानते हैं (मैकडर्मॉट, 1984)।
सच कहें तो, मैकडरमॉट की चुनिंदा रचनाओं ("अकादमिक आवरण," आदि) एसेंशियल स्टाइनर के पहले भाग में प्रस्तुत रुडोल्फ का ठोस दार्शनिक चिंतन, उनकी कल्पनाओं की उड़ान से कहीं अधिक सुसंगत है। (मैकडरमॉट स्वयं अध्यक्ष थे)
कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रल स्टडीज [www.ciis.edu] में कई वर्षों तक। उनके और उनके बीच के कटु संबंध के कारण।
कथित तौर पर “बुरा, घृणित” (देखें विल्बर [2001])।
फिर भी, उस सीमित सुसंगति के बावजूद, कोई भी इससे बच नहीं सकता है
ध्यान दें कि विल्बर ने अपनी पुस्तक (2000b) इंटीग्रल साइकोलॉजी के चार्ट 4B में, स्टाइनर के वास्तविकता के नौ स्तरों को मनोविज्ञान की "सहसंबंधी मूलभूत संरचनाओं" से जोड़कर अपनी चार-चतुर्थांश "थ्योरी ऑफ एवरीथिंग" प्रस्तुत की है। (यह पुस्तक "ट्रांसपर्सनल साइकोलॉजी की पाठ्यपुस्तक" के रूप में लिखी गई है। इसमें वर्णित स्तरों में सूक्ष्म शरीर और इसी प्रकार की अवधारणाएँ शामिल हैं।) फिर भी, यदि आभाओं की अनुभूति वास्तविक है, तो यह उन्हीं दिव्य दृष्टियों और सूक्ष्म शरीरों के माध्यम से होगी जिनका उपयोग आकाशिक अभिलेखों को पढ़ने के लिए किया जाता है। क्या स्टाइनर ने आभाओं को स्पष्ट रूप से देखा था, लेकिन अपने कथित आकाशिक पाठों को मतिभ्रम के रूप में देखा था? या वे दोनों की कल्पना कर रहे थे? किसी भी स्थिति में, विल्बर स्टाइनर के वास्तविकता के स्तरों को अपने सिद्धांतों से जोड़कर कैसे उचित ठहराते हैं, जबकि वे स्टाइनर द्वारा उन्हीं कथित माध्यमों से अनुभव किए जाने के शेष भाग को अनदेखा कर देते हैं?
बहरहाल, वेलिकोवस्की को इस पर गर्व होता। क्योंकि विल्बर द्वारा स्टाइनर का समर्थन करने का अर्थ या तो यह है कि उन्होंने रुडोल्फ के कार्यों को इतना कम पढ़ा है कि वे उनकी "व्यापकता" से अनभिज्ञ हैं... या फिर वे उन काल्पनिक तथ्यों से अवगत हैं, लेकिन फिर भी उन्हें (दिव्य दृष्टि पर आधारित) मनोविज्ञान और दर्शन में एक अंतर्दृष्टिपूर्ण "दूरदर्शी" और "असाधारण अग्रणी" मानते हैं।
दा के कोरोनस और शब्द योग के साथ विल्बर के इतिहास को देखते हुए, ये दोनों

विकल्प समान रूप से तर्कसंगत प्रतीत होते हैं। (विल्बर ने स्पष्ट रूप से बाद वाले योग का शायद ही कभी अध्ययन किया है, फिर भी वह खुद को एक विशेषज्ञ के रूप में प्रस्तुत करता है, जो यह निर्धारित करने के योग्य है कि उस मार्ग के शीर्ष योगी कौन हैं [देखें
लेन, 1996]।
और फिर से ध्यान दें कि कैसे kw द्वारा स्टाइनर की प्रशंसात्मक समीक्षा, हमेशा की तरह, महज एक राय के रूप में नहीं, बल्कि एक निर्विवाद तथ्य के रूप में प्रस्तुत की गई है—"बोल्डर के ओरेकल ने ऐसा कहा था।" लेकिन वास्तविकता में, ऐसा बिलकुल भी नहीं है, खासकर स्टाइनर के दर्शन के संदर्भ में।
यदि आप भविष्यवक्ता बनने जा रहे हैं, तो यह आपका कर्तव्य है कि आप इसे सही ढंग से करें।
गोभी और प्रकृति के परियों के बारे में 221

* * *

फाइंडहॉर्न जैसे समुदाय में लगातार होने वाली चहल-पहल से ध्यान भंग हो सकता है। लेकिन एलीन कैडी ऐसी हलचल से विचलित नहीं होना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने भीड़भाड़ से दूर एक शांत और छोटा सा स्थान खोजने के लिए मार्गदर्शन की तलाश की।
उसने भीतर से पूछा और एक आनंदमय मार्गदर्शक स्वर में...
उसने जवाब दिया, "आप सार्वजनिक शौचालय में क्यों नहीं चले जाते?"
आपको वहां पूर्ण शांति मिलेगी।
जिस छोटे शौचालय ब्लॉक का उल्लेख किया गया है, उसे संरक्षित कर लिया गया है और
अब यह एक हर्बल औषधालय और संपूर्ण खाद्य कैफे है (रिडेल,
1990).
यदि इस प्रकार का संरक्षण अत्यधिक श्रद्धापूर्ण प्रतीत होता है, तो ध्यान दें कि पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा इससे भी आगे जाती है, कभी-कभी इसमें लामा (लामा नहीं) की थोड़ी मात्रा होती है... उम....
[सत्रहवीं शताब्दी के ऑस्ट्रियाई जेसुइट पादरी जोहान] ग्रू-

बेर को आम लोगों के खाने की प्रथा से विशेष रूप से घृणा थी।
दलाई लामा के मल युक्त "उपचारात्मक गोलियां" बेचना
(शेल, 2001)।
या फिर बोलचाल की भाषा में: "हे भगवान!"
सौ साल पहले, ऐसी अफवाहें फैली थीं कि दलाई लामा के मल में
लामा—तिब्बती बौद्धों के आध्यात्मिक नेता—को लाभ हुआ था।
आधिकारिक संपत्तियों ने ब्रिटेन के सर्जन जनरल को विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया।
विज्ञान के हित में उनका विश्लेषण करें। उनमें कुछ भी नहीं था।
उन्होंने निष्कर्ष निकाला, "अद्भुत।" यह अच्छी बात है: एक के अनुसार
ब्रिटेन स्थित तिब्बत फाउंडेशन के प्रवक्ता ने कहा, "ये
आजकल तो दलाई लामा के पुराने कपड़े भी नहीं मिलते, कभी नहीं।
उसके मल पर ध्यान दो" (टोस्कानी, 2000)।
और वे इसे प्रगति कहते हैं!
जब डॉक्टर [डेविड बोहम—दलाई लामा के बच्चे—का इलाज कर रहे थे]
"भौतिकी शिक्षक"—स्विट्जरलैंड में "मोटे खून" के लिए] ने संकेत दिया
दलाई ने कहा कि वह दवा के लिए धर्मशाला भेजेंगे।
लामा ने जोर देकर कहा कि इलाज तुरंत शुरू किया जाना चाहिए।
उसने रेशम में लिपटी हुई कीमती गोलियाँ एक थैली से निकालीं।
उनके कमरे में जाकर उन्होंने सरला [बोहम की पत्नी] को निर्देश दिया कि वे 222 गुरुओं को कैसे नग्न करें

तैयार रहना चाहिए। बोहम को उनका स्वाद घृणित लगा (पीट,
1997).
लेकिन "नित्यानंद द पू" को तो यह बात जरूर पसंद आती— और शायद वह एक निवाला भी खा लेते।
इसी तरह, बाद के वर्षों में फाइंडहॉर्न में सीवेज का रिसाव हुआ, जिससे क्लुनी हिल्स में कैडीज़ के पूर्व होटल के शौचालय और बाथटब पानी से भर गए। यह होटल अब फाइंडहॉर्न फाउंडेशन के स्वामित्व और संचालन में है और एक सामुदायिक आवास के

रूप में कार्यरत है। निवासियों ने दो सप्ताह तक सीवेज लाइनों का पता लगाने का प्रयास किया—जिसमें हताशा में, पानी का पता लगाने के लिए छड़ियों और पेंडुलम का उपयोग करना भी शामिल था। हालांकि, इस अथक प्रयास से भी रुकावट का स्रोत पता नहीं चल पाया।

यह बात धीरे-धीरे स्पष्ट होती गई कि सीवर में रुकावट एक

यह हमारे जीवन के बारे में कुछ बताने का एक प्रतीकात्मक तरीका है।

हमें एक संदेश प्राप्त हुआ। इसने हमें बताया कि हम बहुत अधिक बदल चुके थे।

बाहरी दिखावे पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम अपने आध्यात्मिक संबंध की उपेक्षा करते हैं।

मलबा बगीचे में भरने लगा। [इसलिए, "प्यार में

पत्तागोभी और हैजा का समय।] हमने एक बैठक आयोजित की।

और इस बात पर सहमति बनी कि प्रत्येक सदस्य व्यक्तिगत टिप्पणी करेगा।

अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता। दोपहर में

हमने अपने-अपने फैसले आपस में साझा किए। शाम 4 बजे, जब

बैठक समाप्त हुई, सीवर का अवरोध हट गया।

उन्होंने स्वयं को अनब्लॉक कर दिया! (रिडेल, 1990)।

निःसंदेह, “प्रभु रहस्यमयी तरीकों से कार्य करते हैं,” इत्यादि। उनके “अवतार” भी ऐसा ही करते हैं।

यह देखने के लिए कि क्या वह एक बड़ा गुरु बनने के बाद घमंडी हो गया था,

रामकृष्ण झुग्गी-झोपड़ी वाले इलाकों में गए और शौचालयों की सफाई की।

अपने बालों के साथ (सच्चिदानंद, [मैंडेलकोर्न, 1978] में)।

* * *

समय बीतने के साथ-साथ एलीन और पीटर को यह बात और भी स्पष्ट होती चली गई।

वे एक नए युग के अग्रदूत थे। वे अग्रणी थे।

एक नए जीवन शैली की शुरुआत करते हुए जो पूरे देश में फैल जाएगी।

दुनिया को नई उम्मीद दें और भविष्य के लिए नई आशा जगाएं। लोग

इस नए तरीके को सीखने के लिए हर देश से लोग आते हैं और फिर वापस चले जाते हैं।

वे जहाँ भी हों, उस अनुभव को जी सकें...
धीरे-धीरे उन्हें उस कार्य की महानता का एहसास होने लगा जिसे उन्होंने समझ लिया था।
पीटर और एलीन तथा उन लोगों के लिए यह बात और स्पष्ट हो गई जो गोभी और प्रकृति के परियों के बारे में पढ़ रहे थे (223)

उनके साथ थे। फाइंडहॉर्न एक बढ़ते हुए समुदाय से कम नहीं था।
मानवता का सिरा (कैडी, 1976)।
हालांकि, मानवता के इस तरह के अग्रणी और बढ़ते उत्साह के बीच अपने दृष्टिकोण को बनाए रखना कोई आसान काम नहीं है... जैसा कि हर दूसरा समुदाय जिसने कभी इसी तरह के भव्य मिशन को संजोया है, इसकी गवाही दे सकता है।
जॉयज़ वे के लेखक डब्ल्यू. ब्रुघ जॉय को 1980 में फाइंडहॉर्न में एक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसमें उन्होंने "समुदाय के लिए आगे क्या होने वाला है" इस विषय पर बात की, और यह व्याख्यान उन प्रतिभागियों के समूह के लिए था जो वहां सामुदायिक जीवन में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उन अनकहे मुद्दों को संबोधित करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि उसका विरोध करना असंभव था।
मैंने "विशेष" महसूस करने के परिणामों के बारे में बात की और बताया कि कैसे
दुनिया की बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ने से न केवल लाभ होता है, बल्कि इससे
“शत्रु” तो है, लेकिन वास्तव में यह उसके गहरे स्वरूप का ही प्रक्षेपण है।
समुदाय के पहलुओं को विश्व मंच पर प्रदर्शित करना। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि...
कहिए, वह बात लोकप्रिय नहीं थी और मैं तेजी से पतन की ओर जा रहा था।
“अवांछित अतिथि” श्रेणी....
नव युग के अधिकांश समर्थकों के दावों के बावजूद
कि वे निस्वार्थ सेवा जैसे गुणों को बढ़ावा दे रहे हैं।
दुनिया में, नव युग की मान्यताएं विशिष्टता और निर्दोषता में विश्वास रखती हैं।
मेरी राय में, न्यू एज प्रतिगामी है...
शिशुवत, यदि भ्रूणवत नहीं तो। इस प्रकार की विचारधारा आत्म-केंद्रित होती है।

केंद्रित (जॉय, 1990)।
कुछ दिनों बाद, कुछ नाटक और गायन के बाद, "सामुदायिक कवि" ने मंच पर जॉय के पहले के भाषण का जवाब दिया।
विषैली कविता में, शक्तिशाली और क्रोधपूर्ण अधिकार की आग से प्रज्वलित-
अपनी संवेदनशीलता के कारण, उसने अंधकारमय भावनाओं और विनाशकारी शक्तियों को उजागर किया।
समुदाय की ताकतें। उनके क्रोध के शिकार थे...
आम तौर पर अमेरिकी और विशेष रूप से मैं। हम थे-
ऐसे शब्दों में वर्णित किया गया है जो मल को भी धूप जैसा बना देंगे।
तुलनात्मक रूप से। उनका हमला धन और सत्ता पर केंद्रित था।
... किसी भी प्रयास का वह अंधकारमय पक्ष जो मुखौटा पहने होता है
बढ़िया खाना और सेवा। बस एक ही चीज़ की कमी थी।
सेक्स, लेकिन उसने इसे "फक" शब्दों का इस्तेमाल करके छुपाया।
असाधारण आवृत्ति के साथ "फकिंग" (जॉय, 1990)।
और यह कोई अजीब बात नहीं थी, क्योंकि...
बेशक, इस तरह की एक अलग-थलग घटना समुदाय के भीतर और समुदाय द्वारा किए गए समग्र अच्छे कार्यों को किसी भी तरह से अमान्य नहीं करती है। यह विशेष रूप से 224 गुरुओं को छीनना है

जॉय के भाषण और कवि के पलटवार पर आम प्रतिक्रिया, कम से कम सार्वजनिक रूप से, काफी परिपक्व प्रतीत होती है। यानी, इस दुनिया के कुछ "बदमाश लड़कों" से जैसी उम्मीद की जा सकती थी, उसके विपरीत, जॉय को उनकी टिप्पणियों के लिए निश्चित रूप से समुदाय से बाहर नहीं निकाला गया। न ही उन्हें नंगा किया गया और न ही समुदाय के सम्मानित नेताओं द्वारा उन्हें "नीच" कहा गया। इसके विपरीत, यदि जॉय जैसी आलोचनाएँ किसी सामान्य शिष्य के दिव्य गुरु या पवित्र आश्रम की ओर निर्देशित होतीं, तो शिष्य अक्सर उन्हें घोर ईशनिंदा मानते।
एक तरह से देखा जाए तो, इस संयमित प्रतिक्रिया पर आश्चर्य भी हो सकता है। क्योंकि, जिस भव्य दृष्टिकोण से इस समुदाय की स्थापना हुई थी, और इसके अस्तित्व के पहले दशक में पीटर कैडी के निरंकुश नियंत्रण को देखते हुए, हालात

इससे कहीं बदतर हो सकते थे। हालांकि, वर्तमान में, फाइंडहॉर्न में हर साल 14,000 से अधिक अतिथि अस्थायी कार्य शिविरों के लिए या कैरोलिन मिस जैसी "आध्यात्मिक चिकित्सक" न्यू एज हस्तियों द्वारा साल भर चलाए जाने वाले सैकड़ों वयस्क कक्षाओं में भाग लेने के लिए आते हैं। यह सतत "इकोविलेजेस" के वैश्विक नेटवर्क का भी हिस्सा है।

ज़ाहिर है, आध्यात्मिक आधार पर सामुदायिक जीवन जीने का हर प्रयास विनाशकारी ही होता है। निस्संदेह, फाइंडहॉर्न में मौजूद इतने विविध "आस्थावानों" के समूह से समुदाय में गड़बड़ी पैदा होने की संभावना कहीं कम होगी, बजाय इसके कि वे सभी एक ही "संस्कार" का अनुसरण कर रहे हों, यानी कि वे सभी एक-दूसरे में एक ही "पागलपन" को बढ़ावा दे रहे हों। आख़िरकार, लोगों का एक मिश्रित समूह, भले ही वे सभी अपने-अपने मार्ग के सिद्धांतों और अपेक्षित व्यवहारों का पूरी तरह पालन कर रहे हों, फिर भी विचारों और दृष्टिकोणों की एक विविधतापूर्ण आबादी का निर्माण करेगा।

एक अधिक विषम समूह के लोग एक साथ रहते हैं

मैंने ऐसे समुदाय की कल्पना भी नहीं की थी (हॉकेन, 1976)।

और, कृषि की ही तरह, इस तरह की विविधतापूर्ण आबादी के किसी विशिष्ट रोगजनन से विनाशकारी रूप से प्रभावित होने की संभावना एक समरूप आबादी की तुलना में कम होती है।

फाइंडहॉर्न समुदाय अपेक्षाकृत "सकारात्मक और नव-युग" का समुदाय है। इसलिए इसने कभी भी ईश्वर प्राप्ति के साधन के रूप में अहंकार को नष्ट करने पर विशेष बल नहीं दिया है। परिणामस्वरूप, इसने दूसरों के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार के उस आसान तरीके को स्वीकार नहीं किया है, मानो यह "उनके भले के लिए" हो, या उनसे सम्मान और आज्ञापालन की मांग करने का बहाना हो, जैसा कि आम आश्रमों में देखने को मिलता है।

हालांकि, शायद इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि समुदाय के विकास के साथ-साथ कैडी परिवार का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता गया। आश्चर्यजनक रूप से, यह सब एलीन के स्वयं के प्राप्त "मार्गदर्शन" के परिणामस्वरूप हुआ, जो किसी भी समुदाय में, चाहे वह आध्यात्मिक हो या अन्य, सत्ता के सबसे उदार बंटवारे में से एक

था।
यह भी एक कारण रहा होगा कि फाइंडहॉर्न कभी भी मठवासी वातावरण नहीं रहा। क्योंकि, यह स्वतंत्रता ही दमन, उत्पीड़न/प्रक्षेपण, घोटालों और लीपापोती की संभावना को काफी हद तक कम कर देती है।
यहां छोड़ने पर दंड का अभाव है, और साथ ही बने रहने से मिलने वाले भव्य और आध्यात्मिक रूप से "मुक्तिदायक" लाभ का भी अभाव है। यानी, यहां हमने जिन अन्य समुदायों से मुलाकात की है, उनके विपरीत, फाइंडहॉर्न ने "स्वयं को बचाने" (समुदाय को एक कस्बे, फिर एक गांव और उसके बाद "प्रकाश के विशाल शहर" में विकसित करके) को "स्वयं को बचाने" से ऊपर रखा है। और जब हालात कठिन हो जाते हैं, तो व्यक्ति पहले वाले से दूर हट सकता है, जबकि दूसरे वाले से मुंह मोड़ना कहीं अधिक आसान है, क्योंकि इसमें व्यक्तिगत रूप से उसका कोई हित नहीं होता। आखिरकार, हाथ खड़े कर दुनिया को बर्बाद होने देना एक बात है; अवज्ञा या आध्यात्मिक मार्ग को त्यागकर "इस जीवनकाल में ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र अवसर" गंवा देना बिल्कुल अलग बात है।
फाइंडहॉर्न में ऊपर बताए गए सभी "गायब" तत्व आम तौर पर किसी भी "प्रामाणिक, आध्यात्मिक रूप से परिवर्तनकारी" आश्रम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि यह एक बंद समाज होता है जहाँ "वास्तव में गंभीर" शिष्य अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। विडंबना यह है कि फाइंडहॉर्न में इन्हीं चीजों की कमी ने ही संभवतः इसे (वर्तमान संकेतों के अनुसार) एक "सुरक्षित" वातावरण बना दिया है। (लेकिन इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए स्टीफन कास्त्रो की [1996] पुस्तक "फाइंडहॉर्न फाउंडेशन के भीतर पाखंड और असहमति" भी देखें।)
समुदाय का अब अपेक्षाकृत लोकतांत्रिक प्रबंधन—जिसमें प्रतिक्रिया और वास्तविक "नियंत्रण और संतुलन" शामिल हैं ताकि शासक अपने अधीन शासन करने वालों के प्रति जवाबदेह रहें—भी बहुत मददगार साबित हुआ है।
बेशक, वहाँ भी:
हमें उन लोगों से भी जानकारी मिली है जो उस परिसर में गए थे।
उन्होंने जो कुछ पढ़ा या सुना था, उसके जवाब में उन्होंने जो समुदाय बनाया,
लेकिन बाद में उन्हें पता चला कि वास्तविकता वैसी नहीं थी जैसी उन्होंने उम्मीद की थी।

अपेक्षित। इनमें से अधिकांश रिपोर्टों ने निराशा का संकेत दिया। 226 गुरुओं को दरकिनार करना

इन लोगों के मन में यह धारणा थी कि फाइंडहॉर्न जीवित नहीं था।
उन खूबसूरत आदर्शों तक जिनका इसने प्रचार किया...
एक युवक बारी-बारी से अंदर और बाहर रहता था।
लंदन में रहते हुए फाइंडहॉर्न में बस गए। अंततः, अपनी उम्मीदों से निराश होकर
फाइंडहॉर्न में अनुकूलन करने की क्षमता के बारे में उन्होंने हमें बताया कि भावनात्मक रूप से यह
यह लंदन से भी बदतर जंगल था (फाइंडहॉर्न, 1980)।
बहरहाल, यह सोचना लाज़मी है कि अगर बुज़ुर्ग पीटर कैडी ने तीन दशक पहले उस स्वीडिश लड़की के साथ संबंध बना लिया होता तो क्या हुआ होता। या फिर, अगर उन्हें खुद कोई स्पष्ट आंतरिक मार्गदर्शन मिला होता—जिससे वे अपनी सत्तावादी प्रवृत्ति के साथ-साथ एक गुरु के रूप में भी स्थापित हो जाते और दूसरों को "ईश्वर की इच्छा" बता पाते, खासकर उस युवा गोरी लड़की के संदर्भ में। दरअसल, उस स्थिति में, शायद आज उस जगह का कोई निशान नहीं बचता जहाँ कभी फाइंडहॉर्न स्थित था, और न ही कोई ऐसा कवि होता जो उस अवसर को अश्लील कविताओं में रचता। यानी, निम्नलिखित जैसी कविताएँ:
एक समय की बात है, कैडी नाम का एक स्कॉटिश व्यक्ति था।
एक लगभग भावुक क्रूर युवक
उसने एक युवा स्वीडिश व्यक्ति को देखा।
उसने कहा, "उसके पास वो सब कुछ है जिसकी मुझे जरूरत है।"
अब नौ महीने बाद वो पिता बनने वाले हैं।

अध्याय XXVI

... एक नन आश्रम में
(PARAMAHANSA YOGANANDA)

लगभग हर कोई उन तीन छोटे बंदरों से परिचित है-
ऐसी आकृतियाँ जो इस कहावत को दर्शाती हैं, "बुराई मत देखो, बुराई मत सुनो।"
किसी की बुराई मत करो।" मैं सकारात्मक दृष्टिकोण पर जोर देता हूँ: "देखो कि
जो अच्छा है, उसे सुनो, जो अच्छा है उसे बोलो,
अच्छा है। और जो अच्छा है उसे सूंघो, चखो और महसूस करो; सोचो
जो अच्छा है, उससे प्रेम करो। उसमें विराजमान रहो।
अच्छाई का महल, और आपकी यादें खूबसूरत होंगी-
महान सपनों के बगीचे में खिले हुए फूल (योगानंद, 1986)।
भविष्य में हमेशा के लिए, परमहंस योगानंद ... को पुनः याद किया जाएगा।
उन्हें भारत के सबसे महान राजदूतों में से एक माना जाता है।
नई दुनिया के लिए उच्च संस्कृति (डब्ल्यू. वाई. इवांस-वेंट्ज़, में)
[एसआरएफ, 1976]).

परमहंस योगानंद भारत के पहले योग गुरु थे जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग उत्तरी अमेरिका में बिताया।
1893 में हिमालयी सीमा के पास उत्तरपूर्वी भारत में जन्मे योगानंद ने अपने शुरुआती वर्षों में क्रिया योग का अभ्यास शुरू किया और सत्रह वर्ष की आयु में अपने गुरु श्री युक्तेश्वर से मिले।

एक दिव्य दृष्टि और युक्तेश्वर के निर्देशानुसार, योगानंद ने 1920 की शरद ऋतु में बोस्टन में धार्मिक उदारवादियों के सम्मेलन में बोलने का निमंत्रण स्वीकार किया। उस सफल शुरुआत के बाद वे अमेरिका में ही रहे और 1925 में लॉस एंजिल्स के माउंट वाशिंगटन के शिखर पर एक परित्यक्त पूर्व होटल में आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप (एसआरएफ) और उसके मुख्यालय की स्थापना की, जिसे अब "मदर सेंटर" के नाम से जाना जाता है। "सभी धर्मों के चर्च" के रूप में, एसआरएफ "सभी धर्मों के अंतर्निहित सत्य" को अपनाने का प्रयास करता है, जिसमें योग/हिंदू धर्म और ईसाई

धर्म पर विशेष जोर दिया जाता है। सदस्यों की संख्या गोपनीय रखी जाती है, लेकिन अनुमान के अनुसार वर्तमान में सक्रिय सदस्यों की संख्या 25,000 से 100,000 के बीच है।

उस उद्यमी युवा योगी ने 1925 से 1936 तक के वर्षों में पूरे अमेरिका के हॉलों में खचाखच भरी भीड़ को व्याख्यान दिए, और क्रिया योग के "पवित्र विज्ञान" के ज्ञान का प्रसार किया।

ध्यान की उन तकनीकों के भिन्न रूप को प्राप्त करने के माध्यमों के संबंध में, योगानंद ने अपनी (1998) आत्मकथा में विस्तार से बताया है:

सही तकनीक किसी अधिकृत व्यक्ति से सीखनी चाहिए।

आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप (योगोदा) के क्रियाबन (क्रिया योगी)

सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया)।

हालांकि, योगानंद के जीवित रहते हुए प्रकाशित तीन संस्करणों में से, इसी पुस्तक के पहले के संस्करणों में, इस बात पर बहुत कम प्रतिबंध लगाए गए थे कि कौन दीक्षा दे सकता है:

क्रिया योग की वास्तविक तकनीक किसी शिक्षक से ही सीखनी चाहिए।

Kriyaban or kriya yogi (Yogananda, 1946).

हाल ही में, एसआरएफ (रॉलिंसन, 1997 में) ने शिष्य की आध्यात्मिक प्रगति को प्रभावित करने में अपने विशेष गुरुओं की परंपरा के महत्व के संबंध में अपनी स्थिति स्पष्ट की:

कुछ लोग क्रिया योग का अभ्यास करते हैं और पूर्णतः संतुष्ट होकर सब कुछ भूल जाते हैं।

गुरुओं के बीच संबंध के बारे में—वे कभी भी ईश्वर तक नहीं पहुंच पाएंगे।

पाठक तब स्वयं विचार कर सकते हैं कि किसी संगठन के पास अपने संस्थापक की मृत्यु के बाद उनकी तकनीकों के प्रसार को स्वयं तक सीमित रखने के क्या संभावित कारण हो सकते हैं, जबकि उनके जीवनकाल में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया था। एसआरएफ का मत यह है कि योगानंद के निधन के बाद से उनके लेखन में किए गए सभी परिवर्तन इसी आधार पर किए गए हैं... एक ननरी को 229

यह दावा उनके जीवित रहते दिए गए निर्देशों पर आधारित है, और इसे केवल पाठ को

"स्पष्ट करने और पुनर्कथन करने" के लिए किया गया है। मैं स्वयं इस दावे को बिल्कुल भी विश्वसनीय नहीं मानता। वास्तव में, उनकी कविता "व्हिस्पर्स फ्रॉम एटर्निटी" का मरणोपरांत किया गया बेतुका विश्लेषण ही इस बात का प्रमाण है।
(देखें डकोटा, 1998)—क्रूर और अनावश्यक संपादन के अधीन होना जिसे कोई भी काव्यात्मक आत्मा कभी भी स्वीकार नहीं कर सकती—इस पर संदेह पैदा कर देगा।
बहरहाल, क्रिया योग तकनीक वास्तव में उतनी "गुप्त" नहीं है जितना कि एसआरएफ इसे प्रस्तुत करता है। बल्कि, क्रिया तक ले जाने वाली दोनों प्रारंभिक तकनीकें भारत में व्यापक रूप से जानी जाती हैं। इनमें से, "ओम" तकनीक मूल रूप से एक आंतरिक रूप से जपा जाने वाला मंत्र है, जबकि "होंग-साउ" तकनीक/मंत्र-
राधा की पुस्तक (1978) कुंडलिनी योग फॉर द वेस्ट के अध्याय 7 में क्रिया विधि दी गई है। (राधा स्वयं सच्चिदानंद के गुरु स्वामी शिवानंद की शिष्या थीं और उन्होंने कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में उसी परंपरा का एक आश्रम चलाया था।) क्रिया तकनीक के पहले चरण का अधिकांश भाग इसी पुस्तक में वर्णित है।
यह स्वयं उसी पुस्तक के अध्याय 9 में भी मौजूद है। योगानंद के प्रारंभिक "ऊर्जावानीकरण अभ्यास" भी काफी हद तक इसी प्रकार के हैं।
ब्रेनन (1987) द्वारा बाद में दिया गया।
विडंबना यह है कि उन तकनीकों की "गोपनीयता" के प्रति उनके स्पष्ट रूप से विपरीत दृष्टिकोण के बावजूद, शिवानंद का आश्रम और एसआरएफ लंबे समय से एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए हुए हैं।
स्वामी शिवानंद (1887-1963) ने डिवाइन लाइफ सोसाइटी की स्थापना के अलावा तीन सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनकी उच्च आध्यात्मिक स्थिति को देखते हुए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।
मैंने स्वयं ईश्वर को देखा है। मैंने नाम और रूप को नकार दिया है, और
जो शेष बचता है वह है अस्तित्व-ज्ञान-आनंद, और कुछ नहीं।
अन्यथा, मैं सर्वत्र ईश्वर को देखता हूँ। कोई पर्दा नहीं है। मैं एक हूँ।
कोई द्वैत नहीं है। मैं अपने आप में ही विश्राम पाता हूँ। मेरा आनंद असीम है।
विवरण। स्वप्नलोक चला गया। मैं अकेला ही विद्यमान हूँ (शिव-)
नंदा, 1958)।
लोग शिवानंद को शिव का अवतार, उनका साक्षात रूप मानते हैं-

(ज्ञान, 1980)।
स्वामीजी एक विलक्षण व्यक्तित्व थे। उन्हें एक "प्रतीक" के रूप में वर्णित किया गया था।
पवित्रता का," "धरती पर चलता-फिरता, बोलता हुआ ईश्वर" (अनंतना-
rayanan, 1970).
230 गुरुओं का पर्दाफाश

बेशक, कोई भी "चलते-फिरते, बोलते भगवान" अपने निराधार और विकृत विश्वासों का प्रचार किए बिना इस ग्रह पर नहीं आएगा:
स्वामी शिवानंद ने कहा है कि हर वह स्त्री जिसे कोई पुरुष
उसे अपने बिस्तर पर लुभाने वाली किसी न किसी जन्म में उसकी वैध पत्नी बनना ही होगा।
पत्नी (राधा, 1992)।
मेरे विचार में, ऋषिकेश के दिवंगत स्वामी शिवानंद ही थे।
हिंदू पुनर्जागरण का सबसे विकृत उत्पाद, सलाह दी गई
लोगों को अपनी "आध्यात्मिक डायरी" लिखने के लिए; और मौखिक निर्देश में-
उन्होंने भारतीय और पश्चिमी शिष्यों को अपने विचार लिखने को कहा।
वे कितनी बार हस्तमैथुन करते थे.... [या] जैसा कि एक पुरुष शिष्य ने बताया
मुझसे कहो, "हाथ का इस्तेमाल कितनी बार करते हो, उसकी एक सूची बनाओ।"
आनंद, और इसकी जाँच दोहरी बहीखाता पद्धति की तरह करें।
आपने कितनी बार हाथ का उपयोग त्यागा है" (भारती,
1976).
और लोग कहते हैं कि अकाउंटेंट को मौज-मस्ती करना नहीं आता!
इसी पुस्तक में कहीं और, स्वामी भारती—रामकृष्ण संप्रदाय के वे बेहद मुखर भिक्षु जिनसे हम पहले उनके कुछ सौम्य क्षणों में मिल चुके हैं—ने शिवानंद को एक "छद्म रहस्यवादी...मोटा और मुस्कुराता हुआ" बताया। (इसके विपरीत, महर्षि के बारे में भारती ने कहा: "मुझे इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि वे एक सच्चे रहस्यवादी हैं.... यदि महेश योगी और उनके शिष्यों द्वारा अपने लघु योग ('विश्व शांति' आदि के संबंध में) के लिए किए गए अतिरिक्त दावों को छोड़ दें, तो उनका उत्पाद

किसी भी अन्य योग अनुशासन के समान ही अच्छा होता।" तो, आप देख सकते हैं, वास्तव में कोई नहीं जानता कि क्या (यदि कुछ भी हो) वैध है और क्या नहीं, भले ही वे सभी जानने का दिखावा करते हों।)

दूसरों के प्रति करुणापूर्ण हित के लिए अपने स्वयं के शिक्षाप्रद क्रोध और पीड़ा को व्यक्त करते हुए, भारती (1976) ने विवेकानंद के बारे में एक तुलनीय राय प्रस्तुत की:

"चार प्रकार के योग" की धारणा पूरी तरह से और बहुत पहले से चली आ रही है-
स्वामी विवेकानंद के लिए किसी भी कम करने वाली परिस्थितियों को छोड़कर
राज-योग, कर्म- नामक चार खतरनाक छोटी पुस्तिकाएँ
योग, ज्ञान-योग और भक्ति-योग। [ये उपाधियाँ और शब्द]
"शाही," "सेवा," "ज्ञान" और "भक्तिपूर्ण" योग का संदर्भ लें।
क्रमशः।] ये बेहद भोले-भाले, बेहद संक्षिप्त उदाहरण हैं।
भारतीय साहित्य के अनुवादित अंशों को उन्होंने अपने लेखन में पुन: प्रस्तुत किया है।
अमेरिका और अन्य जगहों पर बातचीत...
... एक नन आश्रम के लिए 231

मुझे पूरा यकीन है कि विवेकानंद ने इससे कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचाया है।
रहस्यवादी ज्ञान के साधकों के लिए इससे भी अधिक अच्छा... विवेकन-
अंडा की राज योग की अवधारणा ... दोषपूर्ण है।

हालांकि, रहस्यवाद की समझ में भारती का स्वयं का योगदान महत्वहीन ही रहा है। रहस्यवाद चाहे जो भी हो—मनोविकार से लेकर भौतिक वास्तविकता से परे उच्चतर स्तरों की वैध अनुभूति तक—मेरी राय में, भारती के दृष्टिकोण में इसके समाहित होने की कोई ठोस संभावना नहीं है। यहां तक कि उनका यह आग्रह भी कि व्यक्ति और ब्रह्मांडीय आत्मा की "एकता" का रहस्यवादी "शून्य-अनुभव" केवल अस्थायी और क्षणिक ही हो सकता है, विल्बर के इस दावे से अपेक्षाकृत खंडित हो जाता है कि उन्होंने पांच साल तक लगातार एक स्वाद की अवस्था का अनुभव किया है।

दिलचस्प बात यह है कि भारती (1974) ने योगानंद को "नकली" माना और उन्हें टी. लोबसांग रामपा और जादूगर कार्लोस कास्टानेडा के साथ रखा। हालांकि, उन्होंने साथ ही साथ चोग्याम ट्रुंगपा को "प्रामाणिक तिब्बती बौद्ध धर्म" का शिक्षक माना, संभवतः

उस गुरु की "शिष्यों को निर्वस्त्र करने" की प्रवृत्ति के बावजूद। मैं इस दृष्टिकोण में कोई तर्क ढूंढ पाने का दावा नहीं करता। लेकिन फिर, भारती और उनके प्रशंसित, उबाऊ मित्र, हर्बर्ट वी. गुएन्थर के विपरीत, मैं कोई विद्वान नहीं हूँ। और वास्तव में, अपना जीवन स्वीकृत बकवास के ढेर की बारीकियों में विशेषज्ञ बनने में लगाना, और फिर उसी तरह की मूर्खता में विश्वास न करने वाले किसी भी व्यक्ति को बदनाम करना, मुझे जीवन बर्बाद करने के सबसे बेतुके तरीकों में से एक लगता है।
बहरहाल, परमहंस योगानंद—चाहे वे वास्तविक हों या नहीं—ने वर्षों बीतने के साथ धीरे-धीरे अपने करीबी शिष्यों का एक समूह बना लिया और इस प्रकार अपने स्वामी परंपरा में एक मठवासी संप्रदाय की शुरुआत की। ऐसी ही एक प्रारंभिक "प्रत्यक्ष शिष्या" फेय राइट ने 1930 के दशक के आरंभ में योगी का अनुसरण करना शुरू किया और अपनी किशोरावस्था के उत्तरार्ध में आश्रमों में प्रवेश किया। अब दया माता के नाम से जानी जाने वाली, वे समकालीन एसआरएफ संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, क्योंकि वे वर्तमान में सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप की आजीवन अध्यक्ष हैं।
देश भर में व्याख्यान देने के दौरों से सेवानिवृत्त होने के बाद, योगानंद ने 1940 के दशक का अधिकांश समय एनसिनिटास में अपने आश्रम में एकांतवास में बिताया—जो वहाँ के प्रसिद्ध "स्वामी पॉइंट" सर्फिंग बीच के निकट स्थित था। इसी वातावरण में उन्होंने अपनी आत्मकथा 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी' लिखी, जो आध्यात्मिकता पर लिखी गई पुस्तकों में एक सदाबहार बेस्टसेलर है और जिसे आम तौर पर बीसवीं शताब्दी की शीर्ष 100 आध्यात्मिक पुस्तकों में गिना जाता है।
232 गुरुओं का पर्दाफाश

[यह आत्मकथा] व्यापक रूप से एक क्लासिक परिचय के रूप में मानी जाती है-
योग और पूर्वी विचार के संदर्भ में (राम दास, 1990)।
आध्यात्मिक साहित्य में कुछ ही पुस्तकें परमहंस की पुस्तकों के समकक्ष हैं।
योगानंद की आत्मकथा। यह उन दुर्लभ कृतियों में से एक है।
ऐसी रचनाएँ जो एक ही बार पढ़ने से पाठक के दृष्टिकोण को बदल सकती हैं।
जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण। 1946 में इसके पहले प्रकाशन के बाद से, योग-
नंदा की आत्मकथा आज भी ज्ञान की खोज करने वालों को मंत्रमुग्ध करती है।

चमत्कारों, संतों और खगोलीय स्वर्ग की आकर्षक कहानियों के साथ-
एन्स (लेन, 1995)।
योगी की आत्मकथा को उपनिषद माना जाता है।
नया युग... हम भारत में आश्चर्य और आकर्षण के साथ देखते रहे हैं-
इस पुस्तक की लोकप्रियता का राष्ट्रव्यापी प्रसार हुआ है।
भारत के संतों और दर्शन के बारे में। हमें बहुत संतुष्टि मिली है।
गुटबंदी और गर्व कि भारत के सना के अमर अमृत-
सत्य के शाश्वत नियम, तन धर्म, इसमें संग्रहित हैं।
योगी की आत्मकथा का स्वर्णिम प्याला (घोष, 1980 में)।
भारत और उसकी संस्कृति के बारे में पश्चिम को इतना विभाजित करने वाली कोई और पुस्तक नहीं थी।
यह वाला। जिन लोगों को यह पसंद आया, उनका जुनून इससे कहीं आगे तक गया।
शब्दों में। जिन लोगों को यह एक अविश्वसनीय बेमेल मिश्रण लगा, उनके लिए
भारतीय विचार के बारे में उनके मन में जो उच्च विचार थे
अचानक अस्थिर प्रतीत होने लगा (आर्या, 2004)।
दिलचस्प बात यह है कि हालांकि योगानंद के लेखन को केवल एक पाप के योग्य माना जाता है-
विल्बर (1983) के जीवन कार्य में उद्धृत किए गए उद्धरणों के अनुसार, आदि दा (1995) और एंड्रयू कोहेन दोनों ही अपने आध्यात्मिक जीवन के आरंभ में आत्मकथा से बहुत प्रभावित थे। वास्तव में, कोहेन ने अपनी (1992) पुस्तक 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ एन अवेकनिंग' का शीर्षक स्पष्ट रूप से योगानंद की प्रारंभिक जीवन कहानी से लिया है।
आत्मकथा में एसआरएफ गुरुओं की परंपरा के विभिन्न सदस्यों और योगानंद के अन्य परिचितों द्वारा चमत्कारिक उपचार, उत्तोलन, द्विपद उपस्थिति और मृतकों को जीवित करने के कई दावे शामिल हैं।
हालांकि, इस तरह के चमत्कारों के घटित होने की संभावना पर कम ध्यान देते हुए, स्विस मनोवैज्ञानिक कार्ल जंग - जिन्होंने स्वयं भारत में समय बिताया था - ने सामान्य रूप से योग के अध्ययन की प्रशंसा की थी (इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग से अलग, जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से हतोत्साहित किया था)।

नई चीजों के आकर्षण और मोहकपन के अलावा,
आधा-अधूरा समझा गया, योग के लिए अच्छे कारण हैं... एक ननरी के लिए 233

कई अनुयायी। यह नियंत्रणीय पूर्व-संभाव्यता की संभावना प्रदान करता है।
अनुभव और इस प्रकार "तथ्यों" की वैज्ञानिक आवश्यकता को पूरा करता है; और,
इसके अलावा, इसकी व्यापकता और गहराई के कारण, इसकी आदरणीय
युग, उसका सिद्धांत और विधि, जिसमें हर चरण शामिल है
जीवन, यह अकल्पनीय संभावनाओं का वादा करता है (योगानंद में,
1946).
"अकल्पनीय संभावनाएँ" वाक्यांश को तब से एसआरएफ द्वारा अपने चर्चों और अन्य जगहों पर वितरित की जाने वाली एक परिचयात्मक पुस्तिका के शीर्षक के रूप में अपनाया गया है। हालाँकि, विशेष रूप से योगानंद के लेखन के प्रति जंग का दृष्टिकोण विपणन विभाग के सपने जैसा बिल्कुल नहीं था:
परमहंस योगानंद की योगी की आत्मकथा... समर्थक-
इसने जंग के व्यंग्य को जगाया क्योंकि इसका नरम आदर्शवाद...
इसमें विनाशकारी जनसंख्या वृद्धि के लिए एक भी व्यावहारिक "उपचार" नहीं था।
विस्फोट, यातायात जाम और भुखमरी का खतरा,
[एक किताब] जो विटामिनों से इतनी भरपूर है कि उसमें सफेदी, कार्बोहाइड्रेट आदि मौजूद हैं।
और इस तरह की तुच्छ बातें अनावश्यक हो जाती हैं.... हैप्पी इन-
उसे!" (पेन, 1998)।
हालांकि, जंग स्वयं एक दिलचस्प अध्ययन का विषय है:
प्रतिभाशाली विचारक कार्ल जंग का अवसरवादी समर्थन
नाज़ियों के बारे में पर्याप्त दस्तावेज़ मौजूद हैं। 1933 में वे राष्ट्रपति बने।
न्यू जर्मन सोसाइटी ऑफ साइकोथेरेपी की। इसके तुरंत बाद-
इसके बाद, उन्होंने निम्नलिखित घृणित बकवास लिखी (शायद ही कभी उल्लेख किया गया हो-
(आजकल उनके प्रशंसकों द्वारा इसका उल्लेख किया जाता है):
यहूदियों में महिलाओं के साथ यह समानता पाई जाती है: शारीरिक रूप से कमजोर

होने के कारण उन्हें प्रतिद्वंद्वी की रक्षा में मौजूद कमियों पर निशाना साधना चाहिए... आर्यन [sic] अवचेतन में यहूदी की तुलना में उच्च क्षमता होती है (अस्केनासी, 1978)।

बहरहाल, आत्मकथा स्वयं "अमेरिकी संत" और विपुल बागवानी विशेषज्ञ लूथर बरबैंक (1849-1926) को समर्पित है। योगानंद ने 1924 में बरबैंक से मिलना शुरू किया, और बरबैंक ने बदले में परमहंस के शिक्षा संबंधी विचारों का समर्थन किया। (बरबैंक आलू का नाम लूथर के नाम पर रखा गया है; हालांकि, कैलिफोर्निया का बरबैंक शहर उनके नाम पर नहीं है।) दिलचस्प बात यह है कि बरबैंक की माँ उस लड़की (मैरी सॉयर) के साथ स्कूल गई थीं, जिनके अनुभवों पर "मैरी हैड अ लिटिल लैम्ब" कविता आधारित है।

234 गुरुओं का पर्दाफाश

योगानंद (1946; इटैलिक्स जोड़े गए) ने लूथर के प्रति अपनी सकारात्मक भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त किया:

बर्बैंक का हृदय असीम गहरा था, वह लंबे समय से परिचित था।
विनम्रता, धैर्य, त्याग के साथ... जिस नम्रता से
उन्होंने अपनी वैज्ञानिक प्रसिद्धि को जिस तरह से प्रदर्शित किया, उससे मुझे बार-बार याद आता था कि...
वे पेड़ जो पकते फलों के भार से नीचे झुक जाते हैं; यह
वह बंजर वृक्ष जो खोखले घमंड में अपना सिर ऊंचा उठाता है।

हालाँकि, उस शानदार मूल्यांकन को देखते हुए, बरबैंक के चरित्र का वह वर्णन जो एक "विनम्र, शालीन संत" से अपेक्षित बातों के विपरीत है, अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। इस प्रकार:

स्वयं द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता के विपरीत-
दूसरों से स्वीकृति पाने की उनकी चाहत ही उनका आत्मसम्मान था। हालाँकि वह ऐसा करते
ऐसी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कोई बेईमानी न करें (क्योंकि ऐसा करने से
(जिससे आत्मनिंदा हुई), उसने इसे उत्सुकतापूर्वक स्वीकार कर लिया।
उसे उसका हक ही मिलना चाहिए। "ऐसे कई उल्लेखनीय उदाहरण हैं," कहते हैं।

[सह-बागवानी विशेषज्ञ और लेखक जॉर्ज] शुल, “जिसमें
इन दो प्रमुख लक्षणों के संयोजन से एक उत्पाद बनता है।
एक पल में सबसे गहरी विनम्रता और अगले ही पल...
सबसे स्पष्ट आत्म-प्रशंसा” (ड्रायर, 1975)।
दरअसल, 1908 तक, बरबैंक इस घमंडी निष्कर्ष पर पहुँच गए थे कि, डार्विन को उनके द्वारा उगाए गए पौधों की संख्या में पीछे छोड़ देने के कारण, वे "इसलिए"
"वनस्पति जीवन पर अब तक के सबसे महान विशेषज्ञ।"
ऐसी स्थिति में, उसे लगा कि वह दूसरों की तुलना में अधिक योग्य है।
क्या कोई और विकास के विषय पर अपनी राय दे सकता है (ड्रायर,
1975).
हालांकि, इसी विषय पर: बरबैंक केवल अर्जित लक्षणों की वंशानुगति में विश्वास करते थे, और वास्तव में सोवियत संघ के पाखंडी आनुवंशिकीविद् लिसेंको द्वारा उन्हें "सर्वश्रेष्ठ जीवविज्ञानी" में से एक माना जाता था। स्टालिन के ऐसे अवैज्ञानिक शिष्य के साथ उस दुर्भाग्यपूर्ण जुड़ाव के बावजूद, शुल (ड्रेयर, 1975 में) ने लूथर के दावों के बारे में सामान्य रूप से यह राय दी:
[बर्बैंक] का “अतिशयोक्ति गुणांक” लगभग दस था...
उसके सभी आंकड़ों को इस संख्या से विभाजित किया जाना चाहिए ताकि एक अनुमानित मान प्राप्त हो सके।
सत्य का अनुमान।
... एक नन आश्रम के लिए 235

बेशक, अगर कोई व्यक्ति किसी महान योग गुरु या इसी तरह के किसी व्यक्ति द्वारा "विनम्र, शांत संत" की उपाधि प्राप्त किए बिना उपरोक्त जैसे लक्षण प्रदर्शित करता है, तो ऐसे व्यवहार को अहंकार की पराकाष्ठा माना जाएगा। वास्तव में, एक दक्षिण अफ्रीकी ग्राहक - एच. ई. वी. पिकस्टोन - जो 1904 में बरबैंक आए थे और उनके साथ पूरा दिन बिताया था, ने यह कहा था:
मुझे उनके व्यक्तित्व से निराशा हुई... मुझे वह भी पसंद नहीं आया।
वह काफी अहंकारी है... मुझे नहीं लगता कि उसे माना जा सकता है।
किसी भी दृष्टिकोण से महान व्यक्ति (ड्रेयर में, 1975)।

बहरहाल, बरबैंक ने न केवल यह सुझाव दिया कि उन्होंने अपने पौधों को "प्रेम के विचार" भेजकर उनके विकास में सहायता की थी, बल्कि स्वयं को मानसिक शक्तियों वाला भी मानते थे। वास्तव में, उन्होंने "हाथों से स्पर्श करके उपचार करने की क्षमता होने पर जोर दिया और ऐसे कई मामलों का हवाला दिया जिनमें उन्होंने इसका प्रयोग किया था" (ड्रेयर, 1975)। ये "उपचार" मनुष्यों और बीमार पौधों दोनों को दिए गए थे।

बर्बैंक पचास वर्षों के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप आठ लाख से एक हजार नई पौधों की किस्मों को पेश करने के लिए एक बार फिर प्रसिद्ध हुआ।

जिसमें एक "कांटे रहित" कैक्टस भी शामिल है। योगानंद (1986) लूथर द्वारा उस पौधे के विकास का एक विवरण देते हैं:

"पौधों की बेहतर नस्ल सुधार का रहस्य, वैज्ञानिक पहलुओं के अलावा,

ज्ञान ही प्रेम है।" लूथर बरबैंक ने इस ज्ञान को व्यक्त किया था।

मैं उनके सांता रोजा स्थित बगीचे में उनके बगल-बगल चल रहा था। हम रुक गए।

खाने योग्य कैक्टस के पौधों के पास।

“जब मैं ‘रीढ़विहीन’ बनाने के लिए प्रयोग कर रहा था

उन्होंने आगे कहा, “कैक्टस के पौधों से मैं अक्सर बात करता था ताकि उनसे एक तरह का संबंध बन सके।

प्रेम की तरंग। मैं तुमसे कहती, ‘तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है।’

उन्हें। ‘तुम्हें अपने रक्षात्मक कांटों की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।’

तुम।’ धीरे-धीरे रेगिस्तान का उपयोगी पौधा उभर कर सामने आया।

कांटे रहित किस्म।"

मैं इस चमत्कार को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया।

हालाँकि, ड्रेयर (1975) से हमें यह पता चलता है:

[बर्बैंक] ने बड़ी लगन से कैक्टस की कई किस्में एकत्र की थीं।

मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका और अन्य देश, अंततः एक देश

एक ऐसा पौधा मिला जिस पर सामान्य रूप से पाए जाने वाले डंठलों पर कांटे नहीं थे।

और एक अन्य जिसमें पत्तियों पर स्पिक्यूल्स नहीं थे। ये चार-

संकरण द्वारा एक ही पौधे में सभी विशेषताओं का संयोजन किया गया।

कई बार पार करने के बाद, और एक रीढ़विहीन कैक्टस
...का निर्माण हुआ। कभी-कभी 236 STRIPPING THE GURUS पर एक रीढ़ की हड्डी अभी भी दिखाई देती थी।

तनों.... बरबैंक ने अपने कैक की हानिरहितता का प्रदर्शन किया-
उसने अपने गाल को पैड पर धीरे से रगड़कर उसे शांत किया। यह एक
यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। लेकिन यह कोई चमत्कार नहीं था।
* * *
योगानंद द्वारा अपने शिष्यों को दिए गए अनुशासन के संबंध में: दुर्गा माता (1992) बताती हैं कि 1948 में एक बार, जब योगानंद समाधि की अत्यंत उच्च अवस्था में थे, तो उन्होंने दिव्य माता के दर्शन समझकर उनसे ज़ोर से बात की। तब माता ने योगानंद की ही आवाज़ में उत्तर दिया... उपस्थित और अनुपस्थित शिष्यों की छोटी-छोटी कमियों को गिनाते हुए, योगानंद की इस विनती को खारिज किया कि उन्हें दंडित न किया जाए।
बेशक, अगर योगानंद सचमुच सृष्टि के मूल में विद्यमान ब्रह्मांडीय स्त्री शक्ति से संवाद कर रहे थे, तो उस आलोचना में शायद ही कोई गलती निकाली जा सकती है। आख़िरकार, ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह नहीं किया जा सकता।
अगर....
स्वयं भगवान का उन लोगों की आलोचना करने में समय बिताना जो वहां मौजूद भी नहीं थे, और वहां मौजूद लोगों को स्वार्थ के मामूली प्रदर्शनों के लिए दंडित करने की धमकी देना, कुछ हद तक विचित्र प्रतीत होता है। वास्तव में, यह "भगवान" से अपेक्षित अपेक्षा की तुलना में योगानंद के स्वयं के व्यक्तित्व के साथ अधिक मेल खाता है।
[शेली ट्रिमर] ने [योगानंद] के साथ लगभग एक वर्ष बिताया।
एसआरएफ का मुख्यालय लॉस एंजिल्स में था, लेकिन फिर वह वहां से चला गया... अल-
हालांकि योग के प्रति उनका स्नेह और सम्मान अभी भी बरकरार है।
नंदा, वह अपनी कमजोरियों को भी स्वीकार करते हैं। "उन्हें यह पसंद था कि..."
महिलाओं को आदेश देने का अधिकार—आखिरकार वह एक हिंदू था.... उसके पास

था
वह हिंसक स्वभाव का था और थोड़ा अभिमानी भी था" (रॉलिंसन,
1997).
* * *
यह सर्वविदित है कि योगानंद अपने समय के तकनीकी नवाचारों, जिनमें कचरा निपटान प्रणाली भी शामिल है, से बहुत प्रसन्न होते थे। हालांकि, विज्ञान की प्रगति में उनके कथित योगदानों को कम ही सराहा जाता है।
वॉल्टर्स (2002) के अनुसार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी:
मैं कहूंगा कि परमहंस योगानंद एक पैगंबर थे।
नए युग के लिए। मठ? हाँ, लेकिन उससे कहीं अधिक...
सार्वभौमिक उत्थान की खोज में उन्होंने निजी तौर पर बात की।
मेरे साथ उनकी बातचीत, उनके द्वारा प्रेरित कुछ आविष्कारों के बारे में... एक ननरी को 237

या एक मामले में भारत और अन्य जगहों पर प्रचलित प्रथाओं के बीच पाया गया-
जहां... उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने ही कवर का कॉन्सेप्ट पेश किया था।
शौचालय की सीटों पर।
इस तरह के दावे पर प्रतिक्रिया देना आसान नहीं है। न ही यह तय करना आसान है कि इसे एलीन कैडी, भगवान नित्यानंद या दलाई लामा जैसे लोगों की अश्लील प्रेरणाओं की तुलना में कहाँ रखा जाए।
शायद इतना कहना ही काफी होगा, "जय गुरु। जय।"
* * *
ज़ाहिर है, लॉस एंजिल्स में वर्षों तक किसी भी गुरु का काम बिना कुछ "प्रसिद्ध" शिष्यों को इकट्ठा किए संभव नहीं था। योगानंद के प्रसिद्ध अनुयायियों और परिचितों में ग्रेटा गार्बो (जो हॉलीवुड के रामकृष्ण-विवेकानंद वेदांत केंद्र में भी अक्सर जाती थीं) और अभिनेता डेनिस वीवर (गनस्मोक) शामिल हैं। डेनिस वीवर मालिबू के पास, लॉस एंजिल्स के सनसेट बुलेवार्ड और प्रशांत महासागर के संगम पर स्थित एसआरएफ लेक श्राइन मंदिर में मासिक प्रवचन देते थे।
उसी उद्यान जैसे वातावरण में स्थित एक पत्थर के ताबूत में महात्मा गांधी की अस्थियों

का वह अंश रखा है जो भारत से बाहर मौजूद एकमात्र अंश है। (योगानंद ने अपनी आत्मकथा में दावा किया है कि उन्होंने 1935 में गांधीजी को क्रिया योग की दीक्षा दी थी। हालांकि, इस बात पर संदेह करने के कई कारण हैं कि क्या महात्मा गांधी ने वास्तव में इसके बाद नियमित रूप से इस तकनीक का अभ्यास किया था।) वास्तव में, किसी दिवंगत आत्मा की अस्थियों को प्रदर्शन के लिए रखना हिंदू धर्म के विरुद्ध है, जबकि उन्हें जल निकायों में विसर्जित करना उचित है: "जब अस्थियों को भूमि पर रखा जाता है, तो यह मान्यता है कि आत्मा पृथ्वी पर ही फंसी रह जाती है और कभी 'परलोक' में नहीं जाती।" या, दूसरे शब्दों में, मृतक की अस्थियों को निकालना किसी जीवित व्यक्ति के शरीर से अंग निकालने के समान माना जाता है (स्ट्रेली, 1987)।
फिर भी, सुपरट्रैम्प के रोजर हॉजसन ने एक गीत लिखा था—1977 के एल्बम 'इवन इन द क्विटेस्ट मोमेंट्स' का "बाबाजी", जो योगानंद की शिक्षाओं से प्रेरित था। उस गीत के बोल हिमालयी गुरु से प्रेरित थे, जिनके कहने पर क्रिया योग का ज्ञान योगानंद के माध्यम से विश्व तक पहुँचा। हॉजसन ने उत्तरी कैलिफोर्निया में योगानंद के एक प्रत्यक्ष शिष्य जे. डोनाल्ड वाल्टर्स, जिन्हें क्रिया-नंद के नाम से भी जाना जाता है, के "आनंद" आश्रम में भी समय बिताया। उनकी बहन कैरोलिन भी उसी आश्रम में रहती थीं। दरअसल, रोजर की मुलाकात अपनी भावी पत्नी करुणा से तब हुई जब करुणा उसी आश्रम में एक तंबू में रह रही थीं।

जॉर्ज हैरिसन, हालांकि स्वयं योगानंद के शिष्य नहीं थे, फिर भी एसआरएफ के "लेक श्राइन" वीडियो के लिए उनका साक्षात्कार लिया गया था, जिसमें उन्होंने श्री युक्तेश्वर की (1977) पुस्तक, द होली साइंस से उद्धरण दिए थे। (रवि शंकर भी उसी फिल्म में थे। शंकर ने 1966 में जॉर्ज को योगानंद के लेखन से परिचित कराया था।) हैरिसन के कहने पर, एसआरएफ के चार गुरुओं - बाबाजी, लाहिड़ी महाशय, श्री युक्तेश्वर और योगानंद - की तस्वीरें बीटल्स के एल्बम 'सार्जेंट पेप्पर' के कवर कोलाज में शामिल की गईं। (यीशु को इसलिए शामिल नहीं किया गया ताकि लेनन के "बीटल्स, यीशु मसीह से अधिक लोकप्रिय हैं" वाले बयान से अभी भी आहत जनता की धार्मिक भावनाओं को और अधिक न भड़काया जा सके।) हैरिसन के एकल कार्यों में योगानंद के संदर्भों में "डियर वन", "लाइफ इटसेल्फ" और "फिश ऑन द सैंड" जैसे गीत

शामिल हैं। हैरिसन के परिवार ने 2002 की शुरुआत में उनके एकल गीत "माई स्वीट लॉर्ड" के पुन: रिलीज से प्राप्त अमेरिकी आय को एसआरएफ को दान कर दिया। मैडोना—जी हां, वही मैडोना—ने भी ऐसा ही कहा है।

योगानंद की आत्मकथा के प्रति लोगों का सकारात्मक दृष्टिकोण है। पामेला एंडरसन (2005) स्वयं परमहंस (1986) की डिवाइन रोमांस की बहुत बड़ी प्रशंसक रही हैं। और प्रतिभाशाली हास्य अभिनेता रॉबिन विलियम्स—जो जॉर्ज हैरिसन और क्रिस्टोफर रीव दोनों के मित्र थे और जूलियार्ड विश्वविद्यालय में क्रिस्टोफर रीव के साथ एक ही कमरे में रहते थे—ने वास्तव में एसआरएफ लेसन्स श्रृंखला के कम से कम कुछ भाग की सदस्यता ली थी। कम से कम, यह जानकारी मुझे एक पूर्व डेडहेड भिक्षु से मिली, जिनसे मेरी मुलाकात एसआरएफ आश्रमों में अपने अप्रिय प्रवास के दौरान हुई थी, जिसका विस्तृत वर्णन आगे किया जाएगा।

हैरिसन के एक अन्य मित्र गैरी "ड्रीम वीवर" राइट के भी एसआरएफ सदस्य होने की अफवाह है।

रॉक एंड रोल के बादशाह को भी क्रिया योग के मार्ग से प्रेरणा मिली:

एल्विस को गुरु परमहंस योगानंद की रचनाएँ बहुत पसंद थीं।

सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप (क्लाउड) के हिंदू संस्थापक,

2000).

योगानंद के निधन के बाद, प्रेस्ली—जिन्हें हम हिलोलयअवतार या "रॉक एंड रोल का अवतार" कह सकते हैं—ने बारह वर्षों की अवधि में एसआरएफ की दया माता से मिलने के लिए कई फोन कॉल किए और यात्राएं कीं। (जाहिर है, दया माता उन्हें अपनी दिवंगत मां की याद दिलाती थीं, जैसा कि थियोसोफिकल सोसाइटी की मशहूर अव्यवस्थित और बेहद मोटी मैडम ब्लावत्स्की भी करती थीं।) वास्तव में, ग्रेसलैंड में स्थित मेडिटेशन गार्डन—जहां एल्विस को दफनाया गया—के बारे में कहा जाता है कि यह एसआरएफ के लेक श्राइन से प्रेरित था (मेसन, 2003)। एल्विस ने वास्तव में "इस आध्यात्मिक खोज को इतनी गंभीरता से लिया कि उन्होंने ... एक ननरी में जाने पर विचार किया 239

अपना शेष जीवन भिक्षु बनकर इसमें समर्पित कर दिया" (हाजदू,

2003).

विडंबना यह है कि जैसा कि हमने देखा है, यदि प्रेस्ली ने ऐसा कदम उठाया होता, तो जरूरी नहीं था कि इससे उनके यौन जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता।

एल्विस अपनी गुलाबी रंग की 1955 कैडिलैक के लिए मशहूर थे। और हैरानी की बात यह है कि, ऐसी खबरें आई हैं—हालांकि बाद में इसके (संभवतः दोबारा रंगे गए?) रंग को लेकर विवाद भी हुआ—कि दया माता लॉस एंजिल्स के माउंट वाशिंगटन स्थित एसआरएफ मदर सेंटर तक जाने के लिए आमतौर पर एक "विंटेज गुलाबी कैडिलैक" में पंद्रह मिनट का सफर तय करती हैं। (यह सफर पास के ही एक करोड़ डॉलर के "उपनगरीय हिमालय में स्थित महल" से है, जो सिएरा माद्रे में 200 साउथ कैनन एवेन्यू पर है। कहा जाता है कि यह घर 1966 में दिवंगत अरबपति तंबाकू व्यवसायी के वारिस द्वारा उपहार में दिया गया था।)

एस, डोरिस ड्यूक [रसेल, 2001]।

हालांकि, वर्तमान लेखक के पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जिससे यह साबित हो सके कि वे दोनों कारें वास्तव में एक ही हैं। दरअसल, अगर वे एक ही वाहन न हों तो शायद बेहतर ही होगा। क्योंकि, यह कल्पना करना कितना हास्यास्पद होगा कि कुछ ननें एक ऐसी कार में घूम रही हैं जो "अच्छी भावनाओं" से भरी है, और जिसकी पिछली सीट पर राजा ने अपनी जवानी के दिनों में लगभग हर रात एक अलग युवती के साथ संबंध बनाए होंगे।

* * *

किसी भी संत द्वारा अपनी दिव्यता के "प्रमाण" का एक बड़ा हिस्सा अनिवार्य रूप से उनके द्वारा किए गए कथित चमत्कारों से आता है, भले ही वे साथ ही साथ उन्हें महज "संकेत और आश्चर्य" कहकर महत्वहीन बना दें। इस प्रकार:

[योगानंद] ने कहा कि उन्हें आग पर चलना और आगे बढ़ना आता था।

अनिश्चित काल तक बिना खाए, लेकिन ईश्वर नहीं चाहता था कि वह ऐसा करे।

ऐसे कारनामे करने के लिए, क्योंकि उनका मिशन सिखाना और लाना था।

क्रिया योग और प्रेम के माध्यम से आत्माओं को ईश्वर के पास वापस लाना (माता, 1992)।

हालाँकि, "आग पर चलना" भौतिकी के ज्ञात नियमों के आधार पर पूरी तरह से स्पष्ट है। वास्तव में, वैज्ञानिकों के अनुसार, इसके लिए किसी उन्नत "मन की शक्ति" जैसी मानसिक तैयारी या ऐसी किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती है और न ही इससे

कोई लाभ होता है। दरअसल, 1930 के दशक में ही - योगानंद के जीवनकाल के दौरान - मानसिक अनुसंधान परिषद ने "रिपोर्ट जारी की थी जिसमें कहा गया था कि धार्मिक आस्था और अलौकिक शक्तियाँ अग्नि पर चलने से संबंधित नहीं हैं।" इसके बजाय, उन्होंने इस प्रयास की सफलता का श्रेय "जलने वाली सतह की कम तापीय चालकता" को दिया।

लकड़ी, और संपर्क होने का अपेक्षाकृत कम समय-
गर्म कोयलों और प्रतिभागी के पैरों के बीच कुत्ते" (निस्बेट, 2000)।
फिजी, हवाई और जापान में, इस स्टंट का एक भिन्न रूप किया जाता है।
लावा पत्थर पर निर्मित, जो [गर्म कोयले की तरह] बहुत ही
कम चालकता और कम विशिष्ट ऊष्मा, और यह इसके समान है
अंतरिक्ष की बाहरी सतह पर प्रयुक्त "हीट शील्ड" सिरेमिक
शटल (रैंडी, 1995)।
चास आर. डार्लिंग द्वारा किए गए एक वैज्ञानिक अनुसंधान
और नेचर पत्रिका में 28 सितंबर, 1935 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, इसमें दबाने की प्रक्रिया शामिल थी।
आग पर थर्मल जंक्शन को रुक-रुक कर इस प्रकार लगाना ताकि सीमित किया जा सके-
प्रत्येक पैर के संपर्क की अवधि और अंतराल का वर्णन करें।
प्रत्येक चरण के बीच। [ए] अलग-अलग परीक्षणों की संख्या ने दिखाया
जंक्शन में 15-20 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि—यह इस बात का निर्णायक प्रमाण है कि
कलाकार के पैर इतने गर्म नहीं होंगे कि उनमें छाले पड़ जाएं।
घटित होना (एडवर्ड्स, 1994)।
अधिक स्पष्टीकरण के लिए, कैरोल (2004सी), निक्सन (2004) देखें।
कजेर्नस्मो (1997) और विली (2002)।
फिर भी, "इसे घर पर आजमाने की कोशिश न करें।"
योगानंद द्वारा स्वयं के लिए दावा की गई दिव्य चिकित्सा के संदर्भ में, यह रोचक तथ्य है कि उन्होंने प्रसिद्ध कैथोलिक स्टिग्मैटिस्ट थेरेसे न्यूमैन के लिए भी इसी प्रकार की

प्रतिभा का समर्थन किया था। वास्तव में, उन्होंने सूक्ष्म ऊर्जाओं के कथित चक्रिक अंतर्ग्रहण में थेरेसे न्यूमैन को भी अपने समान ही एक तुलनीय आधार प्रदान किया था।

योगी के न्यूमैन की प्रामाणिकता और "ईश्वर के प्रकाश में" जीने के आध्यात्मिक साधनों के बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान के समर्थन में, हमें पता चलता है कि थेरेसे के स्थानीय जर्मन बिशप

1927 में एक निगरानी अभियान शुरू किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप कथित तौर पर

उसके दावों के पक्ष में निर्णायक सबूत हैं, लेकिन अवलोकन-

जांच केवल पंद्रह दिनों के लिए थी। थेरेसे के मूत्र की निगरानी की गई।

इस दौरान और अगले पखवाड़े तक दर्द बना रहा।

परिणामों का अध्ययन... अवलोकन अवधि के लिए अपेक्षित परिणाम के अनुरूप है।

वेशन (निकेल, 1998)।

तथापि-

अवलोकन के बाद के आंकड़े [विल्सन, 1988 देखें] संकेत देते थे

"सामान्य स्थिति में वापसी" का अर्थ है, जो यह दर्शाता है कि एक समय थेरेसे ऐसी नहीं थी।

अब चौबीसों घंटे निगरानी में रहने के बजाय, वह वापस चली गई।

सामान्य भोजन और पेय पदार्थों के सेवन के लिए।" संदेह को और बढ़ाना... एक ननरी के लिए 241

थेरेसे द्वारा आगे की निगरानी से गुजरने से इनकार करना भी एक कारण था।

लांस (निकेल, 1998)।

न्यूमैन द्वारा दावा किए गए कलंक की स्थिति केवल मामूली रूप से बेहतर है,

योगानंद (1946) द्वारा इसकी वैधता के बारे में समान निश्चितता के बावजूद:

थेरेसे ने मुझे एक छोटा, चौकोर, अभी-अभी ठीक हुआ घाव दिखाया।

उसने अपनी दोनों हथेलियों पर, प्रत्येक हथेली के पिछले हिस्से पर, इशारा किया।

एक छोटा, अर्धचंद्राकार घाव, जो अभी-अभी ठीक हुआ है।

घाव सीधे हाथ के आर-पार हो गया। [यह अवश्य ही एक

यह योगानंद की ओर से मात्र एक अनुमान है, क्योंकि उन्होंने ऐसा नहीं किया होगा।
भौतिक रूप से यह सत्यापित किया गया कि घाव सामने से लगातार था।
किसी चीज को उसमें से गुजारकर वापस लाना। यह दृश्य देखकर
मुझे बड़े चौकोर लोहे के कीलों की स्पष्ट याद है।
अर्धचंद्राकार सिरों वाले, जिनका उपयोग अभी भी पूर्वी देशों में किया जाता है।
हालांकि, कम विश्वासशील अन्य लोगों ने अतिरिक्त, अपमानजनक जानकारी भी दी है:
[ए] प्रोफेसर मार्टिनी ने थेरेसे की निगरानी की।
न्यूमैन ने देखा कि उसके शरीर से खून बहेगा।
घाव केवल उन्हीं अवसरों पर लगते थे जब उन्हें इसके लिए राजी किया जाता था।
कमरे से बाहर निकल जाओ, मानो किसी बात को "छिपाना" ज़रूरी हो।
अवलोकन" [अर्थात, सतही घावों को मैन्युअल रूप से पहुँचाने में]
खुद पर]। उन्होंने आगे कहा: "इसी कारण से मैंने..."
मुझे बिस्तर के पीछे उसकी बार-बार की जाने वाली हरकतें पसंद थीं।
erings"....
[कलंक का आकार बदल गया] गोल से आयताकार में
समय के साथ, संभवतः जैसे-जैसे उसे रोमन का असली स्वरूप पता चला
नाखून (निकेल, 2001)।
परा मनोविज्ञान के एक अन्य उतने ही प्रभावशाली प्रयास में,
योगानंद (1946) ने भारत में एक "इत्र संत" के साथ अपनी मुलाकात का वर्णन किया, जिनके बारे में माना जाता था कि वे मांग पर सुगंध प्रकट करने की शक्ति रखते थे।
मैं गंधा बाबा से कुछ ही फीट दूर था; मेरे अलावा वहां कोई और नहीं था।
मेरे शरीर को छूने के लिए काफी करीब। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया, जो
योगी ने स्पर्श नहीं किया।
आपको कौन सा परफ्यूम चाहिए?
"गुलाब।"
"ऐसा हो इसलिए।"

मुझे बेहद आश्चर्य हुआ, गुलाब की मनमोहक खुशबू
मेरी हथेली के बीचोंबीच से एक तेज़ सुगंध निकली।
हालांकि, दिवंगत जादूगर मिलबोर्न क्रिस्टोफर (1975) ने परमहंस के कथित "चमत्कारी" अनुभव के लिए एक बहुत ही सरल व्याख्या प्रस्तुत की:
योगानंद, जिन्हें यह नहीं पता था कि यह उपलब्धि कैसे हासिल हुई-
यह कहना गलत था कि योगी ने अपना हाथ नहीं छुआ था।
इससे गुलाब की सुगंध आती थी। इस प्रस्तुति में
कलाकार चुपके से अनुरोधित गोली को तोड़ देता है
मोम में लिपटा इत्र, नाखून के नीचे छिपा हुआ] जैसे ही
जैसे किसी सुगंध का नाम रखा जाता है; इत्र उसके अंगूठे के तलवे को गीला कर देता है।
दर्शक को हाथ आगे बढ़ाने का निर्देश देते हुए, कलाकार
वह हाथ बढ़ाकर उसे हथेली पर अंगूठे से पकड़ लेता है और
उसकी उंगलियां पीठ पर हैं। ऐसा करते हुए कलाकार कहता है,
“आप अपना हाथ हथेली नीचे की ओर करके रखें। मैं आपको स्पर्श नहीं करूँगा।
दर्शक को शब्द याद रहते हैं, क्रिया नहीं।
कलाकार। कलाकार कुछ फीट दूर चला जाता है। जबकि
कुछ दूरी पर खड़े होकर वह दर्शक को अपना हाथ घुमाने के लिए कहता है।
हथेली ऊपर की ओर। जब तक दर्शक इसे न देखें, तब तक इसकी गंध महसूस नहीं होती।
टोर का हाथ घूमता है और सुगंध ऊपर उठकर उसकी नाक तक पहुँचती है।
ट्रिल्स....
एक कुशल शोमैन दर्जन भर छोटी-छोटी गोलियों की मदद से दर्शकों को धोखा दे सकता है।
एक संशयवादी अन्वेषक को यह विश्वास दिलाना कि "कोई भी" इत्र बनाया जा सकता है-
पदार्थीकृत।
हालांकि, योगानंद स्वयं भी इस तरह के "जादुई करतबों" के पीछे के तरीकों से

अनजान नहीं रहे होंगे। क्योंकि, उनके द्वारा "योगिक शक्तियों" के निम्नलिखित प्रदर्शन पर विचार करें:

[योगानंद] ने अपनी बात रोककर पूछा कि क्या कोई दस्तावेज़ उपलब्ध है-
दर्शकों में से एक व्यक्ति खड़ा हुआ और स्वामीजी ने उससे पूछा।
मंच पर आने के लिए। उन्होंने डॉक्टर से अनुरोध किया, "मुझे ले जाइए।"
"नब्ज़ देखो और बताओ तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है।" डॉक्टर ने उसकी कलाई छूकर देखा।
पहले तो वह उलझन में दिख रहा था, फिर आश्चर्यचकित होकर बोला, "यहाँ कुछ नहीं है।"
“नाड़ी,” उसने उत्तर दिया। स्वामीजी ने तब उसे नाड़ी जाँचने के लिए कहा।
दूसरी कलाई पर। डॉक्टर के चेहरे के भाव बदल गए।
आश्चर्य से अविश्वास तक। उन्होंने कहा, “स्वामी योगानंद, यह
यह असंभव है। आपकी नाड़ी अविश्वसनीय गति से धड़क रही है।
उसने तुरंत दूसरी तरफ फिर से कोशिश की और कहा, "यह तरफ है..."
सामान्य।" वह मंच से नीचे उतरकर दर्शकों के बीच आ गया।
उसने अपना सिर हिलाया और बुदबुदाते हुए कहा, "असंभव, असंभव।"
(चार्ल्टन, 1990)।
... एक नन आश्रम के लिए 243

और फिर भी, जैसा कि पूर्वी भारतीय तर्कवादी बसवा प्रेमानंद ने कहा था
(2005) ने उल्लेख किया है:
कलाई पर नाड़ी का रुकना, हाथ रोककर किया जाता है।
हाथों पर नींबू या एक छोटा सा टुकड़ा रखने से हाथों में रक्त का प्रवाह बढ़ता है।
बगल में गेंद या लुढ़का हुआ रूमाल रखकर दबाना।
डॉक्टर भ्रम की स्थिति में दिल की धड़कन की जांच नहीं करते हैं, लेकिन
नाड़ी की जांच करें और पुष्टि करें कि नाड़ी रुक गई है।
एसआरएफ पाठों (योगानंद, 1984) में, हमें निम्नलिखित आध्यात्मिक दावे के बारे में और अधिक जानकारी मिलती है:
कुछ दुर्लभ मामलों में... एक ऐसा व्यक्ति जिसने बहुत ही पशुवत जीवन जिया हो

किसी जीव का अस्तित्व किसी जानवर के शरीर में समाहित हो जाता है, ताकि वह कुछ सीख सके।
यह पाठ "सोचने वाले कुत्तों" और "सोचने वाले घोड़ों" की व्याख्या करता है।
"es" नामक वे विशेषताएं हैं जिन्होंने इनका परीक्षण करने वाले वैज्ञानिकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया है।
इन पाठों का संकलन और संपादन योगानंद के प्रत्यक्ष शिष्यों द्वारा उनकी देखरेख में किया गया था। इसलिए, यह कहना मुश्किल है कि उपरोक्त अंतर्दृष्टि के लिए परमहंस स्वयं ही जिम्मेदार थे या इसका श्रेय वर्तमान निदेशक मंडल के सदस्यों (या क्रियानंद, जिन्होंने संपादन कार्य भी किया था) को दिया जाना चाहिए। हालांकि, दोनों ही स्थितियों में, वैज्ञानिकों को दी गई उपरोक्त "व्याख्या" - चाहे वे भ्रमित हों या नहीं - पूरी तरह से गलत है।
बीसवीं शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध "विचारशील घोड़ों" में लेडी वंडर और क्लेवर हैंस शामिल थे।
विद्वान प्रोफेसरों को पूरा विश्वास था कि हंस इस समस्या का समाधान निकाल सकता है।
गणितीय समस्याओं का उनका अपना समाधान था और उन्हें बेहतर समझ थी।
अधिकांश चौदह वर्षीय बच्चों की तुलना में विश्व मामलों का ज्ञान।
रेन (क्रिस्टोफर, 1970)।
लेडी वंडर को 1927 में न्यूयॉर्क वर्ल्ड द्वारा समान रूप से सम्मानित किया गया था, जिसमें कथित तौर पर "मन पढ़ने, भविष्य की भविष्यवाणी करने और चीनी भाषा में बातचीत करने" की क्षमता का दावा किया गया था। फिर भी, 1956 में मिलबोर्न क्रिस्टोफर द्वारा उनके दावों का निर्णायक रूप से खंडन करने से यह बात नहीं रोक पाई:
एक परीक्षण के तौर पर, क्रिस्टोफर ने लेडी की प्रशिक्षक, श्रीमती क्लाउडिया को यह काम सौंपा।
फोंडा, एक झूठा नाम, "जॉन बैंक्स".... जब क्रिस्टोफर ने उप-
इसके बाद घोड़ी ने लेडी से पूछा, "मेरा नाम क्या है?"
उसने घोड़े के बड़े "टाइपराइटर" के लीवर को विनम्रतापूर्वक धक्का दिया।
er”] से B-A-N-K-S की स्पेलिंग तैयार करना....

श्रीमती फोंडा ने अपनी प्रशिक्षण छड़ी को "हल्का सा हिलाया"।
जब भी लेडी का सिर सही अक्षर पर होता था (निकेल,
2002).
क्रिस्टोफर द्वारा किए गए आगे के प्रयोगों से पता चला कि फोंडा स्वयं भी मानसिक विशेषज्ञों की "पेंसिल रीडिंग" नामक तरकीब का धोखे से उपयोग कर रही थीं—वे पेंसिल के मुक्त सिरे की गति का अवलोकन करके यह पता लगाती थीं कि प्रश्नकर्ता ने कौन सा नंबर लिखा है। फिर वे लेडी वंडर को उस जानकारी के आधार पर संकेत देती थीं, जिससे घोड़ा "टेलीपैथी" का इतना अच्छा प्रदर्शन कर पाता था कि भोले-भाले परा मनोवैज्ञानिक जे. बी. राइन को भी मूर्ख बना देता था।
बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, ऑस्कर पफंगस्ट द्वारा किए गए परीक्षण में क्लेवर हैंस का प्रदर्शन भी कुछ खास अच्छा नहीं रहा था:
पफंगस्ट के अध्ययन से पता चला कि घोड़ा सही उत्तर दे सकता है।
यदि प्रश्नकर्ता को उत्तर पता हो तो ही उत्तर दें। जब फंगस्ट शील्ड-
जानवर की आँखों के सामने, खुर स्थिर रहा। यह वास्तव में...
इस बिंदु पर यह मान लेना उचित होगा कि [हंस का मालिक] संकेत दे रहा था-
हंस अवचेतन रूप से। आगे के अध्ययन ने संकेतों को खारिज कर दिया।
स्पर्श या ध्वनि। अब फ्फंगस्ट ने अपने अवलोकन को इस पर केंद्रित किया।
प्रश्नकर्ता। उसने पाया कि हंस ने तब पैर पटकना शुरू किया जब
प्रश्नकर्ता खुर को देखने के लिए थोड़ा सा आगे झुका।
हरकत में। हंस तब रुक गया जब उस आदमी ने जरा सा भी आराम किया।
शन....
फिर फंगस्ट ने खुद घोड़े की भूमिका निभाई। उन्होंने अपने साथ रैप किया।
जब दोस्तों ने सवाल पूछे तो उन्होंने अपना दाहिना हाथ इस्तेमाल किया। तेईस में से पच्चीस प्रश्नकर्ताओं ने शुरू करने और रोकने का संकेत दिया।
बिना एहसास किए। फंगस्ट के जवाब भी उतने ही हैरान करने वाले थे।
उन्हें वैसे ही जैसे घोड़े के थे (क्रिस्टोफर, 1970)।
“अब इतने चतुर नहीं रहे, है ना, हंस?” और न ही इतने चतुर परमहंस। क्योंकि,

यद्यपि पिछले कुछ शताब्दियों में “सोचने वाले” कुत्ते, सूअर, बकरियाँ और हंस प्रदर्शित किए गए हैं, फिर भी उनके इन सभी प्रसिद्ध व्यवहारों के लिए सामान्य प्रशिक्षण और सचेत या अचेतन संकेत ही जिम्मेदार हैं। इसलिए, पुनर्जन्म का अस्तित्व हो या न हो, इस बात पर विश्वास करने का कोई तर्कसंगत कारण नहीं है कि इसका ऐसी “सोच” से कोई संबंध है।
इसके अलावा, ध्यान दें कि क्लेवर हैंस के प्रश्नकर्ताओं द्वारा अचेतन रूप से दिए गए संकेतों के समान संकेत तुलकुओं की खोज में भी मौजूद और प्रासंगिक होंगे। क्योंकि, ये भी बच्चे ही हैं जिनसे वस्तुओं के एक समूह में से उनके "पिछले जन्म" की वस्तुओं की पहचान करने के लिए कहा जाता है... जहाँ कमरे में अन्य लोग... एक ननरी 245

बच्चे को पता होता है कि सही उत्तर क्या है। एक समझदार या चतुर बच्चा, भले ही वह कुछ ही वर्षों का हो, ऐसे अनजाने संकेतों को आसानी से समझ सकता है, ठीक वैसे ही जैसे एक अपेक्षाकृत कम समझदार घोड़ा समझ सकता है। लीजिए! एक "अवतार" प्रकट होता है, जिसके "पहचान" की कहानी में बहुत जल्दी ही कुछ और "चमत्कारी" घटनाएँ जुड़ जाती हैं। और इस तरह बिल्कुल सामान्य इंद्रधनुष, संयोगवश देखे गए सपने और दूध से भरी भूली हुई बाल्टियाँ भी "संकेत" बन जाती हैं।
बेशक, ऐसी खोजें आम तौर पर किसी लामा के किसी खास घर या किसी खास दिशा में रहने वाले किसी खास परिवार के सपने से प्रेरित होती हैं। लेकिन यहाँ भी, "खोजो और सांख्यिकीय रूप से तुम पाओगे।" यह बात मूल घटनाओं के विवरणों में बाद में किए गए "पुनर्लेखन" के बिना भी सच है, जो सपने की कुछ खास विशेषताओं पर ज़ोर देते हैं। क्योंकि, यह अपरिहार्य है कि सपने के वे तत्व जो सपने के समय किसी अन्य तत्व से अधिक महत्वपूर्ण नहीं थे, एक आशाजनक परिवार के मिलने पर कथित महत्व ग्रहण कर लेते हैं, जो सपने में प्रकट हुए कुछ चुनिंदा "तथ्यों" से मेल खाता है, लेकिन अन्य तथ्यों से पूरी तरह मेल नहीं खाता - जैसा कि हमेशा होता है। उतनी ही निश्चितता के साथ, उन "कमियों" का उल्लेख बाद में "पहचान" की कहानी में नहीं किया जाएगा।
इस परिप्रेक्ष्य में देखने पर समकालीन और अतीत के तुलकुओं और दलाई लामाओं के यौन और हिंसक दुराचार की रिपोर्टें बहुत हद तक समझ में आती हैं। आख़िरकार, ये “पुनर्जन्मित संत” भी साधारण ही हैं, जिन्हें बचपन से ही असाधारण परिस्थितियों में

रखा गया था। और एक सामान्य व्यक्ति भी, जैसा कि वे सार्वजनिक रूप से करते हैं, “पवित्रता का ढोंग” कर सकता है, यदि उसे केवल यही सिखाया गया हो। (कृष्णमूर्ति का उदाहरण लें। योगानंद को भी बचपन से ही एक “आध्यात्मिक शक्ति” बनने का प्रशिक्षण दिया गया था, जिसका उद्देश्य दूसरों को ईश्वर तक पहुँचाना था।)

* * *

योगानंद (क्रियानंद, 1974 में) ने 1950 के दशक के आरंभ में अपने निधन से पहले भविष्य के लिए अनेक भविष्यवाणियाँ की थीं। इनमें अमेरिका में सरकारी हस्तक्षेप के विरुद्ध एक संभावित "क्रांति"; विश्व शक्ति के रूप में इंग्लैंड का अंत; और यह भविष्यवाणी शामिल थी कि चीन अंततः जापान को अपने में समाहित कर लेगा। योगी ने आगे 1970 के दशक के आसपास एक तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की थी, जिसका उद्देश्य "स्वतंत्र विश्व के अधिकांश भाग" में साम्यवाद फैलाना था। इसके बाद बीसवीं शताब्दी के "अंतिम दशक" में एक चौथा ऐसा युद्ध होगा। यह संघर्ष यूरोप को तबाह करने वाला था, और...246 गुरुओं का सार उजागर करना

दिवंगत (साम्यवादी) रूस पर विजय प्राप्त करके, अमेरिका को विजयी बनाकर सैकड़ों वर्षों तक शांति के एक नए युग की शुरुआत की।

इसके अलावा:

एक भयानक आर्थिक मंदी आने वाली है, जो पहले से कहीं ज्यादा बुरी होगी।

अंतिम बाला!....

अगली शताब्दी में बोस्टन में उष्णकटिबंधीय जलवायु होगी।

और वहां के लोग भूरे रंग की त्वचा वाले होंगे (क्रियानंद में)।

1974).

हमें देखना होगा कि वैश्विक तापवृद्धि के चलते भविष्य में बोस्टन की जलवायु का क्या हाल होता है।

बहरहाल, योगानंद के विद्रोही शिष्य क्रियानंद द्वारा संरक्षित वह पुस्तिका, जिसमें उपरोक्त सभी अत्यंत गलत भविष्यवाणियाँ दर्ज थीं, अब स्वाभाविक रूप से अनुपलब्ध है। (उपरोक्त भविष्यवाणियाँ केवल उस पुस्तिका में परमहंस की सबसे गलत भविष्यवाणियाँ ही नहीं हैं, बल्कि उनकी भविष्यवाणियों का संक्षिप्त सारांश हैं। यदि उसमें कोई अस्पष्ट और सही भविष्यवाणियाँ होतीं, तो मैं उन्हें सहर्ष यहाँ शामिल

कर लेता। लेकिन ऐसी कोई भविष्यवाणी नहीं है।)

* * *

योगानंद ने स्वयं दावा किया था कि वे अपने पिछले जन्म में लगभग 1500 ईसा पूर्व स्टोनहेंज में रहे थे, और उन्होंने कहा था कि विंस्टन चर्चिल नेपोलियन का पुनर्जन्म थे। (हालांकि, चर्चिल [1874-1965] का जीवनकाल अरबिंदो के जीवनकाल के साथ मेल खाता था, और अरबिंदो ने भी स्वयं को नेपोलियन का पुनर्जन्म बताया था।) योगानंद के अनुसार, हिटलर सिकंदर महान थे। इसी क्रम में, क्रियानंद (1977) परमहंस के इस कथन का उल्लेख करते हैं कि बेनिटो मुसोलिनी मार्क एंथोनी थे; कैसर विल्हेम जूलियस सीज़र थे; स्टालिन चंगेज खान थे; चार्ल्स लिंडबर्ग अब्राहम लिंकन थे; और थेरेसा न्यूमैन मैरी मैग्डलीन थीं। (न्यूमैन की मृत्यु 1962 में हुई थी; रजनीश के विवेक, जो इसी पुनर्जन्म का दावा करते हैं, का जन्म इससे पहले हुआ था; आदि।)

एसआरएफ गुरुओं में, उसी स्रोत के अनुसार, लाहिड़ी महाशय राजा जनक और कवि कबीर दोनों थे। इसी प्रकार, बा-बाजी (अरबिंदो की तरह) को कृष्ण का पुनर्जन्म माना जाता था—और योगानंद स्वयं भगवद गीता के अर्जुन, कृष्ण के सबसे प्रिय शिष्य थे। जैसा कि उन्होंने स्वयं इसके कुछ अंशों की व्याख्या की:

[राजसी जनकानंद-जेम्स जे. लिन, योगानंद के सबसे अधिक
उन्नत पुरुष शिष्य—भगवद गीता के शिष्यों में से एक था।
... एक नन आश्रम के लिए 247

जुड़वा भाई, जिनमें से एक नकुला था, जो सकारात्मक सोच वाला था। वह मेरा सबसे प्यारा भाई था।
और मैं उसे किसी और से ज़्यादा प्यार करता था। मैं उसका गुरु भी था।
तब भी। कृष्ण मेरे गुरु थे और बाबा जी, कृष्ण ही हैं,
फिर भी मेरे गुरु, श्री युक्तेश्वरजी बा के लिए मेरे परोक्ष गुरु थे।
बैज (माटा में, 1992)।

योगानंद ने आगे कहा कि वे स्वयं कुछ सौ वर्षों में पुनर्जन्म लेंगे, "केवल पीछे बैठकर ध्यान करने के लिए।"

एसआरएफ परंपरा के सभी गुरुओं (अर्थात कृष्ण, यीशु, बाबाजी, लाहिड़ी महाशय

और श्री युक्तेश्वर) को अवतार माना जाता है। युक्तेश्वर को असीसी के संत फ्रांसिस का पुनर्जन्म भी माना जाता है।
“हे प्रभु,” मैंने एक दिन उनके रेगिस्तान में गुरु (अर्थात योगानंद) से पूछा।
पीछे हटते हुए, "क्या आप एक अवतार हैं?"
उन्होंने शांत और सरल लहजे में उत्तर दिया, “इस महत्व की रचना...”
इस रुख की शुरुआत ऐसे ही किसी व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए” (क्रियानंद, 1979).
वास्तव में, योगानंद ने एसआरएफ और क्रिया योग के बारे में अक्सर कहा था, "यह कार्य ईश्वर की एक विशेष कृपा है" (क्रियानंद, 1979)। उन्होंने आगे भविष्यवाणी की कि यह आने वाली सहस्राब्दियों में दुनिया भर में "जंगल की आग की तरह" फैल जाएगा, इस हद तक कि "लाखों लोग आएंगे।"
जैसा कि अपेक्षित था, यीशु के साथ भी एक कथित संबंध है:
"बाबाजी, लाहिड़ी महाशय, और श्री युक्तेश्वर," [योगानंद]
घोषणा की गई, “वे तीन ज्ञानी पुरुष थे जो दर्शन करने आए थे...”
चरनी में शिशु ईसा मसीह” (क्रियानंद, 1979)।
अन्य लोगों (जैसे, बर्क, 1994) ने सुझाव दिया है कि योगानंद पहले जॉन द बिलव्ड (यानी, यीशु के प्रेरित, जॉन) भी थे।
योगानंद ने स्वयं कई बार दावा किया था कि वे विलियम द कॉन्करर का पुनर्जन्म हैं। विलियम द कॉन्करर, नॉर्मंडी के ड्यूक रॉबर्ट प्रथम और एक चमड़ा व्यापारी की बेटी के नाजायज पुत्र थे, और उन्हें विलियम द बास्टर्ड के नाम से भी जाना जाता था। वास्तव में, उनके बारे में यह ख्याति थी कि वे मात्र अपने स्पर्श से ही स्क्रॉफ़ुला (एक प्रकार का तपेदिक) को ठीक कर सकते थे।
बाद के वर्षों में योगानंद ने मुझे बताया कि उन्होंने मुझे क्यों बुलाया था।
उनका “विशालकाय पुनरागमन।” योगानंद अपने पिछले जन्म में थे।
विलियम द कॉन्करर।
248 गुरुओं का पर्दाफाश

मैंने एक सपने में राजा के रूप में हेस्टिंग्स की लड़ाई का अनुभव किया।
विलियम ने इंग्लैंड पर विजय प्राप्त की। मैं इस युद्ध में उसके साथ था।

और उनका कद इतना बड़ा था कि मैं उनकी आंखों में सीधे देख सकता था।
जब वह अपने घोड़े पर बैठा था, तब मैं उसके बगल में खड़ा था।
उसने एक विशालकाय युद्ध कुल्हाड़ी चलाई जिससे वास्तव में किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ।
उसके व्यक्ति के पास आओ (पॉलसेन, 1984)।
हालांकि: कंधे पर चौदह हाथ की ऊंचाई वाला एक छोटा सा युद्ध घोड़ा भी, जिस पर लगभग छह फुट लंबा विलियम बैठा हो, तो खड़े हुए एक "विशालकाय" व्यक्ति की ऊंचाई लगभग साढ़े आठ फुट होनी चाहिए, ताकि उनकी आंखें एक ही स्तर पर हों।
योगानंद (1986) आगे कहते हैं:
कई लोगों ने मुझे पिछले जन्म के बारे में बात करते हुए सुना है।
मैं कई वर्षों तक इंग्लैंड में रहा। उस दौरान के अनुभवों से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ।
जीवन मेरे मन में स्पष्ट रूप से उभर आया। कुछ खास बातें थीं।
लंदन टावर के बारे में [एक ऐतिहासिक किला, मूल रूप से एक
युद्ध के बाद विलियम द कॉन्करर द्वारा निर्मित शाही महल
हेस्टिंग्स के, और आज क्राउन ज्वेल्स प्रदर्शित कर रहे हैं] कि मैं
मुझे अच्छी तरह याद था, और जब मैं 1935 में वहां गया तो मैंने देखा
कि वे स्थान ठीक वैसे ही थे जैसे मैंने उन्हें अंदर से देखा था।
या, जैसा कि क्रियानंद/वाल्टर्स (2002) ने बताया है:
मास्टर ने दया से कहा था कि वह उनकी बेटियों में से एक है।
जब वह विलियम द कॉन्करर थे। कोई भी इस भावना से खुद को रोक नहीं सकता था-
दया माता में एक विशेष प्रकार का राजसी गुण था,
साथ ही उसकी बहन वर्जीनिया के बारे में भी, जो अब यह नाम धारण करती है।
आनंदा माता, जो गुरु से भी घनिष्ठ रूप से संबंधित थीं।
उस जीवनकाल के दौरान। मुझे विश्वास हो गया था, हालाँकि गुरु के पास
उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया कि मैं दया का सबसे छोटा भाई था, मास-
उस अवतार में टेर का पुत्र।
योगानंद ने दुर्गा माता के एक भाई के बारे में आगे कहा:
वह पिछले जन्म में मेरे साथ था। अगर आपको याद हो, जब

इंग्लैंड में उतरते ही विलियम द कॉन्करर पर हमला हुआ, जो कि उन लोगों में से एक था, जिन पर हमला हुआ था।
उसके आदमियों [अर्थात, वर्तमान भाई] ने विलियम से कहा, "यह पतझड़ एक बुरा शगुन, चलो वापस मुड़ते हैं" (माटा, 1992)।
हालांकि, विलियम स्वयं उस "सर्वव्यापी दिव्य प्रेम" से कुछ कम ही प्रदर्शित करते प्रतीत होते हैं, जिसका श्रेय बाद में योगानंद को दिया गया है:
... एक नन आश्रम के लिए 249

जब विलियम अपनी शुरुआती बीसियों में थे, तब उन्होंने काउंट से पूछा
फ्लैंडर्स के बाल्डविन पंचम ने अपनी बेटी मटिल्डा से विवाह करने के लिए
विवाह। [मटिल्डा की लंबाई मात्र 4' 2" थी, यानी आधी।]
पॉलसेन के कथित विशालकाय अवतार के बारे में।] लेकिन मटिल्डा थी
वह पहले से ही ब्रिहट्रिक नाम के एक अंग्रेज से प्यार करती थी।
कथित तौर पर उसने घोषणा की थी कि वह नन बनना पसंद करेगी।
एक नाजायज संतान की पत्नी होने से भी ज्यादा, यही बात विलियम को इतना गुस्सा दिला रही थी।
उसने एक दिन चर्च से निकलते समय सड़क पर उस पर हमला कर दिया।
उसने उसे थप्पड़ मारा, उसके कपड़े फाड़ दिए, उसे जमीन पर पटक दिया।
और चले गए (रॉयल्टी, 2003)।
विलियम और मटिल्डा वास्तव में दूर के चचेरे भाई-बहन थे, जिसके कारण पोप ने उनके भावी विवाह पर अनाचार का आरोप लगाते हुए आपत्ति जताई। वास्तव में, पोप ने "सुखद जोड़े" और नॉर्मंडी के सभी लोगों को कई वर्षों के लिए बहिष्कृत कर दिया; उन्होंने केवल विलियम द्वारा दो नए मठों के निर्माण के वादे पर ही अपनी आपत्ति वापस ली।
बाद के वर्षों में, और भी बड़ी विजयों की खोज में,
विलियम ने नॉर्मंडी में एक विशाल सेना एकत्रित की, और
उनके पास बहुत सारे आदमी और पर्याप्त परिवहन-जहाज थे। उस दिन
वह किले से निकलकर अपने जहाजों की ओर गया और उन पर सवार हो गया।
उसका घोड़ा, उसकी पत्नी उसके पास आई और उससे बात करना चाहती थी।

लेकिन जब उसने उसे देखा तो उसने अपनी एड़ी से उस पर प्रहार किया, और
उसने अपने कांटे उसकी छाती में इतनी गहराई तक गाड़ दिए कि वह वहीं गिरकर मर गई;
और अर्ल अपने जहाजों पर सवार होकर अपने जहाजों के साथ चला गया।
इंग्लैंड की ओर (स्टर्लसन, 1997)।
वह राजनीतिक विरोध को दबाने में निर्दयी था।
दरअसल, वह इतना निर्दयी था कि उसने 'होने' की प्रथा शुरू कर दी।
1076 में इंग्लैंड की ओर प्रस्थान (सिल्वरमैन, 2003)।
हालांकि, निष्पक्ष रूप से कहें तो, विलियम बी. वाल्थियोफ (पहला सैक्सन जिसका सिर कलम किया गया, जबकि उसके आसपास के सभी लोगों के सिर सुरक्षित थे) के साथ किए गए अपने व्यवहार को लेकर अपराधबोध से ग्रस्त थे, जब तक कि उनकी अपनी मृत्यु नहीं हो गई।
एक दशक बाद मृत्यु" (बीबीसी, 2003)। और यह उस व्यक्ति की ओर से था जिसे अपराधबोध महसूस करने के लिए बहुत कुछ था:
विलियम को सोने से बहुत प्यार था... उसे शिकार का भी बहुत शौक था।
और उसने क्रूर कानूनों द्वारा अपने शिकार की रक्षा की, जिसने जानवरों को
पुरुषों से अधिक मूल्यवान (वॉकर, 1968)।
और कभी-कभी, जब वे युद्ध के मूड में होते हैं:
250 गुरुओं का पर्दाफाश

एलेनकॉन कस्बे के छब्बीस दुर्भाग्यशाली नागरिक
उन्हें कतार में खड़ा किया गया और उनके हाथ-पैर आंशिक रूप से काट दिए गए।
प्रतिशोध के लिए, आंशिक रूप से गैरीसन को डराने के लिए। बर्बरता
सफल रहा। विलियम को शायद ही कभी उस हद तक जाने की नौबत आती थी।
फिर से क्रोध (वॉकर, 1968)।
"कभी-कभार"? "कभी-कभार" का मतलब कितनी बार होता है?
अत्यधिक मोटापे से ग्रस्त उस दुष्ट व्यक्ति का अंत भी बड़े ही दुखद तरीके से हुआ। दरअसल, मंटेस की लड़ाई में फ्रांसीसियों से लड़ते हुए घोड़े पर सवार विलियम की आंतें लोहे की काठी से टकराने के कारण बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं। इस चोट से

आंतरिक संक्रमण फैल गया और पेरिटोनिटिस (पेट की सूजन) हो गई, जिसके परिणामस्वरूप साठ वर्ष की आयु में 1087 में पांच सप्ताह के भीतर धीरे-धीरे उसकी मृत्यु हो गई।

अंतिम संस्कार के दौरान, शोक मनाने वालों को पास में लगी आग बुझाने के लिए उनके ताबूत को तेज़ धूप में छोड़ना पड़ा। उस गर्मी से विलियम की मवाद और मल से भरी आंतों की सूजन बढ़ गई। इसके अलावा, विलियम को हमेशा के लिए जिस ताबूत में रखा जाना था, वह दुर्भाग्यवश पूर्व राजा की पूरी ऊंचाई के लिए बहुत छोटा बना था।

विलियम को पत्थर के बने उस सुनियोजित स्थान में जबरदस्ती दफनाने की कोशिश में, अति उत्साही अंतिम संस्कार कर्मियों ने अंततः उसके फूले हुए पेट पर इतना दबाव डाला कि शरीर फट गया। इस गलती के कारण उसके अंतिम संस्कार के वस्त्र मवाद से लथपथ हो गए, जिससे सेंट स्टीफन के मठ में दुर्गंध फैल गई और मतली और गर्मी से परेशान शोक संतप्त लोग चर्च के दरवाजों की ओर भागने लगे।

इसके बाद उन्हें तुरंत दफना दिया गया और शांति से विश्राम करने दिया गया... 1522 तक, जब शव को कब्र से निकाला गया, उसकी जांच की गई और फिर से दफना दिया गया। उस समय से, उसे 1562 तक अकेला छोड़ दिया गया, जब [कैल्विनवादी] ह्यूगनोट्स ने उसे खोदकर निकाला और उसकी हड्डियों को चारों ओर फेंक दिया।

आंगन" (सिल्वरमैन, 2003)। इस प्रक्रिया में, उन्होंने मकबरे को चिह्नित करने वाले सोने, चांदी और कीमती रत्नों से बने स्मारक को नष्ट कर दिया।

केवल एक ही जांघ की हड्डी बची थी, जिसे संरक्षित कर लिया गया था।

1642 में एक नए स्मारक के नीचे पुनः दफनाया गया। लेकिन यह भी

फ्रांसीसी क्रांति के दौरान नष्ट हो गया (ग्राउट, 2003)।

शायद प्रासंगिक कर्म इतिहास से पूरी तरह अवगत न होते हुए, एसआरएफ ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में योगानंद के शरीर को स्थानांतरित करने की योजना बनाई। अर्थात्, उनका इरादा इसे फॉरेस्ट लॉन (ग्लेनडेल, कैलिफोर्निया) कब्रिस्तान से, जहाँ उनकी मृत्यु के बाद से यह रखा हुआ था—होपलोंग कैसिडी की कब्र के ठीक बगल में —एक ननरी में स्थानांतरित करने का था।

लॉस एंजिल्स में माउंट वाशिंगटन के ऊपर नियोजित तीर्थस्थल (रसेल,
1999).
सभी संबंधित पक्षों के लिए संभवतः सबसे अच्छा विकल्प माने जाने वाली इस योजना को बाद में जनता के तीव्र विरोध के कारण रद्द कर दिया गया।
विलियम द कॉन्करर के रूप में अपने जीवन के अलावा, योगानंद ने विलियम शेक्सपियर का पुनर्जन्म होने का भी दावा किया था। वास्तव में, उन दोनों के चेहरे में कुछ हद तक समानता है, जैसे परमहंस और विलियम द कॉन्करर के कथित प्रतिरूपों में होती है। और योगानंद की 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी' निस्संदेह एक कुशल लेखक की रचना है—चाहे कोई इसकी कहानियों को तथ्यात्मक माने या काल्पनिक। इसके अलावा, योगानंद (1982) ने स्पष्ट रूप से अपने अनुयायियों को शेक्सपियर का विशेष रूप से अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया।
शेक्सपियर और अन्य क्लासिक रचनाओं को पढ़ें, और उनके उपयुक्त अंशों का अध्ययन करें।
रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान जैसे विषयों पर व्यावहारिक पुस्तकों से लेकर
शरीर क्रिया विज्ञान, प्राच्य और पश्चिमी दर्शन का इतिहास, com-
तुलनात्मक धर्म, नैतिकता और मनोविज्ञान।
बेशक, चूंकि योगानंद ने कथित तौर पर अपने पिछले जीवन में विलियम शेक्सपियर के सभी नाटक स्वयं लिखे थे, इसलिए उन्हीं कलाकृतियों में निहित निम्नलिखित प्रसिद्ध अश्लील पहलुओं में से कोई भी उन्हें आश्चर्यचकित नहीं कर सकता था:
• ओथेलो में, कैसियो की प्रेमिका (पत्नी के अलावा)
ओथेलो स्वयं (डेसडेमोना सहित) वेश्या बियांका है।
• पेरिकल्स के महत्वपूर्ण भाग एक के अंदर और आसपास होते हैं
वेश्यालय
• द टेमिंग ऑफ द श्रू में ग्रीमियो केट को एक के रूप में संदर्भित करता है।
एक वेश्या को रिझाने के बजाय, उसे सड़कों पर घसीटने की पेशकश करके, जो कि वेश्याओं के लिए एक दंड है, उसे बहलाने का प्रयास किया जाता है। इसी नाटक के द्वितीय अंक के शुरुआती "प्रलोभन दृश्य" में, पेटुचियो केट की "पूंछ" में अपनी जीभ होने की बात करता है।
शेक्सपियर की बोलचाल की भाषा में, 'टेल' शब्द का प्रयोग लगभग उतनी ही बार

स्त्री जननांग के लिए किया जाता है जितना कि पुरुष जननांग के लिए, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि पेट्रुचियो अपने भद्दे और छेड़छाड़ भरे अंदाज में कैथरीना को कनिंलिंगस (योनि चाटना) के प्रस्ताव में रुचि जगाने की कोशिश कर रहा है (कोलमैन, 1974)।

• बार्थोलोम्यू मेले में "प्लेहाउस पोल्ट्री" वेश्यावृत्ति के लिए इस्तेमाल की जाती हैं।

ट्यूटोरियल 252 गुरुओं का सार उजागर करना

• रोमियो और जूलियट में मर्कुटियो के "क्वीन मैब" भाषण में,

शेक्सपियर के समय में "मैब" नाम ही एक अपमान था, क्योंकि यह "वेश्या" का पर्यायवाची था।

• मेजर फॉर मेजर में एक वेश्यालय है जिसे एक "मालकिन" चलाती है।

“हो गया,” के साथ-साथ वेश्याएं आलस्य से ट्रांसजेंडर पुरुषों को कोड़े मार रही हैं। इसके अलावा, दलाल पोम्पे अपने साथी कैदियों के साथ हास्यास्पद रूप से क्रूर खेल खेलता है। उसी कहानी में कामुक लूसियो को अंततः बहाल किए गए ड्यूक विन्सेंटियो द्वारा एक वेश्या से शादी करने के लिए मजबूर करके दंडित किया जाता है।

• लव्स लेबर्स लॉस्ट में, बोयेट की पंक्ति 'और अगर मेरा हाथ बाहर हो,

तो फिर शायद तुम्हारा हाथ इसमें है’ – यह मारिया पर हस्तमैथुन का आरोप लगा रहा है” (कोलमैन, 1974)

• हेनरी चतुर्थ में, यदि "जैसा कि संभव प्रतीत होता है, फाल्स्टाफ का 'न तो मछली'

‘न तो मांस’ का अर्थ है ‘न तो पुरुष और न ही स्त्री’, तो इसके साथ आने वाला वाक्यांश ‘एक पुरुष नहीं जानता कि उसे कहाँ पाना है’ शेक्सपियर के गुदा मैथुन के कुछ ही संदर्भों में से एक बन जाता है” (कोलमैन, 1974)

• जब जूलियट की नर्स रोमियो से पूछती है, "तुम्हें ऐसा क्यों करना चाहिए?"

क्या इतने गहरे 'ओ' में गिरना संभव है? अक्षर 'ओ' [तुलना: कुछ नहीं/शून्य/शून्य/शरारती] संभवतः "योनि के अश्लील निहितार्थ को वहन करता है" (कोलमैन, 1974)

• हैमलेट के साथ भी ऐसा ही है:

हैमलेट: क्या तुम्हें लगता है कि मेरा मतलब देश के मामलों से था? ओफेलिया: मुझे ऐसा कुछ नहीं लगता, महाराज।

हैमलेट: नौकरानियों के बीच लेटने का यह एक उचित विचार है।
पैर।
ओफेलिया: क्या है, मेरे स्वामी?
हैमलेट: कुछ नहीं।
देश शब्द में व्यंग्य [अर्थात, "कंट्री"] के बाद, हमें इस बात पर संदेह करने की आवश्यकता नहीं है कि हैमलेट "नथिंग" के साथ एक और अश्लील मजाक कर रहा है (कोलमैन, 1974)।
• अंत में, ट्वेल्थ नाइट में, मालवोलियो मारिया द्वारा बनाए गए जाली दस्तावेज़ को स्वीकार कर लेता है।
पत्र इस प्रकार है: “मेरी कसम, ये मेरी प्रेमिका की लिखावट है। ये बिल्कुल उसके C, U और T अक्षर हैं; और इस तरह वह अपने शानदार P अक्षर बनाती है।”
... एक नन आश्रम के लिए 253

हेल्गो कोकेरिट्ज़ ने इस C-U-T को 'कंट' शब्द की तुकबंदी के रूप में नहीं, बल्कि 'कट' के रूप में समझाया, एक ऐसा शब्द जो, जैसा कि मुझे बताया गया है, अभी भी अंग्रेजी में योनि के लिए एक बोलचाल के शब्द के रूप में प्रयोग होता है। कोकेरिट्ज़ ने यह भी प्रस्तावित किया कि इसके आधार पर, मालवोलियो का वाक्यांश "हर ग्रेट पीज़" मूत्र त्याग का संकेत देता है (कोलमैन, 1974)।
हमें चार अक्षरों वाले “फोकेटिव” और “जेनिटिव” कारकों पर अतिरिक्त व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ मिलती हैं; कैरेट/गाजर को “अच्छी जड़ों”/लिंग के रूप में; और “दो पत्थरों” को संभावित अंडकोष के रूप में दर्शाया गया है। इसके अलावा, सिफलिस, जिसे “फ्रांस की बीमारी” कहा जाता है, के कई हास्यपूर्ण और गंभीर संदर्भ भी मिलते हैं... जो विडंबनापूर्ण रूप से हमें राजा विलियम, उस नाजायज संतान, के नेतृत्व में नॉर्मन विजय की ओर वापस ले जाता है।
इन सब बातों को देखते हुए, कुछ सौ साल बाद योगानंद द्वारा अपने अनुयायियों के लिए ब्रह्मचर्य और विचारों की पवित्रता पर दिया गया ज़ोर कुछ हद तक असंगत लगता है। ("लेकिन महोदय, हम तो अभी आपके लेखन पर ही चर्चा कर रहे थे!")
शेक्सपियर का निधन 1616 में उनके 52वें जन्मदिन पर हुआ था, और वे आज भी स्ट्रैटफ़ोर्ड-ऑन-एवन के होली ट्रिनिटी चर्च में दफन हैं। शायद पहले के अप्रिय मृत्यु-

पश्चात अनुभवों से सबक लेते हुए, उनकी एक मूर्ति पर अंकित (आधुनिकीकृत) शिलालेख में लिखा है:
हे मेरे प्रिय मित्र, यीशु के नाम पर धैर्य रखो।
यहां घिरी धूल को खोदने के लिए
धन्य है वह व्यक्ति जो इन पत्थरों को बख्श देता है।
और जो मेरी हड्डियों को हिलाएगा, वह शापित हो।
* * *
योगानंद ने 1952 में अंतिम बार "नश्वर शरीर त्याग दिया" - अर्थात्, महासमाधि में प्रवेश किया। इसके तुरंत बाद, एसआरएफ ने व्यापक रूप से दावा किया है कि उनका निर्जन शरीर "दिव्य अविनाशिता" प्रकट करने लगा।
फॉरेस्ट लॉन के निदेशक द्वारा हस्ताक्षरित एक नोटरीकृत बयान
मेमोरियल-पार्क ने गवाही दी: “कोई भौतिक विघटन नहीं हुआ था।”
मृत्यु के बीस दिन बाद भी उसके शरीर में यह अवस्था स्पष्ट दिखाई दे रही थी...
शरीर के पूर्ण संरक्षण का, जहाँ तक हम जानते हैं,
शवगृह के अभिलेख, एक अद्वितीय अभिलेख... योगानंद का शरीर
स्पष्टतः एक अभूतपूर्व अपरिवर्तनीयता की स्थिति में था” (में
योगानंद, 1998)।
254 गुरुओं का पर्दाफाश

सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप (एसआरएफ, 1976 में) के संपादकों ने तब बड़े ही प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी:
यही होना चाहिए। परमहंस, त्रुटिहीन रूप से परिपूर्ण आत्मा।
वह ऐसा व्यक्ति था, इसलिए वह किराए के मकान के रूप में किसी भी तरह का विकल्प नहीं चुन सकता था।
वह शरीर जो पूर्व-स्थापित सामंजस्य में नहीं था
सबसे कल्पनीय आत्मा।
और फिर भी, जैसा कि रॉबर्ट कैरोल (2004बी) ने उल्लेख किया है:
वन विभाग के निदेशक का बयान [एसआरएफ द्वारा उद्धृत]
लॉन, हैरी टी. रोवे, सटीक है, लेकिन अपूर्ण है। श्री रोवे

उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने योगानन पर एक भूरा धब्बा देखा था।
बीस दिन बाद दा की नाक, एक संकेत है कि शरीर ठीक नहीं हुआ था।
“पूरी तरह से” संरक्षित। किसी भी मामले में, एसआरएफ का दावा है कि कमी
भौतिक विघटन एक "असाधारण घटना" है।
भ्रामक है.... योगी के शरीर की अवस्था अद्वितीय नहीं है-
यह एक दुर्लभ मामला है, लेकिन आम है। एक सामान्य रूप से संरक्षित शरीर में ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखेगा।
दफनाने के बाद एक से पांच महीने तक उल्लेखनीय शुष्कता के साथ-
गंध को छुपाने के लिए रेफ्रिजरेशन या क्रीम के उपयोग को बंद करें.... कुछ
दफनाने के बाद शव कई वर्षों तक अच्छी तरह से संरक्षित रहते हैं।
और वास्तव में, शव संरक्षण के संबंध में, श्री रोवे के पत्र के पूर्ण पाठ में, जो एसआरएफ द्वारा प्रकाशित (1976) परमहंस योगानंद, इन मेमोरियम में पुनर्मुद्रित है, हमें यह मिलता है:
परमहंस योगानंद के पार्थिव शरीर को उसी रात संरक्षित किया गया था।
8 मार्च को, उस तरल पदार्थ की मात्रा के साथ जो प्रथागत रूप से होती है
समान आकार के किसी भी निकाय में प्रयुक्त।
और फिर वह "चमत्कार" क्या था? जाहिर तौर पर, केवल यही कि शव अपेक्षाकृत अच्छी तरह से संरक्षित था, जबकि शवगृह ने फफूंद को रोकने के लिए किसी भी क्रीम का इस्तेमाल नहीं किया था।
शव संरक्षण। फिर भी, हैरी एडवर्ड्स (1995) द्वारा स्वतंत्र, लाइसेंस प्राप्त शव संरक्षकों की राय जानने के लिए किए गए शोध में, उनके निम्नलिखित अनुभव सामने आए:
मुझे यकीन है कि हमारे पास दो या तीन महीने से अच्छे स्वास्थ्य वाले सैनिक मौजूद हैं।
संरक्षण। यह असामान्य नहीं है। क्रीम की आवश्यकता नहीं है।
... "शव को संरक्षित करके बीस दिनों तक सुरक्षित रखना संभव नहीं है।"
असामान्य। हम बिना किसी हस्तक्षेप के एक या दो महीने तक शव को रख सकते हैं।
ral ... लैनोलिन आधारित एक एम्बामिंग द्रव में hu-
एक ऐसा पदार्थ जो निर्जलीकरण को रोकता है, जो कि प्रमुख चिंता का विषय है।

सेर्न।
... एक नन आश्रम के लिए 255

जैसा कि एडवर्ड्स के शव संरक्षकों ने आगे बताया, ताबूत के भारी कांच के ढक्कन के कारण योगानंद के शरीर के चारों ओर हवा का संचार काफी हद तक बाधित हो गया होगा, जिससे शरीर के सूखने में भी बाधा उत्पन्न हुई होगी।
तो फिर वह "चमत्कार" क्या था? शायद सिर्फ यही कि एसआरएफ पचास वर्षों से अधिक समय से एक ऐसी घटना को प्रस्तुत करने में सफल रहा है जो पूरी तरह से सामान्य है, मानो यह उनके सर्वोत्कृष्ट मानवीय संस्थापक की दिव्यता को साबित करने वाला कोई "संकेत" हो।
* * *
गुरु ने हममें से कुछ लोगों से कहा था: “तुम्हें कभी भी अपनी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है-
हमारे समाज के नेतृत्व के बारे में स्वयं को आश्वस्त करें। बाबा जी ने पहले ही
उन लोगों का चयन किया गया है जो इस कार्य का नेतृत्व करने के लिए नियत हैं” (माता,
1971).
योगानंद के निधन के बाद, एसआरएफ की अध्यक्षता उनके प्रमुख शिष्य, जेम्स जे. लिन (राजर्षि/राजासी जनकनंद) ने संभाली, जो कंसास सिटी के एक धनी व्यवसायी थे। योगानंद के आग्रह पर, लिन ने कथित तौर पर एसआरएफ को छह मिलियन डॉलर तक की नकद राशि, भूमि और बांड दान किए थे।
श्री लिन स्वयं निम्नलिखित रोचक विशेषताओं से युक्त थे:
छोटा जिमी 18 साल की उम्र तक कपड़े पहनता था और उसके बाल लंबे रहते थे।
छह....
राजसी किसी भी रूप में कुरूपता को नापसंद करते थे। उदाहरण के लिए, यदि
उसने फर्श पर कुछ गिरा दिया और उसका सारा सामान बिखर गया।
वह घृणित ढंग से जितनी तेज़ी से हो सकता था, कमरे से बाहर निकल गया।
ऐसा कर सकता था ताकि उसे इसे देखना न पड़े (माटा, 1992)।
1955 में लिन के निधन के बाद से, दुर्गा माता द्वारा अपने खराब स्वास्थ्य और उम्र के

कारण नेतृत्व के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के बाद, सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप दया माता के नेतृत्व में जारी है (माता, 1992)।
दुर्गा की एक पुरानी दोस्त ने बाद में अपनी राय दी।
रसेल (1999) में दया के चरित्र को उसके युवा दिनों में "कमजोर और आदर्शवादी" के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन फिर भारत में उसे "सत्ता का स्वाद" मिलता है।
राजसी के निधन और दया माता के सत्ता में आने के तुरंत बाद, एसआरएफ द्वारा किया गया एक दिलचस्प बदलाव उनके संस्थापक के नाम की वर्तनी में ही था।
256 गुरुओं का पर्दाफाश

योगानंद ने अपना शीर्षक, परमहंस, बिना अतिरिक्त शब्द के लिखा था।
बीच में एक वाक्यात्मक 'a'□ वास्तव में, शब्द इसी तरह बनता है।
भारत में आमतौर पर उच्चारित किया जाता है। उस अक्षर का जोड़ था
भारत के विद्वानों की सलाह पर वर्षों बाद बनाया गया, समझौते के अनुसार-
परमहंस ने बिना 'ए' के, हालांकि ध्वन्यात्मक रूप से,
कैली टू, व्याकरणिक रूप से गलत था (क्रियानंद, 1979)।
यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से 1958 में किया गया था, जो एसआरएफ द्वारा प्रायोजित परम पूज्य जगद्गुरु ("विश्व शिक्षक") श्री शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ की अमेरिका यात्रा के साथ मेल खाता था। तीर्थ स्वयं "अधिकांश हिंदू भारत के धार्मिक प्रमुख और प्रथम शंकराचार्य के धर्मप्रचारक उत्तराधिकारी" थे।
व्यक्तिगत तौर पर, अगर मुझे पता होता कि योगानंद को अपने नाम की स्पेलिंग भी नहीं आती, तो मैं कभी भी उनका अनुसरण नहीं करता। (उपरोक्त से मिलते-जुलते मुद्दे अतीत के "राजसी" बनाम वर्तमान के विवाद से भी जुड़े हैं।)
लिन के मठवासी नाम की “राजर्षि” वर्तनी का उपयोग करें [डकोटा, 1998]।
बहरहाल, दया माता के नेतृत्व में एसआरएफ ने हाल ही में कई घोटालों का सामना किया है, जिनमें एक उच्च पदस्थ पुरुष मठवासी मंत्री की कथित यौन गतिविधियों से जुड़ा घोटाला भी शामिल है, जिसे कथित तौर पर अंततः मठ छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। उस मामले को सुलझाने में कथित तौर पर संबंधित दुर्भाग्यपूर्ण महिला को लगभग एक तिहाई मिलियन डॉलर का मुआवजा दिया गया था। हालांकि, इसी संदर्भ में:

[मामले की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों] का कहना है कि कई शीर्ष
दया माता समेत एसआरएफ के नेताओं ने न केवल बहरेपन की ओर रुख किया
जब उस महिला ने मदद मांगी तो उसने उसकी बात सुनी।
अभी भी भिक्षु के साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन वे नेता-
चर्च के भीतर अपनी प्रतिष्ठा को बर्बाद करने के प्रलोभन में भी
उन्होंने भिक्षु के मठवासी जीवन को संरक्षित करने का प्रयास किया...
“उन्होंने [चर्च नेतृत्व ने] लगभग [संस्था को नष्ट कर दिया]
एक दोस्त ने कहा, "इसने महिला के विश्वास को ठेस पहुँचाई और उसकी जिंदगी बर्बाद कर दी।"
(रसेल, 1999)।
एसआरएफ के नेतृत्व और उसके निदेशक मंडल के कथित "परिपूर्ण" स्वरूप को देखते हुए यह और भी निराशाजनक है:
[SRF] चलाने वाले लोग कथित तौर पर प्रबुद्ध पक्ष के हैं।
धास, जो इसे और भी अधिक भ्रमित करने वाला बना देता है, क्योंकि ऐसा करने की हिम्मत कैसे हुई?
आम भक्त अपने पास मौजूद चीजों पर सवाल उठाते हैं, या इससे भी बुरा, उन्हें चुनौती देते हैं।
हो गया? लेकिन फिर हम जो हो रहा है उसे कैसे स्वीकार कर सकते हैं (रेडियो-)
कैल एडिटिंग, फोटो में बदलाव, और बाकी सब कुछ [देखें डकोटा,
1998])? (क्रिया योग चर्चा मंच, 2001)।
... एक नन आश्रम के लिए 257

मुझे लिखे एक पत्र में, एसआरएफ ने सिद्ध को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जो "अ-
सशर्त रूप से ईश्वर के साथ एक, ईश्वर के सभी गुणों में भागीदार।
सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता सहित-
तनाव” (रॉलिंसन, 1997)।
ऐसे प्राणी जाहिर तौर पर कभी गलती नहीं करते। स्वयं योगानन्द ने भी इस बात की पुष्टि की थी:

सच्चे गुरुओं के कार्यों को, हालांकि आसानी से समझा नहीं जा सकता
सांसारिक लोग हमेशा ज्ञान से प्रेरित होते हैं, कभी भी मनमौजी नहीं होते।
(in Kriyananda, 1979).
गुरु का वचन झूठा साबित नहीं किया जा सकता; यह आसानी से नहीं दिया जाता।
(योगानंद, 1946)।
हालांकि, योगानंद के अपने जीवन में हुई "गलतियों" और इसी तरह की बातों के बारे में: यह दावा किया गया है कि एसआरएफ द्वारा प्रकाशित ईस्ट-वेस्ट पत्रिका के फरवरी 1934 के अंक में उन्होंने इतालवी फासीवादी नेता मुसोलिनी की प्रशंसा करते हुए उन्हें "महान बुद्धि" बताया था, और कहा था कि उन्हें ईश्वर ने मानवता के लिए एक आदर्श के रूप में पृथ्वी पर भेजा है। (मुझे स्वयं उस अंक की प्रति प्राप्त नहीं हो सकी है, इसलिए मैं इस दावे की पुष्टि नहीं कर सकता। हालांकि, महत्वपूर्ण बात यह है कि ईस्ट-वेस्ट के एक पूर्व अंक में मुसोलिनी द्वारा लिखित एक संक्षिप्त लेख को प्रशंसा के साथ शामिल किया गया था।)
[1927] स्वयं, "विज्ञान और धर्म" पर।) हालांकि, महज एक साल बाद, उसी तानाशाह ने अबिसीनिया (इथियोपिया) पर आक्रमण कर दिया, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभिक दौर माना जाता है।
बेशक, एक गुरु का एक सर्वाधिकारवादी तानाशाह के प्रति सहानुभूति रखना कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए: आखिरकार, दोनों स्थितियों में वास्तव में बहुत कम अंतर है। (दिलचस्प बात यह है कि पोप पायस XI ने भी मुसोलिनी को "ईश्वर की कृपा से भेजा गया व्यक्ति" कहा था [कॉर्नवेल, 1999]।) यह बात यहाँ तक सच है कि दोनों ही समाजों की शुरुआत, सबसे उदार दृष्टिकोण से, सभी के भले के लिए अच्छे इरादों से हुई थी, इससे पहले कि उनके नेता सत्ता के दुरुपयोग में पूरी तरह भ्रष्ट हो गए।
हमारे विश्व के धर्मनिरपेक्ष अधिनायकवादी राज्यों में हिंसा और दमन के इतिहास को देखते हुए, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि हमारे गुरुओं और अन्य "अचूक" व्यक्तियों की ओर से असंतोष के प्रति ठीक वैसी ही असहिष्णुता नियमित रूप से प्रदर्शित की जा रही है। अंततः, बहिष्कार और बेवफाई के लिए शाश्वत नरक की धमकियाँ असहमतिपूर्ण या स्वतंत्र विचारों को दबाने और निरंकुश सत्ता में बैठे लोगों के कल्याण को बनाए रखने का काम करती हैं, ठीक उसी तरह जैसे राजनीतिक रूप

से प्रेरित हत्याएँ और रक्तपात करते हैं। 258 गुरुओं का वशीभूत होना

* * *

कई अन्य क्रिया योगियों ने एसआरएफ के अंदर और बाहर दोनों जगह काम करते हुए योग और योगानंद के इतिहास में रंगीन कहानियों का योगदान दिया है।

उनमें से एक, स्वामी क्रियानंद (जे. डोनाल्ड वाल्टर्स), को 1960 में एसआरएफ निदेशक मंडल द्वारा सर्वसम्मति से आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप का उपाध्यक्ष चुना गया था। (यह वही सर्वज्ञानी समूह है जिसने पहले दया माता को अध्यक्ष चुना था।) इससे पहले, उन्होंने 1948 में बाईस वर्ष की आयु में एसआरएफ मठों में प्रवेश करने के बाद से एसआरएफ के भीतर काम किया, संगठन बनाया और व्याख्यान दिए। हालांकि, 1962 में एसआरएफ के काम से भारत से लौटने पर, उन्हें संगठन छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, जबकि उन्होंने बार-बार विनती की थी कि उन्हें वहां रहने दिया जाए और बर्तन धोने के अलावा कोई भी काम करने दिया जाए।

उस कहानी के अपने पक्ष को बताते हुए, वाल्टर्स (2002) उस विभाजन के कारणों को प्रकृति में "मूल रूप से राजनीतिक" मानते हैं।

हालाँकि, यह स्थिति अनान की स्थिति से कुछ भिन्न है।

आनंद जागरूकता नेटवर्क की वेबसाइट (www.anandainfo.com) पर यह जानकारी उपलब्ध है। वहां, जबरन निकाले जाने के कई कारण "यौन दुराचार" बताए गए हैं।

उनके निष्कासन के विशिष्ट कारण चाहे जो भी रहे हों, 1967 तक वाल्टर्स इतने स्वस्थ हो गए थे कि उन्होंने उत्तरी कैलिफोर्निया के नेवादा सिटी के पास स्थित अपने स्वयं के "विश्व बंधुत्व समुदाय" या आध्यात्मिक समुदाय, आनंद सहकारी ग्राम के लिए पहली भूमि खरीदी। वर्तमान में, 900 एकड़ के उस गाँव में योगानंद के लगभग तीन सौ शिष्य रहते हैं, जिनकी भक्ति वाल्टर्स द्वारा "सेवा" पर विशेष जोर देने के माध्यम से प्रकट होती है, क्योंकि वे स्वयं को योगानंद के आशीर्वाद का "माध्यम" मानते हैं। विश्व स्तर पर, आनंद समूह में लगभग 2500 सदस्य हैं; मैं स्वयं भी एक समय आधिकारिक रूप से उनमें से एक था।

उस बस्ती के लिए मूल भूमि—जिसका उपयोग अब केवल एकांतवास स्थल के रूप में किया जाता है—को एलन गिन्सबर्ग और गैरी स्नाइडर सहित छह निवेशकों के एक

सौदे में अधिग्रहित किया गया था। उस भूमि सौदे में सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर के रिचर्ड बेकर भी शामिल थे, जो 1967 से वाल्टर्स के मित्र थे।
आनंद कॉलोनी और इसके बाद इसके विभिन्न उपग्रहों की स्थापना के लिए वाल्टर्स की प्रेरणाओं में योगानंद (1946) का "आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप के उद्देश्य और आदर्श" में स्पष्ट मिशन कथन शामिल था।
... एक नन आश्रम के लिए 259

सभी लोगों के बीच भाईचारे की भावना फैलाने के लिए; और
कई देशों में आत्मनिर्भर विश्व की स्थापना में सहायता करना।
सादगीपूर्ण जीवन और उच्च विचार के लिए भाईचारे की बस्तियाँ।
योगी की आत्मकथा की प्रत्येक प्रति के पीछे छपे "उद्देश्य और आदर्श" खंड से उस लक्ष्य को हटा दिया गया है। हालांकि, पाठक किसी भी अच्छी सार्वजनिक पुस्तकालय से आसानी से पुष्टि कर सकते हैं कि यह पहले के संस्करणों में मौजूद था। (1940 या 1950 के दशक के आरंभ में कॉपीराइट वाले किसी भी संस्करण में यह होना चाहिए।) योगानंद ने सार्वजनिक व्याख्यानों में भी उन उपनिवेशों की स्थापना की इच्छा व्यक्त की थी और उन्हें प्रोत्साहित किया था।
हजारों युवा... पृथ्वी को छोटी-छोटी बस्तियों से आच्छादित करने के लिए।
यह दर्शाता है कि सादगीपूर्ण जीवन और उच्च विचार का मेल ही सर्वोत्तम है।
सबसे बड़ी खुशी की ओर ले जाता है (क्रियानंद, 1979)।
या, जैसा कि योगानंद के एक अन्य प्रत्यक्ष शिष्य, कमला (1964) ने कहा था:
मास्टर ने मुझसे एसआरएफ कॉलोनियों के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने दोबारा...
शहर या ग्रामीण क्षेत्र के भीतर समूहों के गठन को संदर्भित करता है
एकांतवास के तरीके से, उन सदस्यों के बीच जो ऐसा नहीं करते
संन्यासी बनने की इच्छा रखते हैं, या कुछ कारणों से ऐसा नहीं कर पाते हैं।
कुछ दायित्वों को पूरा करना। ऐसा जीवन प्रत्येक व्यक्ति को इसमें सक्षम बनाएगा।
समान आध्यात्मिक विचारधारा साझा करने वालों के साथ दैनिक संपर्क।
लक्ष्य। उन्होंने ऐसी कॉलोनियों का वर्णन विवाहित जोड़ों से बनी हुई के रूप में किया।
परिवार और उनके परिवार, साथ ही अकेले लोग, जिनके पास

सेवा करने की इच्छा और एक दूसरे के साथ सद्भाव से रहने की भावना।
मास्टर ने इस विचार की कल्पना एक ऐसे विचार के रूप में की जिसमें सभी मिलकर काम कर सकें-
एक आत्मनिर्भर समूह में एकत्रित हों जिसमें प्रत्येक व्यक्ति समर्पित हो-
ईश्वर को समर्पित।
अपनी कॉलोनी स्थापित करने और उसे बढ़ाने के बाद, 1980 के दशक में क्रियानंद ने आनंद में कई महिला भक्तों से विवाह किए। (उदाहरण के लिए, वाल्टर्स अभी भी अपने छात्रों से बातचीत करते समय "स्वामी क्रियानंद" उपाधि का उपयोग करते हैं।)
हाल ही में, अन्य महिला अनुयायियों के साथ यौन दुराचार के आरोप सामने आए हैं।
दरअसल, विशेषज्ञ गवाह पामेला कूपर व्हाइट ने कथित तौर पर 1998 में कैलिफोर्निया की एक अदालत को बताया था कि, उनकी राय में,
वॉल्टर्स स्पष्ट रूप से पादरी यौन अपराधी की श्रेणी में आता था।
उन्होंने आगे कहा कि वह "सबसे विनाशकारी, शिकारी 260 गुरुओं को छीनने" वाले समूह में था।

उस श्रेणी के दूसरे छोर पर, बार-बार अपराध करने वाले व्यक्ति का स्थान आता है।
जो जानबूझकर कमजोर महिलाओं का शोषण करने के लिए उन्हें ढूंढता है।
स्वयं की यौन संतुष्टि" (सुलिवन, 2003)।
उसी लेख में कम से कम आठ महिलाओं के नाम हैं जिन्होंने वाल्टर्स पर यौन संबंधी अपराधों का आरोप लगाया है, जिनमें अश्लील प्रदर्शन से लेकर यौन गुलामी तक शामिल हैं।
हालांकि, वाल्टर्स का खुद इन बातों पर अलग नजरिया है।
कथित यौन संबंध। इस प्रकार, अदालत में दिए गए बयान में (वाल्टर्स,
1995; इटैलिक्स जोड़े गए), उन महिलाओं में से एक के आरोपों के जवाब में, जिनके बारे में उन्होंने कथित तौर पर स्वीकार किया था कि उन्होंने 1982 की शुरुआत में आठ अलग-अलग मौकों पर उनकी मालिश और हस्तमैथुन किया था, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा:
मैं फिर से दोहरा दूं कि यह कोई रोमांटिक या भावुक भावना नहीं थी।
लेकिन यह एक दोस्ताना एहसास था। मैं [दूसरी महिला] का इस्तेमाल नहीं कर रहा

था।
मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं उसका इस्तेमाल कर रहा था।
घटना के कई वर्षों बाद उनके बयान सही नहीं हैं।
उस समय उसके द्वारा की गई उसकी कार्रवाई की मेरी स्मृति से इसकी पुष्टि होती है, जो कि
वास्तव में, उसने मेरी विनतियों के बावजूद खुद को मुझ पर थोप दिया।
ट्रेरी....
मैं एकांत में रहने की कोशिश कर रहा था। वह और (महिला #1)
वह बार-बार मेरे घर आता था। और मैंने कहा, कृपया चले जाइए।
मुझे शांत रहना है। मैं शांत रहना चाहता हूँ, और मैं ध्यान करना चाहता हूँ और समझना चाहता हूँ।
मैं इस उलझन को सहन कर सकती हूँ जिससे मैं गुजर रही हूँ (महिला)
#7) के जाने से मैं भावनात्मक रूप से सदमे में था, भ्रमित था-
मुझे आघात और मानसिक आघात का एहसास हुआ, लेकिन उस समय मुझे इसका ज़रा भी पता नहीं चला।
कि वह परेशान, शत्रुतापूर्ण और प्रतिरोधी थी। बल्कि, बिल्कुल
इसके विपरीत, वह खुद को मुझ पर थोप रही थी।
प्रश्न में उल्लिखित महिला (#2) उस समय बीस वर्ष की आयु की एक पूर्व छात्रा थी, जिसने अभी-अभी विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी; वाल्टर्स पचास वर्ष की आयु के उत्तरार्ध में थे, उनके बाल झड़ रहे थे और उनका वजन अधिक था।
किसी भी मामले में, वाल्टर्स के अन्य (जैसे, 2002) लेखों से यह स्पष्ट होता है कि बहकाने के अवांछित प्रयास एक आवर्ती समस्या प्रतीत होते हैं:
कई महिलाओं ने, स्वाभाविक रूप से, मुझमें अपनी स्वाभाविक पहचान देखी।
“शिकार”.... मुझे याद है एक आकर्षक महिला अचानक सामने आई थी
मेरे द्वारा ली गई तस्वीरों में, उसके घर के भीतरी हिस्से से उसके बैठक कक्ष का दृश्य दिखाया गया है।
वहाँ जाओ। पूरी तरह नग्न अवस्था में, वह कमरे में मेरा पीछा कर रही थी।
जब तक कि आखिरकार मैं भागने में कामयाब नहीं हो गया!
वाह! बाल-बाल बच गए!

शिकारी और शिकार—"भूखी, आकर्षक शेरनी अपने भोले-भाले, निर्दोष शिकार का पीछा करती है," इत्यादि।
“ईश्वर की कृपा से ही ऐसा हो पाया...”
कुछ भिक्षुओं का भाग्य अत्यंत सुखद होता है। लेकिन कुछ भिक्षुओं को मानो समस्त "साक्षात्कार" भी प्राप्त होता है:
एक समय स्वामी [क्रियानंद] ने मुझसे कहा कि वह महान थे-
गांधी और साईं बाबा से भी बढ़कर, किसी के पास वह आध्यात्मिक शक्ति नहीं थी।
उसके पास जो शक्ति थी (महिला #2, 1995)।
तुलना के लिए साईं बाबा का चयन करना, निःसंदेह, एक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय था: एक औसत घरेलू बिल्ली में साईं बाबा से कहीं अधिक आध्यात्मिक शक्ति होती है।
* * *
सांता बारबरा के ब्रदरहुड ऑफ द सन समुदाय के संस्थापक नॉर्मन पॉलसेन, योगानंद के एक अन्य प्रत्यक्ष शिष्य हैं। वे मई 1947 से नवंबर 1951 तक साढ़े चार साल तक एसआरएफ आश्रमों में रहे।
नॉर्मन का दिल लगभग उसके शरीर जितना ही बड़ा था... बिलकुल नहीं।
मार्ग के सैद्धांतिक पहलुओं में रुचि रखते हुए, उन्होंने समझा-
भक्ति के मामले में वह हर चीज से ऊपर था...
“मुझे इनमें से कुछ भी नहीं पता!” वह हैरानी से कहता था।
जब भी मैं कोई दार्शनिक विषय उठाता, तो वे हल्की मुस्कान के साथ जवाब देते।
नंड्रम। "मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं ईश्वर से प्रेम करता हूँ।" मुझे उससे कितनी ईर्ष्या होती थी!
his child-like devotion! (Kriyananda, 1979).
हालांकि, इस तरह के सरल दृष्टिकोण से स्पष्ट समस्याएं आसानी से उत्पन्न हो सकती हैं। इस प्रकार, जॉर्ज लुकास या स्टीवन स्पीलबर्ग के कथानक के अनुरूप, पॉलसेन मानव जाति को "मू की खोई हुई भूमि" में "निर्माताओं" द्वारा निर्मित मानते हैं। अर्थात्, आकाशगंगा के एक दूरस्थ भाग में "अन्य ग्रहों से आए शांतिप्रिय अंतरिक्ष शरणार्थियों" द्वारा निर्मित, जिन्हें उनके दुष्ट विजेताओं [या 'पतित देवदूतों'] द्वारा नष्ट कर दिया गया

था। ऐसा माना जाता है कि ये निर्माता लगभग पांच लाख वर्ष पहले प्रकाश की गति से भी अधिक गति से अपने पीछा करने वालों से बच निकले थे। इस दृष्टिकोण के अनुसार, मानव जाति "निर्माताओं" की अपनी प्रजाति और होमो इरेक्टस के बीच एक आनुवंशिक मिश्रण है।
उपर्युक्त "खोई हुई भूमि" ऑस्ट्रेलिया के निकट (और उसमें शामिल) डूबे हुए द्वीप महाद्वीप थे, जो कथित तौर पर बारह हजार साल पहले पतित स्वर्गदूतों द्वारा भेजे गए विशाल उल्कापिंडों द्वारा नष्ट हो गए थे, इस प्रकार 262 गुरुओं को छीनकर उन्हें "सचमुच पृथ्वी की पपड़ी से बाहर निकाल दिया गया" था।

उन टकरावों के कारण ही फिजी और ऑस्ट्रेलिया और हवाई के बीच स्थित कई अन्य द्वीप बने हैं, पॉलसेन का दावा है कि ये द्वीप डूबे हुए महाद्वीपों के पहाड़ों की चोटियाँ मात्र हैं।
उन पतित देवदूतों की उत्पत्ति की "पूर्व कहानी" कुछ इस प्रकार है: कुछ बेहद साहसी प्रारंभिक बिल्डरों का एक समूह आकाशगंगा के एक निषिद्ध क्षेत्र में प्रवेश कर गया। वहाँ वे एक भयंकर चुंबकीय तूफान में फंस गए और स्वाभाविक रूप से उस क्षेत्र की नकारात्मक ऊर्जाओं से बुरी तरह प्रभावित हुए। उसी क्षेत्र में स्थित एक (तार्किक रूप से) "निषिद्ध ग्रह" पर फंसे होने के कारण, "अंधकारमय और भयावह" शक्तियों ने इन दुर्भाग्यशाली आत्माओं के शरीर और मन को इस प्रकार प्रभावित किया कि
अचानक ही गिरे हुए बिल्डरों को एक प्रेरणा महसूस हुई जो वहां से उत्पन्न हो रही थी। उनके भीतर संपूर्ण आकाशगंगा को जीतने और गुलाम बनाने की शक्ति है (पॉल-सेन, 1984)।
उनकी—और हमारी—कहानी शरणार्थी बिल्डरों द्वारा मानव प्रजाति के निर्माण के बाद जारी रहती है, जिनके (बिल्डरों) को 350,000 साल पहले यहां उनके पीछा करने वालों द्वारा खोजा गया था।
अंततः, पृथ्वी की रक्षा के लिए चलाए जा रहे युद्ध में बिल्डर हार गए।
उनके पतित भाई, डार्क एंजल्स, बारह हजार
कई साल पहले। हालाँकि, अपनी हार के बाद, उन्होंने वापसी करने की कसम खाई।
और पृथ्वी को पतित राक्षसों के दुष्ट अंधकार से मुक्त करो।
जिन लड़कियों के पास अब यह है। वह प्रतिज्ञा अब साकार होने लगी है।

आज स्वयं [यूएफओ मुठभेड़ों के माध्यम से] (पॉलसेन, 1984)।
ये अंतर्दृष्टियाँ पॉलसन के स्वयं के अनेक ध्यान संबंधी अनुभवों/रहस्योद्घाटनों पर आधारित हैं। वास्तव में, उनके विचार में यीशु पृथ्वी पर "एक निर्माता का पुनरावलोकन" थे। दिवंगत शब्द योगी किरपाल सिंह भी इसी प्रकार थे। इसके अलावा, स्वयं पॉलसन का दावा है कि उन्हें बृहस्पति ग्रह से आए निर्माताओं द्वारा संचालित एक यूएफओ द्वारा अपहरण कर लिया गया था। (हालांकि, उनके साथ मौजूद एक अन्य "आस्तिक" उस यान को नहीं देख सका, जब वह बाद में पॉलसन के दर्शन में पुनः प्रकट हुआ।) उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्होंने उस अपहरणकर्ता यान के ड्राइव सिस्टम के आधे हिस्से पर आधारित एक "मुक्त ऊर्जा" (अर्थात्, शाश्वत गति) मशीन का निर्माण किया था। और उन्होंने एक खगोलीय युद्ध में स्वयं लूसिफर का नाश किया था।
खैर, बुद्धिमान योडा भी "योग" से कभी एक अक्षर से ज़्यादा दूर नहीं थे; ठीक वैसे ही जैसे "फोर्स," या वह सूक्ष्म साधन जिसके द्वारा अरबिंदो ने कथित तौर पर विश्व की घटनाओं को प्रभावित किया, जॉर्ज लुकास की दुनिया में भी उतनी ही अच्छी तरह से दिखाई देता है। (लामा सेरकोंग रिनपोचे की ... टू ए ननरी 263)

"झुर्रीदार चेहरा और बड़े, नुकीले कान कथित तौर पर इसके कारण थे।"
फिल्म स्टार वार्स में योडा का मॉडल" [मैकेन्ज़ी, 1995]।
बेशक, कोई भी योगानंद या एसआरएफ को उन सभी विचारों के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकता जो संगठन छोड़ चुके शिष्यों द्वारा फैलाए गए हैं। फिर भी, जब यूएफओ की बात आती है तो एक संबंध स्थापित किए बिना रहा नहीं जा सकता। क्योंकि, योगानंद के एक सम्मानित और निष्ठावान प्रत्यक्ष शिष्य के अनुसार, जिनसे लेखक ने व्यक्तिगत रूप से एसआरएफ हिडन वैली आश्रम में मुलाकात की थी, परमहंस ने स्वयं भविष्यवाणी की थी कि "यदि अमेरिका कभी युद्ध में हो और हार रहा हो, तो यूएफओ से अंतरिक्ष के एलियंस हस्तक्षेप करेंगे।"
चलिए, प्रार्थना करते हैं कि ऐसी नौबत कभी न आए।
* * *
इन सबके अलावा, हमारे पास रॉय यूजीन डेविस (2000; इटैलिक्स जोड़े गए) भी हैं, जो योगानंद के एक और प्रत्यक्ष शिष्य हैं, और वे वहां भी बेधड़क प्रवेश करते हैं

जहां मात्र "माध्यम", क्रियानंद भी कदम रखने से डरते हैं:
परमहंसजी के लगभग सभी शिष्य इस दुनिया से विदा हो चुके हैं।
इस दुनिया में। जो कुछ बचे हैं, उनमें से मैं ही उनका एकमात्र गुरु हूँ।
उत्तराधिकारी। उनके कुछ शिष्य दार्शनिक सिद्धांतों को सिखाते हैं-
क्रिया योग के सिद्धांतों और प्रथाओं के लिए मैं बोलता हूँ, सेवा करता हूँ और प्रतिनिधित्व करता हूँ।
इस परंपरा का विरोध करना। यह मेरा मिशन है, जिसे मेरे गुरु ने...
दृढ़ किया।
यदि योगानंद ने कहीं और स्पष्ट रूप से यह न कहा होता कि वे एसआरएफ गुरुओं की परंपरा में अंतिम होंगे, तो शायद इस बात को गंभीरता से लिया जाता। यहां तक कि राजसी भी, दया माता की तरह, एसआरएफ की केवल प्रशासनिक अध्यक्ष थीं, न कि योगानंद की "आध्यात्मिक उत्तराधिकारी"। यदि ऐसा न होता, तो अन्य प्रत्यक्ष शिष्यों द्वारा स्वयं को योगानंद के मात्र "माध्यम" के रूप में प्रस्तुत करने की कल्पना करना मुश्किल होता, बजाय इसके कि वे स्वयं को गुरु का दर्जा दें। वर्तमान स्थिति में भी, इस सीमा को लगातार यथासंभव आगे बढ़ाया जा रहा है।
अब आम तौर पर यह समझा जाता है कि गुरु के ज्ञान में निहित ज्ञान...
शिक्षा मुख्य रूप से उन लोगों में निहित होती है जो शिष्य रहे हैं।
कई वर्षों से," [जे. डोनाल्ड वाल्टर्स] ने हाल ही में एक खुले लेख में लिखा।
आनंदा समुदाय को पत्र। "यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है
आनंद में यह सुनिश्चित किया जाए कि अन्य ऊर्जाओं को हस्तक्षेप करने की अनुमति न दी जाए।
वे स्वयं, मानो क्रियानंद को दरकिनार करके सीधे जाना चाहते हों।
हमारे गुरु मार्गदर्शन और प्रेरणा के लिए" (गोवा, 1999)। 264 गुरुओं का सार उजागर करना

या, जैसा कि 1976 के स्व-प्रकाशित आनंद सहकारी ग्राम सदस्यता दिशानिर्देशों (नॉर्डक्विस्ट, 1978 में) में कहा गया है:
प्रत्येक संभावित सदस्य को यह समझना चाहिए कि शामिल होने से
आनंदा... का अर्थ है नेतृत्व और व्यक्तिगत नेतृत्व का अनुसरण करना भी।

आनंदा के संस्थापक स्वामी क्रियानंद के मार्गदर्शन में-
योगानंदजी के निर्देशन में निर्मित उपकरण।
* * *
अपनी आत्मकथा (1946) के प्रारंभिक संस्करणों में, योगानंद ने अपने एक शिष्य के बारे में निम्नलिखित जानकारी दी थी:
वाशिंगटन के नेता स्वामी प्रेमानंद हैं, जिन्होंने शिक्षा प्राप्त की है।
रांची स्कूल और कलकत्ता विश्वविद्यालय। मैंने बुलाया था
उन्हें 1928 में वाशिंगटन सेल्फ- के नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालने के लिए नियुक्त किया गया।
रियलाइजेशन फेलोशिप सेंटर।
“प्रेमानंद,” मैंने उनके नए मंदिर में उनसे मुलाकात के दौरान कहा-
उदाहरण के लिए, "यह पूर्वी मुख्यालय पत्थर में बना एक स्मारक है
आपकी अथक निष्ठा। यहाँ देश की राजधानी में आपने
लाहिड़ी महाशय के आदर्शों के प्रकाश को बुलंद रखा।
वही प्रेमानंद जल्द ही पॉल ट्विचेल के पहले आध्यात्मिक गुरु बन गए और उन्होंने ट्विचेल को क्रिया योग की दीक्षा दी। यह घटना लगभग 1950 में हुई, जिसके बाद ट्विचेल किरपाल सिंह के अनुयायी बनने के लिए ट्विचेल से अलग हो गए। ट्विचेल ने आगे चलकर एकंकार आंदोलन की स्थापना की, जिसके "पश्चिमी दुनिया भर में हजारों अनुयायी" हैं (रॉलिंसन, 1997)। उनकी आधिकारिक जीवनी बाद में विपुल न्यू एज लेखक ब्रैड स्टीगर द्वारा लिखी गई।
ट्विचेल के लेखन और पहले प्रकाशित लेखों में कई पैराग्राफों के बीच आश्चर्यजनक, लगभग शब्द-दर-शब्द समानता के लिए
अधिक जानकारी के लिए, डेविड लेन की वेबसाइट www.neuralsurfer.com देखें, और उनके
(1983) एक आध्यात्मिक आंदोलन का निर्माण। ट्विटचेल की विभिन्न जीवनियों के बीच की विसंगतियों को इसी पुस्तक में उजागर किया गया है।
ट्विचेल का 1971 में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया, "यह भविष्यवाणी करने के कुछ ही महीनों बाद हुआ कि वह कम से कम और पांच साल जीवित रहेंगे।"
प्रेमानंद का नाम और छवि, योगानंद के कहने पर, उनकी आत्मकथा सहित

एसआरएफ की सामग्रियों से हटा दी गई है, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेमानंद द्वारा किए गए विश्वासघाती कार्यों के बाद ऐसा किया गया था।

* * *

... एक नन आश्रम के लिए 265

बेशक, बाबा जी के क्रिया योग मिशन के सभी पहलुओं को एसआरएफ के माध्यम से क्रियान्वित नहीं किया जाता है। वास्तव में, कई स्वतंत्र समूह हैं जो उसी महान गुरु से अपनी परंपरा का पालन करते हैं।

उन सहायक दलों में से एक के एक उच्च पदस्थ सदस्य ने अपने आश्रम जीवन का वर्णन किया है, जो उन्होंने एक गुरु (योगी रामैया, उर्फ योगियार) के मार्गदर्शन में बिताया था, जो स्वयं अमर बाबाजी के शिष्य थे:

जनवरी 1971 के अंत में, योगियार ने चेर से मुलाकात की [नहीं, नहीं]
वह चेर—एक अलग चेर; हालाँकि असली चेर का बेटा एक
अविवाहित हरे कृष्ण] और लेखक एक साथ और में-
उन पर यह प्रभाव पड़ा कि तमाम कोशिशों के बावजूद वे एक जोड़े के रूप में सफल नहीं हो पाए।
अगर रिश्ता टूट जाता, तो उसे खत्म कर देना चाहिए था, क्योंकि असलियत
लेखक का चेर के प्रति जो प्रेम था, वह अब पारस्परिक नहीं रहा।
उसके द्वारा पोषित। अगर रिश्ता जारी रहता, तो चेर
जल्द ही उन्हें न केवल लेखक को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, बल्कि क्रिया को भी छोड़ना पड़ेगा।
योग भी। लेखक के लिए यह कष्टदायक था क्योंकि पूर्व-
चेर के साथ दीर्घकालिक संबंध को लेकर उनकी जो अपेक्षाएं थीं।
लेकिन वह चेर को खुश देखना चाहता था। योगियार ने भी एक प्रस्ताव रखा-
उसके लिए एक और रास्ता था, जहाँ वह "आश्रमवासी" के रूप में रहती थी।
उसके निकट रहकर, और उच्च स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त करें।
(गोविन्दन, 1997)।

महिला को इस प्रकार का "उच्च स्तरीय, निकटवर्ती प्रशिक्षण" देने से उसके आध्यात्मिक विकास में चमत्कारिक प्रभाव पड़ा है:

चेर ने स्वयं को क्रिया योग के लिए समर्पित कर दिया और जल्द ही एक बच्चे की गर्भ धारण कर ली।
बेटा, "अन्नामलाई," योगियार के साथ (गोविंदन, 1997)।
"बेब तुम्हें मिला।"
* * *
यदि कोई इस पहले से ही कमजोर चट्टान से थोड़ा और आगे बढ़कर वास्तव में अनछुए और जंगली क्षेत्र में कदम रखने की हिम्मत करे, तो उसे आसानी से हिमालयी बाबाजी से जुड़ी और भी कहानियां मिल सकती हैं। जैसे कि निम्नलिखित कहानियां:
बाबा जी ने मानव इतिहास में अनेक शरीर धारण किए हैं।
यह आपको इनमें से किसी एक में, या एक ही समय में सभी में दिखाई दे सकता है।
समय। मेरे कुछ मित्र हैं जिन्हें बाबा जी अनेक रूपों में प्रकट हुए।
एक परेड के रूप में। इस उपस्थिति ने उन्हें ज्ञान प्रदान किया। मुलाकात के बाद-
1977 में हेराखान में बाबाजी के दर्शन करने के बाद, बाबाजी मुझे दर्शन दे चुके हैं।
कई रूपों में—पोलैंड में साइकिल पर सवार एक महिला के रूप में, एक आवारा के रूप में
वॉशिंगटन डीसी में, एक पक्षी के रूप में, एक सांप के रूप में...
266 गुरुओं का पर्दाफाश

बाबाजी यीशु मसीह के पिता हैं (लियोनार्ड ओर, में)
[चर्चिल, 1996]; इटैलिक्स जोड़े गए)।
ऑर, रिबर्थिंग थेरेपी के विकास में अग्रणी थे - जो मनोवैज्ञानिक अवरोधों और कथित भूतपूर्व जन्म के आघातों को दूर करने का एक गहरी सांस लेने का साधन है (गार्डन, 1988)।
लुईस वैल्पीड (चर्चिल, 1996 में) भी इसी प्रकार वर्णन करती हैं:
एक अनुभव तब का है जब मेरा कुत्ता दोस्त, रफीके, गंभीर रूप से बीमार था।
लकवा पैदा करने वाले कीड़े के काटने से जहर होने के बाद मैं बहुत बीमार हो गया था। मैंने पशु चिकित्सक से इलाज करवाया।
मेरी सर्जरी हुई थी और मुझे नहीं पता था कि मैं उसे दोबारा जीवित देख पाऊँगी या नहीं।

जब मैं दरवाजे से बाहर निकला, तो वहाँ एक छोटी सी चिड़िया थी, जो उस तरह की थी जिसे मैंने पहले देखा था।
पहले कभी नहीं देखा गया, एक पैर से दूसरे पैर पर नाचते हुए। बिना सोचे-
मुझे पता था कि बाबा जी कह रहे हैं, "चिंता मत करो, मैं यहाँ हूँ।"
वह ठीक है।
हाल ही में बाबा जी ने कई बार संवाद किया है, जिनमें से यह एक अवसर है।
एक पक्षी के माध्यम से मुझसे संपर्क किया गया। ऐसा अक्सर हो रहा है।
अक्सर।
* * *
योगानंद के छोटे भाई बिष्णु भी पीछे नहीं रहे और उन्होंने बिक्रम चौधरी को अपना शिष्य बताया। बिक्रम चौधरी ने अपने "हीट योगा" के कई पहलुओं और आसनों को (सचमुच) ट्रेडमार्क करा लिया है, जो आजकल हॉलीवुड में काफी लोकप्रिय है। उस शिष्य से गुरु बने व्यक्ति के बारे में, जिनके छात्र जॉर्ज हैरिसन 1969 में थे, कहा जाता है:
बिक्रम बेवर्ली में नौकरों से भरे अपने आलीशान घर के बारे में शेखी बघारता है।
हिल्स और उनकी तीस क्लासिक कारें, रोल्स-रॉयस से लेकर बेंट तक-
वह यह भी दावा करता है कि उसने ज्ञात हर बीमारी का इलाज कर दिया है।
वह मानवता से अपनी तुलना यीशु मसीह और बुद्ध से करता है।
डीएचए। उन्हें न तो भोजन की आवश्यकता है और न ही नींद की, वे कहते हैं, "मैं इससे परे हूँ।"
सुपरमैन" (कीगन, 2002)।
स्वयं "स्टील मैन" कहे जाने वाले इस शख्स ने दावा किया है कि उनकी महिला छात्राओं द्वारा उन्हें ब्लैकमेल करने की धमकियां दी गई हैं।
“जब वे आत्महत्या करने की बात कहते हैं तो क्या होता है?”
जब तक तुम उनके साथ सो नहीं जाते?” वह पूछता है। “मैं क्या करूँ?”
क्या करें? कभी-कभी किसी और के साथ संबंध बनाना ही बचने का एकमात्र तरीका होता है।
किसी का जीवन” (कार्लसन, 2002ए)।
फिर वही बात, “ईश्वर की कृपा से ही ऐसा हो पाया...”

* * *

सेल्फ-रियलाइज़ेशन फेलोशिप के साथ मेरे अपने बिल्कुल गैर-मज़ेदार अनुभवों में कैलिफ़ोर्निया के एस्कोन्डिडो के बाहर स्थित पुरुषों के लिए बने हिडन वैली आश्रम/आश्रम में नौ महीने एक निवासी स्वयंसेवक के रूप में बिताना शामिल था। यह अक्टूबर 1998 से जुलाई 1999 तक चला, जब मैं एक दशक से अधिक समय से एसआरएफ का एक निष्ठावान सदस्य था। हालाँकि वहाँ कभी भी "अजीबोगरीब ज्ञान" पर ज़ोर नहीं दिया गया था—वास्तव में, वहाँ का वातावरण किसी भी प्रकार के ज्ञान से लगभग रहित था—फिर भी चिंता करने के लिए बहुत कुछ था।

• हिडन वैली में रहने के लिए आधिकारिक रूप से स्वीकार किए जाने से पहले (एचवी) एक निवासी स्वयंसेवक के रूप में, आवेदक को एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना आवश्यक है जिसमें वह यह पुष्टि करता है कि वह आश्रम में अपने पर्यवेक्षकों को ईश्वर और गुरु का माध्यम मानेगा और उनके निर्देशों का पालन करेगा। इसका सार यह है कि यह वहां के पर्यवेक्षकों के लिए यह महसूस करने का एक दिलचस्प तरीका है कि उनके कार्य ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित हैं। इसके अलावा, जो कोई भी उनके निर्देशों का उल्लंघन करता है, उसे "बुरा शिष्य" माना जाता है, जिसकी अवज्ञा को वे सार्वजनिक रूप से चुपचाप सहन करेंगे, लेकिन निजी तौर पर उस पर चर्चा करेंगे और उसकी निंदा करेंगे।

व्यक्ति को अपनी यौन अभिवृति का खुलासा करना भी आवश्यक है।

और क्या उसे कभी समलैंगिक अनुभव हुए हैं या नहीं।

वैसे तो मैं खुद बिल्कुल सीधा-सादा इंसान हूं।

लगभग एक विषमलैंगिक प्राणी होने की हद तक पहुँच चुके हैं, और परिणामस्वरूप मुझे ऐसे कोई अनुभव नहीं हुए हैं। यहाँ मुद्दा यह नहीं है कि मुझे उस प्रश्न का उत्तर देने में असहजता हुई - ऐसा बिल्कुल नहीं था। बल्कि, यह एक दुखद दिन है जब हमारी दुनिया की "न पूछो, न बताओ" वाली सेनाएँ उसी दुनिया के "ईश्वर-केंद्रित" आश्रमों की तुलना में अपनी सोच में अधिक प्रगतिशील हैं।

• दिवंगत तारा माता (अर्थात, सुश्री लॉरी प्रैट, योगा की संपादक)

नंदा की आत्मकथा (और एसआरएफ की पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष) के अनुसार, उन्हें

लियोनार्डो दा विंची का पुनर्जन्म माना जाता है। हालांकि, उनके स्वयं के प्रकाशित लेखों में दा विंची की प्रतिभा का कोई अंश नहीं दिखता। (वे लेख पुराने अक्षरों में छपे हैं)
एसआरएफ पत्रिकाएँ, और कभी-कभी पर्दे के पीछे भाग्यशाली भक्तों के लिए फोटोकॉपी में उपलब्ध होती हैं।) इसके बजाय, उन लेखों में उन सभी लोगों की तीखी और तुच्छ निंदा भरी हुई है जो उनके योगिक दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे। विशेष रूप से, 268 गुरुओं को निष्कपट करना

वह एच. जी. वेल्स और अन्य लोगों की आलोचना करने में बेतुकी ऊर्जा खर्च करती है जिन्होंने विकासवाद और मानव सांस्कृतिक विकास के मानक दृष्टिकोण का समर्थन किया था।
हालांकि, तारा के तर्कों की "तार्किक शक्ति"
इसका सार केवल इस तथ्य को बार-बार दोहराना है कि ऐसा दृष्टिकोण पृथ्वी पर चक्रीय आध्यात्मिक विकास के हिंदू विचार के विपरीत है, और इसलिए "गलत" है। विशेष रूप से, उन्होंने अनुमानतः योगानन का ढिंढोरा पीटा।
दा (1946) ने इन चक्रों को 24,000 वर्षों की अवधि में घटित होने वाला बताया, जिसे उन्होंने "विषुवों के अग्रगमन" से जोड़ा—जो पृथ्वी के घूर्णन अक्ष की "स्थिर" तारों के सापेक्ष वृत्ताकार गति है। उन्होंने (युक्तेश्वर [1977] की पुस्तक 'द होली साइंस' के माध्यम से) इस अग्रगमन को हमारे सूर्य के एक द्विआधारी तारा प्रणाली का हिस्सा होने से उत्पन्न माना—जिसके कारण आकाश में तारों की गति उस चक्र के दौरान होती है। इस अनुमानित लय के संबंध में, अन्य एसआरएफ भिक्षुओं ने सुझाव दिया है कि "कलियुग [अर्थात, 'लौह युग'] में मनुष्यों की औसत ऊंचाई चार फीट होती है; द्वापर ['कांस्य युग'] में छह; त्रेता ['रजत युग'] में आठ; और सत्य ['स्वर्ण युग'] में दस।"
यह विचार भले ही कितना भी हास्यास्पद क्यों न हो, इसका एक गौरवशाली इतिहास है।
यह विचारधारा, जिसे श्री अरबिंदो के मार्ग का भी समर्थन प्राप्त है:
पुराणों में कहा गया है कि प्रत्येक युग की अवधि सत्य के घटते अनुपात में होती है। परिणामस्वरूप, मनुष्य का जीवनकाल भी घटता जाता है। इसके अतिरिक्त, पुराणों में

यह भी कहा गया है कि सत्य के घटने के साथ-साथ मनुष्य का कद भी घटता है। त्रेता युग में मनुष्य की लंबाई चौदह हाथ होती है, जो द्वापर युग में घटकर सात हाथ रह जाती है और कलियुग में साढ़े चार हाथ तक पहुँच जाती है (नाहर, 1989)।
इन सब बातों के बावजूद, इसका असली कारण यह है कि...
(25,800 वर्ष) विषुवतीय अग्रगमन (इक्विनोक्टियल प्रीसेशन) शास्त्रीय यांत्रिकी में एक जटिल समस्या है। वास्तव में, यह उन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है जिनके कारण एक जाइरोस्कोप या लट्टू की घूर्णन धुरी अग्रगमन या डगमगाती है। (हालांकि, शोध के अनुसार, हमारे सूर्य का एक द्विआधारी साथी हो सकता है।)
बाइनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट में किया गया कार्य मान्य है।
इसलिए वे त्रुटियाँ विशेष रूप से अजीब हैं, क्योंकि तारा
योगानंद की तरह, माता के बारे में भी यह ख्याति थी कि वे... एक नन आश्रम में
269

उसे युगों पहले उन्हीं पूर्व "विश्व चक्रों" में अपने पूर्व जन्मों की याद थी। इसलिए, वह उस प्रत्यक्ष रूप से याद किए गए अनुभव के माध्यम से अपने तर्कों को पुष्ट करने की अनूठी स्थिति में होनी चाहिए थी।
इसके अलावा यह भी ठोस रूप से दावा किया गया है कि-
ज्योतिषविद् तारा भविष्यवाणियों के लिए एडगर केसी पर निर्भर थीं, क्योंकि वह केसी की 778वीं विषय थीं। (एडगर के अनुसार, तारा उनकी मिस्र की अनुयायियों में से एक थीं, जब वह स्वयं वहां एक प्राचीन पुजारी थे।) हालांकि, केसी के स्वयं के कार्यों को रैंडी (1982) की पुस्तक 'फ्लिम-फ्लैम!' और गार्डनर (1957) की पुस्तक 'फैड्स एंड फैलेसीज' में पूरी तरह से खारिज कर दिया गया है। ज्योतिष के इसी तरह के खंडन के लिए, सुसान ब्लैकमोर (1986) की पुस्तक 'द एडवेंचर्स ऑफ ए पैरासाइकोलॉजिस्ट' देखें।
बेशक, हम पहले ही देख चुके हैं कि अरबिंदो (1872)
– 1950) ने भी तारा माता (1900 – 1971) की तरह ही (दा विंची) पुनर्जन्म का दावा किया था। दा विंची ने भी –
रोचक बात यह है कि स्वयं वह समलैंगिक था (विल्बर, 1998)। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि क्या उसे आश्रमों में प्रवेश की अनुमति दी जाती...

किसी भी स्थिति में, तीसरे व्यक्ति द्वारा लिखित पुस्तिका के वर्णन में,
तारा माता ने वास्तव में अपने कुंडलिनी जागरण के आधार पर स्वयं को एक विकसित "नई नस्ल की अग्रदूत" के रूप में प्रस्तुत किया। हालाँकि, एबॉट जॉर्ज बर्क (1994) ने तारा के बारे में एक विपरीत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया:
चूंकि उसने दावा किया कि गुरु से मिलने से पहले ही उसने पूर्णतः ब्रह्मांडीय चेतना प्राप्त कर ली थी, इसलिए निस्संदेह वह खुद को उनके शब्दों पर रोक लगाने के योग्य मानती थी।
लॉरी प्रैट को अपनी पर इतना भरोसा था
उन्हें पूर्ण चेतना थी कि उन्होंने हिंदी की कुछ किताबें खरीदीं, उन्हें पढ़ा और योगी की आत्मकथा का पूरा अनुवाद उसी भाषा में किया—या यूँ कहें कि सैकड़ों पन्नों के निरर्थक पाठ में, जिसे उनकी प्रबुद्ध बुद्धि ने हिंदी बताया। जब एसआरएफ के उपाध्यक्ष स्वामी क्रियानंद (जो हिंदी बोल और लिख सकते थे) ने एसआरएफ के अधिकारियों को सूचित किया कि भारत में छपाई के लिए भेजी गई उनकी पांडुलिपि पूरी तरह से बेतुकी है, तो उन्हें मौखिक रूप से फटकार लगाई गई और इसे छपवाने के लिए कहा गया। केवल जब उन्होंने दया माता और बोर्ड के अन्य सदस्यों को 270 STRIPPING THE GURUS के पास ले गए, तब जाकर उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि उनकी पांडुलिपि हिंदी है।

प्रकाशकों के आग्रह पर, जिन्होंने उन्हें यह साबित कर दिया कि पांडुलिपि (जिसे बोर्ड के आग्रह पर भारी खर्च करके तैयार किया गया था) निरर्थक अक्षरों की एक श्रृंखला के अलावा कुछ भी नहीं थी, अंततः इसे न छापने पर सहमति बनी!
तारा स्वयं मॉर्मन धर्मगुरु की पोती थी।
राष्ट्रवादी ओरसन प्रैट। बाद वाले की जिम्मेदारियों में संस्थापक जोसेफ स्मिथ द्वारा धर्मग्रंथों के कथित प्रसारण और बाइबिल के कुछ कम ज्ञात हिस्सों के बीच विचित्र समानताओं को समझाने का प्रयास करना शामिल था।
• दिवंगत डॉ. एम. डब्ल्यू. लुईस—योगानंद के पहले अमेरिकी शिष्य-
ऐसा माना जाता है कि सिपल, बाइबिल के किंग जेम्स संस्करण के प्रमुख संकलक सर फ्रांसिस बेकन का पुनर्जन्म थे। (सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप द्वारा पूर्व जन्मों से संबंधित इन प्रश्नों को खुले तौर पर नहीं उठाया जाता है, लेकिन ये पर्दे के पीछे अच्छी

तरह से ज्ञात हैं, और एसआरएफ मंत्रियों द्वारा कभी भी सीधे तौर पर इनका खंडन नहीं किया गया है।)
तथापि:
कहा जाता है कि स्वयं [राजा] जेम्स प्रथम समलैंगिक प्रवृत्ति के थे, जैसा कि उनके भावी लॉर्ड चांसलर, फ्रांसिस बेकन भी थे (कोलमैन, 1974)।
राजा जेम्स को उनके मित्र "रानी" के नाम से भी जानते थे।
जेम्स।" सच में।
बेशक, ऑस्कर वाइल्ड—जिन्होंने आसपास समय बिताया—
थियोसोफिकल सोसाइटी—स्वयं भी शेक्सपियर पर विश्वास करते थे।
समलैंगिक होने की बात कही जाती थी (पार्ट्रिज, 1947)। हालाँकि, उनके पास इस विश्वास के लिए इच्छाधारी सोच के अलावा कोई ठोस सबूत नहीं था। ("या तो वे पर्दे समाधि में चले जाएँगे, या मैं")
• एक सत्संग (प्रश्न-उत्तर सत्र) में, प्रशासक-
हिडन वैली के प्रशासक ने "गारंटी" दी कि एसआरएफ के निदेशक मंडल के सदस्यों में से अनिर्दिष्ट संख्या में सदस्य प्राचीन मिस्र में शासक/फिरौन रहे होंगे।
• स्वैच्छिक लीग (वित्तीय) अपील के न्यूज़लेटर में, जो भेजा गया था
1989 की वसंत ऋतु में, एसआरएफ ने अपने सदस्यों को बताया कि लॉस एंजिल्स शहर एक सार्वजनिक परिवहन योजना पर विचार कर रहा था जिससे उनके हॉलीवुड मंदिर में व्यवधान उत्पन्न हो सकता था। हालाँकि, नगर परिषद को सौभाग्यवश उस योजना को आगे न बढ़ाने के लिए मना लिया गया, जिसका एक कारण एसआरएफ का विरोध भी था... एक ननरी को 271

दुनिया भर में फैले उनके भक्तों द्वारा इस स्थल को एक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता था। (वीएल अपील पत्र में उन्होंने वास्तव में "तीर्थस्थल" शब्द का प्रयोग किया था।) हालांकि, आश्चर्यजनक रूप से, 1966 में एसआरएफ ने कथित तौर पर शहर में एक योजना प्रस्तुत की थी जिसमें उनके माउंट वाशिंगटन होटल मुख्यालय को गिराने का प्रस्ताव था।
(डाकोटा, 1998)। भक्तों द्वारा उस इमारत को हॉलीवुड मंदिर से कहीं अधिक पवित्र माना जाता है, क्योंकि योगानंद ने उस ऐतिहासिक इमारत में लंबे समय तक निवास

किया था। जाहिर है, किसी स्थान की पवित्रता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे कौन गिराने की योजना बना रहा है। ("सर, अभी भी सराय में जगह नहीं है, लेकिन अगर हम इसे गिराकर उसकी जगह एक ऊंची इमारत बना दें...")

• एचवी आश्रम प्रशासन के अनुसार, सन् 1999 में ही...

सत्संग में व्यवस्थापक के रूप में, एसआरएफ ने एक छवि सलाहकार को नियुक्त किया था। उस विशेषज्ञ की सलाह यह थी कि एसआरएफ को "एक ऐसे आध्यात्मिक संगठन के रूप में पहचान बनाने की दिशा में काम करना चाहिए जो अपने आदर्शों पर किसी भी अन्य संगठन से अधिक खरा उतरता है।"

अन्य।" एसआरएफ के कथित खराब व्यवहार (कैंडर,

हालांकि, माउंट वाशिंगटन के विस्तार के उनके प्रयास में (2001) विडंबना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

वास्तव में, आसपास के वातावरण में उत्पन्न असंतोष

उस प्रयास के दौरान समुदाय में पड़ोस की बैठकों में धांधली के आरोप भी शामिल थे। ये बैठकें एक ऐसे विस्तार के प्रयास के लिए हो रही थीं, जिसकी तुलना उस पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील आवासीय क्षेत्र में "साढ़े चार होम डिपो स्टोर" के विकास से की गई थी। इसके जवाब में, "[फेलोशिप समर्थकों ने चर्च के विरोधियों की तुलना नाजियों से की है]"।

(रसेल, 1999)

• हिडन वैली में मेरे प्रवास के दौरान, एक साथी श्रद्धालु से मुलाकात हुई।

शांति कोर में शामिल होने के लिए उन्होंने आश्रम छोड़ दिया। उनके जाने के कुछ ही हफ्तों के भीतर, प्रधान भिक्षु ने सत्संग का नेतृत्व किया। वहाँ हमें बताया गया कि जो कोई भी विश्व शांति के लिए काम करने के लिए आश्रम छोड़ता है, अगर वह वहीं रहकर मठ में "गुरुदेव का काम" करता तो वह कहीं अधिक अच्छा काम करता।

• संबंधित मामलों में, लगभग कार्यात्मक रूप से निरक्षर राख-

एक प्रशासक, जिसकी पढ़ने की क्षमता मात्र छठी कक्षा तक सीमित थी, ने एक बार सत्संग में कहा था कि "जो वैज्ञानिक अपनी बुद्धि का उपयोग ईश्वर की खोज के बजाय 'प्रसिद्ध होने' के लिए करते हैं, वे उस बुद्धि का दुरुपयोग कर रहे हैं।" एक पूर्व प्रशासक ने भी इसी प्रकार दावा किया था कि "आइंस्टीन की अंतर्ज्ञान शक्ति उनके जीवन के अंतिम वर्षों में विफल हो गई थी," क्योंकि महान वैज्ञानिक ने कथित तौर पर 272

वे यह देख नहीं पाए कि स्वीकृत अनिश्चिततावादी क्वांटम सिद्धांत सही था। (यह कथन वास्तव में "अंतिम सत्य" नहीं है, जैसा कि डेविड बोहम के नोबेल पुरस्कार योग्य कार्य ने दिखाया है [देखें बोहम और हिले, 1993]। इस प्रकार, "आइंस्टीन का अंतर्ज्ञान" सही था, जबकि ये रूढ़िवादी प्रशासक और आज के कई भौतिक विज्ञानी आत्मविश्वास से गलत हैं।)

इस संबंध में निश्चितता संभवतः इसी से उत्पन्न हुई थी

अनिश्चिततावादी क्वांटम सिद्धांत और पूर्वी धर्म/ध्यान के बीच कथित "समग्र" संबंधों से उत्पन्न होने वाले ये विचार 70 के दशक के मध्य से ही फ्रिटजोफ कैप्रा और अमित गोस्वामी जैसे गुमराह लेखकों द्वारा प्रतिपादित किए गए हैं और एसआरएफ के कुछ प्रकाशनों में प्रशंसा के साथ उद्धृत किए गए हैं। गोस्वामी ने स्वयं एक बार एसआरएफ को एक प्रशंसा पत्र लिखकर योगानंद के लेखन की प्रशंसा की थी। हालांकि, अमित के "क्वांटम चेतना" पर गैर-काल्पनिक चिंतन को स्पष्ट विज्ञान कथा के रूप में प्रकाशित करना बेहतर होता। क्योंकि, वास्तविकता में, ऐसे "संबंध" अधिक से अधिक संयोगवश ही हैं और इन्हें उन व्यक्तियों की मात्र इच्छाधारी सोच से उत्पन्न माना जा सकता है जिन्हें तत्वमीमांसा की लगभग कोई समझ नहीं है।

बहरहाल, अपनी बुद्धि का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए?

“भगवान के लिए”? आश्रमों में प्रवेश करके और अपने आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा दिए गए निर्देशों का स्वेच्छा से पालन करके, बिल्कुल।

• एसआरएफ मुख्यालय में भिक्षुओं की विशेष सभा में

सन् 1998 की क्रिसमस के आसपास, निदेशक मंडल की एक ममतामयी सदस्य ने सभा में उपस्थित लोगों को एक चुटकुला सुनाया: “नास्तिक क्या होता है? एक गैर-पैगंबर धर्म का अनुयायी।” इस चतुर पहेली को आश्रम में एक सत्संग में गर्वपूर्वक सुनाया गया, मानो उन पवित्र, बुद्धिमान और “आध्यात्मिक रूप से उन्नत” माताओं की ओर से “क्रिसमस का उपहार” हो। और वहाँ उपस्थित सभी लोग आज्ञाकारी भाव से हँसे, यह जाने बिना कि यह वाक्य वास्तव में जॉर्ज कार्लिन के एक प्रसिद्ध कथन का विकृत रूप है, यानी “नास्तिकता एक गैर-पैगंबर संगठन है”।

• एक शाम, एसआरएफ के प्रशिक्षुओं का संचालन करने वाले भिक्षु (अर्थात,

“नए भिक्षु” आश्रम में एच.वी. अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित हुए। मठ के प्रमुख के रूप में अपने अनूठे दृष्टिकोण से उन्होंने जो एक बात उठाई, वह यह थी कि “मठवासी प्रतिज्ञा लेने के बाद आश्रम छोड़ने की सबसे अधिक संभावना उन्हीं लोगों की होती है जो सबसे अधिक स्वतंत्र होते हैं।” यद्यपि यह बात निस्संदेह सत्य है, फिर भी इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि... एक ननरी के लिए 273

आत्मनिर्भरता और स्वयं सोचने की क्षमता को बुरी बातें माना जाता है, जबकि वास्तविकता में यही इस दुनिया में कुछ भी मौलिक करने का एकमात्र तरीका है। इससे भी बुरी बात यह है कि स्वतंत्रता के प्रति अरुचि जैसी घुटन भरी सोच, दूसरों के अंधाधुंध अनुमानों और गलत सलाह का पालन करने को "अहंकार को ठेस पहुंचाने वाला" गुण बना देती है। ये सोच, जानबूझकर गलत का पालन करने के बावजूद, अपने विवेक के विरुद्ध जाकर भी अंधाधुंध अनुसरण करने की असमर्थता को पाप के रूप में चित्रित करती है।

• एसआरएफ के नेताओं/गुरुओं की श्रृंखला में से प्रत्येक—उनके “प्रमुख”—
दया माता से लेकर कृष्ण तक, सभी देवताओं को आज्ञाकारी एसआरएफ भक्त अचूक मानते हैं और उनके किसी भी संदिग्ध कार्य के मामले में उन्हें "रहस्यमय तरीके से कार्य करने वाला" समझते हैं। मैंने भी एक समय मूर्खतापूर्वक उन्हें इसी तरह देखा था। क्योंकि, ऐसा मानना बस वही था जो मुझे उन लोगों द्वारा सही बताया गया था जिनसे मैंने यह उम्मीद की थी कि वे मुझे कभी जानबूझकर गुमराह नहीं करेंगे, क्योंकि मैंने भी उनसे कभी झूठ नहीं बोला था।
जैसा कि मार्जरी वेकफील्ड (1993) ने अपने बारे में उल्लेख किया है और
साइंटोलॉजी में दूसरों की भागीदारी:
मैंने अनजाने में यह घातक धारणा बना ली थी कि चूंकि मैं ईमानदार हूं और मेरे इरादे अच्छे हैं, तो दूसरे भी वैसे ही होंगे।

• जेम्स जे. लिन, जिन्हें योगानंद ने स्वयं चुना था
एसआरएफ के दूसरे अध्यक्ष, विवाहित व्यक्ति थे। यानी, योगानंद द्वारा उन्हें राजसी जनकनंद की उपाधि दिए जाने से पहले, उसके दौरान और बाद में भी उनका विवाह हुआ था। (हालांकि, उनकी पत्नी "मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ" थीं और सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप से उनके जुड़ाव का समर्थन नहीं करती थीं [माता,

1992])। हालांकि, यह तथ्य प्रासंगिक साहित्य में स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है, उदाहरण के लिए, एसआरएफ द्वारा प्रकाशित लिन की जीवनी में।
उस विसंगति का मुद्दा एचवी निवासियों में से एक ने उठाया था।
सत्संग काल में हुई गड़बड़ियों के संबंध में, आश्रम के प्रशासक ने उस जानकारी के प्रकाशन न होने का जो औचित्य प्रस्तुत किया, वह सरल और अनुमानतः यही था कि "निदेशक मंडल और दया माता यही चाहती हैं"।
• वह सीमा जिस तक किसी से अपने बड़ों का सम्मान करने की अपेक्षा की जाती है- एसआरएफ के एक अच्छे और आज्ञाकारी भक्त के रूप में "ईआरएस" को 274 गुरुओं को नंगा करना

हिडन वैली में दिए गए एक प्रवचन के दौरान उद्धृत निम्नलिखित (वास्तविक) संवाद द्वारा स्कोर किया गया:
बुजुर्ग: "आप कैसे हैं?"
युवा हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति: “मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं?”
बुजुर्ग (इस धृष्टता से नाराज़ होकर): "क्या आप डॉक्टर हैं?"
टोर?
• या, प्रस्तावित परिभाषाओं में किए गए परिवर्तनों पर विचार करें।
आत्मकथा के अध्याय 40 में वर्षों से चले आ रहे प्रणाम/प्रणाम के संदर्भ में:
[प्रणाम:] शाब्दिक अर्थ, "पवित्र नाम", हिंदुओं में अभिवादन का एक शब्द है, जिसके साथ हथेलियों को जोड़कर हृदय से माथे तक हाथ उठाकर अभिवादन किया जाता है। भारत में प्रणाम पश्चिमी देशों के प्रणाम का स्थान लेता है।
हाथ मिलाकर अभिवादन करना (योगानंद, 1946)।
हालाँकि, हाल ही में, (प्रतिस्थापन-
(संपादक) शब्द का अर्थ बदल गया है और अब यह गेरूए वस्त्र के प्रति उचित सम्मान को अधिक दर्शाता है:
[प्रणाम:] शाब्दिक अर्थ, "पूर्ण अभिवादन," संस्कृत मूल नाम से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है प्रणाम करना या झुकना; और उपसर्ग प्रा, जिसका अर्थ है पूर्णतः। प्रणाम अभिवादन मुख्यतः भिक्षुओं और अन्य सम्मानित व्यक्तियों के समक्ष किया जाता है (योगानंद, 1998)।

• इसके अलावा, प्रश्न पूछने को किस हद तक हतोत्साहित किया जाता है
आश्रम की स्थिति को निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है: हिडन वैली में मेरे शुरुआती प्रवास के दौरान, हमारे थैंक्सगिविंग भोजन में सोया आधारित टर्की का विकल्प मुख्य था। उस भोज के बाद, एक निवासी ने लिखित सत्संग प्रश्न में बताया कि उस भोजन में एमएसजी की मात्रा अधिक थी, जिससे कई लोगों को एलर्जी होती है या सिरदर्द हो जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि एमएसजी रहित टर्की के विकल्प आसानी से उपलब्ध हैं, और आश्रम से अनुरोध किया कि भविष्य में उन्हीं का उपयोग किया जाए।
आश्रम प्रशासक की उस अनुरोध पर प्रतिक्रिया
उनका उद्देश्य यह कहानी सुनाना था कि कैसे एसआरएफ के शुरुआती दिनों में, ननें त्योहारों के लिए ग्लूटेन-आधारित मांस के विकल्प हाथ से तैयार करने के लिए "पूरी रात" (शिफ्ट में) काम करती थीं। उन्होंने यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि वे रसोई को... एक ननरी को 275

एचवी में भी इसी तरह की तैयारियों में पूरी रात काम करना पड़ता (हालांकि उन्हें ऐसा करना ज़रूरी नहीं था, लेकिन फिर भी)। इस प्रकार, आश्रम एमएसजी युक्त उत्पाद परोसना जारी रखता।
और वहां मौजूद सभी लोग मुस्कुराते हुए समझ गए कि कोई भी
वे आश्रम को सुधारने की इतनी मूर्खतापूर्ण कोशिश करेंगे, और वहाँ "भगवान और गुरु द्वारा दी गई चीज़ों का विरोध करेंगे"।
• अन्य समयों पर, एचवी प्रशासक ने अपने स्वयं के पूर्व अनुभव बताए-
1950 के दशक में एक "स्वास्थ्य के प्रति सजग" के रूप में आश्रमों में प्रवेश करने और वहाँ परोसे जाने वाले घटिया भोजन से चिंतित होने का मेरा अनुभव रहा है। जब मैंने इस बारे में एक वरिष्ठ भिक्षु से बात की, तो उनका जवाब बस इतना था, "गुरुजी जो देते हैं, वही ग्रहण करो।" यह सलाह अपेक्षाकृत ठीक लगती है, जब तक कि हम यह न सोचें कि ईस्टर के दौरान (1996 में, जब मैंने पहली बार हिडन वैली में एक महीना बिताया था), "गुरुजी/भगवान ने हमें"—पक्के शाकाहारियों के एक समूह को —दानों का एक डिब्बा दिया जिसमें चर्बी थी।
आश्चर्यजनक रूप से, हालांकि योगानंद ने बहुत स्पष्ट रूप से सिखाया

सफेद आटे और सफेद चीनी का सेवन अस्वास्थ्यकर है, जबकि ये दोनों आश्रम के आहार का अभिन्न अंग हैं। वास्तव में, कभी-कभी ताजे संतरे के रस में भी चीनी मिलाई जाती थी, और साबुत गेहूं का आटा लगभग न के बराबर था। इस विसंगति के संबंध में आश्रम प्रशासक ने जो स्पष्टीकरण दिया, वह यह था कि योगानंद की आहार संबंधी सलाह कथित तौर पर केवल उस विशिष्ट समूह के लोगों पर लागू होती थी जिनसे वे उस समय बात कर रहे थे। व्यक्तिगत रूप से, मुझे यह बात बेतुकी लगती है: उदाहरण के लिए, योगानंद नियमित रूप से अपने अनुयायियों को केवल "बिना सल्फर वाले" फल खाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। आज के समय में, इसका अर्थ प्रमाणित जैविक फल होना है। फिर भी (मेरी जानकारी के अनुसार) एचवी कैफेटेरिया में इसका कोई उदाहरण नहीं मिलेगा (सिवाय उन उत्पादों के जो वे स्वयं उगाते हैं, जो लगभग जैविक होते हैं)।

हिडन वैली का मेनू, योगानन के अनुरूप नहीं है-

योगानंद की शिक्षाएँ, उनके रसोई कर्मचारियों के बीच सांस्कृतिक निम्नतम स्तर का मात्र परिणाम हैं। यह "वह नहीं है जो गुरु उन्हें देते हैं," और न ही योगानंद की आहार संबंधी सलाह पचास साल पहले केवल "मांस और आलू" खाने वाले लोगों पर लागू होती थी।

• एसआरएफ के सम्मानित मठवासी भाइयों में से एक आमतौर पर इसे स्थापित करेगा।

दीक्षांत समारोह के भाषण के लिए अस्सी घंटे तक का पूर्वाभ्यास किया जाता है—हिडन वैली के प्रमुख भिक्षु के अनुसार, चेहरे के हाव-भाव और हाथ के इशारों का अभ्यास भी किया जाता है। ऐसी तैयारी में कोई बुराई नहीं है, बेशक। 276 गुरुओं का सार उजागर करना

हालांकि, उन आयोजनों में उपस्थित अधिकांश श्रोता निस्संदेह यह मानते हैं कि वे व्याख्यान "अंतर्ज्ञान से" दिए जाते हैं, बिना किसी तैयारी के या बहुत कम तैयारी के साथ—भिक्षु के पचास से अधिक वर्षों के ध्यान के आधार पर—जैसा कि योगानंद ने स्पष्ट रूप से सिखाया और अभ्यास किया था। एसआरएफ द्वारा (अपने दीक्षांत साहित्य और टेपों में) उन्हें "अनौपचारिक वार्ता" के रूप में संदिग्ध रूप से प्रस्तुत करना, जबकि वास्तव में वे अत्यधिक पूर्वनिर्धारित होती हैं, इस धारणा को दूर करने

में कोई मदद नहीं करता है।
• उसी भिक्षु ने भक्तिपूर्ण "ग्रहणशीलता" या "उदासीनता" की प्रशंसा की।
भारत में श्रोताओं द्वारा "अवशोषक श्रवण" की प्रवृत्ति, पश्चिमी श्रोताओं द्वारा संतों और ऋषियों के वचनों के प्रति दिखाई जाने वाली "बौद्धिक जिज्ञासा/विश्लेषण" और चिंतन से बिल्कुल विपरीत है। (इसके विपरीत, आर्थर कोस्टलर की [1960] द लोटस एंड द रोबोट, गीता मेहता की [1979] कर्मा कोला और सारा मैकडोनाल्ड की मनमोहक [2003] होली काउ, ये सभी रचनाएँ भारत में, आश्रमों के अंदर और बाहर, जीवन कैसा है, इस बारे में संशयवादी दृष्टिकोण से आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटन प्रस्तुत करती हैं। स्ट्रेली की [1987] द अल्टीमेट गेम भी ऐसा ही करती है।)
(कम पूर्वाग्रही दृष्टिकोण।) जैसा कि राधा (1978) ने खतरनाक ढंग से व्यक्त किया: पूर्वी मानसिकता अंतर्ज्ञान और बुद्धि के बीच उतना स्पष्ट अंतर नहीं करती जितना पश्चिमी मानसिकता करती है। पश्चिमी मानसिकता के लिए कठिनाई तब आती है जब अंतर्ज्ञान की कीमत पर बुद्धि को अधिक महत्व दिया जाता है। सरल व्यक्ति, जो बौद्धिक अवधारणाओं से मुक्त होता है, अधिक ग्रहणशील होता है। ग्रहणशील बने रहने और बुद्धि के निरंतर हस्तक्षेप से बचने के लिए क्या किया जा सकता है? बौद्धिक चिंतन को त्यागें और केवल ग्रहण करें।
हालाँकि, इसके अन्य संभावित स्पष्टीकरण भी हैं।
इस प्रकार की पूर्वी “गैर-बौद्धिक ग्रहणशीलता”:
पान खरीदने वाला व्यक्ति इसे चबाने वाले तंबाकू की तरह अपने गाल में रखता है। कहा जाता है कि इसमें गति का तत्व होता है, जिससे उपयोगकर्ता की आंखों में थोड़ी चमक आ जाती है और ऊर्जा के शुरुआती उछाल के बाद सुस्ती और लड़खड़ाती चाल दिखाई देती है।
पिछले कुछ वर्षों में मुझे यह देखकर हंसी आती थी कि कई नए-
पश्चिमी देशों से आए लोग भारतीयों के चेहरे पर दिखने वाले "ध्यानमग्न" भाव का जिक्र करते थे, जबकि वास्तविकता में... एक नन आश्रम की ओर 277

वे जो लक्षण देख रहे थे, वे अक्सर इस मादक पदार्थ को चबाने का परिणाम थे (स्ट्रेली, 1987)।
रजनीश के आश्रमों में प्रवेश करने से पहले, स्ट्रेली स्वयं...

वह ड्रग्स बेचकर अपना गुजारा करती थी; उसे इस बारे में अच्छी जानकारी है।
बेशक, कोई भी व्यक्ति इसके प्रभावों का महिमामंडन करने के लिए हमेशा स्वतंत्र है। किसी की पसंदीदा नशीली दवाएँ। हालाँकि, व्यापक, नशीली दवाओं से प्रेरित बेहोशी को ध्यानपूर्ण आध्यात्मिकता के साथ भ्रमित करने और बाद वाले के वेश में पहले वाले का जश्न मनाने की स्वतंत्रता समान रूप से नहीं है। न ही कोई इस बात पर अफसोस जता सकता है कि "पश्चिम" में अक्सर "चीच और चोंग" जैसी ग्रहणशीलता की कमी होती है! और आइए हम मतिभ्रम पैदा करने वाले पदार्थों के उपयोग के बारे में बात ही न करें।
पूर्वी और पश्चिमी दोनों क्षेत्रों में धार्मिक अनुष्ठानों में योटे (दास, 1997) और मैजिक मशरूम (एलेग्रो, 1970) का उपयोग किया जाता है।
यह (गैर-नशीली) "अंधाधुंध भक्ति" से असंबंधित नहीं है।
पूर्व में पाई जाने वाली एक बात आई. के. तैमनी की यह मूल टिप्पणी है कि (अनुरूपतावादी मनोविज्ञान) पूर्वी भारतीय विचार की सबसे बड़ी खामी हमेशा से ही किसी भी बात को बिना किसी और प्रश्न के स्वीकार करने की प्रवृत्ति रही है, जब वह बात किसी प्राधिकारी द्वारा कही गई हो।
किसी भी मामले में, बौद्धिक रूप से समझने का प्रयास
और "अच्छी-बुरी बातों को बुरी बातों से अलग करना" बिल्कुल आवश्यक है यदि किसी को स्वयं सोचने की क्षमता बनाए रखनी है, या "भगवान के नाम पर" सुनाई जाने वाली हर मनगढ़ंत कहानी को बिना सोचे-समझे स्वीकार करने से बचना है।
वज्रयान (अर्थात तांत्रिक बौद्ध धर्म) में गुरु के प्रति भक्ति को संदेह को नष्ट करने का साधन माना जाता है। अहंकार का आश्रय माने जाने वाले संदेह को अब बढ़ावा नहीं दिया जाता—इसे कुचलना ही पड़ता है। लेकिन यदि संदेह और भक्ति के बीच चुनाव करना ही पड़े, तो मेरा मानना है कि संदेह को प्राथमिकता देना बेहतर है। यह विवेक और इसलिए ज्ञानोदय के लिए आवश्यक है; मार्ग में किसी भी चीज़ को संशयपूर्ण जांच से नहीं बचाया जाना चाहिए, विशेषकर
भक्ति नहीं (बटरफील्ड, 1994)
• योगानंद ने लड़कों के लिए अलग से वर्दीधारी स्कूलों की स्थापना की।
और भारत में लड़कियों के लिए। हिडन वैली के प्रशासक ने एक बार सार्वजनिक रूप से यह राय व्यक्त की थी कि अगर परमहंस ने यहां स्कूल स्थापित किए होते, तो वे

निश्चित रूप से अमेरिका में भी इसी तरह की व्यवस्था लागू करवाना चाहते।
278 गुरुओं का पर्दाफाश

इस प्रकार से लिंगों को अलग करने से, निश्चित रूप से, कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। इसका उद्देश्य समलैंगिक गतिविधियों को लेकर एसआरएफ की चिंता को कम करना है, क्योंकि आवासीय लड़कों के स्कूल ठीक इसी तरह की गतिविधियों के लिए व्यापक रूप से कुख्यात हैं।
यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कैथोलिक मठ और पादरी के निवास स्थान की दुनिया में आनुपातिक रूप से अधिक समलैंगिक सक्रिय होंगे... यह किसी भी विशुद्ध रूप से पुरुष प्रधान स्थिति के लिए सच है - सेना में, गैर-सहशिक्षा विद्यालय में, आदि।
बॉय स्काउट्स (विल्स, 2000)
• एसआरएफ का संरक्षण और रूपांतरण पर जोर
आध्यात्मिक (कुंडलिनी) जागृति के साधन के रूप में यौन ऊर्जा का उपयोग करने से इसके अनुयायियों में कैथोलिकों जैसी, अपराधबोध से भरी यौन मनोवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि, यदि चुनाव यौन संबंध और आध्यात्मिक उन्नति के बीच हो—अर्थात्, यदि यौन गतिविधि व्यक्ति को ईश्वर से दूर ले जाती है—तो भला इसमें लिप्त होने पर अपराधबोध क्यों न हो? इसके बावजूद, एक सत्संग प्रश्न के उत्तर में, एचवी आश्रम के प्रशासक ने एक बार स्पष्ट रूप से सुझाव दिया था कि जो कोई भी जीवन भर के लिए मठवासी जीवन में प्रवेश न करने का निर्णय लेता है, उसे विवाह कर लेना चाहिए, ताकि "जब चाहे जो चाहे करने की स्वतंत्रता" से उसका अहंकार मजबूत न हो। (जैसे कि "वास्तविक दुनिया" किसी की इच्छाओं के प्रति इतनी उदार और लचीली हो! और जैसे कि प्यार में पड़ने का इससे मूर्खतापूर्ण कारण हो ही नहीं सकता।) इससे यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि जब तक कोई आधिकारिक मठवासी समूह का हिस्सा नहीं बनने वाला, उसे एकांतवासी जीवन शैली जीने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह "अहंकारी और स्वार्थी" होने का दोषी हो जाए।
• उसी प्रशासक ने सत्संग में दावा किया कि एसआरएफ
सदस्यों को शादी से पहले साथ नहीं रहना चाहिए, क्योंकि इससे आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले लोगों के प्रति दूसरों की धारणा पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। जहाँ तक इस

बात का सवाल है कि विवाह लाइसेंस नामक कागज़ का टुकड़ा ईश्वर की नज़र में सहवास को कैसे अधिक स्वीकार्य बना देता है, इसका कभी स्पष्ट स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।
हालांकि, स्रोत का पता लगाना काफी आसान है।
उस रूढ़िवादी सोच के लिए। क्योंकि, यह सब एसआरएफ के ब्रदर आनंदमय (1995) द्वारा एक रिकॉर्ड किए गए भाषण में व्यक्त किए गए विचारों की, मूल रूप से उन्हीं शब्दों में, पुनरावृति मात्र है।
रूढ़िवादी व्यवहार और अनुरूपता, तब प्रतीत होगी-
ऐसा प्रतीत होता है कि यही सामान्य नियम है, कहीं ऐसा न हो कि कोई "गलत काम" करने के मात्र दिखावे से ही दूसरों को नाराज कर दे। (राख में लंबे बाल भी... एक ननरी के लिए 279)

दया माता के आदेशानुसार, भारत में भिक्षुओं को छोड़कर, भेड़ों का पालन वर्जित है। जहाँ तक मुझे याद है, दाढ़ी बढ़ाने से पहले अनुमति लेनी पड़ती है, सिवाय उन लोगों के जो आश्रम में दाढ़ी के साथ प्रवेश करते हैं। इसके विपरीत, सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन भी "कम आध्यात्मिक" लोगों पर छोड़ दिया जाता है।
50 के दशक में खोया हुआ, या यहाँ तक कि 30 के दशक में, और इस बात पर गर्व है।
• आनंदमय (1979) ने आगे कहा है कि, इसके कारण-
एसआरएफ के भीतर निर्धारित अनुशासन और नियमों के अनुसार, "हमारे आश्रम में कोई पीढ़ीगत अंतर नहीं है, हालांकि आयु अठारह से नब्बे वर्ष से अधिक तक है।" यह सच हो भी सकता है और नहीं भी। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि एक समान "सम्मान का अंतर" अवश्य ही मौजूद है, जो लोगों को एक-दूसरे से दूर रखता है। यह दूरी आश्रमों में बिताए गए समय की अवधि, पद या फिर कमीज के रंग पर आधारित हो सकती है। (नीला = साधक, पीला = ब्रह्मचारी, नारंगी = संन्यासी।) क्योंकि, जब मठवासी जाति व्यवस्था में एक नीली कमीज नारंगी कमीज से मिलती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं रहता कि कौन आध्यात्मिक रूप से अधिक उन्नत है, और इसलिए सम्मानपूर्वक सुने जाने का अधिक पात्र है।
बटरफील्ड (1994) ने अपने स्वयं के तुलनीय अनुभव का वर्णन किया।

ट्रुंगपा के बौद्ध समुदाय के भीतर के अनुभव:
किसी संगठन में, जहाँ पद-स्तरीय अभ्यास, कार्यालय और रंगीन पिनों के माध्यम से पद का अत्यधिक महत्व दिया जाता है, वहाँ पद का दुरुपयोग करना आसान होता है। जब आपसे उच्च पद वाला कोई वरिष्ठ छात्र भावनात्मक रूप से आपको धोखा देता है या कोई घृणित अहंकारपूर्ण व्यवहार करता है, जिस पर आप खुलकर आक्रोश और क्रोध व्यक्त करते हैं, तो स्थिति श्रेष्ठता की होड़ में बदल सकती है। पद में उच्चतर छात्र आपके आक्रोश को इस प्रकार उजागर करता है मानो यह केवल आपके निम्न स्तर के अभ्यास से जुड़ी अहंकार की समस्या का परिणाम हो।
बेशक, पीढ़ीगत अंतर के संदर्भ में, यह मुश्किल होगा।
किसी भी बंद समुदाय में लोगों को बनाए रखने के लिए। क्योंकि वहाँ, विभिन्न लोकप्रिय रुचियों में लिप्त होना, जो सामान्यतः पीढ़ियों को अलग करती हैं, हतोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, युवा पीढ़ी के किसी भी कट्टरपंथी व्यवहार को आश्रम के द्वार के बाहर ही छोड़ दिया जाता है, ताकि युवा पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी की तरह रूढ़िवादी बनाया जा सके, बजाय इसके कि पुरानी पीढ़ी युवा पीढ़ी से मिले।
280 गुरुओं को दरकिनार करना

या (भगवान न करे) उनसे सीखें। कहने का तात्पर्य यह है कि जब बंद सामुदायिक जीवन उन विचारों पर आधारित होता है जो समुदाय के "पूर्वजों" से भी पहले के हैं, और सभी सदस्यों से उन आदर्शों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है, तो पीढ़ियों के बीच वास्तव में कोई खास अंतर नहीं रह जाता। इसके लिए समुदाय के प्रतिबंधात्मक नियमों को भी उचित ठहराया जा सकता है।
लेकिन "वास्तविक दुनिया" में, यह बिल्कुल सापेक्ष है।
ऐसी पाबंदियों का अभाव ही आमूल सामाजिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक परिवर्तन की अनुमति देता है। दूसरे शब्दों में: यदि "वास्तविक दुनिया" रूढ़िवादी, समरूप और "अतीत में अटकी" होती, जैसा कि ये रूढ़िवादी आध्यात्मिक समुदाय हैं, तो कभी भी कुछ भी बेहतर नहीं होता।
यहां तक कि आध्यात्मिकता के संदर्भ में भी, मानवीय समझ-
पिछले पच्चीस वर्षों में आध्यात्मिक स्वतंत्रता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। हालाँकि, यह वृद्धि विश्व के आश्रमों से नहीं हुई है। बल्कि, यह उन लोगों से हुई है जो सामान्यतः

इतने स्वतंत्र और रचनात्मक थे कि वे न केवल उन बंद समुदायों के, बल्कि कहीं अधिक कम रूढ़िवादी "वास्तविक दुनिया" के भी घुटन भरे नियमों और अनुशासन को सहन नहीं कर सके।

वास्तव में, किसी भी क्षेत्र में मौलिक रूप से रचनात्मक सफलताएँ प्राप्त करना संभव है।

ऐसे सुझाव उन लोगों से आने की अधिक संभावना है जो अपने नियम स्वयं बनाते हैं। जो लोग दूसरों के नियमों के दायरे में रहकर जीवन का आनंद लेते हैं, इस गलत धारणा के साथ कि इस तरह की धीमी और पीड़ादायक मृत्यु का आध्यात्मिक उन्नति से कोई संबंध है, वे ऐसे योगदान देने वाले नहीं हैं।

इसके विपरीत, यह विचार कि "जब आप उतने ही महान होते हैं जितने कि
"गांधी जी, आप नियमों को तोड़ सकते हैं, जैसा कि गांधी जी ने किया" यह कथन बिलकुल उल्टा है। दरअसल, कोई व्यक्ति तभी "महान" बनता है, चाहे वह किसी भी हद तक हो, जब वह मौजूदा नियमों को पहले पूरी तरह से समझकर, उन्हें विवेकपूर्ण तरीके से तोड़कर ऐसे काम करता है जो स्वीकृत सीमाओं के भीतर संभव नहीं होते। यदि किसी ने कभी भी नियमों को बुद्धिमानी से नहीं तोड़ा है, तो संभवतः उसने जीवन में कभी भी कोई सचमुच मौलिक कार्य नहीं किया है।

जैसा कि स्वयं योगानंद (1986) ने कहा था:

मैं नियमों का पालन करता हूँ—जितना मैं चाहता हूँ, और फिर मैं कहता हूँ, "नियमों का नाश हो!"

अब पहले से कहीं अधिक प्रयास किए जा रहे हैं
औसत मनुष्य को वांछनीय स्तर तक उठाना... एक ननरी के लिए 281

संस्कृति; लेकिन इसके साथ हमेशा यह खतरा भी जुड़ा रहता है कि प्रतिभा को औसत दर्जे की सीमाओं में जकड़ दिया जाए।

• दिलचस्प बात यह है कि क्लिंट ईस्टवुड की कुछ "स्पैगेटी वेस्टर्न" फिल्में भी हैं।

हिडन वैली आश्रम में भिक्षुओं और निवासियों द्वारा अपनी मासिक फिल्म रातों में दिखाई जाने वाली फिल्मों को पूर्व-अनुमोदित किया जाता है। इसके विपरीत, 'द साउंड ऑफ म्यूजिक' प्रतिबंधित है। कारण? फिल्म में, जूली एंड्रयूज का किरदार एक साध्वी के रूप में जीवन बिताने पर विचार कर रहा होता है, लेकिन फिर उसे "अपने

सपनों का राजकुमार" मिल जाता है और वे "हमेशा के लिए खुशी से रहते हैं"। हालांकि, प्रेम के ऐसे आदर्श चित्रण को दिखाने से वहां रहने वाले लोगों के मन में गलत धारणाएं पैदा हो सकती हैं।
हालांकि, बंदूकें अपेक्षाकृत ठीक हैं।
• एचवी में एक निवासी स्वयंसेवक ने एक बार टिप्पणी की थी कि यह मेरी सीमा के भीतर है।
मैंने अक्सर सुना है कि "हिडन वैली में आप जो कुछ भी करते हैं, उसकी चर्चा आपकी पीठ पीछे होती है।" वहाँ के अपने अनुभवों से, और अपने सीधे सुपरवाइज़र को आश्रम के प्रशासक की पीठ पीछे "बहुत ज़्यादा बोलने वाला" कहकर आलोचना करते और आश्रम के भोजन की अंतहीन निंदा करते हुए सुनकर, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह बात बिल्कुल सही है। (उनकी पैनी नज़रों का एक पहलू यह भी था कि वे बिना पूछे मेरे बालों की लंबाई और मेरे कपड़ों की खस्ता हालत पर भी टिप्पणी करते थे। जैसा कि थोरो ने एक बार कहा था: "ऐसे कामों से सावधान रहें जिनमें नए कपड़ों की ज़रूरत हो।") यह व्यापक व्यवहार उन लोगों के समूह में मौजूद है जो कथित तौर पर अपने आत्म-सुधार के बारे में चिंतित हैं। लेकिन व्यवहार में, वे अनजाने में ही योगी को "एक ऐसा व्यक्ति जो अपने अहंकार को छोड़कर बाकी सभी के अहंकार को नष्ट करने पर तुला हो" के रूप में परिभाषित करने का एक मजबूत आधार बनाते हैं।
दरअसल, आश्रम के प्रशासक ने एक बार अपना विचार व्यक्त किया था।
सकारात्मक सोच को इस विचार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि "असफलता अहंकार को कम करती है," और इसलिए इसे अच्छा माना जाता है। इस समस्या के अलावा कि योगानंद ने ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया, इस विचार का स्पष्ट विपरीत यह है कि अत्यधिक सफलता "अहंकार के नाश" में बाधा डालती है, जो आध्यात्मिक प्रगति का आधार है। इस प्रकार, अप्रत्यक्ष रूप से, भले ही कोई व्यक्ति सफल हो, उसे अपनी सफलताओं पर अत्यधिक गर्व नहीं करना चाहिए। यह समझने के लिए मानव मनोविज्ञान की उन्नत समझ की आवश्यकता नहीं है कि इन वर्जनाओं के सामने, स्वयं को अच्छा महसूस कराने का आसान तरीका "अहंकार को त्यागना" है।

"दूसरों के सिर"—भले ही उनकी पीठ पीछे, क्योंकि उनके सामने ऐसा करने से कोई "बुरा शिष्य" कहलाएगा।

• हिडन वैली में सहायता करने के मेरे कार्य के माध्यम से-
वहाँ रहने के दौरान जब मैंने सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग का व्यवसाय शुरू करने का सोचा, तो मुझे यह भी बताया गया कि मैं "अधीर" हूँ और "अहंकारी" हूँ, क्योंकि मैं काम को उनकी (और ईश्वर की) इच्छा से पहले ही पूरा कर लेता हूँ। मुझे यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया कि जब मैं अधिक ध्यान करूँगा और आध्यात्मिक रूप से अधिक उन्नत हो जाऊँगा, तो मुझे किताबें और संगीत लिखने में रचनात्मक होने की आवश्यकता महसूस नहीं होगी। अर्थात्, मैं केवल धन/श्रम दान करके "ईश्वर के कार्य की सेवा" करूँगा, बिना जीवन में कुछ मौलिक या वास्तव में रचनात्मक करने का दावा किए।
योगानंद (1986) ने तो ठीक इसके विपरीत ही शिक्षा दी थी।
साइट:
हर दिन कुछ रचनात्मक कार्य करें। लेखन रचनात्मक क्षमता और इच्छाशक्ति विकसित करने के लिए अच्छा है... मैं हमेशा कुछ नया करने की कोशिश में लगा रहता हूँ। रचनात्मक होना, बेशक, मशीनी जीवन जीने से कहीं अधिक कठिन है, लेकिन जब आपकी इच्छाशक्ति नए विचारों से जूझती है, तो उसे और अधिक शक्ति मिलती है।
इसके विपरीत, लेकिन दृष्टिकोणों के अनुरूप
आज के एसआरएफ में मौजूद, बटरफील्ड (1994) ने चोग्याम ट्रुंगपा के अधीन अपने स्वयं के शिष्यत्व के संदर्भ में निम्नलिखित अवलोकन किया:
मौलिकता का स्वागत नहीं किया जाता; इसे अहंकार की एक आवेगी प्रवृत्ति माना जाता है जिसे ज्ञान प्राप्ति से पहले मन से निकालना आवश्यक है। एक कार्यक्रम समन्वयक ने कहा, "यदि आपको मेरे भाषण में कुछ ऐसा मिलता है जो ट्रुंगपा के लेखन में नहीं है, तो यह केवल मेरा अहंकार है।"
किसी भी मामले में, "घमंडी" अनुभव जैसे कि
उपरोक्त बातों से मैं इस दृढ़ निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि "संतों का धैर्य" अधिकतर इस तथ्य से आता है कि वे किसी भी कार्य को समय पर पूरा करने का प्रयास ही नहीं करते। या फिर, वे इतने मूर्ख होते हैं कि उन्हें यह पता ही नहीं होता कि वे कितनी अक्षमता से काम कर रहे हैं। ऐसे संदर्भों में, वास्तव में "धैर्यवान" होना आसान होगा।
... एक नन आश्रम के लिए 283

कुछ भी न करना, दूसरों के दान किए गए पैसे को बर्बाद करना और इसे एक सद्गुण समझना।

• मैंने मूल खुलासे ("रिटर्न") के तुरंत बाद हिडन वैली छोड़ दी थी।

स्वामी के बारे में (रसेल, 1999) एसआरएफ और आनंद का लेख अब बंद हो चुके न्यू टाइम्स लॉस एंजिल्स में प्रकाशित हुआ था। यह संयोग मात्र था, लेकिन इसने मुझे आश्रम प्रशासक द्वारा बिना किसी अनुरोध के दी गई कहानी के “ज्ञानपूर्ण” विश्लेषण को देखने का अवसर दिया। उस विश्लेषण में उन्होंने केवल कुछ ऐसे भिक्षुओं का उल्लेख किया था जिन्हें वे जानते थे और जो स्त्रियों के प्रलोभन के कारण “भ्रष्ट” हो गए थे। उनके विश्लेषण में उन भिक्षुओं द्वारा सत्ता के कथित दुरुपयोग का कोई ज़िक्र नहीं था। न ही “दयालु, संत, ईश्वर-प्राप्त” एसआरएफ नेताओं द्वारा उस घोटाले पर दी गई निंदनीय प्रतिक्रिया का कोई संकेत था, जैसा कि पहले उद्धृत किया गया था।

उपर्युक्त “ऋषि” ने समाचार का उल्लेख किया-

जिस पत्रिका में एसआरएफ के बारे में उपरोक्त जानकारी छपी थी (अर्थात न्यू टाइम्स, लॉस एंजिल्स), उसे उन्होंने महज "गंदी बातें फैलाने वाला अखबार" बताया। उन्होंने उस लेख को सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप पर कीचड़ उछालने और उनके नियोजित विस्तार को रोकने का एक प्रयास मात्र समझा। उनके शब्दों में, वह लेख "बेकार" था, जिसमें दखल देने का कोई फायदा नहीं, खासकर तब जब किसी ऐसे व्यक्ति ने, जो स्पष्ट रूप से सच्चाई का आकलन करने की स्थिति में है, इसके बारे में चेतावनी दी हो।

मुझे बाद में बताया गया कि वही आदरणीय भिक्षु ऐसा करेंगे।

जब उसकी रोज़ाना की दवा लेने का समय आया, तो उसने जानबूझकर अपनी गोल्फ कार्ट में बैठकर भाग जाने का नाटक किया, और ऐसा दिखाया जैसे उसने आश्रम के उस निवासी को नहीं देखा जिसे हर्निया हो गया था और जो उसके भले के लिए उसके पीछे-पीछे आ रहा था।

• भौतिक कार्यों के लिए आवश्यक पर्यावरण प्रभाव रिपोर्ट

माउंट वाशिंगटन मुख्यालय के विस्तार को भी उस प्रशासक ने स्पष्ट रूप से समुदाय को टालने की एक रणनीति के रूप में देखा। वास्तव में, उस बाधा के प्रति उनकी प्रतिक्रिया बस इतनी थी कि "लोग एसआरएफ का विरोध करने का कोई न कोई कारण ढूंढ ही लेंगे," मानो उस ईआईआर को करने का कोई और आधार ही न हो!

दरअसल, हाल ही में हुए एसआरएफ में से एक के संबंध में
प्रकाशनों में—मेरा मानना है कि यह उमर खाय-यम की रुबाइयात का उनका संस्करण था—यह भी उल्लेख किया गया था कि चित्रकारों और एसआरएफ सदस्यों में से एक, जो चित्रों पर काम कर रहे थे, 284 गुरुओं को चित्रित करना

प्रकाशन तिथि नजदीक आने पर संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन कठिनाइयों का स्पष्ट कारण शैतान द्वारा आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप के माध्यम से सत्य के प्रसार को रोकने का प्रयास बताया गया। ऐसे में, एसआरएफ द्वारा माउंट वाशिंगटन विस्तार के किसी भी विरोध को शैतानी प्रेरणा से प्रेरित न मानना असंगत होगा। उनसे यही अपेक्षा की जाती है कि वे वर्तमान "दुष्ट, राक्षसी अश्लीलता" पुस्तक के प्रति भी ठीक यही दृष्टिकोण रखें।
सन् 1951 की गर्मियों में ही गुरुजी अक्सर मुझसे कहते थे कि राजसी का जीवन गंभीर खतरे में है और शैतान उनके शरीर को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। जब मैंने गुरुजी से पूछा कि शैतान राजसी के शरीर को क्यों नष्ट करना चाहता है, तो उन्होंने उत्तर दिया, “क्योंकि उन्होंने ईश्वर के कार्य के लिए बहुत कुछ किया है और अभी भी कर रहे हैं, और ईश्वर के दिव्य साधन के रूप में बहुत सी आत्माओं को ईश्वर के पास वापस लाने में मदद कर रहे हैं, और शैतान इसे नष्ट करने की कोशिश कर रहा है ताकि वे आगे और कुछ न कर सकें” (माता, 1992)।
"भ्रमित विश्वास प्रणाली" वाक्यांश दिमाग में आता है। दिलचस्प बात यह है कि मूनियों का भी वास्तविकता के बारे में ऐसा ही दृष्टिकोण है।
जैसा कि ऊपर वर्णित है, शैतान का प्रभाव और उसकी शक्ति:
“मार्था, मुझे [गले में सूजन के कारण] फुसफुसाकर बोलना पड़ रहा है,” मैंने माफी मांगते हुए कहा।
“नहीं, ऐसा नहीं है! यह तो बस आपकी अवधारणा है!”
मुझे खेद है, मैं मुश्किल से बोल पा रही हूँ। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।
नकारात्मक।"
“शैतान तुम्हें नियंत्रित कर रहा है। अगर तुम ‘बाहर निकलो’ चिल्लाओगे तो...”
"शैतान, तुम कैंपस तक पूरे रास्ते जाओगे, तुम ठीक रहोगे," मार्था ने आदेश दिया (अंडरवुड और अंडरवुड, 1979)।

या, जैसा कि योगानंद (1986) ने उसी बुराई का वर्णन किया है
उन पर बल का हमला:
मैंने शैतान का काला रूप देखा, भयानक, बिल्ली जैसे चेहरे और पूंछ वाला। वह मेरी छाती पर कूद पड़ा, और मेरा दिल धड़कना बंद हो गया।
• दया माता ने स्वयं निम्नलिखित वैश्विक त्रि की भविष्यवाणी की थी (1971)
साथ ही, जैसा कि उसने सपने में देखा:
... एक नन आश्रम के लिए 285

[ईश्वर ने] संकेत दिया कि समस्त मानवजाति को एक अत्यंत अंधकारमय समय का सामना करना पड़ेगा, जिसके दौरान दुष्ट शक्तियाँ संसार को अपने वश में करने का प्रयास करेंगी... संसार अंततः कर्म के भयावह अंधकारमय बादल से बाहर निकल आएगा, लेकिन इसके लिए मानवजाति को पहले ईश्वर की शरण में आकर अपना कर्तव्य निभाना होगा।
फिर यह सवाल उठा कि ऐसा क्यों हुआ और अन्य बातें क्यों हुईं।
भविष्यवाणी के बाद के दशकों में भी वे आपदाएँ घटित नहीं हुईं जिनकी भविष्यवाणी की गई थी। इसका एक सामान्य जवाब यह दिया गया कि दुनिया को उन आपदाओं का "विस्तार" मिल रहा है, जो आध्यात्मिक रूप से उन्नत प्राणियों (जैसे स्वयं दया माता) के ध्यान पर आधारित हैं।
तुलना करना:
एक छोटे धार्मिक समूह की नेता, श्रीमती कीच ने दावा किया कि उन्हें दूसरे ग्रह के प्राणियों से संदेश मिले थे और उन्हें बताया गया था कि दिसंबर में एक दिन भूकंप और बाढ़ से दुनिया का अंत हो जाएगा। लेकिन श्रीमती कीच के प्रति समर्पित अनुयायियों को एक रात पहले अंतरिक्ष यान द्वारा बचा लिया जाएगा। तय रात को, अनुयायी बेसब्री से अंतरिक्ष यान का इंतजार कर रहे थे, लेकिन वह नहीं आया... आधी रात बीत जाने पर भी अंतरिक्ष यान का कोई नजारा न दिखने पर समूह बहुत परेशान हो गया। लेकिन फिर श्रीमती कीच ने दावा किया कि उन्हें एक संदेश मिला है जिसमें कहा गया है कि उनकी और उनके अनुयायियों की भक्ति ही आने वाली आपदा को टालने के लिए पर्याप्त थी (विन, 2000)।
या फिर एलिजाबेथ क्लेयर प्रॉफेट और सर्वनाश के माध्यम से-

टिक चर्च यूनिवर्सल एंड ट्रायम्फेंट:
सुश्री प्रॉफेट ने 23 अप्रैल, 1990 को सभ्यता के अंत की भविष्यवाणी करके राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरीं। प्रॉफेट ने इस तारीख को तय करने से इनकार किया, लेकिन स्थानीय निवासी इससे असहमत हैं। हार्डवेयर स्टोर के मालिक रिचर्ड मेयर ने कहा, "उन्होंने पिछले एक साल में कम से कम चार बार तारीख को आगे बढ़ाया है। हर बार जब ऐसा नहीं होता, तो वह कहती हैं कि यह चर्च की प्रार्थनाओं के कारण है" (निकेल, 1998)।
या फिर, एक पूर्व ज्योतिषी द्वारा कही गई यह बात, जिसे वह स्वयं झूठा मानता है:
286 गुरुओं का पर्दाफाश

हम हमेशा अपने लिए एक बहाना रखते थे, बेशक, अगर भविष्यवाणी सच न होती तो। हम कहते थे कि "कंपन" बदल गए थे, या लोगों की प्रार्थनाओं ने उस अंधकार और विनाश को टाल दिया था जिसके बारे में हमने चेतावनी दी थी लेकिन जो हुआ नहीं था (कीन, 1977)।
• एसआरएफ स्वयं को एक आध्यात्मिक संगठन होने पर गर्व करता है।
“व्यावसायिक सिद्धांतों के अनुसार संचालित।” हिडन वैली को अपना अधिकांश श्रम स्वयंसेवकों से नि:शुल्क प्राप्त होता है, और उन्हें भोजन या आवास जैसी कोई विलासिता प्रदान नहीं की जाती है। फिर भी, मेरे उनके साथ बिताए समय के दौरान, उनका व्यावसायिक क्षेत्र आर्थिक रूप से मुश्किल से ही चल रहा था। इसके बावजूद, वे अपने प्रबंधकीय निर्णयों में “सहज ज्ञान” से प्राप्त मार्गदर्शन का दावा करते रहे, और स्वयं तथा संगठन के उच्च नेताओं के प्रति आज्ञाकारिता को ईश्वर और गुरु के प्रति आज्ञाकारिता के समान मानते रहे।
वास्तव में, अंत में आर्थिक स्थिति बहुत ही तंग हो गई थी।
आश्रम में मेरे प्रवास के दौरान, मुख्य भिक्षु और मेरे तत्काल पर्यवेक्षक ने मेरी सहमति के बिना, मुझसे यह चर्चा की कि मुझे अपने खर्च पर एक दूसरा कंप्यूटर खरीदना होगा, जिस पर मैं उनके लिए क्लाइंट/सर्वर प्रोग्रामिंग का काम कर सकूं। (मैंने इससे पहले ही 1000 अमेरिकी डॉलर में एक कंप्यूटर उपलब्ध करा दिया था।) यह जानकर, मैंने उस दमनकारी नकारात्मक, चिड़चिड़े और स्पष्ट रूप से विक्षिप्त पर्यवेक्षक को बताया कि मैं आर्थिक रूप से इस खर्च को वहन करने की स्थिति में नहीं

हूं।
उस सूक्ष्म नियंत्रण करने वाले सनकी व्यक्ति का पसंदीदा मुहावरा,
योगानंद की सकारात्मक सोच की शिक्षाओं के बीच, एक और बात थी, "जीवन बेकार है, और फिर मौत हो जाती है।" सचमुच, उनकी असीम नकारात्मकता के बीच, थोड़ी सी भी आशावादिता व्यक्त करना सुरक्षित नहीं था। वहाँ मेरे प्रवास के अंत में, कई बार जब मैंने उस दोषपूर्ण छोटे से सज्जन को आश्रम परिसर में आकर अपनी अंतहीन निराशावाद की किसी न किसी बात से मुझे परेशान करते देखा, तो मुझे सचमुच उल्टी करने की इच्छा हुई। मैं अभी भी उस पीड़ा से उबर नहीं पाया हूँ जो उन्होंने मुझे दी। सच कहूँ तो, मैंने उस विशेष भिक्षु के अधीन छह महीने काम करने के दौरान जिस तरह के अध्यात्मिक वातावरण का सामना किया, वैसा वातावरण मैंने पहले कभी नहीं देखा।
बहरहाल, उनके और प्रमुख भिक्षु के संबंध में
आश्रम के लिए मेरे अपने पैसे खर्च करने में मेरी "मदद" करना... एक ननरी के लिए
287

अच्छा, मैंने पूर्व वाले को यह भी सुझाव दिया कि यदि उनके लिए पैसों की इतनी तंगी है, तो हम तीनों को मिलकर इस संभावना पर चर्चा करनी चाहिए कि मैं अपनी थोड़ी सी बचत से आश्रम को कुछ सौ डॉलर उधार दे दूं, जिसे मेरे जाने के बाद चुका दिया जाएगा।
हैरानी की बात है कि उसी दिन बाद में उसी नेवले ने मुझे रोक लिया।
मुझे यह बताने के लिए कि उन्होंने और मुख्य भिक्षु ने स्थिति पर चर्चा की थी—और फिर से, ज़ाहिर है, मेरे बिना!—और शायद मुझसे ही कंप्यूटर मॉनिटर देने के लिए कह दें! (फिर मुझे उनकी निरंकुश योजनाओं के अनुसार, वह भारी वस्तु अपने साथ कनाडा वापस ले जानी पड़ेगी।)
यह सब तब हुआ जब मैं पहले से ही सेवाएं प्रदान कर रहा था।
प्रति माह केवल 30 अमेरिकी डॉलर के भत्ते के बदले, सप्ताह में साठ घंटे अत्यंत कुशलतापूर्वक और पेशेवर स्तर की प्रोग्रामिंग करना।
(आश्रम में काम करने का अपेक्षित सप्ताह वास्तव में कम था)
पैंतीस घंटे से भी ज़्यादा। मैंने अतिरिक्त समय दिया, भले ही मेरे सीधे सुपरवाइज़र ने

मुझे ऐसा करने से मना किया था, सिर्फ़ इसलिए कि [i] मुझे काम में मज़ा आता था, [ii] इसे करना बेहद ज़रूरी था, और [iii] मैं वहाँ के प्रशिक्षण प्रोजेक्ट जितनी जल्दी पूरे कर लेता, उतनी जल्दी मैं उस दमनकारी, हर छोटी-छोटी बात पर नज़र रखने वाले बेवकूफ़ से छुटकारा पा सकता था। क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि कोई घंटों/सदियों तक आपके कंधे पर नज़र रखे, जब आप कोड लिखने की कोशिश कर रहे हों? हिडन वैली की बदौलत, मैंने उस बेकार "डिलबर्ट ज़ोन" को जी लिया है।
हालांकि, ईमानदारी से कहें तो, 30 डॉलर का भत्ता अभी भी बेहतर था।
औसत से कहीं अधिक। इसके विपरीत, अधिकांश आश्रम—जैसे राधा का यशोदरा, रामा का हिमालयन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट, आनंदा और फाइंडहॉर्न—कर्म योग रिट्रीट में उनके लिए मामूली काम करने के विशेषाधिकार के बदले में आपसे काफी बड़ी रकम वसूलते हैं (वर्तमान में HI के मामले में 300 डॉलर प्रति माह तक), जहाँ आमतौर पर साझा आवास की व्यवस्था होती है। (जेटसुनमा और रजनीश के शुरुआती आश्रमों में रहने वाले लोग भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थे। यह संगठन को दान देने और रजनीश के एनकाउंटर ग्रुप आदि के लिए भुगतान करने के अतिरिक्त था।) एसआरएफ के प्रति कई लोगों के आकर्षण का एक कारण यही है कि यह पैसे पर कम ध्यान केंद्रित करता है।
• उस अत्यधिक बोझिल लेकिन अपर्याप्त प्रबंधन के बीच-
मुझे यह जानकारी - बिना मांगे - गैर-मठवासी 288 गुरुओं को छीनना

उस उद्यम के परियोजना प्रबंधक को पूरा भरोसा था कि संपूर्ण प्रोग्रामिंग परियोजना अवश्य सफल होगी। यह आश्वासन आश्रम के "प्रबुद्ध" (परन्तु औषधि-विरोधी) प्रशासक द्वारा अपने ध्यान में उन योजनाओं के "आकाश में खाका" देखने के आधार पर दिया गया था। दया माता (1971) के आत्मविश्वास की तुलना करें:
इस कार्य [अर्थात एसआरएफ] की रूपरेखा ईश्वर द्वारा ही निर्धारित की गई थी; इसकी स्थापना उनकी आज्ञा से हुई थी, और उनका प्रेम और उनकी इच्छा ही इसे बनाए रखती है और इसका मार्गदर्शन करती है। मुझे इस बात का कोई संदेह नहीं है। और ईश्वर ही मार्ग दिखाएगा।
दरअसल, संबंधित प्रबंधक की यही अपेक्षा थी कि
वर्तमान परियोजना से प्रति माह एक हजार घंटे का काम मिलेगा। कम से कम, उन्होंने

संबंधित भक्त विक्रेता से यही स्पष्ट रूप से अनुरोध किया था, जिसमें छह लोगों की अनुमानित प्रोग्रामिंग टीम के लिए इतनी ही राशि रखी जानी थी। मेरे द्वारा हस्ताक्षरित अनुबंध में यह भी स्पष्ट रूप से लिखा था कि मुझे प्रति घंटे 30 अमेरिकी डॉलर का भुगतान किया जाएगा। इस हिसाब से केवल वेतन का भुगतान करने के लिए ही अनुमानित सकल आय प्रति वर्ष तीन लाख डॉलर से अधिक हो जाती है। इसके अलावा, परियोजना प्रबंधक आश्रम के पास ही एक घर बनवा रहा था, जिसका उद्देश्य सॉफ्टवेयर कंपनी से अपनी पूरी आय प्राप्त करना था। इस प्रकार, उसके हिस्से को मिलाकर, आश्रम के लिए कुछ राशि बचने के लिए वार्षिक सकल आय लगभग पांच लाख डॉलर होनी चाहिए थी।

भविष्य की ऐसी आशावादी तस्वीरें, हालांकि, सच साबित नहीं हुईं।

आके निकाल जाना।

आस - पास भी नहीं।

मैंने बाहरी परियोजना के साथ काम करते हुए तीन महीने बिताए।

मैंने अपने सीधे सुपरवाइजर की टालमटोल के बावजूद उस "कंटेंट मैनेजमेंट" प्रोग्रामिंग के मैनेजर के रूप में काम किया। (उस अवधि के अंत तक, यहाँ तक कि कम प्रतिभाशाली प्रोजेक्ट मैनेजर भी उस अक्षम व्यक्ति को बदलने का विचार कर रहा था।) एचवी में उस "नकारात्मकता के प्रशिक्षण" की अवधि पूरी करने के बाद, मैं कनाडा लौट आया और वादा किए गए टेलीकम्यूटिंग काम के आने का इंतजार करने लगा। और इंतजार करता रहा। पूरे दो महीने। एक घंटे का भी वेतन वाला काम नहीं मिला।

मुझे बाद में विक्रेता द्वारा सूचित किया गया कि

वह बाहरी कंपनी जिसे ... एक ननरी 289 के लिए होना चाहिए था

अनुबंध उपलब्ध कराने के लिए बाहरी दुनिया से संपर्क साधने का काम ठप हो गया था।

आधा मिलियन डॉलर। शून्य डॉलर। "ईश्वरीय मार्गदर्शन।"

"ब्लूप्रिंट, ब्लूप्रिंट।"

एक बार फिर, मोंटी पायथन का संदर्भ:

[एरिक आइडल का किरदार:] मंत्री जी, क्या मैं आपसे पहला सवाल पूछ सकता हूँ?

आपकी योजना, "हमारे लिए एक बेहतर ब्रिटेन," में आपने दावा किया था कि आप अकेले ग्रेटर लंदन क्षेत्र में प्रति वर्ष अस्सी-आठ हज़ार करोड़-अरब घर बनाएंगे। वास्तव में, आपने पिछले पंद्रह वर्षों में केवल तीन ही घर बनाए हैं। क्या आप इस परिणाम से थोड़ा निराश हैं?

[ग्राहम चैपमैन का किरदार:] नहीं, नहीं। अगर अनुमति हो तो मैं इस सवाल का जवाब दो तरीकों से देना चाहूंगा। पहले अपनी सामान्य आवाज़ में और फिर एक तरह की मूर्खतापूर्ण, तीखी आवाज़ में।

इन सब के बाद, डिल्बर्ट ज़ोन वेबसाइट पर मेरी प्रविष्टि के लिए

22 मार्च, 2001—"आपके बॉस द्वारा तोड़े गए सबसे बड़े वादे"—इस प्रकार थे:

सच: पूर्णकालिक नौकरी, लाखों डॉलर का वेतन, घर से काम करना। हकीकत: पहले दो महीने कोई काम नहीं मिला, अंत में बेघर होने से बाल-बाल बचे।

—वह कलाकार जिसे पहले बर्ट के नाम से जाना जाता था

यह शीर्ष पांच में स्थान प्राप्त कर सका।

यह जीवन एक ब्रह्मांडीय चलचित्र है (योगानंद, 1986)।

"मैं हँसी। मैं रोई। अगर आप इस साल सिर्फ एक ही गुरु को देखना चाहें तो...."

• और जब आपको लगता है कि इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता, तो पता चलता है कि...

चार्ल्स मैनसन के 1960 के दशक के उत्तरार्ध में हत्या के मामलों में शामिल एक सहयोगी - जो आज भी जेल में बंद है - ने एसआरएफ आश्रमों में एक नन के रूप में समय बिताया था:

मोनरोविया हाई स्कूल में अपने पहले और दूसरे वर्ष के दौरान, लेस्ली [वैन हाउटेन] होमकमिंग प्रिंसेस में से एक थीं। उन्होंने अपने तीसरे वर्ष में फिर से कोशिश की, लेकिन इस बार वह सफल नहीं हो पाईं। बिटर 290 स्ट्रिपिंग द गुरुज़

अस्वीकृति से दुखी होकर वह अपने प्रेमी बॉबी मैकी के साथ हाइट-ऐशबरी भाग गई। वहाँ का माहौल उसे डरा गया और वह हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने और एक साल का सेक्रेटेरियल प्रशिक्षण लेने के लिए घर लौट आई। इस बीच, मैकी सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप में एक नवदीक्षित पुजारी बन गया था। अपने रिश्ते को जारी रखने की कोशिश में, लेस्ली ने नवदीक्षित नन बनने का फैसला किया और नशा और

यौन संबंध दोनों छोड़ दिए। लगभग आठ महीने बाद उसने मैकी से नाता तोड़ लिया। मैकी और योग समूह दोनों (बुग्लियोसी और जेन-
कोशिश, 1975)।
यह तथ्य कि वैन हाउटेन—स्पष्ट रूप से उसी नाम के
सिम्पसन्स के मिलहाउस को आश्रमों में प्रवेश मिलना, ज़ाहिर है, एसआरएफ में मौजूद "उन्नत आत्माओं" की दूसरों के चरित्र का आकलन करने की क्षमता के बारे में कुछ भी सकारात्मक नहीं कहता, चाहे वह अंतर्ज्ञान से हो या किसी अन्य तरीके से। वास्तव में, यौन अभिविन्यास और किसी "अचूक" मृत गुरु या जीवित माता-स्वरूप के प्रति अंध आज्ञाकारिता के बजाय, चरित्र और स्वतंत्रता के कई सकारात्मक पहलुओं पर अधिक ध्यान देना संगठन के लिए कहीं अधिक लाभदायक होगा।
• और जब आपको लगता है कि इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता, तभी आप
श्वेत वर्चस्ववादी जोस्ट (जोसेफ) टर्नर (मृत्यु 1996) के बारे में जानें, जो नेशनल सोशलिस्ट किंड्रेड के संस्थापक थे। टर्नर ने एसआरएफ से क्रिया दीक्षा प्राप्त की और फिर दो साल तक वहीं रहे।
उत्तरी कैलिफोर्निया में स्थित एक छोटा सा उद्देश्यपूर्ण समुदाय, जिसकी स्थापना योगानंद के प्रत्यक्ष शिष्यों में से एक ने की थी... उन्होंने योगानंद के सहकारी समुदायों के महत्व को भलीभांति समझा और यह महसूस किया कि उस दृष्टिकोण को साकार करना उनका मिशन है। आज, उनका उद्देश्यपूर्ण समुदाय संभवतः दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे सफल समुदाय है (टर्नर, 2001)।
टर्नर ने आगे चलकर अपने स्वयं के संस्करण को विकसित किया और उसे सिखाना शुरू किया।
“आर्यन क्रिया,” जिसमें बा-बाजी से मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलने का दावा किया जाता है, और हिटलर को “अर्ध-दिव्य धार्मिक नेता” माना जाता है।
जोस्ट ने घोषणा की कि योगानंद हिटलर विरोधी नहीं थे और उन्होंने अहस्तक्षेपवादी 'अमेरिका फर्स्ट' नीति का समर्थन किया... एक ननरी को 291

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आंदोलन। उन्होंने साम्यवाद के खिलाफ कोरियाई युद्ध का समर्थन किया और बहुसंस्कृतिवाद की "विशाल समस्याओं का पूर्वानुमान लगाया" (गुडरिक-क्लार्क, 2003)।

खैर, कौन जानता है। योगानंद जैसे व्यक्ति के लिए, जो
वह “नास्तिक” साम्यवाद से विशेष रूप से भयभीत था और “ईश्वर-भक्त” फासीवादी मुसोलिनी का समर्थक था... कौन जाने। किसी भी हालत में, वह भारत दौरे के बाद 1936 में हिटलर और मुसोलिनी दोनों से मिलने की योजना बना रहा था।
द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत (इनर कल्चर, 1935)
• अंत में, एक और (हालांकि, दुख की बात है कि यह आखिरी नहीं है) बात साबित करने के लिए
अपर्याप्त प्रबंधन के कारण मरे हुओं का ताबूत:
योगी की आत्मकथा के पहले संस्करण के संबंध में, योगानंद ने इस संस्करण का कॉपीराइट अपने नाम से कराया था, न कि एसआरएफ के नाम से। जब एसआरएफ ने पहले संस्करण के कॉपीराइट का नवीनीकरण किया, तो उन्होंने इसे एसआरएफ के नाम से नवीनीकृत किया, जिससे कॉपीराइट रद्द हो गया और यह सार्वजनिक डोमेन में आ गया। अब चूंकि मूल योगी की आत्मकथा सार्वजनिक डोमेन में है, इसलिए यह इंटरनेट पर उपलब्ध है।
http://www.crystalclarity.com/yogananda [यह क्रि-यानंद का प्रकाशन गृह है]।
कॉपीराइट का नवीनीकरण एक सरल प्रक्रिया है।
इसकी समाप्ति तिथि और पंजीकरण के समय का रिकॉर्ड रखना। यह एक अक्षम्य और घोर लापरवाही है।
वहाँ (डकोटा, 1998)।
और इस तरह वह "बेवकूफी भरी, तीखी आवाज वाली कराह" चलती रहती है, जो कि सब कुछ है।
जो आज के आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप के भीतर योगानंद के कभी घोषित "शक्तिशाली ब्रह्मांडीय ओम" का अवशेष है।
कैथोलिक चर्च की कल्पना कीजिए, जिसमें बाल यौन शोषण की प्रथा न हो, लेकिन अन्य सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए—जिनमें वे समस्याएं भी शामिल हैं जो अभी तक खबरों में नहीं आई हैं—केवल "मूल ईसाई धर्म" की मान्यताओं के थोड़े अलग समूह के साथ। यहीं पर आपको आज के एसआरएफ का एक अच्छा अनुमान मिल जाएगा।

मुझे धर्म के बारे में जो कुछ भी जानने की जरूरत थी, वह सब कुछ मुझे मिल गया।
"मैंने यह बात किंडरगार्टन में नहीं तो कम से कम मोंटी पायथन की 'लाइफ ऑफ ब्रायन' से तो सीखी ही होगी।"
और फिर भी, विडंबना यह है कि पायथन के जॉन क्लीज़ ने इस बारे में बात की है।
एसालेन में न्यू एज विषयों के समर्थन में, और अन्य जगहों पर रूसी-अमेरिकी "पागल ज्ञान" गुरु का हवाला देते हुए 292 गुरुओं को दरकिनार करते हुए

जॉर्ज गुरजिएफ ने सहमति जताते हुए कहा। (उस बात का खंडन करने के लिए)
(चित्र के लिए, पीटर वाशिंगटन की [1995] मैडम ब्लावत्स्की की बबून, साथ ही इवांस की हास्यपूर्ण [1973] कल्ट्स ऑफ अनरीज़न देखें।)
* * *
हालाँकि मैं हिडन वैली में अनिवार्य सामूहिक ध्यान सत्रों में नियमित रूप से अनुपस्थित रहता था, फिर भी वहाँ के प्रमुख भिक्षु ने मेरे जाने से पहले स्पष्ट रूप से मुझे आमंत्रित किया कि मैं जब चाहूँ वापस आ सकता हूँ—मैंने संस्था से कोई बुरा संबंध नहीं रखा। वास्तव में, मेरे प्रवास के दौरान, वहाँ के कई भिक्षुओं ने बिना किसी अनुरोध के, मेरे लिए अनुशंसा पत्र लिखने की पेशकश की, यदि मैं कभी मदर सेंटर में किसी सवैतनिक पद के लिए आवेदन करना चाहूँ।
उस अनुभव के भारी बोझ से कई महीनों तक उबरने और वहाँ देखी गई निरर्थक बातों की तुलना वास्तविक दुनिया के अपेक्षाकृत सौम्य "बुराइयों" से करने के बाद ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उस परिवेश के बाहर मैंने अपने जीवन में कभी किसी पूर्ण मूर्ख से मुलाकात नहीं की थी। (तब से मैं आधे दर्जन अन्य लोगों से मिला हूँ और उनके लिए काम भी किया है, लेकिन उनमें से कम से कम किसी के पास "ईश्वर का साथ" नहीं था।) इसके अलावा, यह केवल खोज करने पर ही संभव हुआ...
एसआरएफ वालरस (2004) वेबसाइट को 2001 के अंत में देखने के बाद मुझे यह समझ में आने लगा कि मैं न तो अकेला था और न ही पहला व्यक्ति था जिसने उस संगठन से जुड़ने को अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती माना।
(कल्ट बस्टर्स—एसआरएफ डिवीजन साइट ने अपनी पोस्ट की गुणवत्ता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मामले में वाल-रस को पीछे छोड़ दिया है।)
अच्छी बात यह रही कि उसी दौरान मेरी मुलाकात रम तस्कर कैप्टन मॉर्गन के एक

सभ्य, प्रत्यक्ष वंशज से हुई। दरअसल, हाल के वर्षों में इस संबंध ने मुझे कैप्टन के कुछ बेहतरीन दर्द निवारक उत्पादों का दीवाना बना दिया है, जिन्हें विडंबना यह है कि हिडन वैली में इतना समय बिताने से पहले मुझे कभी इस्तेमाल करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई थी।

* * *

सबसे अच्छी व्याख्या के अनुसार, अगर हम भोलेपन से योगानंद को वह सब कुछ मान लें जो वे और उनके शिष्य उन्हें मानते हैं, तो एसआरएफ दिखाता है कि कैसे मात्र दो पीढ़ियों के अनुयायी, आधी सदी के छोटे से समय में, चीजों को बुरी तरह बिगाड़ सकते हैं। (यीशु के क्रूस पर चढ़ने के लगभग इतने ही समय बाद तक सुसमाचार लिखे नहीं गए थे। बुद्ध और रामकृष्ण के बारे में भी, उनकी मृत्यु के काफी समय बाद तक प्रचलित कहानियाँ याद नहीं की गई थीं। इसलिए किसी को भी यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि विकृति की समान मात्रा, जैसा कि स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है... एक ननरी को 293)

एसआरएफ में पाई जाने वाली बातें उन सभी संशोधित धर्मग्रंथों और जीवनी में मौजूद नहीं हैं। इसके विपरीत, यदि रामकृष्ण और योगानंद उतने ही उलझे हुए थे जितना हमने देखा है, तो बुद्ध के बारे में क्या? या फिर चंचल, प्रेममय कृष्ण और उनकी गोपियों के बारे में क्या, यह मानते हुए कि उनके पौराणिक जीवन का वास्तव में कुछ तथ्यात्मक आधार है? और लाओ त्ज़ू और कन्फ्यूशियस के बारे में क्या? क्या उनमें से कोई साईं बाबा और आदि दा जैसे लोगों से अधिक प्रशंसा के योग्य है?

योगानंद की विरासत में, हमें ऐसे आश्रम नेता मिलते हैं जो पचास वर्षों के ध्यान के बाद भी अवचेतन और अतिचेतन मन के बीच अंतर नहीं कर पाते—वे सिखाते हैं कि पेड़ की छंटाई करना या कार चलाना (जैसे ज़ेन दर्शन में अभ्यास किए गए तीरंदाजी को) सहज ज्ञान के कार्य हैं, न कि सीखे हुए कौशल। और अगली पीढ़ी के अंधभक्त, यदि वे इससे या उन्हें सिखाई जा रही किसी भी बात से असहमत होते हैं, तो वे केवल "अहंकार" का प्रदर्शन कर रहे होते हैं।

हमारे पास ऐसे "सिद्ध" निदेशक मंडल सदस्य भी हैं जो इतने "रहस्यमय" तरीके से काम करते हैं कि एक अनौपचारिक भाषण देने के लिए उन्हें अस्सी घंटे की तैयारी की आवश्यकता होती है, या एक फैक्स मशीन की खरीद को मंजूरी देने में तीन साल लग

जाते हैं। (ये वही "बुद्धिमान" लोग हैं जो कभी "मिस्र में फ़राओ" आदि रह चुके होंगे।) इसके अलावा, हमारे पास "व्यापारिक सिद्धांतों" के अनुसार चलने वाले ऐसे लोग भी हैं जो भारी मात्रा में मुफ्त श्रम प्राप्त करने के बावजूद भी आर्थिक रूप से मुश्किल से ही लाभ कमा पाते हैं।

यदि आपने पिछले जन्म में "मिस्र का शासन" चलाया होता, तो आप निःसंदेह मुफ्त श्रम से चलने वाले एक साधारण, गैर-लाभकारी आश्रम के संचालन में अच्छे, व्यावहारिक व्यावसायिक निर्णय लेने में सक्षम होते, है ना?

बेशक, आश्रमों द्वारा चलाए जाने वाले अन्य व्यवसाय भी आमतौर पर इन्हीं कारणों से असफल रहते हैं। दरअसल, दूरदर्शी जेटसुनमा के नेतृत्व में असफल वित्तीय उद्यमों में एक टाइपसेटिंग व्यवसाय भी शामिल था, जिसे उन्होंने "पक्का सफल" बताया था, "क्योंकि इसकी शुरुआत शुभ वर्ष में हुई थी।" इसके अलावा, एक माइक्रोवेव करने योग्य महिला हेयर केयर डिवाइस भी था जिसमें जेल पैक लगे थे, जिसकी खुदरा कीमत 14.95 डॉलर रखी गई थी और जेटसुनमा के एक सपने के अनुसार इसके लाखों यूनिट बिकने की उम्मीद थी। (जब आश्रम की आंतरिक कंपनी, जो उस उत्पाद का उत्पादन कर रही थी, बंद हुई, तो उस पर कथित तौर पर आधा मिलियन डॉलर से अधिक का कर्ज था।) अंत में, एक न्यू एज रॉक ग्रुप भी असफल रहा, जिसमें चालीस वर्ष की जेटसुनमा बेसुरी गायिका थीं (शेरिल, 2000)।

हिडन वैली, अधिक रूढ़िवादी रूप से, खुद को जड़ी-बूटियों, सब्जियों और हिबिस्कस उगाने, तृतीय-पक्ष मृदा विश्लेषण संख्याओं को संसाधित करने, सॉफ्टवेयर लिखने और ध्यान के लिए आर्मरेस्ट और पोर्टेबल वेदियों के निर्माण तक सीमित रखती थी। इनमें से, हिबिस्कस, मृदा विश्लेषण और 294 गुरुओं को छीनना

सभी सॉफ्टवेयरों को "मुनाफा कमाने वाले स्रोत" माना जा रहा था। (यह वह विशिष्ट वाक्यांश था जिसका उपयोग बाहरी परियोजना प्रबंधक ने वेब-आधारित मृदा विश्लेषण से होने वाली संभावित आय के संदर्भ में किया था।) हालांकि, व्यवहार में, प्रत्येक सॉफ्टवेयर ने इस प्रसिद्ध व्यंग्यकार की बात को ही पुष्ट किया कि "हमें हर बिक्री पर नुकसान हो रहा है, लेकिन हम मात्रा बढ़ाकर इसकी भरपाई कर लेंगे।"

सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर की अलाया स्टिचरी को भी लगभग मुफ्त श्रम मिलता था (रहने और खाने आदि के बदले में), फिर भी अक्सर उन्हें महीने दर महीने घाटा होता

था, हालांकि कई वर्षों तक उनके घाटे पर किसी का ध्यान नहीं गया... 'ऐसा लगता था कि किसी ने ध्यान ही नहीं दिया कि हम घाटे में चल रहे थे।'
अनिवार्य रूप से उन कपड़ों को बेचने के लिए भुगतान करना' (डाउनिंग, 2001)।
रजनीश के समुदायों में, आगे:
कुछ ही आश्रमवासी उन नौकरियों में काम करते थे जिनके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया था।
पीएच.डी. धारक कचरा बीन रहे हैं, वास्तुकार मिस्त्री के रूप में काम कर रहे हैं,
फिल्म निर्माता मोची के रूप में, और पूर्व नशाखोर विभाग के रूप में
सिर (फ्रैंकलिन, 1992)।
हिडन वैली ने कुशलतापूर्वक इसी सिद्धांत को अपनाया। अर्थात्, वे ऐसे लेखाकारों को कंप्यूटर प्रोग्रामर के रूप में प्रशिक्षित कर रहे थे जिनमें रचनात्मक चिंतन करने की क्षमता नहीं थी, जबकि साथ ही साथ उनके पास स्थापित प्रोग्रामर कार्यालय या बागवानी का काम कर रहे थे।
प्लास्टर से बनी बुद्ध प्रतिमाएँ हों या ग्रीनहाउस में उगाए गए हिबिस्कस के फूल; बालों की देखभाल हो या मिट्टी का विश्लेषण; कपड़े हों या रियायती रेस्तरां; पूर्वी तट पर स्थित पूल्सविले हो या पश्चिमी तट पर स्थित एस्कोन्डिडो, या उत्तर में सैन फ्रांसिस्को, या इनके बीच का कोई भी स्थान—ये सभी समान रूप से "ईश्वरीय मार्गदर्शन" से प्रेरित हैं; ये सभी समान रूप से "हवा में तैरते पदचिह्नों" का अनुसरण कर रहे हैं। इन योजनाओं की बार-बार होने वाली असफलताओं को इस विचार के तहत नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है कि "आश्रम में जो कुछ भी होता है उसका 99% तो निवासियों के [अहंकार को नष्ट करने वाले] सीखने के अनुभवों के लिए ही होता है।" या फिर, इन असफलताओं का दोष निवासियों के बुरे कर्मों के फल भुगतने या उनकी "पुण्यता की कमी" पर डाल दिया जाता है। तो फिर लाभ कमाने की चिंता क्यों करें, भले ही आप साथ ही साथ यह दावा कर रहे हों कि संगठन "व्यापारिक सिद्धांतों के अनुसार" चलाया जा रहा है, और आपका धर्म ही दुनिया को शैतान और अन्य दुष्ट आत्माओं के चंगुल से बचाएगा?
और सबसे बड़ी बात यह है कि (हिडन वैली और अन्य जगहों पर) हमेशा यह अवांछित दबाव बना रहता है कि "जितना अधिक आप ध्यान करेंगे, उतना ही कम आपको रचनात्मक होने की आवश्यकता महसूस होगी।" इस सीमा में, निश्चित रूप से,

व्यक्ति ईश्वर-प्राप्त वनस्पति के समान होगा, जो न तो स्वतंत्रता प्रदर्शित करेगा और न ही रचनात्मकता, और केवल "गुरु के कार्य" में धन या मुफ्त श्रम का योगदान देने के योग्य होगा। (क्या इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि... एक ननरी को 295)

बाहर से देखने वाले लोग इन जगहों को "पंथ" क्यों कहते हैं?
इसके अलावा, उस तरह की किसी भी बकवास का विरोध करने या उस पर सवाल उठाने पर, उन लोगों द्वारा व्यक्ति को "घमंडी" करार दिया जाता है, जिनके शरीर में रचनात्मकता का एक भी अंश नहीं होता।
ऐसे संदर्भ में, शायद व्यंग्य के साथ यही कहा जा सकता है कि: सोचिए कि अगर दिव्य माँ और अवतार गुरुओं की एक परंपरा उनके कार्यों का मार्गदर्शन नहीं कर रही होती तो स्थिति कितनी बदतर हो सकती थी!
बेशक, यही सर्वोत्तम (पुनर्जन्म) परिदृश्य कर्म और अवतारों तथा उनके जैसे अन्य अवतारों से अपेक्षित समग्र व्यवहार के संबंध में अतिरिक्त प्रश्न खड़े करेगा—उदाहरण के लिए, सैक्सनों का सिर कलम करना और शेक्सपियर की अश्लीलता। क्योंकि, यदि योगानंद कई जन्म पहले मुक्त हुए थे, फिर भी उन्होंने अपेक्षाकृत हाल ही में विलियम द कॉन्करर और विलियम शेक्सपियर दोनों के रूप में अवतार लिया, तो वे दोनों—अर्जुन के पुनर्जन्म होने के नाते—या तो अवतार रहे होंगे या ऐसी "पूर्णता" के बहुत करीब रहे होंगे।
विलियम द बास्टर्ड के अशोभनीय व्यवहार को उनकी राजनीतिक स्थिति और ऐतिहासिक काल का परिणाम बताकर किसी हद तक उचित ठहराने का प्रयास किया जा सकता है। लेकिन यह तभी संभव है जब कोई उनकी पत्नी के प्रति उनके हिंसक और चिड़चिड़े व्यवहार को नजरअंदाज करने को तैयार हो, जिसे किसी भी प्रकार से क्षमा नहीं किया जा सकता।
ठीक है। और शेक्सपियर की उतनी ही गैर-संतवत अश्लीलता भी तुलनात्मक रूप से "किसी और की गलती" थी... कैसे? क्योंकि, उन "देहाती मामलों" में से बेहतर चयन शायद ही होते
डैन सैवेज के सिंडिकेटेड "सैवेज लव" नामक यौन-विकृति संबंधी सलाह कॉलम में यह बात बेमानी थी, जो न्यू टाइम्स एल.ए. (और अन्य जगहों) में प्रकाशित होता था और जिसे एसआरएफ सदस्यों के लिए स्पष्ट रूप से केवल एक "अश्लील पत्रिका" माना

जाता था। फिर भी, कर्म पर "विजय" केवल दोहरे व्यंग्य के माध्यम से ही यौन कर्म में परिवर्तित होती है। और इसके अलावा, अवतारों को एक जीवनकाल से दूसरे जीवनकाल में कर्म ले जाने की अपेक्षा नहीं की जाती है, और न ही प्रत्येक आगामी "करुणापूर्ण अवतार" में नया कर्म सृजित करने की, जैसा कि स्वयं दया माता (1971) ने समझाया था:

जब कोई आत्मा, यहाँ तक कि ईसा मसीह भी, मृत्यु के संसार में अवतरित होती है-
जब वह किसी खास प्रकृति को धारण करके मानवीय रूप धारण करता है, तो वह कुछ निश्चित बातों को स्वीकार कर लेता है।
सीमाएँ। लेकिन कर्म के नियम की बाध्यताओं को स्वीकार करना-
मां उनमें से एक नहीं है। वह अब भी सबसे ऊपर और श्रेष्ठ है।
कर्म।

बहरहाल, चाहे वह एसआरएफ द्वारा संचालित हो या किसी अन्य द्वारा, "नन आश्रम" में जाना, जैसा कि हमने कई बार स्पष्ट रूप से देखा है, दुख की बात है कि समस्याओं को कम करने के बजाय उन्हें और बढ़ा देता है। तो क्या ओफेलिया की नदी तुम्हें बुला रही है?

बेशक, शेक्सपियर के ज़माने में "ननरी" का अर्थ "वेश्यालय" और "मठ" दोनों होता था। हालाँकि, हैमलेट ओफेलिया को वेश्यालय जाकर यौन संबंध से बचने के लिए नहीं कह रहा था, इसलिए स्पष्ट रूप से मठवासी अर्थ ही अभिप्रेत था।

लेकिन विडंबना यह है कि—घोर विडंबना—शायद ही कभी कोई वेश्यालय के रास्ते पागलखाने पहुँचा हो। (सिवाय अनुपचारित सिफलिस के, जो कि शेक्सपियर के नाटकों में भी मौजूद है।) हालांकि, हमारे संसार के मठों और उनके गुरुओं के बारे में यह दावा स्पष्ट रूप से नहीं किया जा सकता। क्योंकि उन्होंने मनोवैज्ञानिक बंधनों, कथित आध्यात्मिक यौन शोषण, विनाशकारी नकारात्मकता और अन्य तरीकों से एक से अधिक सच्चे साधकों को शारीरिक और चिकित्सीय अवसाद और पागलपन की स्थिति में पहुँचाया है। यह सब "ईश्वर के नाम पर" और कथित "सभी सजीव प्राणियों के कल्याण" के लिए किया गया है।

* * *

लेकिन क्या—एसआरएफ आश्रमों में खुलेआम, बेहिसाब कामुक यौन संबंध नहीं होते? क्या भिक्षु उमस भरी गर्मी की रातों में अपना मासिक भत्ता लेकर मदर सेंटर की दीवारों के ऊपर से सनसेट बुलेवार्ड तक चुपके से नहीं जाते? क्या कामुक युवा ननें एक-दूसरे के पवित्र जननांगों को सहलाकर अपनी बेहद जरूरी, आनंददायक संतुष्टि नहीं पातीं? क्या वास्तव में यह सब सेवा, ध्यान और शुद्ध सफेद चादरों के बाहर अपने सूखे, मठवासी हाथों से सोना ही है?

दरअसल, यह आरोप लगाया गया है (रसेल, 2001 में) कि योगानंद अपने जीवनकाल में हर किसी के साथ अनैतिक संबंध रखते थे। इस पर मेरी प्रतिक्रिया शायद उन अधिकांश पूर्व शिष्यों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जो अपने-अपने "पूर्ण गुरुओं" से निराश हो चुके हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके शिष्यों द्वारा उनकी ईमानदारी के अनेक प्रमाणों को देखते हुए, मेरा आधा मन इस आरोप को गंभीरता से नहीं ले पा रहा है। उदाहरण के लिए, एसआरएफ के सबसे सम्मानित भिक्षु भाइयों में से एक का प्रमाण, जो अपने गुरु के असीम प्रेम, विनम्रता और कोमलता, तथा दूसरों के प्रति उनके गहरे सम्मान के बारे में प्रसन्नतापूर्वक बताते हैं।

और सेवा करने की उनकी असीम इच्छा" (वातानाबे में, 1998)।

बेशक, प्रश्न में उल्लिखित भाई, योगानंद के निधन के लगभग पच्चीस वर्ष बाद आश्रम में प्रवेश करने के कारण, वास्तव में कभी "अवतार" से नहीं मिले। अर्थात्, वे केवल उसी समूह की वाणी दोहरा रहे हैं... एक ननरी के लिए 297

वह वही बोल रहा है जिसे वह सच मानता है। लेकिन आध्यात्मिकता में यह एक सामान्य प्रक्रिया है।

बहरहाल, मेरा दूसरा हिस्सा वास्तव में यह चाहता है कि "द बास्टर्ड एंड द बार्ड" की ओर से कथित तौर पर की गई हर गलती सच हो, कि सारा मामला शुरू से ही सरासर झूठ था।

संक्षेप में कहें तो, एसआरएफ अपनी वर्तमान स्थिति में मुझ जैसे (पूर्व शिष्य) को, जिसने कभी गुरु या उनके संगठन के प्रति विश्वासघात करने का सपना भी नहीं देखा था, ऐसे व्यक्ति में बदल सकता है जो उनके खिलाफ लगे सबसे बुरे आरोपों को सच मानना चाहेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि वे मुझे इस तरह बदल सकते हैं, तो वे किसी को भी बदल सकते हैं—या कम से कम, किसी ऐसे व्यक्ति को बदल सकते हैं

जो देखने को तैयार हो।
योगानंद का आग पर चलने का दावा उन्हें मूर्ख ही साबित करता है, क्योंकि वे सचमुच मानते थे कि उनकी कथित आध्यात्मिक उन्नति ही उस "योगिक शक्ति" का स्रोत थी, न कि भौतिकी के नियम। इसी तरह उनकी अनेक गलत भविष्यवाणियाँ और थेरेसा न्यूमैन तथा उनके "परफ्यूम सेंट" का समर्थन भी मूर्खतापूर्ण है। हालाँकि, उनकी एक कलाई में नाड़ी रोकने की तुलनीय "क्षमता", जब तक कि इसे कोई वास्तविक परा-मनोवैज्ञानिक घटना न मान ले - जिसे मैं नहीं मानता - उन्हें कहीं अधिक बुरा साबित करती है।
व्यक्तिगत तौर पर, इन सब बातों के बावजूद भी, मैं योगानंद को यहाँ वर्णित आध्यात्मिक नेताओं में से कम हानिकारक मानता हूँ। अगर उनके "हरम" के आरोप झूठे हैं, तो उनकी तुलना दलाई लामा, अरबिंदो या रमण महर्षि से की जा सकती है, या अगर ये आरोप सच हैं, तो उनसे कुछ कमतर माना जा सकता है। हालाँकि, "पागलखाने का सबसे समझदार आदमी" होना कोई गर्व की बात नहीं है।
और उस समूह में भी, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अरबिंदो और महर्षि दोनों के दावों से उनकी कल्पना और वास्तविकता में अंतर करने की क्षमता पर बहुत कम भरोसा होता है—साथ ही, महर्षि की दस्तावेजित जातिगत कट्टरता की गंभीर समस्या भी है। इसके अलावा, दलाई लामा इन दिनों गुरु या "मानव जाति के उद्धारकर्ता" के बजाय मात्र एक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अधिक कार्य कर रहे हैं। हालाँकि, यह एक अच्छी बात है, क्योंकि कर्मापा लामा विवाद में उनका कथित व्यवहार लगातार निराशाजनक रहा है। इसी तरह, तिब्बती पुस्तक 'जीवन और मृत्यु' के सबसे अधिक बिकने वाले लेखक सोग्याल रिनपोचे के खिलाफ यौन शोषण के आरोपों का सामना करने पर उनका कथित रवैया भी निराशाजनक रहा है।
दलाई लामा को इस बारे में वर्षों से पता था और उन्होंने ऐसा किया भी।
कुछ नहीं। गोपनीयता और चुप्पी का एक वास्तविक नियम है," उन्होंने कहा।
[विक्टोरिया] बार्लो (लैटिन, 1994)। 298 गुरुओं का पर्दाफाश

दिलचस्प बात यह है कि योगानंद के समकालीन असंतुष्ट शिष्य, अपनी निराशा के बावजूद, यह सुझाव देते हैं कि एसआरएफ के पर्दे के पीछे के मुद्दों के बारे में किसी को भी तब तक सूचित नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि वे कम से कम एक

दशक तक संगठन से जुड़े न रहें। ऐसा माना जाता है कि उस समय तक वे स्वयं ही अपने प्रारंभिक आदर्शवाद को खोने लगते हैं, और तब वे इस संभावना को सुनने के लिए अधिक इच्छुक हो जाते हैं कि गुरु और उनका संगठन अपूर्ण हो सकते हैं। हालांकि, मैं स्वयं इस दृष्टिकोण से पूरी तरह असहमत हूं। आखिरकार, किसी भी आध्यात्मिक मार्ग के कई सबसे समर्पित छात्र अपने शुरुआती दस वर्षों के दौरान एक दीर्घकालिक आवासीय प्रवास करते हैं। और ठीक इसी संदर्भ में वास्तविक नुकसान होता है। मैं इन सभी बिंदुओं पर अपने अनुभव के आधार पर बोल रहा हूं।

इसके अलावा, अगर कोई व्यक्ति ऐसे समुदाय से केवल "बाहर से" ही संपर्क रखता है, जैसे किताबों, छपे हुए पाठों या मात्र आकस्मिक और कभी-कभार के संपर्क से, तो दस साल सौ साल के बराबर हो सकते हैं। क्योंकि, इन सभी को सावधानीपूर्वक संपादित किया गया है ताकि संगठन के बारे में कोई भी नकारात्मक बात इनके माध्यम से प्रकट न हो। (एक आम कैथोलिक के रूप में चर्च में प्रार्थना करने और संगठन में एक यौन शोषण का शिकार हुए वेदी सेवक या एक मठवासी के रूप में कैद होने की तुलना करें। वास्तव में, अगर हमने बेट्टे मिड्लर से एक बात सीखी है, तो वह यह है कि "दूर से सामंजस्य दिखता है"... भले ही, पास से देखने पर स्थिति बिल्कुल अलग हो।)

शुरुआती दौर में, जब किसी व्यक्ति को अपने पसंदीदा संगठन से लगाव होता है, तो शायद वह इस संभावना पर विचार करने को तैयार न हो कि उसके बारे में फैलाई गई कोई भी "गंदी बात" सच हो सकती है। लेकिन यह कहना कि उस गंदगी को छिपा देना, कम से कम उसके बारे में जागरूक होने से बेहतर है, ताकि भविष्य में उस संगठन से जुड़ने के बारे में सोच-समझकर निर्णय लिया जा सके, मुझे हास्यास्पद लगता है। जब हम दुनिया के धार्मिक/आध्यात्मिक संगठनों से दीर्घकालिक रूप से निपटते हैं, तो ऐसी अज्ञानता न तो सुख देती है और न ही कष्ट का मार्ग।

जैसा कि बेली और बेली (2003) ने साईं बाबा के आसपास बढ़ती चिंताओं पर चर्चा करते हुए कहा:

यह [रिपोर्ट की गई समस्या] के बारे में जागरूक होने का एक अवसर है।

समस्याओं का समाधान करते हुए, एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जो सोच-समझकर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

अज्ञानता से उत्पन्न होने वाले परिणाम के बजाय।

इस प्रकार का सोच-समझकर निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी का अभाव एक बहुत ही अनुमानित परिणाम की ओर ले जाता है, जैसा कि साईं बाबा के एक अन्य पूर्व शिष्य ने उपयुक्त रूप से उल्लेख किया है:
... एक नन आश्रम के लिए 299

अब उसे बेनकाब करने की मेरी तीव्र इच्छा सीधे तौर पर इसके पक्ष में है-
ब्राउन में मैंने उसे जितनी भक्ति दी, उसके अनुपात में।
2000).
* * *
बेशक, इस तरह की अपेक्षाकृत कम गंभीर नकारात्मक जानकारी को भी सार्वजनिक करने से "आस्तिकों" को ठेस पहुँच सकती है। कम से कम, जैसा कि अन्य लोगों ने अपने-अपने मार्गों के अधार्मिक पहलुओं के खिलाफ आवाज़ उठाई है, ऐसा करने के पीछे के उनके उद्देश्यों (लाभ, प्रसिद्धि, पक्षपात, सनसनीखेजता आदि) पर सवाल उठाए जाएँगे। (यहाँ तक कि 80 के दशक के मध्य में कैथोलिक पादरियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के खिलाफ बोलने का साहस करने वाले स्थापित समाचार पत्रों पर भी कम साहसी प्रतिस्पर्धियों द्वारा "पीली पत्रकारिता" का आरोप लगाया गया था, जिन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि ये कहानियाँ सच हैं।)
सही [बेरी, 1992]। लेकिन जैसा कि हम सब अब तक जानते हैं, वहाँ की भयानक कहानियाँ अक्सर, वास्तव में दुखद रूप से सच होती हैं।) इसलिए आश्चर्य की बात नहीं है कि हिडन वैली के उपरोक्त हल्के खुलासे के तत्वों पर प्रतिक्रियाओं में मुझे "शिकायतकर्ता" (sic) कहा गया है - किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो स्पष्ट रूप से बारीकियों पर पूरा ध्यान देने (जैसे, वर्तनी में) को शिकायत करने के साथ भ्रमित करता है - और "डरपोक" (sic) भी कहा गया है।
दुनिया के आध्यात्मिक परिवेश में जो कुछ गलत लगता है, उसके खिलाफ आवाज़ उठाना कई मायनों में प्रशंसनीय हो सकता है, लेकिन यह कायरता का परिणाम नहीं है, जैसा कि अंतरात्मा और पीड़ा से प्रेरित होकर ऐसा करने वाले हर व्यक्ति को अच्छी तरह पता है। यह बात तब और भी सच हो जाती है जब "शिक्षा" पर आपत्ति जताते समय नाम के साथ अपनी बात रखी जाती है, न कि प्रतिशोध के (उचित) डर से गुमनाम रूप से। ऐसी स्थितियों में असली कायरता तो संगठन के उन वफादार

सदस्यों से आती है जो गुमनाम रूप से असंतुष्ट अनुयायियों को चुप रहने के लिए डराने-धमकाने का प्रयास करते हैं।
और, किसी को किसी न किसी दैवीय रूप से प्रेरित मूर्ख या "ईश्वर के दूत" के हाथों हर संभव दुर्व्यवहार सहने की आवश्यकता नहीं है, फिर भी इतना कष्ट सहने के बाद वह इसके खिलाफ बोलने के लिए पूरी तरह से न्यायसंगत है, न केवल अपने स्वयं के उपचार के लिए बल्कि दूसरों को चेतावनी देने के लिए भी।
तो अगर ज़रूरी हो तो इन सब बातों के लिए "संदेशवाहक को मार डालो"। क्योंकि हम सभी अपने पेशेवर विचारों को सही साबित करने, अपनी आत्म-छवि को बनाए रखने और अपने सबसे प्रिय मानवीय संबंधों को सहेजने में गहरे, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से, भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। हालाँकि, इन सभी अनमोल निवेशों की तुलना धर्म और मोक्ष/ज्ञानोदय के महत्व से नहीं की जा सकती, जैसा कि 300 STRIPPING THE GURUS में बताया गया है।

जो भी इन बातों के प्रति पूरी तरह समर्पित हो। इसके विपरीत, किसी भी सांसारिक लाभ के संभावित नुकसान से होने वाली असुविधा, मोक्ष के खतरे में पड़ने पर उत्पन्न होने वाली घबराहट की तुलना में निश्चित रूप से नगण्य होगी। जो व्यक्ति इस प्रकार "धमकी" देने का साहस करता है, उसे स्पष्ट रूप से कुछ गहरी साँसें लेकर, अपने प्रयासों के लिए प्रेम से अधिक घृणा का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
हालांकि, इस सिद्धांत को वर्तमान लेखक पर लागू करते समय, यह ध्यान रखें कि (i) हिडन वैली में मेरे अपने अनुभवों को छोड़कर, यहाँ वर्णित प्रत्येक कथित दुर्व्यवहार और हास्यास्पद "दिव्य" दावे को पहले ही अन्यत्र प्रकाशित किया जा चुका है; और (ii) इस गहन शोध के दौरान मेरा स्वयं का विश्वास डगमगा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब मैंने 2003 के अंत में यह लेखन शुरू किया था, तब भी मेरा मानना था कि योगानंद वह सब कुछ थे जो वे होने का दावा करते थे, और यह केवल उनके अनुयायी ही थे जिन्होंने बाद में उनके संगठन को बिगाड़ दिया था। वास्तव में, उस समय भी मैं यह मानता था कि योगानंद और केन विल्बर तथा रामकृष्ण आदि जैसे लोगों द्वारा प्राप्त "ज्ञानोदय" एक ऐसा लक्ष्य था जिसका पीछा करना सार्थक था।
अफसोस की बात है कि अब मुझे बेहतर समझ आ गई है।
एक और स्पष्ट बात: जब भिक्षुओं के स्वयं के स्वीकारोक्ति के अनुसार, कई लोग

हिडन वैली (और अन्य जगहों) पर यह मानते हुए पहुंचते हैं कि वहां का हर भिक्षु एक "पूर्णतम व्यक्ति" है, तो उन "पवित्र" व्यक्तियों की हर अपूर्णता तुरंत प्रासंगिक हो जाती है और उसे दर्ज करना आवश्यक हो जाता है। इसके लिए "शिकायतकर्ता" या "डरपोक" कहलाना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि हम यह दिखाना चाहते हैं कि ये लोग वैसे नहीं हैं जैसे वे दिखते हैं (और खुशी-खुशी वैसा होने का दिखावा करते हैं)।
सेल्फ-रियलाइज़ेशन फेलोशिप में मौजूद कमियों के मेरे दस्तावेज़ीकरण पर मिली प्रतिक्रियाओं में यह अवांछित सुझाव भी शामिल था कि अगर मुझे अपनी यौन अभिविन्यास के बारे में सवालों के जवाब देने में "असहजता" महसूस होती है, तो मुझे आश्रम में प्रवेश ही नहीं करना चाहिए था। स्पष्ट रूप से, एक ऐसे सदस्य की ओर से, जो खुले तौर पर रूढ़िवादी सोच वाला था और सेना में समलैंगिकों के होने का भी पुरजोर विरोध करता था, यह कहने का सीधा तात्पर्य यही था कि केवल वही व्यक्ति, जिसके पास "कुछ छिपाने के लिए" हो, संगठन की "पूछो, बताओ" नीति का उल्लेख करने लायक समझेगा।
फिर भी, यह उस बात के आगे फीका पड़ जाता है जो एसआरएफ के एक भिक्षु ने, जो मदर सेंटर का भ्रमण करा रहे थे, मुझसे 80 के दशक के उत्तरार्ध में कही थी, जब मैं लॉस एंजिल्स में क्रिया दीक्षा लेने गया था। किसी कारणवश एड्स का विषय सामने आया। उस भिक्षु की राय यह थी कि शायद यह विपत्ति ईश्वर और प्रकृति का यौन अनैतिकता को कम करने का तरीका था, ... एक ननरी को 301

और इस तरह एक "पवित्र" दुनिया बनाने की कोशिश। छी! फिर भी, यह रवैया आध्यात्मिक जगत में अनोखा नहीं है। हिडन वैली में रहते हुए और एक प्रतिष्ठित योग पत्रिका को देखते हुए, मैंने वहाँ भी इसी बीमारी के बारे में इसी तरह के "करुणापूर्ण" तर्क देखे।
हाल ही में, मुझे एक जानबूझकर किए गए "मेलबॉम्बिंग" प्रयास के तहत भेजे गए निम्नलिखित अपमानजनक संदेश की कई सौ प्रतियां प्राप्त हुईं, जो पहले HiddenValleyLover@FirstReaction.com से और फिर फर्जी/स्पूफ किए गए वेब-आधारित ईमेल पतों से भेजी गई थीं, और यह सब SRF के एक विशेष रूप से दोषपूर्ण, अपेक्षाकृत अशिक्षित, लेकिन स्पष्ट रूप से सम्मानित सदस्य द्वारा किया गया था:

आपकी गपशप भरी बातों से मुझे बहुत खुजली हो रही है।
मैंने हिडन वैली में 3 साल से अधिक समय बिताया है और
यह अब तक मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय रहा है! आप एक अद्भुत इंसान हैं!
कृतघ्न, बेहद अनैतिक और विक्षिप्त व्यक्ति।
आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि मैं आपसे दो गुना अधिक समय से एसआरएफ में हूं।
यदि आप अपने ईमेल का उपयोग जारी रखना चाहते हैं
पता, एसआरएफ और हिड के बारे में बेकार की बातें हटा दें।
आपकी वेबसाइट के नाम पर दिए गए बहाने से डेन वैली (पूरी की पूरी) [sic]
क्या आप गुरु के प्रेम को महसूस नहीं कर सकते?
या फिर, "योगानंद क्या करते?"
बेशक, ऊपर बताई गई धमकियाँ इस दुनिया के किसी भी आध्यात्मिक समुदाय से आ सकती थीं, किसी ऐसे व्यक्ति को जिसने समाज छोड़ दिया हो और वहाँ के लोगों या प्रिय "ईश्वर-प्राप्त गुरु" के बारे में बहुत सटीक बातें कह दी हों। इस तरह की प्रतिक्रियाएँ तो आम बात हैं, जो उन समर्पित संगठनों के सदस्यों से आती हैं जिन्हें अपने कथित व्यवहारों के खुलासे से डरने का पूरा कारण होता है। और इसलिए, उनके लिए वास्तविकता "शैतान की देन" बन जाती है।
उपरोक्त अपमानजनक टिप्पणियों का सामना करने से कम से कम मुझे कनाडा के दिवंगत प्रधानमंत्री पियरे ट्रूडो की एक टिप्पणी याद आ जाती है: "मुझे इससे भी बुरी बातें अच्छे लोगों ने कही हैं।" अच्छी बात यह है कि जिन लोगों ने स्वयं हिडन वैली में लंबे समय तक रहकर उस माहौल से मेरी तरह ही मोहभंग का अनुभव किया है, उन्होंने वहां के जीवन के मेरे वर्णन को पूरी तरह से सटीक बताया है।
इसके अलावा, जहाँ तक "गपशप" की बात है: हिडन वैली के बारे में ये खुलासे तुच्छ, व्यर्थ की बातें नहीं हैं; और ये प्रत्यक्ष रूप से दिए गए हैं, अफवाहों के माध्यम से नहीं। इसके विपरीत, आदरणीय भिक्षु, जिन्होंने मुझे तारा/दा विंची के कथित पुनर्जन्म के बारे में चुपचाप सूचित किया, उन्होंने अपने 302 गुरुओं को उजागर किया

मैंने अपना रुख इस तरह रखा: "किसी को मत बताना... या कम से कम यह मत कहना कि मैंने तुम्हें बताया है।"

“एक राज़ है जिसे हर कोई जानना चाहेगा—लेकिन किसी को मत बताना। और अगर बता भी दो, तो उन्हें यह मत बताना कि मैंने तुम्हें बताया है।”

और मैं गॉसिप करने वाली हूँ?!

अंत में, नौ महीने तक लगातार नकारात्मकता, तुच्छ गपशप और स्वतंत्रता छीनने वाली अज्ञानी झूठी शिक्षाओं के भंवर में फँसे रहने से पहले, मैं इतना "अकृतज्ञ" और निश्चित रूप से इतना "परेशान" नहीं था। अगर मुझे दोबारा मौका मिले, तो मैं पूरी गंभीरता से सड़क पर रहना पसंद करूँगा। इसके विपरीत, उस अनुभव ने कम से कम मेरे बहुत से डर को दूर कर दिया है: जीवन में चाहे कुछ भी हो जाए, मैं इससे भी बुरे हालातों से गुज़र चुका हूँ। (हालाँकि, इसे कहने का एक कम सकारात्मक तरीका यह है: "उस व्यक्ति से ज़्यादा स्वतंत्र कोई नहीं है जिसके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं बचा है।")

लेकिन आपको मेरी किसी भी बात पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि, अन्य व्यक्ति जिन्हें एसआरएफ के साथ इसी तरह के निराशाजनक अनुभव हुए हैं, उन्होंने अपनी कहानियाँ, कई अतिरिक्त "गंदी बातें" और वहाँ के नेताओं द्वारा किए गए घृणित दुर्व्यवहार, समलैंगिकता विरोधी व्यवहार और अत्यधिक संदिग्ध कार्यों के आरोपों के साथ, एसआरएफ वॉल पर पोस्ट की हैं।

रस (2004) वेबसाइट। इनमें से कई कहानियाँ मेरे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों से कहीं अधिक निंदनीय हैं, भले ही वे हिडन वैली आश्रम के भीतर के दैनिक जीवन का उतना सटीक चित्रण न करती हों, जितना कि उन लोगों का होता है जिन्होंने अपने दिमाग और स्वतंत्रता को दरवाजे पर ही नहीं छोड़ा है।

तो: योगानंद "वेनिस का अश्लील व्यापारी" था। उसने इंग्लैंड में सिर कलम करने की प्रथा शुरू की, बदला लेने के लिए लोगों के हाथ-पैर काट डाले और अपने "विजयी" अवतार में अपनी पत्नी को पीट-पीटकर मार डाला। और तारा माता समलैंगिक दा विंची थी, और डॉ. लुईस उतने ही कामुक फ्रांसिस बेकन थे।

अब खुश हो, एसआरएफ? क्योंकि ये समस्याएं तो बस तब पैदा होती हैं जब लंबे समय से प्रमाणित, निर्विवाद तथ्य, जिनकी कोई भी जांच कर सकता था, उन बूढ़े मूर्खों के समूह से टकराते हैं जो वास्तविकता से आंखें मूंदकर उन्हें सुखद रूप से सच मान लेते हैं।

* * *

हिडन वैली में अपने प्रवास से पहले, मैंने एक गैर-लाभकारी, सामुदायिक स्वामित्व वाली, राजनीतिक रूप से सही जैविक खाद्य दुकान के लिए एक वर्ष तक काम किया था। वहाँ, निदेशक मंडल ने प्रभावी रूप से "व्यापारिक समझ रखने वाले सक्षम आदर्शवादी" के लिए एक पद आरक्षित रखा था, जो हमेशा... एक ननरी 303

एक साल के भीतर ही उन्होंने अन्य सत्ताधारी बोर्ड सदस्यों द्वारा बुद्धिमानी से काम करने के प्रतिरोध के जवाब में गुस्से में इस्तीफा दे दिया।

कैलिफ़ोर्निया के एचवी में हुए उस "बुरे अनुभव" के बाद, मैंने यूनिसेफ की कनाडाई शाखा के मुख्यालय में एक महीने तक मामूली काम किया। वहाँ, एक असंतुष्ट पूर्व दानदाता ने एक अख़बार की कटिंग भेजी जिसमें बड़ी मात्रा में "लापता और गलत तरीके से खर्च किए गए धन" की अपर्याप्त ऑडिटिंग की रिपोर्ट थी, जिस पर यूनिसेफ के अधिकारियों का कथित तौर पर हाथ था। (तुलना कीजिए अमेरिकी रेड क्रॉस द्वारा 9/11 के तुरंत बाद एकत्र किए गए धन को "अन्य परियोजनाओं" के लिए अलग रखने से। यह व्यवहार 80 के दशक के मध्य में रक्तदान में एड्स/हेपेटाइटिस की उचित जाँच लागू करने में उनकी कनाडाई शाखा की देरी के बाद हुआ था। बाद में, इन्हीं कमियों के कारण वे खुद "दूषित रक्त कांड" में शामिल हो गए, जो बाद में सुर्खियों में आया।)

उसी (यूनिसेफ) संस्था में, जैसा कि कई दानदाताओं ने कड़वे अनुभव से जाना, नियमित मेलिंग सूची से अपना नाम हटवाने का अनुरोध करना उतना ही बेअसर था जितना कि गर्मी की सुहावनी दोपहर में हाथ में नींबू पानी लिए दुनिया से भूख मिटाने की कामना करना। वास्तव में, कुछ पूर्व दानदाताओं ने कागज और डाक के बार-बार होने वाले इस नुकसान से नाराज़गी जताते हुए दान के लिफाफों में अपना जंक मेल या अन्य अप्रासंगिक सामग्री यूनिसेफ को भेज दी!

जब मैंने वह अस्थायी नौकरी छोड़ी, तब वह संगठन देश के सबसे महंगे शहर के सबसे महंगे इलाके में स्थित अपने नए मुख्यालय में स्थानांतरित होने की तैयारी में था। उस समय कर्मचारियों के सवालों के जवाब में, प्रबंधन ने इस कदम को उचित ठहराते हुए कहा कि यह उनके बड़े दानदाताओं को अधिक आकर्षित करने के लिए ज़रूरी था—बजाय उन भरोसेमंद "छोटी बुजुर्ग महिला" दानदाताओं के, जो बदले में अपनी बिगड़ती सेहत और/या गरीबी के कारण और अधिक धन न भेज पाने पर गहरा खेद

व्यक्त करती थीं।
मुझे विश्वसनीय सूत्रों से (हिडन वैली से असंबंधित) यह जानकारी मिली है कि दक्षता के मामले में पीस कॉर्प्स इनमें से किसी से भी बेहतर नहीं है।
गैर-लाभकारी संस्था हैबिटेट फॉर ह्यूमैनिटी? इसके संस्थापक और अध्यक्ष को यौन उत्पीड़न के आरोपों के बीच 2005 की शुरुआत में बर्खास्त कर दिया गया था। बताया जाता है कि यह बर्खास्तगी जिमी कार्टर के उन प्रयासों के बावजूद हुई थी, जिसमें उन्होंने इस घोटाले को दबाने के लिए समझौता करने की कोशिश की थी।
शांत (कूपरमैन, 2005)।
बॉय स्काउट्स? एफबीआई द्वारा उनकी सदस्यता संख्या को कथित तौर पर बढ़ा-चढ़ाकर बताने के आरोप में उनकी जांच की जा रही है।
यूनाइटेड वे से उनकी फंडिंग बढ़ाएं (रीव्स, 2005)। 304 गुरुओं को लूटना

और सम्मानित यूनाइटेड वे स्वयं? खैर, 1990 के दशक की शुरुआत में, वह धर्मार्थ संगठन "अपने स्वयं के वित्तीय कदाचार के अत्यधिक प्रचारित खुलासे में उलझ गया" (सेनोट, 1992)।
इन सब के बाद, मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि अब मेरे आदर्श पहले की तुलना में बहुत कमज़ोर हो गए हैं। फिर भी, आश्चर्यजनक रूप से, आध्यात्मिक और सांसारिक दुनिया में हालात चाहे कितने भी बुरे क्यों न हों, सही शोध करने पर वे हमेशा उससे कहीं ज़्यादा बुरे साबित होते हैं।
किसी भी संगठन से, चाहे वह आध्यात्मिक हो, मानवीय हो या कोई और, पूर्णता की अपेक्षा नहीं की जाती, क्योंकि यह जानते हुए कि उसका संचालन अपूर्ण मनुष्यों द्वारा किया जाता है। केवल न्यूनतम योग्यता, बुनियादी ईमानदारी/नैतिक व्यवहार, जवाबदेही और अपनी गलती स्वीकार करने तथा उसे सुधारने की क्षमता की अपेक्षा की जाती है।
मानो चाँद माँगना ही बेहतर है।
खैर, इंसान को अनुभव से ही सीख मिलती है।
या फिर, जैसा कि दिवंगत डगलस एडम्स कहते थे, "कम से कम आप जीवित तो हैं।"

अध्याय XXVII

गुरुओं और
कैदियों

जैसा कि हमने देखा है, हमारे विश्व के आध्यात्मिक समुदायों में कथित समस्याओं का एक सामान्य समूह, यहाँ तक कि लगभग समान शब्दों में व्यक्त किया गया है, अक्सर देखने को मिलता है। वास्तव में, देखी गई रिपोर्ट की गई विशेषताएँ मूल रूप से समुदाय द्वारा अपनाई गई विशिष्ट मान्यताओं और उस ऐतिहासिक समय और स्थान से स्वतंत्र हैं जिसमें आध्यात्मिक नेता और उनके शिष्य रहे हैं।
ऐसा क्यों होगा?
इस सवाल का एक बड़ा हिस्सा निश्चित रूप से 1970 के दशक की शुरुआत में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में किए गए प्रसिद्ध शोध से मिलता है। वहां, डॉ. फिलिप ज़िम्बार्डो—जो बाद में अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष बने—ने अनजाने में ही "स्वस्थ, बुद्धिमान, मध्यमवर्गीय" कॉलेज के छात्रों के एक समूह को एक सप्ताह से भी कम समय में "भयभीत, उदास, विक्षिप्त और आत्महत्या की प्रवृत्ति से ग्रस्त" व्यक्तियों में बदल दिया। उन्होंने यह काम केवल एक नकली जेल के माहौल में उन्हें (सिक्का उछालकर) गार्ड/कैदी की भूमिकाएँ सौंपकर किया, जबकि वे सभी जानते थे कि यह केवल एक प्रयोग था।
उन दर्जन भर गार्डों को कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया गया था, बल्कि उन्हें कुछ सीमाओं के भीतर, जेल के अंदर "कानून और व्यवस्था बनाए रखने" और "सम्मान प्राप्त करने" के लिए अपने नियम बनाने की अनुमति दी गई थी।
कैदियों का" (ज़िम्बार्डो, 2004; इटैलिक जोड़ा गया)।

जेल में दाखिल होने पर प्रत्येक दर्जन कैदियों को उनके नाम के स्थान पर एक संख्या दी गई थी, और उन्हें केवल उसी संख्या से पुकारा जाता था। यह एक ऐसी रणनीति थी जिसका उद्देश्य उन्हें गुमनाम महसूस कराना और उन्हें उनकी कारावास-पूर्व पहचान

से अलग करना था। अर्थात्, उन्हें अपने अतीत को व्यवहार के लिए मार्गदर्शक या स्वयं के साथ उचित व्यवहार के संदर्भ के रूप में उपयोग नहीं करना था।

भिक्षुओं और संन्यासियों को भी अक्सर इसी तरह नाम परिवर्तन का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, रजनीश के आश्रमों में, भगवान को गुरु स्वीकार करने के कुछ ही दिनों (या उससे भी कम) के भीतर नाम परिवर्तन कर दिया जाता था, यहाँ तक कि उन लोगों के लिए भी जो वहाँ दीर्घकालिक निवास नहीं करते थे। (उदाहरण के लिए, रजनीश के भगवा वस्त्र पहनने वाले "नारंगी" अनुयायियों की वर्दी भी पहनने वालों पर "व्यक्तिगत पहचान मिटाने" का ऐसा ही प्रभाव डालती है।)

अजनबियों के बीच रहना जो आपका नाम भी नहीं जानते-

टोरी... अन्य सभी कैदियों की तरह ही वर्दी पहने हुए था।

[या भिक्षुओं], क्योंकि वे स्वयं पर ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे

इसके संभावित अप्रत्याशित परिणामों के बारे में [साथ ही

आश्रम में जिन्हें “अहंकार को अनुशासित करने” के रूप में दिया जा रहा है]

इन सभी कारणों से कैदियों की आत्म-पहचान कमजोर हो गई।

(हैनी, एट अल., 1973)।

स्टैनफोर्ड में कैद के दूसरे दिन हुए संक्षिप्त विद्रोह के बाद, कैदियों के बीच एकजुटता टूट गई। ऐसा "अच्छे कैदियों" के लिए एक "विशेषाधिकार प्राप्त कोठरी" निर्धारित करने की मनोवैज्ञानिक रणनीति के माध्यम से किया गया, जिसमें रहने वाले कैदियों को वे स्वतंत्रताएँ प्राप्त थीं जो अन्य कोठरियों के कैदियों को नहीं दी गई थीं।

आश्रमों में, अपने गुरु और अन्य वरिष्ठों द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करने में सबसे निष्ठावान शिष्यों को अक्सर विशेषाधिकार प्राप्त कमरों/घरों में रहने या गुरु के निकट अधिक पहुँच प्रदान की जाती है। वास्तव में, मिल्ने (1986), टार्लो (1997) और वैन डेर ब्राक (2003) ने रजनीश और कोहेन के मार्गदर्शन में कथित रूप से घटित होने वाली इसी प्रक्रिया का सटीक वर्णन किया है। आदि दा के समुदाय में भी इसी प्रकार की पदोन्नति और पदावनति की खबरें आई हैं। इसके विपरीत, एसआरएफ में, माउंट वाशिंगटन के "सत्ता केंद्र" में निवास को हॉलीवुड, हिडन वैली या भारत में स्थित उनके सहायक मंदिरों में "निर्वासन" से अधिक महत्व दिया जाता है।

अपने कैदियों के मनोबल को तोड़ने के प्रयास में, जिम्बार्डो के गार्डों ने उन्हें अहिंसक

रूप से अपमानित करने का सहारा लिया।
किसी भी आश्रम में, निवासियों के "अध्यात्मिक" अहंकार को नष्ट करने के घोषित इरादे से इसी प्रकार का अपमान किया जाता है। (प्रैक्टिकल - गुरु और कैदी 307)

हालांकि, इससे उनकी आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी व्यक्तिगत इच्छाशक्ति (अर्थात, उनका आत्मसम्मान और स्वतंत्रता) भी नष्ट हो जाती है।
कुछ दिनों बाद, नकली जेल में "पैरोल सुनवाई" आयोजित की गई। वहाँ कैदियों को अपनी कमाई छोड़ने के बदले रिहा होने का विकल्प दिया गया। उनमें से अधिकांश इस सौदे पर सहमत हो गए... लेकिन पैरोल बोर्ड द्वारा उनके अनुरोधों पर विचार किए जाने के दौरान वे अपनी कोठरियों में लौट गए। यह व्यवहार इस तथ्य के बावजूद था कि प्रयोग छोड़कर वे ठीक वही वित्तीय परिणाम प्राप्त कर सकते थे।
उन्होंने ऐसा व्यवहार क्यों किया होगा? ज़िम्बार्डो (2004) के स्पष्टीकरण के अनुसार, ऐसा इसलिए था क्योंकि वे "विरोध करने में शक्तिहीन महसूस कर रहे थे," एक "मनोवैज्ञानिक जेल" में फंसे हुए थे जिसे वे वहां के संबंधित अधिकारियों की अनुमति के बिना नहीं छोड़ सकते थे।
जब कोई शिष्य लंबे समय तक आश्रम में रहने के बाद उसे छोड़ने का प्रयास करता है, या किसी "दिव्य मार्गदर्शन प्राप्त गुरु" से संबंध तोड़ना चाहता है, तो अक्सर ऐसा कई वर्षों तक शिष्य/कैदी की भूमिका निभाने के बाद ही होता है। मनोवैज्ञानिक रूप से, उस भूमिका में गहराई से समा जाने के कारण, वह गुरु की अनुमति या आशीर्वाद के बिना आश्रम नहीं छोड़ सकता। गुरु ही उसके लिए आश्रम के अधीक्षक और पैरोल बोर्ड के समान होते हैं, जिनके पास ही "मुक्ति" या कारावास (आश्रम और माया या भ्रम के कारावास) से मुक्ति की कुंजी होती है।
इस प्रकार प्रस्थान करना, आमतौर पर "आध्यात्मिक मार्ग से भटकने" के समान माना जाता है। इसलिए, आश्रम छोड़ना उन कारणों को कमजोर तरीके से बेच देना है जिनके कारण व्यक्ति ने शुरू में आश्रम में प्रवेश किया था। यानी, यह अपने स्वयं के ज्ञानोदय में असफल होना है, जो "वास्तव में मायने रखने वाली एकमात्र चीज" है। या इससे भी बुरा:
वे कहते हैं कि मैं फिलहाल अपने अहंकार के चंगुल में फंसा हुआ हूँ, और मैं
मुझे इस जीवन में मिले अपने इकलौते मौके को गंवाना नहीं चाहिए।

ज्ञानोदय (वैन डेर ब्राक, 2003)।
एक्किस्टों [अर्थात एक्कंकर धर्म के अनुयायियों] को चेतावनी दी जाती है
कि जब वे पढ़ाई छोड़ देते हैं तो उनका आध्यात्मिक विकास रुक जाता है, और
वे काल, या नकारात्मक शक्ति की दया पर निर्भर हैं।
ब्रह्मांड (बेलमी, 1995)।
संभावित भक्त शाश्वत भक्ति की बाध्यकारी प्रतिज्ञा करते हैं।
आदि दा को—वास्तव में उनकी उपस्थिति में रहने की अनुमति मिलने से पहले—
आदि दा के अनुयायियों का दावा है कि प्रतिज्ञा तोड़ने से...
इसके परिणामस्वरूप सात जन्मों से भी अधिक दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है
(बॉब के मामले में)।
2000).
308 गुरुओं का पर्दाफाश

हमें बताया गया था कि अगर आप पूल्सविले और जेटसुनमा छोड़ते हैं, तो आप आगे बढ़ते हैं।
वज्र नरक में... तुम्हें कुचला जाएगा, जलाया जाएगा और टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा।
यह बार-बार दोहराता है। आप वहाँ अनंत काल तक रहेंगे (में
शेरिल, 2000)।
बौद्धों में वर्णित नरक ईसाई धर्म में वर्णित नरक जितना ही भयावह लगता है।
पिघले हुए लोहे, आग और आंतें चीरकर यातना देना
(मैकडोनाल्ड, 2003)।
यह जानकर काफी हैरानी होती है कि तिब्बती बौद्ध धर्म में, अपने शिष्यों को अपने गुरुओं का निष्ठापूर्वक अनुसरण करने के लिए भय-आधारित साधनों का उपयोग किया जाता है, जो बाइबल बेल्ट में वर्णित नरक की अवधारणाओं के समान ही कठोर हैं।
इसके अलावा, इस बात पर भी विचार करें कि ईसाई धर्म में शाश्वत दंड के दृष्टिकोण को मनोवैज्ञानिकों द्वारा लंबे समय से संबंधित अनुयायियों के विचारों और व्यवहार में कठोरता लाने वाला माना जाता रहा है। इसे एक प्रकार के "धर्म प्रचारक उत्साह" को जन्म देने वाला भी माना गया है, जिसके तहत अपनी मुक्ति को लेकर चिंतित व्यक्ति

अपने भय को दूसरों पर थोपते हैं और अपने संदेह को दूर करने के लिए उन्हें परिवर्तित करने की आवश्यकता महसूस करते हैं। यदि यह लंबे समय से प्रतिपादित सिद्धांत ईसाई दृष्टिकोण के लिए मान्य है, तो यह बौद्ध दृष्टिकोण पर भी उतना ही लागू होना चाहिए। अर्थात्, इससे मिलते-जुलते व्यवहार उत्पन्न होने चाहिए, जिसमें "यीशु मसीह में विश्वास" के स्थान पर "गुरु के प्रति निष्ठा" हो और साथी शिष्यों पर गुरु के प्रति अपनी कठोर आज्ञाकारिता बनाए रखने का दबाव, ईसाई धर्म में "गैर-ईसाइयों" को परिवर्तित करने और यह सुनिश्चित करने के प्रयास का प्रतीक हो कि परिवर्तित लोग वफादार बने रहें।

इसके विपरीत, यदि ईसाई धर्म में अंधविश्वास से धर्म जांच का मार्ग प्रशस्त हो सकता है, तो बौद्ध धर्म की मानक शिक्षाएँ ("तिब्बती कैथोलिक") भी ऐसा ही कर सकती हैं। क्योंकि वहाँ, उद्धारकर्ता-शिष्य के बंधन को तोड़ने पर, अन्य "पापों" की तरह, ऐसे दंड दिए जाते हैं जो मार्क्विस डी साडे को भी प्रसन्न कर देते।

इस प्रकार, तिब्बत में कर्मपा के आसन के प्रभारी लामा द्वारा लामा ओले निडाहल को गुरु-शिष्य प्रतिज्ञा तोड़ने के कथित परिणामों के बारे में समझाते समय प्रदर्शित मनःस्थिति समझ में आने योग्य और पूरी तरह से अनुमानित हो जाती है।

हालांकि नाम से वे बौद्ध शिक्षक थे, आदरणीय द्रुब-

पोएन डेचेन की आवाज़ ऐसी लग रही थी मानो वह सीधे वहीं से आया हो।

कैथोलिक मध्य युग। उन्हें शायद ऐसा भी महसूस हुआ होगा।

पवित्र धर्मसभा के साथ उनका काफी अच्छा तालमेल था, क्योंकि उनके पत्र, गुरु और कैदी 309 में वर्णित है।

भावना और संदर्भ, ऐसा प्रतीत होता है कि इसी का परिणाम थे।

उल्लेखनीय संस्था (लेहनेर्ट, 1998)।

इसी प्रकार, शुरुआत से ही, भीख मांगने वाले बौद्ध भिक्षुओं को धन और भोजन देना, रोमन कैथोलिक चर्च के पापमोचन घोटालों की तरह, धनी संरक्षकों के लिए पुण्य खरीदने का एक तरीका था।

अपने भविष्य के भले के लिए भुनाया जा सकता है (डाउनिंग, 2001)।

बेशक, हमेशा की तरह, ऐसी शिक्षाओं से उत्पन्न होने वाली कई समस्याओं से बचा जा सकता है, बस शुरू से ही बताई गई बातों पर बहुत अधिक विश्वास न करके:

एक व्यक्ति, तिब्बती बौद्ध धर्म की भयावह शिक्षाओं को लेकर चिंतित था-
नरक लोकों के रहस्य, तेनज़िन पाल्मो क्या है यह जानना चाहता है।
मृत्यु के बाद क्या होता है...
[पाल्मो:] "मैंने एक बार इस विषय पर एक लामा से बहस की थी, क्योंकि उनकी परिभाषा के अनुसार-
मैं निश्चित रूप से वहीं जा रहा था [अर्थात नरक में]। 'चिंता मत करो'
इसके बारे में,' उसने हंसते हुए मेरी पीठ थपथपाई। 'हम तो बस
लोगों को सही व्यवहार करने के लिए ऐसा कहना चाहिए" (मैकेन्ज़ी,
1999).
बौद्ध धर्म में "प्रमाण-आधारित ध्यान" का समावेश होना वास्तव में इस सब में अप्रासंगिक है। क्योंकि, इससे गुरु-शिष्य प्रतिज्ञा को निभाने की कथित अनिवार्यता में निहित अंधविश्वास का कोई खंडन नहीं होता, जहाँ प्रतिज्ञा तोड़ने पर वज्र नरक या इसी प्रकार के किसी अन्य दंड का सामना करना पड़ता है। पूर्व हो या पश्चिम, दक्षिणी अमेरिका हो या उत्तरी भारत/तिब्बत, कृषि प्रधान हो या उत्तर-औद्योगिक, कोई फर्क नहीं पड़ता। बल्कि, दीर्घकालिक दंड का भय पूर्व और पश्चिम दोनों जगह एक जैसी कठोर प्रतिक्रियाएँ और विषाक्त परिस्थितियों से दूर न जा पाने की असमर्थता उत्पन्न करेगा। मानव जाति में ज्ञात मनोवैज्ञानिक संरचनाओं और गतिकी की सार्वभौमिक प्रकृति इसकी पुष्टि करती है।
जब [कथित] पंथ के नेता जनता से कहते हैं, "सदस्य स्वतंत्र हैं"
वे जब चाहें तब जा सकते हैं; दरवाजा खुला है," वे कहते हैं।
यह धारणा कि सदस्यों के पास स्वतंत्र इच्छाशक्ति है और वे बस
रुकने का विकल्प चुनना। वास्तव में, सदस्यों के पास शायद कोई वास्तविक कारण न हो।
विकल्प, क्योंकि उन्हें एक फो- रखने के लिए प्रेरित किया गया है।
बाहरी दुनिया के प्रति पूर्वाग्रह। प्रेरित भय मनोवैज्ञानिक पूर्वाग्रह को खत्म कर देते हैं।
किसी व्यक्ति द्वारा समूह छोड़ने का विकल्प चुनने की तार्किक संभावना
सिर्फ इसलिए कि वह दुखी है या कुछ और करना चाहता है
(हसन, 1990)।

कहने का तात्पर्य यह है कि तथाकथित पंथों में रहने वाले जिन व्यक्तियों को यह सिखाया गया है कि यदि वे उस पंथ को छोड़ देंगे तो उनके साथ बुरा होगा, वे उन वातावरणों से बाहर निकलने के लिए उतने ही "स्वतंत्र" नहीं होंगे जितना कि पानी से भयभीत कोई व्यक्ति तैरने के लिए "स्वतंत्र" नहीं होगा।
मेरे पिता [अर्थात जिम जोन्स] ने मेरे देशद्रोही विचारों को गुप्त रखा।
हमें यह चेतावनी देकर जाँच करें कि चर्च छोड़ने से बुरा परिणाम होगा।
कर्म। उन्होंने अपने उपदेशों में हमें याद दिलाया कि जिनके पास
जिन लोगों को शामिल होने के लिए चुना गया था, वे यहाँ इसलिए थे क्योंकि हम कगार पर थे
अगले तल पर जाने के लिए। उनकी मदद के बिना, हम
सफल नहीं हो पाए। वे लोग जिन्होंने किसी भी तरह से इस उद्देश्य को छोड़ दिया या इसके साथ विश्वासघात किया।
वह पृथ्वी पर सबसे निम्नतम जीवन रूप में पुनर्जन्म लेगा।
और हमें इसे प्राप्त करने में एक लाख साल और लग जाएंगे।
इस बिंदु पर फिर से (लेयटन, 1998)।
और यह ट्रुंगपा की पारंपरिक "आपदाओं/क्रोधों का पीछा करने" की पद्धति से किस प्रकार भिन्न है? अवधारणात्मक रूप से, और इसके प्रभाव के संदर्भ में, यह बिल्कुल भी भिन्न नहीं है।
छोड़ने के संबंध में आगे: ज़िम्बार्डो के अध्ययन में शामिल एक व्यक्ति (#819) को जब उसकी कोठरी से बाहर निकाला गया तो उसके साथी कैदियों ने उसे "बुरा कैदी" करार दिया, जिसके बाद वह फूट-फूटकर रोने लगा। जब ज़िम्बार्डो ने प्रयोग क्षेत्र छोड़ने का सुझाव दिया, तो उस व्यक्ति ने इनकार कर दिया और बीमार होने और बेकाबू होकर रोने के बावजूद जेल वापस जाने को प्राथमिकता दी, ताकि वह अपने साथियों को यह साबित कर सके कि वह वैसा बुरा कैदी नहीं है जैसा उस पर आरोप लगाया गया था। (जब ज़िम्बार्डो ने उसे स्पष्ट रूप से याद दिलाया कि वह एक प्रयोग का हिस्सा है, असली कैदी नहीं, तो वह तुरंत रोना बंद कर दिया और "किसी बुरे सपने से जागे हुए छोटे बच्चे की तरह" ऊपर देखने लगा।)
शिष्य आश्रमों में इसलिए भी रहते हैं, क्योंकि उन्हें यह साबित करने की आवश्यकता

महसूस होती है कि वे अपने गुरु और उनके आध्यात्मिक रूप से उन्नत शिष्यों के समूह के प्रति बुरे या विश्वासघाती नहीं हैं। आखिर, जब गुरु ही ईश्वर हैं, तो कोई भी "बुरा शिष्य" नहीं बनना चाहता।

* * *

केन विल्बर के जीवन की एक घटना मनोवैज्ञानिक "कैदियों" से बाहर निकलने की उपर्युक्त कठिनाई को और अधिक स्पष्ट करने में सहायक हो सकती है।

विल्बर की दूसरी पत्नी, ट्रेया, को 1980 के दशक के मध्य में पहली बार स्तन कैंसर हुआ था। उस दौरान और उसके बाद, उस तनाव से उपजी उनकी एक-दूसरे के प्रति अनकही नाराजगी ने उनके रिश्ते और विल्बर के जीवन को इस हद तक बिगाड़ दिया कि वे शराब का सेवन करने लगे थे।

वह प्रतिदिन बीस से अधिक ड्रिंक्स का सेवन करता था। इसके अलावा वह सुस्ती से टीवी देखने के अलावा कुछ खास नहीं करता था; और उदास महसूस करता था, उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह कभी कोई और किताब लिखेगा या नहीं। उस निराशा के चरम पर, वह वास्तव में बंदूक खरीदने निकल गया था।

अपनी जान लेने का इरादा रखते हुए (विल्बर, 1991)।

लेकिन तर्कसंगत रूप से देखा जाए तो विल्बर किसी भी समय उस स्थिति से बाहर निकल सकते थे। उन्हें बस अपनी कार में बैठकर गाड़ी चलानी थी और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना था। उनके पास किताबों से मिलने वाली रॉयल्टी थी, ट्रांसपर्सनल साइकोलॉजी में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी—अपनी पत्नी के बिना नए सिरे से शुरुआत करना, तर्कसंगत रूप से, बहुत आसान होता। सबसे बुरे हालात में भी, तलाक के निपटारे में उन्हें अपनी पत्नी को घर का आधा हिस्सा और किताबों की रॉयल्टी का आधा हिस्सा देना पड़ता, और बदले में उन्हें अपना जीवन वापस मिल जाता।

उस समय उनकी मानसिकता के अनुसार, उनके लिए अपनी पीड़ा से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। बल्कि, आत्महत्या उन्हें समस्या को सुलझाने की कोशिश करने या उस जेल से बाहर निकलने से कहीं अधिक आसान लग रही थी, जिससे निकलना उनके लिए असंभव था।

इसके विपरीत, शिष्य अक्सर ऐसे गुरुओं के प्रति आसक्त हो जाते हैं जो अंततः उनके जीवन को दुखमय बनाने के अलावा कुछ नहीं करते। जब यह रिश्ता टूटता है, तो

भावनात्मक निर्भरता को सुलझाने के एकतरफा प्रयास शिष्य पर किसी भी सांसारिक, प्रेमपूर्ण रिश्ते से कहीं अधिक दबाव डालते हैं। इसलिए, ऐसे में "छोड़ देना" आसान नहीं होता। वास्तव में, इस तरह के परित्याग को केवल "प्रेम समाप्त होने" के समान नहीं माना जाएगा—जिसका एक आसान उपाय है। बल्कि, व्यक्ति को उस गुरु के प्रति बेवफा होने के अपराधबोध और "आध्यात्मिक मार्ग छोड़ने" के दुष्परिणामों से निपटना पड़ता है—शायद कई जन्मों के लिए।

अधिकांश [तथाकथित] पंथ के सदस्य पहले कुछ दिनों के दौरान अवसादग्रस्त महसूस करते हैं।

पंथ से बाहर निकलने के बाद के कुछ महीनों का समय। कुछ लोग इस अनुभव की तुलना करते हैं।

किसी के प्यार में पूरी तरह डूब जाना, और फिर यह एहसास होना कि उनका प्रेमी वह दोहरे चरित्र का था और सिर्फ उनका इस्तेमाल कर रहा था। अन्य लोग उनकी तुलना करते हैं-

उनकी आत्मा के आध्यात्मिक बलात्कार में संलिप्तता (हसन, 2000)।

अपने [कथित] पंथ को खोना, जीवन के प्यार को खोने के समान है।

प्रेमी ने तुमसे झूठ बोला है, लेकिन प्रेमी बेहद मोहक है और

संतोषजनक, और समर्पण इतना रोमांचकारी है (बेलैमी, 1995 में)। 312 गुरुओं को नंगा करना

गुरु में विश्वास, जब तक बना रहता है, तर्कसंगतता को पूरी तरह से नकार देता है।

निर्णय। समर्पित शिष्य तर्क से उतने ही अप्रभावित होते हैं जितने कि

वे एक-दूसरे के प्रति आसक्त प्रेमी हैं...

जो व्यक्ति शिष्य बनता है, वह किसी विशेष व्यक्ति के प्रति आकर्षित हो जाता है।

बिना अशुद्धियों और अशुद्धियों के बीच अंतर कर पाने के लार गुरु

सोना। यह प्रक्रिया प्यार में पड़ने के बराबर है, या फिर...

मनोचिकित्सा में "स्थानांतरण" की घटना। हममें से कोई भी नहीं है

इस प्रकार की घटनाओं से प्रतिरक्षित (स्टोर, 1996; इटैलिक जोड़ा गया)।

मैंने भगवान के समर्पण के आग्रह पर कभी सवाल नहीं उठाया।

प्रेमी के सामने खुशी-खुशी, स्वेच्छा से आत्मसमर्पण कर देता है। यह तभी होता है

जब...
प्रेम संबंध समाप्त होने पर आपको पेट की चर्बी और लटकती त्वचा नजर आने लगती है।
मांसपेशियों में दर्द, क्रूरता, उदासीनता और संदेह
धीरे-धीरे प्रवेश करता है (फ्रैंकलिन, 1992)।
एक विशेष दृष्टिकोण से देखा जाए तो, एंड्रयू के साथ बिताया मेरा समय
[कोहेन] एक असफल प्रेम प्रसंग था (वैन डेर ब्राक, 2003)।
किसी ऐसे रोमांटिक पार्टनर से अलग होना मुश्किल हो सकता है जो कभी आपके जीवन का केंद्र था, जिस पर आप तब भी भरोसा कर सकते थे जब आपके पास कोई और सहारा नहीं था। तो ज़रा सोचिए, किसी "भगवान" से अलग होना कितना कठिन होगा, चाहे वह व्यक्ति आपको रोज़ाना कितना भी दुख क्यों न दे रहा हो।
इस विचार को लेकर मुझे जो पीड़ा हुई, उसकी गहराई का वर्णन मैं नहीं कर सकता।
इस संभावना से कि जिसे मैंने पूरी तरह से प्यार किया था, वह शायद
एक ईश्वर को जैसा होना चाहिए उससे कम (अंडरवुड और अंडर-
लकड़ी, 1979)।
इसलिए, इन सब बातों को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कई पूर्व भिक्षुओं ने अपने आश्रम/कैदखानों में अवसाद और आत्महत्या के विचारों का अनुभव करने की बात स्वीकार की है।
विल्बर बाद में अपने साथ या उसके बिना ही सैन फ्रांसिस्को के लिए रवाना हो गया। पत्नी से झगड़ा होने के बाद, उन्होंने पछतावे के साथ उसे मारा था। वे शिष्य, जिन्होंने गहन आत्ममंथन के बाद आश्रम छोड़कर आजीवन रहने का वादा तोड़ दिया, अक्सर इसी तरह की किसी घटना का जिक्र करते हैं, जिसने उन्हें होश में ला दिया और उन्हें एहसास दिलाया कि आत्महत्या से बेहतर विकल्प आश्रम छोड़ देना ही था।
* * *
निम्न प्राणियों में भी, कथित साक्षात देवता के प्रति श्रद्धा का अभाव, और उन सरल कदमों को उठाने में असमर्थता जो गुरु और कैदी 313

हानिकारक वातावरण से बाहर निकलने पर जानवरों द्वारा अपने दर्द को कम करने की क्षमता के बारे में लंबे समय से जानकारी है। यह ज्ञान काफी हद तक 70 के दशक के

मध्य में मार्टिन सेलिगमैन के प्रयोगों के माध्यम से प्राप्त हुआ, जिसमें जानवरों को ऐसे वातावरण में बिजली के झटके दिए गए थे जहां वे उस दुर्व्यवहार से बच नहीं सकते थे।

पहले तो जानवर आपस में लड़ने लगे, भागने की कोशिश करने लगे और आवाजें निकालने लगे।

दर्द या गुस्से की चीखें। फिर वे उदासी और सुस्ती में डूब गए और

निराशा। बाद में, प्रयोगों के दूसरे चरण में, वही

जानवरों को फिर से झटका लगा—लेकिन इस बार, एक बटन दबाकर।

किसी निश्चित लीवर को हिलाकर या कोई अन्य सरल कार्य पूरा करके, वे

वे विद्युत प्रवाह को रोक सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा करने का कोई प्रयास नहीं किया।

इसलिए।

जानवरों ने बेबस होना सीख लिया था।

पिछले अनुभवों से भी, भले ही वे इससे बचने का एक साधन हों।

दर्द दिया गया, ये जानवर बहुत हार गए थे, शायद

तंत्रिका संबंधी रूप से पराजित होने पर, वह सरल कार्रवाई करना जो

उनकी पीड़ा समाप्त करो (मात्साकिस, 1996)।

सार्वजनिक रूप से जबरन कपड़े उतारे जाना, बार-बार मना करने के बावजूद, या अक्सर हिंसक व्यक्तिगत या सामूहिक यौन संबंध (चर्च के डिल्डो संग्रह के साथ या उसके बिना) के लिए मजबूर किया जाना, या गुरु-समान व्यक्ति के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से अनैतिक यौन संबंध बनाना, किसी भी तर्कसंगत परिभाषा के अनुसार स्पष्ट रूप से सदमे या आघात की श्रेणी में आएगा। रजनीश के हिंसक मानवतावादी मुठभेड़ समूह भी इसी श्रेणी में आते हैं, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो पहले से जानते थे कि उनकी हड्डियां टूट सकती हैं या उनके साथ बलात्कार हो सकता है।

हालांकि, अधिक गंभीर स्तर पर, "अहंकार-नाशक अनुशासन" के नाम पर कथित रूप से की गई भावनात्मक हिंसा और मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार, विश्वासघात और व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त "आध्यात्मिक बलात्कार" के रूप में, आघात की श्रेणी में भी आ सकते हैं। वास्तव में, टार्लो (1997) और वैन डेर ब्राक (2003) द्वारा कोहेन के हाथों

कथित अनुशासन की कहानियाँ बार-बार होने वाले भावनात्मक आघात/झटके, अपमान और तिरस्कार का वर्णन मात्र हैं। इसके अलावा, ये घटनाएँ गुरु के साथ "घनिष्ठ या बंधुआ संबंध" में घटीं, जिससे वे "बुरे शिष्य" या "असफल" कहलाए बिना बच नहीं सकते थे। और जहाँ भी ऐसा अपरिहार्य आघात होता है, वहाँ "सीखी हुई लाचारी" और पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD) दोनों के उदाहरण मिलते हैं। इस प्रकार, विशेष रूप से "पागल ज्ञान" या "रूड बॉय" जैसे वातावरण इन बीमारियों के पनपने का कारण बन सकते हैं।
इसके अलावा, अपने निर्धारित आश्रम कार्यों को कुशलतापूर्वक करना और दूसरों की गतिविधियों को उससे समन्वित करने की पहल करना, 314 गुरुओं को त्यागना

एक तरफ तो गुरु के कार्य को कुशलतापूर्वक करने के लिए खूब प्रशंसा मिलती है, वहीं दूसरी तरफ हद पार करने और अहंकार दिखाने के लिए कड़ी आलोचना भी होती है। ऐसा वातावरण—जहां गुरु की सेवा कुशलतापूर्वक करने और साथ ही "अत्यधिक कुशलता/अहंकार" से बचने के बीच तनाव बना रहता है—मनोवैज्ञानिक दुविधाओं से भरा होता है। क्योंकि वहां व्यक्ति को पहले से यह पता नहीं होता कि गुरु और अन्य वरिष्ठों की स्वीकृति कैसे प्राप्त की जाए—जबकि जैसा कि हर दुखी व्यक्ति जानता है, स्वामी की स्वीकृति ही सर्वोपरि होती है।
यदि मठ में शिल्पकार हों, तो उन्हें अपना काम करने दें।
यदि मठाधीश चाहें तो वे अपने शिल्प का अभ्यास पूरी विनम्रता और श्रद्धा के साथ करें।
इसलिए आज्ञा दो। लेकिन अगर उनमें से कोई इसके कारण घमंडी हो जाए तो...
अपने शिल्प के ज्ञान के कारण, ऐसा प्रतीत होता है कि वह कुछ लाभ प्रदान करता है।
मठ पर, ऐसे व्यक्ति को यहाँ से ले जाया जाए
उस शिल्प का अभ्यास करने के बाद, वह उसे दोबारा नहीं करेगा, सिवाय शायद उसके बाद जब वह...
यदि उसने स्वयं को विनम्र किया, तो मठाधीश उसे इसे पुनः शुरू करने के लिए कह सकता है (संत
बेनेडिक्ट, [गॉफमैन, 1961] में)।
या, जैसा कि जानजा लालिच (2004) ने एक "राजनीतिक पंथ" में अपने अनुभवों

का वर्णन किया है:
आतंकवादियों से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वे "पहल करेंगे"।
अनुशासन की सीमाओं के भीतर; फिर भी उनके रोजमर्रा के जीवन की वास्तविकता
उन्हें निर्णय लेने के लिए बहुत कम महत्वपूर्ण विषय दिए गए थे।
अंततः, एक उग्रवादी जिसने सोचा कि वह पहल कर रही है
उन्हें "नियंत्रित" किया जाएगा और "करियरवाद," "भव्यता" के लिए आलोचना की जाएगी।
"खड़े होना," "गुटबंदी करना," या अन्य कई आरोप जो
स्वतंत्र कार्रवाई के आगे के प्रयासों को दबाने और
दूसरों के लिए एक उदाहरण बनें।
इस प्रकार, व्यक्ति को केवल यह अनुमान लगाना पड़ता है कि उसे कौन सा कदम उठाना चाहिए, यह जाने बिना कि इससे उसे भरपूर प्रशंसा मिलेगी या कड़ी आलोचना। (पर्याप्त पहल न करना इससे बच नहीं सकता, बल्कि व्यक्ति को ठीक उसी स्थिति में डाल देता है। यानी, कुछ सामान्य कार्यों के लिए, व्यक्ति को "अपनी सीमा जानने" के लिए प्रशंसा मिल सकती है... या अपना काम न करने के लिए कड़ी फटकार मिल सकती है।) इस तरह के दीर्घकालिक बंधनों की एक संभावित चरम प्रतिक्रिया "अत्यधिक प्रयास" से उत्पन्न हिंसक न्यूरोसिस है। दूसरी प्रतिक्रिया गंभीर अवसाद है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्यों के परिणामों का अनुमान नहीं लगा सकता या सफलता या स्वीकृति प्राप्त करने का कोई विश्वसनीय तरीका नहीं खोज सकता, इसलिए वह प्रयास करना ही छोड़ देता है। इस प्रकार, व्यक्ति बिना किसी उद्देश्य के भटकता रहता है।
और केवल दूसरों के स्पष्ट आदेशों के जवाब में (देखें हैनी, एट अल.,
1973).
गुरु और कैदी 315

* * *

जैसा कि एसआरएफ के भावी आश्रम प्रशासक ने बताया, आश्रम छोड़ने की सबसे अधिक संभावना उन्हीं स्वतंत्र शिष्यों की होती है। क्योंकि वे सबसे जल्दी समझ जाते हैं कि उन्हें अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए वहां से निकल जाना

चाहिए। स्वतंत्र और ईमानदार (दृष्टि की स्पष्टता से निर्देशित, न कि उस "मूर्खतापूर्ण ईमानदारी" से जिसका हमने पहले जिक्र किया है) शिष्य इस प्रकार हमेशा "गायब" होते रहते हैं। परिणामस्वरूप, समय के साथ वातावरण में विकृति या प्रदूषण की मात्रा बढ़ती ही जाती है। और फिर लंबे समय तक आश्रित/आज्ञाकारी कैदी ही रक्षक (या आंतरिक शिष्य) का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं, और अपने से नीचे के सभी लोगों से आज्ञाकारिता और सम्मान की मांग करते हैं।

कुछ व्यक्ति वास्तव में स्वतंत्रता और/या बाहरी संपर्क के माध्यम से ऐसे किसी भी बंद वातावरण से बाहर निकलने में सक्षम होते हैं, भले ही हमारी दुनिया के बंद परिवेश में इन दोनों को कभी प्रोत्साहित नहीं किया जाता हो। हालांकि, इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि जो लोग वहीं रहते हैं उनके पास भी यही विकल्प होता है, और वे शायद कोई अलग, उतना ही तर्कसंगत निर्णय ले रहे हों।

दिलचस्प बात यह है कि स्वयं राम दास भी,

उन्होंने जोया के साथ अपने स्वयं के अनुभव की तुलना उस चीज़ से की जो हमेशा होती है

यह तथाकथित पंथों में होता है। "एक बार जब आप उनमें शामिल हो जाते हैं, तो वे..."

“एक ऐसी संपूर्ण वास्तविकता के माध्यम से जिसमें बचने का कोई रास्ता नहीं है,” उन्होंने लिखा।

(श्वार्ट्ज, 1996)।

ऐसी कोई भी वास्तविकता जिसमें "बचने का कोई रास्ता नहीं" हो, जाहिर तौर पर उससे आसानी से दूर नहीं जाया जा सकता।

बचाए जाने पर मुझे जो राहत महसूस हो रही है, उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

मेरे माता-पिता [मूनीज़ से] द्वारा। मुझे पता है कि मैं कभी नहीं कर सकता था

मुझे अकेले छोड़ दिया गया। अनुभव से बाहर किसी के लिए भी यह मुश्किल है।

उस गहराई को समझने के लिए (अंडरवुड और अंडर-)

लकड़ी, 1979; इटैलिक्स जोड़े गए)।

इसके अलावा, उस खतरनाक धारणा को भी याद रखें कि जब तक "पागल ज्ञान" के वातावरण में प्रवेश करने वाले लोग जानते हैं कि वे किस चीज़ में पड़ रहे हैं, तब तक

वह मार्ग शिष्यों के लिए हानिकारक होने के बजाय उनके लाभ के लिए ही काम कर सकता है। हालांकि, ज़िम्बार्डो के अध्ययन में शामिल सभी प्रतिभागियों का मानना था कि वे जानते थे कि वे किस चीज़ में शामिल हो रहे हैं। वास्तव में, उन्होंने हस्ताक्षर किए।
आज जो सहमति प्रपत्र ऑनलाइन पोस्ट किए जाते हैं, 316 गुरुओं को नंगा करने के बाद

उन्हें अध्ययन की प्रकृति के बारे में पूरी तरह से सूचित किया गया था (ज़िम्बार्डो, 2004)। इसके अलावा, कैदी होने के नाते, उन्हें स्पष्ट रूप से यह उम्मीद थी कि उनकी निजता बहुत कम या बिल्कुल नहीं होगी, उन पर निगरानी रखी जाएगी और उनके नागरिक अधिकारों का हनन होगा।
उल्लंघन किया गया (हैनी, एट अल., 1973)।
फिर भी, उस जानकारी ने उन चपरासियों की मदद नहीं की जब उन्हें अपने ऊबे हुए और सम्मान छीनने वाले गार्डों का सामना करना पड़ा। न ही इससे उनके लिए उस माहौल को "बस छोड़ देना" या अपने अधिकारियों द्वारा किए जा रहे व्यवहार पर आपत्ति जताना आसान हुआ।
महज कुछ ही दिनों में हमारे एक तिहाई गार्ड क्रूर बन गए।
और हमारे कैदी अवसादग्रस्त हो गए और उनमें अवसाद के लक्षण दिखाई देने लगे।
अत्यधिक तनाव (ज़िम्बार्डो, 2004)।
टार्लो (1997) ने इसी तरह के व्यवहारों का वर्णन किया, जिन्हें उन्होंने कोहेन के समुदाय के भीतर देखने का दावा किया है:
इन [मौखिक] टिप्पणियों में एक अनुचित क्रूरतापूर्ण भाव था।
सारा पर हमले [घर की बलि का बकरा बनाकर]।
इसी प्रकार, रजनीश के आश्रमों में:
किसी तरह भगवान के निर्देशानुसार अहंकार को ठेस पहुँचाना
“गार्ड” शीला, जिसने ज्ञान प्रदान करने का कोई लिखित दावा नहीं किया-
यह स्थिति और भी गंभीर, लगभग क्रूरतापूर्ण होती जा रही थी।
(हैमिल्टन, 1998)।
आयरलैंड के कैथोलिक संस्थागत स्कूलों में बच्चों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर भी

विचार करें, जहां उन्हें अक्सर "हर बात पर और बिना किसी कारण के" बेरहमी से पीटा जाता है, यहां तक कि उन्हें यह भी नहीं पता होता कि उन्हें इतनी निर्दयता से क्यों पीटा जा रहा है:

बचे हुए लोगों ने मारपीट में इस्तेमाल किए गए हथियारों की एक विस्तृत श्रृंखला का वर्णन किया है।

उनके शरीर के सभी हिस्सों पर—चाबुक, नौ पूंछों वाला डंडा,
चमड़ा, बेल्ट, पट्टियाँ, बेंत, डंडे, पेड़ की शाखाएँ, कुर्सी
पैर, होज़ पाइप, रबर के टायर और हॉकी स्टिक। इनमें से कई
इस्तेमाल किए गए चमड़े को धातु के टुकड़ों से मजबूत बनाया गया था।
या उनमें सीसा सिला हुआ हो... एक पूर्व कैदी को याद है कि...
[मठवासी] भाई जो अपनी चमड़ी को जमा देता था ताकि
इसे और कठिन बना देना और परिणामस्वरूप अधिक दर्दनाक... हिंसा
यह इन संस्थानों की संस्कृति का एक अभिन्न अंग था—इसका
उद्देश्य और अक्सर इसका प्रभाव व्यवस्थित और संपूर्ण था - गुरु और कैदी 317

प्रत्येक लड़के और लड़की की इच्छाशक्ति का निर्माण (राफ्टरी)
और ओ'सुलिवन, 2001; इटैलिक्स जोड़े गए)।

आयरलैंड के लेटरफ्रैक स्थित सेंट जोसेफ औद्योगिक स्कूल के एक पूर्व छात्र ने बाद में सेना में भर्ती होकर द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनों द्वारा बंदी बना लिया गया। फिर भी, उन्होंने कहा कि "लेटरफ्रैक की तुलना में जर्मन युद्धबंदी शिविर एक चाय पार्टी जैसा था" (रैफ्टरी और ओ'सुलिवन, 2001)।

आध्यात्मिक जगत में, क्रूरतापूर्ण या "बदतमीज़ी" भरे दुर्व्यवहार को मूर्खतापूर्ण ढंग से "अच्छी बात" माना जा सकता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह "अहंकार को नष्ट" करता है। लेकिन आश्रम में प्रवेश करने मात्र से किसी की मानसिकता में जादुई परिवर्तन नहीं आ जाता। इसलिए, इस प्रकार की क्रूरताओं के दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव "आध्यात्मिक" संदर्भों में भी उतने ही होंगे जितने कि दयालु "वास्तविक दुनिया" में।

* * *

ज़िम्बार्डो के अध्ययन के कई दिनों बाद, एक स्टैंडबाय कैदी (#416) को जेल में

भर्ती कराया गया, जिसने उत्पीड़न के क्रमिक वृद्धि का अनुभव नहीं किया था, जैसा कि अन्य कैदियों ने किया था।

#416 ने भूख हड़ताल के ज़रिए अपनी रिहाई के लिए दबाव बनाया, जिसे पुराने कैदियों ने एक नामुमकिन "असली जेल" बताया था। इसके बाद उसे एकांत कारावास में डाल दिया गया। इस पूरे दौर में, उसे वहाँ मौजूद पुराने कैदियों ने नायक नहीं, बल्कि उपद्रवी समझा। दरअसल, उनमें से ज़्यादातर ने उसे एकांत कारावास में ही रहने देना बेहतर समझा, बजाय इसके कि वे उसे इस सज़ा से छुड़ाने के लिए अपनी चादरें कुर्बान कर दें।

यह व्यवहार उस बहिष्कार के बिल्कुल समान है जिसका सामना आश्रम के वातावरण में किसी भी स्वतंत्र या "अविश्वासी" (अर्थात उपद्रवी) शिष्य को करना पड़ता है जो अपने वरिष्ठों या गुरु-प्रतिनिधि द्वारा निर्धारित नियमों को तोड़ता है:

मैं इस बात का जीता-जागता सबूत हूं कि आपको चुप रहना ही बेहतर है.... डिग्री
जिसके लिए मुझे सार्वजनिक रूप से बलि का बकरा बनाया गया था, वह सबसे प्रभावी था
बाकी सभी को चुप रखना (यवोन रैंड, [डाउनिंग,
2001]).

इसके विपरीत, आयरिश कैथोलिक सिस्टर्स ऑफ मर्सी की एक पूर्व नौसिखिया - पेट्रीसिया बर्क ब्रोगन, जो अब एक प्रसिद्ध नाटककार हैं - ने उस मंडली में अपने स्वयं के अनुभव के बारे में कहा:

318 गुरुओं का पर्दाफाश

वरिष्ठ ननों की श्रेणी में आपको एक अच्छी नन के रूप में क्या परिभाषित करता है?
भिक्षुणियों और नौसिखियों के लिए यह आवश्यक था कि आप नियमों का पालन करें।
तीन व्रत—गरीबी, पवित्रता और आज्ञाकारिता। लेकिन अगर आप
आज्ञाकारी थे, जिसने सब कुछ ढक लिया (राफ्टरी और
ओ'सुलिवन, 2001)।
फ्रांसिस्कन (कैथोलिक) पुअर क्लेयर संप्रदाय की एक नन ने व्यक्त किया
इसी तरह का दृष्टिकोण (गॉफमैन, 1961 में):

आज्ञाकारी जीवन जीने के चमत्कारों में से यह एक और चमत्कार है। कोई भी
अगर आप कभी भी आपसे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ कर रहे हैं, तो
आज्ञा का पालन कर रहे हैं।
लेकिन यदि आप आज्ञा का पालन करने में विफल रहते हैं, तो न केवल अपने वरिष्ठों द्वारा बल्कि अपने सहकर्मियों द्वारा भी दंडित होने के लिए तैयार रहें:
यदि आपने [मूनीज़ में] समूह के नियमों का पालन नहीं किया,
प्यार और स्वीकृति वापस ले ली जाएगी (हसन, 2000)।
या फिर, चोग्याम ट्रुंगपा की एक महिला शिष्या के अनुभव पर विचार करें, जिसने एक बार गुस्से में आकर अवज्ञा करते हुए गुरु के बालों में गोंद की एक बोतल उड़ेल दी थी।
बाद में उन्हें बोल्डर बुद्धिस्ट चर्च द्वारा बहिष्कृत कर दिया गया।
समुदाय की कई महिलाओं ने मिलकर उसकी पिटाई की।
और उसे अपने और अपने नाजायज बच्चे के लिए अकेले ही गुजारा करना पड़ा, वह दावे (क्लार्क, 1980)।
जब वही महिला गुरु की शिक्षाओं का अभ्यास जारी रखने के इरादे से समुदाय छोड़कर चली गई, तो ट्रुंगपा ने उसे गुस्से से कहा: "शेर तुम्हें खा जाने आएंगे।"
मुझे व्यक्तिगत रूप से यह अनुभव हुआ कि मुझे तब दंडित किया गया जब मैं ऐसा नहीं चाहता था।
"ट्रुंगपा के कहने पर मैं उसके साथ बिस्तर पर चली गई," वह कहती है।
यह "सजा" जाहिरा तौर पर मनोवैज्ञानिक आघात के रूप में आती है।
तार्किक अस्वीकृति (क्लार्क, 1980)।
* * *
ज़िम्बार्डो के अध्ययन के अंत तक, उनके बारह कैदियों में से चार को "अत्यधिक भावनात्मक अवसाद, रोना, क्रोध और तीव्र चिंता" का अनुभव हुआ था, यहाँ तक कि उन्हें उनके भले के लिए अध्ययन से हटाना पड़ा। (बाद में प्रयोगकर्ताओं ने इन मानसिक टूटन को "ध्यान आकर्षित करने का एक निष्क्रिय तरीका" के रूप में व्याख्यायित किया।) गुरु और कैदी 319

मदद करो।" फिर भी, वे निश्चित रूप से उन व्यक्तियों के लिए वास्तविक थे जो उनका

अनुभव कर रहे थे, चाहे अवचेतन प्रेरणाएँ कुछ भी रही हों।) पाँचवें व्यक्ति के शरीर के कुछ हिस्सों पर मनोदैहिक दाने विकसित हो गए।
शरीर (हैनी, एट अल., 1973)।
जिन कैदियों ने स्थिति के अनुसार बेहतर अनुकूलन किया, वे वे लोग थे जिन्होंने बेहतर प्रदर्शन किया।
जिन्होंने बिना सोचे समझे आदेशों का पालन किया और जिन्होंने गार्डों को अनुमति दी उन्हें हर बार और अधिक अमानवीय और अपमानित करने के लिए-
दिन-रात (ज़िम्बार्डो, 2004बी)।
जिन कैदियों को रिहा करना पड़ा, उनकी तुलना में,
अध्ययन की समाप्ति तक वह जेल में ही रहा...
अनुरूपता (समाज को यथावत स्वीकार करना) के मामले में उच्च अंक प्राप्त हुए।
(हैनी, एट अल., 1973)।
किसी व्यक्ति के अधिकार को प्रकट करने के लिए डिज़ाइन किए गए मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर-
तारियानवाद में, जिन कैदियों के अंक सबसे अधिक थे, वे थे
इस सत्तावादी जेल के माहौल में सर्वोत्तम ढंग से कार्य करने में सक्षम-
मेंट (जिम्बार्डो, एट अल., 1973)।
डॉ. जिम्बार्डो ने प्रयोग के अंत तक कैदियों की सामान्य स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि वे "बस किसी तरह किसी तरह से टिके हुए थे... अस्पताल में भर्ती मानसिक रोगियों की तरह," अपने गार्डों के आदेशों का अंधाधुंध पालन कर रहे थे।
वफ़ादार, थके-हारे शिष्य भी, ज़ाहिर है, इसी तरह डटे रहते हैं। और, जैसा कि एसआरएफ भिक्षु ने अप्रत्यक्ष रूप से कहा, जो लोग सबसे अच्छी तरह टिके रहते हैं और खुद को ढाल लेते हैं, वे अक्सर वही होते हैं जो "बिना सोचे-समझे आदेशों का पालन" करने में सक्षम होते हैं, और आज़ादी के "भ्रामक पाप" से मुक्त होते हैं। इसके अलावा, ज़िम्बार्डो के अध्ययन में उनके उच्च सत्तावादी स्कोर से पता चलता है कि आदेशों का पालन करने वाले वे ही लोग हैं जो दूसरों पर अधिकार जमाने का सबसे अधिक आनंद लेते हैं। दूसरे शब्दों में: जो लोग अपने आकाओं (चाहे वे "दिव्य" हों या कोई और) को सबसे अधिक प्रणाम करते हैं, वे आम तौर पर दूसरों से सबसे अधिक सम्मान और आज्ञाकारिता की चाह रखते हैं और उस पर ज़ोर देते हैं। प्रायोगिक पुष्टि

के बिना भी, कोई भी व्यक्ति दूसरों के दैनिक अवलोकन से सामान्य ज्ञान के आधार पर इस गतिशीलता को आसानी से समझ सकता है। कम से कम, मेरा अपना अनुभव तो यही रहा है।
(दिलचस्प बात यह है कि, "आश्रम की गपशप" की तरह, जिससे ऐसे "ईश्वर-केंद्रित" वातावरण में बचना असंभव है, ज़िम्बार्डो के कैदियों की बातचीत भी, पूरे 90% समय उनकी जेल की स्थितियों की कमियों पर केंद्रित थी, बिना किसी संदर्भ के)
बाह्य जगत [हैनी, एट अल., 1973]।) 320 गुरुओं का पर्दाफाश

यह बात भी उतनी ही स्पष्ट है कि ज़िम्बार्डो के अध्ययन में शामिल कैदी, गार्डों या अधीक्षक द्वारा मांगे गए किसी भी काम के लिए "वयस्क सहमति" देने में सक्षम नहीं थे—भले ही वे अध्ययन में शामिल होने से पहले पूरी तरह से सामान्य, कॉलेज जाने की उम्र के व्यक्ति थे। इसका गुरु-प्रतिष्ठित व्यक्तियों और उनके शिष्यों के बीच यौन संबंधों के विचार से गहरा संबंध है। और यह बात शिष्यों द्वारा अपने नेता को "आदर्श पिता/माता" के रूप में देखने से उत्पन्न होने वाले किसी भी "आध्यात्मिक अनाचार" के संदर्भ के अतिरिक्त भी है, जैसा कि हम आगे देखेंगे।
विडंबना यह है कि एक हिंदू कथा में एक शेर का जिक्र है जिसे भेड़ों के बीच पाला गया था और वह यह मानने लगा था कि वह खुद एक भेड़ है—जब उसे दहाड़ना चाहिए था तब वह मिमियाता था, इत्यादि। यह व्यवहार तब तक जारी रहा जब तक एक दिन दूसरे शेर ने उसे पकड़ लिया, उसका चेहरा तालाब के दर्पण जैसे पानी में डुबो दिया और उसे दिखाया कि वह एक शक्तिशाली शेर है, न कि एक विनम्र मेमना। उस कहानी का मूल भाव यह है कि हमारी आत्मा में शक्तिशाली शेर होते हैं, बस सांसारिक जीवन में हम भेड़ों की तरह व्यवहार करते हैं। (उस राजा की कहानी से तुलना करें जो अपनी प्रजा के बीच गया और अपनी पहचान भूल गया, फिर एक आम आदमी की तरह रहने लगा जब तक कि उसका भ्रम दूर नहीं हुआ।) हालांकि, इसका अधिक मार्मिक अर्थ यह होगा कि आत्मविश्वासी, अपेक्षाकृत स्वतंत्र शेर और शेरनियां भी भेड़ियों के वेश में अन्य संरक्षक/गुरुओं से घिरे होने पर आश्रित भेड़ों में बदल जाते हैं।
स्टैनफोर्ड में किए गए रोल-प्लेइंग प्रयोग के बारे में एक और चौंकाने वाली बात यह है: प्रयोग समाप्त होने से पहले ही, नकली जेल से कैदियों के भागने की अफवाहें फैलने

लगी थीं। इसके जवाब में, अफवाहों को रिकॉर्ड करने और भागने की घटना को देखने के बजाय, ज़िम्बार्डो और उनके साथियों ने इसे नाकाम करने की योजना बनाना शुरू कर दिया। यानी, जैसा कि ज़िम्बार्डो ने बाद में स्वीकार किया, वे एक निष्पक्ष, प्रत्यक्षदर्शी सामाजिक मनोवैज्ञानिक की बजाय, जेल अधीक्षक की भूमिका में सोचने और काम करने लगे थे।

उस अध्ययन में शामिल कैदियों को शुरू में पुलिस ने पकड़ा, जेल में दाखिल करते समय उनके शरीर से जूँ निकाली गईं, और उनके नाम की जगह नंबर देकर उनकी पिछली पहचान छीन ली गई, ताकि उनका जेल का अनुभव यथासंभव "वास्तविक" लगे। इसी तरह, कैद के दूसरे दिन हुए तीव्र विद्रोह ने पहरेदारों के अनुभव को और भी "वास्तविक" बना दिया होगा। हालांकि, ज़िम्बार्डो के साथ इस तरह का कोई "दिमागी खेल" नहीं खेला गया। पहरेदारों की तुलना में उन्हें कैदियों से शारीरिक नुकसान का कोई खतरा नहीं था। फिर भी, उन्होंने अपनी स्वेच्छा से सौंपी गई "भूमिका" को उतनी ही जल्दी और उतनी ही तीव्रता से अपना लिया।

किसी भी परिस्थिति में लोगों को उनकी भूमिकाओं में ढालने और उनके वातावरण को विषैला बनाने के लिए, पर्याप्त लंबे समय तक, किस हद तक स्पष्ट "मन नियंत्रण" या "ब्रेनवाशिंग" की आवश्यकता होगी? शायद बिल्कुल भी नहीं—हालांकि इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि ऐसी तकनीकों के इस्तेमाल से हालात और भी बदतर नहीं होंगे, बल्कि निश्चित रूप से होंगे। ("मन नियंत्रण" को ऐसी तकनीकों के माध्यम से किया जाता है जिनमें "नींद की कमी, विशेष आहार, आने-जाने वाली सूचनाओं पर नियंत्रण, साथियों का दबाव, व्यापक दीक्षा सत्र, जैसे कि घंटों तक मंत्रोच्चार, ध्यान, उबाऊ व्याख्यान सुनना और समाधि की हल्की अवस्थाएँ शामिल हैं जो ... व्यक्ति की सोचने की क्षमता को कम कर देती हैं।"

स्पष्ट रूप से" [ललिच, 1997]।

दिलचस्प बात यह है कि रॉक स्टार्स ने भी कई बार मनोवैज्ञानिक परामर्श लिया है ताकि उन्हें मंच पर अपनाई गई अपनी छवि से बाहर निकलने में मदद मिल सके, जब वह छवि उनके निजी जीवन में बहुत ज्यादा हावी हो जाती है।

ज़िम्बार्डो के अधीक्षक की भूमिका में ढल जाने के समान ही, एक समय अधीक्षक-गुरु

रजनीश के कई शिष्य बिना किसी पूर्व सूचना के उनके ओरेगन आश्रम से चले गए। भगवान ने इस घटना को केवल प्रबुद्ध "विकल्पहीन जागरूकता" से देखने के बजाय, अतिरिक्त "भाग निकलने" की आशंका से प्रेरित होकर अपने शिष्यों से कहा कि यदि कोई और उसी तरह से चला गया, तो वे अपना शरीर हमेशा के लिए त्याग देंगे। यह उनके किसी भी समर्पित शिष्य के लिए सबसे बुरी बात होती जिसकी वे कल्पना कर सकते थे। और कोई भी "भगवान का वध" करने वाला नहीं बनना चाहता, न ही अपने अंतरात्मा या समाज से उस अपराधबोध का सामना करना चाहता है। इस प्रकार, उस चेतावनी से उत्पन्न दबाव और इस तथ्य कि अनुयायियों को एकांत क्षेत्र छोड़ने में सहायता की आवश्यकता थी, ने उस "कारागार" की "सुरक्षा" सुनिश्चित की। वास्तव में, मिल्ने (1986) के अनुसार, इस धमकी ने पहले से नियोजित तीन और "भाग निकलने" की घटनाओं को तुरंत रोक दिया।

इन सब के बाद, अलेक्जेंडर (2001) ने ज़िम्बार्डो के अध्ययन की स्थायी विरासत का सारांश प्रस्तुत किया:

इस प्रयोग के प्रति लोगों के आकर्षण का मुख्य कारण यह है कि...

यह धारणा कि कोई भी व्यक्ति क्रूर तानाशाह बन सकता है

अगर मौका दिया जाए तो...

“ये सभी लोग शांतिप्रिय थे,” [ज़िम्बार्डो] ने याद करते हुए कहा।

जिन छात्रों को गार्ड के रूप में चुना गया था। "वे ना की तरह बन गए-"

कहा"....

“यह दर्शाता है कि अच्छे लोगों के लिए लगातार अपराधी बनना कितना आसान है।”

दुष्टों के गद्दार।"

322 गुरुओं का पर्दाफाश

जिम्बार्डो की वेबसाइट, www.prisonexp.org पर, उस भयावह प्रयोग का एक विस्तृत ऑनलाइन फोटो/वीडियो वृत्तचित्र प्रस्तुत किया गया है।

* * *

मानसिक अस्पतालों में अस्थायी रूप से रहने वाले लोगों ने असुविधा के साथ देखा है कि उनके लिए अपने सभी निर्णयों को दूसरों द्वारा लिए जाने का आनंद लेना कितना आसान हो गया था - जैसे कि कब खाना है, नहाना है, सोना है, आदि।

यह सोचना नासमझी होगी कि ऐसी ही स्थिति हमारे विश्व के आश्रमवासियों के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर लागू नहीं होती। क्योंकि उनके व्यावहारिक निर्णय समुदाय के नियमों द्वारा लिए जाते हैं, और उनके नैतिक और आध्यात्मिक निर्णय गुरु द्वारा लिए जाते हैं। गहन ऊर्जा प्रवाह और प्रसारित आनंद/ज्ञान के साथ या उसके बिना, स्वतंत्रता का यह त्याग बहुतों को आकर्षित करता है, और "वास्तविक दुनिया" में लौटने के प्रयास में एक महत्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करता है। क्योंकि वास्तविक दुनिया में, व्यक्ति को अपने निर्णय स्वयं लेने होते हैं और परिणामों के लिए उत्तरदायी होना पड़ता है। इसके विपरीत, वास्तविक दुनिया में, अपने निर्णयों को दूसरों को सौंपना निष्ठा और अहंकार के त्याग में आध्यात्मिक विकास का संकेत माना जाता है, और तदनुसार सामाजिक रूप से पुरस्कृत किया जाता है।

एक बार जब आप नियमों और रीति-रिवाजों को अच्छी तरह समझ लेते हैं, तो यह आसान हो जाता है। नहीं

निर्णय, कोई विकल्प नहीं, योजना बनाने के लिए कुछ भी नहीं। यह बहुत कठिन है-

अकेले रहना [ज़ेन भिक्षु के रूप में रहने की तुलना में] बेहतर है (बोहम, 1996)।

यह देखते हुए कि सभी दैनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया था—भोजन, वस्त्र,

रहने की व्यवस्था के संबंध में अब कुछ ही निर्णय बचे थे।

हेवन गेट के सदस्य को बनाने के लिए (लालिच, 2004)।

व्यक्ति स्वेच्छा से किसी पूर्ण संस्थान में प्रवेश करने का विकल्प चुन सकते हैं और

इसके बाद, उन्हें खेद हुआ कि वे आयात करने में असमर्थ रहे...

महत्वपूर्ण निर्णय। अन्य मामलों में, विशेष रूप से धार्मिक मामलों में, कैदियों

नग्न होने की जानबूझकर की गई इच्छा से शुरू हो सकता है और उसे बनाए रख सकता है।

और व्यक्तिगत इच्छा से मुक्त (गॉफमैन, 1961)।

जेटसुनमा का टेलीफोन नंबर सूचीबद्ध नहीं था और उसे गोपनीय रखा गया था।

यहां तक कि उनके अधिकांश छात्रों से भी। "नहीं तो, मुझे हर समय फोन आते रहते।"

उन्होंने बाद में बताया, “दिन में लोग मुझसे पूछते थे कि कौन सा अनाज खाना चाहिए।

खरीदें” (शेरिल, 2000)।

निःसंदेह, इस प्रकार की अपंग करने वाली (सह-)निर्भरता एक दोतरफा प्रक्रिया है: जेटसुनमा, कोहेन, ट्रुंगपा और कई अन्य लोगों ने कथित तौर पर अपने अनुयायियों के निजी जीवन को भी नियंत्रित किया है। सरकार-गुरु और कैदी 323

इस तरह की व्यवस्था में आमतौर पर गुरु-समान व्यक्ति द्वारा दीर्घकालिक संबंधों को स्थापित करना और तोड़ना, और यह सुझाव देना शामिल होता है कि किन दंपतियों को बच्चे पैदा करने चाहिए, आदि।

एक निष्ठावान शिष्य के रूप में, व्यक्ति गुरु के ज्ञानोदय संबंधी दावों को गंभीरता से लेता है और उनकी शिक्षाओं को अपने दुखों के अंत और परमानंद या किसी अन्य प्रकार के ज्ञानोदय तक पहुँचने का सबसे सरल मार्ग मानता है। ऐसे में, ऐसे "ईश्वर प्रदत्त" परामर्श का पालन करने के अलावा और क्या विकल्प बचता है, चाहे वह कितना भी दखलंदाजी भरा और अत्यधिक नियंत्रणकारी क्यों न हो? "अहंकार" के अलावा और क्या इसका विरोध करेगा?

अगर "भगवान" आपको कुछ करने के लिए कहते हैं, तो आप उसे करते हैं, है ना?

इस तरह की निष्ठावान अनुयायी आम तौर पर और (उस संदर्भ में) "वैध रूप से" आपको गुरु के उपदेशों में पूरी तरह से लीन कर देगी, जिससे बाहरी लेखों या समाचारों से आपका ध्यान स्वाभाविक रूप से हट जाएगा। ऐसे में, यदि आपको लगे कि आश्रम के बाहर के परिवार और मित्रों का विरोध या उनकी समझ की कमी आपकी आध्यात्मिक खोज में बाधा डाल रही है, तो आप संभवतः उनसे भी स्वेच्छा से संबंध तोड़ लेंगे। इसके विपरीत, यदि आपके नए विश्वास और गतिविधियाँ उनके लिए बहुत "अजीब" हों, तो वे भी उतनी ही आसानी से आपका साथ छोड़ देंगे।

“मुझे फोन करना,” [पाम] ने कहा। “मैं तुम्हें अपनी जिंदगी बर्बाद करते हुए नहीं देखना चाहती।”

इस तरह की जगह।"

“तुम हरे कृष्णा नहीं बनना चाहते। इस बारे में सोचो।”

डायना ने आगे कहा।

पाम वहीं बैठी थी, रेडियो की आवाज़ रस्म से भी ज़्यादा तेज़ थी।

मंदिर से संगीत की आवाज़ आई, और फिर वह चीखते हुए बाहर निकल गई।

मैंने गाड़ी खड़ी की और वाटसेका के अंधेरे में तेज़ी से निकल गया।

मैंने तब तक देखा जब तक कि पीछे की बत्तियाँ बुझ नहीं गईं। मुझे उम्मीद थी कि मेरे दोस्त
मैं उन्हें कभी न कभी वापस ज़रूर लाऊंगा, लेकिन मुझे डर था कि मैंने उन्हें हमेशा के लिए खो दिया है (मस्टर,
1997).
कृपालु में ही रहने का निर्णय लेने के बाद, मैं व्यवस्थित हो गया था।
कैंपस की जीवनशैली में सहजता से ढल गया... मेरे दोस्त
घर लौटने पर उनकी प्रतिक्रियाएँ तो स्वाभाविक ही थीं। नीना ने बात करना बंद कर दिया।
कुछ समय के लिए मुझसे बात कर रहा था (कोप, 2000)।
जॉर्ज फ्यूरस्टीन (1992) ने आदि दा के आश्रम में प्रवेश करने और बाद में वहां से निकलने के अपने ही ऐसे ही अनुभवों का वर्णन किया:
मेरे इस फैसले पर पुराने दोस्तों और सहकर्मियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।
समझ की कमी के साथ अकादमिक दुनिया से "बाहर निकलना", 324 गुरुओं को छीनना

कुछ तो शत्रुतापूर्ण रवैये के साथ भी। इसी प्रकार, मेरे पूर्व साथी शिष्य-
लोग यह समझने में पूरी तरह विफल रहे कि मुझे राख क्यों छोड़नी पड़ी।
राम, पांच साल बाद]। कुछ लोगों ने तो मेरे प्रति गुस्से भरी प्रतिक्रिया भी दी।
और कुछ लोगों के मन में अब भी दुर्भावना है।
अगर आपने सवाल उठाए और [मूनीज़] छोड़ने का फैसला किया, तो आप
तुम प्यार के लायक नहीं होगे—इसके विपरीत, तुम
तिरस्कार और यहां तक कि घृणा के योग्य (हसन, 2000)।
या, जैसा कि बटरफील्ड (1994) ने इस गतिशीलता का सारांश प्रस्तुत किया:
तथाकथित पंथीय मित्रता का पाखंड आम तौर पर यह होता है कि
जबकि वे निःशर्त प्रेम का दिखावा करते हैं, वे शक्ति पर निर्भर होते हैं।
पूरी तरह से [कथित] पंथ के प्रति वफादारी पर आधारित।
यह सब सीधे तौर पर "समाज में घुलमिल जाओ या बहिष्कृत हो जाओ" के सरल रूढ़िवादी सिद्धांत से निकलता है। और यह सिद्धांत आश्रम के बाहर के विविध समाज

के सदस्यों द्वारा उतना ही लागू होता है जितना कि समरूप विश्वास वाले "पंथ" के अंदर।
हेवन गेट में अनुरूपता का दबाव बहुत प्रबल था, लेकिन
कुछ मायनों में यह अनुरूपता के मानदंडों से बहुत अलग नहीं है।
यह अमेरिकी समाज में हर जगह पाया जाता है। इस अनुरूपता की विशिष्टताएँ...
माइटी—विचार, दिखावट, भाषा, टी [नेटल्स] के प्रति आदर
और डू [एप्पलव्हाइट]—बाहरी व्यक्ति को अजीब लग सकता है, लेकिन
इस तरह की अनुरूपता हर जगह व्याप्त है, क्योंकि नागरिक उमड़ पड़ते हैं
नवीनतम फैशन या लोकप्रिय उत्पाद खरीदें या उनके सामने झुक जाएं
बॉस। उस व्यवहार की यही सामान्यता थी जिसने इसे ऐसा बना दिया।
टीआई और डो के अनुयायियों के लिए कार्यक्रम का पालन करना आसान है।
(लालिच, 2004)।
* * *
सुरक्षित समुदायों और समाजों को तथाकथित विनाशकारी समुदायों से अलग करने वाला कारक केवल प्रकार का अंतर नहीं, बल्कि तीव्रता या मात्रा का अंतर है। यह बात हाई स्कूल, व्यावसायिक जगत, नौसेना, कारागार और जॉनस्टाउन तक फैली एक व्यापक श्रेणी में लागू होती है। क्योंकि कोई भी अपेक्षाकृत बंद, पदानुक्रमित व्यवस्था, जिसमें ज्ञानोदय/पैरोल/स्नातक/पदोन्नति के नियमों का सम्मानपूर्वक पालन करने पर जोर दिया जाता है, और नेताओं पर अपर्याप्त नियंत्रण और संतुलन होता है, जिससे वे अनुयायियों और बाहरी दुनिया के प्रति जवाबदेह नहीं होते, वह एक ऐसी विकृति है जो भविष्य में उत्पन्न हो सकती है, चाहे उसमें शामिल लोग किसी भी लिंग या आयु के हों।
गुरु और कैदी 325

महत्वपूर्ण बात यह है कि 1975 में साइकोलॉजी टुडे में प्रकाशित एक लेख में, ज़िमबार्डो और उनके सहयोगी क्रेग हैनी ने यह टिप्पणी की थी कि कई महत्वपूर्ण मायनों में, "हाई स्कूल और जेल में अंतर करना मुश्किल है":
हालांकि हम यह दावा नहीं करते कि हाई स्कूल वास्तव में जेल हैं,
दो वातावरण एक दूसरे से उल्लेखनीय रूप से मिलते जुलते हैं और

बेहद कष्टदायक हद तक.... कोई भी सामाजिक संस्था—एक स्कूल, अस्पताल—
कार्यालय, कारखाना, दफ्तर—अगर यह गंभीर रूप से
यह किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता को लगातार प्रतिबंधित करता है, उसे नियमित रूप से कैद कर देता है।
व्यवहार या विचार के नियमित और नियमित तरीके।
ज़िम्बार्डो और हैनी ने समझदारी से हाई स्कूल के शिक्षकों की तुलना गार्डों से और छात्रों की तुलना कैदियों से की। और यदि उन्होंने धार्मिक समुदायों की संरचना पर ध्यान दिया होता, तो वे निश्चित रूप से उनके लिए भी इसी तरह की तुलना करना उपयोगी पाते। उन्हें यह देखकर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होता, कम से कम बाद में, कि हमारे विश्व के आश्रमों में भी ठीक वही समस्याएं देखने को मिलती हैं जो हमारी जेलों में प्रकट होती हैं, "भले ही" आश्रमों में "साक्षात्कार" के रूप में "स्वरूप ईश्वर" और "गार्ड" के रूप में उनके करीबी शिष्य हों।
तुलनात्मक रूप से, अपेक्षाकृत सुरक्षित व्यवसाय के संबंध में भी
एसआरएफ वालरस वेबसाइट पर एक गुमनाम पोस्टकर्ता ने टिप्पणी की:
कंपनियों में काम करना बहुत बुरा था। मैं एक कंप्यूटर इंजीनियर थी।
मैं एक प्रोग्रामर हूं, इसलिए मैंने विभिन्न संस्थानों में काम करने के आंतरिक पहलुओं को करीब से देखा है।
स्तर। सबसे चौंकाने वाली बात जो होती है वह यह है कि आप किसी चीज़ में शामिल हो जाते हैं।
उच्च प्रबंधन की बैठक में देखिए कि यह कितनी स्पष्ट रूप से विरोधी है-
वे कर्मचारी हैं, बिना किसी माफी के। लेकिन मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि
इससे भी बुरी बात यह थी कि कर्मचारियों ने इस बात को पूरी तरह से मान लिया था।
दुर्व्यवहार। अगर आप उन्हें यह बताने के लिए कुछ कहते हैं कि कैसे
उनका इस्तेमाल और शोषण किया जा रहा है, और आप उपद्रवी बन जाते हैं।
[ज़िम्बार्डो के कैदी #416 की तुलना करें], नाव हिलाने वाला। वे हैं-
ऐसा मानना स्वाभाविक है कि सम्राट ने नवीनतम और सर्वश्रेष्ठ शैली के कपड़े पहने हुए हैं।
और इसी वजह से मैं पागल हो गया था।
यानी, जैसा कि हम अनुमान लगा सकते थे, मनोवैज्ञानिक गतिविधियाँ तथाकथित

पंथों और कारागारों में होने वाली गतिविधियों से भिन्न नहीं हैं, भले ही वे उस क्रम में जॉनस्टाउन के चरम तक न पहुँचें। (ऐसे "पंथ"/कारागार वातावरण में, कैदियों के अधिकारों की परवाह किए बिना, उन्हें क्रूरतापूर्वक प्रताड़ित किया जा सकता है, मानो वे समान मनुष्य न होकर हीन जानवर हों।) यहाँ, स्पष्ट रूप से, गार्डों की जगह अधिकारी, कैदियों की जगह चपरासी कर्मचारी और अधीक्षकों की जगह सीईओ हैं। संरचना 326 गुरुओं को निथारना

हालांकि, जिस व्यवस्था में वे फिट होते हैं, वह किसी जेल या आश्रम की तरह ही पदानुक्रमित है। इसमें अधीनस्थों को अपने वरिष्ठों की आज्ञा मानने के लिए मजबूर करने वाले (वित्तीय) कारण भी शामिल हैं, और साथ ही साथ उन्हें अपमानित होने पर भी "छोड़कर न जाने" के लिए भी उतने ही ठोस कारण मौजूद हैं। इसलिए वे "अच्छे कर्मचारी" बनकर, कोई हंगामा न करते हुए, वहीं बने रहते हैं, इस उम्मीद में कि उन्हें "कहीं अधिक बुद्धिमान" अभिभावक-समान प्रबंधकीय नेताओं के प्रति आज्ञाकारिता के लिए पुरस्कार और पहचान/पदोन्नति मिलेगी।
दिलचस्प बात यह है कि इसी तरह की प्रक्रियाएं सबसे छोटे "समुदायों" में भी लागू हो सकती हैं:
विवाह की सामाजिक परंपरा... कई देशों के लिए...
एक ऐसी कारावास की स्थिति जिसमें एक साथी सहमत होता है
कैदी या रक्षक बनना, दूसरे को मजबूर करना या अनुमति देना
पारस्परिक भूमिका निभाएं (ज़िम्बार्डो, एट अल., 1973)।
इन सभी प्रणालियों में "पदानुक्रम" के बजाय "पितृसत्ता" पर ध्यान केंद्रित करने से बुनियादी मानव मनोविज्ञान के प्रासंगिक मुद्दे अस्पष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा, इससे आम तौर पर पूरी तरह से भ्रामक, अक्सर पुरुष-विरोधी (स्त्री-द्वेषी के विपरीत) प्रस्तावित "समाधान" सामने आते हैं, जो यहाँ बताई गई समस्याओं के समाधान के लिए होते हैं।
* * *
एक शुद्ध लोकतंत्र भी स्वाभाविक रूप से और अनिवार्य रूप से एक सत्तावादी पदानुक्रम में परिवर्तित हो जाएगा, यदि कोई एक व्यक्ति पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा अचूक "ईश्वर" के रूप में माना जाए। तब वे समर्थक उसकी (या उसकी) सर्वज्ञ

वास्तविकता की धारणा को स्वीकार करते हैं, और सामूहिक रूप से अपने साथियों पर भी वही सम्मान थोपते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें समुदाय से बहिष्कृत कर दिया जाए—जो चपरासी से भी बदतर स्थिति है, भले ही मोक्ष दांव पर न हो। इस प्रकार वे स्वयं को लोगों के बीच लोकप्रिय बनाते हैं और अपने लिए एक आंतरिक वृत्तांत का दर्जा सुरक्षित करते हैं, जहाँ वे अपने से ऊपर के "शांत ऋषि" के इतने निकट रहकर "प्रतिबिंबित महिमा" का आनंद ले सकते हैं। इसी स्थिति में, उन्हें अपने से नीचे वालों से भी सम्मान प्राप्त होता है—आवश्यकतानुसार क्रूरतापूर्वक भी।
(गुरु पद के स्वतः उत्पन्न होने और उसकी रक्षा के संदर्भ में: पशु जगत में भी "अल्फा नर" और पदानुक्रम की अपरिहार्य उपस्थिति की तुलना करें—जो आवश्यक रूप से अच्छी नहीं, बल्कि अपरिहार्य है। ऐसे पूर्व-मौखिक वातावरण में न तो "पितृसत्ता" है और न ही "अत्यधिक रेखीय सोच"; फिर भी पदानुक्रमिक व्यवस्थाएँ हर हाल में घटित होती हैं।)

रोमन कैथोलिक धर्म, तिब्बती बौद्ध धर्म और परमहंस योगानंद के आध्यात्मिक आध्यात्मिक मार्ग जैसे विविध आध्यात्मिक मार्ग पूर्वी कृषि प्रधान देशों से लेकर उत्तर आधुनिक अमेरिका तक की संस्कृतियों में विकसित हुए हैं। फिर भी, उनकी सत्ता संरचनाओं, सदस्यों के व्यवहार, छोड़ने पर मिलने वाली सजाओं और उनमें बने रहने वालों पर होने वाली कथित, आत्मा को कुचल देने वाली क्रूरताओं में शायद ही कोई अंतर हो। और इन सब बातों को देखते हुए, अब यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि न केवल ऐसे समुदायों की समस्याएं व्यवस्थागत हैं, बल्कि दुर्व्यवहार को जन्म देने वाली संरचनाएं स्वयं भी अनिवार्य रूप से अपरिहार्य हैं।
इसलिए, हमने जो समस्याएं देखी हैं, वे कुछ "बुरे लोगों" का परिणाम नहीं हैं, बल्कि उस परिवेश का परिणाम हैं जिसमें वे मौजूद हैं।
जेलें [और अन्य सत्तावादी संस्थाएँ, जैसे आश्रम]
जहां सत्ता का संतुलन इतना असमान होता है, वहां क्रूरता की प्रवृत्ति अधिक होती है। और दुर्व्यवहार वाले स्थानों को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त प्रयास किए बिना उन्हें संरक्षित किया जा सकता है।
ज़िम्बार्डो ने कहा, गार्डों की मूल प्रवृत्तियाँ। स्टैनफोर्ड में और

इराक [जैसे, अबू ग़रेब] के बारे में उन्होंने आगे कहा: "ऐसा नहीं है कि हम बुरी बातें करते हैं।"
अच्छे डिब्बे में सेब। हमने अच्छे सेब खराब डिब्बे में डाल दिए।
बैरल जिस भी चीज को छूता है उसे दूषित कर देता है" (जे. श्वार्ट्ज,
2004).
अबू ग़रेब में, "पहरेदारों को जेल के अंदर 'व्यवस्था और न्याय' बनाए रखने के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, वह करने की अनुमति दी गई थी" - एक निर्देश जो स्पष्ट रूप से ज़िम्बार्डो के पहरेदारों को दिए गए निर्देश के पूरी तरह से तुलनीय है।
एस.एन.ए.पी. (पुजारियों द्वारा दुर्व्यवहार किए गए पीड़ितों का नेटवर्क) के राष्ट्रीय निदेशक डेविड क्लोहेसी ने पादरी यौन शोषण की समस्याओं के संबंध में कैथोलिक चर्च का इसी तरह का विश्लेषण प्रस्तुत किया (
ब्रुनी और बर्केट, 2002):
ये खराब सेबों की वजह से नहीं है। ये बैरल की संरचना की वजह से है।
सेब का बोलबाला है, और असली मुद्दा उन लोगों का है जो इसके प्रभारी हैं।
बैरल, और वे लोग जो बैरल भरते हैं [अर्थात, बिशप]
कार्डिनल और पोप]।
लगभग सर्वत्र, आध्यात्मिक समुदायों में, नेताओं के व्यवहार पर कोई सार्थक नियंत्रण और संतुलन नहीं होता, जिससे उनकी "दिव्य" शक्ति के दुरुपयोग को सीमित किया जा सके। यह न केवल उनकी निम्न (जैसे, क्रूर या यौन) प्रवृत्तियों में लिप्त होने के संदर्भ में सच है, बल्कि उन सिद्धांतों के एनिमल फार्म-जैसे पुनर्लेखन को रोकने में विफलता के संदर्भ में भी सच है जिन पर मूल रूप से समुदाय की स्थापना हुई थी। (एसआरएफ के "वैध" क्रिया दीक्षा आदि पर वर्तमान एकाधिकार की तुलना करें।)
फिर भी, 328 गुरुओं को छीनना

साथ ही साथ, विचारधारा थोपने, अनिवार्य आज्ञापालन, बहिष्कार और इससे भी बदतर, उन सत्ता हथियाने और नियम-परिवर्तनों के बारे में अनुयायियों को जानने तक से रोकने के लिए इनका भरपूर इस्तेमाल किया जाता है, और बोलने की तो बात ही छोड़ दें। और देखते ही देखते, उदाहरण के लिए, निदेशक मंडल के सदस्य उन लोगों से "अधिक समान" हो जाते हैं जिनके प्रति उन्हें जवाबदेह होना चाहिए। उन्हें इस बात

का और भी फायदा मिलता है कि ऐसे चपरासियों की कोई कमी नहीं है जो अपने उद्देश्य के प्रति वफादारी साबित करने के लिए उत्सुक हैं, और जो भी इस असमानता पर सवाल उठाने की हिम्मत करता है, उस पर वे इसे और भी मजबूत कर देते हैं।

ऐसे आध्यात्मिक समुदायों में गहन श्रद्धा का भाव तब भी बना रहेगा, जब "प्रथम ऋषि" से नीचे के सभी लोग यह मानते हों कि वे स्वयं अंततः उनकी कथित उच्च स्तर की बुद्धि या आध्यात्मिक अनुभूति को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि उस ज्ञान को प्राप्त करने के साधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गुरु के रूप में प्रकट हुई उस बुद्धि के प्रति "अस्थायी रूप से" श्रद्धा रखना है। इसके विपरीत, "ईश्वर" की बुद्धि पर प्रश्न उठाना समुदाय के भीतर किसी न किसी रूप में दंड भोगने के समान है, ठीक उसी प्रकार बिना किसी प्रश्न के उनकी आज्ञा का पालन करना स्वयं की मुक्ति सुनिश्चित करना है।

भारतीय परंपरा में यह धारणा प्रचलित है कि... "आलोचना करना"

गुरु एक ऐसी चीज है जिसे शिष्यों को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए; और

वे ऐसा नहीं करते (भारती, 1976; इटैलिक्स जोड़े गए)।

आप जो भी करें, केवल गुरु को प्रसन्न करने के लिए ही करें।

गुरु के बिना ज्ञान प्राप्ति असंभव है (बटरफील्ड,

1994).

आपको अपने गुरु की हर बात माननी होगी। आपको उनकी आज्ञा का पालन करना होगा।

(नीम करोली बाबा, [दास, 1997] में)।

एक बार रामकृष्ण ने एक भोले-भाले युवक को फटकार लगाई थी।

वह व्यक्ति जिसने गुरु के पैर धोने से इनकार कर दिया था।

शौचालय: "अगर मैं खड़े होकर पेशाब करता हूँ, तो तुम कमीनों को नाचते हुए करना पड़ेगा।"

आस-पास। तुम्हें अपने भले के लिए मेरी बात माननी होगी" (सिल,

1998).

उपासनी बाबा (1978) के प्रासंगिक शब्दों में—जो मूल शिरडी साई बाबा के शिष्य थे—जिन्होंने स्वयं प्राचीन वैदिक रीति-रिवाज के अनुसार पच्चीस कुंवारी कन्याओं से विवाह किया था:

किसी भी भक्त का काम संदेह करना या उसकी व्याख्या करना नहीं होता।
वह अपने तरीके से, सतपुरुष द्वारा कही गई हर बात को स्वीकार कर लेता है।
[ईश्वर-प्राप्त व्यक्ति]। वह गुरु और कैदी 329 के वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकता।

सद्गुरु (अर्थात सच्चे शिक्षक) के वचन या कर्म से; क्योंकि
उसकी तर्कशक्ति और विचार कभी भी समझने में सक्षम नहीं होते।
गुरु के विचार या कार्य।
या, जैसा कि आदि दा (1974) ने अपने अनुयायियों को आसानी से समझाया:
यदि आप यह मान लें कि गुरु [हमेशा जीवित रहने और निरंतर बने रहने] से कम हैं-
यदि आप उसकी कही बातों को मान लें तो, ईश्वरीय संवाद में सचेत रूप से शामिल होकर ऐसा करना उचित नहीं है।
वह सत्य से कम है, कि वह ईश्वर से भिन्न है, कि वह
वह ठीक उसी तरह से ईश्वर में नहीं रहता जिस तरह से वह आपसे अपेक्षा कर रहा है।
ईश्वर में जीना, तब आप ऐसे लोगों के साथ सत्संग में नहीं जी रहे हैं।
एक बात, और आप यह साधना नहीं कर रहे हैं।
या फिर एंड्रयू कोहेन द्वारा अपने शिष्यों से किए गए कथित वादे को याद करें: "जो कोई भी मुझसे प्रेम करता है... उसे ज्ञान की प्राप्ति निश्चित है।" लेकिन अगर त्वरित और स्वेच्छा से आज्ञापालन के माध्यम से नहीं, तो ऐसा प्रेम कैसे प्रदर्शित किया जा सकता है? क्या कोई व्यक्ति जो उनसे "प्रेम" करता है, खुले तौर पर प्रश्न उठा सकता है, अवज्ञा करना तो दूर की बात है? नहीं, अगर हम उनके पूर्व शिष्यों की रिपोर्टों पर विश्वास करें तो ऐसा संभव नहीं है।
जो भी व्यक्ति निष्ठावान छात्र साबित होता है, वही उसका मित्र होता है।
जो लोग बेवफा या अविश्वसनीय होते हैं, वे कृपा खो देते हैं (वैन डेर)
ब्राक, 2003)।
इसी प्रकार, तिब्बती बौद्ध परंपरा से हमें यह खतरनाक सलाह मिलती है:
एक साहसी शिष्य, जो कभी न हार मानने वाले दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण था
अपने शिक्षक को अपनी जान की कीमत पर भी नाराज करने के लिए इतना दृढ़ निश्चयी।

वह इस बात को ध्यान में रखता है कि वह तात्कालिक परिस्थितियों से कभी विचलित नहीं होता।
जो अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना अपने शिक्षक की सेवा करता है या
वह जीवित रहता है और बिना किसी दया के उसके हर आदेश का पालन करता है।
स्वयं से पूरी तरह मुक्त—ऐसा व्यक्ति केवल इसी के माध्यम से मुक्त हो जाएगा
उनकी भक्ति (रिनपोचे, 1998; इटैलिक्स जोड़े गए)।
गुरु भक्ति में आपके विचार और कर्म दोनों शामिल होते हैं।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस बात का पूर्ण विश्वास विकसित किया जाए कि
आपके गुरु बुद्ध हैं.... यदि आपको अपने गुरु की योग्यता पर संदेह है-
आपको मार्गदर्शन देने की क्षमता और कौशल के साथ, आपके अभ्यास व्यापक होंगे।
अत्यंत अस्थिर और आप कोई भी निर्णय लेने में असमर्थ होंगे।
क्रीट में प्रगति हो रही है...
यदि आपका गुरु अज्ञानतापूर्ण तरीके से व्यवहार करता प्रतीत होता है
और आपको लगता है कि उन्हें बुद्ध मानना पाखंड होगा।
आपको याद रखना चाहिए कि आपके अपने विचार अविश्वसनीय होते हैं 330 गुरुओं के सिद्धांतों को उजागर करना

और जो स्पष्ट दोष आपको दिखाई देते हैं, वे शायद केवल एक प्रतिबिंब मात्र हों।
आपकी अपनी भ्रामक मानसिकता। आपको यह भी सोचना चाहिए कि यदि
आपके गुरु ने पूरी तरह से सही तरीके से कार्य किया, वे होते
वह पहुंच से बाहर है और आप उससे जुड़ नहीं पाएंगे। यह है
इसलिए आपके गुरु की महान करुणा के कारण, ताकि वह
स्पष्ट खामियां दिखाई देती हैं। यह उनके कुशल साधनों के उपयोग का एक हिस्सा है।
ताकि वह आपको सिखा सके। वह आपकी नकल कर रहा है।
स्वयं की गलतियाँ (बेरु क्येंट्ज़े रिनपोचे, [बेरज़िन, 1978] में; इतालवी-
आईसीएस जोड़ा गया)।
एक बार जब किसी व्यक्ति को [भारत में] संत के रूप में पहचान लिया जाता है, तो एक पवित्र
वह जो कुछ भी करे या न करे, उससे उसकी उपाधि नहीं बदल सकती।

जब तक कि वह रंगे हाथों पकड़ा न जाए, और कई बार, संलग्न
यौन संबंध या वर्जित पेय जैसी विनाशकारी चीजों में भी। लेकिन फिर भी
ऐसे मामले में, एक बार जब उनका करिश्मा पूरी तरह से स्थापित हो जाता है, तो
इस दुविधा से एक द्वंद्वात्मक समाधान निकलता है: मुक्त व्यक्ति है
सामाजिक नियमों से बंधे नहीं हैं, और पर्याप्त धर्मग्रंथ मौजूद हैं
इसका समर्थन करें (भारती, 1976)।

यह सब तो सरासर छल-कपट, सत्ता को बचाए रखने की सरासर बकवास है, जिसे आध्यात्मिकता के वेश में प्रस्तुत किया जाता है। और जैसा कि हम देख चुके हैं, यह सब पारंपरिक, कृषि प्रधान पूर्व में भी उतना ही निश्चित रूप से मौजूद है जितना कि उत्तर-आधुनिक पश्चिम में, जैसा कि स्वयं पश्चिम ने स्वीकार किया है।

यह निराधार और मूर्खतापूर्ण धारणा कि "आदि दा के विचित्र मामले की असली समस्या यह है कि गुरु सिद्धांत को हमारी संस्कृति न तो समझती है और न ही स्वीकार करती है" स्पष्ट रूप से उसी खतरनाक बचाव का हिस्सा है। क्योंकि, यह फिर से स्पष्ट है कि जब भी "ईश्वर" शामिल होता है, कोई नियंत्रण या संतुलन नहीं रहता: "ईश्वर" हमेशा अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकता है, चाहे आसपास की संस्कृति या परंपरा कैसी भी हो।

इस प्रकार की पारंपरिक शिक्षा के सामने, दलाई लामा जैसे लोगों द्वारा कही गई निम्नलिखित बातें पूरी तरह खोखली लगती हैं:

कुछ दोष छात्र का भी है, क्योंकि बहुत अधिक
आज्ञाकारिता, भक्ति और अंधभक्ति एक शिक्षक को बिगाड़ देती है...
इसका कुछ हिस्सा आध्यात्मिक गुरु पर भी निर्भर करता है क्योंकि उनमें इसकी कमी होती है।
लेकिन-
लेर, 1990)।

बेशक, तर्क की समानता के आधार पर, कोई व्यक्ति समान रूप से "दोष का कुछ हिस्सा" उन पीड़ित महिलाओं पर भी डाल सकता है जिन्होंने पुरुषों को अपनी शक्ति सौंप दी, या हास्यास्पद रूप से बहुत आज्ञाकारी बच्चों को अपने माता-पिता को "बिगाड़ने" वाला मान सकता है, इत्यादि।

कहीं अधिक समझदारी से:
गुरु प्रणाली, ज़ेन मास्टर प्रणाली और अन्य सभी
उस विषय पर आधारित भिन्नता भी उतनी ही भयानक और विनाशकारी है।
सुनहरे रंग की त्वचा और बादाम के आकार की आंखों वाले लोग वैसे भी
सफेद चमड़ी और नीली आंखों वाले लोग। यह दो हजार बार काम नहीं किया।
भारत के ऋषिकेश में कुछ साल पहले रेत से यह काम करने से बेहतर है या नहीं।
इस समय रेसीन, विस्कॉन्सिन में (वार्नर, 2004)।
चरक, पहली शताब्दी के दरबारी चिकित्सक थे जिनके लेखन से पता चलता है कि...
प्राचीन भारतीय चिकित्सा की नींव बनाने में मदद करने वाले एक व्यक्ति ने लिखा कि यदि शिष्य के आदेश खतरे में पड़ते तो वह गुरु के आदेशों की अवहेलना करने के लिए स्वतंत्र था।
स्वास्थ्य के लिहाज से या कानून के खिलाफ थे। हालांकि, संदेह है कि ऐसा हुआ होगा।
आज्ञापालन में इतने प्रशिक्षित छात्र के लिए यह मुश्किल होता।
विद्रोह का समय कब आ गया है, यह तय करने का अधिकार (ब्रेंट,
1972).
* * *
भले ही गुरु अपने दावों पर खरे उतरें, फिर भी उनके चारों ओर "रक्षकों" का एक आंतरिक घेरा बनने में ज़्यादा से ज़्यादा कुछ ही साल लगेंगे। ये उच्च पदस्थ अनुयायी गुरु/अधीक्षक और उनके आस-पास की संस्कृति द्वारा निर्धारित व्यापक सीमाओं के भीतर ही काम करेंगे। वे स्वयं गुरु को आदर की दृष्टि से देखते हैं, कभी-कभी उनके द्वारा कठोर अनुशासन का सामना करते हैं, और हमेशा उनसे हीन महसूस करते हैं। इस प्रकार, वे अपने आत्मसम्मान को फिर से बढ़ाने के लिए, बंद समुदाय में अपने से नीचे के लोगों से ही सम्मान, आज्ञाकारिता और श्रेष्ठता की अपनी वांछित मात्रा प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। और बाद वालों की आज्ञाकारिता बिना शर्त, विद्रोह की कोई धमकी दिए बिना, तभी संभव है जब उनकी इच्छाशक्ति पूरी तरह से टूट जाए। (किसी भी संदर्भ में निरंकुश सत्ता असंतोष के प्रति सहिष्णुता के साथ परस्पर विरोधी है। क्योंकि, असंतोष की अभिव्यक्ति और उसे व्यवहार में लाना ही यह दर्शाता है कि

सत्ता निरंकुश नहीं है।)
लोग अपने वरिष्ठों के प्रति अधीनता की भरपाई कुछ अन्य तरीकों से करते हैं।
निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करना। वे खुद को हकदार समझते हैं (माइक लेव, [ब्रूनी] में)
और बर्केट, 2002])।
या, जैसा कि गोफमैन ने समग्रतावादी संस्थानों के अपने (1961) अध्ययन, शरणालयों में उल्लेख किया है:
332 गुरुओं का पर्दाफाश

इस निर्णय के साथ कि [सैन्य] अधिकारी प्रशिक्षण शिविर
अधिकारी प्रशिक्षु ने सैनिकों पर अपने अधिकार "अर्जित" किए थे।
एक अधिकारी आता है। शिविर में झेली गई पीड़ा का उपयोग किया जा सकता है।
आदेश देने के सुखों का औचित्य।
प्रभुत्व के प्रयोग में उन "आदेश के सुखों" के संबंध में-
ज़िम्बार्डो (1971) ने आगे कहा कि वित्त को दूसरों पर प्राथमिकता देना:
हम सभी किसी न किसी स्तर पर सत्ता द्वारा भ्रष्ट होने के अधीन हैं।
शायद बचपन से ही हमें अनुचित शक्ति प्राप्त होती है।
नुकसान जहां वयस्क हमें बताते हैं [जैसे गुरु भी बाद में करते हैं-
हमें क्या करना है और हमें वह करना ही होगा। शायद किसी स्तर पर हम
उस असंतुलन को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं।
उसी क्षतिपूर्ति की इच्छा की ओर, पूर्व-
हेनी और ज़िम्बार्डो (1998) ने असंतुलन का अनुभव किया:
जैसे-जैसे प्रयोग आगे बढ़ा, अधिक कैदी अक्सर
दूसरों को नुकसान पहुंचाने के इरादे जाहिर करना (भले ही वे ऐसा कर रहे हों-
वे उत्तरोत्तर अधिक आज्ञाकारी होते गए और मनमानी करने लगे।
गार्डों का)।
जब सम्मानपूर्वक झुकने की बात आती है, तो ऐसा लगता है कि हम जितना अधिक देते हैं, उतना ही अधिक बदले में पाने की लालसा रखते हैं - और इस लालसा को पूरा करने के लिए आसानी से दूसरों के साथ क्रूरतापूर्ण दुर्व्यवहार करने लगते हैं।

बेशक, आध्यात्मिक संदर्भों में और अन्य जगहों पर, दूसरों में अवज्ञा, अनादर और विश्वासघात के प्रति घोर असहिष्णुता और उसके परिणामस्वरूप मिलने वाली सज़ा को अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक कारणों से भी देखा जा सकता है। वास्तव में, इसे स्वयं की अनियंत्रित विश्वासघात की भावनाओं और अवज्ञा की इच्छाओं को दूसरों पर थोपने के रूप में भी समझा जा सकता है। यानी, चूंकि व्यक्ति को स्वयं में विश्वासघात या अवज्ञा स्वीकार करने की अनुमति नहीं है, इसलिए वह इसके बजाय दूसरों में इसे देखता है और उन्हें दुगनी सज़ा देता है।

ज़िम्बार्डो के अध्ययन कक्ष में तैनात पहरेदारों को एक अधिकारी द्वारा जेल में व्यवस्था बनाए रखने का निर्देश दिया गया था। इसलिए, यह भी संभव है कि उनके व्यवहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उस अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त करने के प्रयासों से प्रेरित हो। आखिरकार, अगर उन्हें अपने बॉस की नज़र में अपना काम ठीक से करना था, तो वे कैदियों की किसी भी तरह की असंतुष्टि या अनादर को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

किसी भी हालत में, सम्मान और आज्ञाकारिता हासिल करने के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा मनोवैज्ञानिक और शारीरिक हेरफेर और दुर्व्यवहार के हर संभव तरीके का इस्तेमाल किया जाएगा, जिससे उन्हें कोई आपत्ति न हो। और यही गुरु और

धार्मिक समुदायों में, यह फिर से दूसरों के "अहंकार को ठेस पहुंचाने" के बहाने, अपने आध्यात्मिक लाभ के लिए किया जाएगा। इसके अलावा, यह एक समूह मानसिकता (पदानुक्रम के सभी स्तरों पर) के भीतर किया जाएगा, जहां अपने "बड़ों" की बात का विरोध करना समुदाय के बाकी सदस्यों से बहिष्कार को न्योता देना माना जाएगा।

* * *

ज़िम्बार्डो के अध्ययन में, कैदियों के शुरुआती विद्रोह ने पहरेदारों के बीच एकजुटता पैदा की और उन्हें इस बात का एहसास दिलाया कि वे वास्तव में खतरे में हो सकते हैं। मुझे किसी ऐसे आश्रम के बारे में जानकारी नहीं है जहाँ कभी इतना तीव्र और संगठित विद्रोह हुआ हो—देसाई के शासनकाल के अंत में कृपालु आश्रम शायद इसके सबसे करीब आता है। न ही गुरु या उनके करीबी लोगों को कभी अपने अनुयायियों से कोई शारीरिक खतरा होता है। फिर भी, रिपोर्ट के अनुसार, वे उसी तरह क्रूरतापूर्ण व्यवहार करते हैं, अवज्ञा या विश्वासघात के प्रति ज़िम्बार्डो के पहरेदारों से अधिक

सहनशीलता नहीं दिखाते। यानी, वातावरण की "स्थिर अवस्था" उल्लेखनीय रूप से समान है, भले ही तीव्र क्षणिक घटनाओं की अनुपस्थिति में, वहाँ तक पहुँचने में अधिक समय लगा हो। (ज़िम्बार्डो के जेल अध्ययन में तो कुछ ही दिन लगे, जबकि उसमें भाग लेने वाले पहरेदार और कैदी दोनों ही पूरी तरह से सामान्य और स्वस्थ व्यक्ति थे।)

यहां तक कि ऐसे समुदाय के मुखिया के रूप में बैठा कोई सच्चा "पूर्ण गुरु" (यदि ऐसा कोई होता, जो कि बिलकुल नहीं है) भी इन समस्याओं से बच नहीं सकता था। क्योंकि, भले ही शिष्य अपनी पूर्णता की आशा गुरु पर थोप दें, ज़िम्बार्डो या उनके अंगरक्षकों को कभी ऐसी पूर्णता प्राप्त होने का श्रेय नहीं दिया गया। न ही उन्होंने या उनके अंगरक्षकों ने किसी "अजीबोगरीब" विश्वास प्रणाली का प्रचार किया। न ही उन अंगरक्षकों का शुरू में "मन पर नियंत्रण" करने का कोई इरादा था।

फिर भी, उन निर्दोष शुरुआत के बावजूद, ज़िम्बार्डो के गार्डों ने वास्तव में कैदियों को नींद से वंचित करना शुरू कर दिया और यहां तक कि उनके बाथरूम जाने और भोजन ग्रहण करने पर भी नियंत्रण रखा, कम से कम एक बार तो जबरन खाना खिलाने का प्रयास भी किया।

तुलनात्मक रूप से:

मैं [आयरिश सिस्टर्स ऑफ चैरिटी अनाथालय] में ज्यादा समय तक नहीं रहा और
मेरे खाने में गाजर का एक टुकड़ा था, और वह गंदा था।
मैंने उसे विनम्रता से मेरी थाली के एक तरफ रख दिया और सब कुछ खा लिया।
अन्यथा। नन नीचे आई और मुझे गाजर खाने को कहा।
मैंने मना कर दिया। इसलिए उसने मुझे जबरदस्ती खिलाया, और मैं बीमार पड़ गया।
फिर उसने 334 गुरुओं के कपड़े उतार दिए

मुझे भी जबरदस्ती वही खिलाया गया। और फिर उसने मुझे पीटना शुरू कर दिया।
उसकी बेल्ट (रैफ्टरी और ओ'सुलिवन, 2001)।

ध्यान दें कि क्रूरतापूर्ण व्यवहार महिलाओं और पुरुषों दोनों में बिल्कुल एक जैसा ही होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ज़िम्बार्डो के सभी गार्ड और कैदी पुरुष थे, यह तथ्य व्यवहार में कोई मायने नहीं रखता। (इसी प्रकार, अबू ग़रेब में पुरुष और महिला गार्डों के होने के बावजूद, उन पर सत्ता का सबसे अधिक दुरुपयोग करने का आरोप

है।)

ज़िम्बार्डो के "बुरे" गार्डों ने अपने क्रूर और नियंत्रणकारी व्यवहार इसलिए नहीं किए क्योंकि उन्हें ज़िम्बार्डो ने ऐसा करने का आदेश दिया था। बल्कि, उन्होंने नियंत्रण के ये तरीके खुद ही विकसित किए थे। यानी, ऊपर बताई गई आयरिश ननों की तरह, उन्होंने ऐसा व्यवहार इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें किसी अधिकारी ने सीधे तौर पर ऐसा करने के लिए कहा था, बल्कि इसलिए किया क्योंकि उन्हें ऐसा करने की अनुमति थी।

ज़रा सोचिए कि ज़िम्बार्डो के अध्ययन में, सत्ता का बंटवारा गार्डों के बीच लगभग बराबर था। अगर ज़िम्बार्डो (अधीक्षक के रूप में) वहाँ होते ही नहीं, तो भी गार्डों के बीच सत्ता का बंटवारा उतना ही बराबर होता। फिर भी हालात और भी बदतर हो जाते, और वो भी तेज़ी से। कहने का तात्पर्य यह है कि पूर्ण या लगभग पूर्ण अधिकार रखने वाले लोगों का समूह, समान शक्ति वाले एक अकेले व्यक्ति से बेहतर नहीं होता।

न ही ऐसा कोई समूह अपने स्तर पर एक-दूसरे पर नियंत्रण और संतुलन बनाए रखने के लिए कोई कदम उठाएगा। क्योंकि, ज़िम्बार्डो के "अच्छे" गार्ड, अपने "बुरे" साथियों की गतिविधियों पर लगाम लगाने के बजाय, उनके क्रूर व्यवहार को देखकर असहाय महसूस करते थे।

हम यह कैसे समझें कि समझदार और स्वस्थ पुरुष इतने निष्क्रिय क्यों हो जाते हैं? सबसे पहले, हम यह देख सकते हैं कि यह मानवीय व्यवहार की विशेषता है कि जब हम अपने जैसे लोगों के समूह में किसी आपत्तिजनक गतिविधि को देखते हैं, तो हम यह मान लेते हैं कि "कोई और" बोलेगा या ज़रूरत पड़ने पर पुलिस को बुलाएगा। वास्तव में, नियंत्रित अध्ययनों में यह दिखाया गया है कि जब हम दूसरों के समूह से घिरे होते हैं तो हमारे हस्तक्षेप करने की संभावना कम होती है, बजाय इसके कि हम किसी अपराध या आपात स्थिति के अकेले गवाह हों।

(सियाल्डिनी [2001]; ज़िम्बार्डो [2004बी])। क्योंकि, हम स्वाभाविक रूप से उनके बाहरी रूप से शांत, मूल्यांकन व्यवहार से संकेत लेंगे, जैसे वे हमारे व्यवहार से संकेत लेते हैं।

इस तरह के गुप्त मूल्यांकन और उसके बाद समूह के साथ चलने के एक प्रासंगिक उदाहरण के रूप में, उस अतिथि की प्रतिक्रिया पर विचार करें जिसने केन विल्बर द्वारा

कथित तौर पर सार्वजनिक रूप से हस्तमैथुन का अभिनय करने और बार-बार, बचकाने ढंग से मुख मैथुन के लिए अनुरोध करने की सूचना दी थी:
गुरु और कैदी 335

मैं बाकी सबके साथ हँसी, लेकिन मेरे मन में कहीं न कहीं यह बात खटक रही थी कि...
मुझे एहसास हुआ कि मैं इससे परेशान और निराश था... लेकिन अन्य
जिन लोगों से मैंने बात की, उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, तो शायद वह
उन्होंने अपने श्रोताओं का सही आकलन किया (इंटीग्रल में, 2004)।
लेकिन जब अन्य लोगों से पूछा जाता है कि क्या उन्हें इस तरह के व्यवहार से कोई परेशानी हुई, तो असल में उनसे पूछा जा रहा होता है: "क्या आपको हमारे सम्राट के नए कपड़ों से कोई परेशानी हुई?" जिसका स्पष्ट उत्तर है, "नहीं, बिल्कुल नहीं।"
बहरहाल, दर्शकों के बीच काफी देर तक चुप रहने के बाद, अगर कोई अंततः खुलकर आपत्ति जताता है, तो उसे सबसे पहले यही शर्मनाक सवाल का सामना करना पड़ेगा: अगर शुरू से ही यह स्पष्ट था कि कुछ करने की ज़रूरत है, तो आप इतनी देर तक चुप क्यों रहे? इसलिए, यह स्वीकार न करने में हमारा निजी स्वार्थ होता है कि हमें चीज़ें अलग तरीके से करनी चाहिए थीं—यानी, हमारा ऐसा व्यवहार करना गलत था। इसी कारण से, और यहाँ तक कि सामाजिक रूप से स्वीकृत संगति के लिए भी, हम चुप रहते हैं, और समस्याओं को जारी रहने देते हैं। (वेटिकन जैसी संस्थाएँ अपनी गलतियों और कथित दुर्व्यवहारों को इसलिए जारी रखती हैं क्योंकि वे अतीत में अपनी गलतियों को स्वीकार करने में असमर्थ हैं [विल्स, 2000 देखें])। इसके अलावा, उदाहरण के लिए, ज़िम्बार्डो के अपेक्षाकृत संवेदनशील "अच्छे" गार्डों के लिए, अपने अधिक क्रूर साथियों की गतिविधियों के खिलाफ बोलने से निश्चित रूप से उन्हें "अल्फा गार्ड" के उस उप-समुदाय से तुरंत बहिष्कृत कर दिया जाता, जो वास्तव में अपने कैदियों के साथ दुर्व्यवहार करने का आनंद लेते थे।
जेल में हर व्यक्ति और हर चीज सत्ता से परिभाषित थी।
एक ऐसा गार्ड बनना जिसने इस संस्था का फायदा नहीं उठाया-
सहयोगी द्वारा स्वीकृत शक्ति का उपयोग "कमजोर" दिखने के लिए, "बेकार" दिखने के लिए किया जाता था।

इसे," "कैदियों द्वारा तार लगाकर तैयार किया गया," या बस एक विचलित व्यक्ति उचित सुरक्षा व्यवहार के स्थापित मानदंड (ज़िम्बार्डो,
एट अल., 1973)।
अपने गार्डों की कार्रवाई का मूल्यांकन करते हुए, ज़िम्बार्डो और उनके सहयोगियों ने आगे यह भी नोट किया:
अच्छे पहरेदारों का व्यवहार अधिक प्रेरित प्रतीत होता था।
व्यवस्था में सभी को पसंद आने की इच्छा से प्रेरित होने के बजाय, किसी अन्य कारण से प्रेरित होने की इच्छा ...
कैदियों के कल्याण के प्रति चिंता।
जो गार्ड इस प्रकार "सभी को पसंद आने" की चाह रखते हैं, वे न केवल कैदियों के लिए छोटे-मोटे काम करके उन्हें दंडित करने से बचेंगे, बल्कि अपने साथियों को नाराज करने से भी कतराएंगे। 336 गुरुओं का वजूद छीनना

इसलिए, वे एक बार फिर दुर्व्यवहारों के खिलाफ बोलने से बचेंगे।
बाद वाला। (जैसा कि ज़िम्बार्डो [1971] ने स्वयं आगे उल्लेख किया है, उन "बुरे" गार्डों को खुली छूट देने से तुलनात्मक रूप से व्यक्ति "अच्छा" दिखता है। यानी, यह व्यक्ति के अहंकार को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करता है, और उसे इस तुलना में एक बेहतर व्यक्ति होने का एहसास कराता है।)
इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली चुप्पी के पीछे जो भी सिद्धांत हो—चाहे व्यापक रूप से हो या सूक्ष्म रूप से—व्यवहार में यह धर्मनिरपेक्ष और "पवित्र" दोनों प्रकार के मानव समाजों की एक व्यापक विशेषता है:
पूर्व कैदियों की गवाही से यह स्पष्ट है कि किसी भी तरह से
इसका अर्थ है [सभी आयरिश कैथोलिक नन और मठवासी भाई]
बच्चों के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया। लेकिन यह एक आम बात है।
यह धारणा कि “अच्छे” नन और भिक्षुओं ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया
या तो उन्होंने अपने अधिक हिंसक लोगों की गतिविधियों का विरोध किया या उनके साथ खड़े रहे।
सहकर्मी (रैफ्टरी और ओ'सुलिवन, 2001)।
ज़िम्बार्डो ने हाल ही में (2004a) यह निष्कर्ष निकाला है:

मेरे और मेरे सहयोगियों के शोध ने सूचीबद्ध किया है
नकारात्मक परिस्थितियों में मानव स्वभाव की भट्टी को हिलाने की स्थितियाँ-
निर्देश। कुछ आवश्यक सामग्रियां इस प्रकार हैं... द्वारा-
ऐसे दर्शक जो हस्तक्षेप नहीं करते, और सत्ता का ऐसा परिवेश जो भिन्न होता है-
आवश्यक।
“ऐसे दर्शक जो हस्तक्षेप नहीं करते”: उदाहरण के लिए, “अच्छे” भिक्षु जो खुलेआम आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि उनके साथी और वरिष्ठ ईमानदारी से व्यवहार क्यों नहीं कर रहे हैं, लेकिन इसे रोकने के लिए कुछ नहीं करते। क्योंकि, बोलने से वे “बुरे शिष्य” कहलाएंगे और अपने ही स्तर के या उनसे ऊपर के कठोर शिष्यों द्वारा प्रतिशोध/ बहिष्कार का शिकार होंगे।
“सत्ता के अंतरों का एक परिवेश”: उदाहरण के लिए, गुरु-समान व्यक्ति, आंतरिक मंडली और चपरासी/नवशिक्षु शिष्य।
* * *
आध्यात्मिक गुरु द्वारा दिखाई गई कमियों की कोई भी मात्रा सच्चे मन से साधक को उनके प्रति समर्पित होने और आदर दिखाने से नहीं रोक सकती। कम से कम तब तक तो नहीं, जब तक वह अपने जीवन में ज्ञानोदय/मुक्ति को एक उच्च लक्ष्य मानता है और यह विश्वास करता है कि संबंधित पवित्र व्यक्ति उसे किसी भी अन्य मार्ग की तुलना में उस अवस्था तक शीघ्रता से पहुँचा सकता है।
इस प्रकार, जैसा कि बटरफील्ड (1994) ने ट्रुंगपा के मार्ग में अपने स्वयं के दीक्षा संस्कार के संदर्भ में उल्लेख किया है, जिसमें ट्रुंगपा ने एक अव्यवस्थित, लगभग निरर्थक, चेतना-प्रवाह प्रस्तुति के माध्यम से वज्रयान का वह संचरण दिया था:

मुझे रोकने के लिए वह बहुत कम कह सकता था, बशर्ते मैं
मुझे पूरा यकीन था कि वह जानता है कि मैं क्या सीखना चाहता हूं।
इस बिंदु पर गहराई से विचार करें, क्योंकि इसका अर्थ यह है कि किसी संभावित विनाशकारी समूह को परिभाषित करने के साधन के रूप में "धोखाधड़ीपूर्ण भर्ती" का उपयोग उतना प्रासंगिक नहीं है जितना कि आप कल्पना कर सकते हैं। दरअसल, ऐसे धोखे के बिना भी, कोई व्यक्ति (प्रतिभाशाली अनुशंसाओं आदि के आधार पर) यह

मान सकता है कि कोई गुरु "महान ज्ञानी" है और यदि आप उसके प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाते हैं, तो वह आपको उसी उच्च अवस्था तक पहुंचा सकता है। और ऐसे में, आप उस रिश्ते में किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार को सहन कर लेंगे और इसे अपने लाभ के लिए समझेंगे, भले ही आपको इसके बारे में पहले से चेतावनी दी गई हो।
सामान्य मानवीय रिश्तों में भी, अगर किसी के पास वो चीज़ हो जो हम चाहते हैं—जैसे सेक्स, पैसा, आदि—तो उसे पाने के लिए हम बहुत दुख और दुर्व्यवहार सहने को तैयार रहते हैं। और अगर हमें पहले ही बता दिया जाए कि दूसरा व्यक्ति "मुसीबत" है, या इस प्रक्रिया में हमें अपने सिद्धांतों से समझौता करना पड़ेगा, तब भी हम स्वेच्छा से ऐसा करने से नहीं रुकेंगे, अगर हम उस "इनाम" को पाने के लिए बेताब हों।
तो, आप ज्ञान प्राप्त करने के लिए कितने उत्सुक हैं?
गुरु ने दावा किया कि वे अत्यंत आनंदमय आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँच प्रदान करते हैं।
वास्तविक अहसास, और उस पूर्व तक पहुँचने का एकमात्र तरीका-
अनुभव उनके खेल को खेलने से मिलता था। आप जितना बेहतर खेलते थे,
खेल में, अपनी भक्ति और आज्ञाकारिता दिखाकर, महान
गुरु के साथ आपका संपर्क और आपकी मुलाकात की आवृत्ति जितनी अधिक होगी...
अनुग्रह के अवसर (लोवे, 1996)।
दिलचस्प बात यह है कि दाइस्टों ने कथित तौर पर (लोवे, 1996) "निराशाजनक रूप से" सौम्य पत्रिका 'गार्बेज एंड द गॉडेस' को प्रचलन से बाहर करने का प्रयास किया है। इसी तरह, जब उनके स्थानीय बोल्डर मंथली में "मर्विन घटना" का खुलासा प्रकाशित हुआ, तो ट्रुंगपा के अनुयायी कथित तौर पर "शहर में इधर-उधर भागते रहे, एक बार में कई प्रतियां खरीदकर पत्रिका को दुकानों से हटाने की कोशिश करते रहे" (शूमाकर, 1992)। तथाकथित पंथों की आलोचना करने वाली पुस्तकें भी सार्वजनिक पुस्तकालयों से रहस्यमय तरीके से गायब हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, मेरे स्थानीय शहर के संदर्भ पुस्तकालय में—जहां से कोई भी पुस्तक बाहर ले जाने की अनुमति नहीं है—डेविड लेन (1994) की 'एक्सपोजिंग कल्ट्स' की एकमात्र प्रति गायब है। यह पुस्तक स्वयं दा फ्री जॉन की, और कई अन्य "कम चर्चित पंथों" की उल्लेखनीय रूप से आलोचना करती है।
हालांकि, संदिग्ध व्यवहारों को छुपाने के ऐसे कथित प्रयास काफी हद तक अनावश्यक

हैं। क्योंकि, आध्यात्मिक जगत इससे कहीं अधिक व्यापक है। 338 गुरुओं का पर्दाफाश

हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि इसके प्रमुख व्यक्ति कथित "शिक्षण" विधियों के व्यापक रूप से प्रचारित होने के वर्षों बाद भी आपको "साहसिक कार्य" में शामिल होने के लिए स्पष्ट रूप से प्रोत्साहित करते हैं।
और, अगर आप "रूड बॉय" अनुशासन को सहन नहीं कर सकते, तो इसमें किसकी गलती/अहंकार है?
याद रखें: "अपराध जितना बड़ा होगा, अहंकार उतना ही बड़ा होगा।"
दूसरे शब्दों में कहें तो: किसी उच्च सम्मानित नायक या "प्रतिभाशाली" व्यक्ति द्वारा दिया गया विशेषज्ञ आश्वासन कि ईश्वर-प्राप्त "रूड बॉय" द्वारा अनुशासित होना ही अपने सर्वोच्च लक्ष्य (या मोक्ष) की प्राप्ति का सबसे तेज़ मार्ग है, किसी कथित "समस्याग्रस्त" समूह के बारे में किसी भी चिंता को आसानी से दबा देगा। आखिरकार, असंतुष्ट पूर्व अनुयायियों की शिकायतों को केवल "शिकायत" या "कायरता" बताकर खारिज करना बहुत आसान है, क्योंकि वे "मुश्किल हालातों का सामना नहीं कर सके"। ऐसा तब भी होता है जब समूह अपने अनुयायियों की जमकर पिटाई करता हो, जैसा कि हमने देखा है। ऐसे मामले में, कथित रूप से विनाशकारी समूह अपने संभावित सदस्यों के सामने अपने सभी कथित दुर्व्यवहारों और भविष्य में दुर्व्यवहार की योजनाओं का खुलासा भी कर सकता है, फिर भी नए अनुयायी उसमें शामिल होने के लिए उमड़ पड़ेंगे। (याद कीजिए कि ज़ेन भिक्षु मठ में प्रवेश पाने के लिए खुद को बुरी तरह पिटने देते हैं। यानी, वे उस वातावरण में यह जानते हुए भी प्रवेश करते हैं कि वह हिंसक और दुर्व्यवहारपूर्ण है। उन्हें किसी भी तरह से "धोखाधड़ी से भर्ती" नहीं किया गया है।)
ऐसे यथार्थवादी परिदृश्य में, साधक किसी भी छल-कपट के माध्यम से कथित तौर पर विनाशकारी समूहों में अनजाने में "भर्ती" नहीं हो जाते। बल्कि, वे स्वयं ऐसे समूहों की तलाश में जाते। वे रजनीश के हिंसक मानवतावादी मिलन सत्रों में भी जाते थे, संभवतः अक्सर उन लोगों की सिफारिशों पर जिनकी वे प्रशंसा करते थे, न कि उन समूहों में होने वाली घटनाओं के बारे में बिना जाने। इसी प्रकार, योगी भजन (1977) का स्पष्ट, मुद्रित बयान कि शिष्यों को गुरु (जैसे स्वयं भजन) की ओर से चोरी करने

के लिए कहा जा सकता है, स्पष्ट रूप से उनके अपने कथित ढाई लाख अनुयायियों को डराने के लिए पर्याप्त नहीं था।
दा के समुदाय में लगभग हर कोई, बिना किसी अपवाद के,
उसे कई [कथित] मानसिक नियंत्रण विधियों के अधीन किया गया था।
जिसमें निरंतर विचारधारा थोपना, अत्यधिक काम का बोझ, नींद शामिल है-
अस्वीकृति, लगातार साथियों का दबाव और मांगों की बौछार,
वह बिंदु जहां उनसे प्रभावी रूप से निर्णय लेने की क्षमता छीन ली गई थी।
गुरु और कैदी 339

लोगों ने इस दुर्व्यवहार को इसलिए स्वीकार कर लिया क्योंकि... वे...
उन्होंने इस वादे पर भरोसा किया कि यह उनके "प्रतिरोध" को तोड़ देगा।
गुरु के रूप में ईश्वर के प्रति "दृष्टिकोण"। लोगों ने इसे स्वीकार किया।
उनके “अहंकार” को अनुशासित और “नष्ट” करने की आवश्यकता थी, ताकि
वही “आध्यात्मिक प्रतिभा” जिसे गुरु ने जागृत करने का दावा किया था
उनमें (एलियास, 1999ए)।
किसी भी धार्मिक संगठन में पर्दे के पीछे होने वाली सारी गड़बड़ियों के बारे में भावी सदस्यों को कभी भी पहले से नहीं बताया जाता। (इसी तरह, किसी भी नौकरी या मानवीय रिश्ते की शुरुआत में इसका खुलासा नहीं किया जाता, और न ही इसकी उम्मीद की जा सकती है।) फिर भी, अगर हमारे संसार के “प्रामाणिक, परिवर्तनकारी” आध्यात्मिक संगठनों में कोई “धोखा” है, तो वह गुरुओं के अपने उपदेशों पर खरा न उतरने या उनके द्वारा दावा किए गए आध्यात्मिक ज्ञान के न होने से संबंधित है—जो कि एक बिल्कुल अलग मुद्दा है। इसका संभावित अनुयायियों के इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि उन्हें कथित तौर पर यह नहीं पता होता कि उन्हें अत्यधिक “अनुशासन” का सामना करना पड़ेगा, या गुरु के निर्देश पर कानून तोड़ना पड़ेगा, और अंततः स्वयं “गुरु के समान महान” बनने का पुरस्कार मिलेगा।
और, स्वेच्छा से उस "कठिनाई" में जाने के बाद, भक्तों के पास आध्यात्मिक प्रतिष्ठा बनाए रखने का कोई आसान रास्ता नहीं बचता। इसलिए वे जल्द ही कथित दुर्व्यवहार को स्वेच्छा से और चुपचाप सहन करने लगेंगे, मानो इसे आध्यात्मिक विकास/निष्ठा/आज्ञाकारिता का प्रतीक मान रहे हों। इसके अलावा, वे इस अंतर्निहित आशा में ऐसा

करेंगे कि यदि वे इस प्रकार लंबे समय तक "निष्ठावान" और आज्ञाकारी बने रहेंगे, तो दुर्व्यवहार बंद हो जाएगा और उन्हें केवल प्रेम ही प्राप्त होगा।
हालांकि, मुकाबला करने की वह व्यर्थ रणनीति वे और घरेलू हिंसा की शिकार पत्नियां दोनों ही अपनाती हैं। दरअसल, घरेलू हिंसा की शिकार पत्नियां भी, पूर्व शिष्यों की तरह, अक्सर अपने हिंसक पति को छोड़ने में असमर्थ महसूस करती हैं, जिसका मुख्य कारण यह है कि उन्हें बार-बार, किसी न किसी रूप में, यह कहकर कि वे बेकार और अक्षम हैं, उनके अहंकार को ठेस पहुंचाई जाती है। फिर वे स्वाभाविक रूप से अपनी लाचारी के साथ उसी के अनुरूप व्यवहार करती हैं।
पीड़ित महिलाएं अपने उत्पीड़कों के प्रति बेहद वफादार होती हैं, और
अक्सर लोग इस उम्मीद से बुरी तरह चिपके रहते हैं कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।
बदलाव लाओ और बेहतर परिणाम पाओ। बुरी तरह प्रभावित लोगों का प्राथमिक कार्य यही है।
महिला आश्रय और सहायता समूह इस बाधा को तोड़ने में सहायक होंगे।
इनकार को दूर करें और महिला को इस तथ्य का सामना करने में मदद करें कि दुर्व्यवहार करने वाला अभी भी मौजूद है।
दरअसल, वह जो कर रहा है, वही सही है। वहाँ से सुधार संभव है। 340 गुरुओं का पर्दाफाश

वही मनोवैज्ञानिक तंत्र जो वफादारी पैदा करते हैं
एक पीड़ित महिला के मामले में [उदाहरण के लिए, उसे "उसकी सहभागी बनाकर"]
स्वयं का शोषण"—असहायता में और अन्य प्रकार से—से
जिसके चलते वह जानबूझकर शोषक का समर्थन करने लगती है।
मन में बैठाया गया, तथाकथित पंथ के शिकार को अल-पंथ के प्रति वफादार बना सकता है।
किंवदंती] पंथ (बॉब पेनी, [वेकफील्ड, 1991] में)।
यह सर्वविदित है कि कुछ लोग जानबूझकर धर्मनिरपेक्ष सैडोमासोकिस्टिक (पीड़ादायक और आत्मपीड़ित करने वाले) संबंधों में इसलिए शामिल होते हैं ताकि उन्हें उस दर्द या अपमान से आनंद मिले—क्योंकि वे मनोवैज्ञानिक रूप से इसे प्रेम प्राप्त करने से जोड़ लेते हैं। इसी प्रकार, आध्यात्मिक साधक, जिनके मन में ज्ञानोदय

के बारे में विकृत विचार होते हैं और जो दर्द या अत्यधिक अनुशासन/अपमान को आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता से जोड़ते हैं, वे किसी सिद्ध "ईश्वर" द्वारा "अपने भले के लिए" दुर्व्यवहार किए जाने के विचार से आकर्षित ही होंगे, विमुख नहीं। (कैथोलिक चर्च में थेरेसा ऑफ लिसिएक्स (जिन्हें पायस X ने "आधुनिक युग की सबसे महान संत" बताया है) और मदर टेरेसा के "पीड़ा को मोक्ष का मार्ग" मानने के दृष्टिकोण की तुलना करें। वास्तव में, पूर्व "लिटिल फ्लावर" के धार्मिक उत्साह और पीड़ा एवं अपमान को सहर्ष स्वीकार करने के पीछे संभावित मनोवैज्ञानिक कारकों के गहन विश्लेषण के लिए, मोनिका फर्लोंग की [1987] थेरेसा ऑफ लिसिएक्स देखें।)
अपने अंतरात्मा को एक तरफ रखकर गुरु के कहे अनुसार सब कुछ करने की क्षमता को ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक माना जाता है (और यह प्राप्ति केवल गुरु की कृपा से ही संभव है)। ऐसे में, लोग ऐसे गुरुओं की तलाश भी कर सकते हैं जो "नैतिकताहीन" माने जाते हैं। आख़िर नैतिकता भी उसी अवधारणा का परिणाम है जो हमें रोज़ाना वास्तविकता से अंधा कर देती है? क्या ऐसी मनमानी सोच को तोड़ना ही वह तरीका नहीं है जिससे हम अपनी द्वैतवादी वैचारिक सीमाओं से मुक्त हो सकें? तो क्या एक "जंगली और सनकी" गुरु, जो आपको "बुद्धिमानतापूर्वक" ऐसी परिस्थितियों में डाल दे जहाँ आपके पास अपनी वर्गीकरण करने वाली बुद्धि और सांस्कृतिक रूप से गढ़ी गई अंतरात्मा को "विकल्पहीन जागरूकता" में छोड़ने के अलावा कोई विकल्प न हो, आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए सबसे अच्छा होगा? आप ऐसे समुदाय में क्या-क्या करने को कहा जाएगा, इसकी विस्तृत सूची पहले से नहीं मांग सकते, क्योंकि इससे गुरु की "दिव्य अभिव्यक्ति" की सहजता भंग हो जाएगी, है ना?
इसके अलावा, स्पष्ट रूप से, ऐसा कोई कथित दुर्व्यवहार या पारंपरिक नैतिकता का उल्लंघन नहीं है जो इतना गंभीर हो कि आवासीय समूह के बाहर के लोग भी इसे तर्कसंगत ठहरा न सकें। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए सच है जो यह मानने के लिए बेताब हैं कि एक या एक से अधिक गुरु और कैदी 341

अन्य गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्ति "महानतम जीवित आत्मज्ञानी" या इसी तरह के अन्य शब्दों से विवश हैं, और उनका हर कार्य "शिक्षा" है। और, ऐसे तर्कों को "तर्कसंगत" मानने के लिए किसी को "दिमाग धोए जाने" की आवश्यकता नहीं है। बल्कि, व्यक्ति को केवल लंबे समय से प्रचारित, भले ही पूरी तरह से भ्रामक, पारलौकिक सिद्धांत में

ईमानदारी से विश्वास करने की आवश्यकता है।
ऐसे में, मनोवैज्ञानिक/शारीरिक रूप से दुर्व्यवहार करने वाले और अनैतिक वातावरण में स्वेच्छा से प्रवेश करना स्वाभाविक ही हो जाता है। आख़िरकार, कोई उन नायकों के सामने अपनी "आध्यात्मिक शक्ति" कैसे साबित कर सकता है जिन्होंने किसी न किसी "समस्याग्रस्त" गुरु और वातावरण के प्रति "पूर्ण समर्पण" की सलाह दी है? उनके आध्यात्मिक ज्ञान के समान "प्रबुद्ध" बनने के प्रति अपनी गंभीरता को "विवेक" करने के अलावा और कैसे प्रदर्शित किया जा सकता है?
दिलचस्प बात यह है कि लाइव गायक/गीतकार एडी कोवाल्ज़िक के पूर्व-
उन्होंने विल्बर की (1996) पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ एवरीथिंग' के प्रति अपनी प्रारंभिक प्रशंसा व्यक्त की। बाद में, अगस्त 1999 में उन्होंने स्वयं विल्बर से मुलाकात की।
इसके बाद 2000 में कोवाल्ज़िक ने दा के लिए एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखी, जिसमें उन्हें "वास्तविक ईश्वर ... अवतार आदि दा समराज" के रूप में श्रेय दिया गया।
क्या यह महज़ एक संयोग है? या फिर ऊपर बताए गए बिंदुओं का एक परेशान करने वाला उदाहरण, भले ही कोवाल्ज़िक की मुलाकात दा से एक "सेलिब्रिटी" के तौर पर हुई हो, और इस प्रकार स्वाभाविक रूप से उसे इस बात का कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है कि "अवतार" और उसके कथित तौर पर डिल्डो का इस्तेमाल करने वाले, कोरोना देखने वाले "पॉड लोग" वास्तव में कैसे हैं?
* * *
ज़िम्बार्डो ने एक बार फिर दो दर्जन पूरी तरह से सामान्य, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ कॉलेज-आयु वर्ग के व्यक्तियों को चुना। फिर उन्होंने उन्हें स्वेच्छा से एक बंद वातावरण में कैद कर दिया; समुदाय को रक्षकों और कैदियों में विभाजित किया; और उच्च अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे निचले अधिकारियों से आज्ञापालन और सम्मान की अपेक्षा रखें। उन्होंने न तो कोई करिश्माई नेतृत्व, न ही कोई अजीबोगरीब मान्यताएं और न ही स्वयं को दैवीय बताने का प्रयास किया। छोड़ने पर कोई दंड भी नहीं था, सिवाय उस धन की हानि के जो कैदियों को अध्ययन में उनकी पूर्ण अवधि की भागीदारी के लिए दिया जाना था, और समय से पहले बाहर निकलने पर उनके "बुरे कैदी" होने की व्यक्तिगत भावना के। फिर भी, छह दिनों से भी कम समय में, और पूरी तरह से अनजाने में, उन्होंने प्रतिभागियों के विभिन्न वर्गों के बीच ऐसे

व्यवहार उत्पन्न कर दिए जो कथित तौर पर - ज्ञात, रिपोर्ट किए गए आंकड़ों से एक बहुत ही तर्कसंगत अनुमान के रूप में - हर आश्रम और हर तथाकथित पंथ में पाए जाने वाले व्यवहारों से अप्रभेद्य हैं।
इसलिए, किसी नेता का करिश्मा या "दिव्य" दर्जा ही समस्याएँ पैदा नहीं करता। बल्कि, समस्या का कारण 342 गुरुओं का सरलीकरण है।

प्रत्येक बंद पदानुक्रमित समुदाय की सत्ता संरचना में अंतर्निहित समस्या तब उत्पन्न होती है, जब उस स्तरीकरण को बुनियादी मानवीय मनोविज्ञान के साथ मिला दिया जाता है। केवल एक मानव अधीक्षक के बजाय एक "अचूक ईश्वर-पुरुष" के होने से दूसरों के लिए अवज्ञा करना या संगठन छोड़ना कठिन हो जाएगा, लेकिन इसके बिना भी, अवज्ञा और संगठन छोड़ना किसी भी तरह से आसान नहीं होगा।
इसके विपरीत, हममें से प्रत्येक व्यक्ति सही या गलत परिस्थितियों में आज्ञाकारी "पंथ-अनुयायी" व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए फिर से प्रवृत्त हो सकता है। अनुरूपता, अधिनायकवाद या अंधविश्वास की प्रवृत्तियाँ किसी भी व्यक्ति के इस तरह मूर्ख बनने की संभावना को सांख्यिकीय रूप से बढ़ा सकती हैं, लेकिन वास्तव में, यह हममें से किसी के साथ भी हो सकता है।
लोग मानते हैं कि "ऐसा उनके साथ कभी नहीं हो सकता" क्योंकि
वे यह मानना चाहते हैं कि वे दूसरों से अधिक मजबूत और बेहतर हैं।
लाखों लोग जो [कथित] पंथीय मानसिक नियंत्रण का शिकार हो चुके हैं-
ट्रोल....
एक [तथाकथित] पंथ आम तौर पर सबसे अधिक शिक्षित लोगों को निशाना बनाएगा।
यह शिक्षित, सक्रिय और सक्षम लोगों को ढूंढ सकता है। मुझे टिप्पणियाँ सुनने को मिलती हैं।
जैसे कि, "मुझे कभी पता ही नहीं था कि यहाँ इतने सारे प्रतिभाशाली लोग हैं।"
इस प्रकार के समूह" (हसन, 1990)।
इस तरह की मान्यताएं जैसे, "दूसरों से ऐसा करवाया जा सकता है, लेकिन मुझसे नहीं।"
और "भाषणों से दूसरों को प्रभावित किया जा सकता है लेकिन मुझे नहीं"

ये खतरनाक इसलिए हैं क्योंकि ये हमें अन्य लोगों से अलग करते हैं।
वे हमारे जैसे ही हैं और इसलिए हमें सीखने से रोकते हैं।
उनके अनुभव से हमें क्या लाभ मिल सकता है?
(विन, 2000)।
मूनियों के साथ हमारे अनुभव किसी के साथ भी हो सकते हैं।
अमेरिकी परिवार (अंडरवुड और अंडरवुड, 1979)।
यहां तक कि वे लोग भी जिन्होंने कहा था, "मैं कभी किसी पंथ में शामिल नहीं हो सकता,"
रजनीश के आश्रमों में ऐसे प्रवेश करो जैसे किसी चुनौती पर जागे हो और बाहर निकलो
यह उस व्यक्ति से भिन्न नहीं है जो उत्सुकतापूर्वक तलाश करते हुए प्रवेश करता है।
है....
भगवान ने स्पष्ट रूप से कहा कि हम जिस स्थिति में थे-
इसमें शामिल होना कोई धर्म नहीं था, और यह बात उन लोगों को पसंद आई जो
जो कोई भी किसी "पंथ" में शामिल होता है, उसकी निंदा करने वाला वह पहला व्यक्ति होगा।
असल में हमने एक पंथ में इसलिए शामिल हुए क्योंकि वह एक
पंथ (स्ट्रेली, 1987)।
* * *
गुरु और कैदी 343

महत्वपूर्ण बात यह है कि ज़िम्बार्डो के अध्ययन में हो रहे व्यवहारों पर एक "बाहरी व्यक्ति" की आपत्ति के बाद ही इसे रोका गया। (हालांकि, यह तब हुआ जब पचास अन्य बाहरी पर्यवेक्षकों ने स्वयं कोई आश्चर्य या नकारात्मक राय व्यक्त नहीं की थी।) प्रयोग में पहले किसी भी रूप में शामिल न होने के कारण, उन्होंने "पागलपन की ओर धीरे-धीरे बढ़ने" की प्रक्रिया में चरण-दर-चरण भाग नहीं लिया, बल्कि छठे दिन बिना तैयारी के सीधे इसमें शामिल हो गईं।
(जिम्बार्डो, एट अल., 2000)।
यह बात उस पुराने प्रयोग/कहानी की याद दिलाती है जिसमें एक मेंढक को चूल्हे पर

रखे बर्तन में पानी में डाल दिया जाता है और फिर उस पानी को धीरे-धीरे गर्म किया जाता है। तापमान में अचानक कोई वृद्धि न होने के कारण, जिससे उसे पता चले कि कुछ गड़बड़ है, मेंढक पानी से बाहर कूदकर सुरक्षित रहने की बजाय खुद को धीरे-धीरे पकने देता है।

हमारे संसार के राख के दानवों में भी इसी प्रकार की "धीमी गिरावट" होती है, जो इसमें प्रतिदिन कदम-दर-कदम भाग लेने वालों को दिखाई नहीं देती। वास्तव में, पहले से ही "पागलपन" से भरे वातावरण में नए सदस्यों को भी संगठन के सबसे संदिग्ध पहलुओं को छिपाकर रखा जाता है, जब तक कि वे अपनी वफादारी साबित न कर दें। इसलिए, वास्तव में हालात कितने बुरे हैं, इसका प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए, व्यक्ति को उस धीमी गति से बढ़ती गर्मी के माध्यम से पहले से ही "आधा पका हुआ" होना चाहिए।

इसके अलावा, स्टैनली मिलग्राम (1974) के आज्ञापालन प्रयोगों पर विचार करें। वहां, अधिकांश (एक प्रायोगिक संस्करण में लगभग दो-तिहाई) आम लोगों को एक घंटे से भी कम समय में, उन लोगों को संभावित रूप से घातक झटके देने के लिए प्रेरित किया गया, जो हिस्टीरिया से विरोध कर रहे थे, केवल एक प्रयोगकर्ता के न्यूनतम अधिकार के प्रति उनकी आज्ञाकारिता के कारण।

मिलग्राम के प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि
जब पौधे लगाए जाते हैं तो कोई भी प्रतिभागी आगे बढ़ने से इनकार नहीं करता है।
विषय पहले उनसे रुकने के लिए कहता है। बाद में, धमकी के साथ ही।
मृत्यु या गंभीर बीमारी की स्थिति में, लोग जीवन जीना जारी रखने से इनकार कर देते हैं।
झटके। हमेशा और केवल चीख ही सुनी जाती है, और
कभी भी इसका पूर्ववर्ती नहीं, कभी भी इसकी शुरुआत या पहले संकेत नहीं।
दर्द [अर्थात, कभी भी "धीमी, निरंतर" अनुभूति की पहली अनुभूति नहीं]
गर्मी से पड़ने वाली सिलवटें...
तथाकथित पंथों में भी यही बात देखने को मिलती है:
प्रारंभिक अतिरेक, प्रारंभिक संकेतों, पूर्ण को पहचानने से इनकार
जो कुछ हो रहा है उसके निहितार्थ और जो बाद में सामने आएगा। रेलिन-
अंतरात्मा की वैयक्तिकताओं को चरण दर चरण शांत करते हुए,

निम्न वर्ग धीरे-धीरे [रिपोर्ट किए गए] दुर्व्यवहार के एक चरण के अभ्यस्त हो जाते हैं
344 गुरुओं को नंगा करना

एक के बाद एक, वे सत्ता के प्रति इतने सम्मानजनक हो गए कि
वे कभी भी पूरी तरह से विद्रोह करने में सफल नहीं होते (मरीन, 1995)।
जिम्बार्डो और मिलग्राम के वे दोनों भयावह प्रायोगिक प्रदर्शन बुनियादी मानवीय परिस्थितिजन्य मनोविज्ञान से उत्पन्न होते हैं, जो हमारी दुनिया के आश्रमों के अंदर और बाहर दोनों जगह समान रूप से मौजूद होते हैं।
वास्तव में, अगर हम सम्मान के भूखे भिक्षुओं को पहरेदारों से, गुरुओं को अधीक्षकों से और युवा भिक्षुओं को कैदियों से बदल दें, और ज़िम्बार्डो के अध्ययन को दुनिया के किसी भी आश्रम में दोहराएँ, तो प्रयोग के परिणाम निश्चित रूप से नहीं बदलेंगे। इसी प्रकार, हम वरिष्ठ भिक्षुओं को झटके देने वालों से, युवा भिक्षुओं को झटके सहने वाले विषयों से और गुरुओं को प्रयोगशाला के वस्त्र पहने प्रयोगकर्ताओं से बदल सकते हैं, जो झटकों के परिणामों की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार हों, यहाँ तक कि मृत्यु/ज्ञान प्राप्ति तक। उस स्थिति में, निःसंदेह, अधिकांश "पवित्र, शांतिप्रिय" भिक्षु और भिक्षुणियाँ उस संदर्भ में केवल "वही कर रहे होंगे जो उन्हें कहा गया है", चाहे झटके सहने वाले विषयों के शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य पर इसके क्या परिणाम हों।
मिलग्राम के प्रयोगों में दिखाए गए तथ्यों के अनुसार, उनके प्रयोगकर्ता अपने शिक्षार्थियों को बिजली के झटके देते समय क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं कर रहे थे। साथ ही, वे उन लोगों से आज्ञापालन या सम्मान प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं कर रहे थे जिन्हें वे बिजली के झटके दे रहे थे। इसलिए, प्रेरणा और व्यवहार में यह अंतर पूरी तरह से समझ में आता है। दरअसल, किसी को सीखने में मदद करने की कोशिश करना (भले ही वह अर्ध-शिक्षक के रूप में हो) - जो मिलग्राम के आज्ञापालन प्रयोगों का "आधार" था - और उनसे सम्मान और बिना शर्त आज्ञापालन प्राप्त करने का स्पष्ट प्रयास करना - इन दोनों के बीच मानसिकता में स्पष्ट रूप से बहुत बड़ा अंतर है।
यह तो स्पष्ट है कि गुरु और उनके करीबी शिष्यों की प्रतिक्रिया भी उन्हें "सुधारने" के प्रयासों के प्रति उतनी ही नकारात्मक होती जितनी कि ज़िम्बार्डो के गार्डों की, अगर कैदियों ने उस वातावरण को सुधारने और उन पर हो रहे अत्याचारों को कम करने का प्रयास किया होता। (उदाहरण के लिए, "उपद्रवी" #416 की तुलना करें।) वास्तव में,

उन गार्डों में से अधिकांश - जो बिना अतिरिक्त वेतन के स्वेच्छा से ओवरटाइम काम कर रहे थे - अध्ययन के समय से पहले समाप्त होने पर दुखी थे, जबकि कैदी इसके समाप्त होने से खुश थे। कहने का तात्पर्य यह है कि गार्डों का क्रूर व्यवहार किसी भी तरह से उनके "वहाँ न रहना चाहने" और अपनी उस निराशा को कैदियों पर निकालने के कारण नहीं था।
गुरु और कैदी 345

हाल के दिनों में इस बात को लेकर काफी अटकलें लगाई जा रही हैं कि प्रति-
शायद आयरिश कैथोलिक संस्थानों का संचालन करने वाली कई ननें...
राष्ट्रीय स्कूलों में बच्चों के साथ क्रूरता बरती जाती थी।
क्योंकि वे खुद निराश थे, संभवतः
उनके परिवारों ने उन्हें जबरन मठ में प्रवेश करने के लिए मजबूर किया है।
इस दृष्टिकोण का समर्थन करने वाले सबूत। वास्तव में, इसके ठीक विपरीत।
(रैफ्टरी और ओ'सुलिवन, 2001)।
वैसे तो यह सब कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि, जैसा कि हर "रूड बॉय" और क्रूर गार्ड जानता है, दूसरों के अहंकार को ठेस पहुँचाना या उन्हें अपमानित करके उनकी इच्छाशक्ति को तोड़ना, या उनके भले के लिए उन्हें बुरी तरह पीटना, कितना आनंददायक होता है। सत्ता इतनी उत्तेजक होती है, भला कौन किसी दूसरे व्यक्ति पर अपना पूर्ण नियंत्रण छोड़ना चाहेगा?
बेटे का जीवन? (देखें ज़िम्बार्डो, एट अल. [1973]; हैनी, एट अल. [1973].)
* * *
विलियम गोल्डिंग की पुस्तक 'लॉर्ड ऑफ द फ्लाइज़' भी बंद, सत्तावादी समाजों की गतिशीलता के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है। और दिलचस्प बात यह है कि जब उस पुस्तक पर आधारित फिल्म बन रही थी, तो निर्देशक को कैमरे के चालू रहने के दौरान बाल कलाकारों को उनके किरदार में ढालने में समस्या नहीं आई। बल्कि, शूटिंग बंद होने के बाद उन्हें उनके किरदार से बाहर निकालने में कठिनाई आई। जैसा कि पीटर ब्रुक ने समझाया (एस्केनासी, 1978 में):
पर्दे के बाहर उनके कई रिश्ते पूरी तरह से एक जैसे थे।
कहानी, और हमारी मुख्य समस्याओं में से एक प्रोत्साहन देना था।

उन्हें शॉट्स के दौरान निडर रहना चाहिए लेकिन अनुशासित रहना चाहिए।
उनके बीच... मेरे अनुभव ने मुझे दिखाया कि एकमात्र कमी...
गोल्डिंग की कहानी में, 'सिफिकेशन' से तात्पर्य उस समय की अवधि से है जिसमें पतन होता है।
बर्बरता की ओर ले जाता है। उसकी कार्रवाई में लगभग तीन महीने लगते हैं। मैं-
मेरा मानना है कि यदि निरंतर वयस्क उपस्थिति का कॉर्क [अर्थात, पूर्व-
समूह के नेताओं पर आंतरिक नियंत्रण और संतुलन] को पुनः स्थापित किया गया।
बोतल से बाहर निकलने पर पूरी तबाही मच सकती है
एक लंबे सप्ताहांत के भीतर।
ज़िम्बार्डो के अध्ययन में और हम सभी के वास्तविक जीवन में निभाई जाने वाली भूमिका से इसकी तुलना करना बिल्कुल उचित है, जो जल्द ही एक सचेत "भूमिका" मात्र नहीं रह जाती। और जहाँ तक "लंबे सप्ताहांत" की बात है: स्टैनफोर्ड की नकली जेल में चरित्र का पतन सचमुच तीन दिनों के भीतर ही हो गया।
डिटमैन (2003) में, ज़िम्बार्डो ने जॉर्ज द्वारा उपयोग की जाने वाली मन-नियंत्रण विधियों और व्यवहारों के बीच समानताएं बताई हैं। 346 गुरुओं को निहत्था करना

ऑरवेल की काल्पनिक अधिनायकवादी राज्य कथा 1984 और जॉनस्टाउन। क्रिस-
टॉपर ब्राउनिंग ने अपनी पुस्तक (1998) ऑर्डिनरी मेन में ज़िम्बार्डो और मिलग्राम के अध्ययनों और पोलैंड में अंतिम समाधान के बीच समानताओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया है। महत्वपूर्ण रूप से, उस समाधान में "क्रूर और कठोर", "कठोर लेकिन निष्पक्ष" और "अच्छे" सैनिकों का प्रतिशत, ज़िम्बार्डो की काल्पनिक जेल में गार्डों के बीच इसी तरह के विभाजन से "अजीबोगरीब रूप से मिलता-जुलता" है।
आतंक के माहौल में ज्यादातर लोग बात मान लेंगे लेकिन
कुछ लोग ऐसा नहीं करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे अन्य देशों से सबक मिलता है।
जिस आधार पर अंतिम समाधान का प्रस्ताव रखा गया था, वह यह था कि "ऐसा हो सकता है-"
अधिकांश स्थानों पर "पेन" का प्रयोग किया गया, लेकिन ऐसा हर जगह नहीं हुआ...
आइचमैन के साथ समस्या ठीक यही थी कि इतने सारे
उसके जैसे थे, और उनमें से बहुत से लोग न तो विकृत थे और न ही

वे क्रूर थे, और अभी भी हैं, बेहद भयानक और डरावने।
सामान्य रूप से (अरेंड्ट, 1992)।
* * *
ज़िम्बार्डो के जेल अध्ययन में शामिल सभी प्रतिभागी पुरुष थे। व्यवहार में, हालांकि, अध्ययन में केवल पुरुषों के शामिल होने के कारण, गार्डों के "दुष्ट" होने और अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने के सटीक प्रतिशत, या उनके द्वारा शक्ति का दुरुपयोग करने के विशिष्ट तरीकों, या भावनात्मक रूप से टूट चुके कैदियों के प्रतिशत के संबंध में जो भी मामूली पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकता है, वह किसी भी तरह से "सभी मनुष्यों" पर लागू होने वाले सामान्य मानचित्रण की प्रयोज्यता को कम नहीं करता है।
अबू ग़रेब में पुरुष और महिला गार्डों के मिश्रित व्यवहार के बावजूद, वहाँ की महिला गार्डें सत्ता का सबसे अधिक दुरुपयोग करने वाली मानी जाती थीं। इसी तरह, अन्य जगहों पर ननों द्वारा दूसरी ननों को जबरन खाना खिलाने जैसी घटनाएँ भी हुईं। कहने का तात्पर्य यह है कि जहाँ ज़िम्बार्डो के प्रयोगों के समान वास्तविक दुनिया में प्रयोग किए गए हैं, वहाँ ठीक वैसे ही विषैले वातावरण और क्रूर व्यवहार देखने को मिले हैं, चाहे पुरुष और महिलाएँ कोई भी हों।
इसके अलावा, ध्यान दें कि ज़िमबार्डो के अध्ययन में भाग लेने वाले अधिकांश प्रतिभागी युवा, श्वेत अमेरिकी थे; इसलिए उनके व्यवहार में भी "युवा, श्वेत अमेरिकी" पूर्वाग्रह था। वास्तव में, यदि कोई ऐसे सभी संभावित पूर्वाग्रहों का पालन करे, तो अध्ययन के परिणाम किसी के लिए या कहीं भी प्रासंगिक नहीं हो सकते सिवाय... हाँ, 70 के दशक की शुरुआत में स्टैनफोर्ड, कैलिफ़ोर्निया में रहने वाले श्वेत, स्वस्थ, बुद्धिमान, मध्यम-वर्गीय, कॉलेज-आयु वर्ग के पुरुषों के लिए। फिर भी, वे मूलभूत सिद्धांत जिनके कारण नकली जेल समाज गुरुओं और कैदियों 347 में टूट गया

दुर्व्यवहार की घटनाएं हर जगह, हर संस्कृति और हर समय में, महिलाओं के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी पुरुषों के लिए: ये बुनियादी मानवीय मनोविज्ञान हैं, जो सत्ता के अंतर और सम्मान की भूख से उत्पन्न होते हैं।
* * *
जैसा कि फिलिप ज़िम्बार्डो ने स्वयं 1970 के दशक में कहा था, सत्तावादी संरचना के मामले में हाई स्कूल और जेल में कई महत्वपूर्ण समानताएँ हैं। फिर भी, स्पष्ट है कि

स्कूलों में जेलों की तरह बाहरी दृष्टिकोण से अलगाव का स्तर उतना नहीं होता। तो क्या इसका यह अर्थ है कि हाई स्कूल और जेल वास्तव में प्रकार में भिन्न हैं, न कि केवल स्तर में?

नहीं, बिलकुल नहीं। कैदी भी पूरी तरह से अलग-थलग नहीं होते: उन्हें निर्धारित समय पर मुलाक़ातियों से मिलने की अनुमति होती है। और नए कैदी कम से कम थोड़े समय के लिए ही सही, वास्तविक दुनिया के ऐसे दृष्टिकोण साझा करते हैं जो जेल जीवन में खो जाते हैं। इसके विपरीत, हाई स्कूल के छात्र कक्षा के समय बाहर नहीं जा सकते और न ही सोलह वर्ष की आयु से पहले पूरी तरह से पढ़ाई छोड़ सकते हैं।

इसके अलावा, अगर किसी अनुशासन के मामले में या किसी विवाद में कौन गलत है, इस बात पर छात्र और शिक्षक के बीच मतभेद हो, तो आपको क्या लगता है कि 90% मामलों में माता-पिता किसकी बात मानेंगे? भले ही माता-पिता-शिक्षक की प्रतिक्रिया और कानूनी व्यवस्था (शुक्र है) शिक्षकों के अधिकार प्रयोग को सीमित करती हो, और भले ही रात में घर जाने की स्वतंत्रता (गैर-आवासीय स्कूलों में) छात्रों को उस वातावरण के बारे में कुछ अतिरिक्त बाहरी दृष्टिकोण बनाए रखने की अनुमति देती हो, फिर भी यह सब मात्रा का प्रश्न है, प्रकार का नहीं। और मात्रा = निरंतरता। (साथ ही, ज़िम्बार्डो के नकली जेल की तरह, असली जेलों में गार्ड भी शिक्षकों और छात्रों की तरह ही रात में घर जाते हैं, इस प्रकार वे भी अपने आसपास के समुदाय से जुड़े होते हैं। दुर्भाग्य से, यह उन्हें अपने कैदियों को क्रूरतापूर्वक दंडित करने से नहीं रोकता ताकि वे उनका बिना शर्त सम्मान प्राप्त कर सकें... ठीक वैसे ही जैसे शिक्षक अपने छात्रों से बिना शर्त सम्मान की अपेक्षा करते हैं।)

व्यवहारिक रूप से, सामाजिक मनोविज्ञान के बुनियादी सिद्धांत यह सुनिश्चित करते हैं कि जिन शिक्षकों को उनकी निरंतर नौकरी की शर्त के रूप में न केवल अपने छात्रों को सीखने में सहायता करने (जैसा कि मिलग्राम के आज्ञाकारिता प्रयोगों में) बल्कि अपने छात्रों के सम्मान और आज्ञाकारिता को बनाए रखने (जैसा कि जिम्बार्डो के नकली जेल में) का दायित्व सौंपा गया है, वे अपनी सत्ता को किसी भी चुनौती का सामना करने पर स्वाभाविक रूप से अच्छे/बुरे जेल गार्डों के कम तीव्र संस्करण में परिवर्तित हो जाएंगे।

गुटों का गठन और परिणामस्वरूप बहिष्कृत लोगों का बहिष्कार, और उन बहिष्कृत लोगों की उस स्थिति में फंसे रहने पर प्रतिक्रिया। 348 गुरुओं का शोषण

“नरक जैसी स्थिति”, जिसमें “निकलने का कोई रास्ता नहीं”, छात्रों के व्यवहार को आकार देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है, यहाँ तक कि उन छात्रों के लिए भी जिनका पारिवारिक जीवन आदर्श होता है। या क्या आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कोलंबाइन नरसंहार के हमलावर पूरी तरह से स्थिर परिवारों से आए थे, जिनके माता-पिता उन्हें प्यार करते थे और जिनसे उन्होंने योजनाबद्ध नरसंहार से पहले वीडियो टेप पर स्पष्ट रूप से माफी मांगी थी?

1999 में कोलंबाइन में और इसी तरह की अन्य गोलीबारी की घटनाओं में, हत्यारों ने "अपने घर की समस्याओं को स्कूल में नहीं लाया था।" बल्कि, वे स्कूल में अन्य छात्रों और अधिकारियों द्वारा किए गए उत्पीड़न और अपमान की प्रतिक्रिया दे रहे थे। आखिरकार, यही कारण है कि ऐसे युवा सामूहिक हत्यारे अपने सहपाठियों और शिक्षकों को मारते हैं, न कि अपने माता-पिता या पड़ोसियों को।

और अगर यह बात हाई स्कूल की सबसे भयानक त्रासदियों को अंजाम देने वालों पर लागू होती है, तो क्या आपको नहीं लगता कि यह बात कम तीव्रता के स्तर पर, हाई स्कूल के अधिकांश छात्रों पर भी लागू हो सकती है? बिल्कुल होगी।

* * *

मुझे ऐसा लगता है कि नारोपा में जो कुछ हुआ, हालांकि
हमारे आस-पास आमतौर पर जो हम देखते हैं, उससे कहीं अधिक नाटकीय था।
यह बस उसी चीज़ का घिनौना रूप है जो अंतहीन रूप से दोहराई जाती है।
अमेरिका में अधिकांश दमनकारी सत्ता प्रणालियों में, न केवल उन प्रणालियों में
और नारोपा....
मर्विन और डाना के प्रति टुंगपा का व्यवहार ऐसा था...
सार या सीमा तक, मूलतः उससे कोई भिन्न नहीं है जो हम
डॉक्टरों और पुरुषों के बीच आमतौर पर बिना किसी सवाल के स्वीकार किया जाता है।
मरीजों, शिक्षकों और छात्रों, या सैन्य अधिकारियों
[या गार्ड और कैदी]। यहीं पर हम हमेशा सोचते हैं
अनुशासन आवश्यक है, ताकि हम लोगों को काम करने की आदत डाल सकें।
उन्हें जो बताया जाता है, उसे स्वीकार करना, अधिकार का पालन करना और उसे

मानना
इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है (मरीन, 1995)।
कुछ लोग हमेशा यह महसूस करते रहेंगे, खासकर दूर से, कि ज़िम्बार्डो या मिलग्राम के समान आश्रमों में किए गए "प्रयोगों" में भाग लेना, जहाँ बंद, पदानुक्रमित वातावरण में वास्तविक (मनोवैज्ञानिक) आघात और शारीरिक अभाव झेलने पड़ते हैं, आध्यात्मिक रूप से लाभकारी हो सकता है। (हालाँकि, ध्यान दें कि इन दोनों क्लासिक अध्ययनों में प्रतिभागियों पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने गंभीर चिंताएँ जताई हैं, यहाँ तक कि नैतिक कारणों से आज इनमें से किसी को भी दोहराया नहीं जा सकता। फिर भी, आश्रम जीवन जारी है....)
गुरु और कैदी 349

लेकिन अगर उस संकीर्ण सोच को छोड़ दें, तो खुले समाज की "वास्तविक दुनिया" के नियम और व्यवहार, भले ही कभी-कभी प्रतिबंधात्मक हों, तुलनात्मक रूप से अपेक्षाकृत सौम्य लगने लगते हैं। इसके विपरीत, यदि कोई हमारे संसार के आश्रमों में रहा हो और फिर वहाँ से इसलिए निकल गया हो क्योंकि वहाँ रहना उसे "जेल" जैसा लगा हो, तो इस भावना का एक बहुत ही सरल स्पष्टीकरण है। क्योंकि, संरचनात्मक रूप से और व्यक्तिगत एवं सामूहिक मनोवैज्ञानिक गतिशीलता के संदर्भ में, वास्तव में वह वैसा ही था।
जैसा कि ज़िम्बार्डो ने स्वयं (1971) कहा था:
मेरे लिए, जेल वह स्थिति है जिसमें किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली जाती है।
मनमानी शक्ति के कारण स्वतंत्रता और प्रभुत्व दोनों से वंचित किया जाता है।
किसी अन्य व्यक्ति या समूह द्वारा प्रयोग किया गया।
और अन्य जगहों पर, अपने सहयोगियों के साथ:
अंतर्निहित रोग संबंधी [इटैलिक में जोड़ा गया] विशेषताएँ
जेल की स्थिति ही... एक पर्याप्त शर्त थी
असामान्य, असामाजिक व्यवहार उत्पन्न करना (हैनी, एट अल., 1973)।
और जैसा कि हमने देखा है, लगभग समान विशेषताएं ही हमारे विश्व के आश्रमों और मठों के नेताओं और निवासियों में समान रूप से रिपोर्ट किए गए रोग संबंधी व्यवहारों

को उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त हैं।
एक बंद, विषैला वातावरण बनाने के लिए वास्तव में केवल तीन चीजें ही आवश्यक हैं —चाहे वह कोई पंथ हो, एक खराब वैवाहिक संबंध हो, एक जेल हो या एक तानाशाही हो। वे हैं (i) नेताओं और उनके अनुयायियों के बीच शक्ति का महत्वपूर्ण अंतर, (ii) नेताओं पर नियंत्रण और संतुलन का अभाव ताकि वे अपनी मौजूदा शक्ति का दुरुपयोग न करें और अधिक शक्ति हथियाने की कोशिश न करें, और (iii) दुर्व्यवहार किए गए अनुयायियों को आसानी से छोड़कर जाने से रोकने के लिए पर्याप्त मनोवैज्ञानिक, वित्तीय और/या शारीरिक (जैसे ताले और सलाखें) प्रतिबंध। इसके बाद, नेताओं/रक्षकों और उनके अनुयायियों/कैदियों दोनों में मौजूद बुनियादी मानवीय मनोविज्ञान के कारण वातावरण का धीरे-धीरे "पंथ जैसा" स्वरूप विकसित हो जाता है।
इसके अलावा, ज़िम्बार्डो के अध्ययन की तरह, इन दोनों समूहों के बीच एकमात्र आवश्यक अंतर उन भूमिकाओं में है जिन्हें उन्होंने मौन रूप से निभाने पर सहमति व्यक्त की है। ऐसा तब भी होता है, जब एक समूह अनिवार्य रूप से जल्दी ही शक्तिहीन "अच्छे रक्षकों/शिष्यों" और क्रूर "नाज़ियों" के विभाजित समूह में बदल जाता है, जबकि दूसरे समूह के सदस्य विनम्रतापूर्वक उनका अनुसरण करते हैं या भावनात्मक रूप से टूट जाते हैं, फिर भी वे "बस छोड़कर जाने" में असमर्थ होते हैं।

अध्याय XXVIII

आध्यात्मिक
विकल्प

बेशक, हर कोई इस बात से सहमत नहीं होगा कि आज के आध्यात्मिक नेताओं और समुदायों की स्थिति इतनी खराब है जितनी हमने देखी है। वास्तव में, ऐसे मनोवैज्ञानिकों को ढूंढना मुश्किल नहीं है जो हमारे विश्व के गुरु-प्रतिष्ठानों के संदिग्ध कार्यों का बचाव करने के लिए तत्पर हैं।
उदाहरण के लिए, 1987 में डिक एंथोनी और केन विल्बर ने अपने एक अन्य

हमख्याल सहयोगी के साथ मिलकर "स्पिरिचुअल चॉइसेस: द प्रॉब्लम ऑफ रिकॉग्नाइजिंग ऑथेंटिक पाथ्स टू इनर ट्रांसफॉर्मेशन" नामक पुस्तक प्रकाशित की। हम शीघ्र ही उस पुस्तक के महत्व का मूल्यांकन करेंगे।
एंथोनी ने स्वयं भी अक्सर वैकल्पिक धार्मिक आंदोलनों के बचाव में एक विशेषज्ञ गवाह के रूप में काम किया है, जिन पर अपने सदस्यों का "मस्तिष्क धोने" और इसी तरह के आरोप लगाए गए हैं।
उन्होंने रिकॉर्ड के लिए अपने कुछ ग्राहकों की सूची दी। वह सूची...
इसमें "यूनिफिकेशन चर्च" [अर्थात, मूनिज़, जिनके
संस्थापक को न्याय में बाधा डालने की साजिश रचने का दोषी ठहराया गया था और झूठे टैक्स रिटर्न दाखिल करने की साजिश रचने के आरोप में सजा सुनाई गई और उसे एक निश्चित अवधि के लिए जेल की सजा दी गई।
संघीय जेल' (सिंगर, 2003)], हरे कृष्णा आंदोलन,

द वे इंटरनेशनल [और] चर्च ऑफ साइंटोलॉजी" (रॉस,
2003).
तो, मूनियों के बारे में:
[जुलाई 2002 में] मून ने खुद को "उद्धारकर्ता, मसीहा" घोषित किया।
सियाह और समस्त मानवता के राजाओं के राजा।" वास्तव में
उन्होंने इसे पूरे अमेरिका के अखबारों में विस्तार से प्रकाशित किया।
पृष्ठ विज्ञापन (रॉस, 2002ए)।
जैसा कि स्वयं मून ने अपने यूनिफिकेशन न्यूज़ (24 अगस्त, 2002 के लिए) में विस्तार से बताया:
जुलाई की शुरुआत में मैंने कोरिया के पांच शहरों में रैलियों में भाषण दिए।
महिला विश्व शांति संघ द्वारा आयोजित। वहाँ, मैं
मैंने घोषणा की कि मेरी पत्नी और मैं ही सभी के सच्चे माता-पिता हैं।
मैंने घोषणा की कि हम ही उद्धारकर्ता हैं, मानवता के स्वामी हैं।

दूसरा आगमन, मसीहा।
इतना ही कहना काफी है—बस इतना ही कि मून वाशिंगटन टाइम्स अखबार के मालिक हैं। (मूनी परिवार के पास कनेक्टिकट के ब्रिजपोर्ट विश्वविद्यालय का भी स्वामित्व है [हसन, 2000])। यह भी बताया गया है कि वे (और 10 मिलियन डॉलर तक का दानदाता) के मित्र हैं।
जॉर्ज बुश परिवार (कुंकल, 2001) के साथ उनका घनिष्ठ संपर्क रहा है, और मॉर्मन अमेरिकी राजनेता ओरिन हैच के साथ भी उनका करीबी संपर्क रहा है।
द वे इंटरनेशनल के संबंध में: टीडब्ल्यूआई के नेताओं के खिलाफ यौन दुर्व्यवहार के आरोपों से संबंधित विवरण ऑनलाइन उपलब्ध हैं।
एम्पायरनेट (2003)। और जो लोग उस गैर-परंपरागत बाइबिल समूह को छोड़ना चाहते हैं, उनके खिलाफ निम्नलिखित आरोप लगाए गए हैं:
शेरोन बेल का कहना है कि वे के सदस्यों ने उनसे कहा, "यह आवश्यक हो सकता है।"
समूह छोड़ने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को मारना अनिवार्य था। टिमोथी
गुडविन को बताया गया था कि अगर वह चला गया तो शैतान उसे मार डालेगा (रुडिन)
और रुडिन, 1980)।
इस प्रकार के संगठन डिक एंथोनी के कथित ग्राहकों में से कुछ हैं, जिनके बारे में वह निश्चित रूप से यह कहने में संकोच नहीं करेंगे कि वे दुनिया के अन्य, वास्तव में "समस्याग्रस्त" समूहों की तुलना में "उतने बुरे नहीं" हैं। आखिरकार, केवल इसलिए कि वे "गैर-पारंपरिक धर्म" हैं, उनके साथ भेदभाव करने का कोई कारण नहीं है।
हालांकि, एंथनी की गैर-पारंपरिक धर्मों की सूची में कथित तौर पर 352
 भी शामिल हैं।

ये डेविड कोरेश की प्रसिद्धि वाले ब्रांच डेविडियन हैं... और वह
कहते हैं, "संयुक्त राज्य अमेरिका में, कैथोलिक चर्च, खैर यह है..."
निःसंदेह सबसे बड़ा गैर-पारंपरिक धर्म" (रॉस, 2003)।
यह विचार कि कैथोलिक चर्च "गैर-परंपरागत" है, पेचीदा है - जिससे यह सवाल उठता

है कि वास्तव में कौन से धर्म "परंपरागत" की श्रेणी में आ सकते हैं - लेकिन हम इस बात को नजरअंदाज कर सकते हैं।

एंथोनी की धार्मिक निष्ठा मेहर बाबा के प्रति है, जिनके अपने चरम समय में "भारत में दस लाख तक भक्त और संयुक्त राज्य अमेरिका में हजारों भक्त थे" (मैनसेउ और शार्लेट, 2004)।

जब द हू बैंड के पीट टाउनशेंड ने 1968 में अपनी आध्यात्मिक यात्रा शुरू की, तो उन्हें भी स्वेच्छा से मूक रहने वाले मेहर में अपना गुरु मिला—"बाबा ओ'राइली" में "बाबा" का अर्थ किसी और से नहीं है—ठीक वैसे ही जैसे स्मॉल फेसेस के रॉनी लेन को मिला था। (बहुत पहले, मूक फिल्मों के दौर में, हॉलीवुड के सितारे डगलस फेयरबैंक्स और मैरी पिकफोर्ड ने एक बार मेहर के सम्मान में एक स्वागत समारोह आयोजित किया था।) टाउनशेंड ने वास्तव में कुछ समय के लिए इंग्लैंड में एक "बाबा केंद्र" चलाया था। उनका एकल एल्बम, हू केम फर्स्ट, गुरु को समर्पित एक योजनाबद्ध श्रद्धांजलि का ही परिणाम था, जिन्होंने स्वयं दावा किया था कि "उन्हें देवताओं की सभा में ले जाया गया था और वे समस्त मानव जाति के भविष्य को जानते हैं" (ब्रंटन, 1935)।

जैसा कि स्वयं बाबा ओ'मेहर ने कहा था:

एक बार जब मैं सार्वजनिक रूप से खुद को मसीहा घोषित कर दूंगा, तो कुछ भी नहीं होगा

मेरी शक्ति का सामना कर पाओगे? मैं खुलेआम चमत्कार करूंगा।

साथ ही साथ मेरे मिशन के प्रमाण के रूप में। दृष्टि बहाल करना

अंधों का इलाज करना, बीमारों, अपंगों और विकलांगों को ठीक करना, हाँ, यहाँ तक कि

मुर्दों को ज़िंदा करना—ये सब तो मेरे लिए बच्चों का खेल होगा!

ब्रंटन, 1935)।

दरअसल, मेहर "अंधों को दृष्टि देने वाले" बाबा ने उपासनी बाबा द्वारा पुष्टि किए जाने के बाद, खुद को न केवल एक अवतार, बल्कि इस युग का अवतार होने का दावा किया था। (दिलचस्प बात यह है कि आदि दा ने भी अपने सीधे अवतार न होते हुए भी, उसी उपासनी बाबा से संबंध होने का दावा किया था।)

पच्चीस कुंवारी पत्नियां [बॉब, 2000]। उन्होंने आगे दावा किया कि वे पहले भी

ज़ोरोएस्टर, राम, कृष्ण, बुद्ध, यीशु और मुहम्मद के रूप में प्रकट हो चुके हैं।
अपनी आध्यात्मिक पहचान के बारे में पूछे गए सवालों के जवाब में, बाबा
उसने अपने लेटरबोर्ड पर कुछ चीजें टैप-टैप कीं, जैसे "मैं मानव रूप में ईश्वर हूँ-"
मनुष्य रूप। बेशक, बहुत से लोग कहते हैं कि वे ईश्वर का अवतार हैं।
लेकिन वे पाखंडी हैं" (मैनसेउ और शार्लेट, 2004)।
आध्यात्मिक विकल्प 353

बाबा ने आगे एक दृष्टांतपूर्ण कहानी सुनाई जिसमें एक गुरु ने अपने एक शिष्य को अपने ही बच्चे को मारने का आदेश दिया था। शिष्य ने आज्ञा का पालन करते हुए बच्चे को दफना दिया, जिसके बाद गुरु ने उसे घर जाने को कहा, जहाँ उसे बच्चा जीवित मिला, और उसने जल्द ही ऐसा ही किया।
"और उसके बाद वे सभी खुशी से रहे।"
हालांकि यह मास्टर डिग्री प्राप्त करने के तरीकों का एक चरम उदाहरण है
इसका उपयोग अपने शिष्यों को इस मायावी प्रकृति को दिखाने के लिए किया गया था।
इस अद्भुत दुनिया में, यह अटूट विश्वास को दर्शाता है।
एक शिष्य को अपने गुरु के रूप में क्या पाना चाहिए, और कितना पूर्णतः
उससे उदासीन और आज्ञाकारी होने की अपेक्षा की जाती है (एड्रीएल, 1947)।
तो, जाहिर है कि मेहर अपने अनुयायियों से इसी स्तर की आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता था, ताकि उन्हें उसका "वफादार" माना जा सके—जैसा कि एड्रियल था, और संभवतः एंथनी स्वयं अभी भी है। (योगानंद ने अपनी आत्मकथा में इसी तरह की एक "सच्ची कहानी" सुनाई है, जिसमें एक व्यक्ति ने बाबा जी के आदेश पर अपनी आज्ञाकारिता दिखाने के लिए हिमालय की एक चट्टान से छलांग लगा दी थी। उस "परीक्षा" को पास करने के बाद जब उसे पुनर्जीवित किया गया, तो वह बाबा जी के "अमर" शिष्यों के समूह में शामिल हो गया। चालाकी भरी कहानियों की बात करें तो...) वास्तव में, एंथनी (और अन्य, 1987; इटैलिक में जोड़ा गया) की निम्नलिखित बेतुकी सिफारिश वफादारी के संबंध में उस प्रस्ताव का समर्थन करती प्रतीत होती है:
किसी गुरु के पूर्ण चेतना होने का विचार असंगत है।

असुविधाजनक और अवांछित—और इसलिए गंभीरता से नहीं लिया गया
क्योंकि पूर्णता का अर्थ है पूर्ण विश्वास, समर्पण और
स्वामी की आज्ञा का पालन करना, चाहे उसे कुछ भी करने को कहा जाए।
वास्तव में, जैसा कि स्वयं बाबा (1967) ने स्पष्ट किया:
ईश्वर का ज्ञान केवल ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता है।
परिपूर्ण गुरु।
और ऐसी कृपा, निःसंदेह, केवल बिना शर्त आज्ञापालन के माध्यम से ही प्राप्त होती है। (नोट: एंथोनी [आदि, 1987] ने वास्तव में मेहर से कभी आमने-सामने मुलाकात नहीं की थी, और इसलिए वे समर्पण और पूर्ण "गुरु के प्रति आज्ञापालन" की अनुशंसा करने की स्थिति में नहीं हैं। इस तरह की प्रत्यक्ष अधीनता का अभ्यास करने के बजाय, उन्हें बस कुछ रहस्यमय अनुभव हुए हैं जिन्हें वे अनिश्चित रूप से दिवंगत बाबा द्वारा आरंभ किए गए मानते हैं। ऐसी स्थिति में, यह "पूर्ण विश्वास" रखना वास्तव में आसान होगा कि किसी को "पूर्ण गुरु" मिल गया है।) 354 गुरुओं का सार निराकरण

दरअसल, यह दृष्टिकोण विल्बर की दा और कोहेन से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की प्रवृत्ति और दूसरों को ऐसे "साहसिक कार्य" में खुद को समर्पित करने की उनकी समान अनुशंसा के बिल्कुल समान है, जिसका अनुभव उन्होंने स्वयं कभी नहीं किया है।
मेहर बाबा की शिक्षाओं में यह निर्देश भी शामिल था, "चिंता मत करो। खुश रहो" (सी. वेल्च, 1995)। उनके विचारों ने टाउनशेंड को उनके क्लासिक रॉक ओपेरा "टॉमी" को लिखने में बहुत प्रभावित किया, जो एक ऐसे बच्चे के बारे में है जो सदमे से बहरा, गूंगा और अंधा हो जाता है, और उसके बाद दुनिया का ज्ञान केवल (त्वचा) संवेदनाओं के माध्यम से प्राप्त करता है।
विडंबना यह है कि उस एल्बम की रिकॉर्डिंग के एक दशक के भीतर ही टाउनशेंड खुद पूरी तरह बहरे हो गए, वर्षों तक संगीत समारोहों में श्रवण पीड़ा झेलने के बाद। बाबा की चुप्पी के साथ, उन दोनों ने मिलकर टॉमी की दो-तिहाई विकलांगताओं को पूरा किया।
अगर मैं रोजर डाल्ट्रे होता, तो मैं नियमित रूप से आंखों की जांच करवाता। क्योंकि,

बाबा की खुद की उपचार क्षमताएं, जीवित रहते हुए भी, उतनी प्रभावशाली नहीं थीं जितनी कि वे और उनके अनुयायी दावा करते थे। वास्तव में, जैसा कि पॉल ब्रंटन (1935) ने बताया:

मैंने अपनी यात्राओं के दौरान इस बात की जांच-पड़ताल करने का प्रयास किया है कि...

कुछ तथाकथित चमत्कारिक उपचार जो [मेहर बाबा] करते हैं-

ऐसा माना जाता है कि उन्होंने प्रदर्शन किया था। एक मामला एपेंडिसाइटिस का है, और

पीड़ित व्यक्ति की मेहर में सरल आस्था के कारण ही यह सब संभव हो पाया।

उन्होंने उसे पूरी तरह से ठीक कर दिया। लेकिन गहन जांच से पता चलता है कि डॉक्टर ने

जो भी इस व्यक्ति से मिला है, उसे इससे बुरा कुछ नहीं मिल सका।

गंभीर अपच से भी बदतर! एक अन्य मामले में एक अच्छे, सज्जन बूढ़े व्यक्ति-

एक व्यक्ति, जिसके बारे में खबर आई है कि वह रातोंरात पूरी तरह से ठीक हो गया है...

बीमारियों की सूची, ऐसा लगता है कि सूजन के अलावा और कुछ खास नहीं था।

टखना!

जैसा कि ब्रंटन ने विस्तार से बताया है, मेहर की आगामी विनाशकारी घटनाओं के बारे में की गई कई भविष्यवाणियां भी कुछ खास प्रभावशाली साबित नहीं हुईं, और वे लगातार समय पर पूरी होने में विफल रहीं।

इसके बाद ब्रंटन एक स्वाभाविक निष्कर्ष पर पहुंचे:

मेहर बाबा, यद्यपि एक अच्छे व्यक्ति थे और तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे,

दुर्भाग्य से, जीवन के बारे में बहुत बड़े भ्रमों से ग्रस्त है।

अपनी ही महानता... एक त्रुटिपूर्ण सत्ता, एक ऐसा व्यक्ति जो इसके अधीन है

लगातार बदलते मिजाज और एक अहंकारी व्यक्ति जो मांग करता है

उसके मस्तिष्क-विहीन अनुयायियों द्वारा पूर्णतः दासता।

कम करता है।

और इन सभी चिंताओं के बारे में मेहर का खुद क्या कहना था?
ज्यादा नहीं:
बाबा, जिन्हें एक पूर्ण आध्यात्मिक गुरु के रूप में सराहा जाता है [जिनमें से
ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर हर समय ठीक छप्पन लोग मौजूद रहते हैं।
उनमें से सर्वोच्च पद पर हमेशा एक पुरुष ही होता है (एड्रीएल, 1947)]
उसने मौन व्रत ले रखा था, लेकिन उसे सब कुछ प्रकट करना था।
और अपनी मृत्यु से पहले अपने अनुयायियों को "संदेश" दे दें। दुर्भाग्यवश-
1969 में एक और वाक्य बोलने से पहले ही उनका निधन हो गया।
(सी. वेल्च, 1995)।
मेहर बाबा की सत्यता के संबंध में ब्रंटन के तर्कसंगत निष्कर्षों के महज आधी सदी बाद, फ्यूरस्टीन (1992; इटैलिक्स जोड़े गए) ने राय व्यक्त की:
कई लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि उनकी घोषणा [विरोध की घोषणा]
जिस मौन भंग की आशंका थी, उसका अर्थ प्रतीकात्मक था।
हालांकि कुछ लोगों ने इसे इस बात का संकेत माना कि आखिरकार उसने ऐसा कर ही दिया था।
वह सबको धोखा दे रहा है।
कुल मिलाकर देखा जाए तो, "बहुत से" लोगों में से एक होने के बजाय "कुछ" लोगों में से एक होना बेहतर है। हालांकि, ऐसा लगता है कि कुल मिलाकर, "बहुत से" लोगों की संख्या "कुछ" लोगों की तुलना में कहीं कम है।
बहरहाल, अब तक यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जानी चाहिए कि यदि "मूर्खतापूर्ण करुणा" जैसी कोई चीज़ मौजूद है, यानी लोगों को उनकी भलाई के लिए कड़वी सच्चाई बताने के बजाय उन्हें दुलारना, तो "मूर्खतापूर्ण सहनशीलता" भी मौजूद है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण उन गुरु-पुरुषों और संगठनों के लिए असहनीय रूप से की जाने वाली दलीलें हैं, जो पश्चाताप नहीं करते (और अक्सर घोर भ्रमित होते हैं), जबकि वास्तव में उनके बारे में कुछ भी अच्छा नहीं कहा जा सकता। इसके अलावा, उनके बारे में जो थोड़ी-बहुत अच्छाई सही मायने में कही जा सकती है, वह उनकी बुराई के सामने कुछ भी नहीं है। इस प्रकार, कोई भी "संतुलित" प्रस्तुति भी उन लोगों को असंतुलित ही लगेगी जिन्होंने भोलेपन से गुरु-पुरुषों या संगठन के साफ-सुथरे, सार्वजनिक चेहरे पर विश्वास कर लिया है।

इन व्यक्तियों और समूहों के पास हमेशा सुव्यवस्थित जनसंपर्क (या प्रचार) विभाग होते हैं, जो आध्यात्मिक गुरु और उनके संगठन के अच्छे पहलुओं (वास्तविक और मनगढ़ंत दोनों) को प्रचारित करने में पूरी तरह सफल होते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत कम ही होता है कि इनमें से प्रत्येक के कथित बुरे पहलू छपने की खबरें बनें, अक्सर दमन या प्रतिशोध के हिंसक प्रयासों की रिपोर्टों के संदर्भ में।
356 गुरुओं का पर्दाफाश

* * *

आश्चर्यजनक रूप से, यहाँ शामिल अधिकांश "प्रबुद्ध" व्यक्ति और आश्रम, डिक एंथोनी (1987) और अन्य द्वारा आध्यात्मिक विकल्पों की पुस्तक के माध्यम से दी गई वर्गीकरण पद्धति में, सबसे "सुरक्षित" श्रेणी के करीब माने जाते हैं। अर्थात्, अब तक हम जिन लगभग सभी आध्यात्मिक शिक्षकों से मिले हैं (हरे कृष्णा, मूनी या जिम जोन्स के नेताओं को छोड़कर), वे इस प्रकार थे:
• द्वैतवादी के बजाय अद्वैतवादी—अर्थात्, प्राप्ति की दिशा में कार्य करना-
यह सभी चीजों के साथ अंतर्निहित सचेत एकात्मता की स्थिति को दर्शाता है, इसके विपरीत ईश्वर को सृष्टि से अपरिहार्य रूप से अलग और केवल यीशु जैसे अद्वितीय उद्धारकर्ता के माध्यम से ही सुलभ मानता है, और उचित उद्धारकर्ता का अनुसरण करने में विफलता शाश्वत नरक की ओर ले जाती है (अपवाद: कोई नहीं)।
• बहुस्तरीय—अर्थात, आध्यात्मिक पदानुक्रम का एक विशिष्ट क्रम होना
अधिकार," ज्ञान बनाम शिक्षा बनाम व्याख्याओं में (एकस्तरीय अपवाद, जो "सांसारिक चेतना के वास्तविक और छद्म-अतिशयोक्ति को भ्रमित करते हैं," उनमें फिंडहॉर्न, साइंटोलॉजी, रजनीश और टीएम शामिल हैं [भले ही महर्षि की शिक्षाएं स्वयं वेदों में निहित हैं]), और
• गैर-करिश्माई—अर्थात, आध्यात्मिक तकनीकों पर जोर देने वाला
शिष्य और गुरु के बीच व्यक्तिगत संबंध पर निर्भर रहने के बजाय, रूपांतरण (जैसे ध्यान) को पूर्व के विकास/ज्ञानोदय के साधन के रूप में उपयोग करना (अपवाद: रामकृष्ण, मेहर बाबा, नीम करोली बाबा, आदि दा, मुक्तानंद, मां जया सती भगवती, जेटसुनमा, कोहेन, और साई बाबा और कुछ हद तक चिनमोय)।
एंथनी ने ट्रुंगपा, सच्चिदानंद और ज़ेन बौद्ध धर्म को स्पष्ट रूप से "बहुस्तरीय, तकनीकी

अद्वैतवाद" की "सबसे सुरक्षित" श्रेणी में रखा है। उनके दूसरे सबसे सुरक्षित समूह ("बहुस्तरीय, करिश्माई अद्वैतवाद") में हमें मेहर बाबा, नीम करोली बाबा, मुक्तानंद, चिनमोय और आदि दा मिलते हैं।
यदि ये “सुरक्षित” आध्यात्मिक नेता और समुदाय हैं, तो यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि “खतरनाक” नेता और समुदाय कैसे दिखेंगे। यह जानकर और भी आश्चर्य होता है कि 2003 तक भी विल्बर “सुरक्षित” समूहों को संभावित “समस्याग्रस्त” समूहों से अलग करने के साधन के रूप में आध्यात्मिक विकल्पों की अनुशंसा कर रहे थे। इस प्रकार की अनुशंसाएँ आध्यात्मिक विकल्पों पर आधारित पुस्तक के प्रकाशित होने के वर्षों बाद आ रही हैं।

जैसा कि ऊपर दस्तावेजित किया गया है, पाठ की थीसिस व्यवहार में पूरी तरह से गलत साबित हो गई है, यह आश्चर्यजनक है।
एंथोनी और अन्य लोगों के तर्कों से भ्रमित होकर, मैंने स्वयं भी अपने पिछले काम में एक समय 'स्पिरिचुअल चॉइसेस' का समर्थन किया था। हालांकि, जाहिर है, उस पुस्तक और उसके लेखकों के विचारों के बारे में मेरी राय तब से काफी परिपक्व हो गई है। वास्तव में, इस समय मुझे अपनी उस पिछली नासमझी पर बहुत पछतावा है, खासकर जब इसे उसी "विशेषज्ञों" के समूह के निम्नलिखित जैसे विचारों के साथ जोड़ा जाता है:
[टॉम] रॉबिन्स और [डिक] एंथोनी का स्वयं का योगदान [इन]
गॉड्स वी ट्रस्ट (1982) में एक शानदार प्रस्तावना शामिल है—
संभवतः संकलन का सबसे बेहतरीन अध्याय; एक संपूर्ण
और मस्तिष्क धोने के मॉडल की विनाशकारी आलोचना; और एक
मेहर बाबा समुदाय पर अंतर्दृष्टिपूर्ण रिपोर्ट (विल्बर,
1983बी)।
हालांकि, ब्रेनवाशिंग पर लिखा गया वह संक्षिप्त, बारह पन्नों का, बेहद सरल अध्याय किसी भी तरह से "संपूर्ण" आलोचना नहीं है, और न ही "विनाशकारी" आलोचना है। ब्रेनवाशिंग और माइंड-कंट्रोल की बहस के बारे में किसी की भी राय कुछ भी हो, उस जटिल विषय पर पाँच हज़ार शब्दों का लेख भला "संपूर्ण" कैसे हो सकता है? इस विवाद के दोनों पक्षों पर पूरी किताबें लिखी जा चुकी हैं, फिर भी इसे पूरी तरह से नहीं

समझा जा सका है; इस विषय के लिए लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग इन पब्लिकेशन के पूरे पदनाम मौजूद हैं! भले ही यह छोटा सा लेख अब तक का सबसे महान लेख हो, फिर भी यह "संपूर्ण" नहीं हो सकता!

मुझे तो यह अध्याय बिल्कुल भी प्रभावशाली नहीं लगा। वास्तव में, इसमें ऐसे वातावरण में स्वेच्छा से शामिल होने और बाद में उससे बाहर निकलने में आने वाली कठिनाई को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों की लगभग शून्य समझ दिखाई देती है। एंथनी के समग्र दृष्टिकोण से सहमत हों या असहमत, इस पाठ में कुछ भी "विनाशकारी" नहीं है।

इसके बिल्कुल विपरीत, मस्तिष्क को धोने और मन पर नियंत्रण के प्रश्न पर वास्तव में बुद्धिमानीपूर्ण और गहन चर्चा के लिए, देखें

माइकल लैंगोन (1995) के संकलन, रिकवरी के अध्याय 2 और 3

पंथों से संबंधित इस पुस्तक के अध्याय 13 में कई भयावह उदाहरण दिए गए हैं, जिनमें पहले स्वस्थ व्यक्तियों को विभिन्न, अनिर्दिष्ट, बड़े समूह जागरूकता प्रशिक्षण सत्रों के कथित परिणाम स्वरूप मानसिक आघात का सामना करना पड़ा। तथाकथित पंथों में बाल शोषण का भी उल्लेख किया गया है।

अध्याय 17 में यह काफी अच्छा प्रदर्शन करता है।

358 गुरुओं का पर्दाफाश

एंथोनी के स्वयं के निराशाजनक प्रयासों का एक खुलासा करने वाला उदाहरण

अन्य विद्वानों के विचारों की आलोचना के लिए, ज़ाब्लोकी (2001) देखें।

* * *

ज़िम्बार्डो ने, उदाहरण के लिए, इतनी समझदारी और करुणा दिखाई कि उन्होंने उन कैदियों को, जो मानसिक रूप से स्वयं वहाँ से निकलने में असमर्थ थे, अपनी कृत्रिम जेल से बाहर निकाल दिया। इसके विपरीत, धार्मिक समर्थक, जो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ब्रेनवाशिंग और माइंड कंट्रोल जैसी चीज़ें मौजूद नहीं हैं, शायद उन बेचारे लोगों को वहीं कष्ट सहने के लिए छोड़ देंगे। आख़िरकार, आश्रम/जेल में हर कोई स्वेच्छा से उस तानाशाही माहौल में आया था, और कुछ लोग कभी-कभी वहाँ से निकल भी जाते हैं, तो समस्या क्या है? उस "गैर-पारंपरिक" समाज में हस्तक्षेप क्यों किया जाए, जहाँ किसी को भी शारीरिक रूप से रहने के लिए बाध्य नहीं किया जा

रहा है?
हमारे विचार में व्यक्तियों को समग्र उपसंस्कृति में प्रवेश करने का अधिकार है।
सदियों से ऐसा स्वेच्छा से होता आ रहा है (रॉबिन्स)
और एंथोनी, 1982)।
निःसंदेह, हम सभी को किसी भी उपसंस्कृति में प्रवेश करने और उसमें बने रहने का अधिकार है, जिसमें हम भाग लेना चाहते हैं; यह बात बिल्कुल स्पष्ट है। लेकिन उन वातावरणों में भोलेपन से प्रवेश करने के अंतर्निहित खतरों को समझना कठिन नहीं है, जहाँ यदि कोई व्यक्ति किसी भी समय शिक्षाओं में गहराई से समा गया है, तो उससे बाहर निकलना आसान नहीं होता। इसलिए, कम से कम यह हमारा दायित्व है कि हम दूसरों को आगाह करें कि ऐसे परिवेशों में स्वेच्छा से प्रवेश करने से वे किन समस्याओं में पड़ सकते हैं। प्रवेश करने और किसी "पवित्र मूर्ख" के प्रति "पूरी तरह से आत्मसमर्पण" करने के अधिकार के लिए लड़ना, बाहर निकलने में आने वाली कठिनाइयों को किसी भी तरह से समझे बिना, अस्वीकार्य मानवीय अज्ञानता है। यह निश्चित रूप से उससे कहीं अधिक पीड़ा उत्पन्न करेगा जितना कि यह कभी कम कर सकता है।
इसके बाद रॉबिन्स और एंथोनी (1982) लोगों को बंद समुदायों में बांधने वाली बाधाओं पर अपना अतिसरलीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं:
मनोवैज्ञानिक और सहकर्मी समूह के दबाव जो गतिशील हैं-
तथाकथित पंथों को छोड़ने से रोकने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री शायद नहीं होनी चाहिए।
सशस्त्र गार्डों और बाड़ों के साथ उनकी क्षमता के मामले में समान रूप से तुलना की जा सकती है।
दृष्टिकोणों को प्रभावित करना।
लेकिन: ज़िम्बार्डो के कैदी नंबर 819 को यह बात बताएं—वह "बुरा" कैदी जिसने अध्ययन कक्ष छोड़ने से इनकार कर दिया था—जिसके लिए वे दबाव आध्यात्मिक विकल्प थे 359

वास्तव में, ये प्रतिबंध मात्र "सशस्त्र रक्षकों और बाड़ों" से कहीं अधिक बाध्यकारी और मनोवैज्ञानिक रूप से विनाशकारी हैं। दरअसल, चाहे ये प्रतिबंध साथियों के दबाव,

वास्तविक बाड़ों या "पीछा करने वाले क्रोध" के डर के रूप में हों, इन सबका प्रभाव एक ही होगा। यानी, ये सभी प्रतिबंध किसी व्यक्ति के लिए ऐसे वातावरण से बाहर निकलना बेहद मुश्किल बना देंगे, भले ही वह शुरू में स्वेच्छा से ही उसमें प्रवेश किया हो।

जैसा कि मैंने बाद में साइंटोलॉजी से बाहर के लोगों को समझाने की कोशिश की, मैं था

दो साल के बच्चे की तरह। मैं घर छोड़ने में असमर्थ था।

उन्होंने मेरी आत्मा पर कब्जा कर लिया था। हालाँकि, संगठन से मुझे बांधने वाले बंधन भी उन्हीं के थे।

अदृश्य, वे किसी भी भौतिक बंधन से कहीं अधिक शक्तिशाली थे।

मैं एक ऐसे जाल में फंसा हुआ था जो किसी भी पिंजरे से कहीं अधिक शक्तिशाली था।

लोहे की सलाखें और एक ताला। मानसिक रूप से मैं उनसे जुड़ा हुआ था (जागृति-फील्ड, 1996; इटैलिक्स जोड़े गए)।

[साइंटोलॉजी के संस्थापक एल. रॉन हबर्ड] ने हमारे ऊपर नियंत्रण रखा।

विचार इस हद तक हावी हो गए थे कि आप जाने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे।

बिना यह सोचे कि आप में कुछ गलत है

(गेरी आर्मस्ट्रांग, [मिलर, 1987] में)।

गहन शोध किए बिना (विशेषकर इंटरनेट से पहले के दिनों में), ऐसे बेचारे लोगों को यह पता ही नहीं था कि वे किस मुसीबत में फंसने जा रहे हैं। इस प्रकार, वे अंतहीन पीड़ा भोगते हैं, जबकि उनका पाप इतना बड़ा नहीं है कि उन्होंने स्वेच्छा से एक तानाशाही वातावरण में प्रवेश करके किसी न किसी "देवता" के समक्ष "पूरी तरह आत्मसमर्पण" कर दिया है। वहीं दूसरी ओर, हमारे विश्व के अत्यधिक सम्मानित सिद्धांतकार प्रासंगिक चिंताओं के व्यापक दायरे का ज़रा भी उल्लेख न करने वाली "विनाशकारी आलोचनाएँ" रचने पर स्वयं को और एक-दूसरे को बधाई देते हैं।

इस बात पर अंतहीन बहस हो सकती है कि जबरदस्ती "ब्रेनवाशिंग" या अपेक्षाकृत सूक्ष्म "माइंड कंट्रोल" क्या होता है, और क्या कोई समुदाय इनमें से किसी एक या दोनों का दोषी है। असल में, यहाँ इसका जवाब मायने नहीं रखता, क्योंकि हर ऐसे वातावरण में ऐसे लोग फंसे होते हैं जो मनोवैज्ञानिक रूप से "बस छोड़ नहीं सकते",

चाहे कोई भी "सिद्धांत" यह कहे कि उन्हें इस तरह से विवश नहीं किया जाना चाहिए। ज़िम्बार्डो ने तीस साल पहले मात्र एक दर्जन स्वस्थ व्यक्तियों के साथ यह बात साबित की थी; और विल्बर ने भी अनजाने में, अपनी दूसरी शादी के सबसे बुरे और आत्महत्या के कगार पर, यही किया था।
कोई व्यक्ति #819 की बुद्धिमत्ता, स्वतंत्रता या भावनात्मक स्थिरता को उसके द्वारा गुरुओं को 360 डिग्री तक छीलने का कारण बताकर उसकी आलोचना करने के लिए प्रेरित हो सकता है।

कृत्रिम जेल से बाहर निकलने की क्षमता। हालाँकि, विल्बर पर स्वयं उसी प्रकार के आरोप नहीं लगाए जाएँगे, क्योंकि वह उस विवाह को "छोड़ने में असमर्थ" था जिसमें उसने स्वेच्छा से और उत्साहपूर्वक प्रवेश किया था, लेकिन जो (उस निम्नतम बिंदु पर) उसे केवल पीड़ा ही दे रहा था।
ऐसे में, यदि किसी के सतही सिद्धांत यह कहते हैं कि "अन्य लोग सक्षम हैं, तो उन्हें भी" उस वातावरण को छोड़ देने में सक्षम होना चाहिए, तो वह उन लोगों को त्यागने के लिए स्वतंत्र हो सकता है जो किसी भी वातावरण को छोड़ नहीं सकते। यह निर्दयी विचार फंसे हुए शिष्यों से लेकर उन पीड़ित पत्नियों तक, जिन्होंने "स्वेच्छा से" विवाह किया है, सभी व्यक्तियों पर लागू हो सकता है। हालांकि, बोधिसत्व जैसी करुणा का दावा करने का अधिकार उतना नहीं है, जब कोई उन लोगों से मुंह मोड़ लेता है जो स्पष्ट रूप से उन परिस्थितियों में अपनी मदद करने में असमर्थ हैं। इन परिस्थितियों में लागू किया गया "योग्यतम/अशिष्ट" का दृष्टिकोण किसी भी तरह से "आध्यात्मिक" कहलाने योग्य नहीं है।
* * *
[तथाकथित पंथ] स्पष्ट रूप से ऐसे विशुद्ध सत्तावादी संगठनों से भिन्न हैं।
सैन्य समूहों के रूप में ... और सदियों पुराने रोमन कैथोलिक
... आदेश। ये समूह, हालांकि कठोर और नियंत्रणकारी हैं, लेकिन इनमें कमी है...
दोहरे एजेंडे वाले और जोड़-तोड़ करने वाले या नेता-केंद्रित नहीं हैं।
(सिंगर, 2003)।
लेकिन सैन्य मामलों के संबंध में:
सेना मन पर नियंत्रण के कई घटकों का उपयोग करती है।

कुछ पूर्व सैनिकों ने मुझे बताया है कि उनके भर्तीकर्ता ने उनसे झूठ बोला था।
[एक “दोहरे एजेंडे” में] (हसन, 2000)।
या फिर फिलिप जिम्बार्डो (2004बी) के एक संवाददाता के इस कथन पर विचार करें:
मैंने बच्चे की चाहत को पूरा करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की मरीन कोर में भर्ती हो गया।
मोहल्ले का सपना। [वहाँ रहते हुए, मैं] बार-बार दुर्व्यवहार का शिकार हुआ।
शारीरिक और मानसिक शोषण। एक जांच से पता चला कि
उन्हें चालीस से अधिक बार बिना किसी उकसावे के पीटा गया...
मैं जो बात कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि जिस तरीके से
जिसे आपके रक्षकों ने अपने कर्तव्यों के दौरान और जिस तरह से ले जाया
सैन्य अभ्यास प्रशिक्षक जो करते हैं वह अविश्वसनीय है। मैं
इन सभी समानताओं को देखकर मैं चकित रह गया।
आध्यात्मिक विकल्प 361

सामाजिक विज्ञान के साक्ष्यों का एक समूह दर्शाता है कि जब व्यवस्थित रूप से-
राज्य द्वारा स्वीकृत पुलिस, सेना या अन्य संस्थाओं द्वारा अभ्यास किया जाता है।
रचनात्मक [तथाकथित] पंथों में, मन पर नियंत्रण से गलत धारणाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
धर्म परिवर्तन, ऐसे लोगों को धर्मांतरित करते हैं जो स्वेच्छा से यातना देते हैं या हत्या करते हैं "आविष्कारक-
दुश्मनों को उकसाओ, "प्रेरित सदस्यों को थका देने वाले काम में लगाओ-
वे “के लिए” अपना पैसा—और यहाँ तक कि अपनी जान भी—त्याग देते हैं।
कारण” (ज़िम्बार्डो, 2002; इटैलिक्स जोड़े गए)।
किसी भी मामले में, ज़िम्बार्डो के कृत्रिम कारागार वातावरण का भी कोई छिपा हुआ उद्देश्य नहीं था, और न ही यह नेता-केंद्रित था। (यह केवल वांछित स्तर की आज्ञाकारिता और सम्मान को अपने कैदियों—या अपने समूह—से प्राप्त करने के लिए आवश्यक सीमा तक ही "हेरफेर" करता था, जिनमें से प्रत्येक ने स्वेच्छा से इस अध्ययन में भाग लिया था, और उन्हें किसी भी तरह से धोखे से भर्ती नहीं किया गया

था।) फिर भी, "ज़हरीला वही होता है जो ज़हरीला काम करता है"—अर्थात्, उनके सदस्यों पर पड़ने वाले प्रासंगिक प्रभाव अलग नहीं होते, भले ही स्पष्ट कारणों में कई अंतर गिनाए जा सकें।

बेशक, सबसे विनाशकारी माने जाने वाले समूह में भी कुछ ऐसे पहलू होंगे जो किसी पंथ जैसे नहीं होंगे—खासकर उन सदस्यों के लिए जो सप्ताह के सातों दिन नहीं बल्कि केवल रविवार या रविवार की सुबह ही "दूर से" भाग लेते हैं। इन विशेषताओं के आधार पर यह तर्क दिया जा सकता है कि ये समूह "सम्मानजनक" और "मुख्यधारा" के हैं, जो "पंथ" की किसी भी परिभाषा से केवल "चुन-चुनकर" मेल खाते हुए प्रतीत हो सकते हैं। फिर भी, कुछ अच्छे पहलू अन्य पहलुओं में असंख्य कमियों पर भारी नहीं पड़ सकते।

इसके अलावा, इन समुदायों में से कोई नेता-केंद्रित है या नहीं, यह बात मूलतः अप्रासंगिक है। क्योंकि, कोई व्यक्ति किसी अचूक, निर्विवाद विचारधारा के जाल में उसी आसानी से फँस सकता है—जो प्रासंगिक पैगंबरों और प्राचीन "पवित्र ग्रंथों" से जुड़ी हो, जिसका उल्लंघन करने पर गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं—जैसे कि किसी करिश्माई नेता के जाल में फँस सकता है।

एक जेल, एक हाई स्कूल, एक निर्दयी व्यावसायिक निगम, एक कट्टरपंथी धार्मिक संस्था, या दीक्षा समारोह के दौरान एक फ्रैट हाउस, या एक खराब शादी, या एक दुर्व्यवहार करने वाला परिवार, निश्चित रूप से इस वाक्यांश की किसी भी परिभाषा के अनुसार एक विनाशकारी, क्रूर, मस्तिष्क-धोखाधड़ी करने वाला "पंथ" नहीं है।

लेकिन फिर भी... यह बात ध्यान देने योग्य है कि इनमें से प्रत्येक वातावरण अपने अधिकारियों के प्रति मामूली अवज्ञा को भी अत्यधिक सहन नहीं करता है। इसी प्रकार, इनमें से किसी में भी ऐसा कोई "निकास प्रावधान" नहीं होता है जिसके तहत कोई व्यक्ति अपने साथियों और/या वरिष्ठों द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने पर गंभीर सामाजिक या आर्थिक दंड भुगतने के बिना "बस छोड़" सके।

मैंने देखा कि अधिकांश परिवारों, व्यवसायों और सरकारी व्यवस्थाओं की संरचना... सरकारें अपने सदस्यों को सुरक्षित रखने के लिए उतनी ही प्रतिबद्ध थीं।

योगी भजन के नेतृत्व में मेरे तथाकथित पंथ में उनका स्थान हमेशा के लिए बना

रहेगा।
(के. खालसा, 1994)
यहां तक कि घेराबंदी में घिरे एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक देश में भी ठीक यही मनोवैज्ञानिक गतिविधियां देखी जा सकती हैं। क्योंकि, अपने देश के झंडे तले एकजुट जनता अपने नेताओं की क्षमताओं या इरादों पर जरा सा भी सवाल उठाने को राजद्रोह के समान मानती है—यानी कारावास या देश निकाला, यहां तक कि पूर्णतः बहिष्कार के योग्य भी। ऐसा करके वे ठीक उसी तरह व्यवहार करते हैं जैसे किसी पंथ के सदस्य करते हैं, जब उन्हें जरा सा भी संकेत मिलता है कि उनका "दिव्य, अचूक" नेता वास्तव में नेतृत्व करने के योग्य नहीं है, या जब उनके "बचाए गए" या "सर्वोत्तम" समूह का कल्याण खतरे में पड़ जाता है।
और, ठीक वैसे ही जैसे “दिमाग धोए हुए पंथ के सदस्यों” के साथ होता है, ऐसी आबादी भी अपनी मुश्किल से हासिल की गई आज़ादी को सबसे नासमझ और बेईमान अधिकारियों के हाथों में सौंप देती है, ताकि वे एक बार फिर से सुरक्षित महसूस कर सकें और दूसरे “दुष्ट, उत्पीड़क” बाहरी लोगों से बच सकें। और, जैसे कोई गुरु और उसके अनुयायी सचमुच यह मान लेते हैं कि उन्हें केवल इसलिए सताया जा रहा है क्योंकि उनकी श्रेष्ठ ईमानदारी आदि दूसरों को असहज महसूस कराती है, वैसे ही राष्ट्रपति और पूरे देश भी इसी तरह के मूर्खतापूर्ण तर्क देते और मानते हैं। और, आध्यात्मिक और राजनीतिक नेताओं के लिए अपने शर्मनाक व्यवहार और अपने अनुयायियों के विचारों को नियंत्रित करने के प्रयासों से ध्यान हटाने का सबसे तेज़ तरीका “बुराई के खिलाफ युद्ध” पर ध्यान केंद्रित करना है, जो समुदाय की सीमाओं के बाहर ही पूरी ताकत से मौजूद है, और उसे अंदर आने की अनुमति नहीं दी जा सकती... या, अगर वह पहले से ही अंदर है, तो उसे खत्म कर दिया जाना चाहिए (उदाहरण के लिए, डायन-शिकार या नरसंहार के माध्यम से)।
असल में, समस्या तब पैदा होती है जब दुश्मन सचमुच में समुदाय की सीमाओं में घुसपैठ कर चुका हो और आपकी स्वतंत्रता और जीवनशैली को नष्ट करने पर तुला हो। आध्यात्मिक जगत में ऐसी परिस्थितियाँ शायद ही कभी उत्पन्न होती हैं, जहाँ "शैतान" मात्र एक भ्रम मात्र होता है; दुर्भाग्य से, राजनीतिक जगत इतना सरल और हानिरहित नहीं है।
* * *

विशेष रूप से फ्रैट हाउस में शामिल होने वाले नए सदस्यों द्वारा स्वेच्छा से सहन की जाने वाली यातनाओं पर अतिरिक्त ध्यान देना आवश्यक है। क्योंकि वहां, भावी सदस्य स्वेच्छा से मार खाते हैं, अपना ही मूत्र पीते हैं, और सचमुच दम घुटने जैसी स्थितियों का सामना करते हैं। (आध्यात्मिक विकल्प 363)

कच्चे जिगर के टुकड़े निगलने के प्रयास में मृत्यु (सियाल्डिनी, 2001)। यह सारा व्यवहार, निश्चित रूप से, किसी भी तरह के "मन नियंत्रण," छलपूर्ण भर्ती, नींद की कमी या सम्मोहन मंत्रोच्चार आदि का परिणाम नहीं है। बल्कि, इसे स्वेच्छा से अपनाया जाता है ताकि व्यक्ति किसी "अच्छे" समूह का सदस्य बन सके—सामाजिक बहिष्कार के "घोर दंड" से "बच" सके।

मेरी राय में, गैर-पारंपरिक और पारंपरिक धर्म दोनों की दुनिया में संबंधित सामाजिक गतिशीलता, और उससे जुड़े गैर-मुक्ति प्राप्त "आध्यात्मिक बहिष्कृत" लोगों के महत्व को बहुत कम करके आंका गया है।

इसके अलावा, सोलोमन एश के अनुरूपता प्रयोगों पर भी विचार करें, जो एक बार फिर यह दर्शाते हैं कि जब पसंद किए जाने, सही होने या सच बोलने के बीच चुनाव करना होता है, तो हम अक्सर पसंद किए जाने को चुनते हैं—अर्थात् औसतन लगभग एक तिहाई बार। कहने का तात्पर्य यह है कि हम दूसरों से और स्वयं से झूठ बोलते हैं ताकि हम समूह में घुल-मिल सकें, मूर्ख न दिखें, आलोचना से बच सकें, और/या यह मानकर कि समूह हमसे बेहतर जानता है।

अब, इस तथ्य को इस विचार के साथ जोड़ें कि यदि हम खुद से बार-बार झूठ बोलते हैं, तो अंततः हम उस पर विश्वास करने लगते हैं। (यहां तक कि एश के अध्ययन में भी, ऐसे प्रतिभागी थे जिन्होंने वास्तव में यह मान लिया था कि साथियों के दबाव में दिए गए उनके स्पष्ट रूप से गलत उत्तर सही थे।)

समूह, वास्तव में सही थे [एम. अंडरवुड, 2005]।

अब सवाल यह नहीं है कि अनेक पंक्तियों में से कौन सी पंक्ति दूसरी पंक्ति के बराबर लंबाई की है। बल्कि सवाल यह है कि क्या गुरु X सबसे अधिक ज्ञानी व्यक्ति हैं। और जो लोग उस गुरु को "सही उत्तर" बताकर उनका समर्थन कर रहे हैं, वे आपसे कहीं अधिक समय से वहाँ मौजूद हैं, और इसलिए आध्यात्मिक रूप से आपसे कहीं अधिक उन्नत हैं—आखिरकार, केवल "अहंकार" ही इस बात पर सवाल उठा सकता

है। इसलिए, वे आपसे कहीं अधिक जानते हैं।
तो, उस वातावरण में, केवल अनुरूपता के दबाव के माध्यम से, "मन नियंत्रण" की किसी भी आवश्यक तकनीक को लागू किए बिना: आपके विचार में सबसे महान जीवित आत्मज्ञानी कौन है?
नियंत्रित अध्ययनों से यह भी पता चला है कि किसी चीज को पाने के लिए हमें जितनी अधिक परेशानी या दर्द से गुजरना पड़ता है, बाद में हम उस चीज को उतना ही अधिक महत्व देते हैं:
एरॉनसन और मिल्स ने यह प्रदर्शित किया कि किसी प्रारंभिक घटना की गंभीरता...
दीक्षा समारोह नवागंतुक के मनोबल को काफी हद तक बढ़ा देता है।
समूह के प्रति प्रतिबद्धता (सियाल्डिनी, 2001; इटैलिक्स जोड़े गए)।
और, बेशक, कोई जितना अधिक प्रतिबद्ध होगा, उसे छोड़ना उतना ही मुश्किल होगा।
364 गुरुओं का पर्दाफाश

घंटों तक पद्मासन में बैठे रहने वाले ज़ेन ध्यानियों के अनुभव, जिनके घुटने जलते हैं और शरीर में दर्द होता है— और ज़रा सी भी हिलने पर उन्हें “छड़ी” से मार पड़ती है — अनिवार्य रूप से ठीक इसी सिद्धांत के प्रभाव में आते हैं। क्योंकि, वे ध्यानी प्रभावी रूप से अपने से अधिक प्रबुद्ध, सम्मानित और प्रशंसित व्यक्तियों के एक समुदाय के सदस्य के रूप में स्वीकार किए जाने की “प्रतिज्ञा” कर रहे होते हैं।
आध्यात्मिक नेताओं की ओर से इस सब में कोई सोची-समझी रणनीति या दुर्भावना थी या नहीं, यह यहाँ अप्रासंगिक है। क्योंकि, इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव उतना ही निश्चित है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब कोई व्यक्ति ज्ञानोदय के निकट पहुँचने और "समूह का हिस्सा" बनने के लिए अत्यधिक पीड़ा और अपमान सहता है, तो उसे बाद में समुदाय छोड़ने में या यहाँ तक कि यह प्रश्न करने में भी कि क्या "ज्ञानोदय" का कोई मूल्य है, बड़ी मनोवैज्ञानिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
स्पष्ट "मन पर नियंत्रण" (नींद की कमी, अत्यधिक प्रेम-प्रसंग, सम्मोहन आदि) के प्रभाव केवल अनुरूपता के "आधारभूत स्तर" और "ज्ञान प्राप्ति की प्रतिज्ञा" में निहित प्रतिबद्धता (और उसके परिणामस्वरूप छोड़ने में होने वाली कठिनाई) के अतिरिक्त ही होंगे। और ये आधारभूत स्तर, जो सरल और अपरिहार्य मानवीय मनोविज्ञान से उत्पन्न होते हैं, ऐसे वातावरण बनाने के लिए पर्याप्त हैं, जिनमें यदि थोड़ा सा धर्मशास्त्र भी

शामिल कर दिया जाए, तो उन्हें धार्मिक "पंथ" कहना लगभग असंभव हो जाएगा।
“पंथ के सदस्य,” कम से कम अपने-अपने संगठनों में शामिल होने से पहले, अपनी मनोविज्ञान और मानसिक स्थिरता के मामले में “बाहर” के अपने समकक्षों से कोई खास अंतर नहीं रखते, ठीक वैसे ही जैसे ज़िम्बार्डो के “नाज़ी” गार्ड और आज्ञाकारी कैदी अपनी कैद से पहले अलग नहीं थे। (फिर से, उस कैद से पहले किए गए स्पष्ट और मान्यता प्राप्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों ने ठीक उसी एकरूपता को प्रमाणित किया था।) हालांकि, इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात यह है कि उन्हीं सदस्यों से बने बंद समाज हमारे “सुरक्षित, दैनिक जीवन” से केवल मात्रा में भिन्न होते हैं, प्रकार में नहीं।
दरअसल, यह तथ्य कि "समस्याग्रस्त" समूह ठीक उसी तरह की मनोवैज्ञानिक गतिकी और सामाजिक संरचनाओं का हिस्सा होते हैं जैसा कि हमारी "सामान्य" दुनिया में होता है, बस उच्च स्तर की तीव्रता पर, यही कारण है कि पहले स्वस्थ लोगों के समूह एक लंबे सप्ताहांत से भी कम समय में क्रूर "पंथों" में परिवर्तित हो सकते हैं, यहां तक कि उस पतन को बढ़ावा देने वाले किसी गुरु के बिना भी।
तो, जहाँ तक “आध्यात्मिक विकल्पों” की बात है, वास्तव में सबसे सुरक्षित तरीका यही है कि आप “बस ‘ना’ कह दें।” या, अगर यह संभव न हो, तो जितना हो सके उतना अनदेखा करें। आध्यात्मिक विकल्प 365

ऐसा उन "विशेषज्ञों" की सलाह पर भी हो सकता है जो हमारी दुनिया के आध्यात्मिक संगठनों के बारे में "चिंता न करने" और "खुश रहने" के कारणों की अत्यधिक खोज करते हैं।
उदाहरण के लिए:
जब 1988 में [अर्थात्, घटना के पूरे दस साल बाद] उनसे पूछताछ की गई
जॉनस्टाउन सामूहिक आत्महत्याएँ] जिम जोन्स समूह के बारे में, [जे.
गॉर्डन मेल्टन ने कहा, “यह कोई पंथ नहीं था। यह सम्मान का स्थान था।”
सक्षम, मुख्यधारा ईसाई समूह” (हसन, 2000)।
जब आप ऐसे लोगों से निपट रहे हों—चाहे वे अपने निजी जीवन में कितने ही मिलनसार, दयालु और विचारशील क्यों न हों—जिनके वास्तविकता के प्रति इतने पेशेवर विचार हों कि वे इस बात पर जोर दें कि जॉनस्टाउन भी कोई "पंथ" नहीं था...

ओह!
दुर्भाग्य से, जोन्स के गुयाना की तुलना में उत्तरी अमेरिका या इसी तरह के अन्य स्थानों में भौगोलिक अलगाव की सापेक्षिक अनुपस्थिति से भी कोई राहत नहीं मिलती। यह बात दिवंगत लुई जोल्योन वेस्ट जैसे लंबे समय से "पंथ" के पर्यवेक्षकों के दावों के बावजूद सच है। क्योंकि, जोन्सटाउन आत्महत्याओं के तुरंत बाद, डॉ. वेस्ट ने यह राय व्यक्त की थी:
कैलिफोर्निया में ऐसा नहीं होता। लेकिन वे वहाँ रहते थे।
जंगल जैसी परिस्थिति में बाकी दुनिया से पूर्ण अलगाव।
शत्रुतापूर्ण देश में स्थिति (सियाल्डिनी, 2001 में)।
जॉनस्टाउन की घटना के बाद के वर्षों में, डेविड कोरेश (वाको, टेक्सास में) और हेवन गेट पंथ (सैन डिएगो) से जुड़ी दुखद घटनाएं घटित हुईं। दरअसल, 1997 में हुई आत्महत्याएं जिम जोन्स के अनुयायियों की आत्महत्याओं की तुलना में कहीं अधिक स्वेच्छा से की गई थीं। क्योंकि उस यूएफओ से संबंधित पंथ के नेताओं को किसी भी प्रकार की धमकी देने की आवश्यकता नहीं थी। बल्कि, आत्महत्याएं उनके सदस्यों द्वारा सचेत विकास के "अगले स्तर" तक पहुंचने के ईमानदार प्रयासों का हिस्सा थीं, जो उस संगठन के विश्वास के अनुरूप पूरी तरह से तर्कसंगत थीं। अर्थात्, हेवन गेट के अनुयायियों ने अपनी मुक्ति सुनिश्चित करने के लिए वही किया जो उन्हें आवश्यक लगा—भले ही इसके लिए उन्हें कई वर्षों का इंतजार करना पड़ा हो।
तो, आप "ज्ञानोदय" नामक मुक्ति के रूप को कितनी शिद्दत से चाहते हैं? क्या आप सत्य की अग्निपरीक्षा लेने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, चाहे हालात कितने भी बुरे क्यों न हो जाएं? क्या आप मार खाने को तैयार हैं? क्या आप अपमानित होने को तैयार हैं? क्या आप सेब की चटनी में बार्बिट्यूरेट्स मिलाकर खाने को तैयार हैं?
366 गुरुओं का पर्दाफाश

धार्मिक उत्साह को अलग करने वाली रेखा
जिसे पंथ ज़ोंबीहुड कहा जाता है, वह हमारी सामान्य धारणा से कहीं अधिक संकीर्ण है।
हम अपनी मान्यताओं (या अपने दोस्तों की मान्यताओं) को एक तरह से अपना लेते हैं...

जेल, यूएफओ, ईएसपी, कैनेडी हत्याकांड की साजिशें, आप
इसका नाम लें, समूहों की जटिल विज्ञान कथा विचारधाराओं से भिन्न रहें
स्वर्ग के द्वार के समान, मात्रा में, प्रकार में नहीं (फुटरेल, 1997)।
तो, निश्चित रूप से, यह "कैलिफोर्निया में हो सकता है।" और यह पहले ही हो चुका है।
भारी हथियारों से लैस रजनीशपुरम में भी सामूहिक आत्महत्याओं के बिना भी हिंसक और प्रलयकारी घटना घट सकती थी, अगर गुरु के देश से "साहसिक वापसी" के बाद सौभाग्यवश उसका पतन न हुआ होता। इसके अलावा, 60 के दशक के उत्तरार्ध में चार्ल्स मैनसन द्वारा अपने अनुयायियों पर किए गए अधिकांश मानसिक नियंत्रण कार्यक्रम, मशीनगनों से लैस स्पाहन रेंच में किए गए थे, जो शहर के बाहर स्थित है। लॉस एंजिल्स (क्रास्नर, 1993)।
और यह सब दुखद रूप से आश्चर्यजनक नहीं है। क्योंकि, इन सभी मामलों में समस्या बाहरी विचारों और दृष्टिकोणों से अलगाव की हद है, विशेष रूप से यह देखने की क्षमता से वंचित होना कि "आप जैसे" अन्य लोग वास्तविक दुनिया में कैसा व्यवहार कर रहे हैं, ताकि आप उसे अपने विचारों और कार्यों के लिए मार्गदर्शक के रूप में उपयोग कर सकें। और कोई व्यक्ति किसी बड़े शहर के बीचोंबीच या किसी हलचल भरे विश्वविद्यालय परिसर के केंद्र में बने नकली तहखाने की जेल में भी उतना ही अलग-थलग और प्रलयकारी भय से ग्रस्त हो सकता है, जितना कि किसी घने जंगल में।

नोट: डिक एंथोनी स्वयं 1980 के दशक के मध्य में ज़िम्बार्डो और विल्बर के साथ-साथ कई अन्य प्रतिष्ठित ट्रांसपर्सनल मनोवैज्ञानिकों के साथ एक वैकल्पिक आध्यात्मिकता-आधारित सेमिनार में उपस्थित थे। हालाँकि, उस बैठक में ज़िम्बार्डो की उपस्थिति का फुटनोट में उल्लेख—और उनके द्वारा एक साक्षात्कारकर्ता (वर्नेर एरहार्ड) से पूछे गए दो महत्वहीन प्रश्न—एंथनीज़, एकर और विल्बर (1987) की पुस्तक 'स्पिरिचुअल चॉइसेस' में उनका एकमात्र उल्लेख है। अर्थात्, ज़िम्बार्डो (या मिलग्राम) के अभूतपूर्व पेशेवर कार्य का कोई ज़िक्र नहीं है, जबकि उस भ्रामक पुस्तक के अन्य योगदानकर्ता कथित तौर पर "समस्याग्रस्त" गुरु-व्यक्तियों और संगठनों (जैसे कि ट्रुंगपा और मुक्तानंद के) को "सुरक्षित" गुरु-व्यक्तियों और संगठनों से अलग

करने के साहसिक संघर्ष में लगे हुए हैं। और, आश्चर्यजनक रूप से, ज़िम्बार्डो की क्लासिक टिप्पणियाँ उन लोगों द्वारा दिए गए आत्मविश्वासपूर्ण तर्कों में भी चुपचाप अपनी जगह नहीं बना पाई हैं, जिनका जीवन उन मुद्दों को समझने के लिए समर्पित रहा है।
बुरा बहुत बुरा।

अध्याय XXIX

बाद
कठिन परीक्षा

मुझे लगा था कि यह आश्रम मुझे सही रास्ता दिखाएगा। नहीं
और राजनीति। केवल दर्शन और मोक्ष। मुझे ऐसा करना चाहिए।
भाग्यशाली। एक भारतीय आश्रम में जितनी राजनीति होती है, उतनी तो दूसरे आश्रमों में भी नहीं होती।
संपूर्ण पश्चिमी गोलार्ध! (मेहता, 1979 में)।
आश्रम अक्सर सबसे अधिक तनावपूर्ण, सबसे अधिक विक्षिप्त और राजनीतिक समूह होते हैं।
मैंने अब तक जिन चीजों में हिस्सा लिया है (दास और लेविन, 1977)।
याद रहे, दास स्वयं हार्वर्ड में एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक थे; इसलिए दूसरों के व्यवहार को "न्यूरोटिक" के रूप में वर्गीकृत करना एक सूचित राय है, न कि केवल एक बोलचाल की राय।
मेरे अनुभव में, आश्रम पागलखानों की तरह होते हैं जो पागलों से भरे होते हैं।
ईर्ष्यालु और जरूरतमंद लोग.... मैंने जिन आश्रमों का दौरा किया है उनमें से अधिकांश ऐसे ही हैं।
ज्ञात और भ्रमण किए गए स्थान पवित्र वातावरण नहीं हैं जहाँ लोग
प्रगति; ये ऐसी जगहें हैं जहाँ लोग पीछे की ओर चले जाते हैं—अंधेपन की ओर।
आराधना, आध्यात्मिक घमंड, भाई-बहनों के बीच प्रतिद्वंद्विता, नकल करना और

तथाकथित गुरु की नकल करना—और मेरे अनुभव में, मैं
मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि मैंने वास्तविक आध्यात्मिक दृष्टि का बहुत कम ही अनुभव किया है।
उनमें प्रगति हुई है (हार्वे, 2000)।

367
368 गुरुओं का पर्दाफाश

एक तथाकथित घटना में मेरे अनुभव ने मेरे जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया।
धार्मिक पंथ। मैंने न केवल जीवन में अपनी रुचियों को त्याग दिया, बल्कि
मैंने पंद्रह साल किसी और के रास्ते पर चलते हुए बिताए। जब मैंने...
अंततः अपने मोह से जागृत होकर, मैंने खुद को इसके साथ पाया।
लगभग शून्य आत्मसम्मान, कई बर्बाद वर्षों के लिए बहुत पछतावा,
और अपनी नासमझी पर बहुत गुस्सा, साथ ही बहुत क्रोध भी।
मैं अपने पुराने समूह से अलग हो गया था। मुझे लगा कि मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा उससे अलग हो गया है।
मेरी जानकारी के बिना ही मेरी असली पहचान मुझसे चुरा ली गई थी।
सहमति। साथ ही, मुझे स्वतंत्रता का एक आनंदमय अहसास हुआ।
और इस बात से मुझे असीम खुशी हुई कि अब मेरा जीवन मेरे हाथों में वापस आ गया था।
हाथ (गोल्डहैमर, 1996)।

कोई व्यक्ति आध्यात्मिक संस्था में कई कारणों से शामिल हो सकता है, जैसे कि बचपन में माता-पिता की तलाश से लेकर इस जीवन में मुक्ति या ज्ञान प्राप्त करने की परिपक्व आशा तक। और शामिल होने के बाद, वहाँ बने रहने के भी उतने ही कारण होते हैं। इस संदर्भ में, आश्रम के एक पूर्व निवासी ने अनौपचारिक रूप से अनुमान लगाया कि जिन भिक्षुओं और भिक्षुणियों से वह मिले थे, उनमें से 85% केवल सत्ता, नियंत्रण या निर्भरता की चाहत में, या संसार के भय से वहाँ थे। या फिर, किसी वृहद संस्था से जुड़ाव की भावना और अपने वस्त्रों पर गिरती तारों की धूल का आनंद लेने

के लिए। यानी, आश्रम के "रॉक स्टार" के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के लिए प्रशंसा पाने के लिए, एक ऐसा सम्मान जो उन्हें दुनिया में कहीं और किसी भी कारण से नहीं मिलता, और तो और, उनके वस्त्रों के रंग जैसी छोटी सी उपलब्धि के लिए तो बिल्कुल नहीं। या फिर, वे वहाँ "केवल आलस्य के कारण, फँसे होने के कारण, या फिर इतने अक्लमंद होने के कारण थे कि उन्हें कुछ और समझ ही नहीं थी।" (यदि 85% का वह अनुमान अत्यधिक कठोर लगता है, तो ध्यान दें कि स्वयं दलाई लामा ने इससे भी कम 90% का आंकड़ा प्रस्तावित किया था। मेरा अपना स्वतंत्र अनुमान मात्र 80% था।)

गुरु के साथ शुरुआती "हनीमून" दिनों में बीते अच्छे समय की सुखद यादें भी शिष्यों को समुदाय में बने रहने में भूमिका निभा सकती हैं (स्ट्रेली, 1987)।

आमतौर पर बने रहने के अन्य कारणों में वित्तीय बाधाएँ और "वास्तविक दुनिया" के कौशल का कमजोर पड़ जाना शामिल है। वास्तव में, किसी भी आध्यात्मिक संगठन से जुड़ने के शुरुआती चरणों में किसी के जीवन में जितना अधिक सकारात्मक परिवर्तन होता है, उतनी ही अधिक संभावना होती है कि वह व्यक्ति - एक बड़ी गलती - अपनी सभी सांसारिक संपत्ति "ईश्वर-प्रेरित" कार्य के लिए दान कर देगा। हालाँकि, यह नेक लेकिन भोला-भाला समर्पण, "प्रेम" कम होने पर और जब आपको एहसास होने लगता है कि आप किस मुसीबत में फंस गए हैं, तो उससे बाहर निकलना बहुत मुश्किल बना देता है। और फिर, इससे बाहर कैसे निकलें? क्योंकि, सबसे सफल तरीके से बाहर निकलने के लिए - इस कठिन परीक्षा के बाद 369

लेकिन, व्यापार जगत की नजर में, आपकी हालिया नौकरी संबंधी सिफारिश अभी भी एक "पंथ" से ही है।

डॉक्टर जो वर्षों तक बढ़ई, रसोइया और अन्य के रूप में काम करते रहे थे

राजनीशपुरम के ढहने के बाद मजदूरों ने आंशिक रूप से काम शुरू किया।

आपातकालीन कक्षों में समय-समय पर काम करना या अन्य कर्मचारियों की जगह काम करना।

यासीन चिकित्सक जो कभी भी उस फार्म पर रहने नहीं आए थे।

वास्तुकारों ने ड्राफ्ट्समैन के रूप में और रिपोर्टरों ने प्रूफरीडर के रूप में काम किया।

कॉपी एडिटर और कॉपी एडिटर। वे नर्सें जो पूरे काम की प्रभारी थीं

उनके आने से पहले मेडिकल वार्ड निजी तौर पर काम करते थे।
क्लीनिकों में पूर्णकालिक या अंशकालिक (गॉर्डन, 1987)।
बेशक, आश्रम के वातावरण में रहने के कई सकारात्मक कारण भी हैं, जिनमें गुरु से निकलने वाली ऊर्जा और प्रेम शामिल हैं, जिन्हें निवासियों ने महसूस किया है—चाहे वे ऊर्जाएं वास्तविक हों या (अधिक संभावना है) मात्र काल्पनिक हों। हालांकि, इसके विपरीत, निम्नलिखित पर विचार करें, जहां स्पष्ट रूप से कोई "दिव्य ऊर्जा" प्रवाहित नहीं हो रही थी, फिर भी प्रभाव काफी हद तक समान था:
द बीटल्स इतने लोकप्रिय हुए कि लाइफ पत्रिका ने उन्हें अपने शो में जगह दी।
लोगों की तस्वीर जिसमें वे मिट्टी खुरच रहे हैं और कह रहे हैं: “यह
"बीटल्स यहाँ चले थे," मानो ये युवा संगीतकार जे-
स्वयं यीशु मसीह (राधा, 1978)।
दरअसल, जब फैब फोर ने उत्तरी अमेरिका का दौरा किया, तो दर्शकों में मौजूद लड़कियां न केवल बेहोश हो रही थीं, बल्कि सचमुच पेशाब पर नियंत्रण खो रही थीं। हालांकि, इनमें से कोई भी बात जॉन, पॉल या जॉर्ज - और रिंगो तो बिल्कुल भी नहीं - द्वारा उत्सर्जित किसी अत्यधिक, तेजस्वी ऊर्जा के कारण नहीं थी, भले ही उन्होंने अपनी प्रसिद्धि/दिव्यता को बखूबी निभाने की पूरी कोशिश की हो।
उन लड़कों के बारे में कौन बुरा सोच सकता है जो अपनी आंतरिक घृणा को दबाकर, विकलांग दुर्भाग्यशाली लोगों की श्रृंखला के लिए आकर्षक थे
भोले-भाले संरक्षकों द्वारा लाया गया, जो इस भ्रम में थे कि "दिखावा करना"
क्या चारों पॉप सितारों के "हाथ" से इलाज हो जाएगा?
(क्लेसन, 1996)।
और फिर भी, मान लीजिए कि जॉर्ज को महर्षि या हरे कृष्णों द्वारा "प्रबुद्ध" घोषित किया गया होता, या एल्विस को दया माता द्वारा अवतार के रूप में लिया गया होता। (वास्तव में प्रेस्ली के मन में मसीहा जैसी अवधारणाएँ थीं)
1970 के दशक की शुरुआत में खुद को मानवता के उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करना" [क्लाउड,
2000].) तब कोई केवल गहन “दर्शन ऊर्जाओं” की कल्पना कर सकता है 370 गुरुओं को निथारना

उनके प्रशंसक अपने अनुभव के आधार पर यह दावा करते थे कि वे उनसे ऊर्जा प्रवाहित होते हुए महसूस कर सकते थे। इसी तरह, किंग द्वारा प्रकट किए गए चमत्कारी "कोरोना" और इसी तरह की चीजों की कल्पना भी आसानी से की जा सकती है। (वैसे भी, एल्विस का मानना था कि वे अपने विचारों की शक्ति से बादलों को हिला सकते हैं, लेकिन यह एक अलग कहानी है। जैसा कि उनके एक सहायक ने कहा था, यदि आप पर्याप्त मात्रा में ड्रग्स लेते हैं, तो आप जो चाहें देख सकते हैं।)

इसके विपरीत, अपने गुरुओं की दिव्यता का बखान करने वाले शिष्यों का एक बड़ा हिस्सा वही समूहवादी सोच वाले लोग होते हैं जो ऐसी चीजों को भी महिमामंडित कर लेते हैं जो वास्तव में मौजूद नहीं होतीं, इत्यादि। इस संदर्भ में देखा जाए तो किसी भी गुरु की महानता के बारे में उनकी गवाही को गंभीरता से नहीं लिया जा सकता। फिर भी, इतिहास और संत-चरित्र ऐसे व्यक्तियों से भरे पड़े हैं।

उदाहरण के लिए, दिवंगत स्वामी राधा ने बीटल्स के सदस्यों के प्रति दिखाई गई श्रद्धा पर संदेह व्यक्त किया। हालांकि, ऐसा प्रतीत होता है कि यदि स्वयं उनके गुरु, "चमत्कारी संत" स्वामी शिवानंद ने इस विषय पर विचार किया होता, तो वह भी श्रद्धापूर्वक उनका अनुसरण करने वालों में से एक होतीं। वास्तव में, यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया होता, तो उनकी यह अनादरपूर्ण प्रवृत्ति उन्हें समर्पित आध्यात्मिक साधकों के अल्पमत में डाल देती और संभवतः गुरु के प्रति उनकी स्वयं की निष्ठा पर भी प्रश्नचिह्न लगा देती।

मैंने देखा कि उत्सुक भक्त साईं बाबा के चरणों को पकड़ने के लिए टूट पड़े।
रेत में पदचिह्न बनाते हुए, वे खुशी-खुशी पवित्र रेत को अपने ऊपर फेंक रहे थे।
बाल, सिर और बच्चे; और कुछ तो इसे खा भी लेते हैं (जैक)
शेर, [वार्नर, 1990] में)।
जब मैंने विदाई दर्शन में भाग लिया, तो मुझे एक छोटा सा उपहार दिया गया।
भगवान [रजनीश] की कोई वस्तु रखी हुई लकड़ी की पेटी—एक
बाल, या नाखून का टुकड़ा, मुझे नहीं पता क्या क्योंकि आप
इसे कभी नहीं खोलना चाहिए (पामर और शर्मा, 1993 में)।
गु का कुछ हिस्सा खाने की खुशी से मेरा मन भर गया।
रुदेव (अर्थात नित्यानंद) का बचा हुआ खाना। मैं उसे अपने चेहरे पर मलती थी।
मुक्तानंद के बैठने की जगह से शरीर के धूल के कण (मुक्तानंद)

1978).
गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के सामान्य तरीकों में शराब पीना शामिल है।
जिस पानी से उसके पैर धोए गए हैं (कृपाल,
1995).
उस कठिन परीक्षा के बाद 371

जेटसुनमा के घर से फेंकी गई एक टॉयलेट सीट मिली थी।
जिसे उसके छात्रों ने एक अवशेष के रूप में बचाया और संरक्षित किया (शेरिल, 2000)।
इसी प्रकार, आदि दा के स्पर्श से पवित्र हुई वस्तुओं की हाल ही में हुई नीलामी में पेश की गई पवित्र वस्तुओं में एक प्रयुक्त क्यू-टिप भी शामिल थी, जिस पर "आदि दा के बहुमूल्य कान के मैल के धब्बे" लगे थे। न्यूनतम बोली:
$108 (एलियास, 2000)। पिछली नीलामी में, आधी जली हुई सिगरेट
बताया जाता है कि बट 800 डॉलर में बिका (एलियास, 2000ए)।
जैसा कि टार्लो (1997) ने अंत में उल्लेख किया:
इन तथाकथित गंभीर साधकों को इस तरह देखना शर्मनाक था।
एंड्रयू कोहेन के आसपास रॉकस्टार की तरह व्यवहार करना
प्रशंसक।
या इसके विपरीत, जैसा कि एक महिला ने डेविड बॉवी के एक संगीत कार्यक्रम में मुख्य कलाकार के बारे में मुझसे कहा था: "यह आदमी भगवान है।" (तुलना करें "[आदि दा] पूरी तरह से भगवान हैं" [दा में, 1974; स्वयं प्रकाशित])।
इसलिए, "आस्तिक" का मनोविज्ञान स्पष्ट रूप से एक जैसा ही होता है, चाहे "पवित्र संत" द्वारा छुई गई वस्तु रेत हो, बॉलिंग बॉल हो या टॉयलेट सीट हो, और चाहे प्रश्न में उल्लिखित पवित्र बट (टॉयलेट या सिगरेट का) जेटसुनमा, आदि दा या रिन-गो स्टार का हो।
जहां तक मेरा सवाल है, मुझे श्री रिंगो पर और अधिक विश्वास और भरोसा होगा।
* * *
फ्रांसिस वॉन (एंथनी, एट अल., 1987 में) प्रश्नों का निम्नलिखित समूह प्रस्तुत करती हैं, जिन पर वैकल्पिक धार्मिक आंदोलनों के संभावित नए सदस्यों को शामिल

होने से पहले विचार करने की सलाह दी जाती है:
क्या यह समूह अपने संगठन और उससे जुड़ी बातों को गुप्त रखता है?
नेता? समूह के सदस्य शर्मिंदगी की स्थिति में कैसे प्रतिक्रिया देते हैं?
क्या सदस्य रूढ़िवादी व्यवहार प्रदर्शित करते हैं?... क्या सदस्य रूढ़िवादी व्यवहार प्रदर्शित करते हैं?
क्या वह नेता का अनुकरण करता है?... क्या सदस्यों को छोड़ने की स्वतंत्रता है?...
क्या समूह की सार्वजनिक छवि उसके वास्तविक स्वरूप को गलत तरीके से प्रस्तुत करती है?
ये सभी वाजिब सवाल हैं। लेकिन इनका ईमानदार जवाब कहाँ से मिलेगा? गुरु से? उनके शिष्यों के करीबी समूह से? या समूह के अन्य वफादार सदस्यों से, जो आपको अपने साथ शामिल करने के लिए उत्सुक हैं? यह तो स्पष्ट है कि कोई भी आध्यात्मिक शिक्षक या संगठन, जिसके पास छिपाने के लिए कुछ हो, इन सवालों का जवाब कभी सच नहीं देगा, बल्कि संभावित भक्त को “सही” जानकारी देगा। 372 गुरुओं का पर्दाफाश

वे जवाब जो वह शुरू से ही सुनना चाहता था/चाहती थी। और क्या यह स्पष्ट नहीं है कि सभी संगठन और नेता जनता से रहस्य छिपाते हैं?
क्या वेटिकन के पास रहस्य हैं? हाँ, हर सरकार की तरह।
निगम, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) और
अन्य संस्थान ऐसा करते हैं (एलन, 2004)।
क्या यह बात उतनी ही स्पष्ट नहीं है कि सभी समूहों (यहां तक कि धर्मनिरपेक्ष समूहों) में ऐसे सदस्य होते हैं जो अपने नेताओं की नकल करते हैं? (भौतिक विज्ञानी जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर के स्नातक छात्र भी अनजाने में उनके सिगरेट पीने के तरीके की नकल करते थे। ओपेनहाइमर ने स्वयं समूह-चिंतन के लिए डेविड बोहम के काम को "बचकाना विचलनवाद" कहकर खारिज कर दिया था, यहां तक कि उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि "यदि हम बोहम को गलत साबित नहीं कर सकते, तो हमें उन्हें अनदेखा करना होगा" [पीट, 1997]।) और यह भी स्पष्ट है कि आप हमेशा "छोड़ने के लिए स्वतंत्र" होते हैं, भले ही बाद में "आपदाओं से घिरे" होकर "अज्ञानता के अंधकारमय सागर में डूब जाएं"... और यह कि सार्वजनिक छवि कभी भी

आध्यात्मिक गुरु या समुदाय के वास्तविक स्वरूप को सही ढंग से नहीं दर्शाती है?
यदि सामान्य ज्ञान की अधिक भूमिका होती, तो किसी भी गुरु का मूल्यांकन करने के लिए सबसे सीधा और स्पष्ट तरीका अपनाया जा सकता था: उन पूर्व शिष्यों से बात करना जो गुरु से अलग हो चुके हैं, और उनसे पूछना कि उन्होंने गुरु क्यों छोड़ा! वास्तव में, यही एकमात्र तरीका है (प्रकाशित खुलासों के अलावा) जिससे गुरु और उनके समुदाय के चरित्र का सटीक आकलन किया जा सकता है।
किसी विशिष्ट समूह के बारे में जानने का सबसे अच्छा तरीका है किसी को ढूंढना।
पूर्व सदस्य, या कम से कम पूर्व सदस्य का लिखित बयान-
गिनती (हसन, 1990)।
इस विषय पर थोड़ा सा भी विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि शिष्य के प्रारंभिक चरण या "परीक्षण अवधि" में जिस ऋषि का मूल्यांकन किया जा रहा है, उसमें निहित कथित वैधता और "दिव्य प्रेम" की मात्रा का उसके वास्तविक चरित्र से कोई संबंध नहीं है। वास्तव में, यह अंतर किसी संभावित प्रेमी/प्रेमिका में पहली मुलाकात में देखी गई "परिपूर्णता" और दस वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद देखी गई "परिपूर्णता" के अंतर से कहीं अधिक होगा।
जब आप किसी भावी साथी से प्यार करने लगते हैं, तो आप, जब तक कि आप पूरी तरह से धूर्त न हों, उसके बारे में चुपके से गंदगी निकालने के लिए किसी निजी जासूस को काम पर नहीं रखेंगे। न ही आप ऊपर सुझाए गए दखलंदाजी वाले सवालों को निष्पक्ष रूप से पूछ सकते हैं (या गुप्त रूप से शोध कर सकते हैं) 373

किसी भी "पवित्र संत" और उनके संगठन के बारे में वॉन द्वारा तब कोई राय न बनाएं, जब आप पहले से ही उनके प्रति "प्रेम" महसूस कर रहे हों।
और फिर, जहां ये दोनों विचार आपस में मिलते हैं:
[पॉलेट कूपर] के सामने विस्तृत पुनर्लेखन के पन्ने थे-
किसी अन्य [कथित] पंथ संचालक से प्राप्त जानकारी... उसके पास एक
थोड़े समय के लिए, मैं उसके बहुत करीब था, और मैंने ऐसा दिखावा किया जैसे मैं उसके साथ हूँ।
उससे प्यार करो...
गुप्त एजेंट ने अपने वरिष्ठों को बताया कि बाहर की दुनिया में

वह [उसकी परेशानियों के प्रति] सहानुभूति रखता था, लेकिन अंदर ही अंदर वह
हंसते हुए: "क्या [कूपर की आत्महत्या के बारे में निराशाजनक बातें] एक
क्या यह साइंटोलॉजी के लिए बहुत अच्छी बात है? (मार्शल, 1980)।
जहां तक वॉन द्वारा ऊपर सुझाए गए प्रश्नों की बात है: यदि आप उन्हें पूछते भी हैं, तो यह सोचना वाकई में कल का ही जन्म होना चाहिए कि आपको कभी भी एक खुला और ईमानदार उत्तर मिलेगा।

* * *

जैक कॉर्नफील्ड ने कई साल पहले योगा जर्नल के लिए एक ऐतिहासिक लेख लिखा था। उसमें उन्होंने अपने शोध के नतीजे पेश करते हुए खुलासा किया कि उनके द्वारा सर्वे किए गए 53 अमेरिकी योग शिक्षकों में से 34 (64%) ने अपने छात्रों के साथ यौन संबंध बनाए थे। इन यौन संबंधों में विषमलिंगी, उभयलिंगी, समलैंगिक, कामुक प्रवृत्ति, प्रदर्शनकारी और एकविवाही से लेकर बहुविवाही तक की विभिन्न पसंद शामिल थीं।

इस पर क्या प्रतिक्रिया दें? जैसा कि कृपालु के लोगों और दलाई लामा दोनों ने सामान्य ज्ञान से समझा, उन पिता तुल्य गुरुओं और शिक्षकों के प्रति उचित प्रतिक्रिया बहुत सरल है जो कथित तौर पर अपने शिष्यों के साथ आध्यात्मिक अनैतिक व्यवहार करने से खुद को रोक नहीं पाते। यानी, उनकी खुलकर आलोचना करें और यदि वे नहीं बदलते हैं, तो अपना सामान पैक करके चले जाएं।

या फिर, इससे भी बेहतर, समझदारी से शिक्षक को बर्खास्त कर देना।

फिर भी, ठीक उसी समय जब हम यह सोच रहे होते हैं कि अंततः हमें दलाई लामा के रूप में एक ऐसा गुरु मिल गया है जो वास्तव में चीजों को कुछ हद तक स्पष्ट रूप से देख सकता है... तभी हम उसी व्यक्ति को यह कहते हुए पाते हैं कि द्रुकपा कुनले जैसे महान योगियों के लिए केवल उनकी (पत्नियों के) लाभ के लिए अन्य पुरुषों की पत्नियों के साथ सोना संभव हो सकता है।

हल्की मुस्कान के साथ, परम पावन ने समझाया कि द्रुकपा कुनले
वह अपने कार्यों के दीर्घकालिक प्रभावों को समझ सकता था क्योंकि
उन्होंने "एक स्वाद" के नाम से जानी जाने वाली अद्वैत अंतर्दृष्टि प्राप्त कर ली थी।
उसके लिए सभी अनुभव एक जैसे थे: वह आनंद ले सकता था [eat-374

मल-मूत्र, ठीक वैसे ही जैसे उत्तम भोजन और शराब।
(व्हीलर, 1994)।
हालांकि, केन विल्बर ने एक बार फिर उस एक स्वाद की अवस्था को प्राप्त कर लिया है जिसकी दलाई लामा इतनी प्रशंसा करते हैं, और इस प्रकार कथित तौर पर वे "अपने कार्यों के दीर्घकालिक प्रभावों को समझने" में सक्षम हैं, उदाहरण के लिए, आदि दा और एंड्रयू कोहेन का समर्थन करने में। (विल्बर की उत्तम शराब बनाम मूत्र आदि के बीच की पसंद के बारे में कोई जानकारी नहीं है।) हालांकि, ये समर्थन, और डेविड बोहम के उत्कृष्ट कार्य का उनका लगातार, अपमानजनक और गलत तरीके से प्रस्तुत करना, यह पूरी तरह से साबित करता है कि "विकल्पहीन जागरूकता" किसी व्यक्ति के कथित तौर पर "हर स्थिति में हमेशा उचित व्यवहार करने" का वैध आधार नहीं हो सकती। यह भी ध्यान देने योग्य है कि दलाई लामा भी उन व्यक्तियों की आध्यात्मिक उपलब्धियों का महिमामंडन करने के दोषी हैं जिन्हें वे स्वयं से महान मानते हैं। वास्तव में, वे शायद उसी हद तक ऐसा कर रहे हैं जिस हद तक उनके स्वयं के आध्यात्मिक स्तर को उनके सबसे वफादार अनुयायियों द्वारा निस्संदेह अतिरंजित किया गया है।
कुनले के बारे में आगे:
इसमें कोई संदेह नहीं है कि द्रुकपा कुनले टूट जाता।
अगर उसने सोचा होता कि इससे उसे फायदा हो सकता है तो वह अनाचार निषेध को तोड़ देता।
माँ का आध्यात्मिक विकास (फ़्यूरस्टीन, 1992)।
द्रुकपा कुनले... जब उनके एक अनुयायी, आपा गेपो ने उनसे पूछा,
उनकी धार्मिक प्रतिज्ञा को मजबूत करने के लिए की गई प्रार्थना का उत्तर मिला:
द्रुकपा कुनले के लिंग का अगला हिस्सा चिपक सकता है।
छोटी योनि में डालें,
लेकिन कसाव लिंग के आकार पर निर्भर करता है। आपा गेपो की बुद्धत्व प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है, इतनी तीव्र कि...
लेकिन उनकी उपलब्धि का पैमाना उनकी समर्पण की शक्ति पर निर्भर करता है (फ्रेंच, 2003)।

प्रार्थनाओं की बात करें तो, यह निश्चित रूप से सबसे दिलचस्प प्रार्थनाओं में से एक है...

कुनले के कारनामों में पाँच हज़ार महिलाओं के साथ सोने का दावा शामिल था—लेकिन स्पष्ट रूप से किसी पुरुष के साथ नहीं—"उनके आध्यात्मिक लाभ के लिए।" तो यहाँ हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति है जिसने स्पष्ट रूप से मल और मूत्र, और "सर्वोत्तम भोजन और शराब" के बीच कोई अंतर नहीं किया। यानी, उसने संभवतः दोनों का समान रूप से आनंद लिया, क्योंकि वह हर चीज़—अपने विचारों, संवेदनाओं और भावनाओं सहित—को एक ही "एक स्वाद" के रूप में अनुभव करता था। दूसरे शब्दों में, उसने "अनुभव किया-कठिनाई के बाद 375

उन्होंने विषय और वस्तु के बीच कोई विभाजन किए बिना और उन विभिन्न मानसिक संबंधों में मनोवैज्ञानिक जुड़ाव से पीछे हटे बिना, उनका अनुभव किया। फिर भी, विशुद्ध रूप से विषमलिंगी विल्बर की तरह, उन्होंने स्पष्ट रूप से पुरुषों और महिलाओं को यौन साथी के रूप में भेद किया, और इस संबंध में केवल महिलाओं के साथ ही संबंध बनाए।

यह बहुत ही संदिग्ध है—कथित तौर पर गंदगी और उचित भोजन के प्रति अपने पाक संबंधी आनंद में कोई अंतर न करना, लेकिन फिर भी काफी हद तक सीखी हुई/सांस्कृतिक यौन प्राथमिकताओं से बंधे रहना।

फ्यूअरस्टीन कुनले और अन्य लोगों के हिंसक "पागलपन भरे ज्ञान" से संबंधित कई और "मनगढ़ंत कहानियाँ" प्रस्तुत करते हैं। इनमें से कोई भी काल्पनिक कहानी अक्षरशः सच नहीं हो सकती। फिर भी, ये सभी कहानियाँ निस्संदेह अतीत और वर्तमान में, स्वयं को बुद्धिमान बताने वाले मूर्ख व्यक्तियों के व्यवहार को उचित ठहराने के लिए, कभी न कभी, उपयोग की गई हैं।

विचार करना:

[आदि दा] अपने काम की तुलना उस विलक्षण लेकिन बुद्धिमान शिक्षक से करना पसंद करते हैं-

पूर्व के कुछ महान विद्वानों की शिक्षाओं में से एक। विशेष रूप से, वह

एक बार उन्होंने कहा था, “मैं द्रुकपा कुनले हूँ.... यही बात है।”

मैं आपके समय और स्थान में हूँ” (फ्यूअरस्टीन, 1996)।

* * *

परंपरागत रूप से, एशिया में, प्रतिज्ञाओं और नैतिक उपदेशों का पालन किया जाता रहा है।
शिक्षकों और छात्रों को यौन और अन्य प्रकार के दुर्व्यवहार से सुरक्षित रखा गया।
दुराचार। जापान, तिब्बत, भारत और थाईलैंड में, पूर्व-
चोरी, झूठ, यौन दुराचार, या
नशीले पदार्थों के दुरुपयोग को सभी सदस्य समझते हैं और उसका पालन करते हैं।
धार्मिक समुदाय के सदस्य...
आधुनिक अमेरिका में अक्सर इन नियमों की अवहेलना कर दी जाती है।
और न ही टीवी उपदेशक और न ही पूर्वी आध्यात्मिक शिक्षक
धन, शक्ति और यौन संबंध के संबंध में व्यवहार के स्पष्ट नियम होने चाहिए।
(कॉर्नफील्ड, 1993)।

लेकिन जैसा कि हमने देखा है, एशिया में हालात अलग हैं, इस रोमांटिक धारणा के विपरीत: जापान में, स्थानीय लड़कियाँ मठ की दीवारों पर पत्थर फेंकती हैं और उन्हें उन "बुलावा" का तुरंत जवाब मिलता है। (हालाँकि, ऐसे प्रलोभन की शायद ही ज़रूरत है, क्योंकि वहाँ के भिक्षुओं की बिना बुलाए भी दीवारों के ऊपर से चुपके से निकल जाने की प्रवृत्ति के दस्तावेज़ मौजूद हैं।) तिब्बत में, जहाँ हस्तमैथुन और मुख मैथुन वर्जित हैं, वहीं वेश्याएँ तब तक ठीक हैं जब तक आप उनकी सेवाओं के लिए खुद भुगतान करते हैं। थाईलैंड में, जहाँ 95% आबादी बौद्ध है, भिक्षुओं के नाम अश्लील सामग्री के साथ पकड़े जाने पर अख़बारों में आते हैं।

यौन सामग्री, और एक ही समय में एक से अधिक महिलाओं के साथ संबंध। और यह प्रचार उनके रजनीश जैसे विंटेज कारों के संग्रह से भी स्वतंत्र है, जिनमें से कुछ मंदिर के धन के दुरुपयोग से प्राप्त की गई थीं। (विडंबना यह है कि कॉर्नफील्ड ने स्वयं गुरु अजान चाह के मार्गदर्शन में "थाईलैंड के सुदूर जंगलों में" ध्यान का अभ्यास किया था।)

70 के दशक की शुरुआत में [श्वार्ट्ज, 1996]। शायद वहाँ के जंगल "वास्तविक गतिविधियों का केंद्र" नहीं हैं, लेकिन किसी भी मामले में, यह विचार कि वहाँ या पूर्व में कहीं और "धार्मिक समुदाय के सभी सदस्यों द्वारा" सिद्धांतों का सामान्य रूप से

पालन किया जाता है, तथ्यों से बिल्कुल मेल नहीं खाता, जैसा कि हमने बार-बार देखा है। इसी तरह की और भी विशुद्ध रूप से काल्पनिक बातें।

पूर्वी गुरुओं के बारे में विचार जानने के लिए, एंड्रयू हार्वे (2000) की केन विल्बर के साथ हुई बातचीत देखें।

और क्या समकालीन भारत में, रामकृष्ण और उनके जैसे अन्य लोगों द्वारा "पालन" किए गए प्रतिबंधों के आधार पर, चीजें अलग हो सकती हैं? दुर्भाग्य से, नहीं:

वो सात साल की छोटी बच्ची सचमुच एक लोलिता है। वो सबसे अच्छी सेक्स पार्टनर है।

आश्रम में (मेहता, 1979 में)।

या फिर, जैसा कि रजनीश के पुणे केंद्र में एक पांच साल के लड़के ने शिकायत की: "फक, फक, फक, हम बस यही करते रहते हैं, सेक्स!"

हालांकि, उसी समुदाय में कम से कम एक "बड़ी और समझदार" छह साल की लड़की ने चीजों को अधिक वयस्क दृष्टिकोण से देखा; क्योंकि वह

वे पुरुषों के गुप्तांगों को उनके वस्त्रों के ऊपर से पकड़ने में आनंदित होती थीं।

एक अन्य महिला ने अपने आस-पास दिखने वाले हर पुरुष का लिंग चूसने की पेशकश की।

सार्वजनिक स्नानघर (फ्रैंकलिन, 1992)।

बेशक, रजनीश के अमेरिका जाने के मसीहा जैसे कदम से भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ, जहां तीन साल की बच्चियां अपनी मां के सामने फूट-फूट कर रोती हुई आसानी से मिल जाती थीं:

कोई भी लड़का मेरे साथ संबंध नहीं बनाएगा!... ये ठीक नहीं है! सिर्फ इसलिए कि मैं अगर मैं डायपर पहनूँगी तो वे मेरे साथ संबंध नहीं बनाएंगे। उन्होंने कहा कि मैं बच्ची हूँ! (में)

फ्रैंकलिन, 1992)।

इस पर मां की धैर्यपूर्ण प्रतिक्रिया केवल अपने बच्चे को रात में पेशाब करने की आदत छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना थी, जिसके बाद उसे डायपर पहनने की आवश्यकता नहीं होगी।

उस कठिन परीक्षा के बाद 377

रजनीश के अमेरिका में किशोरवय लड़कियों की अपने से दोगुने उम्र के पुरुषों के साथ सोने की प्रवृत्ति के अतिरिक्त, फ्रैंकलिन ने आगे टिप्पणी की:
कई रेंच स्वामी बाल स्वामी माने जाते थे।
यौन उत्पीड़न करने वाले लोग दुनिया भर में मौजूद हैं।
तिब्बती लामाओं द्वारा सार्वजनिक रूप से ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेने के बावजूद निजी महिला संगिनी रखने की प्रासंगिक समस्या पर भी विचार करें— जिसका वर्णन जून कैम्पबेल ने सर्वत्र पूजनीय लामा की संगिनी के रूप में अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर किया है। परंपरा, पदक्रम या वंश के कारण इस नियम-उल्लंघन को कभी कम नहीं किया गया।
जबकि एक लामा को हर लिहाज से देखा जाएगा
सार्वजनिक रूप से ब्रह्मचारी भिक्षु के रूप में रहने वाला वह व्यक्ति वास्तव में अक्सर यौन-संबंधी होता था।
वह शारीरिक रूप से सक्रिय थे, लेकिन उनकी गतिविधियाँ अत्यंत गुप्त थीं (कैंपबेल, 1996; इटैलिक्स जोड़े गए)।
इसके अलावा, यह भी ध्यान देने योग्य है कि चोग्याम ट्रुंगपा की शिक्षाओं और व्यवहारों को न केवल उनके (निराश, दिवंगत) शिष्य बटरफील्ड ने, बल्कि उनके स्वयं के न्यिंगमा स्कूल के प्रमुख ने भी प्रामाणिक माना था। वास्तव में, इस सत्यापन से यह स्पष्ट होता है कि उनका व्यवहार 1800 साल पुरानी उस परंपरा के बिल्कुल अनुरूप था, जो मिलारेपा के समय से चली आ रही है। इस मान्यता को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि पश्चिम में प्रवास करते समय अपनी परंपरा के कथित "नियंत्रण और संतुलन" से मुक्त होने के लिए ही ट्रुंगपा ने लोगों को सार्वजनिक रूप से निर्वस्त्र और अपमानित किया था। चुनिंदा पारंपरिक नियमों के उसी "आज्ञाकारी पालन" से— अर्थात्, केवल उन्हीं नियमों का पालन करना जिन्हें वे उचित समझते थे, और अन्य नियमों का उल्लंघन करने पर कोई सार्थक दंड नहीं—उनके उत्तराधिकारी ने फिर से अपने शिष्यों को एड्स से संक्रमित कर दिया, यह मानते हुए कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा।
इसी प्रकार, सोलहवें कर्मापा के 1974 में अमेरिका आने पर ट्रुंगपा पर कथित रूप से कोई प्रभाव न पड़ने की घटना पर विचार करें:
परम पूज्य और चोग्याम को छह साल बीत चुके थे

ट्रुंगपा रिनपोचे ने आखिरी बार एक-दूसरे को देखा था, और कार-
मापा ने निस्संदेह बहुत सी कहानियाँ सुनी होंगी, कुछ सच, कुछ
इस पूर्व भिक्षु के स्नान करने के बारे में अतिशयोक्ति की गई है।
पश्चिमी दुनिया में स्वयं को। लेकिन अब जब वे उनके पवित्रतम से मिले-
नेस ने खुलकर मुस्कुराया, और यह स्पष्ट था कि सब कुछ ठीक था।
सही (फील्ड्स, 1992)।
378 गुरुओं का पर्दाफाश

हालांकि, अतिरिक्त शोध से पता चलता है कि उसी कर्मापा ने बाद में वास्तव में ट्रुंगपा को "अमान्य" घोषित कर दिया था। इसके अलावा, दलाई लामा ने भी 1970 के दशक में अमेरिका की अपनी पहली ऐतिहासिक यात्रा के दौरान ट्रुंगपा के समुदाय की निर्धारित यात्रा को जानबूझकर रद्द कर दिया था (क्लार्क, 1980)। इस रद्द करने के पीछे का एक कारण निस्संदेह ट्रुंगपा के अति सतर्क और मशीनगन रखने वाले संगठन के एक अधिकारी का यह सुझाव था कि दलाई लामा कर्मापा की हत्या की साजिश रच रहे थे।

बेशक, असहमति के उन शांत लामा संकेतों में से किसी ने भी ट्रुंगपा को और अधिक "गलतियाँ" करने से नहीं रोका। लेकिन यह जानकर थोड़ी राहत मिलती है कि उन दोनों लामाओं में कम से कम कुछ समझदारी तो बची थी। क्योंकि, कोई भी उस बेहद हल्की निंदा की तुलना उन अन्य लोगों से आसानी से कर सकता है जिन्होंने ट्रुंगपा की शिक्षाओं और संघ को आध्यात्मिक क्रांति का पहला कदम बताया है।

अमेरिका में “प्रामाणिक तिब्बती बौद्ध धर्म” (भारती, 1974)।

आचार्य रेजिनाल्ड रे, चोग्याम ट्रुंगपा के समकालीन अनुयायियों में से एक हैं। इसलिए वे अपने "प्रधान गुरु" के जीवन के विवरणों से निःसंदेह परिचित हैं। अतः उन्होंने गुरुओं और उनके जैसे अन्य लोगों के व्यवहार पर पारंपरिक "नियंत्रण और संतुलन" के प्रभाव के बारे में यह कहा:

तिब्बत में, यहां तक कि तुलकुओं—ये बहुत ही प्रशिक्षित लोग—
वे चारों ओर से लोगों से घिरे हुए थे जो उन्हें लगातार देख रहे थे।
समय। यहां तक कि आम गांव के लोग भी जानते थे कि क्या होने वाला है।
उचित व्यवहार क्या था और क्या नहीं। अगर कोई लड़का भड़क जाता, तो वह...

कील ठोक दी जाए (कैपलान में, 2001)।
फिर भी, रे द्वारा बताए गए कथित सतर्कता और "गलत व्यवहार" के लिए कथित दंड के बावजूद, ट्रुंगपा तेरह वर्ष की आयु से ही महिलाओं के साथ संबंध बनाते रहे, और तिब्बत छोड़ने से पहले ही उन्होंने एक महिला को गर्भवती कर दिया था, जबकि वे अभी भी ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किए हुए थे। इसके अलावा, जाहिर तौर पर उन्हें इसके लिए "आम ग्रामीणों" या किसी अन्य व्यक्ति से कोई ऐसी सजा नहीं मिली, जिससे वे अपने इस खुले "अनुचित व्यवहार" को रोक सकें। संक्षेप में, उन्हें इसके लिए किसी भी तरह की सजा नहीं मिली।
वास्तव में, कोई यह कामना करता है कि ऐसी स्थितियों की दस्तावेजी वास्तविकताओं और सम्मानित, आजीवन "विशेषज्ञों" द्वारा पश्चिमी जनता के समक्ष तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत की जाने वाली विकृतियों के बीच एक स्पष्ट संबंध हो।
उस कठिन परीक्षा के बाद 379

हालांकि मुझे नहीं पता कि लोग क्या कहना चाहते हैं जब वे दावा करते हैं कि
हर किसी को अपनी राय रखने का अधिकार है, मुझे पता है कि कोई भी
उसे तथ्यों में गलती करने का अधिकार है (अस्केनासी, 1978)।
इसके अलावा, केवल स्वयं ट्रुंगपा ही पश्चिम में स्थानांतरित नहीं हुए थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनकी प्राचीन तिब्बती परंपरा के बंद समुदाय, सामंती/पदानुक्रमित सत्ता संरचनाएं और "गुरु की अचूकता" की शिक्षाएं बोल्डर में उनके अपने छोटे से आध्यात्मिक "साम्राज्य" का आधार बनीं (मरीन, 1995)। और ये संरचनाएं ही हैं, न कि कोई अत्यधिक उत्सव, जो "अधीक्षक/रक्षक/कैदी" जैसा वातावरण बनाती हैं, जो लोगों के जीवन को उतना ही बर्बाद कर देती हैं जितना कि "पागलपन भरी बुद्धि" से रहित परिवेश में, जितना कि चोग्याम जैसे "अनियंत्रित" संदर्भों में।
यह सच है कि ट्रुंगपा (1981) ने, उदाहरण के लिए, "अपनी बुद्धि को अनदेखा करने के बजाय निरंतर प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति" को प्रोत्साहित करने का कम से कम दिखावा तो किया। हालाँकि, बटरफील्ड द्वारा अपने छात्र के रूप में प्रवेश के दौरान हुई साक्षात्कार प्रक्रिया के वर्णन से पता चलता है कि ट्रुंगपा के समुदाय का सदस्य बनने के लिए उनके सभी हास्यास्पद अंधविश्वासों को मानना आवश्यक था। मर्विन के भाग्य

पर भी विचार करें, जब उन्होंने गुरु और उनके समूह-विचार समुदाय के निर्देशों का अंधाधुंध पालन करने के बजाय प्रश्न उठाने का प्रयास किया। किसी भी "सच्चे संघ" में मौजूद संभावित नुकसान का मूल्यांकन करने में अधूरे, मनगढ़ंत सिद्धांतों के बजाय ऐसे ही मुद्दे महत्वपूर्ण हैं।

इसके अलावा, फ्यूरस्टीन की स्वयं की गवाही के अनुसार, द्रुकपा कुनले के यौन कारनामे "रीति-रिवाज और मर्यादा के विरुद्ध थे।" अर्थात्, उनके "अजीबोगरीब" व्यवहार उस कृषि प्रधान समाज की सीमाओं से बंधे नहीं थे जिसमें वे रहते थे।

ज़ाहिर है, इन सब बातों के बाद, न तो सामाजिक, न ही सांस्कृतिक, और न ही मनोवैज्ञानिक विकास संबंधी भिन्नताएँ पूर्व और पश्चिम में प्रचलित गुरु-शिष्य संबंधों के बीच के "अंतर" का कारण हो सकती हैं। बल्कि, अंधभक्ति की माँग और यौन शोषण तथा सत्ता के कथित दुरुपयोग की बात करें, तो समस्याएँ और कथित दुर्व्यवहार उतने ही निश्चित रूप से मौजूद हैं और हमेशा से मौजूद रहे हैं, जितने कि उत्तरी अमेरिका में। (रामकृष्ण, ज़ेन का इतिहास और लामाओं द्वारा यौन शोषण तथा बाल उत्पीड़न जैसे तिब्बती बौद्ध धर्म का उदाहरण देखें।)

जो लोग इन सबमें पूर्व और पश्चिम के बीच मौजूद न होने वाले अंतर को समझाने की कोशिश करते हैं, वे आम तौर पर समय बीतने के स्वाभाविक प्रभाव को भी अनदेखा कर देते हैं। ट्रुंगपा जैसे व्यक्ति का आत्म-विनाशकारी होना तय था। 380 गुरुओं का सार समझना

समय बीतने के साथ-साथ, चाहे उसके बचपन के दुख हों या अन्य कारण, वह अपनी मानसिक स्थिति को लेकर उदासीन रहा। यह उसकी अपनी मानसिकता थी, न कि "पश्चिम", जिसने उसे शराब पीकर अपनी जान गंवाने की छूट दी।

इसके अलावा, वर्षों तक अपने शिष्यों द्वारा "देवता" के रूप में पूजे जाने से पूर्व और पश्चिम दोनों जगह अहंकार बढ़ जाता था। स्वाभाविक रूप से, इससे यह भावना भी बढ़ती जाती थी कि व्यक्ति कुछ भी करके बच सकता है, चाहे आसपास का समाज और संस्कृति उसी समय अधिक उदार हो गई हो या नहीं।

यदि कोई पूर्व से पश्चिम की ओर जाता है, तो समय बीतने के साथ-साथ दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से पूजे जाने के बावजूद, बाद के पश्चिमी क्षेत्र में नैतिक नियमों के प्रति बढ़ती अवहेलना को केवल आसपास के सांस्कृतिक या सामाजिक परिवेश की घटना

तक सीमित नहीं किया जा सकता। बल्कि, इसका अधिकांश भाग उपरोक्त वर्णित भव्य अहंकार के आधार पर समझाया जा सकता है, जिसे करीबी, समर्पित अनुयायियों की स्वेच्छा से की गई आज्ञाकारिता और श्रद्धा से बल मिलता है।
सीधे शब्दों में कहें तो: सत्ता भले ही भ्रष्ट करती है, लेकिन इसमें समय भी लगता है। अगर समय बीतने के साथ-साथ अन्य चीजें भी बदल रही हों, तो उन्हें भ्रष्टाचार का कारण मान लेना आसान हो सकता है। लगभग हर गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा समय था जब उन्हें "बेदाग ईमानदारी" का प्रतीक माना जा सकता था; एक ऐसा समय भी आया जब उन्होंने कथित तौर पर नियमों को तोड़ना शुरू कर दिया जिससे दूसरों को नुकसान पहुंचा; और एक ऐसा समय भी आया जब उन्होंने इतने लोगों को दुख पहुंचाया कि उनके कथित पाप सामने आने लगे। इनमें से कुछ व्यक्तियों ने अपना पूरा जीवन पश्चिम में बिताया, कुछ पूर्व से पश्चिम आए, और कुछ ने अपना पूरा जीवन कृषि प्रधान पूर्व में व्यतीत किया। बाद वालों के लिए, "अबाधित" पश्चिम की कोई भी बात उनके कथित कुकर्मों का कारण नहीं मानी जा सकती; फिर भी सत्ता और यौनिकता के कथित दुरुपयोग में निहित भ्रष्टाचार तो हुआ ही।
इसी प्रकार, "परंपरा" के संदर्भ में: रजनीश, साईं बाबा, कैडीज़, अरबिंदो, रमण महर्षि, आनंदमयी माँ और अम्माची (जिनसे हम शीघ्र ही मिलेंगे)—साथ ही एल. रॉन हबर्ड और वर्नर एरहार्ड—इन सभी आध्यात्मिक नेताओं को छोड़कर, जिनका हमने यहाँ उल्लेख किया है, वे सभी मान्यता प्राप्त शिक्षण परंपरा से आए थे। (अरबिंदो तो विवेकानंद को भी अपना गुरु मानते थे।) फिर भी, इससे न तो उनकी कार्यप्रणाली पर कोई नियंत्रण रहा है और न ही यह सुनिश्चित/परीक्षित हो पाया है कि वे अपने दावों के अनुरूप वास्तव में उतने ही प्रबुद्ध थे।
उस कठिन परीक्षा के बाद 381

पादरी और लड़कों के बीच यौन संबंध किसी भी तरह से एक अनोखी घटना नहीं है।
कैथोलिक घटनाक्रम... यह बौद्ध मठों में भी चल रहा है।
एशिया में सदियों से नक्षत्रों का निर्माण होता आ रहा है।
“बिल्कुल, यह बौद्ध धर्म के नियमों के विरुद्ध है,” [डॉ.]
लियोनार्ड ज़्विलिंग ने कहा, "लेकिन तिब्बत में यह आम बात रही है।"
चीन, जापान और अन्य स्थान।

दरअसल, जब जेसुइट्स चीन और जापान पहुंचे तो
16वीं शताब्दी में, वे औपचारिक संबंधों से भयभीत थे।
बौद्ध भिक्षुओं और नौसिखियों के बीच के संबंध जो
अभी भी बच्चे" (सीमोन-नेटो, 2002)।
* * *
इन सब के बाद, यह जानकर लगभग राहत मिलती है कि पूर्वी नियमों का "धार्मिक समुदाय के सभी सदस्यों द्वारा पालन" किए जाने का एक वास्तविक उदाहरण मौजूद है, जैसा कि कॉर्नफील्ड और अन्य दावा करते हैं:
यहां आने पर कई पुरुषों को जिस वास्तविक प्रलोभन का सामना करना पड़ता है, वह यह है कि
एक थाई बौद्ध वन मठ] हस्तमैथुन है। आप हैं
आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। एक बार जब आपका अभिषेक हो जाए, तो यदि आप
यदि आप इस नियम का उल्लंघन करते हैं, तो आपको आकर वरिष्ठ के सामने स्वीकार करना होगा।
भिक्षु। अगर आप भिक्षु हैं तो और भी बुरा है। फिर एक मुलाकात-
संघ का पालन करना आवश्यक है और प्रायश्चित करना होगा।
नीचे। दोषी भिक्षु को भोजन की कतार के अंत में बैठना होगा।
सात दिनों तक कोई उसके लिए कुछ नहीं कर सकता। यह सचमुच बहुत मुश्किल है।
शर्मनाक। मुझे याद है कि एक काफी वरिष्ठ भिक्षु के साथ ऐसा ही कुछ हुआ था।
इससे एक बड़ी समस्या खड़ी हो गई। जब भी ग्रामीण अंदर आते थे...
वे उसे सुबह खाना लाते हुए देखते थे।
सबसे निचले स्तर पर हंसना (वार्ड, 1998)।
एक बात तो यह है कि मठ अपने निवासियों को ऐसी तुच्छ गतिविधि के लिए अपमानित करने पर ध्यान केंद्रित करें—जो निश्चित रूप से, अच्छे या बुरे रूप में, केवल अपने-अपने कमरों की गोपनीयता में अभ्यास करने वाले व्यक्तियों को ही प्रभावित करती है, और इस पर चर्चा के लिए पूरे समुदाय की बैठक की शायद ही आवश्यकता हो। लेकिन दूसरी बात यह है कि वे (या उनके "बड़े शहर" के समकक्ष) अपने अन्य निवासियों द्वारा किए गए गबन, वेश्याओं के उपयोग, शव-यौन शोषण और

कराओके आदि को अनदेखा करें या छिपाने का प्रयास करें। वास्तव में, इस संबंध में स्थिति वैसी ही है जैसी दुनिया भर में कैथोलिक चर्च के भीतर रिपोर्ट किए गए विश्वासघात के भयानक मामलों में पाई जाती है। ऐसे बड़े कथित दुर्व्यवहारों को फिर उन खोजी पत्रकारों द्वारा उजागर करने के लिए छोड़ दिया जाता है जिनकी अंतरात्मा...382 गुरुओं का पर्दाफाश

पुरातन सिद्धांतों के एक समूह का अंधाधुंध पालन करने से अभी तक पूरी तरह से कुंद नहीं हुआ है।
इसके अलावा, यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि बौद्ध धर्म ने यहाँ तक कि कैथोलिक चर्च को भी पीछे छोड़ दिया है, जहाँ पाप स्वीकार करने (अपने वरिष्ठों के सामने) और यहाँ तक कि छोटे-मोटे पापों के लिए भी अपमानजनक सार्वजनिक प्रायश्चित की आवश्यकता होती है। और अपराधबोध और अज्ञानता के मामले में उस चर्च को पीछे छोड़ना किसी भी तरह से आसान नहीं है।
आज भी, रोमन कैथोलिक धर्म की आधिकारिक शिक्षा यही है।
चर्च हस्तमैथुन को एक घोर पाप मानता है [अर्थात, एक ऐसा पाप जो...
जब तक कोई पश्चाताप न करे, तब तक शाश्वत नरक की सजा से ग्रस्त रहेगा।
हालाँकि कुछ गंभीर धर्मशास्त्री इसे कारण नहीं मानते हैं।
स्वर्ग का नुकसान (बेरी और रेनर, 2004)।
* * *
दिलचस्प बात यह है कि अगर रजनीश और उनके करीबी अनुयायियों ने सार्वजनिक रूप से जैव-आतंकवाद जैसी गतिविधियों से हदें पार न की होतीं, तो आज भी उनके आश्रमों को आध्यात्मिक समुदायों के संचालन के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में देखा जाता—जैसे कि जे. डोनाल्ड वाल्टर्स का आनंद आश्रम, उनके खुद के बदनाम होने से पहले। यह इस तथ्य के बावजूद है कि 1979 में ही राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान को चेतावनी दी गई थी कि रजनीश का पुणे आश्रम "एक और जॉनस्टाउन" बन सकता है (गॉर्डन, 1987)। (इसी तरह, सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर को रिचर्ड बेकर की अब तक निजी रूप से रिपोर्ट की गई गतिविधियों के सार्वजनिक होने से पहले "आधुनिक ज़ेन केंद्र का आदर्श मॉडल" माना जाता था [फील्ड्स, 1992]।)
जब तक रजनीश ने सार्वजनिक रूप से बयान नहीं दिया, तब तक केवल एक ही

आरोप लंबित था।
उसके या खेत में किसी और के खिलाफ कोई भी बात अनैतिक थी।
प्रवासन धोखाधड़ी। अगर उसने शीला के कुकर्मों का पर्दाफाश नहीं किया होता,
अधिकारियों को शायद कभी मुखबिर नहीं मिलते।
गवाही देना तो दूर, वायरटैपिंग, पोई- जैसे मामलों में दोषसिद्धि प्राप्त करना भी मुश्किल है।
गोलीबारी और आगजनी। और अगर रजनीश ने भागने की कोशिश न की होती तो...
देश में, वह और उसका समुदाय दोनों ही संभवतः
अभी भी ओरेगन में मौजूद हैं (गॉर्डन, 1987)।
उसी पूर्व आश्रम की संरचना भी विशेष रुचि की है:
ओरेगॉन विश्वविद्यालय के सर्वेक्षण के अनुसार, [राज-
नीशपुरम कम्यून के सदस्यों के पास स्नातकोत्तर डिग्री थी, इस कठिन अनुभव के बाद
383

मनोविज्ञान या मनोचिकित्सा में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाले 11% लोगों के पास बीए की डिग्री थी और अन्य 11% लोगों के पास बीए की डिग्री थी।
क्षेत्र (फिट्ज़गेराल्ड, 1986)।
इस प्रकार, रजनीशपुरम के लगभग एक-चौथाई निवासी प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक थे। यह दस्तावेजी तथ्य उन संदर्भों में खुले तौर पर विकृत व्यवहार को पहचानने की पेशे की क्षमता में विश्वास बढ़ाने में कोई मदद नहीं करता, जहाँ इसके सदस्यों का निहित स्वार्थ होता है। क्योंकि, रजनीश समुदाय के अधिकांश सदस्यों को वहाँ चल रही घोर अवैध गतिविधियों के बारे में घटना घटने के बाद ही पता चला, जबकि शीला के अपने "राजघराने" में किसी भी "नकारात्मकता" का दमन शामिल था। इसके अलावा, उसकी दुनिया में रचनात्मक आलोचना भी नकारात्मकता मानी जाती थी और उसके अनुसार दंडित किया जाता था। बेशक, इससे जबरन आज्ञापालन के अलावा जो कुछ मिलता है, वह महर्षि के आदर्श समाज की तरह सतही तौर पर "खुश" लोगों का समुदाय है, जो पाइथन के उस स्केच की याद दिलाता है जिसमें एक दुखी व्यक्ति को "खुश होने तक" गर्दन से लटकाए जाने (या ध्यान करने) की सजा सुनाई जाती है।
दूर रहकर अध्ययन करने वाले अकादमिक "रजनीश के पर्यवेक्षकों" आदि के

समाजशास्त्रीय अध्ययन भी इसी प्रकार की गहरी चिंता के दायरे में आते हैं। वास्तव में, ऐसे विद्वानों के लिए, उदाहरण के तौर पर मिल्ने द्वारा प्रकाशित खुलासों के प्रकाशकों को "घटिया रचनाकार" कहकर निंदा करने योग्य समझा गया है (देखें पामर और शर्मा, 1993)।

और न ही भगवान के संन्यासी मनोवैज्ञानिक अपनी पेशेवर क्षमताओं या प्रतिष्ठा के मामले में निम्नतम स्तर पर थे:

“हॉलीवुड क्रू” में सबसे प्रसिद्ध चिकित्सक शामिल थे।

शहर में—उन सभी ने संन्यास ले लिया था (स्ट्रेली, 1987)।

दिलचस्प बात यह है कि रजनीश को वास्तव में "बुद्धिजीवियों का गुरु" माना जाता था: "[रजनीश के अनुयायियों का शैक्षिक स्तर बाकी आबादी के अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक था]" (ओक्स, 1997)।

मानव स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में बड़ी संख्या में चिकित्सक और नेता शामिल हैं।

मानव क्षमता आंदोलन के वर्तमान या पूर्व शिष्य हैं

भगवान के अनुयायी, हालांकि उनमें से कुछ ही, यदि कोई हो तो, सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हैं-

इसे किनारे पर रखें (फ्रैंकलिन, 1992)।

इनमें से कई थेरेपिस्टों को यहाँ आने से पहले ही यह आभास हो गया था।

पूना, रजनीश कम से कम एक कुशल चिकित्सक तो थे ही,

उनका काम विकास के अगले चरण का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

मनोचिकित्सा (गॉर्डन, 1987)।

ये वही लोग हैं जो सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया के माध्यम से और "सक्षम, अंतरविषयक व्याख्याकारों के समुदाय" के रूप में यह तय करते हैं कि मानवतावादी मनोविज्ञान में सत्य क्या है। सत्य का यही सहकर्मी-निर्णय सामान्य रूप से चेतना अध्ययन में भी होता है, जो उदाहरण के लिए विल्बर और उनके सहयोगियों से प्रभावित है।

दिलचस्प बात यह है कि 70 के दशक की शुरुआत से लेकर 1991 में उनके साम्राज्य के पतन और आईआरएस द्वारा प्रेरित होकर मैक्सिको भागने तक, वर्नर एरहार्ड "मानव क्षमता आंदोलन के गुरु" के रूप में जाने जाते थे। वास्तव में, एंथनी,

एकर और विल्बर की लगभग नगण्य (1987) पुस्तक 'स्पिरिचुअल चॉइसेस' में भी, एरहार्ड से पूछे गए साक्षात्कार के प्रश्न (जॉन वेलवुड के नेतृत्व में) केवल इस बात पर केंद्रित थे कि क्या आध्यात्मिक प्रशिक्षण पारंपरिक आध्यात्मिक अनुशासनों के माध्यम से कथित रूप से प्राप्त होने वाले "ज्ञानोदय" के समान कोई "ज्ञानोदय" प्रदान करता है। यानी, इसकी सुरक्षा को लेकर जरा सी भी चिंता व्यक्त नहीं की गई, जबकि लेखकों ने बाद में साक्षात्कार को "उत्साहपूर्ण" बताया था। (यह साक्षात्कार स्वयं 1981 में आयोजित किया गया था - आधा
ब्रेवर द्वारा [1975] में विभिन्न परीक्षण प्रतिभागियों द्वारा कथित रूप से अनुभव किए गए नकारात्मक प्रभावों के खुलासे के बारह साल बाद।
विल्बर अतीत में द जर्नल ऑफ ट्रांसपर्सनल साइकोलॉजी के संपादकीय मंडल में रह चुके हैं, साथ ही राम दास, डॉ. हर्बर्ट वी. गुएन्थर, पीएचडी, और "शहर के सर्वश्रेष्ठ स्ट्रिपर" चोग्याम ट्रुंगपा भी इस मंडल के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में इस मंडल के सदस्यों में माइकल मर्फी शामिल हैं।
जो फिर से वास्तव में मानते हैं (1992) कि रामकृष्ण की रीढ़ की हड्डी हनुमान साधना के दौरान लंबी हो गई थी।
मर्फी को "अपनी पीढ़ी का अग्रणी अभिन्न सिद्धांतकार" माना जाता है।
विल्बर की इंटीग्रल नेकेड (2005) वेबसाइट के अनुसार।
जेटीपी बोर्ड में श्री पॉल क्लेमेंस भी शामिल हैं, जिनकी ब्लू डॉल्फिन प्रकाशन कंपनी की कैटलॉग में लेखकों की पुस्तकें शामिल हैं।
जो (उनका मानना है) सचमुच ईश्वर और यीशु को बोलते हुए सुन सकते हैं
उनमें, और सचमुच बौनों से बातचीत करने का मौका मिलता है—ये बौने, फ्रैक्टल की तरह, "तीसरे और आधे आयाम" में विद्यमान होते हैं। इनमें से कोई भी आर्थिक रूप से लाभदायक बेस्ट-सेलर नहीं है, जिन्हें शायद केवल उनके डॉलर मूल्य के लिए प्रकाशित किया गया कहकर माफ किया जा सकता था।
आगे ध्यान दें: कल्पनाशील लेखक टैनिस हेलिवेल द्वारा लिखित बौनों पर उपरोक्त पुस्तक को वास्तव में मानवतावादी मनोविज्ञान संघ की पूर्व अध्यक्ष जीन ह्यूस्टन ने समर्थन दिया था। दरअसल, उन्होंने वहां हेलिवेल को "गहरा द्रष्टा" बताया था।
ह्यूस्टन (1997) ने अन्य समयों पर व्हाइट हाउस के लिए एक गैर-गुरु के रूप में कार्य किया है:

लगभग डेढ़ साल तक मैंने एक तरह के खुफिया अधिकारी के रूप में काम किया था।
प्रथम महिला हिलेरी रोडम क्लिन के लिए बौद्धिक बहस की साथी-
टन, जो उसे अपनी लिखी जा रही किताब के लिए विचारों को केंद्रित करने में मदद कर रही थी।
एक रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रथम महिला और मैंने एक अंतरंग संबंध में भाग लिया था।
एक कल्पनात्मक अभ्यास जिसमें हमने इस बात पर विचार किया कि एलेनोर
बेहतर समाज के निर्माण के बारे में रूजवेल्ट ने शायद यही कहा होगा।
हमारे बच्चों ने मीडिया को रंगीन खबरों के लिए दौड़ा दिया। "से-
"जादू-टोना!" अखबारों के पहले पन्ने चिल्ला रहे थे। "चुड़ैल-
शिल्प!" और यहाँ तक कि सबसे भयावह उपनाम, "गुरु!"
कहने की जरूरत नहीं है, इन विकृतियों से श्रीमती को शर्मिंदगी उठानी पड़ी।
क्लिंटन ने मेरे जीवन और करियर को तहस-नहस कर दिया।
दुनिया के हर अखबार और समाचार पत्रिका में यह खबर छपती थी।
कहानियां, तथ्य बेहद विकृत और बेहिसाब मात्रा में मौजूद हैं।
उन पत्रकारों की दबी हुई टिप्पणियों के साथ जिन्होंने कभी परवाह ही नहीं की
मेरे बारे में या मेरे काम के बारे में कुछ भी पता लगाना।
इस सार्वजनिक उपहास के परिणामस्वरूप, मुझे अपनी प्रतिष्ठा का नुकसान हुआ।
मानव कल्याण की सेवा में तीस वर्षों के अच्छे कार्यों के लिए-
मानसिक तनाव इतना बढ़ गया कि घबराहट के कारण व्याख्यान रद्द करने पड़े।
हमारे प्रायोजक और अनुसंधान अनुदान वापस ले लिए गए। मुझे लगा कि
रातोंरात मेरी छवि एक सम्मानित धर्मगुरु के रूप में बदल गई थी।
मानव क्षमताओं के अनुसंधान की सीमा पर लगभग हंसी के साथ-
अस्थिर और अनिश्चित व्यक्तित्व का सक्षम प्रतिनिधि...
ऐसा क्या हुआ जिसने शाम की खबरों को एक अलग ही रूप दे दिया?
अधिग्रहण?
मुझे संदेह है कि इसका उत्तर दो महान भयों में निहित है—डर

महिलाओं की बढ़ती शक्ति और कल्पना की शक्ति के भय के कारण-
राष्ट्र और आंतरिक वास्तविकताएँ।
“अजीबोगरीब हाशिए के हास्यास्पद प्रतिनिधि”... इसके विपरीत, मानवतावादी मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक “सम्मानित अग्रणी” होना। बेशक, इन दोनों श्रेणियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
ह्यूस्टन के आत्मकथात्मक दावों में अल्बर्ट आइंस्टीन और टेलहार्ड डी चार्डिन दोनों के साथ बचपन की कथित मित्रता और मार्गरेट मीड की दत्तक पुत्री होने का दावा शामिल है। (मीड ने निदेशक मंडल के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया था)
फाउंडेशन फॉर माइंड रिसर्च [ह्यूस्टन, 1982]।
मानव एवं सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में यूनिसेफ के सलाहकार के रूप में,
[जीन] ने उनके व्यापक शैक्षिक कार्यक्रमों में से कुछ को लागू करने के लिए काम किया है।
म्यांमार में मुख्य रूप से स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यक्रम [बुर-
ma] और बांग्लादेश (ह्यूस्टन, 2006)। 386 गुरुओं को उजागर करना

ह्यूस्टन की स्वयं की (1982) शिक्षाओं में निम्नलिखित ज्ञान शामिल है:
मुझे सेमिनारों की शुरुआत लोगों से यह पूछकर करने की आदत रही है कि वे बताएं
एक दूसरे के तीन घिनौने झूठ! कुछ लोगों का प्रतिरोध
इस तरह के सुझाव पर लोगों की प्रतिक्रिया इस बात का संकेत हो सकती है कि...
संस्कृति के आत्मसात होने से उत्पन्न होने वाली अत्यंत शाब्दिक मानसिकता...
वह व्यवस्था जो "तथ्य" और तार्किक प्रमाण की पूजा करती है।
ह्यूस्टन के पति, रॉबर्ट मास्टर्स, अपने "लेखक के बारे में" विवरण के अनुसार, "आधुनिक चेतना अनुसंधान के अग्रणी प्रणेता", "मानव क्षमता आंदोलन के संस्थापकों में से एक" ... और यौन अनुसंधान पुस्तकालय के पूर्व निदेशक हैं। पुस्तकालय से इतर उनके अधिकांश "कार्य" (हमेशा बड़े अक्षरों में) सेखमेट के इर्द-गिर्द केंद्रित रहे हैं, जो एक मिस्र की देवी हैं जिनका सिर शेरनी का और शरीर स्त्री का है—स्पष्ट रूप से कुंडलिनी ऊर्जा के जागरण के माध्यम से चेतना के "अजनबी लोकों का प्रवेश द्वार"। मास्टर्स (1991) के मिस्र के तत्वमीमांसा के अंतर्गत आने वाले विश्वदृष्टिकोण में निम्नलिखित विचार शामिल हैं:

अराजकता के "देवता" सामान्यतः केवल के क्षेत्र में ही "ऊपर उठते" हैं।
खू ["पांच शरीरों में चौथा सबसे सूक्ष्म शरीर," देखें.
जब "काला जादू" किया जाता है, तो आभाएं दिखाई देती हैं। हालाँकि, कुछ
सबसे शक्तिशाली कभी-कभी SÂHU ["सर्वोच्च"] पर आक्रमण करते हैं।
पांच शरीरों में से] ताकि सबसे पवित्र पुरुष या महिला भी
उनसे सुरक्षित नहीं है। साथ ही, काले रंग का सबसे शक्तिशाली हिस्सा भी सुरक्षित नहीं है।
जादूगर मेटाएडोलन के साथ काम कर सकते हैं जो उर का प्रतिनिधित्व करते हैं।
इस स्तर पर अराजकता के देवता, इस प्रकार सबसे शक्तिशाली को प्रभावित करते हैं।
बुराई।
इसी पुस्तक में आगे चलकर, मास्टर्स वास्तविकता के बारे में अपने दृष्टिकोण को और अधिक विस्तार से बताते हैं:
आप किसी दूसरे शरीर से [cf. एस्ट्रल] निकालना सीख सकते हैं।
उस शरीर का दुगुना रूप लें और उससे बातचीत करें। दरअसल, यही बात है,
मानसिक विकास के सबसे निचले स्तर पर, एक मानसिक रोगी ऐसा करता है,
चाहे उपचार के लिए हो, मानसिक हमलों से बचाव के लिए हो, या किसी अन्य उद्देश्य के लिए।
मानसिक साधनों द्वारा हमला करने का एक बेईमानी भरा तरीका।
1972 में, जॉन लेनन ने मास्टर्स और ह्यूस्टन के माइंड गेम्स के लिए टिप्पणी करते हुए कहा:
मैंने तीन महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी पुस्तकें पढ़ी हैं।
पिछले तीन साल: योको ओनो की ग्रेपफ्रूट, आर्थर जानोव की प्रि-आफ्टर द ऑर्डियल

माल स्क्रीम, और अब माइंड गेम्स। मेरा सुझाव है कि आप इन्हें पढ़ें।
उनका अनुभव करें।
यह पुस्तक स्वयं में चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं में प्रवेश करने के लिए समूह में किए जाने वाले अभ्यासों की एक श्रृंखला मात्र है। हालांकि, इसका उद्देश्य तिब्बत में

हजारों वर्षों से प्रचलित एक विधि के एक संस्करण के माध्यम से "सामूहिक आत्मा" का निर्माण करना है, जहां ऐसी संस्थाओं को विचार-रूप या तुलपा के रूप में जाना जाता है।

तो फिर, आप उन लोगों के समूह से किस स्तर की सोच की अपेक्षा करेंगे जिनमें ह्यूस्टन एक शांत, संयमित और विचारशील व्यक्ति है? आप इस "पेशे" के कम प्रसिद्ध लोगों से क्या अपेक्षा करेंगे? क्या आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वे

क्या वे सचमुच मानते हैं कि जो आवाजें वे सुनते हैं और जो बौने जैसे प्राणी वे देखते हैं, वे वास्तविक हैं?

आप शुरुआत में पारलौकिक/एकीकृत/परममनोवैज्ञानिक दावों को गंभीरता से ले सकते हैं, जैसा कि डेविड लेन, जॉन होर्गन, सुसान ब्लैकमोर और मैंने कभी किया था। और एक हद तक इसमें कुछ भी गलत नहीं है। क्योंकि, हममें से प्रत्येक व्यक्ति, अपने जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर, गलत आदर्शों और दृष्टिकोणों को अपना लेता है, केवल इसलिए कि हमें बेहतर जानकारी नहीं थी, और हमने उन लोगों की बातों पर बहुत अधिक विश्वास कर लिया था जिन पर हमें भरोसा था कि उन्होंने कम से कम संतोषजनक शोध किया होगा और अपनी मान्यताओं और कथित क्षमताओं की जाँच की होगी। हालाँकि, पारलौकिक, एकीकृत और परममनोवैज्ञानिक दावों के संबंध में, यदि आप बस पढ़ते रहें और इस क्षेत्र से परे व्यापक रूप से सोचते रहें, तो आस्तिक से संशयवादी बनने का परिवर्तन अपरिहार्य है।

इसके विपरीत, दशकों तक उन क्षेत्रों में एक सम्मानित सदस्य के रूप में बने रहना इस बात का पक्का संकेत है कि व्यक्ति अपने मस्तिष्क के उस हिस्से पर अधिक निर्भर है जो केवल इच्छाधारी सोच के लिए जिम्मेदार है, बजाय उस हिस्से के जो सुसंगत, तर्कसंगत विश्लेषण के लिए जिम्मेदार है।

इस संदर्भ में: डॉ. रोजर वाल्श जेटीपी बोर्ड के एक अन्य सम्मानित सदस्य हैं। वे जर्नल ऑफ कॉन्शियसनेस स्टडीज के संपादकीय मंडल में भी हैं। इसके अलावा, वे इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं, जिन्होंने विल्बर (1995) की पुस्तक सेक्स, इकोलॉजी, स्पिरिचुअलिटी की तुलना हेगेल के कार्यों से की है। वाल्श ने हाल ही में अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहा है:

केन विल्बर इस सदी के महानतम दार्शनिकों में से एक हैं।

और यकीनन अब तक के सबसे महान सैद्धांतिक मनोवैज्ञानिक।

(इंटीग्रलनेकेड, 2004)।
388 गुरुओं का पर्दाफाश

वॉल्श वास्तव में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, इरविन में दर्शनशास्त्र (अन्य कई विषयों के साथ) पढ़ाते हैं, और इसलिए उपरोक्त राय व्यक्त करने में वे कुछ हद तक जानकार और विशेषज्ञ होने का दावा कर सकते हैं। फिर भी, इस तरह की अतिशयोक्ति निश्चित रूप से विल्बर के उन उपदेशों की याद दिलाती है जिनमें उन्होंने शीर्ष शब्द योगी, आत्मज्ञानी या "सबसे शक्तिशाली डायनासोर" के रूप में अपने विचारों को व्यक्त किया था।
संयोगवश, फ्रांसिस वॉन रोजर वॉल्श की पत्नी हैं। दोनों केन विल्बर के घनिष्ठ मित्र हैं और इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्य हैं, यहाँ तक कि उन्होंने ही विल्बर को उनकी दूसरी पत्नी से मिलवाया था। वॉल्श और वॉन ने मिलकर (1988 में) हेलेन शुकमैन की पुस्तक 'ए कोर्स इन मिरेकल्स' (एसीआईएम) से चयनित अंशों का संपादन किया था - ये संक्षिप्त उपदेश हैं जो कथित तौर पर 1965 में प्रभु यीशु मसीह से प्राप्त हुए थे।
दिलचस्प बात यह है कि विल्बर ने (क्लिमो, 1998 में) इस पाठ्यक्रम के बारे में यह कहा था:
मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि इसमें कोई अलौकिक तत्व नहीं था।
दृष्टि शामिल थी और हेलेन को शायद लगा होगा कि यह निश्चित था-
निश्चित रूप से उसके रोजमर्रा के जीवन से परे। मुझे लगता है कि यह सच है [इटैलिक्स]
जोड़ा गया]। लेकिन इस कोर्स में हेलेन के बारे में मुझसे कहीं ज़्यादा जानकारी है।
पहला विचार... यह पूरी तरह से शुद्ध जानकारी नहीं है, इसमें बहुत कुछ है
जो शोर अंदर आता है। मैंने यह भी पाया कि अगर आप हेलेन के खुद के
कविता में, शुरू में आपको कोई अंतर ढूंढना बहुत मुश्किल लगता है-
उस और पाठ्यक्रम के बीच अंतर।
जी हाँ, बिलकुल। और, यह "अभेद" क्यों हो सकता है? इसका उत्तर उन सभी के लिए स्पष्ट है जो उस चीज़ में आध्यात्मिकता और अलौकिकता खोजने की बेताब कोशिश नहीं कर रहे हैं जिसे कहीं अधिक तर्कसंगत रूप से एक महिला की अति

सक्रिय कल्पना और वास्तविकता को उसकी कल्पनाओं से अलग करने में असमर्थता के रूप में देखा जा सकता है।
या क्या आप मानते हैं कि यीशु मसीह ने 1960 के दशक के मध्य में हेलेन शुचमैन से सीधे बात की थी, और उन्हें एक हजार से अधिक पृष्ठों के सामान्य प्रकार के न्यू एज विचारों को लिखवाया था?
बहरहाल, जो भी व्यक्ति एसीआईएम से इतना प्रभावित हुआ हो कि उसने उसमें से सर्वश्रेष्ठ रचनाओं की एक सूची तैयार कर दी हो, जिसके सामने एंड्रयू कोहेन की पुस्तकें भी ज्ञानवर्धक और अंतर्दृष्टिपूर्ण लगती हों, उसे विश्व के महान दार्शनिकों का क्रम निर्धारित करने के योग्य समझने से पहले दो बार सोचना चाहिए। मेरा मानना है कि यह बात तब भी लागू होती है, जब वह व्यक्ति समान रूप से उत्कृष्ट विद्वानों के बीच एक सहकर्मी समीक्षक हो।
इसी संकलित पुस्तक को आफ्टर द ऑर्डियल 389 के पूर्व अध्यक्ष विलिस हारमन ने "अद्भुत... प्रेरणादायक और गहन" कहकर सराहा था।

इंस्टीट्यूट ऑफ नोएटिक साइंसेज। इसी तरह, वाल्श और
वॉन (1993) के संकलन, पाथ्स बियॉन्ड ईगो, की प्रस्तावना हार्वर्ड के अब दिवंगत, हास्यास्पद रूप से प्रसिद्ध जॉन ई. मैक, एम.डी. द्वारा लिखी गई है।
भोला-भाला परी अपहरण विशेषज्ञ (कैरोल, 2004)। मानो इसे समाप्त करने के लिए
सर्कल, वॉल्श (1999) की एसेंशियल स्पिरिचुअलिटी की प्रस्तावना दलाई लामा द्वारा लिखी गई थी, और यह जूडिथ स्कच व्हिटसन को समर्पित है - जो फाउंडेशन फॉर इनर पीस की अध्यक्ष और ए कोर्स इन मिरेकल्स की प्रकाशक हैं।
उसी नीरस किताब के बारे में केन विल्बर ने टिप्पणी की: "आध्यात्मिक पुस्तकों का क्षेत्र अपने खुद के लुईस थॉमस या कार्ल सागन की तलाश में रहा है, और मेरा मानना है कि रोजर वाल्श वह हो सकते हैं।" हालांकि, सागन केवल गंभीर विज्ञान के एक प्रभावशाली प्रचारक ही नहीं थे,
लेकिन साथ ही दुनिया के सबसे प्रमुख संशयवादियों में से एक, जो ACIM को एक पल के लिए भी गंभीरता से नहीं लेते। "आध्यात्मिकता का कार्ल सागन" वह होगा जो लगातार तीखे सवाल पूछता रहेगा और विधिवत शोध की मांग करता रहेगा... जिसके

बाद पारलौकिक/एकीकृत क्षेत्र के अब तक के सबसे निश्चित दावे भी तेजी से धूल में मिल जाएंगे।
सामान्य तौर पर मनोविज्ञान पेशे के संबंध में, स्टॉर (1996) ने प्रदर्शित किया है कि फ्रायड और जंग दोनों ने अपने आसपास व्यक्तित्व पंथों का निर्माण किया - जो शुरू में कई अन्य सम्मानित मनोवैज्ञानिक पेशेवरों से आबाद थे:
फ्रायड की हठधर्मिता और असहमति के प्रति असहिष्णुता के कारण यह हुआ कि
एडलर, स्टेकेल सहित कई सहयोगियों के चले जाने से...
जंग, और अंततः रैंक और फेरेंज़ी, मनोविश्लेषन से
विश्लेषणात्मक आंदोलन। जब उनके सहयोगी वफादार बने रहे।
फ्रायड ने अपने शिष्यों को स्वीकृति दी; लेकिन जब उन्होंने असहमति जताई-
अगर वे सहमत हो जाते, तो वह उनका अपमान करता, या उन पर मानसिक रूप से बीमार होने का आरोप लगाता।
बीमार। फ्रायड ने एडलर को पैरानोइक बताया, स्टेकेल को अन-
सहनीय और एक कमीना; जंग क्रूर और पाखंडी के रूप में।
मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड के नेतृत्व की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि...
विश्लेषणात्मक आंदोलन यह है कि यद्यपि उन्होंने स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं किया
किसी भी प्रकार के अलौकिक निर्माता में विश्वास करते हुए, उन्होंने अल- को अपना लिया।
अधिकांशतः बिना किसी अपवाद के, उन लोगों की रणनीतियों का अनुसरण किया जिन्होंने ऐसा किया।
दरअसल, वह अपने सिद्धांतों को इस तरह से मानता था मानो वे उसके निजी सिद्धांत हों।
ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदत्त रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ और उन्होंने दूसरों से भी यही अपेक्षा की।
पवित्र शब्द के प्रति जो आदर है, वही आदर उन्हें भी दिया जाना चाहिए।
आमतौर पर आदेश देता है (आर. वेबस्टर, 1990)।
390 गुरुओं का पर्दाफाश

और जैसा कि हमने देखा है, मानवतावादी मनोविज्ञान के अग्रणी पेशेवरों का मानना

था कि रजनीश "कम से कम एक कुशल चिकित्सक" थे। (इसी प्रकार, गेस्टाल्ट चिकित्सा के संस्थापक फ्रिट्ज पर्ल्स ने [एल. रॉन] हबर्ड के प्रारंभिक कार्यों का बचाव किया ... और संक्षेप में डायनेटिक परामर्श प्राप्त किया-)
सेलिंग" [अटैक, 1990]। तुलनात्मक रूप से, आज ट्रांसपर्सनल और इंटीग्रल मनोवैज्ञानिक केन विल्बर को एक दुर्लभ प्रतिभा और एक दयालु बोधिसत्व मानते हैं। उनकी किसी भी अन्य बात या विश्लेषण को गंभीरता से लेने से पहले इन सभी बातों पर विचार करें।
दिलचस्प बात यह है कि रिचर्ड प्राइस ने वास्तव में 70 के दशक में रजनीश के भारत स्थित आश्रम का दौरा किया था और बाद में उसे अस्वीकार कर दिया था। (प्राइस सैन फ्रांसिस्को से तीन घंटे दक्षिण में स्थित मानवतावादी क्षमता वाले एस्लेन समुदाय के सह-संस्थापकों में से एक थे, जो "यौन प्रयोगों का गढ़" था।) हालांकि, यह दूरी उन्होंने केवल उन हिंसा के कारण बनाई थी जो उन्होंने उनके यौन समूहों में देखी थी, न कि किसी बंद समाज के भीतर मौजूद विकृत समस्याओं की संभावना की किसी स्पष्ट समझ के कारण।
प्राइस ने आश्रम के कर्मचारियों और रजनीश को भेजे गए अपने औपचारिक विरोध पत्र में इन समूहों में "सामूहिक दबाव का इस्तेमाल करके अनुरूपता थोपने" (फिट्ज़गेराल्ड, 1986) की शैली का उल्लेख किया था। हालांकि, यह हेरफेर हर आश्रम में देखने को मिलता है, चाहे वहां समूह हों या न हों। किसी भी मामले में, प्राइस की आपत्तियां आश्रम पर सामान्य रूप से निर्देशित नहीं थीं, बल्कि उस वातावरण में उन्हें पूर्ण आनंद मिला था। फिर भी, यही "आनंददायक" समुदाय वह स्थान है जहां बाद में वास्तविक विकृतियां सामने आईं।
प्राइस और मर्फी का एस्लेन, फाइंडहॉर्न की तरह, खुद एक अपेक्षाकृत सुरक्षित समुदाय है। या कम से कम "सुरक्षित", जब तक कि भविष्य के सामूहिक हत्यारों का साया न हो:
उस समय [अर्थात अगस्त 1969 में] एसालेन अभी-अभी उभर रहा था।
एक "विकास केंद्र" के रूप में प्रचलन में आया.... जाहिर है [चार्ल्स] मैन-
बेटे को लगा कि एस्लेन अपनी विचारधाराओं को फैलाने के लिए एक आदर्श स्थान है।
यह अज्ञात है कि वह पहले भी वहां जा चुका था या नहीं।

संस्थान से जुड़े लोग तो इस बात को स्वीकार करने से भी इनकार कर रहे हैं।
वहाँ उनकी यात्राएँ...
मैनसन पॉल वाटकिंस को बताता था... कि बिग में रहते हुए
सुर, वह "एसालेन गया था और वहाँ उसने कुछ लोगों के लिए गिटार बजाया था।"
उन लोगों में से जो वहां के शीर्ष अधिकारी माने जाते थे [मुर-
phy? Price?], और उन्होंने उनके संगीत को अस्वीकार कर दिया" ... केवल तीन दिन
टेट हत्याकांड से पहले (बुग्लियोसी और जेंट्री, 1974)।
उस कठिन परीक्षा के बाद 391

इससे पहले, बीच बॉयज़ ने (सितंबर 1968 में) मैनसन के गीतों में से एक, "नेवर लर्न नॉट टू लव," को अपने 20/20 एल्बम के लिए रिकॉर्ड किया था। मैनसन और उसका परिवार वास्तव में 1968-69 में (ड्रमर) डेनिस विल्सन के घर में रहे थे। डेनिस ही वह व्यक्ति था जो एक बार मैनसन को रोमन पोलान्स्की के घर ले गया था, जहाँ बाद में पोलान्स्की की पत्नी (यानी, मशहूर अभिनेत्री शेरोन टेट) और अन्य लोगों की हत्या हुई थी।
इसके अलावा, माइक लव की महर्षि में रुचि को देखते हुए, यह बात वाकई आश्चर्यजनक है कि बीच बॉयज़ किसी तरह "सकारात्मक माहौल" बनाए रखने में कामयाब रहे। (दरअसल, महर्षि ने 1968 में बीच बॉयज़ के साथ दौरा किया था, लेकिन उनके प्रशंसकों ने इसमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं दिखाई, जिसके चलते दौरा बीच में ही रद्द करना पड़ा, और तब तक वे पहले ही पांच लाख डॉलर के कर्ज में डूब चुके थे [केंट, 2001]।)
* * *
जेटसुनमा के आश्रम में आंतरिक मंडली हमेशा सतर्क रहती थी।
केंद्र के अंधकारमय पक्ष से नए लोगों की रक्षा करने के लिए—और
वे बातें जिन्हें वे सही ढंग से समझ नहीं पाएंगे
(शेरिल, 2000; इटैलिक्स जोड़े गए)।
यह पुस्तक आश्रम के अंदर कथित तौर पर होने वाली गतिविधियों का अपेक्षाकृत व्यापक खुलासा करने का एक प्रयास मात्र है। अर्थात्, यह उन कथित कार्यों का

विवरण है जिन्हें किसी भी समूह से जुड़ने के शुरुआती दौर में ही जान लेने पर कोई व्यक्ति "सही ढंग से समझ" नहीं पाएगा। इससे व्यक्ति को हमारी दुनिया के गैर-पारंपरिक और पारंपरिक आध्यात्मिक संगठनों में अपनी भागीदारी के संबंध में सोच-समझकर निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

बेशक, हर नया दृष्टिकोण जो सामने आता है, वह "एकमात्र पवित्र आध्यात्मिक मार्ग" हो सकता है, जिसका गुरु वह सब कुछ होता है जो वह होने का दावा करता है, और उसके शिष्यों का एक आंतरिक समूह होता है जो अपनी शक्ति या सम्मान की परवाह नहीं करते हैं, और बस पहले खुद को बदलकर दुनिया को एक बेहतर जगह बनाना चाहते हैं।

और अगर आप इस बात से सहमत हैं, तो मेरे पास फ्लोरिडा में एक आश्रम है जिसे मैं आपको बेचना चाहता हूँ... क्योंकि एक समय मैं एसआरएफ को बिल्कुल यही समझता था। फिर भी, उस दयालु और "ईश्वर-निर्देशित" समाज के अन्य, निम्न सदस्यों के प्रति पवित्र तारा माता का दृष्टिकोण भी अधिनायकवादी आदर्श को अपनाता था:

किसी संगठन में किसी को सोचने का भी अधिकार नहीं होता, सिवाय
निदेशक मंडल के सदस्य (वाल्टर्स, 2002 में)। 392 गुरुओं को उजागर करना

इसी प्रकार, जैसा कि थॉमस डॉयल (2002) ने कैथोलिक चर्च के संबंध में कहा था:

राजनीति विज्ञान में एक ठोस सिद्धांत है जो कहता है कि
किसी संगठन के सत्ताधारी अभिजात वर्ग को अंततः यही लगने लगेगा कि वह
संगठन।

तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यही सिद्धांत हमारे विश्व के गैर-पारंपरिक धार्मिक संगठनों पर भी लागू होता है, चाहे वे राखदान में पूजा करते हों या अन्य तरीकों से। भला क्यों न हो? यह तो मानव स्वभाव है।

दिलचस्प बात यह है कि जो भक्त एसआरएफ और योगानंद से थक जाते हैं, वे अक्सर साईं बाबा, चिन्मय, या "आलिंगन अवतार" माता अमृतानंदमयी (अम्माची) का अनुसरण करते हैं।

कई लोगों ने अम्माची को संत या ऋषि कहा है और...
उनका मानना है कि वह एक महान गुरु हैं, दिव्य शक्ति का पुनर्जन्म हैं।

माँ, कृष्ण, ईसा मसीह, बुद्ध, या रामकृष्ण.... जब
जब उनसे पूछा गया कि क्या वह अपने बारे में ऐसा मानती हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि
असल में वह कुछ भी दावा नहीं करना चाहती थी या यह नहीं चाहती थी कि वह
किसी देवता या देवी का कोई विशेष अवतार (कॉर्नेल,
2001).
और अभी तक-
"अमर आनंद की माँ" [यानी, अमृतानंदमयी]
स्वयं को ईश्वर की समस्त दिव्य अभिव्यक्ति होने का दावा करता है।
हिंदू देवमंडल की सभी देवियों को मिलाकर (मैकडोनाल्ड, 2003)।
2002 में अम्मा को अहिंसा के लिए गांधी-किंग पुरस्कार प्रदान करते समय, जेन गुडॉल ने कथित तौर पर आगे वर्णन किया था।
उन्हें "मानव शरीर में ईश्वर का प्रेम" के रूप में वर्णित किया गया है (अम्माची में, 2004)।
तो, यह स्वाभाविक है—या नहीं—
अमृतानानंद [मयी] 1983 में भूमिगत हो गईं जब पुलिस-
जूँओं ने लगभग छब्बीस महिलाओं का सामना किया जिन्होंने दावा किया कि वे
देवी-देवताओं द्वारा वश में किए गए (प्रेमानंद, 1994)।
सारा मैकडोनाल्ड (2003) के अम्मा-ची के दर्शन के स्पष्ट अनुभवों से और भी अधिक जिज्ञासा उत्पन्न होती है:
धक्का-मुक्की, घुटनों पर चोट और सिर को झटकने के बीच मैंने ध्यान केंद्रित किया-
मेरे प्रश्न पर विचार करें।
मेरा उद्देश्य क्या है, ईश्वर मुझसे क्या चाहता है?
कष्ट के बाद 393

फिर से, नाक की नथनी की चमक, कोमल पकड़
गर्दन और कान में फुसफुसाहट। जवाब, मेरा उद्देश्य
जीवन है: "रूटूंगारूटोंगारूटूंगारूटोंगारूटूंगारू-"
"टोंगा।"

झटके से मेरा कंधा लगभग अपनी जगह से हट गया था।
माँ की गोद में, मैं एक दर्शन की प्रतीक्षा करता हूँ। क्या यही मेरे जीवन का उद्देश्य है? रूट करने के लिए?
* * *
ऐसे लोग हमेशा मिल जाते हैं जो यह दावा करते हैं कि कथित तौर पर दुर्व्यवहार करने वाले गुरु/शिक्षक कुल का केवल "एक अंश" (अर्थात 1% से भी कम) हैं। इसी तरह के "दयालु विशेषज्ञों" के शिष्यों को वही शिक्षक और गुरु मिलते हैं जिनके वे हकदार होते हैं।
लगभग सभी मामलों में, ईमानदार छात्र एक भ्रष्ट व्यक्ति के साथ होता है।
शिक्षक क्योंकि उनमें दृष्टिहीनता के ऐसे क्षेत्र हैं जो...
उन्हें शिक्षक द्वारा ज्ञान दिया जा रहा है या उनके विचारों को प्रतिबिंबित किया जा रहा है...
जब मेरा सामना किसी ऐसे व्यक्ति से होता है जो उग्रता से बहस करता है
छात्र-शिक्षक संबंधों के विरुद्ध, लगभग अनिवार्य रूप से
वे अनजाने में किसी अनसुलझी समस्या को ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं।
या तो उनके वर्तमान जीवन में या किसी पूर्व परिस्थिति में
रुख....
यह सुझाव दिया गया है कि झूठे भविष्यवक्ता छलावा होते हैं
कम दृढ़ निश्चय वाले साधकों की भीड़ को हतोत्साहित करना ताकि केवल
जो लोग सच्चे मास के लिए कीमत चुकाने को पर्याप्त रूप से गंभीर हैं-
टेरी को इसकी खोज हो जाएगी (कैपलान, 2002)।
लेकिन क्या "सच्चे पैगंबर" रामकृष्ण (या साई बाबा) के युवा पुरुष शिष्यों ने, उन गुरुओं की कथित यौन रुचियों का सामना करते हुए, और यह मानते हुए कि उनके "देहधारी ईश्वर" यही चाहते हैं, "यह सब अपने ऊपर ही लाया"? क्या "प्रामाणिक संत" कृष्णमूर्ति के हाथों डेविड बोहम के साथ हुआ क्रूर दुर्व्यवहार उनकी अपनी "सच्ची महारत" के लिए चुकाई जाने वाली एक आवश्यक कीमत थी? (बोहम के मामले में, वह क्रूरता ही उनके आत्महत्या के विचार वाले मानसिक आघात का मुख्य कारण थी। अंततः इससे उन्हें इलेक्ट्रोशॉक थेरेपी दी गई, न कि "विश्व गुरु" के हाथों कोई महान ज्ञान प्राप्त हुआ।)

विल्बर की प्रशंसक कैपलान, "धोखेबाज़ों" के अपने मूल्यांकन में किसी का नाम नहीं लेतीं और सामान्य तौर पर गुरु-शिष्य संबंध के पदानुक्रम का ज़ोरदार बचाव करती हैं —हालाँकि वह 95% (उनका आंकड़ा) गुरुओं को अनुसरण करने योग्य नहीं मानतीं। हालाँकि, उनके लेखन की विषयवस्तु और उनके आपसी संबंधों से यह स्पष्ट है कि...

उनके विचारों के अनुसार, वह और उनके साक्षात्कारकर्ता विशेष रूप से कृष्णमूर्ति, अरबिंदो, मेहर बाबा, ट्रुंगपा, मुक्तानंद, मां जया सती भगवती और एंड्रयू कोहेन को "प्रामाणिक संत" मानते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि राम दास के भगवती के साथ अनुभवों (उनके "जोया" काल में, "कोई बचने का रास्ता नहीं") ने कैपलान को दोनों का साक्षात्कार एक ही (2002) पुस्तक में लेने से नहीं रोका। उन्होंने ऐसा बिना किसी संकेत के किया कि "मां" (कैपलान के अपने शब्दों में) "एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित आध्यात्मिक शिक्षिका होने के साथ-साथ मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए वैश्विक संघर्ष में अग्रणी" से कम कुछ भी हैं। दास के प्रसिद्ध दावों से स्वतंत्र रूप से, भगवती को भी उतनी ही सकारात्मक कवरेज मिली है।

कोहेन (2001) की पत्रिका 'व्हाट इज एनलाइटनमेंट?' में उनके अतीत का वर्णन है। इसके विपरीत, कैपलान के विचार में, ऐसा प्रतीत होता है कि केवल कुछ अन्य, अनिर्दिष्ट "बुरे लोग" ही अपने भोले-भाले अनुयायियों के जीवन को बर्बाद करने के दोषी हो सकते हैं, न कि इनमें से कोई "दयालु संत"।

आज के आध्यात्मिक जगत में इस तरह के दृष्टिकोणों को ही ज्ञान का नाम दिया जाता है, जो कि एक दुखद बात है। ऐसे में, इन सलाहों का पालन करना अपने ही जोखिम पर है। आखिरकार, अगर ये "विशेषज्ञ" गलत हैं, तो आपका जीवन ही बिखरने के खतरे में होगा, न कि उनका।

दिलचस्प बात यह है कि कैपलान की (2002 में प्रकाशित) काफी भ्रामक पुस्तक को ट्रुंगपा अनुयायी वेलवुड ने अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से "गुरु के संपूर्ण प्रश्न पर अब तक का सबसे व्यापक, स्पष्ट, सुविचारित, बिल्कुल सीधा और ईमानदार कार्य" बताकर सराहा है। कैपलान स्वयं ली लोज़ोविक की एक समर्पित शिष्या हैं, जिनका आदि दा के साथ "विशेष संबंध" है और वे एंड्रयू कोहेन के मित्र हैं (रॉलिंसन, 1997)। हालांकि, लोज़ोविक की स्वयं कम से कम एक पूर्व शिष्य द्वारा निम्नलिखित रूप में

आलोचना की गई है:
मुझे लगता है कि जब वह पूरी तरह से होने का दावा करता है तो वह खुद को धोखा दे रहा है।
प्रबुद्ध... सार्वजनिक सभाओं के दौरान वह लगातार
चार अक्षरों वाले अपशब्दों का प्रयोग करना, सेक्स और गुदा मैथुन के बारे में बेतुकी बातें करना-
और आम तौर पर पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण तरीके से व्यवहार और बोलते हैं।
तरीका (फ्यूअरस्टीन में, 1992)।
अपने विपुल, हालांकि अज्ञात, रॉक बैंड ("लायर्स, गॉड्स, एंड बेगर्स") के बारे में, लोज़ोविक ने भविष्यवाणी की है: "एलजीबी बीटल्स से भी बड़ा होगा" (रॉलिंसन, 1997)।
और इस प्रकार, वे "यीशु मसीह से भी अधिक लोकप्रिय" हैं।
बुद्धिमान लोज़ोविक का यह मत है कि साईं बाबा "रूप के भौतिकी के स्वामी" हैं, अर्थात् विभूति और इसी प्रकार की उनकी कथित भौतिक अभिव्यक्तियाँ वास्तविक हैं (कैपलान, आफ्टर द ऑर्डियल 395)।

2001)। यह विडंबना से भी अधिक है कि कैपलान की दोनों प्रासंगिक पुस्तकें काफी हद तक इस बात से संबंधित हैं कि "प्रामाणिक" गुरु-व्यक्तियों को "नकली" से कैसे अलग किया जाए।
* * *
इन सब के बाद, क्या "ज्ञानोदय के भ्रम" जायज़ हैं? कुछ लोग तो हास्यास्पद रूप से ऐसा कहेंगे:
बेहतर होगा कि ये लोग खुद को प्रबुद्ध समझें, जो
यह एक शानदार आकांक्षा है, दुकानों को लूटने या चोरी करने से बेहतर।
हेरोइन का सेवन करना या अपनी पत्नियों को पीटना या अपने कुत्तों को लात मारना।
मुझे लगता है
सबसे अद्भुत चीजों में से एक भ्रम है
ज्ञानोदय, भले ही वह एक भ्रम ही क्यों न हो। कम से कम यह प्रतिनिधित्व तो करता है।

एक ऐसी आकांक्षा जो हत्यारा बनने की आकांक्षा से बेहतर हो।
उनमें से (जोआन हैलिफ़ैक्स, [कैपलान, 2001] में)।
लेकिन क्या इतिहास के "सर्वश्रेष्ठ" "ऋषि" सचमुच हमारी दुनिया के बैंक लुटेरों, नशाखोरों, पत्नियों पर अत्याचार करने वालों या पशुओं के साथ दुर्व्यवहार करने वालों से बेहतर हैं? क्या वे उनसे कहीं ज़्यादा बुरे नहीं हैं? क्योंकि, ध्यान दीजिए कि उनमें से एक से ज़्यादा लोगों पर मंदिर के धन का कथित तौर पर दुरुपयोग (यानी, चोरी) करने या अपने सबसे समर्पित अनुयायियों के भूखे मरने के दौरान दावतें खाने का आरोप है, जिससे पता चलता है कि उनमें औसत बैंक लुटेरे से भी कम नैतिक भावना है। (आखिरकार, किसी चर्च या अपने दोस्तों और प्रशंसकों से चोरी करना, किसी अज्ञात निगम या बैंक से चोरी करने से नैतिक रूप से कहीं ज़्यादा बुरा है।)
इसी क्रम में, एक से अधिक लोगों पर अपने जीवनसाथी को शारीरिक रूप से पीटने या अन्य प्रकार से क्रूरतापूर्वक प्रताड़ित करने का आरोप लगाया गया है।
मिल वैली रिकॉर्ड (कोलिन, एट अल., 1985) ने रिपोर्ट किया:
एक बार चर्च के पवित्र स्थान पर एक शोरगुल भरी पार्टी के दौरान-
क्लियर लेक में एक समुद्री तट पर, प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि उन्होंने [आदि दा] को देखा।
उन्होंने अपनी पत्नी नीना को सीढ़ियों से नीचे धक्का दिया। उनका यह भी दावा है कि उस पार्टी के दौरान जोन्स ने बालों का एक बड़ा गुच्छा खींचा था।
उसके दिमाग से।
रजनीश गुरु नहीं थे, दीक्षा को उनसे प्रेम हो गया था।
साथ में। उसने कसम खाकर कहा कि उसने एक बार उसे विवेक को पीटते हुए देखा था।
(फ्रैंकलिन, 1992)।
यह भी याद कीजिए कि स्वामी राम ने कथित तौर पर महिलाओं के नितंबों पर लात मारी थी। और आगे:
396 गुरुओं का पर्दाफाश

चोग्याम ट्रुंगपा ने लिखा है कि मारपा, दसवीं सदी के ति-
बेतान गुरु ने "अपना आपा खो दिया और लोगों को पीटा।" मारपा भी

उन्हें बुद्ध का अवतार और ति के आध्यात्मिक पिता माना जाता है।
बेट के महानतम योगी मिलारेपा। शायद उनकी पिटाई इसी वजह से हुई थी-
जुनून का छिपा हुआ रूप, लेकिन यह समझना मुश्किल है कि ऐसा क्यों है।
शराबी द्वारा दुर्व्यवहार करने के मामले में यही तर्क नहीं दिया जा सकता।
उनकी पत्नी और बच्चे (बटरफील्ड, 1994; इटैलिक्स जोड़े गए)।
ऊपर बताए गए (और हैलिफ़ैक्स द्वारा पहले ही निंदा किए गए) अवैध और दुरुपयोग किए गए नुस्खे वाली दवाओं के उपयोग के संदर्भ में: विभिन्न "वास्तविक संतों" द्वारा उपयोग की जाने वाली दवाओं में एलएसडी, मेस्केलिन, साइलोसाइबिन, नाइट्रस ऑक्साइड और अफीम से बने परकोडान और डेमेरोल शामिल हैं। साथ ही एमाइल नाइट्राइट, एक रक्त वाहिका-विस्तारक जिसका उपयोग नशा पैदा करने या यौन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है; और, कहने की जरूरत नहीं है, मारिजुआना। रजनीशपुरम में कथित तौर पर चिकित्सा उपचार के रूप में दी जाने वाली क्वालूड्स का उल्लेख करना भी जरूरी है। (इन सभी में से केवल परकोडान, डेमेरोल, क्वालूड्स और नाइट्रस ऑक्साइड को ही - अफीम हेरोइन की तरह - शारीरिक रूप से व्यसनकारी माना जाता है, यह बात कुछ हद तक अप्रासंगिक लगती है।) और भगवान ही जाने कि पुलिस को ट्रुंगपा के स्कॉटिश केंद्र पर छापा मारते समय क्या मिलने की उम्मीद थी। (जिन लोगों के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं होता, वे आम तौर पर ऐसी परिस्थितियों में खुद को छिपाने की बेताब कोशिश नहीं करते, जैसा कि ट्रुंगपा ने किया था।)
यहां तक कि लाक्षणिक रूप से भी, विश्लेषण की स्थिति बेहतर नहीं है:
फ्रेड [स्टैंटन] की एंड्रयू [कोहेन] पर अंतिम टिप्पणी यह थी,
“एंड्रयू लोगों को नशे का आदी बनाता है। यह लोगों को हेरोइन देने जैसा है।”
(टार्लो, 1997)।
इसके अलावा, एक बार फिर ऐसे "वास्तविक गुरु" सामने आए हैं जिन पर आरोप है कि वे अपनी देखरेख में रहने वाली युवा लड़कियों के छात्रावासों तक जाने के लिए गुप्त रास्ते बना रहे हैं। (कैपलान अपनी पुस्तकों में मुक्तानंद के उद्धरण अक्सर और सम्मानपूर्वक देती हैं, इस प्रकार अनजाने में गुरु-शिष्य संबंध को ठीक से न निभाने का एक बहुत ही बुरा उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनकी दोनों संबंधित पुस्तकें मुक्तानंद के काफी बाद लिखी गई थीं।)

(1994 में लिज़ हैरिस द्वारा न्यू यॉर्कर में उनके बारे में प्रकाशित खुलासा।) इसके अलावा, रामकृष्ण जैसे सर्वमान्य पूजनीय व्यक्तियों के कथित बाल यौन शोषण/युवावस्था यौन शोषण के मामले हैं, जो साईं बाबा के खिलाफ आरोपों के शुरुआती संकेत थे। साथ ही, पवित्र ज़ेन गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को इतनी बुरी तरह पीटना, यहाँ तक कि मृत्यु के कगार तक पहुँचाना, और मूर्ख व्यक्तियों द्वारा उनके इस मर्दाना, "अहंकार-नाशक" दुर्व्यवहार का गुणगान किया जाना, जबकि स्वयं को कभी इस तरह की "लाभदायक" पिटाई का सामना नहीं करना पड़ा है। और यह सब उस कठिन परीक्षा के बाद 397 में वर्णित है।

यह सब कुछ महान बोधिसत्वों और अन्य लोगों द्वारा "ईश्वर के नाम पर, सभी सजीव प्राणियों के करुणापूर्ण कल्याण के लिए" ही किया जाता है। और उस "विश्वासघाती" शिष्य पर धिक्कार है जो इसके विपरीत सोचता है, और इस प्रकार इस जीवन में "ज्ञान प्राप्ति के अपने एकमात्र अवसर" को खतरे में डालता है।

मैं स्वयं किसी भी प्रकार से न तो मादक पदार्थों, न ही डिल्डो, न ही छात्रावास तक जाने वाले गुप्त रास्तों, न ही वेश्यालय, न ही सामूहिक यौन संबंध या बौनों के विरुद्ध हूँ। यह अब स्पष्ट हो चुका है कि इनमें से कोई भी चीज़, जब उन "ईश्वर-पुरुषों" के हाथों में पड़ जाती है जिन्होंने दुनिया में अपने लिए निरंकुश सत्ता के द्वीप बना लिए हैं, तो पहले से ही खतरनाक स्थिति को और भी बदतर बना देती है।

हम निश्चित रूप से सुश्री हैलिफ़ैक्स के तीन दशकों के अनुभव से सहमत हो सकते हैं कि ज्ञानोदय का भ्रम आम तौर पर "हत्यारा बनने की आकांक्षा से बेहतर आकांक्षा का प्रतिनिधित्व करता है।" सिवाय चार्ल्स मैनसन के। क्योंकि उन्होंने दुनिया के अपने तर्कहीन दृष्टिकोण को बनाने में पूर्वी दर्शन से बहुत कुछ लिया, खुद को "देवता का दर्जा" देने का संकेत दिया और उनका मानना था कि "चूंकि सब एक है, इसलिए कुछ भी गलत नहीं है।"

मैनसन ने खुद को “भगवान कृष्ण, यीशु मसीह” कहा।

1986 में पैरोल की सुनवाई के दौरान "मुहम्मद, बुद्ध" का नारा लगाया गया।

(एजेंसी, 1999)।

इन सब बातों के बाद, यह बात दर्दनाक रूप से स्पष्ट हो जानी चाहिए कि ज्ञानोदय का भ्रम सबसे खतरनाक है, न कि सबसे अद्भुत। (फिर से, जिम जोन्स और डेविड कोरेश

को भी अपने ज्ञानोदय के लिए वैसा ही मसीहा जैसा भ्रम था जैसा कि अभी भी जेल में बंद मैनसन को है। इन तीनों "सबसे बुरे" मामलों में, ज्ञानोदय/दिव्यता के भ्रम ने निस्संदेह उन हिंसक त्रासदियों को जन्म देने में मदद की जिनके लिए वे जाने जाते हैं।) यह सबसे खतरनाक भ्रम कम से कम इसलिए है क्योंकि इसका असर भोले-भाले अनुयायियों पर पड़ता है। क्योंकि, वे अपना जीवन और विवेक उन लोगों पर लुटा देते हैं जो ज्ञानोदय के उच्चतम स्तर का दावा करते हुए भी (चाहे वैध रूप से या मनोविकारवश), खुद को बड़े ही घमंड से धोखा देते हैं और फिर दूसरों को गुमराह करते हैं, और यह सब इस स्पष्ट लक्ष्य के साथ करते हैं कि उन्हें "प्रबुद्ध गुरु" के रूप में उचित सम्मान मिले।

और जहां तक जानवरों के प्रति व्यवहार की बात है, तो मंत्रमुग्ध कर देने वाला लेखिका देबोरा बोलिवर बोहेम (1996) क्योटो में एक जापानी ज़ेन मठ में अपने अनुभवों का वर्णन करती हैं, जब उन्हें दो आवारा बिल्ली के बच्चे भेंट किए गए थे:

398 गुरुओं का पर्दाफाश

“क्या आप इन्हें रखेंगे?” साकु-सान ने पूछा।

“अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो क्या होगा?” मैंने पूछा।

“तब उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया जाएगा, या किसी के द्वारा ढूंढ लिया जाएगा- अगर वे भाग्यशाली रहे तो एक और व्यक्ति मिल सकता है।"

लेकिन सोडो उन्हें क्यों नहीं अपनाता?

क्योंकि तब हम कचरा फेंकने का अड्डा बन जाएंगे

शहर की हर अवांछित बिल्ली, और वे टा- को फाड़ देती थीं।

तमी [पुआल से बनी ध्यान चटाई]। इसके अलावा, कुछ भिक्षुओं के पास अल- "एलर्जी।"

लेकिन उस प्रतिज्ञा का क्या जो आप हर दिन लेते हैं, सभी को बचाने की?

सचेतन प्राणी?

“यह एक अच्छा विचार है, लेकिन व्यावहारिक नहीं है,” साकु-सान ने कहा।

चौड़े कंधों के साथ।

मुस्कुराहटों के पीछे तिब्बती लोग स्पष्ट रूप से परिपूर्ण नहीं हैं।

यहां सब कुछ प्रेमपूर्ण नहीं है; मैं एक भिक्षु को कुत्ते को पीटते हुए देखता हूँ, दूसरा

एक व्यक्ति धूम्रपान करता है और जबकि बौद्ध ग्रंथ मांस का सेवन वर्जित करते हैं, मांसाहारी
सड़क किनारे कसाईखानों में भेड़ों के शव लटके हुए हैं, जो लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।
मक्खियों के झुंड और खरीदारों की भरमार...
मुझे पता है कि दलाई लामा ने शाकाहारी बनने की कोशिश की है, लेकिन
जब तक वह और अन्य तिब्बती बौद्ध भोजन करते रहेंगे
मांस में पाखंड की झलक बनी रहेगी (मैकडोनाल्ड, 2003;
इटैलिक्स जोड़े गए)।
* * *
इन सब बातों के बावजूद, दुख की बात यह है कि जब नेताओं और उनके अनुयायियों दोनों पर ज्ञानोदय/दिव्यता के मसीहाई भ्रमों के प्रभावों की बात आती है, तो कहीं अधिक नकारात्मक दृष्टिकोण भी अपनाया जा सकता है:
एडॉल्फ हिटलर को पासेवॉक अस्पताल में एक रहस्यमय अनुभूति हुई।
1918 में, जर्मनी की पराजय के बाद; इसने उनके इस निर्णय को जन्म दिया।
राजनीति में प्रवेश करने का संकल्प (ओक्स, 1997)।
हिटलर अब तक महानता के भ्रम से ग्रस्त हो चुका था...
खुद को जर्मनी का राजनीतिक मसीहा मानते हुए, उनके समर्थकों ने...
कुली बेशर्मी से हिटलर को पैगंबर कहते थे...
मीन कैम्फ पढ़ने वाले जोसेफ गोएबल्स, बाद में पार्टी के
प्रचार प्रमुख ने लिखा, “यह आदमी कौन है? आधा आम आदमी, आधा
हे भगवान! क्या सचमुच मसीह, या केवल संत जॉन?” बढ़ती संख्या के लिए-
इस समय हिटलर के चारों ओर एकत्रित हो रहे “शिष्यों” की संख्या—
जिसे “करिश्माई समुदाय” कहा जाता था—हिटलर था
महज एक राजनेता से कहीं अधिक जो राजनीतिक और आर्थिक सहायता प्रदान करता है - इस कठिन अनुभव के बाद 399

समाधानों के संदर्भ में, वह उद्धार का प्रतीक एक मसीहाई नेता थे।
जर्मनी का (डी. वेल्च, 2001)।

मानो इस चक्र को और भी पूरा करने के लिए, हमें गुडरिक-क्लार्क (1994) की पुस्तक "नाज़ीवाद की गुप्त जड़ें" में यह मिलता है:
एरियोसोफिस्ट, जो प्रथम विश्व युद्ध से पहले वियना में सक्रिय थे।
विश्व युद्ध, हेलेना पेट्रोवना के थियोसोफी से लिया गया।
ब्लावत्स्की ने आने वाले युग की भविष्यवाणी और उसे पुष्ट करने के लिए ऐसा किया।
जर्मन विश्व शासन का...
कम से कम दो एरियोसोफिस्ट इसमें घनिष्ठ रूप से शामिल थे।
1930 के दशक में रीच्सफ्यूहरर-एसएस हेनरिक हिमलर ने योगदान दिया।
उनकी ... ग्रेटर जर्मनिक रीच के लिए दूरदर्शी योजनाओं के अनुरूप
तीसरी सहस्राब्दी में...
रेवेन्सक्रॉफ्ट ने रुडोल्फ स्टाइनर की सामग्री को रूपांतरित किया...
गुप्त नाज़ीवाद की पौराणिक कथाओं के लिए।
पूर्वी तत्वमीमांसा का नाजी विचारधारा से संबंध केवल इतना ही नहीं था:
फ्रांस में जन्मी नाज़ी-हिंदू पैगंबर सावित्री देवी,
हिटलर को विष्णु का अवतार बताया और नाज़ीवाद की तुलना उससे की।
शिव की पूजा, जिसमें विनाश और पुनर्निर्माण पर जोर दिया जाता है
निर्माण....
उसे पूरा यकीन था कि हिटलर को एहसास हो गया था कि वह एक धोखेबाज है।
युवावस्था में ही तारकोल का इस्तेमाल किया (गुडरिक-क्लार्क, 2003)।
कुल मिलाकर, यह मानना कि आप "प्रबुद्ध हैं और कोई गलती नहीं कर सकते"—जैसा कि हर "मसीहा" और लगभग हर "ध्यान गुरु" ने खुद को यह विश्वास दिलाया है—आपको दूसरों के "भले के लिए" उनके साथ दुर्व्यवहार करने की असीमित छूट देता है। वास्तव में, यह आपकी अंतरात्मा को उससे भी कहीं अधिक विवश कर देता है, जितना कि यदि आप जानबूझकर केवल अपने स्वार्थ के लिए, एक साधारण धोखेबाज (या धोखेबाज महिला) की तरह उनका शोषण कर रहे होते।
जैसा कि प्रोफेसर जे. एच. वॉन डुलिंगर ने सवा सदी पहले दूरदर्शिता से कहा था:
सभी निरंकुश शक्ति उसके स्वामी का मनोबल गिरा देती है। इसके अलावा, उसकी सारी शक्ति उसे हतोत्साहित करती है।
टोरी गवाह है। और यदि यह एक आध्यात्मिक शक्ति है जो शासन करती है।

पुरुषों की अंतरात्मा के लिए, खतरा और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि
ऐसी शक्ति का अधिकार एक विशेष रूप से विश्वासघाती व्यक्ति को प्रवृत्त करता है।
जबकि यह विशेष रूप से आत्म-धोखे के लिए अनुकूल है,
क्योंकि प्रभुत्व की लालसा, जब यह एक जुनून बन जाती है, 400 गुरुओं का पर्दाफाश

इस मामले में उत्साह की आड़ में इसे आसानी से माफ किया जा सकता है।
दूसरों के उद्धार के लिए।
उस प्राथमिक कारण के साथ-साथ कई अन्य गौण कारणों से, "गुरुओं का खेल," भले ही इसे "वास्तविक गुरुओं" (जैसे भावुक रामकृष्ण, बलवान अरबिंदो, जाति-चेतना वाले रमण महर्षि, गैर-चिकित्सक मेहर बाबा और अग्नि पर चलने वाले योगानंद) द्वारा खेला जाए, किसी भी धर्मनिरपेक्ष सत्ता-क्रीड़ा या धोखे के खेल से कहीं अधिक खतरनाक है।
क्या ईमानदारी और निष्ठा के साथ किए जाने पर भी? हाँ। वास्तव में, दुगुना सच है:
दुनिया में सच्ची अज्ञानता से ज्यादा खतरनाक कुछ भी नहीं है।
उन्माद और कर्तव्यपरायण मूर्खता।
—मार्टिन लूथर किंग जूनियर
और हे भगवान, हमने यह सब काफी देख लिया है।
* * *
इन पृष्ठों में हमने जिन “महान संतों” के व्यवहार का उल्लेख किया है, उनमें से अधिकांश पुरुष रहे हैं। हालाँकि, उल्लेखनीय अपवादों में रामकृष्ण की पत्नी, अरबिंदो की “माता”, मुक्तानंद की गुरुमयी और योगानंद की दया माता और तारा माता शामिल हैं। इसके अलावा, मां जया सती भगवती, अम्माची, जेटसुनमा और एंड्रयू हार्वे की माता मीरा भी हैं। बाद वाली की मूल आशा, 1970 के दशक में चौदह वर्ष की आयु में, वास्तव में अरबिंदो की माता के निधन के बाद, पांडिचेरी के ऑरोविले आश्रम में उनकी माता का स्थान लेना था (माइनर, 1999)।
उन्हें श्री अरबिंदो और दोनों के दर्शन प्राप्त हुए थे।
माँ, जिसे उन्होंने बताया कि उसे यह जिम्मेदारी सौंपी गई है
दुनिया के रूपांतरण को पूरा करने का काम वे

शुरू हो गया था। अरबिंदो और मदर की भाषा है
इन दृष्टियों के उनके वर्णनों का नियमित रूप से एक हिस्सा, लेकिन-
दसवें अंक में, उसने कहा, अरबिंदो और माँ वास्तव में प्रकट हुए।
उससे और उनकी बातचीत में उसे यह काम सौंपा गया था।
काम जारी रखें।
बीसवीं सदी की, पूर्णतः गैर-रहस्यवादी, दिवंगत रूसी-अमेरिकी दार्शनिक ऐन रैंड (मृत्यु 1982) ने भी स्पष्ट रूप से अपने चारों ओर एक व्यक्तित्व पूजा का निर्माण कर लिया था। वहाँ निष्ठा इस हद तक देखी जा सकती थी कि उनके एक सच्चे अनुयायी ने बताया-आफ्टर द ऑर्डियल 401

1960 के दशक के उत्तरार्ध में, एक बेवफा (और विवाहित) पूर्व प्रेमी से निपटने के साधन के रूप में हत्या का विचार सामने आया था।
घरेलू, फिर भी अत्यंत तर्कसंगत, सुश्री रैंड (शेरमर, 1997)।
जिस पूर्व प्रेमी के संकट में होने की बात हो रही है, वह आकर्षक नथानियल ब्रैंडन थे —रैंड के "बौद्धिक उत्तराधिकारी", जिन्हें एटलस श्रग्ड समर्पित थी। (रैंड और ब्रैंडन के अनुसार, यह पुस्तक "विश्व के इतिहास में सबसे बड़ी मानवीय उपलब्धि" थी।) दोनों ने मिलकर रैंड के अनुयायियों को उन्हें "धरती के दो सबसे महान बुद्धिजीवी" मानने के लिए प्रोत्साहित किया।
बाद में ब्रैंडन ने स्वयं एक शानदार रात्रिभोज की मेजबानी की।
80 के दशक के मध्य में, उनके अच्छे दोस्त केन विल्बर (1991) के लिए। इसके अलावा, ब्रैंडन विल्बर के इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं।
पूर्व लेखक की अपनी वेबसाइट (www.nathanielbranden.net) से:
नथानिएल ब्रैंडन का नाम अब इस बात का पर्याय बन गया है कि...
उन्होंने "आत्म-सम्मान का मनोविज्ञान" नामक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई।
तीस साल से भी पहले। उन्होंने शायद किसी और से ज़्यादा काम किया है।
अन्य सिद्धांतकारों ने अमेरिका की चेतना को जगाने का प्रयास किया।
मानव कल्याण के लिए आत्मसम्मान का महत्व।
हालांकि, पृथ्वी पर दो "महानतम बुद्धिजीवियों" में से एक से इससे कम की उम्मीद नहीं की जा सकती।

तो, कुल मिलाकर, यह एक बहुत ही छोटा आध्यात्मिक संसार है। और यह तब और भी छोटा हो जाता है जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि जब अन्य विद्वान "गलत रास्ते पर चले जाते हैं" तो क्या होता है:

[फ्रिथजोफ] शुओन, ईश्वर और वर्जिन मैरी द्वारा धन्य, [हो-
उनका मानना है कि वह अपने शरीर से हर समय कृपा का विकिरण करते हैं।
सबसे अधिक प्रभावशाली तब होता है जब वह नग्न होता है; और यह स्वयं एक सल-
विफिक एक्ट....
[उनके द्वारा दी गई दीक्षाओं] में शुओन एक ऐसी अवस्था में होता है
अर्ध-नग्न महिलाओं के घेरे के केंद्र में अर्ध-नग्नता
शिष्य (रॉलिंसन, 1997)।

पूरे कपड़े पहने होने पर भी, शुओन स्पष्ट रूप से कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे:
वह स्वयं कहते हैं कि “मैं शुरू से ही एक अलग तरह का व्यक्ति था-
"बाकियों से अलग, मैं अलग सामग्री से बना था।"
एक अप्रकाशित लेख, शेख की श्रद्धा [लिखित-
दस अपनी दा-जैसी चौथी "पत्नी" द्वारा], कहते हैं कि शुओन "एक
शाश्वत सद्गुरु का उत्कृष्ट प्रकटीकरण... एक ‘अवतार’ 402 गुरुओं का निराकरण

एक अभूतपूर्व घटना... एक ‘भविष्यवक्ता’ जैसी शख्सियत... और एक महान बोधि-
"सत्व"; कि वह शिव के गुणों को प्रदर्शित करता है और
कृष्ण; और अब्राहम, डेविड, ईसा मसीह से समानताएं हैं।
और मुहम्मद....
एक शिष्य जिसने शुओन के अधिकार पर सवाल उठाया था, वह था
एक को पागल करार दिया गया; दूसरे को "जन्मजात सूअर" कहा गया; और
कई अन्य (इन दोनों सहित) को बहिष्कृत कर दिया गया था।
(रॉलिंसन, 1997)।

डॉ. शुओन, धर्मों के शाश्वत दर्शन या पारलौकिक एकता के एक मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ के रूप में, विल्बर के प्रारंभिक लेखन (जैसे, 1982) में, बेशक, बहुत कम रोचक तरीकों से सम्मानपूर्वक संदर्भित किए गए थे।
1983) लेखन।

यदि गुरुओं की संख्या में उपर्युक्त पुरुष/महिला असमानता अभी भी आपको परेशान करती है, तो पूजनीय बंगाली रहस्यवादी आनंदा मोयी मां पर विचार करें, जिन्होंने स्वयं को दिव्य मां का अवतार या प्रत्यक्ष अवतार होने का दावा किया था। वास्तव में, उनसे मिलने के बाद
1936 में, योगानंद (1946) ने उनकी आध्यात्मिक उन्नति के स्तर का मूल्यांकन इस प्रकार व्यक्त किया:
मैंने भारत में ईश्वर-प्राप्ति के कई पुरुषों को पाया था, लेकिन कभी नहीं
इससे पहले मैं कभी ऐसी महान महिला संत से नहीं मिली थी।
हालाँकि, आर्थर कोस्टलर (1960) ने आनंद के चरित्र के संबंध में निम्नलिखित जानकारी जोड़ी:
अट्ठाईस वर्ष की आयु से आगे, एक अनिर्धारित अवधि के लिए
कई वर्षों तक वह खुद खाना खाने में असमर्थ रही।
उसने अपने मुंह तक खाना ले जाने की कोशिश की, लेकिन उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।
और भोजन का एक बड़ा हिस्सा उसकी उंगलियों से फिसल गया"....
ऐसे अवसर भी आए जब, किसी अन-
अगर कोई व्यक्ति चावल खा रहा हो, या कोई कुत्ता कूड़ा खा रहा हो, तो वह उसे छूकर देखेगी।
वे करुण स्वर में रोने लगे, "मुझे खाना है, मुझे खाना है।"
अन्य अवसरों पर, उसे अत्यधिक भूख लगने के दौरे पड़ते थे...
वह रोने और हंसने के दौरे पड़ने की आदी थी, जिससे...
दस बातें एक घंटे से अधिक समय तक चलीं। उसे अपने भक्तों को चिढ़ाना पसंद था और
बिल्ली के बच्चे जैसा व्यवहार प्रदर्शित करना, हालाँकि कभी-कभी उसका खेल-
परिपूर्णता को क्रूरता कहना अधिक उचित होगा।
[उनके सबसे करीबी अनुयायियों में से एक] बीमार थे, इसलिए वह उनसे मिलने नहीं गईं।
कई महीनों तक, और उनके प्रवास के दौरान कुछ अवसरों पर-
उसने स्पष्ट रूप से मना किया कि उसे भोजन न भेजा जाए।

फिर भी, मां को स्वयं गहन योगदान देने का श्रेय दिया जाता है।
जैसा कि योगानंद (1946) की भतीजी ने बताया है, उनकी उपचार क्षमताएँ इस प्रकार हैं:
एक शिष्य के आग्रह पर, आनंदा मोयी माँ वहाँ गईं।
एक मरते हुए आदमी का घर। वह उसके बिस्तर के पास खड़ी थी; जैसे ही उसका हाथ
उसने अपने माथे को छुआ, उसकी अंतिम साँसें थम गईं। बीमारी
वह पल भर में गायब हो गया; उस आदमी के सुखद आश्चर्य के लिए, वह
कुंआ।
इन सभी कथित क्षमताओं और उच्च कोटि की अनुभूतियों के बावजूद, निम्नलिखित घटना सबसे अलग और परेशान करने वाली है:
एक बूढ़ी औरत आगे आई, उसने ज़मीन पर लेटकर विनती की।
आनंदा अपने लापता बेटे, एक सैनिक के लिए मध्यस्थता करेंगी।
सीमावर्ती क्षेत्र में झड़प के बाद, आनंद पान चबाता रहा।
उसे अनदेखा करते हुए। महिला लगभग चीखने और रोने लगी।
हिस्टीरिया। आनंदा ने कठोर स्वर में कहा, "चली जाओ," और उसे झटक दिया।
एक इशारे से एक तरफ हटते हुए, और वह बूढ़ी औरत, अभी भी रो रही थी,
उसे कमरे से बाहर ले जाया गया (कोस्टलर, 1960)।
यदि ऐसे व्यवहार में करुणा है, तो केवल वही व्यक्ति इसे पा सकता है जो अभी तक इस सुखद कल्पना से पूरी तरह से बाहर नहीं निकला है कि ऐसे कार्य ईश्वर के "रहस्यमय तरीकों से काम करने" की अभिव्यक्ति हो सकते हैं।
इसके अलावा, यह भी ध्यान देने योग्य है कि एसआरएफ के निदेशक मंडल में वर्तमान में बैठे अधिकांश व्यक्ति नन हैं। और उन्होंने इस संगठन की कठोर पदानुक्रमित संरचना या इसमें अपने महत्वपूर्ण पदों को छोड़ने की कोई इच्छा नहीं जताई है।
दया माता के लिए, हम और उनसे असहमत होने वाले सभी लोग
उनकी पसंदीदा कहावत को उद्धृत करते हुए—“छोटे-मोटे बच्चे”....

दया माता ने एक बार भाई आनंदमय से कहा था
और मैंने कहा, "सच तो यह है कि महिलाएं पुरुषों से ज्यादा आध्यात्मिक होती हैं।"
(वाल्टर्स, 2002)।
स्वयं पूज्य माता को दुनिया की पहली महिला आध्यात्मिक नेताओं में से एक के रूप में उनकी भूमिका का जश्न मनाने के लिए, और इस प्रकार दुनिया की समस्याओं के "समाधान के एक हिस्से" के रूप में, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रमुखता से चित्रित किया गया है।
बेशक, रजनीश के आश्रमों में रहने वाली महिलाएं भी उसी "समाधान" का हिस्सा थीं:
404 गुरुओं का पर्दाफाश

रजनीश के महिलाओं को "मेरे जीवन के स्तंभ" मानने के दृष्टिकोण के अनुरूप,
मंदिर" आंदोलन के नेतृत्व में महिलाओं का वर्चस्व था।
(भगवान "स्वयं" को छोड़कर)। ब्रौन बताते हैं कि महिलाएं
राजनीशपुरम में 80% से अधिक कार्यकारी पदों पर उनका नियंत्रण था।
(पामर और शर्मा, 1993)।
और जैसा कि हम जानते हैं, रजनीशपुरम ओरेगन का वह आश्रम था जो साल्मोनेला संक्रमण, इलेक्ट्रॉनिक जासूसी और कथित हत्या की साजिशों के लिए कुख्यात था।
अविचलित, माँ भगवती ने हमें सूचित किया है:
अगर लोग महिला शिक्षकों को स्वीकार नहीं करते, तो समझो सब कुछ खत्म हो गया।
सब कुछ, क्योंकि पुरुषों ने सब कुछ पूरी तरह से गड़बड़ कर दिया है (में
कैपलान, 2002)।
याद रहे, भगवती कथित तौर पर स्वयं को "दिव्य माँ का अवतार" घोषित करने वाली देवी थीं, जिन्हें राम दास ने अपने अनुभवों के आधार पर 70 के दशक के मध्य में, अपने "दास और दासर" काल में, और सोने की चूड़ियों वाली "जोया" के रूप में उनके दिनों में पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया था।
"सब कुछ का अंत," सचमुच।
दुर्भाग्य से, मदर टेरेसा की भी हालत दिन के उजाले में कुछ बेहतर नहीं है।
जैसा कि अरौप चटर्जी (2003) की पुस्तक मदर टेरेसा: द फाइनल वर्डिक्ट ने

प्रदर्शित किया है:
मदर टेरेसा के हवाले से कहा गया है कि पीड़ा एक
ईसा मसीह को प्राप्त करने का साधन; दुखियों के साथ दुख सहना
यह व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाने में मदद करता है। दूसरे शब्दों में, गरीब और निर्धन लोग...
उसके लिए ये सब केवल स्वयं के लिए मोक्ष प्राप्त करने का एक साधन मात्र हैं।
उनका दुख, जो कि ईसा मसीह के दुख की पुनरावृत्ति है,
इससे उसे आध्यात्मिक सहारा मिलता है। इसीलिए इतनी बड़ी धनराशि की आवश्यकता है।
उसके निपटान का उपयोग कभी भी अत्याधुनिक सुविधा स्थापित करने के लिए नहीं किया गया है।
अस्पताल जहां काफी हद तक पीड़ा को कम किया जा सकता है या
पूर्व-निषेधित; ऐसे स्कूल स्थापित करना जो पीढ़ियों को बचा सकें-
गरीबी से मुक्ति दिलाना; कलकत्ता की झुग्गी-झोपड़ियों का नवीनीकरण करना और
बीमारी और अपराध को खत्म करो। क्योंकि इसमें उसका निजी स्वार्थ है।
गरीबी, बीमारी और मृत्यु का निरंतर सिलसिला।
और धार्मिक मुद्दे किसी भी तरह से टेरेसा के काम और चरित्र से जुड़ी एकमात्र समस्या नहीं थे:
उसने अपने कार्यों और गतिविधियों को कई गुना बढ़ा-चढ़ाकर बताया।
पत्रकारों और समर्थकों को दिए गए भाषण। अक्सर उनके बयान
वास्तविकता से इसका कोई संबंध नहीं होगा। कई लोग इस कठिन अनुभव के बाद

कई बार उन्हें टेलीविजन पर तब कैद किया गया था जब वे बहुत कुछ बता रही थीं।
उनके काम के बारे में मनगढ़ंत कहानियां। उन्होंने नोबेल पुरस्कार समारोह में भी टालमटोल किया।
पुरस्कार स्वीकृति भाषण...
सामाजिक मुद्दों की बात करें तो, वर्तमान पोप भी...
वह मदर टेरेसा से कहीं अधिक उदार हैं...

मां को बाल यौन शोषण करने वाले पादरियों के मुद्दे पर सामना करना पड़ा।
आयरिश पत्रकार कैथी वार्ड ने पूछा, "प्रार्थना करो, प्रार्थना करो।" उन्होंने जवाब दिया, "प्रार्थना करो, प्रार्थना करो।"
और उन लोगों के लिए त्याग करें जो इस तरह की परिस्थितियों से गुजर रहे हैं।
भयानक प्रलोभन।" ऐसा नहीं है कि वह हिरासत के खिलाफ थी।
सजा सुनाना: उसने कई बार कहा कि वह ऐसा करना चाहती है।
गर्भपात करने वाले डॉक्टरों के लिए एक विशेष जेल खोलें।
क्रिस्टोफर हिचेंस (1995) ने इससे पहले टेरेसा के बारे में अपना एक कम विस्तृत खुलासा लिखा था:
उन्होंने एक बार एक साक्षात्कारकर्ता से कहा था कि, यदि उन्हें किसी विकल्प का सामना करना पड़े तो-
गैलीलियो और धर्म जांच आयोग के अधिकार के बीच, वह
चर्च के अधिकारियों का साथ दिया है...
उन्होंने एड्स पर भी बात की और कहा कि वह ऐसा नहीं चाहतीं।
इसे ईश्वर का प्रकोप करार दें, लेकिन यह एक न्यायसंगत प्रतिशोध जैसा प्रतीत होता था।
अनुचित [जैसे, समलैंगिक या व्यभिचारी] यौन व्यवहार के लिए निषेध
आचरण।"
और केन विल्बर (2000a) ने मदर टेरेसा की मृत्यु की (मीडिया) खबर मिलने पर, हिचेंस के खुलासे के लगभग आधे दशक बाद, उनके प्रति अपना सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करने में जल्दबाजी कैसे की?
मदर टेरेसा उस दिव्य किरण के बहुत करीब थीं [अन्य लोगों की तुलना में]
राजकुमारी डायना, जिनकी उसी सप्ताह मृत्यु हो गई थी], और उन्होंने इसका अभ्यास किया था।
अधिक लगन से, और बिना किसी दिखावे के। वह पहले से कम थी।
ब्रह्मांडीय करुणा के द्वार से भी बढ़कर एक व्यक्ति—अथक,
अत्यंत समर्पित, भयावह रूप से समर्पित।
वैसे भी, मैं उन दोनों की बहुत सराहना करता था, काफी समय से।
विभिन्न कारण।

दुर्भाग्य से, इस तरह के विचार विल्बर के लिए बिल्कुल सामान्य हैं, क्योंकि वे लगातार दूसरों के ज्ञान के उच्च स्तर का समर्थन करते रहते हैं। यहाँ भी वे स्पष्ट रूप से, भले ही पूरी तरह से गलत तरीके से, खुद को वास्तविकता को प्रचार से अलग करने की स्थिति में मानते हैं, जबकि उन्होंने लंबे समय से मौजूद प्रासंगिक शोध सामग्री से न्यूनतम परिचय भी नहीं किया है।
इसी प्रकार उनके मित्र, डॉ. रोजर वाल्श (1999): 406 गुरुओं को उजागर करना

मैंने मदर टेरेसा और दलाई लामा के साथ जो कुछ घंटे बिताए,
लामा आज भी मुझे प्रेरित करते हैं, और उनकी फिल्में भी।
इन्होंने दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है। यही है इनकी शक्ति।
वे लोग जो अपना जीवन ज्ञानोदय और सेवा के लिए समर्पित करते हैं।
या यूँ कहें कि, अच्छे जनसंपर्क तंत्र वाले और अपनी गलतियों और पूर्वाग्रहों को छुपाने की क्षमता रखने वालों की यही शक्ति है। क्योंकि क्रूर समलैंगिक-विरोधी भावना, विचित्र यौन विकारों, कुख्यात अपराधियों के साथ संबंध और चोरी का माल प्राप्त करने के बावजूद भी उन्हें संत और देवता माना जाता है। (मदर टेरेसा ने बचत और ऋण धोखाधड़ी करने वाले चार्ल्स कीटिंग से दस लाख डॉलर से अधिक का दान स्वीकार किया और मुकदमे के दौरान उसके बचाव में एक भोला-भाला पत्र लिखा। उसकी दोषसिद्धि और कारावास के बाद, लॉस एंजिल्स काउंटी के उप जिला अटॉर्नी ने टेरेसा से संपर्क किया और उन्हें उन "चोरी" की गई धनराशि को लौटाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें "महान संत" से कोई जवाब नहीं मिला [चटर्जी, 2003]।)
बहरहाल, ब्रूक (1999) जैसे निरर्थक विचारों के सामने भगवती जैसे दृष्टिकोणों के प्रति सहानुभूति भी दिखाई जा सकती है। क्योंकि वहाँ उन्होंने बार-बार साई बाबा को "झगड़ालू कुतिया" और "घमंडी नपुंसक मोर" (उनके अपने शब्द) कहकर बेनकाब करने की इच्छा व्यक्त की है। उन्होंने सामान्य तौर पर महिला गुरुओं के प्रति एक अनुमानित "ईसाई" दृष्टिकोण भी प्रदर्शित किया है।
मैं [हिल्डा चार्लटन] से कभी नहीं मिला था... और मेरी अपनी राय थी-
व्यक्तिगत बाधाएं और महिला गुरुओं के प्रति संदेह। बस इतना ही।
यह मेरी शैली नहीं थी।
हालांकि, लिंग आधारित "संदेहों" को महज "शैली" का मामला नहीं माना जा सकता,

यहाँ तक कि चार्लटन जैसे बिल्कुल ही सनकी लोगों के मामले में भी। न ही इस तरह के निराशाजनक रवैये—चाहे वे नवजन्मित ईसाई पुरुषों से आ रहे हों या इसके विपरीत समकालीन प्रसिद्ध महिला योगियों से—आध्यात्मिक जगत या सामान्य रूप से समझदार दुनिया में व्याप्त समस्याओं का कोई वैध समाधान हो सकते हैं।
इसलिए, हमें इन खराब व्यवहारों के पीछे छिपी शक्ति/यौन/मनोवैज्ञानिक समस्याओं को पुरुष/महिला या पितृसत्तात्मक/मातृसत्तात्मक आधार पर विभाजित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए, जैसा कि अक्सर किया जाता है। वास्तव में, यदि कोई ऐसा करने के लिए प्रेरित भी हो, तो उसे इसके बजाय तेरह नारीवादी मार्क्सवादी-लेनिनवादियों द्वारा स्थापित एक "आत्मा को कुचलने वाले" राजनीतिक "पंथ" में जानजा लालिच के अनुभवों पर विचार करना चाहिए। उन संस्थापकों में से ग्यारह ने स्वयं को "कट्टर समलैंगिक" के रूप में पहचाना। और फिर भी, उनके "पोषणकारी, सहिष्णु, समतावादी" शासन के तहत भी:
उस कठिन अनुभव के बाद 407

पचास वर्ष की आयु के एक सम्मानित डॉक्टर और पार्टी सिद्धांतकार
उसने कहा कि वह इतना थक गया था कि वह रोजाना दिल का दौरा पड़ने की प्रार्थना करता था।
उसे कुछ राहत मिली। कई अन्य लोगों ने कहा कि उन्होंने गुप्त रूप से
वे चाहते थे कि उनकी कार दुर्घटना में मृत्यु हो जाए क्योंकि वे
बाहर निकलने का कोई और रास्ता नहीं सूझ रहा था (लैंगोन में)।
1995).
क्या आप अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने के लिए मूर्तिपूजा जैसी किसी चीज़ में हाथ आज़माने की सोच रहे हैं, इस उम्मीद में कि यह किसी अन्य धर्म या आध्यात्मिकता की तुलना में झूठ, लिंगभेद और घोर गलत बयानों पर कम आधारित हो सकती है? कृपया
सबसे पहले शार्लोट एलन का 2001 का मनमोहक लेख, "विद्वान और देवी" पढ़ें:
पूरी संभावना है कि विक्कन कहानी का एक भी तत्व [का]
इसके मूल के बारे में] सच है। इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि
विक्का एक बिल्कुल नया धर्म है, जो 1950 के दशक में विकसित हुआ एक मिश्रण

है।
मेसोनिक अनुष्ठान और नौ साल से अधिक उम्र जैसी चीजों से प्रेरित।
19वीं शताब्दी में गूढ़ और रहस्यमय चीजों के प्रति आकर्षण,
और विक्कन दृष्टिकोण को सूचित करने वाली विभिन्न मान्यताएँ
इतिहास में गहरी खामियां हैं।
दरअसल, जैसा कि एलन आगे बताते हैं, विक्कन विश्वास का मूल विचार यह है कि किसी भी प्राचीन सभ्यता ने, कहीं भी, एक ही, मूल देवी की पूजा की हो, जिसे समकालीन विद्वानों ने लिखित अभिलेखों और पुरातत्व दोनों के आधार पर पूरी तरह से खारिज कर दिया है। (देखें सिंथिया एलर की [2003] अत्यंत अंतर्दृष्टिपूर्ण और मार्मिक पुस्तक 'मातृसत्तात्मक प्रागितिहास का मिथक'।)
इसी प्रकार, अतीत के मूल अमेरिकी समाजों, या इसी तरह के अन्य समाजों की, "खंडित, पितृसत्तात्मक, यूरोपीय" समाजों की तुलना में कथित श्रेष्ठताओं के लिए भी यही बात लागू होती है:
माया सभ्यता के लोग, जिनके शहर पूरी तरह से किलेबंद नहीं थे,
लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि वे "असाधारण रूप से सौम्य, शांतिप्रिय लोग" हैं।
एक अपेक्षाकृत सौम्य धर्मतंत्र में रह रहे थे।" लेकिन जैसे-जैसे माया लेखन-
इंग प्रणाली को समझना शुरू किया गया और जैसे-जैसे नई खुदाई हुई
जब पुरातत्वविदों ने जांच शुरू की, तो एक अलग ही तस्वीर सामने आई।
कटे हुए सिरों और बंधे हुए कैदियों के चित्र मिले
सार्वजनिक इमारतें। पुरातत्वविद् आर्थर डेमारेस्ट के अनुसार-
इस नए साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि, "माया एक थे
नई दुनिया में सबसे हिंसक राज्य-स्तरीय समाजों में से एक।"
(ओआर, 2003)।
408 गुरुओं का पर्दाफाश

यह सब इस बुद्धिमत्तापूर्ण कथन को और पुष्ट करता है कि “एक संत [या एक काल्पनिक पौराणिक कथा, या एक ‘स्वर्ण युग’ की संस्कृति] वह है जो किसी व्यक्ति के पापों को भुला दिए जाने के बाद शेष रह जाता है।” या, यदि पूरी तरह से भुलाया

नहीं गया, तो कम से कम समय से पहले ही उसके करीबी शिष्यों द्वारा, स्वयं संत की तरह, दफना दिया जाता है—क्योंकि उन सभी का अपने हित में सत्ता और यश प्राप्त करने के लिए, सार्वजनिक रूप से सर्वोत्तम छवि प्रस्तुत करने में गहरा स्वार्थ होता है।

* * *

हमने पहले आध्यात्मिक अनाचार के विचार पर चर्चा की है, जिसमें गुरु द्वारा अपने विश्वासयोग्य शिष्यों के साथ यौन संबंध स्थापित किए जाते हैं (हालांकि यह हमेशा सच नहीं होता)। मनोविज्ञान और चेतना अध्ययन की उच्च शाखाओं के सम्मानित सिद्धांतकार अभी भी इस बात से जूझ रहे हैं कि अपने "प्रबुद्ध" नायकों द्वारा किए गए ऐसे जीवन-विनाशकारी "गलतियों" को कैसे समझाया जाए। इसके विपरीत, इस क्षेत्र के प्रति कम समर्पित, लेकिन कहीं अधिक अंतर्दृष्टि रखने वाले अन्य लोगों ने डेढ़ दशक पहले ही प्रासंगिक गतिशीलता और उचित प्रतिबंधों को पहचान लिया था।

मंडली के सदस्यों पर पादरी का प्रभाव बहुत अधिक होता है।

यदि वह अपने अधिकार का प्रयोग करना चाहे तो, यह अधिकार उसे और भी मजबूत बनाता है।

एक महिला के प्रति उसके ईश्वर के साथ संबंध के बारे में लिखने वाला। एक यौन शोषण करने वाला

एक पादरी इस अधिकार का आसानी से दुरुपयोग कर सकता है और किसी को बता सकता है

महिला को यह विश्वास दिलाना कि उसका यौन संबंध किसी दैवीय या निर्धारित प्रक्रिया का हिस्सा है।

परिष्कृत योजना। यहां तक कि परिष्कृत महिलाओं को भी कठिनाई हो सकती है।

यदि वे धार्मिक निष्ठावान हैं तो इस तर्क का विरोध करना।

वह दृष्टिकोण जिसका प्रतिनिधित्व पादरी करता है।

[तथाकथित धार्मिक] पंथ जिनमें गुरु या आध्यात्मिक गुरु होते हैं

नेता के अपनी कई महिला सहयोगियों के साथ यौन संबंध हैं।

इस घटना के सबसे स्पष्ट उदाहरण सामूहिक समुदाय हैं।

(रटर, 1989)।

रटर आगे कहते हैं:

पेशेवरों के बीच यौन संबंधों का [संबंधित] मुद्दा-

शिक्षक और छात्र अपनी बार-बार की गतिविधियों के कारण ध्यान आकर्षित करते हैं।
cy, जो [उच्च आवृत्ति] आंशिक रूप से [इटैलिक में जोड़ा गया] हो सकता है-
स्पष्ट रूप से सीमांकित क्षेत्र की पारंपरिक अनुपस्थिति के कारण।
निषिद्ध क्षेत्र [जहां यौन गतिविधियां वर्जित हैं]
कॉलेज परिसर। ऐसे प्रतिबंधों के खिलाफ तर्क देने वाले लोग
आमतौर पर दावा किया जाता है कि इसमें शामिल महिलाएं सहमति देने वाली वयस्क हैं।
और उनकी रक्षा करने का कोई कर्तव्य नहीं है...
उस कठिन अनुभव के बाद 409

इन सभी तर्कों में महत्वपूर्ण सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं की अनदेखी की गई है।
चयनात्मक वास्तविकताएँ। सामाजिक गतिशीलता अभी भी शक्ति को प्राथमिकता देती है।
शिक्षक या प्रोफेसर के हाथों में। मनोवैज्ञानिक
गतिशील प्रक्रिया निरंतर हो रहे विघटन की अंतर्निहित वास्तविकता पर आधारित है।
लंबित मामले, जिनका मूल्यांकन करते समय ध्यान रखना आवश्यक है-
महिला कॉलेज छात्राओं के बीच यौन संबंधों की नैतिकता पर चर्चा
और स्नातकोत्तर छात्र और उनके प्रोफेसर। हाल ही में, कुछ
विश्वविद्यालयों ने इसके खिलाफ स्पष्ट नीतियां बनानी शुरू कर दी हैं
संकाय-छात्र के बीच घनिष्ठ संबंध जो असमान शक्ति को उजागर करते हैं
गतिकी को ध्यान में रखते हुए।

सिंगर और लालिच (1996) की पुस्तक क्रेज़ी थेरेपीज़ का अध्याय 7 उपरोक्त विषयों के समान विषयों को कवर करता है:

किसी थेरेपिस्ट या काउंसलर [या गुरु] के साथ यौन संबंध बनाना ठीक नहीं है और यह अनुचित है।

इससे ग्राहक [या शिष्य] को कोई लाभ नहीं होगा। बल्कि...
इससे नई समस्याएं पैदा होंगी और पहले से मौजूद समस्याएं और भी गंभीर हो जाएंगी।
गुरु, पिता की तरह, एक ऐसे संदर्भ में होते हैं जो उन्हें अपार महत्व देता है।
अपने शिष्यों की जरूरतों, विश्वास और समर्पण के कारण उन्हें शक्ति प्राप्त होती है।
लंबित मामला। अनाचार विश्वासघात क्यों है, इसका एक कारण यह है कि...
बेटी को अपने पिता से आत्मसम्मान की भावना चाहिए, न कि
विशेष रूप से उसकी कामुकता से जुड़ा हुआ है। गुरु के साथ यौन संबंध लगभग...
यह काफी हद तक अनैतिक है क्योंकि एक गुरु स्पष्ट रूप से एक के रूप में कार्य करता है
वह आध्यात्मिक पिता जिसे व्यक्ति के विकास की जिम्मेदारी सौंपी जाती है।
माता-पिता जैसी किसी शख्सियत के साथ यौन संबंध बनाना, शक्ति के लिए यौन संबंध का उपयोग करने को बढ़ावा देता है।
युवा महिलाओं (या पुरुषों) के विकास के लिए यह आवश्यक नहीं है।
विकास। जब गुरु उन्हें छोड़ देता है, जो अंततः वह
ऐसा करने पर, आमतौर पर शर्म और विश्वासघात की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं जो अंततः निराशा का कारण बनती हैं।
गहरे निशान (क्रेमर और अल्स्टैड, 1993)।
ध्यान दें कि उपरोक्त विचारों में से कोई भी कट्टरपंथी, संकीर्ण सोच वाला या दंभी नहीं है। (दलाई लामा के आदर्श, एक स्वाद का अनुभव कर चुके द्रुकपा कुनले के शब्दों में: "तुम्हें धर्म पसंद है और मुझे योनि। हम दोनों सुखी रहें!") बल्कि, ये विचार दूसरों के कल्याण के लिए सच्ची करुणा का सरलतम रूप हैं, जो आध्यात्मिक जगत में उन व्यक्तियों के विरुद्ध निर्देशित हैं जो स्वयं को ईश्वर समझते हैं।
जब लोगों को नुकसान के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं होती है—और यह बहुत आम बात है
सेक्स के बारे में बात करना और सही ढंग से बोलना मुश्किल है—वे दूसरों पर आरोप लगाते हैं
प्यूरिटन होने के नाते। आज बौद्ध धर्म में भी यही चल रहा है।
(ल्यू रिचमंड, [डाउनिंग, 2001] में)। 410 गुरुओं को उजागर करना

मानो रिचमंड के इस तर्क को साबित करने के लिए, तांत्रिक दीक्षा प्राप्त जॉन ब्लोफेल्ड (1970) ने एक भ्रामक बचाव प्रस्तुत किया जिसे हमारी दुनिया के अधिकांश गुरु-प्रतिष्ठानों पर लागू किया जा सकता था:

उन्नत ज्ञानियों को वह करने की अनुमति है जो उन्हें उचित लगता है।
उन्हें, सामान्य [जैसे, सामाजिक] आचरण के नियमों की परवाह किए बिना।
नियमों का पालन करना आवश्यक रूप से अच्छा या परिवर्तनशील मानना-
उन्हें अनिवार्य रूप से बुराई मानना स्वयं को बांधने जैसा होगा।
जिस द्वैतवाद को वे पार करने निकले हैं, उसका नाश हो...
नीच मानसिकता वाले लोग दूसरों को अपने ही मानकों से आंकते हैं, पढ़ें-
हर तरह के काम में घटिया इरादों को शामिल करना। पाखंडी लोग
वे हर अपरंपरागत कार्य में अपनी ही बुराई देखने की संभावना रखते हैं।
जो व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति की सच्ची खोज में लगा हुआ है। यह कठिन है
उन्हें यह विश्वास दिलाएं कि अन्य लोग भी नेक इरादों से प्रेरित होकर कार्य कर सकते हैं। एक सच्चा
लेकिन कुशल व्यक्ति भ्रामक आलोचना से विचलित नहीं होगा।

लेकिन, क्या हमारे विश्व के गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्तियों ने वास्तव में कभी "उच्च उद्देश्यों" से प्रेरित होकर कार्य किया है? और क्या उनसे जुड़ा कोई भी पाखंड उनके "कट्टरपंथी" आलोचकों की तुलना में स्वयं शिक्षकों पर अधिक लागू नहीं होता?

ज़रा उन पच्चीस कुंवारी लड़कियों के बारे में सोचिए जिनका जीवन एक भ्रमित बूढ़े व्यक्ति, उपासनी बाबा, ने निश्चित रूप से बर्बाद कर दिया, चाहे उनके विवाह का कोई भी पहलू केवल प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक ही क्यों न रहा हो। (महात्मा गांधी के साथ सोने वाली युवतियों के लिए भी, यह महज़ एक "आध्यात्मिक" व्यवस्था थी। फिर भी, अगर उनकी वासना कभी हावी हो जाती, तो संभावित परिणाम बलात्कार ही होता। भला ऐसी आशंका के साये में आप चैन से कैसे सो पाते?)

वही बाबा एक बार फिर आश्वस्त थे कि वे आध्यात्मिक साधकों की भीड़ में से "इस युग के अवतार" को पहचान सकते हैं, और संयोगवश, वह अवतार उनके ही शिष्यों में से एक निकला। यह वास्तव में "घिनौना" है, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा क्षमाप्रार्थी ब्लोफेल्ड ने कभी सोचा होगा। यदि कोई यह देखना चाहता है कि कथित तौर पर

गुरुओं को मिलने वाली छूटों को "पारंपरिक कृषि प्रधान" समाज किस प्रकार सीमित करता है, तो उसे इस तरह की प्रसिद्ध "आध्यात्मिक साधना" से बेहतर उदाहरण नहीं मिलेगा।
स्पष्ट बात को फिर से दोहराते हुए: कोई भी "कठोर प्रतिबंध" जो अपने देव-प्रतिनिधियों को पश्चिमी समाज की स्वस्थ उदारता (यहाँ सहमति देने वाले वयस्कों के बीच) की तुलना में स्वीकार्य व्यवहार में अधिक स्वतंत्रता प्रदान करता है, व्यवहार में उन लोगों के लिए और भी अधिक अनियंत्रित समाज का निर्माण करेगा जो इसके "राजा" होने के लिए इतने भाग्यशाली हैं। वास्तव में, उसी पश्चिम में जहाँ "सामाजिक कमी" है,

इसके "पागल ज्ञान" का अभ्यास करने वालों की अति के लिए अक्सर "प्रतिबंध" को ही दोषी ठहराया जाता है:
आज के समय में कुछ ही विलक्षण ज्ञान के गुरुओं को यह विशेषाधिकार प्राप्त है।
वे अपनी सारी तरकीबें आजमाने से भलीभांति वाकिफ हैं।
उनके खिलाफ दायर किया गया एक भी मुकदमा... इसके परिणामस्वरूप हो सकता है
उन्हें अपने शिक्षण कार्य को जारी रखने का अवसर खोना पड़ रहा है।
(कैपलान, 2002)।
चूंकि ये मुकदमे मुख्य रूप से कथित यौन शोषण (स्वामी राम का उदाहरण देखें) से संबंधित हैं, इसलिए दोनों बातें एक साथ नहीं कही जा सकतीं। कहने का तात्पर्य यह है कि राम दास (कैपलान, 2002 में) की तरह यह कहना उचित होगा कि पश्चिम में अधिक स्वतंत्रता और अनैतिकता (शराब, ड्रग्स और यौन संबंध में) के कारण पहले "निर्दोष" माने जाने वाले गुरु अपने उच्च आदर्शों से भटक जाते हैं। यह कहना सरासर गलत होगा—दास के अपने "सत्रह वर्षीय खिलाड़ी" नीम करोली बाबा का उदाहरण देखें—लेकिन आंखें बंद करके ऐसा कहना पूरी तरह से उचित है। हालांकि, ऐसा कहने के बाद, यह दावा करना उचित नहीं है कि "पागल ज्ञान" का अभ्यास पूर्व में अधिक स्वतंत्रता से किया जाता है, जहां "गुरु-सिद्धांत को समझा जाता है," और "मामला बिगड़ने" पर मुकदमों का इतना डर नहीं रहता!
ध्यान दें कि जहाँ एक ओर शिक्षण संस्थानों ने भी शिक्षकों और छात्रों के बीच

प्रासंगिक मनोवैज्ञानिक क्रियाओं के अस्तित्व को स्वीकार किया है, जिनसे छात्रों को सुरक्षा की आवश्यकता है, वहीं गुरुओं और शिष्यों के लिए स्थिति कहीं अधिक गंभीर है। क्योंकि, किसी प्रोफेसर या स्नातकोत्तर पर्यवेक्षक से अवांछित ध्यान प्राप्त करने वाला छात्र, कम से कम सैद्धांतिक रूप से (अर्थात्, "पुराने छात्रों के नेटवर्क" आदि के बावजूद), किसी अन्य कक्षा/पर्यवेक्षक में स्थानांतरित हो सकता है, या प्रोफेसर को दरकिनार करके डीन से शिकायत कर सकता है। हालाँकि, पीड़ित शिष्यों के लिए ऐसी कोई अपील अदालत नहीं है। बल्कि, केवल यह भय बना रहता है कि गुरु द्वारा माँगी गई किसी भी बात को "ना" कहने पर आप अवज्ञाकारी और अहंकारी हो रहे हैं, और इस प्रकार अपनी आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डाल रहे हैं। इसके अलावा, ऐसा माना जाता है कि किसी भी स्तर पर गुरु से संबंध तोड़ना आपको "वज्र नरक" में डाल सकता है, या यदि आप इस अवसर को "बर्बाद" कर देते हैं, तो आपको ज्ञान प्राप्ति का दूसरा अवसर मिलने से पहले "जन्मों तक पृथ्वी पर भटकना" पड़ सकता है।
स्पष्टतः, कोई भी प्रोफेसर, स्नातक पर्यवेक्षक या नियोक्ता यह विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता कि उसके साथ सोना किसी "ईश्वरीय योजना" का हिस्सा है। दूसरी ओर, गुरु-प्रतिभाशाली लोग नियमित रूप से यही विचार आगे बढ़ाते हैं। अतः, धर्मनिरपेक्ष वर्गों पर जो भी प्रतिबंध लगाए जाएं, वे 412 गुरुओं को दरकिनार करना पर भी लागू होने चाहिए।

गुरु-प्रतिभाशाली व्यक्तियों के मामले में तो यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि, उनके माध्यम से "ईश्वर की वाणी" बोलने, आज्ञापालन की बाध्यताओं और अपील की किसी भी अदालत के अभाव के कारण, आध्यात्मिक जगत में सत्ता का असंतुलन शैक्षणिक जगत की तुलना में कहीं अधिक है।
पिता तुल्य गुरु और उनके शिष्यों के बीच यौन संबंध को व्यापक रूप से अनाचार या बाल शोषण के समान मनोवैज्ञानिक स्थिति का माना जाता है। इसलिए, ऐसे कृत्यों पर आपत्ति जताने के लिए किसी को किसी कट्टरपंथी विचारधारा में जकड़े रहने की आवश्यकता नहीं है, चाहे वे आध्यात्मिक या धर्मनिरपेक्ष संदर्भों में घटित हों। इसी (कथित, आध्यात्मिक) दुर्व्यवहार के प्रति "अत्यधिक सहनशीलता" के समर्थक भी इस विचार के पीछे सुरक्षित रूप से नहीं छिप सकते कि ऐसी आपत्तियाँ केवल इसलिए उत्पन्न होती हैं क्योंकि अनुयायी अपने गुरुओं को "गर्दन के नीचे से मृत"

देखना चाहते हैं।
उत्साहजनक रूप से, कैलिफोर्निया योग शिक्षक संघ संहिता
आचरण संहिता (लासटर, 1995) ने एक दशक पहले ही अपने सदस्यों के व्यवहार पर न्यूनतम प्रासंगिक प्रतिबंधों को प्रशंसनीय रूप से स्पष्ट किया था, हालांकि यह केवल अपूर्ण शिक्षकों और उनके छात्रों से संबंधित थी, न कि "दिव्य, अचूक" गुरुओं और उनके शिष्यों से। वहां, उन्होंने स्वीकार किया कि "छात्रों के साथ यौन व्यवहार या उत्पीड़न के सभी रूप अनैतिक हैं, भले ही कोई छात्र ऐसे व्यवहार या संलिप्तता के लिए आमंत्रित करे या सहमति दे।" उन्होंने आगे निर्देश दिया:
हम सार्वजनिक रूप से ऐसे बयान नहीं देते हैं जिनसे असामान्य संकेत मिलते हों।
अद्वितीय या अपनी तरह की अनूठी क्षमताएं, जिनमें गलत बयानी भी शामिल है-
सनसनीखेज, अतिशयोक्तिपूर्ण या सतहीपन के माध्यम से।
ऐसी कामना की जाती है कि जो अक्सर "अद्वितीय" और "सर्वश्रेष्ठ" होता है,
संसार में "प्रबुद्ध अवतार" चीजों को उतनी ही स्पष्टता से देख सकते हैं—अर्थात्, उतनी ही बुनियादी, सामान्य ज्ञान वाली मनोविज्ञान और ईमानदारी के साथ—जितनी कि इसके "अप्रबुद्ध, मात्र नश्वर" शिक्षक देखते हैं। लंबी और घुमावदार आध्यात्मिक राह पर बहुत कम गंदगी ("और देवी") बिखरी होगी।
* * *
किसी तथाकथित पंथ को छोड़ना किसी की मृत्यु का अनुभव करने जैसा है।
प्रियजन। शोक की एक प्रक्रिया होती है जिसमें समय लगता है।
भ्रम, हानि, अपराधबोध और निराशा की भावनाओं को समझने का समय आ गया है।
प्रतिबद्धता, क्रोध और अविश्वास उत्पन्न हुआ (बेली और
बेली, 2003)।
आध्यात्मिक और भावनात्मक प्रतिबद्धताओं से खुद को अलग करने में आने वाली कठिनाइयों के प्रत्यक्ष विवरण के लिए, उस कठिन परीक्षा के बाद 413 देखें

किसी भी "महान ऋषि" के चरणों में ज्ञान प्राप्ति, साथ ही आश्रम के वातावरण में होने वाले सत्ता के खेल और हेरफेर के व्यक्तिगत विवरणों के संदर्भ में, मुझे निम्नलिखित पुस्तकें उत्कृष्ट लगीं:
• माइकल डाउनिंग (2001), शूज़ आउटसाइड द डोर—सैन

फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर, रिचर्ड बेकर (यह पुस्तक केवल अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के लिए ही पढ़ने लायक है)

• स्टीफन बटरफील्ड (1994), द डबल मिरर—चोग्याम ट्रुंगपा

• पीटर मारिन (1995), "आध्यात्मिक आज्ञाकारिता," फ्रीडम एंड में इसकी असंतुष्टि—चोग्याम ट्रुंगपा

• सत्य भारती फ्रैंकलिन (1992), स्वर्ग का वादा—रजनीश

• ह्यू मिल्ने (1986), भगवान: वह भगवान जो असफल रहा—राज-साँस

• केट स्ट्रेली (1987), द अल्टीमेट गेम—रजनीश

• आंद्रे वैन डेर ब्राक (2003), एनलाइटनमेंट ब्लूज़-एंड्रयू कोहेन

• लूना टार्लो (1997), ईश्वर की माँ—एंड्रयू कोहेन

• मार्था शेरिल (2000), द बुद्धा फ्रॉम ब्रुकलिन—जेत्सुनमा

• बारबरा और बेट्टी अंडरवुड (1979), होस्टेज टू हेवन—मूनिज़

• डेबोरा लेटन (1998), मोहक जहर—जिम जोन्स

• जॉन हबनर और लिंडसे ग्रुसन (1990), मंकी ऑन ए

हरे कृष्णा संप्रदाय को कथित तौर पर हत्यारा, मादक पदार्थों की तस्करी करने वाला, पत्नियों को पीटने वाला और बच्चों का यौन शोषण करने वाला एक विनाशकारी "पंथ" के रूप में उजागर किया गया है, जिससे हमें हमेशा बचने की चेतावनी दी जाती थी। फिर भी, हमने इसके बजाय उन्हें एक "वैकल्पिक धर्म" के रूप में खुले दिल से सहन करना और उनका बचाव करना चुना, जिसके साथ केवल "अलग" होने के कारण भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

"जियो और जीने दो," है ना?

तुलना करना:

जब मैंने लगभग दस साल पहले (यानी लगभग 1982 में) [कथित] पंथों के बारे में

बोलना शुरू किया, तो मैं वकीलों के एक बहुत छोटे समूह में से एक था, जिन्होंने 414 गुरुओं को उजागर किया

तथाकथित कट्टरपंथी समूहों द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजी आजादी के खिलाफ उठाई गई व्यापक चुनौतियों का समाधान करने के लिए तैयार थे। दरअसल, मंच का अधिकांश हिस्सा "नागरिक स्वतंत्रतावादी" विशेषज्ञों के एक मुखर, सुव्यवस्थित गुट के हाथों में चला गया था, जिन्होंने प्रथम संशोधन की अभेद्यता और तथाकथित नए लोगों के अधिकारों, कमजोरियों और जीवंतता पर विस्तार से चर्चा की।
धार्मिक आंदोलन (हर्बर्ट रोज़डेल, [लैंगोन,
1995])
• एमी वालेस (2003), जादूगर का शागिर्द—कार्लोस कास्टा-
नेडा, एक और "विश्व रक्षक," जो अपने अनुयायियों को क्रूरतापूर्वक अनुशासित करने में उतना ही दुखद रूप से मूर्ख था जितना कि हमने यहाँ देखे गए अन्य "रूड बॉयज़" रहे हैं। वॉलेस द्वारा कथित झूठ और अनकहे, कठोर नियमों के "कुशल साधनों" पर आधारित एक पागल समुदाय का जो विवरण दिया गया है, वह हमारी इस दयनीय प्रजाति में विश्वास खोने के लिए लगभग पर्याप्त है। न ही कास्टानेडा के स्वयं के प्रसिद्ध लेखन, जिनमें कथित याकी जादूगर डॉन जुआन का वर्णन है, सच्चाई की रोशनी में बेहतर साबित हुए।
जैसा कि समाजशास्त्री मार्सेलो ट्रुज़ी ने सबसे पहले कहा था, कास्टानेडा की किताबें पिल्टडाउन मैन के बाद सबसे बड़ा धोखा थीं (गार्डनर, 1999)।
जो भी व्यक्ति आश्रम/मठ के वातावरण में रह चुका है और उस अनुभव से उबरकर वास्तविक दुनिया की कम "बुराई" को समझ पाया है, उसे उपरोक्त सभी प्रत्यक्ष वृत्तांतों में अनेक समानताएँ मिलेंगी—जिनमें अंडरवुड का मूनियों के साथ बिताया समय और लेटन की जॉनस्टाउन से बाल-बाल बचने की रोमांचक कहानी शामिल है। जैसा कि हमने देखा है, आश्रमवासियों को नियंत्रण में रखने और उन्हें इस डर में जीने के लिए मजबूर करने की तकनीकें कि अगर वे आश्रम छोड़ देंगे तो उनके शरीर या आत्मा का क्या होगा, सभी मार्गों में एक समान हैं। यह बात हर मामले में शामिल विशिष्ट मान्यताओं पर निर्भर नहीं करती।
शिक्षण के "कुशल साधनों" के उपयोग में निहित पूर्ण पागलपन और अनुयायियों का

भयावह भीड़ मानसिकता में आसानी से परिवर्तित हो जाना, शेरिल की पुस्तक में और भी भयावह रूप से सामने आता है। उस पुस्तक के चयनित अध्याय ऑनलाइन उपलब्ध हैं, शेरिल की वेबसाइट पर।
(2000a)□ वहाँ का "महान आशीर्वाद" अध्याय "शुद्धिकरण करुणा" के नाम पर अक्सर कथित रूप से किए जाने वाले पागलपन का एक विशेष रूप से ज्ञानवर्धक/ दुखद दस्तावेजीकरण है। (आफ्टर द ऑर्डियल 415 के लिए)

वास्तविकता और स्तुतिगान के बीच का अंतर, उसकी तुलना करें-
मैकेन्ज़ी की [1995] 'री-बॉर्न इन द वेस्ट' में जेटसुनमा पर अध्याय के विरुद्ध एक तर्क प्रस्तुत करें। और फिर मैकेन्ज़ी द्वारा वर्णित अन्य सभी तुलकुओं पर समानुपातिक रूप से यही मिथक-विखंडन लागू करें। वह "शुद्धिकरण करुणा" एक बार फिर एक ऐसे तुलकुओं से आई है जिनकी आध्यात्मिक महानता को 80 के दशक के मध्य में विल्बर के स्वयं के पेनोर रिनपोचे द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता दी गई थी।
शिष्यों द्वारा गढ़े गए चौंकाने वाले तर्क भी स्पष्ट रूप से सामने आते हैं, जिनमें वे कथित हिंसक दुर्व्यवहारों को अपने लाभ के लिए बताते हैं। यह सब पुण्य और कर्म के बारे में हास्यास्पद रूप से विकृत विचारों के संदर्भ में होता है - जिनमें तुलकुओं का घरों, लकड़ी के पुलों और उतने ही बेजान अभिनेताओं के रूप में पुनर्जन्म लेना शामिल है। इसके अलावा, प्राकृतिक घटनाओं की हास्यास्पद रूप से अंधविश्वासी व्याख्याएं और वरिष्ठों के सामने किसी भी प्रतिज्ञा को तोड़ने की कैथोलिक-जैसी घृणित ज़िद भी ध्यान देने योग्य है। क्योंकि, स्वीकारोक्ति न करने का परिणाम यह है कि ऐसी प्रतिज्ञाएं कथित तौर पर हमेशा के लिए ठीक नहीं हो सकतीं। यानी, ऐसा माना जाता है कि ये बाधाएं पैदा करती हैं और "अनगिनत सजीव प्राणियों" के लिए अधिक पीड़ा का कारण बनती हैं, क्योंकि व्यक्ति स्वेच्छा से और जल्दी से सामने आकर उन्हें स्वीकार करने में विफल रहा है।
बहरहाल, ऊपर दी गई सभी विस्तृत प्रशंसापत्रों से जो मुख्य बात समझ में आती है, वह यह है कि यदि आपने एक बार किसी आध्यात्मिक समुदाय को छोड़ने का फैसला कर लिया है, तो उस पर कायम रहें और कभी वापस न लौटें, चाहे समुदाय आपसे रुकने या वापस आने की विनती ही क्यों न करे। (परिणामस्वरूप: आधी रात को बिना "अलविदा" कहे चले जाने से उन्हें आपको रोकने का मौका कम मिलता है।) लंबे

समय तक रुकने से हालात बेहतर नहीं होंगे, और जिस बेतुकेपन के कारण आपने छोड़ने का फैसला किया था, वह और भी बदतर हो जाएगा। इसके अलावा, इनमें से कोई भी समस्या केवल "आपके गुरु द्वारा भेजी गई परीक्षा" नहीं है, यह देखने के लिए कि आप कितने वफादार हैं, चाहे गुरु स्वयं या उनके समर्पित शिष्य आपको कुछ भी कहने की कोशिश करें।

किसी समुदाय में कुछ समय बिताने के बाद उसे छोड़ देने का मतलब है कि बचे हुए सदस्यों द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाना, और यह माना जाना कि आपने उस रिश्ते में अनुशासन का पालन न कर पाने के कारण समुदाय छोड़ दिया है। या फिर, इससे भी कहीं अधिक गंभीर आरोपों और/या हिंसा का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, यह अपनी स्वतंत्रता और (सचमुच) मानसिक शांति के लिए चुकाई जाने वाली एक छोटी सी कीमत है।

दरअसल, छुट्टी के बाद मिलने वाले व्यवहार के संबंध में...

औसत “दिव्य गुरु” की छवि: एंड्रयू हार्वे (2000) और उनके साथी ने मदर मीरा को “दुनिया को बचाने वाले अवतार” घोषित करने के कुछ ही समय बाद उनसे संबंध तोड़ लिया और सार्वजनिक रूप से उनका खंडन किया। 416 गुरुओं की छवि को उजागर करना

(ब्लैकर, 1996)। इसके बाद वे दावा करते हैं कि उन्हें निम्नलिखित भयावह अनुभवों का सामना करना पड़ा:

एक क्रूर, निर्मम और परिष्कृत व्यवस्था स्थापित की गई थी।

पूर्व “घनिष्ठ मित्रों” का एक समूह, जिसमें गुमनाम पत्र भी शामिल थे।

लगभग एक साल से जान से मारने की धमकियाँ, भयानक टेलीफोन उत्पीड़न-

एरिक को बदनाम करने के लिए न्यूयॉर्क के प्रकाशकों से मुलाकातें और

मेरे काम के सिलसिले में, मुझे सैन फ्रांसिस्को में मेरी नौकरी से निकालने की कोशिश की जा रही है।

फ्रांसिस्को, लगातार सार्वजनिक और निजी बदनामी—कॉम-

दरअसल, यह [तथाकथित] पंथ हिंसा, दानवीकरण का एक संपूर्ण मिश्रण है।

और विनाश का प्रयास...

मुझे दुर्व्यवहार के कई भयानक मामलों की जानकारी है जहाँ पूर्व-शिष्य...

इस या उस “मालिक” के लोग इतने डरे हुए हैं कि वे खुलकर बोलने की हिम्मत नहीं कर पाते।
रजनीश के पूर्व सदस्य (मिल्ने [1986]; फ्रैंकलिन [1992])
और मुक्तानंद (हैरिस, 1994) के आश्रमों ने, उदाहरण के तौर पर दो और उदाहरण देते हुए, ऐसी ही स्थितियों में अपनी सुरक्षा के लिए डर होने का दावा किया है।
दिलचस्प बात यह है कि मां जया सती भगवती (जोया) ने जाहिर तौर पर मां मीरा के खिलाफ एंड्रयू हार्वे के उत्पीड़न और समलैंगिकता विरोधी आरोपों को "बकवास" बताया है। हालांकि, उन्होंने हाल ही में ट्रुंगपा और रजनीश का बचाव भी किया है और उनके बारे में बात की है।
मुक्तानंद की अत्यधिक प्रशंसा (बोस्टॉक, 1998)। साथ ही, उन्होंने स्पष्ट रूप से राम दास को - जो उनके शाही, इतराते "हाथी चरणों" में "लड़ने वाला पिल्ला" है - 70 के दशक में उनके खिलाफ बोलने के लिए "क्षमा" कर दिया है।
एक बार फिर, www.kashiashram.com वेबसाइट उनकी सार्वजनिक छवि और उनके द्वारा किए जा रहे "निस्वार्थ, दयालु" कार्यों के दावों को एक मूल्यवान रूप से सही साबित करती है।
आदि दा के समुदाय द्वारा पूर्व सदस्यों के साथ कथित तौर पर किए गए व्यवहार से संबंधित परेशान करने वाले विवरण ज्वेल वेबसाइट पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं।
(1999)। उनके बताए गए व्यवहारों का एक अच्छा सारांश सामान्यतः इस प्रकार हो सकता है:
ThisTruth (2001) पर ऑनलाइन पाया गया।
वेकफील्ड (1991) की प्रस्तावना भी देखें, जिसमें उनके कथित भयावह अनुभवों का वर्णन है, जिनमें कथित तौर पर जान से मारने की धमकियाँ भी शामिल हैं।
इंग ने साइंटोलॉजी छोड़ दी। इसके अलावा, वेकफील्ड (1996) का अध्याय 9, और मालको (1970) के उपसंहार में इसी तरह के आरोपों का उल्लेख किया गया है।
और फिर भी, इन सब के बाद भी, मुक्तानंद का हवाला देने वाले कैपलान, 2001 में भी लिख सकते थे:
कभी-कभार जिम जोन्स, चार्ल्स मैनसन या मार- जैसे लोग भी देखने को मिलते हैं।
एप्पलव्हाइट (स्वर्ग का द्वार) जो आध्यात्मिकता में आता है-
वास्तविक दृश्य और इससे लोगों के जीवन को शारीरिक खतरा उत्पन्न होता है।

जिन छात्रों को वे बचाने का दावा करते हैं। लेकिन ये - इस कठिन परीक्षा के बाद
417

आध्यात्मिकता के अधिकांश पहलुओं की तुलना में ये दृष्टिकोण नगण्य हैं।
वास्तविक स्कूलों और शिक्षकों से शारीरिक रूप से कोई खतरा नहीं है।
अपने छात्रों को नुकसान पहुंचाना।
लेकिन पिछले बीस वर्षों से उपलब्ध ठोस आंकड़े ठीक इसके विपरीत तर्क देते हैं। क्योंकि, जैसा कि कॉनवे और सीगलमैन ने 1982 में रिपोर्ट किया था, अड़तालीस अलग-अलग समूहों के चार सौ से अधिक पूर्व "पंथ" सदस्यों के सर्वेक्षण के आधार पर:
लगभग रिपोर्ट किए गए शारीरिक दंड की घटनाओं के आधार पर...
लगभग पाँच में से एक उत्तरदाता ने बताया कि इसमें मारपीट, भुखमरी आदि शामिल थे।
शारीरिक बंधन, ठंडे पानी से स्नान और जलाऊ जल और लंबे समय तक
घंटों का अपमानजनक और नीच श्रम।
कॉनवे और सीगलमैन के अध्ययन में सामने आए ये कथित नकारात्मक प्रभाव केवल यही नहीं थे। बल्कि, लगभग 20% उत्तरदाताओं को दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा, जबकि तीन में से दो को स्थायी भावनात्मक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा, 14% ने दावा किया कि अपने-अपने संगठनों से अलग होने के बाद उन्हें आठ साल तक मनोरोग संबंधी भ्रम (जैसे मतिभ्रम) का सामना करना पड़ा। साथ ही, सर्वेक्षण में शामिल प्रत्येक पांच पूर्व सदस्यों में से एक से अधिक को संगठन छोड़ने के बाद पुनर्वास अवधि के दौरान आत्महत्या या अन्य आत्म-विनाशकारी भावनाएं महसूस हुईं - यह अवधि औसतन सोलह महीने से अधिक थी।
दिलचस्प बात यह है कि पहले तीन से छह महीनों के बाद, "पंथ अनुष्ठान" और विचारधारा के प्रभाव का समूह छोड़ने के बाद सदस्य द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों से कोई संबंध नहीं था। यानी, (विशेषकर आवासीय) सदस्यता के "अधिकांश नुकसान पहले कुछ महीनों में ही हो जाता है"।
* * *

“अपमानित उद्धारकर्ता का क्रोध” आम तौर पर उनके विश्व-रक्षक समूह के पूर्व सदस्यों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि उन तीसरे पक्षों तक भी फैलता है जो हमारी दुनिया के आध्यात्मिक संगठनों के बारे में बहुत अधिक अप्रिय विवरण देने का साहस करते हैं। उपर्युक्त दिवंगत “पंथ मनोवैज्ञानिक-
"भूविज्ञान" विशेषज्ञ मार्गरेट सिंगर (2003) ने जाहिर तौर पर इस बात का अनुभव खुद ही कठिन तरीके से किया:
[Cults in Our Midst] के पहले संस्करण के प्रकाशित होने के बाद से, विभिन्न-
कुछ तथाकथित पंथों ने लोगों को घर की घंटी बजाने के लिए भेजा है।
रात के हर समय मेरे घर में, अक्सर धमकी भरे 418 गुरुओं को छीनते हुए

मेरे मेलबॉक्स में नोट्स मिले, फिर वे अंधेरे में भाग गए जैसे
हैलोवीन की रात शरारती बच्चे...
इस बचकाने स्तर के उत्पीड़न के अलावा, एक कानून-
मेरे और किताब के खिलाफ मुकदमा दायर किया गया था... जिसके बारे में मुझे पूरा यकीन है
इसका उद्देश्य केवल मुझे डराना और चुप कराना था।
और मेरा काम। मेरा मानना है कि यह मुकदमा भी एक प्रयास था।
अपने अकादमिक और नैदानिक सहयोगियों को प्रकाशन से रोकने के लिए-
इसी तरह के शोध और विश्लेषण को प्रकाशित करना [कथित] पंथों के बारे में
संयुक्त राज्य अमेरिका और तथाकथित पंथों के खिलाफ गवाही देने से,
मैं वर्तमान में चल रहे कई आपराधिक और दीवानी अदालती मामलों में ऐसा करता हूँ-
कथित पंथों और उनके पूर्व पीड़ितों के बीच का रास्ता।
स्टीवन हसन (2000) ने अपने स्वयं के तुलनीय अनुभवों की रिपोर्ट की:
जब 'कंबलिंग कल्ट माइंड कंट्रोल' पहली बार प्रकाशित हुई थी
1988 में, मैं [तथाकथित] के सबसे प्रमुख लक्ष्यों में से एक बन गया।
पंथों द्वारा चलाए जा रहे दुष्प्रचार अभियान। [कथित तौर पर] पंथों के नेता हैं-
वे लोग जो अपने सदस्यों को बोलने की बुराइयों के बारे में उपदेश देते हैं
मुझे और यहाँ तक कि किताब पढ़ने पर भी। साइंटोलॉजी में एक "मृत" अवधारणा है।
"एजेंट पैक" मेरे बारे में। इस फ़ोल्डर में सामग्री है-

मेरे चरित्र को धूमिल करने के लिए—मुझे "निष्क्रिय" करने के लिए हस्ताक्षर किए गए।
सदस्यों के मन में एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में। अनगिनत बार, मैंने
उन्हें मुकदमों की धमकी दी गई है और यहां तक कि उन्हें जान से मारने की धमकी भी मिली है।
[कथित] पंथ के सदस्यों से धमकियाँ। कई समूह, जैसे कि
मूनियों, अपने सदस्यों को बता दो कि मैं शैतान का दूत हूँ।
पिछले बीस वर्षों से, [डेविड] लेन की पुस्तकें और लेख
कथित साहित्यिक चोरी, झूठ, विसंगतियों और
कई नए धार्मिक आंदोलनों के घोटालों ने
सच्चे विश्वासियों के बीच आक्रोश पैदा हो गया। विभिन्न [अल-
कथित तौर पर कुछ पंथों ने जान से मारने की धमकियां दी हैं और लिखित रूप में भी धमकी दी है।
उसे कंकालों वाले पत्र मिले, जो उसके शरीर के अलग-अलग हिस्सों में टूटे हुए थे।
उन्होंने उसे धमकाया, मुकदमे की धमकी दी और कुल मिलाकर उसे परेशान किया...
उन्होंने मेरे बारे में पत्र भेजे और दावा किया कि मैं नकारात्मक छवि पेश कर रहा था।
वह शक्ति, जिसकी भविष्यवाणी मानव जाति के आरंभ से ही की गई थी।
[लेन कहते हैं] (बेलमी, 1995)।
थियोसोफिस्टों के लिए यह निष्कर्ष निकालना आसान था कि कोई भी व्यक्ति जो
उनसे असहमत होना, चाहे इरादा कितना भी अच्छा क्यों न हो, काम कर रहा था
अंधकार की शक्तियों की सेवा में (वाशिंगटन, 1995)।
जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, एसआरएफ के लिए वर्तमान लेखक को उपरोक्त "अंधकारमय परीक्षा 419" की तरह न मानना असंगत होगा।

"बल," शाब्दिक रूप से माया का एक भ्रामक उपकरण है - शैतानी ब्रह्मांडीय भ्रामक शक्ति, या शैतान।
दुर्भाग्य से, सिंगर ने आध्यात्मिक समुदायों में शामिल होने और बने रहने के कारणों की अपनी सूची में सत्य की वास्तविक और वैध खोज को कम करके आंका। इसके बजाय, उन्होंने उन लोगों पर ध्यान केंद्रित किया जो व्यक्तिगत हानि, अवसाद,

अकेलेपन या असुरक्षा आदि के बाद "अर्थ की तलाश" में धर्म परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते हैं। हालांकि, मैंने स्वयं उस "खोजकर्ता मिथक" को जिया है, और योगानंद के किसी भी अनुयायी द्वारा मुझ पर किसी भी प्रकार का धर्म परिवर्तन नहीं किया गया है। इसलिए मैं सिंगर द्वारा उस सिद्धांत के व्यापक खंडन को गंभीरता से नहीं ले सकता। न ही बटरफील्ड, वैन डेर ब्राक, मिल्ने, फ्रैंकलिन या स्ट्रेली के प्रत्यक्ष वृत्तांतों में ऐसा कुछ मिलता है जो सिंगर के संबंधित संगठनों (जैसे: टुंगपा, कोहेन और रजनीश) द्वारा "सक्रिय, परिष्कृत और निरंतर धर्म परिवर्तन" के दावे से मेल खाता हो। इसी प्रकार, गुरजिएफ सोसाइटी और उनके नाम पर स्थापित संस्थान "कभी विज्ञापन नहीं करते और
कभी भर्ती न करें" (वाशिंगटन, 1995)।
आदि दा के समूह के बारे में भी यही सच है, कम से कम गैर-मशहूर हस्तियों के संबंध में: "[जहाँ तक मुझे पता है, समुदाय ने कभी सक्रिय रूप से भर्ती नहीं की है, बल्कि लोगों को खुद आकर्षित होने देना पसंद किया है।"
दा फ्री जॉन के लेखन" (लोवे, 1996)। हालाँकि, लेटन के पीपुल्स टेम्पल में शामिल होने के अनुभवों में स्वयं जोन्स की ओर से चापलूसी भरा ध्यान/दबाव शामिल था। अंडरवुड (1979) और हसन (1990) द्वारा मूनियों के साथ जुड़ने के अनुभव भी सिंगर के कथनों से काफी हद तक मेल खाते हैं।
किसी भी स्थिति में, उन गैर-पारंपरिक संगठनों के लिए जो सक्रिय रूप से भर्ती करते हैं, विश्वविद्यालय परिसर ही मुख्य केंद्र बिंदु बने रहते हैं:
विश्वविद्यालय के छात्र अक्सर भर्ती के लिए आसान लक्ष्य होते हैं।
संभावित रूप से हानिकारक समूहों के लिए (स्मिथ, 2004)।
कॉलेज परिसर अधिकांश [अल-] के मुख्य भर्ती केंद्र हैं।
किंवदंती] विनाशकारी पंथ, और लगभग हर कॉलेज परिसर
देश में इन लोगों का आना-जाना लगा हुआ है और यह सिलसिला जारी है।
संगठनों....
उदाहरण के लिए, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय—बर्कले में,
अनुमान है कि कम से कम दो सौ अलग-अलग धार्मिक
कैंपस के अंदर और बाहर स्थित संप्रदाय 30,000 लोगों में से भर्ती कर रहे हैं।
छात्र परिसर (रुडिन में, 1996)।

420 गुरुओं का पर्दाफाश

1980 में ज़िम्बार्डो द्वारा एक हज़ार से अधिक लोगों पर किए गए सर्वेक्षण में...
सैन फ्रांसिस्को खाड़ी क्षेत्र में रेत हाई स्कूल के छात्र
54% लोगों ने बताया कि एक तथाकथित पंथ ने उन्हें भर्ती करने का प्रयास किया था।
और 40% ने कहा कि उन्होंने कई बार हमले के प्रयास का सामना किया है (रॉस, 2002बी)।
दरअसल, एक सर्वेक्षण (सिंगर, 2003) में पाया गया कि पूर्व "पंथ" सदस्यों में से 43% उस समय छात्र (हाई स्कूल या कॉलेज में) थे जब वे अपने-अपने संगठनों से जुड़े थे। इसके अलावा, उन छात्रों में से 38% ने अपने समूहों में शामिल होने के बाद स्कूल छोड़ दिया।
कुछ पर्यवेक्षक रिचर्ड डेलगाडो के इरादे के आह्वान का समर्थन करते हैं...
तथाकथित पंथों के बारे में व्यापक जन शिक्षा अभियान...
डॉ. लेस्टर रोसेन्थल... नौवें, दसवें और ग्यारहवें पर विश्वास करते हैं
मूल्यांकनकर्ताओं को विद्यालय में इस विषय पर पाठ्यक्रम लेना अनिवार्य होना चाहिए कि कैसे
ये [तथाकथित] पंथ भर्ती करते हैं और संचालित होते हैं (रुडिन और रुडिन, 1980).
विशेष रूप से युवाओं की शिक्षा की सख्त जरूरत के अलावा, निम्नलिखित उचित सुझाव भी दिए गए हैं:
अनुसंधान और उपचार के लिए संघीय निधि आवंटित की जानी चाहिए।
तथाकथित मन नियंत्रण पीड़ितों का उपचार (हसन, 1990)।
सरकार जागरूकता बढ़ाने के लिए एक अभियान शुरू कर सकती है-
तथाकथित पंथों के खतरों के बारे में जागरूकता, जैसा कि इसने किया है
धूम्रपान, सीट बेल्ट और शराब पीकर गाड़ी चलाने के लिए (हसन, 2000)।
प्रोफेसर रिचर्ड डेलगाडो का दावा है कि कानूनी स्थिति
[कथित] धार्मिक पंथों का विश्लेषण संदर्भ के भीतर किया जाना चाहिए।
संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के तेरहवें संशोधन का पाठ-

संविधान—जो गुलामी को प्रतिबंधित करता है—के भीतर नहीं, बल्कि उसके भीतर केवल प्रथम संशोधन के आधार पर। उनका मानना है कि कुछ स्थितियों में [तथाकथित] पंथ के सदस्य वास्तव में एक प्रकार की गुलामी की स्थिति का गठन करते हैं।
एरी (रुडिन और रुडिन, 1980)।
अमेरिकी अदालतों ने बार-बार फैसला सुनाया है कि प्रथम संशोधन
यह केवल धार्मिक विश्वास की असीमित स्वतंत्रता प्रदान करता है, न कि
उन मान्यताओं का पालन करने की असीमित स्वतंत्रता, ऐसे तरीकों से जो संभव हो
मौजूदा कानूनों का उल्लंघन करना या स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करना
व्यक्तियों या समाज का (कॉनवे और सीगलमैन, 1982)।
उस कठिन अनुभव के बाद 421

किसी संगठन में प्रवेश पाने के तरीके गैर-धर्म प्रचारक "सच्चे संघों" और भर्ती-आधारित गैर-पारंपरिक संगठनों में भिन्न हो सकते हैं। फिर भी, एक बार अंदर आ जाने पर, कम वेतन पर लंबे समय तक काम करना पड़ता है, एक ऐसे स्वामी की "गुलामी" में रहना पड़ता है जिसके आदेशों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता, और ऐसे में बाहर निकलना उतना ही मुश्किल होता है। यह बात तब भी सच है जब दमनकारी वातावरण से निकलने का मतलब "शैतान के प्रभाव में आना", "विपदाओं का पीछा करना" या बस खुद को एक "बुरा शिष्य"—एक कमजोर व्यक्ति जो "मुश्किलों का सामना नहीं कर सकता"—के रूप में साबित करने का जोखिम उठाना हो।
* * *
मेरे मामले में, हिडन वैली छोड़ने के बाद, मेरा उस भिक्षु (एक अलग संप्रदाय के) से संपर्क हुआ, जिसने मेरे द्वारा खाली किए गए पद और कार्यक्षेत्र का कार्यभार संभाला था। तब मैंने उसे उस संगठन की समस्याओं के बारे में सूचित करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, रसेल (1999) में रिपोर्ट किया गया है।
उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?
“अगर कुछ बहुत गलत हो रहा होता, तो योगानंद बीच में आकर हस्तक्षेप करते। तब तक, गुरु शायद ऊपर से अपने शिष्यों की कमियों पर हंस रहे होते। इस बीच, हमें बस

खुद को सुधारने पर ध्यान देना चाहिए, और ऐसी बातों की चिंता नहीं करनी चाहिए।" या इसी तरह के कुछ शब्द।

ओह! ऐसी "बुद्धि" के साथ अज्ञानता की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसी "करुणा" के साथ कठोरता की कोई आवश्यकता नहीं है। आखिर, हमारे संसार के गुरु-पुरुषों और संगठनों के पागलपन की ओर धीरे-धीरे बढ़ते जाने के इस दौर में, ईश्वर या "सर्वज्ञ" गुरुओं की संबंधित पीढ़ी ने कथित बाल यौन शोषण, आध्यात्मिक अनाचार, गंभीर मानसिक और शारीरिक दुर्व्यवहार, या इससे भी बदतर कृत्यों को रोकने के लिए कब हस्तक्षेप किया? यहाँ तक कि यीशु ने कैथोलिक चर्च में वेदी के लड़कों के साथ अप्राकृतिक यौन संबंध को रोकने के लिए कब हस्तक्षेप किया? और क्या अन्य गुरु-पुरुषों को अपने नाम पर किए गए दुर्व्यवहारों को रोकने में अधिक रुचि होगी, या वे ऐसा करने में सक्षम होंगे? और यदि वे हस्तक्षेप नहीं करते हैं, तो "सब कुछ तुम्हारे अपने फायदे के लिए ठीक चल रहा है," तो "झुक जाओ, यह आ रहा है"?

ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे जहर दिया गया था और/या जानबूझकर अधिक मात्रा में सेवन कराया गया था।

रजनीश के आश्रम में नशा करना तो सरासर असंभव था।

मेरा मन...

मैंने हर बात को अक्षरशः सच मान लिया।

मैंने जिन गुप्त उद्देश्यों की तलाश की, वे आध्यात्मिक थे.... सब कुछ था

जैसा होना चाहिए वैसा ही हो रहा है। यह हमेशा से होता आया है (फ्रैंकलिन, 1992)। 422 गुरुओं का सार उजागर करना

रजनीश का शिष्य बनने के लिए आपको यह मानना पड़ता था कि हर-

जो कुछ भी हुआ वह शाब्दिक या रहस्यमय रूप से गुरु की इच्छा थी।

यदि कुछ गलत, अन्यायपूर्ण या मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता हो-

ये तो तुम्हारी दूरदृष्टि की कमी थी; गुरु की दृष्टि तो कुछ और ही थी।

व्यापक दृष्टि (फिट्ज़गेराल्ड, 1986)।

यह रवैया, निःसंदेह, रजनीश के लिए कोई विचित्र या रोग संबंधी बात नहीं थी, बल्कि यह गुरु-शिष्य संबंध का सार है, चाहे वह कृषि प्रधान भारत और तिब्बत में हो या उत्तर आधुनिक पश्चिम में।

क्या आपको लगता है कि आपका "दिव्य प्रेममय, सर्वज्ञानी" गुरु आपकी रक्षा कर रहा है, और सब कुछ हमेशा आपके सर्वोत्तम हित में हो रहा है? यह बात लीसा मैकफर्सन को बताइए।

ओह, आप ऐसा नहीं कर सकते: वह मर चुकी है।

* * *

हम इस विचार का सहारा नहीं ले सकते कि यहाँ जिन व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है, वे मात्र "झूठे शिक्षक" हैं, और वास्तव में प्रबुद्ध व्यक्ति इतना बुरा व्यवहार नहीं करेंगे। न ही समस्या केवल "भोले-भाले पश्चिमी लोगों" की है जो ऐसे गुरुओं का अनुसरण करते हैं जिन्हें "आध्यात्मिक पूर्व" में गंभीरता से नहीं लिया जाता, जैसा कि कभी-कभी गलत तरीके से सुझाव दिया जाता है। क्योंकि, यदि "वास्तविक गुरु" जैसी कोई चीज होती, तो विवेकानंद, तृंगपा, मुक्तानंद या योगानंद को ऐसा मानने में किसने संदेह किया होगा? ये सबसे बुरे गुरु नहीं हैं, बल्कि व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त सर्वश्रेष्ठ गुरुओं में से हैं! इसी प्रकार, रामकृष्ण भी स्पष्ट रूप से उन्हीं में से एक थे।

कुछ निर्विवाद भारतीय संत और ऋषि-मुनि-

तथाकथित स्वामी, गुरु, "प्रबुद्ध गुरुओं" की व्यापक महामारी...

हाल के समय के “महर्षि”, “भगवान” और इसी तरह के अन्य नामों का प्रयोग किया जाता है।

टाइम्स (ओल्डमीडो, 2004)।

इन सब बातों को देखने के बाद, दूरदर्शी और लोकतांत्रिक लेखक जॉर्ज ऑरवेल (1980) के दृष्टिकोण से सहानुभूति रखना आसान है:

जब तक दोष सिद्ध न हो जाए, संतों को हमेशा दोषी ही माना जाना चाहिए।

मासूम।

इन सभी व्यक्तियों के बारे में मुख्य बात यह नहीं है कि उनकी कोई दृष्टि वास्तविक थी या काल्पनिक। न ही यह कि उनका वास्तविक ज्ञान का स्तर उनके और उनके वफादार शिष्यों के दावों का दसवां हिस्सा भी है या नहीं। (यह अग्निपरीक्षा के बाद 423 है)

नहीं।) न ही हमारी चिंताओं को इस सुझाव से दूर किया जा सकता है कि इनमें से

किसी एक व्यक्ति के पास जाने में संकोच केवल "अहंकार के विनाश के भय" या गुरु के प्रति "आज्ञाकारिता की प्रकृति की गलतफहमी" पर आधारित है। न ही समस्या "आदर्श पिता/माता की छवि पर प्रक्षेपण/स्थानांतरण" या शिक्षक के चरित्र और व्यवहार का मूल्यांकन करते समय "मानवीय अपूर्णताओं के प्रति असहिष्णुता" है। (फिर से, ज़िम्बार्डो के जेल अध्ययन में इनमें से कोई भी समस्या मौजूद नहीं थी। फिर भी, वह एक ऐसा विषाक्त वातावरण बनाने से नहीं बच सके जो आश्रम समाज के बिल्कुल समानांतर है।)

हमें इस बात की चिंता करने की भी आवश्यकता नहीं है कि इनमें से किस संगठन को (पूर्व-व्यक्तिगत या पारलौकिक) "पंथ" कहा जाना चाहिए, या क्या उनके नियंत्रण के किसी भी तरीके का वर्णन करने के लिए "मस्तिष्क-धुन" जैसे भयावह/भयभीत करने वाले शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए। (हालांकि, जो कोई भी हमारे विश्व के कथित तौर पर "सुरक्षित" गुरु-प्रतिष्ठानों और आध्यात्मिक समुदायों द्वारा कथित रूप से उपयोग की जाने वाली रणनीतियों की तुलना मान्यता प्राप्त "समस्याग्रस्त" वातावरणों में अपनाई जाने वाली रणनीतियों से बुद्धिमानी से करना चाहता है, उसे कई महत्वपूर्ण समानताएं मिलेंगी। इसके लिए, डेनिस विन की [2000] द मैनिपुलेटेड माइंड और लेन ओक्स की [1997] प्रोफ़ेटिक करिश्मा उत्कृष्ट पुस्तकें हैं।)

बल्कि, इन "सर्वश्रेष्ठ" आंकड़ों के संबंध में भी पूछा जाने वाला मूल प्रश्न बस इतना है: क्या आप अपनी मानसिक और शारीरिक सेहत का भरोसा इनमें से किसी के भी भरोसे करेंगे?

* * *

“क्या आपके आध्यात्मिक गुरु एक प्रबुद्ध गुरु हैं? आप भी इस क्लब में शामिल हो जाइए, दोस्त।”

महर्षि. ट्रुंग्पा. मुक्तानंद. स्वामी राम. गुरुमाई. चिन्मय. जेत्सुनमा। एंड्रयू कोहेन. वर्नर एरहार्ड.

“क्या आपके आध्यात्मिक गुरु अवतार हैं? बहुत बढ़िया।”

विवेकानन्द. शिवानंद. अरबिंदो. दलाई लामा. बाबाजी. लाहिड़ी महाशय. श्री युक्तेश्वर. योगानंद. रामकृष्ण की पत्नी. अरबिंदो की माँ. आनंद मोयी माँ. माँ मीरा. माँ जया सती भगवती। एल. रॉन हबर्ड।

“क्या आपके आध्यात्मिक गुरु अवतार (मसीहा, गुरु आदि) हैं? अरे, मेरे भी तो हैं!”

रामकृष्ण. जिद्दू कृष्णमूर्ति. मेहर बाबा. योगी भजन. सत्य साईं बाबा. अवतार. रजनीश. कार्लोस कास्टानेडा. सन मायुंग मून. डेविड कोरेश. जिम जोन्स. चार्ल्स मैनसन.
यीशु मसीह।
"शिक्षक, श्मुरु।"

अध्याय XXX

इसे बनाएं
बेहतर

उसने जो कुछ भी माना था, उसमें से कुछ भी सच नहीं था, सिवाय सबसे झूठे विश्वासों के।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसने जिसे प्रकट सत्य समझ लिया था, वही सबसे ज्यादा मायने रखता था।
-फ्रांकोइस मौरियाक, माल्टावर्न

तो फिर इन सब बातों से आध्यात्मिकता और ज्ञानोदय का क्या अर्थ निकलता है?
सबसे पहले, योगी भजन के एक पूर्व अनुयायी ने उस गुरु के प्रतिबंधात्मक सामुदायिक वातावरण के बारे में बिल्कुल सही कहा है:
निश्चित रूप से मंत्रोच्चारण के वे सभी घंटों का मस्तिष्क-प्रलोभन और
ध्यान करना मेरे समय बिताने का इससे बुरा तरीका नहीं था।
टीवी देखना (के. खालसा, 1994)।
इसी प्रकार, यह तथ्य कि अधिकांश आश्रम केवल शाकाहारी भोजन प्रदान करते हैं, इस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। स्वयं लेखक, बीस वर्ष की आयु से शाकाहारी हैं। (देखें)
www.newveg.av.org, www.vegdining.com, www.foodrevolution.org,

www.veg.ca, लेन [1993] और जॉन रॉबिन्स [1987] का आहार एक नए के लिए
424
इसे बेहतर बनाएं 425

(अमेरिका।) इसमें कई वर्षों तक सख्त शाकाहारी (अंडे या डेयरी उत्पादों का सेवन नहीं करने वाला) आहार का पालन करना शामिल है।
दिलचस्प बात यह है कि मशहूर शाकाहारी रॉकर्स में संगीत जगत के कई सबसे रचनात्मक और जोशीले सितारे शामिल हैं: मिक जैगर, डेविड बॉवी, पीटर गेब्रियल और उनकी पूर्व प्रेमिका सिनीड "द एंटी-पोप" ओ'कॉनर, केट "वुथरिंग हाइट्स" बुश, एल्विस कॉस्टेलो, बॉब डायलन, बॉब मार्ले, डॉन "अमेरिकन पाई" मैकलीन, नताली मर्चेंट, स्टीवी निक्स और सारा मैकलैकलन। साथ ही, टॉम शॉल्ज़—4.8 जीपीए के साथ एमआईटी इंजीनियरिंग स्नातक, बोस्टन समूह के मास्टरमाइंड गिटारिस्ट/गीतकार—"गिटार गॉड" जेफ बेक, टॉम पेटी, ओज़ी ऑस्बोर्न, पॉल मैककार्टनी, जॉर्ज हैरिसन... रिंगो... और विडंबना यह है कि मीट लोफ भी।
कुछ लोग "कथित तौर पर अपर्याप्त शाकाहारी भोजन पर निर्भर रहने वाले मेहनती शिष्यों" या टेलीविजन के अभाव जैसी बातों पर ध्यान केंद्रित करना चुन सकते हैं, मानो ये किसी भी "पंथ जैसी" स्थिति की विनाशकारी "अजीबोगरीब" प्रकृति का हिस्सा हों। हालांकि, इससे दुनिया के आध्यात्मिक मार्गों की वास्तविक समस्याओं के प्रति बाकी आपत्तियां कमजोर पड़ जाती हैं। (स्पष्टीकरण: मैंने भी अपनी इच्छा से टीवी नहीं देखा है।)
परंपरागत और गैर-परंपरागत धर्मों के बीच कथित अंतर, वास्तव में, उतने स्पष्ट नहीं हैं जितना कोई मानना चाहेगा:
[टी] वह समुदाय जो अनायास ही अन के आसपास बन रहा है-
कोहेन को इस आधुनिक, भौतिकवादी समाज के बीच में चित्रित किया गया था।
यह परंपरा महान गुरुओं के अनुयायियों से इतनी मिलती-जुलती है।
प्राचीन काल का (जैसा कि [कोहेन, 1992] में प्रशंसात्मक रूप से कहा गया है)।
इसमें कोई संदेह नहीं कि यह दावा सच था, क्योंकि कोहेन ने विश्व इतिहास में अपनी आसानी से भुला दी जाने वाली भूमिका से पहले निभाई गई अनगिनत, अधिक

उल्लेखनीय गुरु-भूमिकाओं को दोहराया था। लेकिन कोहेन के भीतर और आसपास की रिपोर्ट की गई समस्याओं से पीछे की ओर पढ़कर, पहले के पुरातन समुदायों में भी इसी तरह की कमियों को देखना भी सही है।
ईसाई धर्म पर उसके पहले शताब्दी के अधिकांश साहित्य में
अस्तित्व प्रारंभिक ईसाइयों को समग्रतावादी और स्वायत्त दृष्टिकोण से चित्रित करता है।
सत्तावादी शब्दों में (रॉबिन्स और एंथोनी, 1982)।
आश्चर्यजनक रूप से, एंथनी और रॉबिंस इसका इस्तेमाल दुनिया के सत्तावादी "ईश्वर-पुरुषों" को बिना किसी रोक-टोक के काम करने देने के पक्ष में तर्क के रूप में करते हैं। आख़िरकार, कैथोलिक चर्च इतना सफल रहा है... 426 गुरुओं का सार छीनना

* * *

एक दर्जन या उससे अधिक शिष्यों और एक गुरु-समान व्यक्ति की स्थिति में, अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक गतिशीलता के कारण यह बात काफी हद तक अप्रासंगिक हो जाती है कि वे जिस "एकमात्र सच्चे/सर्वश्रेष्ठ गुरु" का श्रद्धापूर्वक अनुसरण कर रहे हैं, वह यीशु, रजनीश या आदि दा उद्धारकर्ता आदि हैं। न ही कई शताब्दियों या सहस्राब्दियों के सांस्कृतिक आत्मसात्करण के बाद उन विभिन्न गुरुओं के इर्द-गिर्द बने संगठन विशेष रूप से भिन्न रह जाएंगे। इसके अलावा, चाहे पसंद हो या ना हो, आदि दा के शिष्य उनके बारे में जो मानते हैं, या कोहेन के अनुयायी उनकी कथित "पूर्णता" और मोक्षदायक क्षमता को जो स्वीकार करते हैं, या जो मैं कभी योगानंद के बारे में मानता था, वह कहीं से भी उतना हास्यास्पद नहीं है जितना कि ईसाई यीशु के बारे में मानते हैं।
या फिर, एल. रॉन हबर्ड की ज़ेनू और टीजीक की कहानियों की तुलना बाइबिल में वर्णित अदन के बगीचे और मानव के पतन से करें। दोनों पक्षों को समान रूप से शाब्दिक रूप से लें, तो (असंभवता) के संदर्भ में वास्तव में उनमें से किसी एक को चुनना मुश्किल है। इसी तरह, इस विचार पर गौर करें कि ईश्वर किसी पैगंबर या लोगों के समूह को यह बताएगा कि उन्हें भोजन कैसे तैयार करना चाहिए ताकि वह ईश्वर को स्वीकार्य हो। यदि यह धारणा किसी "स्वीकार्य," पारंपरिक संदर्भ में प्रस्तुत न की जाए, तो इसे कट्टरपंथी निरर्थकता की पराकाष्ठा माना जाएगा। वास्तव में, यह

शाकाहार से जुड़ी किसी भी "अजीबोगरीब" बात से कहीं अधिक है। फिर भी, आज भी कोषेर खाद्य पदार्थ उसी तरह उत्पादित होते हैं, एक विशेष तरीके से...
यहां तक कि पासओवर के लिए कोक® का विशेष संस्करण भी बेचा जा रहा है (अल्टर, 2004)।
यह बात भी उतनी ही स्पष्ट है कि लोगों को ऐसे विचारों पर पूरी तरह से विश्वास दिलाने के लिए "दिमाग धोने" जैसी कोई चीज़ ज़रूरी नहीं है, जो वास्तविकता में बिल्कुल बेतुके लगते हैं। वास्तव में, जो लोग पहले से ही किसी एक पक्ष से जुड़े नहीं हैं, उनके लिए यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि यीशु मसीह को ईश्वर का एकमात्र पुत्र मानना उतना ही सामान्य है जितना कि किसी आध्यात्मिक गुरु और उनकी पत्नी को मानवता का "माता-पिता" मानना। फिर भी, ऐसा दावा किया जाता है कि बाद वाले विश्वासों को धीरे-धीरे और धोखे से, जानकारी छुपाकर, अत्यधिक प्रेम-प्रसंग, नींद की कमी और अन्य "मन को नियंत्रित करने" की तकनीकों के माध्यम से पैदा किया जाता है। दूसरी ओर, पहला "तर्कसंगत" भ्रम पूरी तरह से स्वाभाविक और बिना किसी दबाव के होता है, और इसके कारण होने वाले परिवर्तनों का हमारे समाज के बड़े हिस्से द्वारा सक्रिय रूप से स्वागत भी किया जाता है।
यह विचार कि "मुझे पहले इस तरह से 'दिमाग धोकर' यह सोचने पर मजबूर किया गया था कि कोई गुरु मानवता का उद्धारकर्ता है, लेकिन अब मैं इतना ठीक हो गया हूँ कि स्पष्ट रूप से सोच सकता हूँ, और मुझे एहसास हुआ है कि यीशु ही उद्धारकर्ता हैं," पाठक को पूरी तरह से हास्यास्पद लग भी सकता है और नहीं भी। हालाँकि, यह इस बात की भी एक आंखें खोलने वाली झलक है कि कैसे MAKE IT BETTER 427

सबसे हास्यास्पद विचारों को भी पूरी तरह से "सामान्य" और "सुरक्षित" माना जा सकता है, यदि पर्याप्त लोग उन पर विश्वास करते हों।
इसके विपरीत, आप सुरक्षित और पारंपरिक रूप से यहूदी हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, और पवित्र ग्रंथों के आधार पर विश्वास कर सकते हैं जो लिखे गए हैं।
प्रासंगिक प्राचीन ऋषियों का मानना है कि मसीहा का आना अभी बाकी है (देखें रिच)।
(2001)। लेकिन फिर आपको कैसे पता चलेगा कि वह कोरिया से नहीं आएगा, उदाहरण के लिए? आप "झूठे" मसीहाओं को उस "सच्चे" मसीहा से कैसे अलग करेंगे

जिसके आने की आप किसी भी दिन उम्मीद कर रहे हैं? (और याद रखें: आम तौर पर, यदि आप "असली" मसीहा पर तब विश्वास नहीं करते जब वह "झूठे" मसीहाओं के समान दावे करता है, तो आपका उद्धार खतरे में है। इसलिए, सुरक्षित रहने के लिए विश्वास करना एक अच्छा कारण है।) क्या यह साईं बाबा की तरह चमत्कारी "चिन्हों और आश्चर्यों" को प्रकट करने से है? योगानंद की तरह दूसरों को शारीरिक रूप से ठीक करने के उनके दावों से? अपने बारे में किए गए दावों को कम करके आंकने से, यानी, "केवल सच्चा मसीहा ही अपने देवत्व को नकारता है"? उनके "दिव्य प्रेम" से, जैसा कि उनके शुरुआती अनुयायियों से लेकर अब तक सभी ने प्रमाणित किया है, जिनमें से सभी ने शायद जिम जोन्स या मसीहा जैसे एल्विस प्रेस्ली से बहने वाले उसी प्रेम और शांति को महसूस किया होगा (यानी, कल्पना की होगी/प्रक्षेपित किया होगा)? आपके पवित्र ग्रंथों में वर्णित विशेषताओं के आधार पर—जिनके लेखक निश्चित रूप से कोहेन, डा और विल्बर जैसे समकालीन लोगों की तुलना में अधिक बुद्धिमान या विश्वसनीय नहीं थे?

क्या "असली" मसीहा के पास मशीनगन बनाने की फैक्ट्री होगी? शायद नहीं; लेकिन फिर भी, जैसा कि सूर्य और चंद्रमा के हर भक्त को पता है, "ईश्वर रहस्यमयी तरीकों से काम करता है"—हम कौन होते हैं ईश्वर पर सवाल उठाने वाले, यहाँ तक कि उनके मानवीय रूपों में भी? अगर मसीहा पुराने भविष्यवक्ताओं की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हैं, तो शायद उन प्राचीन भविष्यवक्ताओं का अनुमान गलत था, है ना? इसके अलावा, यीशु ने स्वयं साहूकारों की मेजें उलट दीं, भले ही उन्होंने उसमें मशीनगन का इस्तेमाल न किया हो, एक सच्चे "रंबोधिसत्त्व" के रूप में—कुछ चीजों के लिए बल प्रयोग आवश्यक होता है।

अगर ईश्वर ने आदम और अब्राहम से बात की थी, तो वह रामकृष्ण और साईं बाबा से भी उतनी ही स्पष्टता से क्यों नहीं बात कर सकते? दूसरी ओर, अगर आज के चालीस सबसे बड़े "संतों" में से कोई भी वैसा नहीं है जैसा वे दावा करते हैं, तो आपको क्या लगता है कि हज़ारों साल पहले के उतने ही "प्रामाणिक" पैगंबरों के लिए हालात अलग थे? असल में, वैज्ञानिक पद्धति के अभाव और अंधविश्वास के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, उन प्राचीन हस्तियों की विश्वसनीयता और भी कम ही रही होगी।

चाहे कोई इस बात पर पूरी श्रद्धा से विश्वास करता हो कि दो हजार साल पहले एक मसीहा सांता क्लॉस रहता था, या यह कि सांता क्लॉस आज भी साक्षात अवतार है,

या यह कि असली सांता क्लॉस अभी आना बाकी है... (गुरुओं के सिद्धांतों को तोड़ते हुए)

भविष्य में आने वाली क्रिसमस की पूर्व संध्या के बारे में लंबे समय से प्रतीक्षित सभी धारणाएँ, एक ऐसी चीज़ में बचकानी मान्यताएँ हैं जिसका स्पष्ट रूप से कोई अस्तित्व नहीं है। इनमें से किसी एक काल्पनिक कहानी को विश्वसनीय मानना और बाकी को हास्यास्पद या "स्पष्ट रूप से अंधविश्वासपूर्ण" मानना, मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से स्वीकार्य नहीं होगा।
अगर कभी यह पता चलता है कि आपके स्थानीय मॉल/आश्रम में लाल सूट पहने मोटा आदमी "असली" सांता क्लॉस नहीं है, तो बेहतर होगा कि आप समझदारी से इस बात को समझ लें, बजाय इसके कि आप दुनिया भर के अन्य मॉलों में ईमानदारी से खोजबीन करें, इस विश्वास के साथ कि शायद उनमें से किसी एक में असली सांता क्लॉस मिल जाए।
इसके अलावा, अगर कोई आधी रात को चुपके से आपकी चिमनी से नीचे उतरता है और खुद को "परफेक्ट सांता क्लॉस मास्टर" बताते हुए आपकी पत्नी या बेटियों के साथ छेड़छाड़ करता है, तो आप इसके बारे में जानना चाहेंगे, है ना?
लेकिन असली सांता क्लॉस को कम से कम यह तो पता होगा कि सारी शरारती लड़कियाँ कहाँ रहती हैं। अब ये तो ऐसी सूची है जिसे दो बार जाँचने की ज़रूरत है!
* * *
किसी भी कथित संत द्वारा शाश्वत रूप से प्रबुद्ध, साक्षी चेतना की अनुभूति से कोई व्यक्ति कितना प्रभावित होता है, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वह आत्म-जागरूकता के स्रोत को क्या मानता है। अर्थात्, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या वह मानता है कि ऐसी साक्षी आत्म-जागरूकता आत्मा और उस अनुभूति का एक आवश्यक गुण है, या फिर इसे मस्तिष्क की मात्र जैव-रासायनिक प्रतिक्रियाओं से उत्पन्न मानता है। क्योंकि, बाद वाले मामले में, ऐसी "अनुभूति" वास्तव में उत्साहजनक नहीं होगी। फिर भी, दोनों ही स्थितियों में, ऐसी "मैं हूँ" जागरूकता व्यक्ति के मानसिक परिवेश में विचारों की उपस्थिति के साथ या उसके बिना विद्यमान होती है।
दिलचस्प बात यह है कि विल्बर स्वयं दावा करते हैं (2000a) कि वे स्वेच्छा से

निर्विकल्प समाधि में अल्फा, बीटा या थीटा तरंगों के बिना, फिर भी "अधिकतम डेल्टा" मस्तिष्क तरंगों के साथ "मस्तिष्क-मृत" अवस्था में प्रवेश कर सकते हैं। वास्तव में,
उन्होंने इंटीग्रल नेकेड (2004) वेबसाइट पर उस ईईजी का वीडियो पोस्ट किया है। संभवतः, उस घोषणा में कुछ भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा गया है, यानी यह माना जा सकता है कि उन्होंने मशीन को सही ढंग से जोड़ा है और परिणामों के साथ छेड़छाड़ नहीं की है। यदि ऐसा है, तो भी, उचित रूप से नियंत्रित परिस्थितियों में उस दावे के पैरासाइकोलॉजिकल घटक (यदि कोई हो) को प्रदर्शित करने से पर्याप्त लाभ हो सकता है।
जेम्स रैंडी के जेआरईएफ में, उनके पैरासाइकोलॉजिकल चैलेंज में उन्होंने पूरे दस लाख डॉलर जीते। (मेरा अपना मानना है कि ऐसी क्षमताएं योगियों द्वारा अपने दिल को तेजी से धड़काने और फिर यह दावा करने की पिछली घटनाओं के समान हो सकती हैं कि उन्होंने इसे बेहतर बनाया है 429)

हृदयगति को "रोक दिया" [देखें कोस्टलर, 1960]। यानी, वैध दावे भी संभवतः भौतिक शरीर की सरल, अनछुई क्षमताओं पर आधारित हैं—जैसे मनुष्यों में हाइपोथर्मिया के साथ होने वाली निलंबित एनीमेशन, और अब चूहों में हाइड्रोजन सल्फाइड की कम खुराक के माध्यम से प्रेरित की जाती है। कम से कम मुझे तो अब आश्चर्य होगा अगर इसमें कुछ भी "रहस्यमय" या असाधारण हो।
उदाहरण के लिए, बारबरा एन ब्रेनन की कथित उपचार क्षमताओं पर भी यही लाखों डॉलर की योग्यता लागू होगी। वास्तव में, यह दावा किया जाता है कि वे नियमित रूप से प्रदर्शित की जाती हैं।
फ्लोरिडा के बोका रैटन में उनका हीलिंग स्कूल (www.barbarabrennan.com)
ईश्वर की भक्त एलिजाबेथ कुबलर-रॉस ने ब्रेनन को "पश्चिमी गोलार्ध के सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक चिकित्सकों में से एक" माना है। अपने "आस्तिक" दिनों में, मैंने उनके दो स्नातकों से उपचार सत्रों के लिए बहुत अधिक धन खर्च किया था। उनमें से एक, अपने निर्धारित समय में "मनोवैज्ञानिक की भूमिका निभाने" का दोषी था, और बाद में उनके स्कूल में डीन बन गया। उनके उपचारों का मुझ पर क्या लाभकारी प्रभाव पड़ा?

बिलकुल भी नहीं।
पैरानॉर्मलिस्ट होने का दावा करने वालों द्वारा "अपनी कथनी और करनी में समानता न दिखाने" के लिए सबसे अधिक बार दिए जाने वाले बारह बहाने इस प्रकार हैं:
इसे रैंडी (2002) द्वारा पहले ही संकलित किया जा चुका है। इसलिए, उस काम को दोबारा करने का कोई मतलब नहीं है।
जहां तक मेरा सवाल है, मैं उचित रूप से नियंत्रित परिस्थितियों में सिद्ध हुए बिना किसी भी परा मनोवैज्ञानिक दावे को स्वीकार करने के बिंदु से बहुत आगे निकल चुका हूं।
* * *
किसी भी संशयवादी को तथाकथित रहस्यवादियों और चिकित्सकों के दावों की वैधता पर राय बनाने के लिए सूक्ष्मदर्शी से जांच करने या स्वयं अलौकिक क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि, संशयवादियों के लिए यह पर्याप्त है कि ऐसी क्षमताओं को उन प्रयोगों द्वारा प्रदर्शित किया जाए जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके अस्तित्व का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किए गए हों, उदाहरण के लिए, अनुमान से बेहतर स्तर पर सूक्ष्मदर्शी स्लाइड के एक सेट को दूसरे से अलग करना।
आप कहते हैं कि आप अलग-अलग लोगों के चारों ओर अलग-अलग आभा देख सकते हैं? ठीक है: दो लोगों को लें, जो परदे के पीछे छिपे हों, और केवल उनके कथित ऊर्जा क्षेत्र ही दिखाई दें। सुनिश्चित करें कि "धोखाधड़ी" या संकेत देने की कोई संभावना न हो। यदि आप वास्तव में उनकी आभा देख सकते हैं, तो आप कई परीक्षणों के बाद, संयोग से बेहतर स्तर पर बता पाएंगे कि कौन किस परदे के पीछे है।
430 गुरुओं का पर्दाफाश

क्या आपको लगता है कि आप सूक्ष्मदर्शी से दूरस्थ अवलोकन कर सकते हैं? बहुत बढ़िया: एक कागज़ पर पाँच अंकों की एक संख्या लिखी हुई है, जिसे एक निश्चित स्थान पर दीवार पर चिपकाया गया है। यह संख्या आपको तभी दिखाई देगी, जब आप वास्तव में अपने सूक्ष्म शरीर में उस स्थान पर निर्धारित दिन पर पहुँच सकेंगे। यदि आप वास्तव में ऐसा कर सकते हैं, तो परीक्षणों की एक श्रृंखला में प्रत्येक बार उस विशिष्ट संख्या को पहचानने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।

ये सस्ते, निर्णायक, "हाँ या ना" वाले प्रयोग हैं—इसके विपरीत, उदाहरण के लिए, मैरिलिन श्लिट्ज़ के हालिया "रिमोट व्यूइंग" प्रयोग।

“डेट्रॉइट स्थित अपने घर से रोम के पर्यटक स्थलों का भ्रमण” (गोर्स्की, 2001), या 1970 के दशक के उत्तरार्ध में इंगो स्वान की कथित तौर पर बृहस्पति (ग्रह) की सूक्ष्म यात्राएँ (रैंडी, 1982)। इस प्रकार के बुनियादी, व्याख्या से परे परीक्षण किसी नए सिद्धांत पर या भौतिकी के नियमों के अनुसार क्या संभव है और क्या नहीं, इस पर निर्भर नहीं करते। बल्कि, वे केवल यह अपेक्षा करते हैं कि असाधारण घटनाओं के विशेषज्ञ उचित रूप से नियंत्रित (जैसे, डबल-ब्लाइंड) परिस्थितियों में अपनी “सूक्ष्मदर्शी का उपयोग करने” की अपनी कथित क्षमताओं का प्रदर्शन करें, जहाँ वे स्वयं को धोखा न दे रहे हों या कल्पना को वास्तविकता न समझ रहे हों।

उपरोक्त दोनों निर्णायक प्रयोगों और ऐसे ही कई अन्य प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

इन्हें कई बार प्रदर्शित किया जा चुका है। (लेन [1997] देखें)

ब्लैकमोर [1983]; साथ ही प्राथमिक विद्यालय की छात्रा एमिली रोजा द्वारा किए गए थेरेप्यूटिक टच के सरल और तदनुसार विनाशकारी [हालांकि दुर्भाग्य से डबल-ब्लाइंड नहीं] परीक्षण, जिनका उल्लेख सेइडमैन में किया गया है।

(2001] और रैंडी [2003a])□ हालांकि, इससे परीक्षण किए गए व्यक्तियों को दुर्भाग्यवश अत्यधिक शर्मिंदगी उठानी पड़ी है, और बाद में उन्होंने इनकार और बहानेबाजी की है। क्योंकि उनकी दावा की गई असाधारण क्षमताएं हमेशा मात्र काल्पनिक ही साबित हुई हैं।

इससे भी बुरी बात यह है कि "वास्तविक ज्ञानोदय" के संदर्भ में भी: जैसा कि रिचर्ड फेनमैन आसानी से कह सकते थे, "समग्र वास्तविकता के साथ एक होने" की अनुभूति मात्र—अर्थात चेतना में "कोई सीमा न होने" का एहसास—यह साबित नहीं करता कि आप वास्तव में अविभाजित हैं। आखिरकार, हममें से प्रत्येक के भीतर कई प्रकार की आंतरिक भावनाएँ उत्पन्न होती हैं जिनका कोई वस्तुनिष्ठ प्रतिरूप नहीं होता। जब तक आप ऐसी कथित अतिचेतन अवस्थाओं (चाहे सूक्ष्म, कारण, साक्षी, अद्वैत, या कोई भी) के माध्यम से ज्ञान का कोई सत्यापन योग्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकते, जिसे आप किसी अन्य तरीके से प्राप्त नहीं कर सकते, तब तक यह एक पूरी तरह से निराधार दावा बना रहता है, जिसे कोई भी कर सकता है। न ही आप

स्वयं जान सकते हैं कि उन अवस्थाओं में आपके अपने अनुभव वास्तविक हैं या केवल काल्पनिक।
साक्षी चेतना (अर्थात आत्म-जागरूकता) किसी भी शारीरिक, मानसिक या परा-मनोवैज्ञानिक स्थितियों के साथ सह-अस्तित्व में हो सकती है, जिसमें शामिल हैं- इसे बेहतर बनाएं 431

यौन संबंध, शराब और मादक पदार्थों में लिप्त होना। इसके विपरीत, बाद वाले का उपयोग व्यक्ति की पसंद और स्वभाव के आधार पर, उसकी "आध्यात्मिक जागृति" के लिए भी किया जा सकता है। यदि पारलौकिक, साक्षी भाव "आत्मा का आपके माध्यम से देखना" से कम कुछ भी नहीं है, तो वही जागृति, चाहे अस्थायी हो या दीर्घकालिक, संभवतः एक तुलकु के इंद्रधनुष से अधिक कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं रखेगी। यदि आप ध्यान, मादक पदार्थों या समाधि के माध्यम से तर्कसंगत मन को दूर करने में आनंद ले रहे हैं, तो बहुत अच्छा; लेकिन जीवन के लक्ष्य या केंद्र के रूप में, विशुद्ध स्वार्थ से परे...
आम तौर पर हमारे संसार के "ऋषि", भले ही वे कितने भी ईमानदार क्यों न हों, सामान्य घटनाओं को भी असाधारण मान लेते हैं और अनगिनत मतिभ्रमों को सार्थक दर्शन समझ बैठते हैं। दूसरे शब्दों में, वे वास्तविक रहस्यमय अनुभवों और काल्पनिक अनुभवों के बीच अंतर करने में असमर्थ साबित हुए हैं। इसलिए, किसी को भी उनके उन दावों को गंभीरता से लेने की आवश्यकता नहीं है, जो उसी भ्रमित मानसिकता से छनकर आते हैं, यहाँ तक कि आत्मा के अस्तित्व और स्वरूप जैसी बुनियादी बातों के बारे में भी। इसके विपरीत, यदि कोई उस सत्ता के अस्तित्व में विश्वास करना चाहता है, तो यह हमारे संसार के "ध्यान गुरुओं" की सत्यता के बावजूद है, न कि उनके "व्यक्तिगत अधिकार" के कारण।
* * *
साक्षी भाव और/या अद्वैत ज्ञानोदय की अवधारणा में ही आधी व्यावहारिक समस्या यह है कि ऐसा अहसास, भले ही वह केवल एक व्यक्तिपरक परिवर्तन न होकर तात्विक रूप से वास्तविक हो, हर चीज को समान मानता है। इस प्रकार, यहां तक कि मानक और पूरी तरह से निर्विवाद रूप से स्वीकृत समझों में भी, यह किसी को बेहतर इंसान बनाने (मनोवैज्ञानिक विकृतियों को दूर करने या किसी अन्य तरीके से) या

दुनिया को बेहतर जगह बनाने में कोई योगदान नहीं देता है। कोई व्यक्ति, पूरी गंभीरता से, जीवित सबसे महान ज्ञानी हो सकता है, और फिर भी एक बाल यौन शोषण करने वाला, बलात्कारी या हत्यारा हो सकता है।
इसके विपरीत, किसी महान "ऋषि" द्वारा किया गया कोई भी अपराध या दुराचार, चाहे वह कितना भी जघन्य क्यों न हो, उनके द्वारा दावा किए गए ज्ञानोदय को गलत साबित नहीं कर सकता। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, रामकृष्ण का बाल यौन शोषण "केवल यह दर्शाता है कि इस प्रवृत्ति से ग्रस्त लोगों के लिए इससे उबरना कितना कठिन है," और उनके ज्ञानोदय के बारे में कुछ नहीं कहता: वे अभी भी "निस्संदेह" एक "महान ऋषि" थे। वास्तव में, उनके व्यवहार का उपयोग किसी की अपनी तुलनीय साधना को मान्य करने के लिए भी किया जा सकता है। (साईं बाबा के कथित बाल यौन शोषण को समान रूप से सहनीय क्यों नहीं माना जाना चाहिए, उनकी दैवीयता के पूर्णतः तुलनीय दावों को देखते हुए: यह मूल रूप से 432 गुरुओं को नंगा करना है)

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने ज्ञान के क्षेत्र में किसे भोलापन से "प्रामाणिक" मानकर शुरुआत की थी। दा जैसे लोग भी, अपने सभी कथित दुर्व्यवहारों के बावजूद, आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं, बस "पार्टी करने के व्यवहार से प्रभावित" हो सकते हैं।
आप चाहें तो जैक द रिपर भी हो सकते हैं, अद्वैत चेतना प्राप्त कर सकते हैं और फिर भी हत्याएं करते रह सकते हैं। आप स्वयं एडॉल्फ हिटलर भी हो सकते हैं, न केवल "रहस्यमय रूप से जागृत" बल्कि अद्वैत ज्ञान प्राप्त कर चुके हों, और इससे आपके कार्यों पर रत्ती भर भी असर नहीं पड़ेगा।
वह उदात्त अद्वैत बोध—जो केन विल्बर और द्रुकपा कुनले को इतना प्रिय है—भले ही वह तात्विक रूप से वास्तविक हो, फिर भी उसका अनुसरण करना सार्थक है... आखिर क्यों?
निःसंदेह, जब कोई इतने लंबे समय तक "ज्ञान प्राप्ति का संकल्प" लेता है, तो उसका कुछ न कुछ महत्व तो अवश्य ही होगा। भले ही आभा और सूक्ष्म ऊर्जाएँ अस्तित्व में न हों, भले ही परा मनोविज्ञान शुरू से ही निराधार हो, भले ही हर आशा की गई अलौकिक घटना निष्फल हो जाए, अद्वैत ज्ञान का कुछ न कुछ महत्व अवश्य ही होगा।

क्या ऐसा नहीं होना चाहिए?

* * *

इसमें कोई शक नहीं कि पहले बताई गई "मन को वश में करने" की तकनीकें मौजूद हैं, उनका इस्तेमाल किया जाता है, और वे हालात को और भी बदतर बनाने में अहम भूमिका निभाती हैं—जैसा कि ज़िम्बार्डो के अध्ययन में व्यक्तिहीनता, जबरन खिलाना, अपमान और नींद की कमी ने दिखाया। लेकिन इनके बिना भी, किसी "सुरक्षित, पारंपरिक" धर्म में, जैसे ही आप अपने से ऊपर वालों के "दिव्य मार्गदर्शन" और/या अचूकता को स्वीकार कर लेते हैं, आप अवज्ञा नहीं कर सकते। और जैसे ही आप नरक की आग और शाप या इसी तरह की बातों के कथित अस्तित्व को पूरी तरह मान लेते हैं, आप अपनी आत्मा को खतरे में डाले बिना उस विचार-परिवेश को छोड़ नहीं सकते। यानी, एक बार गहराई से स्वीकार कर लेने के बाद, ऐसे "तर्कसंगत" और सामाजिक रूप से स्वीकृत विश्वास किसी को पारंपरिक धर्म से दूर होकर शाश्वत शाप की संभावना का सामना करने के लिए स्वतंत्र रूप से चुनने में असमर्थ बना देते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कोई "विनाशकारी पंथ" से दूर होकर इसी तरह के भविष्य का सामना करने के लिए स्वतंत्र नहीं होता।

फिर भी, यह इस वास्तविकता को कम नहीं करता कि स्वस्थ मन और शरीर वाले, वास्तविक दुनिया में पूरी तरह से सक्षम लोग, बिना किसी दबाव के, पूरी तरह से स्वेच्छा से, ठीक इसी तरह के प्रतिबंधात्मक सिद्धांतों को अपना लेते हैं। ऐसे तथ्यों के सामने, यह विचार कि "पंथ" के सदस्य अजीबोगरीब बातों पर इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि उन्हें प्रेम-प्रचार या इसी तरह के तरीकों के बीच धीरे-धीरे "टुकड़ों में" विश्वास प्रणाली सिखाई गई थी, न कि उन्हें पूरी धर्मशास्त्र को निष्पक्ष रूप से पहले से समझाया गया था, स्वीकार्य नहीं है। सबसे बुरी नकारात्मक बातें इसे बेहतर बनाती हैं

जब तक कोई व्यक्ति सार्वजनिक रूप से मुक्तिदायक सकारात्मक पहलुओं के प्रति प्रतिबद्धता नहीं जताता, तब तक शायद ही उन्हें प्रस्तुत किया जाए। लेकिन वे नकारात्मक पहलू भी सकारात्मक पहलुओं के ही दूसरे पहलू हैं; यदि इसका अर्थ "मुक्ति प्राप्त" समूह का हिस्सा बनना है, तो व्यक्ति उन्हें सहर्ष स्वीकार कर लेता है। और हम सभी "लोकप्रिय" समूह का हिस्सा बनना चाहते हैं, या ईश्वर द्वारा "चुने" जाना

चाहते हैं, है ना? और उन लोगों का सामाजिक समर्थन पाना चाहते हैं जो समान रूप से "विशेष" हैं? अन्यथा, लोग गैर-पारंपरिक मुक्तिदायक "पंथों" से मुश्किल से बचकर निकलने के बाद "सुरक्षित" गैर-पारंपरिक धर्मों में क्यों शामिल हो जाते हैं? क्योंकि बाद वाले, "एकमात्र सच्चे उद्धारकर्ता" या उनसे पहले या बाद के प्रासंगिक सर्वनाश संबंधी "पैगंबरों" के प्रति अपनी भक्ति और आज्ञाकारिता के शुरुआती वर्षों में, पहले वालों से अलग नहीं थे।

इसलिए, किसी भी चीज़ में विश्वास करने की मानवीय आवश्यकता को कम नहीं आंकना चाहिए—विशेषकर तब जब उस विशाल चीज़ में विश्वास करना मोक्ष का साधन और सामाजिक स्वीकृति का मार्ग दोनों हो सकता है। हमारी प्रजाति को कभी भी "नाश्ते से पहले छह असंभव बातों" पर विश्वास करने के लिए विवश नहीं किया गया है। बल्कि, हमने हमेशा ऐसा स्वेच्छा से किया है, यहाँ तक कि सबसे सामान्य परिस्थितियों में भी। वास्तव में, उन मान्यताओं में से सबसे भयावह और भय उत्पन्न करने वाली मान्यताओं को भी पूर्ण सामाजिक स्वीकृति के साथ, हमारी दुनिया के प्रत्येक "सुरक्षित, पारंपरिक" धर्म के हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है।

(नवस्वतंत्र लोग भी उतनी ही तत्परता से कम्युनिस्ट उम्मीदवारों को वोट देंगे यदि वे अपने अतीत और वर्तमान के अनुभवों से यह सोचते हैं कि अल्पावधि में उनके जीवन में सुधार होगा-)

उस दमनकारी लेकिन सुकून देने वाली व्यवस्था को फिर से स्थापित किया गया [हू, 2005]। इसमें किसी भी तरह के "ब्रेनवाशिंग" की आवश्यकता नहीं है; यह तो बस प्रजाति का दुखद स्वभाव है।

समर्पित ईसाइयों द्वारा यीशु के प्रति दिखाई जाने वाली "परिपक्व आज्ञाकारिता" का स्तर, अन्य सभी वफादार अनुयायियों द्वारा अपने गुरु के प्रति दिखाई जाने वाली आज्ञाकारिता से किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं है: यदि ईश्वर का पुत्र आपसे कुछ करने को कहता है, तो आप उसे करते हैं, है ना? एकमात्र "अंतर" यह है कि ईसाइयों ने "एकमात्र सच्चे/सर्वोत्तम, जीवित उद्धारकर्ता" को पा लिया है, जिसके बारे में हर विचित्र सकारात्मक दावा अनिवार्य रूप से "सत्य" है—जैसा कि रजनीश, जिम जोन्स और डेविड कोरेश आदि के लिए उनके समय में उनके समर्पित शिष्यों की दृष्टि में था।

अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली तुलना के विपरीत, नकली सोने (अर्थात "झूठे गुरुओं") का अस्तित्व यह साबित नहीं करता कि असली सोना (अर्थात ज्ञान और

"सच्चे गुरु") भी मौजूद है। बल्कि, इसका सीधा सा मतलब यह है कि ऐसे बहुत से मूर्ख हैं जो भोलेपन से अपनी आँखों पर विश्वास कर लेते हैं, जबकि उन्हें अपने सामने रखे गए दावों की हर संभव तार्किक जाँच करनी चाहिए।
434 गुरुओं का पर्दाफाश

मुझे पता होना चाहिए: मैं भी कभी उन्हीं मूर्खों में से एक था।
जैसा कि डेविड लेन ने अक्सर कहा है, हम भगवान दास, वर्नर एरहार्ड या किसी और द्वारा बेची गई पुरानी कार को बिना जांचे-परखे नहीं खरीदते। फिर भी, हम अपने संसार के "धर्मगुरुओं" द्वारा दिए गए कथनों पर सवाल उठाने के बारे में उतना ही नहीं सोचते, जितना कि अपनी स्वतंत्रता त्यागकर स्वेच्छा से/अंधविश्वासपूर्वक उनका अनुसरण करने से पहले। इसके अलावा, हम अक्सर पारलौकिक और समग्र मनोविज्ञान के "प्रतिभाशाली" और वरिष्ठ विद्वानों की "अच्छी सलाह" पर ऐसा करते हैं। क्योंकि, हम काफी हद तक यह मान लेते हैं कि उन्होंने कम से कम न्यूनतम शोध तो किया ही होगा, और इसलिए वे हमारी तुलना में अधिक बुद्धिमान और जानकारीपूर्ण राय दे सकते हैं।
बहुत बड़ी गलती।
* * *
बेशक, इन सब के बाद भी, किसी को यह मानने की स्वतंत्रता है कि यीशु ने दूसरों (जैसे लाजर) को मृतकों में से जीवित किया था—जैसा कि दावा किया जाता है कि योगानंद और मेहर बाबा ने किया था। (और जैसा कि साइंटोलॉजी का भी दावा है: "हबर्ड का दावा है कि उन्होंने थेतान को आदेश देकर एक मृत बच्चे को वापस जीवित किया था।")
वापस आकर उसे शरीर पर पुनः अधिकार करने के लिए कहा गया" [कूपर, 1971]। और, यह कि ईसा मसीह ने प्रकट खाद्य पदार्थों से जनसमूहों को भोजन कराया—जैसा कि साईं बाबा ने किया था। और, यह कि जे.सी. स्वयं कब्र से जी उठे—जैसा कि दावा किया जाता है कि योगानंद के गुरु श्री युक्तेश्वर ने किया था।
जैसा कि लालिच (2004) ने उल्लेख किया है—जाहिर तौर पर अनजाने में लेकिन गहरे व्यंग्य के साथ—हमारी दुनिया के संभावित रूप से हानिकारक गैर-पारंपरिक समूहों के संदर्भ में:

अनगिनत उदाहरण—बेतुके दावे करने से लेकर
मुर्दों को जीवित करने से लेकर एक से अधिक पत्नियां रखने तक, और अन्य अपराधों तक...
हत्या... स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि कुछ [तथाकथित] पंथ के सदस्य-
लोग प्रतीत होने वाले तर्कहीन, हानिकारक और कभी-कभी झूठे निर्णय लेते हैं।
कुल निर्णय। फिर भी ये कार्य ऐसे संदर्भ में किए जाते हैं जो
जो लोग इन्हें लागू करते हैं, उनके लिए उस समय यह पूरी तरह से तर्कसंगत लगता है और
वास्तव में, वे एक विचारधारा या विश्वास प्रणाली के अनुरूप हैं जो
उनका मानना है कि विश्वास उनकी सर्वोच्च आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है...
कुछ [कथित] पंथ सर्वाधिकारवादी होते हैं जब वे बहिष्करणवादी होते हैं-
उनकी विचारधारा में व्यापकता है (अर्थात, यह पवित्र है, एकमात्र मार्ग है)।
मृतकों को जीवित करना: पारंपरिक ईसाई धर्म।
एक से अधिक पत्नियां: प्रारंभिक दिनों में मॉर्मन लोग।
किसी वैचारिक संदर्भ में हत्या करना, जहाँ उस समय यह "पूरी तरह से तर्कसंगत" प्रतीत होता हो: जैसे कि डायन का शिकार, धर्मयुद्ध आदि।
इसे बेहतर बनाओ 435

“एकमात्र तरीका”: यहाँ अपना पसंदीदा पारंपरिक धर्म डालें, चाहे आप कंडोम और हस्तमैथुन से भयभीत हों, कोशर-कोला पीते हों, या शालीनता बनाए रखने वाले बुर्के पर आसक्त हों।
इसके अलावा, जब हम विश्व के किसी भी पारंपरिक धर्म के संस्थापकों की कथित "दिव्यता" पर विचार करते हैं, तो यह ध्यान रखें कि यदि हाल के "ईसा मसीह जैसे" व्यक्तित्वों में से कोई भी दो हजार साल पहले जीवित होता, तो आज हमें उनके बारे में कथित "गंदगी" का कोई भी पता नहीं होता। यानी, उनकी "दिव्यता" बरकरार रहती, जैसा कि रामकृष्ण की लगभग थी। इसके विपरीत, यदि यीशु आज जीवित होते, तो उनके "अंतिम प्रलोभन" जैसे सभी मानवीय दुराचार पत्रकारों और असंतुष्ट पूर्व अनुयायियों द्वारा प्रकाशित किए गए होते। इसलिए, यह वास्तव में इतिहास का एक संयोग मात्र है कि साईं बाबा या रामकृष्ण जैसे "ईसा मसीह जैसे" गुरुओं का

इतना पर्दाफाश हो गया है कि कोई उनकी दिव्यता पर सवाल उठा सकता है और उनके शिष्यों के बंद समुदायों की कथित रूप से खतरनाक प्रकृति को पहचान सकता है, जबकि यीशु जैसे अन्य लोगों का ऐसा पर्दाफाश नहीं हुआ है।
मैं [so-] के बीच का अंतर समझने की कोशिश कर रहा था।
इसे पंथ और धर्म कहा गया—और उन्होंने तय किया था कि यह केवल दो ही हैं।
चीजें: समय और अनुरूपता का मामला (शेरिल, 2000)।
संभवतः सबसे प्रारंभिक और सबसे आदिम धर्मों को छोड़कर, सभी धर्मों में...
सक्रिय, नए धार्मिक आंदोलनों के रूप में शुरू होते हैं। यानी, वे शुरू होते हैं
आध्यात्मिक नवाचार पर आधारित आंदोलनों के रूप में, आमतौर पर एक
प्रचलित धार्मिक व्यवस्थाओं के साथ उच्च स्तर के विरोधात्मक तनाव की स्थिति
प्रथाएँ। अक्सर, इनकी शुरुआत करिश्माई धार्मिक कार्यकर्ताओं द्वारा की जाती है।
उद्यमी (ज़ैब्लॉकी, 1998)।
इसके विपरीत:
अपने पहले हज़ार वर्षों में, [कैथोलिक] चर्च का विकास हुआ
एक छोटे, भूमिगत [तथाकथित] पंथ को एक विशाल, बहुराष्ट्रीय संगठन में परिवर्तित करना
शक्ति (एरोन्स और लॉफ्टस, 1998)।
इसी प्रकार:
कई ऐसे समूहों की तरह जो पहले enfantes terribles terribles थे, Sci-
यदि कीटविज्ञान अपने वर्तमान सफाई अभियान को जारी रखता है,
एक दिन वह दुनिया के सबसे सम्मानित लोगों में से एक बन सकता है।
समूह या चर्च (कूपर, 1971)। 436 गुरुओं को उजागर करना

दरअसल, जैसा कि साइंटोलॉजी के जॉन ट्रैवोल्टा ने एक बार कहा था (गोल्ड में, 1998): "मुझे यकीन है कि ईसाई धर्म को भी अपने पहले पचास वर्षों में कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा होगा।" (यह बात लीसा मैकफर्सन को बताइए। अरे, आप नहीं बता सकते....)
सैटरडे नाइट फीवर... या सैटरडे नाइट मास। आप तय करें।
[एक] सवाल उठता है कि वास्तव में इस खोज के बारे में कितना कुछ पता है-

महान शास्त्रीय धर्मों के प्रवर्तक और संस्थापक
अतीत? उनकी शुरुआत वास्तव में कैसे हुई? उनके असली मकसद क्या थे?
उनके संस्थापकों में से?... मान लीजिए कि दुनिया चलती रहती है...
हजार साल... तो फिर साइंटोल की पौराणिक कथा का क्या होगा?
यह जीव कैसा दिखेगा? और लोग श्रीमान के बारे में क्या कहानियां सुनाएंगे?
लाफायेट रोनाल्ड हबर्ड, उनकी शिक्षाएं और उनके पहले शिष्य-
कृपया? (इवांस, 1973)।

किसी भी स्थिति में, यदि पर्याप्त लोग यह मानते हैं कि यीशु मसीह (या उद्धारकर्ता) ईश्वर का एकमात्र पुत्र है, जो कुंवारी जन्म के माध्यम से इस दुनिया में आया और महिमा में आरोहित हुआ, तो यह "अजीब" नहीं रह जाता, और यह विश्वास उस "एक सच्चे/सर्वश्रेष्ठ गुरु" के प्रत्येक अनुयायी के बच्चों द्वारा "विरासत में" प्राप्त होने लगता है। तुलनात्मक रूप से, जैसा कि स्ट्रेली (1987) ने उल्लेख किया है, रजनीश के आश्रम के भीतर विकृत घटनाएं और विश्वास भी "परिचित और 'सामान्य' प्रतीत होते थे क्योंकि यही वह दुनिया थी जिसे हमने बनाया था और अपने जीवन के हर पल में जी रहे थे।" वास्तव में, एक सामान्य सिद्धांत के रूप में:

एक समुदाय, समुदाय ही होता है। ठीक वैसे ही जैसे यह उन लोगों के लिए विचित्र है इसमें शामिल नहीं, इसलिए यह स्वाभाविक है... उन लोगों के लिए जो इसे भीतर से जीते हैं।
(गॉफमैन, 1961)।

यदि पर्याप्त संख्या में लोग यह मान लें कि आदि दा "सबसे महान सत्यवादी" थे, तो विश्वास का वही एकीकरण और वंशानुगत प्रसार होगा, और यह मानना अजीब हो जाएगा कि वह "सबसे महान" नहीं थे।

सौभाग्यवश, ऐसा होने की संभावना नहीं है।

इसके विपरीत, आज बाइबल बेल्ट में यीशु की शिक्षाओं के मूल अर्थ का प्रसारण करने से उतनी ही अशांति उत्पन्न होगी जितनी दो हजार साल पहले रोम में पाई जा सकती थी। आखिरकार, यह केवल समकालीन तथाकथित पंथ ही नहीं हैं जो अपने सदस्यों को "जाओ और जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच दो, और गरीबों को दे दो" (मत्ती 19:21) के लिए प्रोत्साहित करते हैं। और तुलना का यह एकमात्र बिंदु नहीं है:

कई [कथित] पंथ नए सदस्यों पर बहुत दबाव डालते हैं

अपने परिवार, दोस्तों और नौकरियों को छोड़कर पूरी तरह से इसमें लीन हो जाने के लिए।
समूह का प्रमुख उद्देश्य। यह अलगाववादी रणनीति मेक इट बेटर 437 के उद्देश्यों में से एक है।

नियंत्रण और लागू निर्भरता के सबसे सामान्य तंत्र-
एनसीआई (सिंगर, 2003)।
वैसे ही:
जो अपने पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह योग्य नहीं है।
मुझसे: और जो अपने बेटे या बेटी को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह
वह मेरे लायक नहीं है।
और जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं चलता,
वह मेरे योग्य नहीं है (मत्ती 10:37-8)।
इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, किसी भी संदर्भ में गुरु-शिष्य संबंध को स्वीकार करने के लिए स्पष्ट रूप से "ध्यान करने वाले को सावधान रहना चाहिए" की मनोवृत्ति की आवश्यकता होती है:
आध्यात्मिक जीवन अपनाने वाले सौ व्यक्तियों में से अस्सी
पता चला कि वे पक्के धोखेबाज हैं, पंद्रह पागल हैं, और केवल पाँच ही हो सकते हैं-
असली सच्चाई की एक झलक पाओ। इसलिए सावधान रहो (विवेक-
नंदा, [निखिलानंद, 1996]) में।
मेरा मानना है कि मोड में तथाकथित मास्टर्स में से 90% लोग...
आधुनिक दुनिया बिल्कुल भी प्रबुद्ध नहीं है (हार्वे, 2000)।
बेशक, जिन गुरु-प्रतिभाओं का हमने यहाँ उल्लेख किया है, उनमें से "सर्वश्रेष्ठ"—जैसे कि रामकृष्ण, जिनका हार्वे आज भी प्रशंसापूर्वक उल्लेख करते हैं—शेष 10% का एक अच्छा हिस्सा होंगे। (यह तथ्य कि हार्वे—"संभवतः हमारे समय के सबसे प्रख्यात रहस्यवादी"—
[नाइट, 2003]—जो हास्यास्पद रूप से उन्हीं 90% “अज्ञानी गुरुओं” को “जादूगर” मानते हैं, जो अपने शिष्यों को वास्तविक, अलौकिक शक्तियों के माध्यम से वश में रखते हैं—हमें यहाँ इस पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार, नवजन्मित

टाल ब्रूक के लिए, साईं बाबा को एक साधारण अवसरवादी जादूगर की तुलना में एक वास्तविक “ईसा मसीह विरोधी” के अधिक करीब माना जाता था। फिर भी प्रक्षेपण और स्थानांतरण, जो गुरु-शिष्य संबंध में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, न तो “जादू-टोना” हैं और न ही “शैतान की देन”। या क्या बीटल्स का अपने प्रशंसकों पर धरती खोदने वाला, मूत्राशय पर नियंत्रण खोने वाला प्रभाव भी “जादू-टोना” पर आधारित था?
आधुनिक युग से पहले के दिनों में भी स्थिति कुछ बेहतर नहीं थी:
बुद्ध ने कहा कि किसी सच्चे व्यक्ति से मिलने की संभावना बहुत कम होती है।
शिक्षक और ज्ञान प्राप्ति लगभग बराबर थे।
मध्य में कछुए के सतह पर आने की संभावना...
समुद्र की गहराई में वह अपना सिर एक ही छल्ले से आर-पार कर देगा।
लहरों पर उछाला गया (बटरफील्ड, 1994)। 438 गुरुओं को नंगा करना

हालाँकि, उस "अंगूठी" को ढूंढ लेने के बावजूद, मुक्तानंद के एक पूर्व दशक भर के स्वामी अनुयायी, स्टेन ट्राउट ने सही ही टिप्पणी की:
जो स्वेच्छा से अपनी स्वायत्तता, अपनी
नैतिक निर्णय, यहां तक कि ईसा मसीह, बुद्ध या कृष्ण की आज्ञा का पालन करना-
नहीं, ऐसा करने पर उन्हें अपनी क्षमता से कहीं अधिक नुकसान होने का खतरा है।
आशा है कि [इटैलिक में जोड़ा गया]।
इसलिए, इस तथ्य से कुछ सांत्वना मिल सकती है कि रमण महर्षि ने न केवल कोई शिष्य स्वीकार नहीं किया, बल्कि उनका कोई मानव गुरु भी नहीं था: "गुरु ईश्वर या आत्मा है।" (हालांकि, कई बार महर्षि वास्तव में अरुणाचल पर्वत और संभवतः "उसमें स्थित सभी सिद्धों" को अपना गुरु मानते थे।) अरबिंदो (1953) ने भी "कभी किसी से कोई औपचारिक दीक्षा नहीं ली।" बुद्ध के बारे में भी यही सच है।
किसी गुरु के मार्गदर्शन में जो भी आध्यात्मिक विकास (वास्तविक या काल्पनिक) प्राप्त किया जा सकता है, वह स्पष्ट रूप से गुरु के बिना भी प्राप्त किया जा सकता है। और गुरु-शिष्यों और उनके संबंधों से जुड़ी उन सभी समस्याओं को देखते हुए, इस मामले में सावधानी बरतना ही समझदारी है।
किसी भी तथाकथित संत के वर्तमान अनुयायियों से ईमानदारी से राय मांग लेने मात्र

से भी कोई सुरक्षित नहीं रह जाएगा। क्योंकि, अधिकतर मामलों में, “महान उद्देश्य” का बचाव करने वाले वफादार शिष्य वे होते हैं जिन्हें गुरु से अभी तक पर्याप्त नुकसान नहीं पहुंचा होता। या, वे गुरु और उनके करीबी लोगों के साथ इतने लंबे समय तक नहीं रहे होते कि वे वास्तव में क्या हो रहा है, उसे समझ सकें। या, वे गुरु के इतने करीब होते हैं और उस पद को बनाए रखने की इतनी आवश्यकता होती है कि वे अपना सारा दृष्टिकोण खो देते हैं, और उनके कार्यों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने की अपनी क्षमता को पूरी तरह से त्याग देते हैं, जबकि “अच्छे शिष्य” बनने के लिए उन्हें निष्पक्ष मूल्यांकन करना ही चाहिए।
आदि दा के आश्रम सेवा आदेश के प्रमुख ने व्यक्त किया
दा और उनकी "शिक्षाओं" के बारे में उनका दृष्टिकोण (कोलिन, एट अल., 1985 में):
वह उच्चतम ईमानदारी के साथ काम करता है.... यह सबसे अधिक है
मैंने अपने पूरे जीवन में अब तक की सबसे वास्तविक चीज देखी है।
इसी प्रकार, एक अन्य एकांतप्रिय "अवतार" के लिए भी:
जिम [जोन्स] एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका चरित्र बिल्कुल बेदाग है।
(लेयटन में, 1998)।
यूजीन चाइकिन, कैलिफोर्निया के एक वकील जो सदस्य बन गए-
पीपुल्स टेम्पल के सदस्य ने जिम जोन्स का वर्णन इस प्रकार किया:
वह अब तक मिले सबसे प्रेममय, मसीह-समान इंसान थे। एन-मेक इट बेटर 439

अन्य विधि स्नातक [वास्तव में, सहायक जिला अटॉर्नी]
सैन फ्रांसिस्को में], टिम स्टोएन ने जोन्स को "सबसे कॉम-
भावुक, ईमानदार और साहसी इंसान दुनिया
इसमें शामिल है” (स्टोर, 1996)।
इसी प्रकार हेवन गेट के लिए भी:
एप्पलव्हाइट और नेटल्स के शुरुआती अनुयायियों में से एक ने याद करते हुए कहा, "मैं
मुझे बस उनकी ओर खिंचाव महसूस हुआ। आप उनकी अच्छाई को महसूस कर सकते थे” (ललिच,

2004).

इस तरह के सकारात्मक मूल्यांकनों को गंभीरता से लेना—उपरोक्त बातें किसी भी वफादार शिष्य द्वारा अपने "वास्तविक/सर्वश्रेष्ठ/महानतम" गुरु के प्रति की जाने वाली प्रशंसा से अप्रभेद्य हैं—केवल अपने ही गंभीर जोखिम पर होता है।

इसलिए, यदि आपको किसी को प्रणाम करना ही है, तो आदि दा या एंड्रयू कोहेन जैसे लोगों के बजाय जिम जोन्स को "गहरा श्रद्धापूर्वक नमन" करना बेहतर होगा। क्योंकि कम से कम जोन्स, एप्पलव्हाइट की तरह, बहुत पहले मर चुके हैं, इसलिए उन मूर्ख लोगों को और नुकसान नहीं पहुंचा सकते जो उन पर भरोसा करते हैं।

* * *

रिक रॉस (2005सी) एक सुरक्षित समूह और/या नेता में देखने योग्य दस विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। इनमें अनुयायियों में आलोचनात्मक सोच और व्यक्तिगत स्वायत्तता को प्रोत्साहित करना, नेता द्वारा रचनात्मक आलोचना को स्वीकार करना, लोकतांत्रिक वातावरण और संगठन द्वारा स्वेच्छा से वित्तीय जानकारी साझा करना शामिल है।

किसी भी "प्रामाणिक, आध्यात्मिक रूप से परिवर्तनकारी" वातावरण में (या यहाँ तक कि किसी सामान्य व्यावसायिक निगम में भी) ऐसे गुण मिलना मुश्किल है। क्योंकि ऐसे समूह की शुरुआत ही ऐसे नेता से होती है जो अपने आस-पास के लोगों की तुलना में अधिक "आध्यात्मिक रूप से विकसित" होता है—अर्थात, जो स्पष्ट रूप से सत्य को अधिक स्पष्ट रूप से देखता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह नेता का पद केवल किसी एक या दूसरे पवित्र ग्रंथ के गहन अध्ययन के कारण ही नहीं, बल्कि ज्ञान के उच्च स्तर के कारण प्राप्त करता है।

“सौभाग्य से,” हालांकि, उनके आसपास के उत्साही साधक उनकी शिक्षाओं और निर्देशों का पालन करके उसी ऊंचाई तक पहुंच सकते हैं। इसके बाद भूमिका-निर्वाह, सम्मान की भूख और अपने सबसे मूल्यवान आध्यात्मिक विकास में बाधा डालने वाली किसी भी चीज (जैसे, आसक्ति, परिवार, सेक्स आदि) से खुद को दूर रखने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है। और आज्ञाकारी रूप से 440 गुरुओं का सार उजागर करना

किसी भी ऐसी चीज के दौरान जो किसी व्यक्ति को नेता के समान महान बनने की

प्राप्ति को यथाशीघ्र गति प्रदान कर सकती है, उसके बाद सब कुछ पतन की ओर ही जाता है।

इसलिए अब यह बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं है कि हमारी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक समुदायों को भी जल्दी ही "समस्याग्रस्त" अड्डों में परिवर्तित होते हुए पाया गया है, जिससे उनके आदर्शवादी अनुयायी यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं, "आखिर सब कुछ गलत कहाँ हुआ?"

फिर से वही बात, यह नहीं है कि ब्रेनवाशिंग, माइंड कंट्रोल, धोखे से भर्ती करना और जबरन अलगाव जैसी चीजें मौजूद नहीं हैं, क्योंकि वे निश्चित रूप से मौजूद हैं। लेकिन इनके बिना भी, हालात उन सिद्धांतकारों की कल्पना से कहीं ज्यादा खराब हैं जो इन मुद्दों को तथाकथित पंथों की विशिष्ट विशेषताओं के रूप में बताते हैं।

अगर आप इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते, तो आप रोमन कैथोलिक चर्च, अमेरिकी मरीन और आम जेल जैसी जगहों को "सुरक्षित" मानना जारी रख सकते हैं। और इसमें आपको शुभकामनाएँ—आपको इसकी ज़रूरत पड़ेगी, अगर कभी आपके प्रियजन इन "गैर-धार्मिक" वातावरणों में फंस जाएं।

* * *

यहां जिन "प्रबुद्ध" व्यक्तियों पर हमने विचार किया है, वे किसी भी तरह से दुनिया के सबसे बुरे आध्यात्मिक गुरु नहीं हैं, बल्कि सर्वत्र सर्वश्रेष्ठ माने जाने वाले गुरुओं में से हैं। गुरु-शिष्य संबंध के प्रति जो उपेक्षा यहां दिखाई गई है, उसका सीधा संबंध इस बात से नहीं है कि हम बुद्धिमानी से या अज्ञानता से, व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता पर जोर देने के पक्ष में इस संबंध को नकार रहे हैं, जबकि हम अपने से अधिक बुद्धिमान गुरु से सीखने के लाभों को नजरअंदाज कर रहे हैं। बल्कि, यह अवहेलना इस बात को स्वीकार करने का एक सरल और अपरिहार्य परिणाम है कि किसी भी परिस्थिति में, गुरु-शिष्य संबंध लाभ से कहीं अधिक हानि पहुँचाने की संभावना रखता है।

इसके विपरीत, प्रासंगिक प्रश्न यह नहीं है कि कोई व्यक्ति "गुरु-विरोधी" क्यों हो, बल्कि यह है: यहाँ उद्धृत सभी लंबे समय से मौजूद समस्याओं के बावजूद, कोई व्यक्ति "गुरु-समर्थक" कैसे हो सकता है? यदि यह दावा किया जाता है कि (किसी भी आध्यात्मिक गुरु के लिए) अच्छाई और बुराई का मिश्रण बुराई को संतुलित करता है, तो उचित उत्तर यह है कि अमृत और विष का मिश्रण केवल विष के मिश्रण से अधिक खतरनाक होता है। आखिरकार, जानवर एंटी-फ्रीज़ पीकर मर जाते हैं क्योंकि इसका

स्वाद अच्छा होता है। यदि अच्छाई न होती, तो वे साथ ही साथ बुराई को भी न निगलते।
जैसा कि डिक एंथोनी (और अन्य, 1987) ने बड़ी सहजता से कहा था:
इसे बेहतर बनाओ 441

कई समूह नेता जो खतरनाक बन गए,
सत्तावादी तानाशाहों में सचमुच ... प्रेम और दयालुता दिखाई देती थी।
उदारता, निस्वार्थता। ये नेता बेहद ही साहसी थे।
खतरनाक इसलिए क्योंकि उन्होंने इस तरह के असंभावित संयोजन किए थे।
अत्यधिक परोपकार और अत्यधिक दुर्व्यवहार का मिश्रण
उन्हें। परोपकारिता पहले प्रमुख थी, जिसने बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया,
समर्पित अनुयायी, और फिर धीरे-धीरे एक "अंधकारमय" माहौल में तब्दील हो गया।
"पक्ष" जो दस या उससे अधिक वर्षों में तेजी से अभिव्यक्ति में आया
बीस वर्षों में, धीरे-धीरे स्वर्ग नरक में बदल गया।
अनुयायी।
एंथोनी जिस बात को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर गए हैं, वह यह है कि ज़िम्बार्डो की जेल में अध्ययन कक्ष में अब तक "शांतिप्रिय" माने जाने वाले छात्र रक्षकों में भी "अत्यधिक परोपकारिता और अत्यधिक अत्याचार" का मिश्रण था। वास्तव में, उन सभी भावी "नाज़ियों" ने अध्ययन कक्ष में सौहार्दपूर्ण माहौल से शुरुआत की थी, लेकिन बाद में बंद, पदानुक्रमित वातावरण ने उनके अत्याचारी अधिनायकवाद को उजागर कर दिया।
* * *
अगर यह सब कुछ हद से ज़्यादा निराशावादी लगता है, तो ज़रा यहाँ बताए गए व्यवहारों की तुलना किसी भी समझदार और ईमानदार व्यक्ति के व्यवहार से कीजिए। क्या आप (साम्राज्यवादी भूमिका निभाने के संभावित, नज़रिए को बिगाड़ने वाले प्रभावों को छोड़कर) यहाँ मूल्यांकन किए गए सभी सम्मानित आध्यात्मिक व्यक्तियों से बेहतर, दूसरों के विकास में मार्गदर्शन नहीं कर सकते, चाहे इन तथाकथित संतों द्वारा दावा किया गया ज्ञान वास्तविक हो या काल्पनिक? यहाँ तक कि अगर आपकी हर छिपी हुई गलती सार्वजनिक हो जाए, तब भी क्या आप इन सभी मूर्खों से बेहतर

इंसान नहीं दिखेंगे?
फिर, रामकृष्ण और कृष्णमूर्ति जैसे निर्विवाद संत के जीवन के शुद्ध किए गए, महिमामंडित संस्करणों और उनके वास्तविक स्वरूप के बीच मौजूद भारी अंतर पर विचार करें। और ऐसा करते समय, कभी भी इतने भोले न बनें कि यह सोचें कि किसी भी संत के दैनिक व्यवहार पर उनके स्वार्थी शिष्यों द्वारा किए गए विकृतीकरण, छिपाव, समूह-विचार, मनगढ़ंत सोच और सरासर मनगढ़ंत बातें, उनके दिव्य अनुभवों, अन्य चमत्कारों और समग्र करुणामय स्वभाव के संबंध में भी उतनी ही प्रभावी नहीं होंगी।
मैं व्यक्तिगत रूप से अब भी यही चाहूँगा कि आध्यात्मिकता के नाम पर सुनाई जाने वाली अधिकांश परियों की कहानियाँ सच हों। इनमें से किसी को भी स्वीकार करने में मुझे जो समस्या है, वह यह नहीं है कि मैं उन्हें पूर्वधारणा के आधार पर या "विज्ञान-442 गुरुओं को नष्ट करना" मानकर स्वीकार कर लूँ।

वैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो मुझे यह मानना मुश्किल लगता है कि मानवीय इच्छाशक्ति पदार्थ के व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। वास्तव में, मैं अब भी आभा, चक्र, सूक्ष्म ऊर्जा, सूक्ष्म यात्रा, प्रकट हुए “रोटी और मछली” और इस तरह की चीजों के अस्तित्व को प्राथमिकता देना चाहता हूँ। मेरी समस्या बस इतनी है कि इन सभी “चमत्कारी” और रहस्यमय घटनाओं के स्रोत इतने अविश्वसनीय हैं कि वे लगभग नगण्य हैं। इसके अलावा, जिन दावों को अंजाम दिया गया है, वे हर उस बिंदु पर खरे नहीं उतरते जहाँ उनकी ठीक से जाँच की गई है, और वे सरल तर्कसंगत प्रश्नों और पुनरुत्पादन की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।
* * *
अगर लोग सचमुच अच्छी तरह से सूचित होते, तो वे इससे अप्रभावित रहते।
बुरे गुरु (रॉबर्ट थुरमन, [वातानाबे, 1998] में)।
खैर, अब आप "वास्तव में अच्छी तरह से जानकार" हैं। और इस तरह बुद्धिमान होने के नाते, दलाई लामा की द्रुकपा कुनले के प्रति प्रशंसा को जानते हुए, और सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर में रिचर्ड बेकर के कथित व्यवहारों से अवगत होने के कारण... आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि बेकर के विनाशकारी कार्यकाल के दौरान सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर के मित्र होने के बावजूद, थुरमन अभी भी समलैंगिक विरोधी

लामा के वफादार प्रशंसक हैं। न ही आपको यह जानकर हैरानी होगी कि थुरमन, जीवन भर आध्यात्मिक अध्ययन और अभ्यास के बाद "बुरे गुरुओं" और मूर्ख पंडितों से अप्रभावित होने के बावजूद... विल्बर के इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्य हैं। और न ही आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने बौद्ध धर्म और राजनीति पर संवादों की एक रिकॉर्डिंग जारी की है।
उनके और वैकल्पिक चिकित्सा के विशेषज्ञ दीपक चोपड़ा के बीच की कुछ खास आदतें...
दिलचस्प बात यह है कि थुरमन और दलाई लामा दोनों ने इसका समर्थन किया।
चोपड़ा की (2000) पुस्तक, 'हाउ टू नो गॉड'... की प्रशंसा केन विल्बर और उरी गेलर ने भी की। थुरमन ने इसे "हमारे समय के लिए ईश्वर के बारे में सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक" कहा। मिखाइल गोर्बाचेव ने भी चोपड़ा को "निस्संदेह हमारे समय के सबसे स्पष्ट और प्रेरणादायक दार्शनिकों में से एक" का दर्जा दिया।
और यह सब तब हो रहा था जब थुरमन को 1997 में टाइम पत्रिका के पच्चीस सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक के रूप में नामित किया गया था, और न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा उन्हें "अमेरिका का नंबर एक बौद्ध" माना जा रहा था। कहने का तात्पर्य यह है कि डॉ. थुरमन के प्रति किसी विशेष अनादर का भाव रखे बिना, बौद्ध धर्म और अन्य क्षेत्रों के सर्वश्रेष्ठ और सबसे सम्मानित व्यक्ति भी स्पष्ट रूप से इस बात पर भरोसा नहीं कर सकते कि वे हमें सीधे उन आध्यात्मिक गुरुओं की ओर ले जाएंगे जिनसे हमें बचना ही बेहतर होगा, यदि हम उनकी "वास्तव में अच्छी तरह से जानकारीपूर्ण" सलाह का पालन करने की गलती करते हैं।
इसे बेहतर बनाओ 443

बौद्ध शिक्षक जैक कॉर्नफील्ड जैसे व्यक्ति ने भी पूर्व में नियमों के कथित उल्लंघन के बारे में पर्याप्त शोध किए बिना ही एक दृढ़ और पुख्ता राय दे दी है। उन्होंने एक सतही तौर पर विश्वसनीय, लेकिन अंततः पूरी तरह से झूठी थ्योरी को इस तरह पेश किया है मानो वह निर्विवाद और शोध पर आधारित तथ्य हो। इसके अलावा, वे अपने उस निराधार विचार को तब भी कायम रखे हुए हैं जब वे खुद ट्रुंगपा के नारोपा में अपने सबसे उग्र और अशांत दौर में अध्यापन कार्य कर रहे थे, लगभग दो दशक बाद भी। वे दौर नारोपा के सबसे स्पष्ट रूप से "पंथ-प्रधान" दौर थे, जैसा कि उन चीजों को देखने

के लिए थोड़ी सी भी खुली आंखें रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए स्पष्ट है।
पूर्वी आध्यात्मिकता के कुछ ही "विशेषज्ञ" थुरमन और कॉर्नफील्ड से अधिक जानकार, भरोसेमंद या संतुलित हैं। फिर भी, उनके और उनकी "जानकारीपूर्ण" राय से बस एक कदम दूर, आप खुद को ट्रुंगपा, रिचर्ड बेकर या "तिब्बती कैथोलिक" दलाई लामा जैसे लोगों का अनुसरण करते हुए पा सकते हैं।
या फिर, रब्बी माइकल लर्नर के काम पर विचार करें—जिन्हें क्लिंटन प्रशासन के दौरान संक्षेप में "व्हाइट हाउस का गुरु" कहा गया था। (अलोकप्रियता के दौर में, क्लिंटन परिवार ने मुक्तानंद के प्रशंसक और अग्नि-चालक टोनी रॉबिन्स से भी सलाह ली थी। स्वयं सहायता के इस दिग्गज ने विल्बर के इंटीग्रल नेकेड फोरम में अतिथि के रूप में भाग लिया था।)
और वे एंड्रयू कोहेन [1999a] के साक्षात्कारकर्ता भी रह चुके हैं। लर्नर, केन विल्बर के घनिष्ठ मित्र हैं और इंटीग्रल इंस्टीट्यूट के एक अन्य संस्थापक सदस्य हैं। और, हालांकि उनका राजनीतिक टिक्कुन संगठन, समूह और पत्रिका "सुरक्षित और पोषणकारी" हो सकते हैं, वे विल्बर को एक "महान विचारक" भी मानते हैं, जिनकी "प्रतिभा उनके जर्नल के हर पृष्ठ पर झलकती है"।
और फिर उसी व्यक्ति—लर्नर—की यह टिप्पणी, जो उन्होंने kw (2001b) की पुस्तक 'ए थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' के लिए लिखी थी:
केन विल्बर सबसे रचनात्मक आध्यात्मिक विचारकों में से एक हैं।
आज भी प्रासंगिक है, और 'ए थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' एक सुलभ झलक है।
उनकी प्रतिभा का बेहतरीन उदाहरण। एक कुशल कंडक्टर की तरह, वह हर चीज को सामने लाते हैं-
एक व्यक्ति अंदर आता है, विज्ञान और आध्यात्मिकता के लिए जगह ढूंढता है, और संगीत की रचना करता है।
आत्मा के लिए।
मान लीजिए कि आप, एक युवा लेकिन समर्पित आध्यात्मिक साधक और/या राजनीतिक कार्यकर्ता, और लर्नर के प्रशंसक के रूप में, टिक्कुन के किसी एक कार्यक्रम में भाग लेते हैं। और मान लीजिए कि आपने इसके माध्यम से केन विल्बर के काम को जाना और अगले कुछ महीनों में उनकी "शानदार" पुस्तकों को पढ़ा। अधिक जानकारी न होने के कारण, आप निस्संदेह इतने व्यापक विषयों पर उस महान

व्यक्ति की "प्रतिभा" और "करुणा" से प्रभावित होंगे—जैसा कि मैं स्वयं 444 गुरुओं का विश्लेषण

यह बात कई साल पहले की है, जब मैं भोला था और सिर्फ दो महीने के लिए ही ऐसा सोचता था—खासकर लर्नर द्वारा उस "प्रतिभा" के समर्थन को देखते हुए।
तो फिर, आप कब तक उन लेखों में kw की "अच्छी सलाह" का पालन करेंगे? कब तक आप (शायद श्री कोवाल्ज़िक की तरह) खुद को एक गैर-मशहूर व्यक्ति के रूप में एक "महान ज्ञानी" के समक्ष "पूरी तरह से समर्पित" पाएंगे, जिसका हर कथित "अशिष्ट" दुर्व्यवहार केवल आपके अपने लाभ के लिए, एक बुद्धिमान "शिक्षा" के रूप में किया जा रहा था?
लर्नर ने खुद एंड्रयू कोहेन के लिविंग का समर्थन किया है
डॉ. लर्नर ने न केवल 'एनलाइटनमेंट' (2002) नामक पुस्तक लिखी है, बल्कि 'व्हाट इज एनलाइटनमेंट?' पत्रिका में कोहेन (2001a) द्वारा उनका साक्षात्कार भी लिया गया है। डॉ. लर्नर के पास नैदानिक मनोविज्ञान में पीएचडी है; कोहेन, शायद मनुष्यों में अद्वितीय हैं, क्योंकि उन पर कोई मनोवैज्ञानिक छाया नहीं है (या कम से कम वे ऐसा दावा करते हैं)। इसलिए, यदि लर्नर ने उस दुर्लभ, महत्वपूर्ण अवसर को पहचाना होता, तो वे निश्चित रूप से उनके लिए एक आकर्षक केस स्टडी साबित होते।
दिलचस्प बात यह है कि कोहेन की 'लिविंग एनलाइटनमेंट' के अन्य उत्साही समर्थकों में जैक क्रिटेंडन, दीपक चोपड़ा, ली लोज़ोविक, मारियाना कैपलान और स्वयं दिवंगत स्वामी सच्चिदानंद शामिल हैं।
फिर भी, "महान शक्ति के साथ महान उत्तरदायित्व भी आता है।" और यदि कोई व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा का उपयोग दूसरों को विश्वसनीयता प्रदान करने के लिए कर रहा है, तो उसकी यह गंभीर जिम्मेदारी बनती है कि वह सुनिश्चित करे कि वे वास्तव में अपने दावों के अनुरूप हों। फिर भी, विल्बर और इन अन्य "विशेषज्ञों" में इस तथ्य की समझ न मिलना मुश्किल है। क्योंकि, यदि वे इस सिद्धांत को समझते, तो उन्हें यह जानकर बहुत शर्मिंदगी होती कि उन्होंने दा और कोहेन जैसे लोगों के सामने "पूरी तरह से आत्मसमर्पण" करने के लिए दूसरों को अनुचित रूप से प्रोत्साहित करके कितना बड़ा नुकसान किया है।
* * *

जहां तक मेरा सवाल है, हमारी दुनिया के "आग उगलने वालों" के कथित कृत्य... गुरु (उदाहरण के लिए, WHAT enlightenment??! वेबसाइट पर) और उनके गुंडे मुझे सातवीं कक्षा में ग्रामीण स्कूलों में स्थानांतरित होने की घटना की याद दिलाते हैं।

मुझे बताया गया कि पिछले साल उस नए माहौल में "सबसे ताकतवर लड़के" ने अपने से नीचे की कक्षा के लड़कों को कीचड़ में रेंगने और अन्य प्रकार के दुर्व्यवहार सहने के लिए मजबूर किया था। क्यों? सिर्फ इसलिए कि वह अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकता था—उसकी अपनी असुरक्षा की मानसिकता के अलावा और कोई बेहतर कारण या उकसावा नहीं था।

अगले साल, सत्ता का दुरुपयोग करने वाले उस लड़के को उसकी करनी का फल मिल ही गया, जब सातवीं कक्षा में उसके साथियों ने उसकी पिटाई कर दी।

इसे बेहतर बनाएं 445

उसकी साहसी प्रतिक्रिया क्या थी? अपने पादरी माता-पिता के पास जाकर रोना-धोना करना, उनसे विनती करना कि वे किसी दूसरे समुदाय में चले जाएं, आदि, लेकिन निश्चित रूप से इस बात का कोई जिक्र नहीं करना कि वह उस प्रतिशोध का हकदार कैसे था।

काश, दुनिया के गुरु और आध्यात्मिक साधकों में तेरह साल के बच्चों जितनी समझ होती! तब शायद वे अपने साथियों और नायकों को सत्ता के दुरुपयोग के लिए ज़िम्मेदार ठहराने पर विचार करते, यानी, "जैसा तुम दूसरों को पीटोगे, वैसा ही तुम्हारे साथ भी होगा।" अगर वे थोड़ी सी भी समझदारी और सच्ची करुणा दिखाते, तो दुनिया में ऐसे दब्बू और बदतमीज़ लोग बहुत कम होते। और उन सामाजिक रूप से अक्षम मूर्खों को तो और भी कम सराहा जाता, जिन पर दूसरों को "उनके भले के लिए" अपमानजनक काम सहने के लिए मजबूर करने का आरोप है।

* * *

“बुरे गुरुओं” की बार-बार होने वाली घटना, जिससे कोई भी तब तक सुरक्षित नहीं रहता जब तक वह इस उम्मीद पर कायम रहता है कि उनमें से कोई न कोई उसे ज्ञान के करीब ले जा सकता है, वास्तव में पूरी तरह से अनुमानित है। क्योंकि, निरंकुश सत्ता भ्रष्ट करती है, न केवल कभी-कभी, बल्कि हर समय (या कम से कम

99.99%)। (दरअसल, 1870 में पोप द्वारा अचूकता की घोषणा के जवाब में ही लॉर्ड एक ने ऐसा किया था-)
(टन ने प्रासंगिक वाक्यांश गढ़ा [एलन, 2004])। उस मनोवैज्ञानिक वास्तविकता के विपरीत, कोई भी "ऋषि" अपने सेलिब्रिटी अनुयायियों या इसी तरह के लोगों द्वारा पूछे गए सवालों के प्रति स्पष्ट सहिष्णुता में जो भी सार्वजनिक चेहरा दिखाता है, वह आमतौर पर किसी समाचार सम्मेलन में दिखाए गए अस्थायी मुखौटे से अधिक वास्तविक नहीं होता है।
और किसी भी ज्ञानपूर्ण "सर्वोत्तम व्यवहार" से परे, मानवीय आवेश और प्रक्षेपण किसी भी तुच्छ चीज़ को भी "ईश्वर" बना सकते हैं—जैसा कि नित्यानंद भलीभांति जानते थे। ऐसे किसी भी "आध्यात्मिक" वातावरण में भोलेपन से सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जाना, सब कुछ अच्छा होने की आशा करना, दूसरों में केवल अच्छाई देखना और बुराई के संकेतों को अनदेखा करना, और गुरु और उनके सहायकों पर भरोसा करना कि वे आपको सही राह दिखाएंगे, उचित नहीं है। क्योंकि, बिना किसी अतिशयोक्ति के, ऐसा भोला-भाला व्यवहार ही जोन्सटाउन (और रजनीशपुरम, और ट्रुंगपा, मुक्तानंद और योगानंद जैसे "सच्चे संघ") की शुरुआत का कारण है।
रहस्यवादियों को वास्तव में पागलों से अलग करने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी वास्तविकता को अपनी कल्पनाओं या बाहरी आवाजों/दृश्यों से अलग करने की क्षमता है। फिर भी, यही क्षमता "आकाशीय चंद्रमा 446 गुरुओं को निहारना" में स्पष्ट रूप से गायब है।

नरभक्षी गुलाम, सूक्ष्म सहयोगी सेनाएँ, लियोनार्डो दा विंची के असंगत पुनर्जन्म, फुर्तीले बौने और पॉलसेन की घटिया विज्ञान-कथा वाली यूएफओ। और उस स्थिति में, संबंधित "ऋषियों" ने संभवतः अपने "ज्ञानोदय" आध्यात्मिक अनुभवों के हर चरण की कल्पना/भ्रम/स्वयं सम्मोहन किया होगा।
उपरोक्त बिंदु इस तथ्य को अप्रासंगिक बना देता है कि कोई व्यक्ति एक ही समय में आध्यात्मिक विकास के उच्च स्तर पर और नैतिक दृष्टि से चेतना के निम्न स्तर पर हो सकता है। क्योंकि, यदि कोई व्यक्ति "वास्तविक" आध्यात्मिक अनुभवों और काल्पनिक अनुभवों के बीच अंतर नहीं कर सकता, तो केवल नैतिक विकास की कमी

या इसी तरह की कोई अन्य बात उन शिक्षाओं और व्यवहारों में निहित कथित ज्ञान को अमान्य नहीं करती जो उन्हीं अनुभवों पर आधारित हैं।
तुलनात्मक रूप से, उच्च स्तर के नैतिक या सहानुभूतिपूर्ण विकास वाला एक नैदानिक सिज़ोफ्रेनिक व्यक्ति भी एक अत्यंत खतरनाक नेता या गुरु बन सकता है। यह तब भी सच है जब स्पष्ट रूप से काल्पनिक "ईश्वर की वाणी" उससे बात कर रही हो और फिर उसे "ईमानदारी" के साथ दुनिया पर थोप रही हो। यह तब भी सच है जब मानसिक रूप से अस्थिर व्यक्ति उस वाणी को अद्वैत (जैसे, एक स्वाद) घटना के रूप में अनुभव करता है। इसके विपरीत, यदि कोई व्यक्ति किसी गुरु के समक्ष अपनी इच्छा का समर्पण करने जा रहा है, तो वह ऐसी समीक्षा की अपेक्षा करेगा जो यह निष्कर्ष निकाले, "हाँ, वह मनोविकारग्रस्त है, लेकिन उसमें बहुत ईमानदारी है!"
ऐसे में, अंततः हमारे पास सहारा लेने के लिए बहुत कम ही बचता है। क्योंकि, यदि सर्वमान्य "सर्वश्रेष्ठ" ज्ञानी भी मतिभ्रम और अपने स्वयं के स्पष्ट रूप से वैध अहसासों के बीच अंतर नहीं कर पाते, तो क्या कमतर ज्ञानी लोगों को अधिक विश्वसनीय माना जा सकता है?
इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो, कोई भी आध्यात्मिक गुरु ज़्यादा से ज़्यादा एक सभ्य, ईमानदार, सरल, शांत स्वभाव वाला और दयालु इंसान ही हो सकता है, कभी भी "स्वरूप ईश्वर" नहीं। फिर भी, अगर उन व्यक्तियों के खिलाफ लगाए गए आरोपों का दसवां हिस्सा भी सही है, तो उनमें से अधिकांश उस न्यूनतम, संतुलित शालीनता में भी बुरी तरह विफल हो जाएंगे। इस प्रकार, वे अपने व्यवहार से हमें जो कुछ सिखाना चाहते हैं, उसे कोई भी समझदार व्यक्ति सीखना नहीं चाहेगा।
तो मान लीजिए कि वे सभी उतने ही प्रबुद्ध हैं जितना उन्होंने दावा किया है। (फिर, अगर ये शीर्ष चालीस आध्यात्मिक नेता इतने दिव्य नहीं हैं, तो कौन है?) इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; क्योंकि, उनके द्वारा बताई गई व्यापक चरित्रगत खामियों के साथ, उनमें से कौन दुनिया में नुकसान से ज्यादा फायदा कर सकता है? इसे बेहतर क्या बनाता है 447

तो फिर, उनका तथाकथित "ज्ञानोदय" किस काम का? और, यदि कर्म और पुनर्जन्म जैसी कोई चीज़ मौजूद है, तो भविष्य के जन्मों में अपने कथित कर्मों के लिए रामकृष्ण जैसे "ईसा मसीह" से लेकर अन्य सम्मानित धर्मगुरुओं से अधिक किसे

भोगना पड़ सकता है?
अच्छी खबर यह है कि ये सारे आडंबरपूर्ण देवता, जो पवित्र, दयालु और बुद्धिमान होने का झूठा दिखावा करते हैं, किसी पर भी उतना ही अधिकार रखते हैं जितना आप या मैं उन्हें देना चाहें। अगर हम उनकी निराधार बातों और बेबुनियाद अतिशयोक्तियों पर आँख बंद करके विश्वास न करें, तो वे सूखकर गायब हो जाएँगे, मानो वे कभी थे ही नहीं।
दूसरे शब्दों में कहें तो: उन्हें हमारी ज़रूरत हमसे कहीं ज़्यादा है।
पूर्व में नव-जन्मित हसलर पत्रिका के प्रकाशक के शब्दों में-
लिशर, लैरी फ्लिंट (क्रैसनर में, 1993):
मेरा मानना है कि यीशु किसी अन्य शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षक नहीं थे।
बुद्ध, और यह कि न तो यीशु और न ही बुद्ध अधिक महत्वपूर्ण हैं-
किसी भी व्यक्ति से अधिक।
कृपया एक और बात स्पष्ट रूप से ध्यान दें: यहाँ जिन कथित तौर पर अस्थिर और/या पूरी तरह से अविश्वसनीय "सर्वश्रेष्ठ" ज्ञानी व्यक्तियों पर विचार किया गया है, वे काफी हद तक वही लोग हैं जिनके दावों और अधिकार के आधार पर "ज्ञानोदय" नामक अनुभूति का अस्तित्व व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। यदि परीक्षण योग्य विवरणों और अलौकिक दावों में उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है, तो क्या वास्तव में उन उच्च अनुभूतियों का सटीक प्रतिनिधित्व करने के लिए उन पर भरोसा किया जा सकता है जिनसे उन्हें सबसे अधिक प्रसिद्धि मिली है? यदि ऐसा है, तो हमारे विश्व के इतिहास में सबसे सम्मानित आध्यात्मिक ज्ञानियों द्वारा कही या लिखी गई अधिकांश बातें संभवतः मतिभ्रम, सिद्ध रूप से गलत बयानी या स्पष्ट रूप से अतिशयोक्ति थीं, तो क्या आप वास्तव में उनके किसी भी दावे को "विश्वास के आधार पर" स्वीकार कर सकते हैं?
और अगर ऐसा नहीं है, तो गुरुओं की संस्था के प्रति शाश्वत, उच्च सम्मान और इस विश्वास का क्या अर्थ है कि वे आपको उस ज्ञान की ओर ले जा सकते हैं जो शायद उनके पास स्वयं मात्र आत्म-भ्रम के अलावा और कुछ नहीं है, और यह सब आपके द्वारा उनकी बिना शर्त आज्ञा मानने के माध्यम से संभव है? क्या ऐसा विश्वास और समर्पण जीवन के प्रति उतना परिपक्व और तर्कसंगत दृष्टिकोण है जितना कि सांता क्लॉस से सांसारिक उपहार प्राप्त करने का विश्वास, उनके निर्देश का पालन करके

"अच्छा" (अर्थात आज्ञाकारी) बनने से, न कि "शरारती" बनने से?
मुझे व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं लगता।
448 गुरुओं का पर्दाफाश

बेशक, अपने जीवन के एक दशक से भी अधिक समय तक, मैंने भी अन्य लोगों की तरह "पूर्ण ज्ञान प्राप्त गुरु के मिथक" पर पूरा विश्वास किया। लेकिन अपनी सफाई में मैं यह कहना चाहूँगा कि मेरे पास यहाँ एकत्रित की गई व्यापक जानकारी तक पहुँच नहीं थी, जो किसी भी तर्कसंगत, विचारशील व्यक्ति को यह विश्वास दिला सकती थी कि "गुरु-प्रचार" करने वाले लोग किसी भी तरह से वैसे नहीं हैं जैसा वे खुद को दिखाते हैं। वास्तव में, इंटरनेट और पाँच हज़ार घंटों से अधिक के शोध के बिना, मैं अब भी इस बात को नहीं मानता।
लेकिन चूंकि आप यहां तक पहुंच चुके हैं, इसलिए आपके पास उस जानकारी तक आसानी से पहुंच है। और आप इसका बुद्धिमानी से उपयोग करके स्वयं को और अपने प्रियजनों को बहुत कष्टों से बचा सकते हैं।
क्योंकि, अगर हमने ब्लेज़ पास्कल से एक बात सीखी है, तो वह यह है कि "जो लोग फरिश्ते होने का दिखावा करते हैं, वे अंततः जानवर बन जाते हैं।"
धर्म और आध्यात्मिकता में शायद महज मतिभ्रम, वियोग, मनोविकार, स्थानांतरण, अनुरूपता, अत्यधिक सहनिर्भरता, अपनेपन की ज़रूरतें और सत्ता के दुरुपयोग तथा क्रूर क्रूरता के पदानुक्रमित साधनों से कहीं अधिक कुछ है। लेकिन दुखद सच्चाई यह है कि उपरोक्त सिद्धांत हमारे आस-पास के गुरु/उद्धारकर्ता से प्रभावित "आध्यात्मिक जगत" में ठीक वही स्थिति पैदा करने के लिए पर्याप्त हैं जो हम देखते हैं। वास्तव में, वे ऐसा करने से बच नहीं सकते।
* * *
क्रिस्टोफर रीव (2002) ने आध्यात्मिकता के संबंध में अपने उल्लेखनीय, व्यावहारिक निष्कर्षों का सारांश प्रस्तुत किया। (रीव की स्वयं की वास्तविक आध्यात्मिक रुचियों ने उन्हें साइंटोलॉजी के अलावा मुक्तानंद और टीएम दोनों की जांच करने के लिए प्रेरित किया था।)
धीरे-धीरे मुझे यह विश्वास हो गया है कि आध्यात्मिकता इसमें पाई जाती है
जिस तरह से हम अपना दैनिक जीवन जीते हैं। इसका मतलब है समय बिताना।

दूसरों के बारे में सोचना।
यह बताने के लिए किसी "सुपरमैन" की ज़रूरत नहीं है कि आध्यात्मिक जगत के पूजनीय अवतारों और सिद्धांतकारों ने लंबे समय से जो कुछ स्पष्ट रूप से व्यवहार में नहीं लाया है, उसे वे दूसरों के जीवन को बर्बाद करते हुए, अपने कथित छायाहीन, "परिपूर्ण" और अद्वैत ज्ञानोदय पर गर्व करते रहे हैं। बेशक, हम सभी जानते हैं कि दूसरों के प्रति विचार करना आध्यात्मिक मार्ग की एक पूर्व शर्त है। वह प्रारंभिक, इसे बेहतर बनाओ 449

हालांकि, ज्ञानोदय की राह में कहीं न कहीं इसे अक्सर भुला दिया जाता है:
जैसे-जैसे मैंने उन लोगों के साथ समय बिताना शुरू किया जिन्होंने अपना बहुत सारा जीवन समर्पित कर दिया था,
ध्यान के लिए वर्षों का समय, वे लोग जिन्होंने अपना जीवन इसके इर्द-गिर्द बनाया था
मैंने देखा कि अहंकार से ऊपर उठने के उद्देश्य से की जाने वाली आध्यात्मिक प्रथाओं में,
उन्हें भी मेरी ही तरह कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनमें से कुछ ही लोग...
अगर वह अधिक करुणा, संवेदनशीलता या निस्वार्थ भाव से काम करता, तो
मेरे जान-पहचान के अधिकतर लोग बिल्कुल भी ध्यान नहीं करते थे।
(श्वार्ट्ज, 1996)।
रॉबर्ट थुरमन (2004) ने अपने एक परिचित के साथ हुए अपने अनुभवों के बारे में बताया, जो शांत और धार्मिक स्वभाव के लिए जानी जाती थीं, लेकिन उन्होंने उन्हें अपने नेतृत्व में आयोजित एक सम्मेलन में संवाद में भाग लेने से रोक रखा था। जब एक अन्य मित्र ने उनसे पूछा कि वे बातचीत में अधिक सक्रिय भूमिका क्यों नहीं निभा रहे हैं, तो थुरमन ने उत्तर दिया:
मुझे बहुत खुशी होगी, लेकिन फलां व्यक्ति मुझे बोलने नहीं देगा। ऐसा लगता है
उसे मेरे बारे में कुछ खटक रहा है!" मैंने अपने बोलने के लहजे में कहा।
एक घिनौने तरीके से, यह जानते हुए कि संबंधित मित्र,
पास में खड़ा कोई व्यक्ति मेरी बातें सुन रहा था।
यह बात करने का एक तुच्छ और असभ्य तरीका था, इससे पता चलता है कि
मेरा आत्म-नियंत्रण बहुत कमजोर था, और मुझे यह बताते हुए शर्म आती है।

कहानी। हालाँकि, नेता की प्रतिक्रिया और भी अधिक थी-
वह सदमे में थी। वह मेरी ओर दौड़ी और गुस्से से अपना चेहरा मेरे सामने कर दिया।
मेरे कमरे से, और उसने अपनी पूरी ताकत से चीखते हुए कहा, "भाड़ में जाओ,"
बॉब, तुम भाड़ में जाओ! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बारे में ऐसी बात कहने की!
इसके अलावा, कोई भी ज्ञान जिसे न केवल नकारा जा सकता है
शराब का सेवन (देखें विल्बर, 2000a) ही नहीं, बल्कि एक मामूली सर्दी (या स्टैफ संक्रमण) भी एक दिलचस्प प्रकार का ज्ञानोदय है: "मैं पहले प्रबुद्ध था, लेकिन मुझे फ्लू हो गया।" वास्तव में, यह "पतन" इस विचार को पूरी तरह से गलत साबित करता है कि "महान गुरु, स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के बाद, केवल दूसरों के कल्याण के लिए ध्यान करते हैं।" कहने का तात्पर्य यह है कि यदि उस सर्वोच्च विकास की "स्थायी" अनुभूति अस्थायी शारीरिक बीमारी जैसी किसी मामूली चीज़ से भी खो सकती है, तो स्पष्ट रूप से ध्यान का अभ्यास उस अवस्था को बनाए रखने के लिए जारी रखा जाता है, चाहे कोई भी ऋषि यह दावा करे कि यह केवल "दूसरों के लिए" किया जा रहा है। इन चिंताओं के बिना भी, हमारे विश्व के "प्रबुद्ध" व्यक्तियों द्वारा दी जाने वाली अत्यंत अज्ञानतापूर्ण सलाह और स्वार्थपूर्ण गलत बयानों की मात्रा इतनी अधिक है कि गुरुओं के सार को समझना असंभव हो जाता है।

उस अवस्था को किसी भी वास्तविक अंतर्निहित ज्ञान या बुद्धि-प्रेरित करुणा से जोड़ना उचित नहीं है। उन परिस्थितियों में वास्तविकता के प्रति प्रतिबद्धता की घोर कमी, जहाँ यह "प्रबुद्ध" व्यक्ति की प्रशंसा नहीं करती, इस संबंध में एक और स्पष्ट चेतावनी है। यह ऐसे व्यक्तियों की कथित "उच्च अंतर्दृष्टि" के सामने अपने स्वयं के निर्णय को झुकाने/समर्पित करने के खतरे को और रेखांकित करता है। वास्तव में, यह चेतावनी इस तर्क से पूरी तरह स्वतंत्र है कि कोई व्यक्ति उन्हीं व्यक्तियों का "बचकाना/अंधाधुंध/आज्ञाकारी रूप से अनुसरण" कर रहा है या "परिपक्वता से/सचेत रूप से समर्पण और आज्ञापालन" कर रहा है। क्योंकि, दूसरों की बुरी सलाह का विरोध करना ही सबसे अच्छा है, चाहे व्यक्ति में कोई भी खामियाँ हों या वह मनोवैज्ञानिक विकास के किसी भी चरण में हो।
इन सब के अलावा, अगर इस समय पृथ्वी पर मात्र एक दर्जन ही “गहन ज्ञान प्राप्त” ज़ेन गुरु हैं, तो यह संख्या उन हजारों, बल्कि लाखों लोगों की तुलना में बहुत कम है,

जिनका जीवन इन्हीं मार्गों—या उन्हीं दंडप्रधान “ज्ञानी गुरुओं”—के कारण तबाह हो चुका है। यह तथ्य कि ऐसे अनुयायियों में अक्सर यह समझने की स्वतंत्रता और पहल की कमी होती है कि स्वेच्छा से दुर्व्यवहार सहकर उन्होंने कितना कुछ खो दिया है, किसी भी तरह से उन “श्रेष्ठ प्राणियों” के कार्यों को उचित नहीं ठहराता जो उन पर अधिकार रखते हैं।

ऐसे “ऋषि-मुनि” के पदचिन्हों पर चलना, स्वयं के कष्टों को कम करने की दिशा में उठाया गया कोई आत्मविश्वासपूर्ण कदम नहीं हो सकता। और न ही यह दूसरों के उद्धार के लिए बोधिसत्व प्रतिज्ञा का पालन करने का कोई समझदारी भरा तरीका हो सकता है, क्योंकि इस प्रतिज्ञा का अर्थ तो औसतन दूसरों के कष्टों को कम करना होगा, न कि उन्हें बढ़ाना।

उस भविष्य या ज्ञान का क्या उपयोग है जो पुनः स्थापित नहीं करता?

क्या एक न्यायपूर्ण और पूर्णतः मानवीय दुनिया को संरक्षित किया जा सकता है? (मरीन, 1995)।

इसके विपरीत, अपनी स्वतंत्रता को बढ़ावा देकर, दूसरों की गलतियों को दोहराने के बजाय अपनी गलतियों से सीखकर, और यह समझने का प्रयास करके कि हमारे कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है, हम कम से कम यह जान सकते हैं कि मनुष्य के रूप में हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह तब भी सच है, भले ही व्यवहार में यह दिशा अक्सर उस दिशा के ठीक विपरीत हो, जिस दिशा में इस दुनिया के "आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध" गुरु और उनके समर्थक हमें आज्ञाकारी रूप से ले जाना चाहते हैं।

इसके अलावा, वास्तविक जीवन हममें से प्रत्येक के लिए पर्याप्त से अधिक "सीखने के अनुभव" प्रदान करता है, बशर्ते हम उनका लाभ आत्मनिरीक्षण और व्यक्तिगत परिवर्तन की दिशा में उठाना चाहें। किसी को भी "इसे बेहतर बनाओ 451" जैसी किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।

या फिर किसी गुरु-प्रतिबिंब या फिर किसी प्रतिबंधात्मक, स्वतंत्रता छीनने वाले आश्रम का सहारा लेकर संकटों का निर्माण करना।

मैंने अपने दोस्तों को आध्यात्मिकता के प्रति अपनी निराशा के बारे में बताया।

वास्तविक अभ्यास, और मेरी यह खोज कि लालसा और लोभ संक्रमण फैलाते हैं

वे आध्यात्मिक जीवन को भी उतना ही महत्व देते हैं जितना कि जीवन के अन्य पहलुओं को।

मैंने कहा, “जिस चीज़ को मैं पीछे छोड़ रहा था, वही मुझे मिल गई।”

यहां [कृपालु में]—क्लेश [पीड़ाएं], गलत धारणाएं-

जीवन, नए आध्यात्मिक बंधन बनाते हैं” (कोप, 2000)।

जैसा कि बटरफील्ड (1994) ने वर्षों तक पूरी निष्ठा से ट्रुंगपा और उनके उत्तराधिकारी ओसेल टेंडज़िन का अनुसरण करने के बाद उचित निष्कर्ष निकाला:

मैंने व्यक्तिगत संबंधों को धर्म पर आधारित करने का प्रयास छोड़ दिया।

न तो चेतना, न ही बोधिसत्व आदर्श, इनमें से कोई भी लक्ष्य की ओर नहीं ले जाता।

किसी दूसरे इंसान के साथ एक स्थायी रिश्ता स्थापित करने के लिए

अस्तित्व। इसके बजाय मैंने यह खोजने की कोशिश की कि मैं किसी भी क्षण क्या कर सकता हूँ।

स्वयं और दूसरों के प्रति सम्मान और देखभाल करने की भावना, संवाद-

ईमानदारी से बात करें, और अपनी जरूरतों और अनुभवों के अनुसार जिएं।

यह विचार अचानक उत्पन्न हुआ, बिना यह सोचे कि मैं एक आध्यात्मिक यात्रा पर हूँ।

या तो सब कुछ एक सर्वव्यापी मार्ग पर लाना होगा।

या, जैसा कि कार्लोस कास्टानेडा के संभावित उत्तराधिकारी ने - जिन्होंने बाद में बुद्धिमानी से उस भूमिका को अस्वीकार कर दिया - महसूस किया:

कार्लोस कास्टानेडा की दुनिया में मेरे प्रवेश ने मुझे

कई बातें। इसने मुझे खुद पर निर्भर रहने की वास्तविकता दिखाई।

और अपनी कल्पनाओं को दूसरों पर थोपना नहीं चाहिए। इसने मुझे यह सिखाया।

कि एकमात्र सच्चा जादू "साधारण जादू" है और यह कि

जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

(टोनी करम, [वालेंस, 2003] में)।

डेबोरा बोहेम (1996; इटैलिक्स जोड़े गए), जापान में ज़ेन बौद्ध धर्म के साथ अपने स्वयं के अनुभवों के बाद, ने भी यही बात कही:

अब मुझे एहसास हुआ कि मैं भविष्य में जो भी ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ, वह संभव नहीं है।

यह जीवन जीने से, गलतियाँ करने से, सोचने से आएगा।
चीजों को समझना, ठीक वैसे ही जैसे मैंने सबसे मूल्यवान सबक सीखे थे
क्योटो में सीखा कि कैसे कम त्रुटिपूर्ण नश्वर माँ बना जाए।
यह घटना ध्यान कक्ष के बाहर घटी।
इसके लिए किसी नए गुरु, नए धर्म, नए चर्च या तथाकथित माध्यम से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं की आवश्यकता नहीं है, और न ही उनकी उपस्थिति वास्तविक आध्यात्मिक विकास (जो भी हो) के लिए लाभकारी है। 452 गुरुओं का सार हटाना

बल्कि, यह हममें से प्रत्येक पर निर्भर है कि हम अपनी स्वतंत्रता और बुद्धि का उपयोग करके दुनिया को एक बेहतर जगह बनाएं और खुद को बेहतर इंसान बनाएं, चाहे इसके लिए हम ध्यान का अभ्यास करें या न करें।
मोनिका पिग्नोट्टी (1989) ने साइंटोलॉजी में आधा दशक बिताने के बाद यह राय व्यक्त की:
मुझे पता है कि जीवन के सवालों के जवाब मुझे कोई नहीं देगा।
अब मुझे एहसास हुआ है कि मेरे पास एक ऐसा दिमाग है जो पूरी तरह से मार्गदर्शन करने में सक्षम है।
जीवन में मेरे द्वारा लिए गए निर्णयों में मेरा मार्गदर्शन करने के कारण मैं कभी भी ऐसा नहीं करूंगा।
मैं अपने ज्ञान और भावनाओं से ऊपर किसी को या किसी भी चीज को नहीं रख सकता। अब मैं
उन तकनीकों को जानें जिनका [कथित तौर पर] लोगों को नियंत्रित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
लोगों के दिमाग में और इस दुनिया में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनके पास कोई नहीं है इन तकनीकों का उपयोग करके हेरफेर करने में संकोच
लोगो... मेरा जीवन और मेरा दिमाग अब मेरे अपने हैं और मैं
उन्हें फिर कभी मत छोड़ना।
ये सबक उन सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए बहुत कठिन होते हैं जो बिना सोचे-समझे "पूर्ण ज्ञान प्राप्त गुरु के मिथक" पर विश्वास करना चाहते हैं। लेकिन जो कोई भी आध्यात्मिक मार्ग पर ज्ञात जानकारों द्वारा बताई गई बातों पर सवाल उठाता रहता

है, वह अंततः इन्हीं निष्कर्षों और संकल्पों पर पहुँचता है। यह अपरिहार्य है, क्योंकि लंबे समय से चली आ रही जानकारी का कोई और निष्कर्ष नहीं निकलता।
इसलिए हममें से प्रत्येक को अपने-अपने मार्ग पर चलना चाहिए, अपने हृदय की बात माननी चाहिए, निष्पक्ष और बहु-दृष्टिकोण वाले तर्क का यथासंभव उपयोग करना चाहिए, और साहसपूर्वक सत्य बोलना चाहिए, चाहे वह किसी भी "प्रबुद्ध" संत के सत्तावादी दृष्टिकोण के अनुरूप हो या न हो।
यह आगे बढ़ने का एक त्रुटिहीन तरीका नहीं हो सकता है, लेकिन हमने यहाँ जो कुछ भी देखा है, उसके बाद स्थिति इससे बदतर नहीं हो सकती।
तो आइए इसे बेहतर बनाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं, वह करें।

आवश्यक ऑनलाइन

संसाधन

कुल मिलाकर
यदि आप अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को महत्व देते हैं, तो कृपया किसी भी गैर-पारंपरिक धर्म में शामिल होने पर विचार भी न करें, चाहे उसमें गुरु हो या न हो, जब तक कि आपने पहले इन वेबसाइटों के माध्यम से उस धर्म के बारे में शोध न कर लिया हो:
फ्रीडम ऑफ माइंड सेंटर (स्टीवन हसन, कॉम्बैटिंग के लेखक)
(पंथ द्वारा नियंत्रित मन और बंधनों से मुक्ति) —
www.freedomofmind.com
रॉस इंस्टीट्यूट — www.rickross.com
कल्ट न्यूज़ — www.cultnews.com
गुरु रेटिंग्स याहू! ग्रुप —
http://groups.yahoo.com/group/GuruRatings
सरलो की गुरु रेटिंग सेवा -
www.globalserve.net/~sarlo/Map.htm (सारलो के कुछ उच्चतर मानचित्र)
रेटिंग को निश्चित रूप से इसके आधार पर कम किया जाना चाहिए।

इस पुस्तक में प्रस्तुत जानकारी)
रीफोकस — www.refocus.org

453
454 गुरुओं का पर्दाफाश

अंतर्राष्ट्रीय पंथ अध्ययन संघ (ICSA), पंथ अध्ययन
समीक्षा — www.csj.org
पूर्व-पंथ संसाधन केंद्र — www.ex-cult.org
पंथ सूचना केंद्र (यूके) — www.cultinformation.org.uk
याहू! ग्रुप्स — www.groups.yahoo.com
एमएसएन ग्रुप्स — http://groups.msn.com
फ्लेमआउट — www.flameout.org/flameout/gurus/index.html

कल्ट अवेयरनेस नेटवर्क से सावधान रहें —
www.cultawarenessnetwork.org (यह अब एक "साइंटोलॉजी-संबंधित इकाई)

विशिष्ट आध्यात्मिक नेताओं और संगठनों के बारे में जानकारी
आदि दा - http://lightmind.com/library/daismfiles,
www.adidaarchives.org
एंड्रयू कोहेन — http://whatenlightenment.blogspot.com
http://what-enlightenment-uncensored.blogspot.com
http://jekyllhyde.homepage.dk/home.html
बौद्ध धर्म — http://www.american-buddha.com/CULTS.htm
चिन्मय - www.chinmoycult.com
क्रियानंद, आनंदा चर्च ऑफ सेल्फ-रियलाइजेशन —
www.anandainfo.com
www.anandauncovered.com
Ma Jaya Sati Bhagavati — www.kashiashram.com

Maharaji, Divine Light Mission — http://ex-premie.org
http://www.prem-rawat-maharaji.info
Maharishi Mahesh Yogi — http://onwww.net/trancenet.org
www.suggestibility.org
www.angelfire.com/cantina/donandmarcy/TM.html आवश्यक ऑनलाइन संसाधन 455

मुक्तानंद, SYDA - www.leavingsiddhayoga.net
परमहंस योगानंद, आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप —
www.yogananda-dif.org
पंथ भंडाफोड़ - एसआरएफ डिवीजन:
http://p208.ezboard.com/bcultbusterssrfdivision
एसआरएफ वालरस: www.angelfire.com/blues/srfwalrus
क्रिया योग चर्चा मंच:
www.boards2go.com/boards/board.cgi?&user=Kriya
सच्चिदानंद - http://meltingpot.fortunecity.com/albania/148
साईं बाबा — www.exbaba.com
www.snowcrest.net/sunrise
http://www.npi-news.dk/page152.htm
http://home.no.net/anir/Sai/enigma/index.htm
http://bdsteel.tripod.com/More/index.html
साइंटोलॉजी — www.xenu.net
www.factnet.org
http://home.snafu.de/tilman
www.lisamcpherson.org
http://lisatrust.bogie.nl/home.htm
ज़ेन — www.darkzen.com

उन साइटों के संग्रह के लिए जो स्थानांतरित हो जाती हैं या गायब हो जाती हैं: इंटरनेट

आर्काइव वेबैक मशीन
(http://web.archive.org/collections/web.html).

ग्रंथ सूची

इनमें से कई किताबें अब छपाई में उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए मुझे यह समस्या आई है कि...
www.abebooks.com पर प्रयुक्त पुस्तकों का भंडार अमूल्य है।
मेरे अपने शोध के लिए।

एरोन्स, मार्क और जॉन लॉफ्टस (1998 [1991]), अपवित्र त्रिमूर्ति: वैटिकन, नाज़ी और स्विस बैंक (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन ग्रिफिन)।
एक्चुअलिज़्म (2006), "चयनित पत्राचार पीटर: जेन गुडॉल" (http://www.actualfreedom.com.au/actualism/peter/selected-correspondence/corr-goodall.htm)
एड्रिएल, जीन (1947), अवतार: अवतार मेहर बाबा की जीवन कहानी (बर्कले, सीए: जॉन एफ. कैनेडी यूनिवर्सिटी प्रेस)।
एजेंसी फ्रांस-प्रेस (1999), "ऑस्ट्रेलियाई किशोर ने चार्ल्स मैनसन के माध्यम से धमकी भेजी," 22 मार्च
(http://www.rickross.com/reference/manson/manson13.html).
अलेक्जेंडर, मेरेडिथ (2001), "तीस साल बाद, स्टैनफोर्ड जेल प्रयोग जारी है," स्टैनफोर्ड रिपोर्ट में, 22 अगस्त (http://news-service.stanford.edu/news/august22/ prison2-822.html)

एलेग्रो, जॉन एम. (1970), द सेक्रेड मशरूम एंड द क्रॉस: फर्टिलिटी कल्ट्स एंड द

ओरिजिन ऑफ जूडाइज्म एंड क्रिश्चियनिटी (न्यूयॉर्क: डबलडे एंड कंपनी)।
एलन, शार्लेट (2001), "विद्वान और देवी," अटलांटिक मंथली में, जनवरी (http://www.rickross.com/reference/wicca/wicca31.html).
एलन, जॉन एल., जूनियर (2004), ऑल द पोप्स मेन: द इनसाइड स्टोरी ऑफ हाउ द वैटिकन रियली थिंक्स (न्यूयॉर्क: डबलडे)।
अल्टर, रब्बी (2004), "रब्बी अल्टर से पूछें" (http://web.archive.org/web/20040216042603/http://www.jewmich.com/askthe.htm)
अम्माची (2004), "अब" (http://www.ammachi.org/amma/index.html).
अमृतानंदमयी, माता (1994), मेरे बच्चों के लिए (सैन रेमन, सीए: माता अमृतानंदमयी केंद्र)।
आनंदमय, ब्रदर (1995), आध्यात्मिक विवाह (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
आनंदमय, ब्रदर (1982), क्या आज की दुनिया में शांति संभव है? (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
आनंदमय, ब्रदर (1979), पीढ़ीगत अंतर को पाटना (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
अनंतनारायणन, एन. (1970), स्वामी शिवानंद की प्रेरक जीवन-कहानी (नई दिल्ली: इंद्रप्रस्थ प्रेस)।
एंथोनी, डिक, ब्रूस एकर और केन विल्बर (1987), आध्यात्मिक विकल्प: आंतरिक परिवर्तन के प्रामाणिक मार्गों को पहचानने की समस्या (न्यूयॉर्क: पैरागॉन हाउस)।
अरेड्डी, जेम्स टी. (1989), "श्री चिनमोय एक उपाधि का दावा करना चाहते हैं: स्टंटमैन सुप्रीम," द वॉल स्ट्रीट जर्नल में, 13 जनवरी (http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy9.html)
एरेन्ड्ट, हन्ना (1992 [1963]), आइचमैन इन जेरूसलम: ए रिपोर्ट ऑन द बैनैलिटी ऑफ इविल (न्यूयॉर्क: पेंगुइन बुक्स)। ग्रंथसूची 459

आर्या, रोहित (2004), "परमहंस योगानंद—भारतीय आध्यात्मिकता के भीतर से

रिपोर्ट”
(http://www.indiayogi.com/content/indsaints/
yogananda.asp).
एस्केनासी, हैंस (1978), क्या हम सब नाज़ी हैं? (सेकाकस, एनजे: लायल स्टुअर्ट इंक.)।
एसोसिएटेड प्रेस (2003), "सेलिब्रिटीज लॉस एंजिल्स में ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन सेंटर की स्थापना के लिए प्रयासरत हैं।"
(http://www.rickross.com/reference/tm/tm59.html).
एसोसिएटेड प्रेस (1991), “स्वामी के पूर्व अनुयायियों का कहना है कि उन्होंने यौन संबंध बनाने की मांग की थी,” अगस्त 2
(http://www.rickross.com/reference/yogaville/
yogaville9.html).
एटैक, जॉन (1992), “द टोटल फ्रीडम ट्रैप: साइंटोलॉजी, डायनेटिक्स और एल. रॉन हबर्ड” (http://www.factnet.org/Books/ TotalFreedomTrap/ TFTrap.html?FACTNet)
एटैक, जॉन (1990), ए पीस ऑफ ब्लू स्काई: साइंटोलॉजी, डायनेटिक्स और एल. रॉन हबर्ड एक्सपोज्ड (न्यूयॉर्क: कैरोल पब्लिशिंग ग्रुप; पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.clambake.org/archive/books/apobs/)
अरबिंदो, श्री (1953), श्री अरबिंदो स्वयं और माँ पर (पॉन्डिचेरी, भारत: श्री अरबिंदो आश्रम)।
ऑस्टिन, बिल (1999), “रेव. थॉमस अल्बर्न, समर्थन पत्र लिखने वाले, अंततः दा से मिलते हैं”
(http://lightmind.com/thevoid/daism/alhburn-leela.html).
बाबा, मेहर (1967), प्रवचन (सैन फ्रांसिस्को, सीए: सूफीवाद पुनर्उन्मुख)।
बाबा, उपासनी (1978), सद्गुरु उपासनी-बाबा महाराजा की बातें, खंड 2, भाग बी (सकोरी, भारत: उपासनी कन्याकुमारी स्थान)।
बेली, डेविड और फे बेली (2003), “निष्कर्ष” (http://web.archive.org/ web/20031214164954/http://www.npi-news.dk/
page152.htm)

बैरी, डेव (1992), डेव बैरी डज़ जापान (न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस)।
460 गुरुओं का पर्दाफाश

बार्ट, पीटर (1998), "धर्म के रक्षकों को निश्चिंत रहना चाहिए," डेली वैरायटी में, 27 जून (http://www.rickross.com/reference/ scientology/ celebrities/celebrities1.html)
बीबीसी (2003), "द कॉन्क्वेस्ट" (http://www.bbc.co.uk/radio4/ history/ sceptred_isle/page/8.shtml?question=8).
बेहर, रिचर्ड (1991), "लालच और सत्ता की फलती-फूलती संस्कृति," टाइम पत्रिका में, 6 मई
(http://www.rickross.com/reference/scientology/
scien413.html).
बेलफ्रेज, सैली (1981), खालीपन के फूल: एक आश्रम पर विचार (न्यूयॉर्क: द डायल प्रेस)।
बेलामी, डोडी (1995), "एकांकर: एक पूर्व सदस्य आंदोलन पर पुनर्विचार करता है," सैन डिएगो रीडर में, 22 जून (http://www.geocities.com/eckcult/ dodie.html)
बेरी, जेसन (1992), लीड अस नॉट इनटू टेम्पटेशन: कैथोलिक प्रीस्ट्स एंड द सेक्सुअल एब्यूज ऑफ चिल्ड्रन (न्यूयॉर्क: डबलडे)।
बेरी, जेसन और गेराल्ड रेनर (2004), मौन की प्रतिज्ञा: जॉन पॉल द्वितीय के पोप पद में सत्ता का दुरुपयोग (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
बेरज़िन, एलेक्स, अनुवादक एवं संपादक (1978), महामुद्रा (तिब्बती कृतियों एवं अभिलेखागार पुस्तकालय)।
बेयरस्टीन, डेल (1994), साई बाबा के चमत्कार: एक अवलोकन (http:// www.exbaba.de/files/A_Critical_Study.html)
भजन, योगी (1977), योगी भजन की शिक्षाएँ: बोले गए शब्दों की शक्ति (पोमोना, सीए: आर्कलाइन पब्लिकेशन्स)।
भारती, अगेहानंद (1980), द ओचर रॉब: एन ऑटोबायोग्राफी (सांता बारबरा, सीए: रॉस-एरिकसन)।

भारती, अगेहानंद (1976), द लाइट एट द सेंटर (सांता बारबरा, सीए: रॉस-एरिकसन)।
भारती, आगेहानंद (1974), "काल्पनिक तिब्बत: रामपावाद की उत्पत्ति और निरंतरता," तिब्बत सोसाइटी बुलेटिन, खंड 7 (http://www.serendipity.li/baba/rampa.html) ग्रंथसूची 461

ब्लैकर, हाल (2001), "ज्ञानोदय का दिव्य विदूषक श्री ली लोज़ोविक," व्हाट इज़ एनलाइटनमेंट? अंक 20 (http://www.wie.org/j20/lee.asp)
ब्लैकर, हाल (1996), "द क्रेमर पेपर्स: सत्ता-विरोधीवाद के मुखौटे के पीछे एक नज़र," व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक 9 (http://www.wie.org/j9/kramer.asp)
ब्लैकमोर, सुसान (1986), द एडवेंचर्स ऑफ ए पैरासाइकोलॉजिस्ट (बफ़ेलो, एनवाई: प्रोमेथियस बुक्स)।
ब्लैकमोर, सुसान (1983), "क्या शरीर से बाहर के अनुभव उत्तरजीविता के प्रमाण हैं?" एनाबायोसिस—निकट-मृत्यु अध्ययन के लिए जर्नल, खंड 3 (http://www.susanblackmore.co.uk/Articles/ Anabiosis %201983.htm)
ब्लैंको, जोडी (2000), द कम्प्लीट गाइड टू बुक पब्लिसिटी (न्यूयॉर्क: ऑलवर्थ प्रेस)।
ब्लास, थॉमस (2004), द मैन हू शॉक्ड द वर्ल्ड: द लाइफ एंड लेगेसी ऑफ स्टेनली मिलग्राम (न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स)।
ब्लावत्स्की, हेलेना पी., एलिजाबेथ प्रेस्टन और क्रिसमस हम्फ्रीज़ द्वारा संपादित (1967), द सीक्रेट डॉक्ट्रिन का संक्षिप्त रूप (व्हीटन, आईएल: द थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस)।
ब्लोफेल्ड, जॉन (1970), तिब्बत का तांत्रिक रहस्यवाद: एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका (न्यूयॉर्क: ई. पी. डटन)।
बॉब, श्री (2000), द नी ऑफ दाइज़्म: डीकंस्ट्रक्टिंग आदि दा (http://lightmind.com/Impermanence/Library/knee/).
बोहम, डेबोरा बोलिवर (1996), ए ज़ेन रोमांस: वन वुमन्स एडवेंचर्स इन ए मॉनेस्ट्री

(न्यूयॉर्क: कोडान्शा इंटरनेशनल)।
बोहम, डेविड और बेसिल जे. हिले (1993), द अनडिवाइडेड यूनिवर्स (न्यूयॉर्क: रूटलेज)।
बोंडर, सैनियल (2003), "पारस्परिकता में जागना" (http://www.wakingdown.org)
बोंडर, सैनियल (1990), विश्व-शिक्षक का दिव्य उद्भव (क्लियरलेक, सीए: द डॉन हॉर्स प्रेस)।

बोस, निर्मल कुमार (1974), माई डेज़ विद गांधी (नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड)।
बोस्टॉक, क्लिफ (1998), "गुरु विद ए स्टिक: एन इंटरव्यू विद मा जया," इन क्रिएटिव लोफिंग, अप्रैल 18 (http://web.archive.org/web/20040309150200/http://www.soulworks.net/writings/paradigms/site_027.html)
बोस्टन ग्लोब, खोजी स्टाफ (2003), विश्वासघात: कैथोलिक चर्च में संकट (न्यूयॉर्क: लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी)।
ब्राउन, किर्क (1984), रजनीशपुरम: अवांछित समाज— "यूटोपिया की खोज में संस्कृतियाँ टकराती हैं" (मेडफोर्ड, ओआर: स्काउट क्रीक प्रेस)।
ब्रेनन, बारबरा एन (1993), लाइट इमर्जिंग: द जर्नी ऑफ पर्सनल हीलिंग (टोरंटो: बैंटम बुक्स)।
ब्रेनन, बारबरा एन (1987), हैंड्स ऑफ लाइट: ए गाइड टू हीलिंग थ्रू द ह्यूमन एनर्जी फील्ड (टोरंटो: बैंटम बुक्स)।
ब्रेंट, पीटर (1972), भारत के धर्मगुरु (लंदन: एलन लेन)।
ब्रेवर, मार्क (1975), "'हम तुम्हें तोड़कर फिर से जोड़ देंगे'" साइकोलॉजी टुडे में, अगस्त (http://www.rickross.com/reference/est/estpt8.html)
ब्रुक, ताल (1999 [1990]), अवतार ऑफ नाइट: स्पेशल मिलेनियल एडिशन (बर्कले, सीए: एंड रन पब्लिशिंग)।
ब्राउन, मिक (2000), "दिव्य पतन," द डेली टेलीग्राफ सैटरडे मैगज़ीन में, 27

अक्टूबर (http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba3.html)
ब्राउनिंग, क्रिस्टोफर आर. (1998 [1992]), ऑर्डिनरी मेन: रिजर्व पुलिस बटालियन 101 और पोलैंड में अंतिम समाधान (न्यूयॉर्क: हार्परपेरेनियल)।
ब्रुनी, फ्रैंक और एलिनोर बर्केट (2002 [1993]), शर्म का सुसमाचार: बच्चे, यौन शोषण और कैथोलिक चर्च (न्यूयॉर्क: पेरिनियल)।

ब्रंटन, पॉल (1935), ए सर्च इन सीक्रेट इंडिया (न्यूयॉर्क: ई. पी. डटन एंड कंपनी, इंक.)।
बुग्लियोसी, विंसेंट और कर्ट जेंट्री (1975), हेल्टर स्केल्टर: द ट्रू स्टोरी ऑफ द मैनसन मर्डर्स (न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स)।
बर्क, एबॉट जॉर्ज (1994), एन ईगल्स फ्लाइट: ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए ग्नोस्टिक ऑर्थोडॉक्स क्रिश्चियन (जिनेवा, एनई: सेंट जॉर्ज प्रेस)।
बरोज़, विलियम एस. (1995 [1972]), अली की मुस्कान/नग्न साइंटोलॉजी (बॉन, जर्मनी: विस्तारित मीडिया संस्करण)।
बरोज़, विलियम एस. (1974), द जॉब: डैनियल ओडियर द्वारा विलियम एस. बरोज़ के साथ साक्षात्कार (न्यूयॉर्क: पेंगुइन बुक्स)।
बसवेल, रॉबर्ट ई. (1992), द ज़ेन मोनास्टिक एक्सपीरियंस: बुद्धिस्ट प्रैक्टिस इन कंटेम्परेरी कोरिया (प्रिंसटन, एनजे: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस)।
बटलर, केटी (1990), “बौद्ध अमेरिका की छाया,” कॉमन बाउंड्री में, मई-जून।
बटलर, केटी (1985ए), “सेक्स प्रथाएं बंद नहीं हुईं, मारिन पंथ के अधिकारियों ने स्वीकार किया,” सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल में, 9 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida9.html)
बटलर, केटी (1985), “गुरु का फिजी हेवन जिसे ‘पैराडाइज’ कहा जाता है,” सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल में, 5 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida11.html)
बटरफील्ड, स्टीफन टी. (1994), द डबल मिरर: ए स्केप्टिकल जर्नी इनटू बुद्धिस्ट तंत्र (बर्कले, सीए: नॉर्थ अटलांटिक बुक्स)।

कैडी, एलीन (1976), फ़ाउंडेशन्स ऑफ़ फ़ाइंडहॉर्न (फ़ॉरेस, स्कॉटलैंड: फ़ाइंडहॉर्न पब्लिकेशन्स)।
कैम्पबेल, जून (1996), अंतरिक्ष यात्री: तिब्बती बौद्ध धर्म में महिला पहचान की खोज में (न्यूयॉर्क: जॉर्ज ब्राज़िलर)।
कैंडर (2001), "नवीनतम समाचार" (http://web.archive.org/web/20031201170313/http://www.savemtwashington.org/).

कैपलान, मारियाना (2002), क्या आपको गुरु की आवश्यकता है? (लंदन: थोरसन्स)।
कैपलान, मारियाना (2001), हाफवे अप द माउंटेन: द एरर ऑफ प्रीमैच्योर क्लेम्स टू एनलाइटनमेंट (प्रेस्कॉट, एज़ेड: होहम प्रेस)।
कार्लसन, पीटर (2002ए), "घोटाले से भरा चक्र: योगियों का पर्दाफाश," वाशिंगटन पोस्ट में, 27 अगस्त (http://www.washingtonpost.com/ac2/wp-dyn?pagename=article
&node=&contentId=A64895-2002Aug26&notFound=true)
कार्लसन, पीटर (2002), "शांति बांड पर योगिक उड़ान भरना", वाशिंगटन पोस्ट में, 29 अगस्त
(http://www.rickross.com/reference/tm/tm37.html).
कार्नाहन, समनर (1995), मेरे दुश्मनों की उपस्थिति में (सांता फ़े, एनएम: हार्ट्सफ़ायर बुक्स)।
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004e), "जीन ह्यूस्टन और द मिस्ट्री स्कूल," द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में (http://www.skepdic.com/houston.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004डी), "एंथ्रोपोसोफी, रुडोल्फ स्टेनर (1861 – 1925), और वाल्डोर्फ स्कूल," द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में (http://www.skepdic.com/steiner.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004सी), "फायरवॉकिंग," द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में (http://www.skepdic.com/firewalk.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004बी), "अविनाशी शरीर," द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में

(http://www.skepdic.com/incorrupt.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004ए), “कोल्ड रीडिंग,” द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में (http://www.skepdic.com/coldread.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2004), “एलियन अपहरण,” द स्केप्टिक्स डिक्शनरी में (http://www.skepdic.com/aliens.html)
कैरोल, रॉबर्ट टी. (2003), “द स्केप्टिक्स डिक्शनरी न्यूज़लेटर 38” (http://www.skepdic.com/news/newsletter38.html)
कास्त्रो, स्टीफन जे. (1996), फिंडहॉर्न फाउंडेशन के भीतर पाखंड और असहमति: एक नए युग के समुदाय के समाजशास्त्र की ओर (फॉरेस, स्कॉटलैंड: न्यू मीडिया बुक्स)। ग्रंथसूची 465

चैडविक, डेविड (1999), क्रुक्ड कुकुम्बर: शुनर्यु सुजुकी का जीवन और ज़ेन शिक्षाएँ (न्यूयॉर्क: ब्रॉडवे बुक्स)।
चैडविक, डेविड (1994), थैंक यू एंड ओके! जापान में एक अमेरिकी ज़ेन विफलता (न्यूयॉर्क: पेंगुइन/अर्काना)।
चार्लटन, हिल्डा (1990), हेल-बेंट फॉर हेवन: द ऑटोबायोग्राफी ऑफ हिल्डा चार्लटन (वुडस्टॉक, एनवाई: गोल्डन क्वेस्ट)।
चटर्जी, अरूप (2003), मदर टेरेसा: अंतिम फैसला (कोलकाता: मेटियोर बुक्स; पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.meteorbooks.com पर)।
चेलिशेव, ई. (1987), “स्वामी विवेकानंद—महान भारतीय मानवतावादी, लोकतांत्रिक और देशभक्त,” हरीश सी. गुप्ता, संपादक (1987), सोवियत संघ में स्वामी विवेकानंद अध्ययन (कलकत्ता: रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान)।
च्यू, सैली (1998), “पैराडाइज लॉस्ट,” आउट मैगज़ीन में, दिसंबर/जनवरी (http://leavingsiddhayoga.net/homophobia_in_sy.htm)
चिनमोय, श्री (1985), गुरु और शिष्य (जमैका, न्यूयॉर्क: अग्नि प्रेस)।
चिनमोय, श्री (1978), ध्यान: ईश्वर-संतुष्टि में मनुष्य-पूर्णता (जमैका, एनवाई: औम प्रकाशन)।
चोपड़ा, दीपक (2000), ईश्वर को कैसे जानें: रहस्यों के रहस्य में आत्मा की यात्रा (न्यूयॉर्क: हार्मनी बुक्स)।

चोपड़ा, सोनिया (1999), “सच्चिदानंद का योग आश्रम एक नए विवाद में घिरा, पुराने यौन उत्पीड़न के आरोप फिर से उभरने लगे,” रेडिफ ऑन द नेट में, जून (http://www.rickross.com/reference/yogaville/yogaville21.html).
क्रिस्टोफर, मिलबोर्न (1975), मीडियम्स, मिस्टिक्स, और द ऑकल्ट (न्यूयॉर्क: थॉमस वाई. क्रोवेल कंपनी)।
क्रिस्टोफर, मिलबोर्न (1970), ईएसपी, सीयर्स और साइकिक्स (न्यूयॉर्क: थॉमस वाई. क्रोवेल कंपनी)।
चर्चिल, पोला (1996), शिव महावतार बाबाजी (बेवर्ली हिल्स, सीए: चर्चिल पब्लिशिंग कंपनी)।
466 गुरुओं का पर्दाफाश

सियाल्डिनी, रॉबर्ट बी. (2001), प्रभाव: विज्ञान और अभ्यास (टोरंटो: एलन और बेकन)।
क्लार्क, टॉम (1980), द ग्रेट नारोपा पोएट्री वॉर्स (सांता बारबरा, सीए: कैडमस एडिशन्स)।
क्लेसन, एलन (1996 [1990]), द क्वाइट वन: ए लाइफ ऑफ जॉर्ज हैरिसन (लंदन: सैंक्चुअरी पब्लिशिंग लिमिटेड)।
क्लाउड, डेविड डब्ल्यू. (2000), “एल्विस प्रेस्ली: रॉक एंड रोल के राजा” (http://www.wayoflife.org/fbns/elvispresley.htm)
कोहेन, एंड्रयू (2005), “व्हाट इज एनलाइटनमेंट? पत्रिका के लिए समर्थन” (http://www.andrewcohen.org/pressroom/WhatIsEnlightenmentquotes.asp)
कोहेन, एंड्रयू (2002), लिविंग एनलाइटनमेंट (लेनोक्स, एमए: मोक्ष फाउंडेशन)।
कोहेन, एंड्रयू (2001ए), "जो है उससे जो होना चाहिए," व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक 19 (http://www.wie.org/j19/lerner.asp)
कोहेन, एंड्रयू (2001), “क्यों मत पूछो—बस कुछ करो,” व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक 19 (http://www.wie.org/j19/majaya.asp)
कोहेन, एंड्रयू (2000a), “योग, अहंकार और शुद्धि,” व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक

(http://www.wie.org/j17/desai.asp?page=1).
कोहेन, एंड्रयू (2000), एम्ब्रेसिंग हेवन एंड अर्थ (लेनोक्स, एमए: मोक्ष फाउंडेशन)।
कोहेन, एंड्रयू (1999a), "'मैं कर सकता हूँ' बनाम 'मैं हूँ': आत्म-नियंत्रण और ज्ञानोदय के बीच क्या संबंध है?" ज्ञानोदय क्या है? अंक 15 (http://www.wie.org/j15/andrew.asp)
कोहेन, एंड्रयू (1999), गुरु सिद्धांत के बचाव में (लेनोक्स, एमए: मोक्ष फाउंडेशन)।
कोहेन, एंड्रयू (1992), ऑटोबायोग्राफी ऑफ एन अवेकनिंग (कोर्टे मडेरा, सीए: मोक्ष फाउंडेशन)। ग्रंथ सूची 467

कोहेन, एंड्रयू (1989), माई मास्टर इज़ माई सेल्फ (लार्कस्पूर, सीए: मोक्ष फाउंडेशन)।
कोहेन, सुसान (2002ए), "स्वामी सच्चिदानंद, इंटीग्रल योग संस्थान, योगाविले—एक उत्तरजीवी की कहानी," 31 अगस्त (http://www.rickross.com/reference/yogaville/yogaville61.html)
कॉलिन, मौली, पीटर सीडमैन और टोनी लुईस (1985), "दल-बदलुओं ने कई आरोप लगाए," मिल वैली रिकॉर्ड में, 3 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida19.html)
कोलमैन, ई. ए. एम. (1974), शेक्सपियर में अश्लीलता का नाटकीय उपयोग (लंदन: लॉन्गमैन ग्रुप लिमिटेड)।
कॉनवे, फ्लो और जिम सीगलमैन (1982), "सूचना रोग: क्या पंथों ने एक नई मानसिक बीमारी पैदा की है?" साइंस डाइजेस्ट में, जनवरी (उद्धरण http://www.amazing.com/scientology/ cos-mind-control.html? FACTNet पर उपलब्ध है)।
कूपर, पॉलेट (1997), "उत्पीड़न डायरी" (http://www.lermanet.com/cos/cooperdiary.htm?FACTNet)
कूपर, पॉलेट (1971), द स्कैंडल ऑफ साइंटोलॉजी (न्यूयॉर्क: टॉवर पब्लिकेशन्स, इंक.; पूरा पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.clambake.org/archive/books/tsos/sos.html)

कूपरमैन, एलन (2005), "उत्पीड़न का दावा मानवता के लिए रोइल हैबिटेट" (http://www.newsobserver.com/nation_world/story/2194735p-8576011c.html)
कोप, स्टीफन (2000), योग और सच्चे स्व की खोज (न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स)।
कॉर्नेल, जूडिथ (2001), अम्मा: हीलिंग द हार्ट ऑफ द वर्ल्ड (न्यूयॉर्क: हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंक.)।
कॉर्नवेल, जॉन (1999), हिटलर का पोप: पायस XII का गुप्त इतिहास (न्यूयॉर्क: वाइकिंग)।
कोरीडन, बेंट और एल. रॉन हबर्ड, जूनियर (1998 [1987]), एल. रॉन हबर्ड: मसीहा या पागल? (सेकाकस, एनजे: लायल स्टुअर्ट इंक.; पूरा पाठ ऑनलाइन http://www.clambake.org/archive/books/mom/Messiah_or_Madman.txt पर उपलब्ध है)।
468 गुरुओं का पर्दाफाश

दा, आदि (1995), द नी ऑफ लिसनिंग: द अर्ली-लाइफ ऑर्डियल एंड द रेडिकल स्पिरिचुअल रियलाइजेशन ऑफ द डिवाइन वर्ल्ड-टीचर (मिडलटाउन, सीए: द डॉन हॉर्स प्रेस)।
डकोटा (1998), “परमहंस योगानंद: एक अलग प्रकाश” (http://www.yogananda-dif.org)
दलाल, ए. एस., संपादक (2000), ए ग्रेटर साइकोलॉजी: श्री अरबिंदो के मनोवैज्ञानिक विचार का परिचय (लॉस एंजिल्स: जेरेमी पी. टार्चर)।
डैनियलौ, एलेन (1987), भूलभुलैया का रास्ता: पूर्व और पश्चिम की यादें (न्यूयॉर्क: न्यू डायरेक्शंस)।
दास, भगवान (1997), इट्स हियर नाउ (आर यू?) (न्यूयॉर्क: ब्रॉडवे बुक्स)।
दास, सुशी (2003), “हार्डली कृष्णा,” द एज (ऑस्ट्रेलिया) में, 2 जून (http://www.theage.com.au/articles/2003/06/02/1054406108753.html)
दास, राम (2000), स्टिल हियर: एम्ब्रेसिंग एजिंग, चेंजिंग, एंड डाइंग (न्यूयॉर्क: रिवरहेड बुक्स)।

दास, राम (1990), जागृति की यात्रा: एक ध्यानकर्ता की मार्गदर्शिका (न्यूयॉर्क: बैंटम)।
दास, राम (1979), प्रेम का चमत्कार: नीम करोली बाबा के बारे में कहानियां (न्यूयॉर्क: ई. पी. डटन)।
दास, राम (1971), बी हियर नाउ (सैन क्रिस्टोबल, एनएम: लामा फाउंडेशन)।
दास, राम और स्टीफन लेविन (1977), ग्रिस्ट फॉर द मिल (सांता क्रूज़, सीए: यूनिटी प्रेस)।
डेविस, रॉय यूजीन (2000), सेवन लेसन्स इन कॉन्शियस लिविंग (लेकमोंट, जीए: सीएसए प्रेस)।
डेरोप, रॉबर्ट एस. (1968), द मास्टर गेम: पाथवेज़ टू हायर कॉन्शियसनेस बियॉन्ड द ड्रग एक्सपीरियंस (न्यूयॉर्क: डेल पब्लिशिंग कंपनी, इंक.)।
ग्रंथसूची 469

देसाई, योगी अमृत (1985), वर्किंग मिरेकल्स ऑफ लव (लेनोक्स, एमए: कृपालु पब्लिकेशन्स)।
Desai, Yogi Amrit (1981), Kripalu Yoga: Meditation-in-Motion (Lenox, MA: Kripalu Publications).
धारग्ये, गेशे न्गावांग (1974), तिब्बती मानसिक विकास की परंपरा (तिब्बती कृतियों और अभिलेखागार का पुस्तकालय)।
शिष्य, पूर्वी और पश्चिमी (1979), स्वामी विवेकानंद का जीवन (मायावती: अद्वैत आश्रम)।
डिटमैन, मेलिसा (2003), "जोन्सटाउन से सबक," एपीए मॉनिटर, वॉल्यूम 34, नंबर 10, नवंबर (http://www.apa.org/monitor/nov03/jonestown.html)
डाउनिंग, माइकल (2001), शूज़ आउटसाइड द डोर: डिज़ायर, डिवोशन, एंड एक्सेस एट सैन फ्रांसिस्को ज़ेन सेंटर (वाशिंगटन, डीसी: काउंटरपॉइंट)।
डॉयल, थॉमस पी. (2003), "रोमन कैथोलिक पादरीवाद, धार्मिक दबाव और पादरी यौन शोषण," पास्टोरल साइकोलॉजी, वॉल्यूम 51, नंबर 3, जनवरी।
डॉयल, थॉमस पी. (2002), "वे अब भी इसे नहीं समझते और शायद कभी नहीं

समझेंगे," आयरिश टाइम्स में, 22 मार्च।
ड्रेयर, पीटर (1975), ए गार्डनर टच्ड विद जीनियस (न्यूयॉर्क: कॉवर्ड, मैककैन एंड जियोघेगन, इंक.)।
दत्त, अनुराधा (1988), "द ट्रबल्ड गुरु," द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया में, 17 जुलाई (http://www.trancenet.org/news/weekly/)
डायकेमा, रवि (2003), "साक्योंग मिफाम रिनपोचे के साथ एक साक्षात्कार," नेक्सस में
(http://www.nexuspub.com/articles/2003/may2003/ interview.htm).
डाइन्स, माइकल और डोमिनिक कैनेडी (2001), "मैंने शांति की तलाश की और उसे नहीं पाया," द टाइम्स ब्रिटिश न्यूज़ में, 27 अगस्त (http:// www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba9.html)
470 गुरुओं का पर्दाफाश

एबोन, मार्टिन (1968), महर्षि, गुरु: एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (टोरंटो: द न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी ऑफ कनाडा लिमिटेड)।
इकोनॉमिस्ट (2000), "मंकी बिजनेस: थाईलैंड के भिक्षु घोटाले," द इकोनॉमिस्ट में, 30 नवंबर (http://www.economist.com/displayStory.cfm? Story_ID = S%26(X%20%2BQQ%3F*%0A).
एडवर्ड्स, हैरी (1995), "अविनाशीता: चमत्कार या मिथक?" इन्वेस्टिगेटर, 45, नवंबर में
(http://www.adam.com.au/bstett/PaIncorruptibility.htm).
एडवर्ड्स, हैरी (1994), "फायरवॉकिंग," स्केप्टून में, कुछ नए युग की मान्यताओं पर एक सचित्र नज़र (न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया: हैरी एडवर्ड्स पब्लिकेशन्स; http://www.indian-skeptic.org/html/ byhedwa3.htm)
एर्लिच, रिचर्ड एस. (2000), "बौद्ध अपराध" (http://www.scoop.co.nz/ mason/stories/HL0011/S00003.htm)
आइज़ेनस्टैड, मेरी एम. (1993), "पूर्व पंथ सदस्य उस समूह को याद करते हैं जिसे उन्होंने छोड़ा था," वाशिंगटन यहूदी वीक में, 25 मार्च।

एलियास (2002), “अदिदम में योगिक हस्तमैथुन” (http://lightmind.com/blogs/blogarchive-007.html)
एलियास (2000ए), “द न्यू पैटर्न” (http://lightmind.com/thevoid/daismreport-04.html)
इलियास (2000), "एडिडैम फंडरेज़िंग" (http://lightmind.com/thevoid/daismreport-03.html)
एलियास (1999ए), “क्या दाइवाद एक क्लास एक्शन सूट के लिए कमजोर है?” (http://lightmind.com/blogs/blogarchive-036.html)
एलियास (1999), “एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे फ्रैंक का दर्शन हुआ था” (http://lightmind.com/blogs/blogarchive-016.html)
एलर, सिंथिया (2003), मातृसत्तात्मक प्रागितिहास का मिथक: क्यों एक गढ़ा हुआ अतीत महिलाओं को भविष्य नहीं देगा (बोस्टन, एमए: बीकन प्रेस)।
ग्रंथसूची 471

एलिस, मार्क (2003), “दलाई लामा: मुझे सेक्स की कमी महसूस हुई,” द मिरर में, 29 जुलाई
(http://www.mirror.co.uk/news/allnews/
content_objectid=13231174
_method=full_siteid=50143_headline=-DALAI-LAMA--I-VE-MISSED-SEX-name_page.html).
एम्पायरनेट (2003), “टीडब्ल्यूआई के खिलाफ मुकदमे और यौन दुराचार के आरोप”
(http://www.empirenet.com/~messiah7/tw_suits-sex.htm).
इंग्लैंड, मार्क और डार्लीन मैककॉर्मिक (1993), “पापी मसीहा”, द वाको ट्रिब्यून-हेराल्ड सीरीज़, फोर्ट वर्थ स्टार-टेलीग्राम, 3 मार्च
(http://www.rickross.com/reference/waco/waco9.html).
एपस्टीन, एडवर्ड (1995), “राजनीति और पारलौकिक ध्यान,” सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल में, 29 दिसंबर (http://www.rickross.com/reference/tm/tm3.html)

इवांस, क्रिस्टोफर (1973), कल्ट्स ऑफ अनरीज़न (लंदन: हैरैप)।
एक्स्ट्रा (1999), "एक्स्ट्रा: युद्ध में परिवार," 27 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/yogaville/yogaville27.html)
फाल्क, जेफ्री (2008 [2006]), "नॉर्मन आइंस्टीन": केन विल्बर का विघटन (टोरंटो: मिलियन मंकीज़ प्रेस)।
फाल्सानी, कैथलीन (2002), "वह बस इतना ही कह रहा है...", शिकागो सन-टाइम्स में, 11 जुलाई
(http://www.rickross.com/reference/tm/tm34.html).
फैरो, मिया (1997), व्हाट फॉल्स अवे: ए मेमोइर (न्यूयॉर्क: नैन ए. टेल्स)।
फ्यूरस्टीन, जॉर्ज (1998), प्रकाश का रहस्य: ओमराम मिखाइल ऐवानहोव का जीवन और शिक्षण (लोअर लेक, सीए: इंटीग्रल पब्लिशिंग)।
फ्यूअरस्टीन, जॉर्ज (1996), "पवित्र पागलपन: दा फ्री जॉन का खतरनाक और निराशाजनक उदाहरण," व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक 9
(http://www.wie.org/j9/feuerstein_madness.asp?page=2).

फ्यूरस्टीन, जॉर्ज (1992), होली मैडनेस (न्यूयॉर्क: अरकाना)।
फील्ड्स, रिक (1992), हाउ द स्वान्स केम टू द लेक: ए नैरेटिव हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म इन अमेरिका (बोस्टन, एमए: शंभला)।
फाइंडहॉर्न कम्युनिटी (1980), फेसेस ऑफ फाइंडहॉर्न (न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो, पब्लिशर्स)।
फिट्जगेराल्ड, फ्रांसेस (1986), सिटीज ऑन ए हिल: ए जर्नी थ्रू कंटेम्परेरी अमेरिकन कल्चर्स (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
फ्लैकस, गिलियन (2001), "ओरेगन शहर उस भयावह घटना से कभी उबर नहीं पाया," एसोसिएटेड प्रेस में, 19 अक्टूबर
(http://www.rickross.com/reference/rajneesh/rajneesh8.html).
फोरेम, जैक (1973), ट्रान्सेंडेंटल मेडिटेशन; महर्षि महेश योगी और रचनात्मक बुद्धि का विज्ञान (टोरंटो: क्लार्क, इरविन एंड कंपनी लिमिटेड)।

फ्रांस, डेविड (2004), हमारे पिता: घोटाले के युग में कैथोलिक चर्च का गुप्त जीवन (न्यूयॉर्क: ब्रॉडवे बुक्स)।
फ्रैंक, अर्नो (2000), "वाल्डोर्फ प्रकार की धमकी," टीएजेड में, 4 अगस्त (http://www.rickross.com/reference/waldorf/waldorf2.html).
फ्रैंकन, अल (1996), रश लिम्बॉ एक बड़ा मोटा बेवकूफ है (न्यूयॉर्क: डेलाकोर्ट प्रेस)।
फ्रैंकलिन, सत्या भारती (1992), स्वर्ग का वादा: रजनीश के साथ जीवन के खतरों की एक महिला की अंतरंग कहानी (बैरीटाउन, एनवाई: स्टेशन हिल प्रेस)।
फ्रेंच, पैट्रिक (2003), तिब्बत, तिब्बत: एक खोई हुई भूमि का व्यक्तिगत इतिहास (न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नोपफ)।
फ्रीडमैन, रोजर (2003), "क्या साइंटोलॉजी सेलेब्स 'आध्यात्मिक' अनुबंध पर हस्ताक्षर करेंगे?" फॉक्स न्यूज पर, 3 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/scientology/celebrities/celebrities32.html)
फर्लांग, मोनिका (1987), थेरेस ऑफ लिसिएक्स (लंदन: विरागो प्रेस)। ग्रंथ सूची 473

फुटरेल, डेविड (1997), "वे कितने अजीब थे? सैन डिएगो के पंथवादियों में अन्य धार्मिक उत्साही लोगों के साथ आपकी सोच से कहीं अधिक समानता है," सैलून में, 28 मार्च (http://www.rickross.com/reference/heavensgate/gate30.html)
गैलोवे, पॉल (1991), "गोंजो गुरु," शिकागो ट्रिब्यून में, 20 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy1.html).
गार्डन, मैरी (1988), द सर्पेंट राइजिंग: ए जर्नी ऑफ स्पिरिचुअल सेडक्शन (फोर्टिट्यूड वैली, ऑस्ट्रेलिया: ब्रोलगा पब्लिशिंग)।
गार्डनर, मार्टिन (2000), क्या आदम और हव्वा की नाभि थी? रिफ्लेक्सोलॉजी, न्यूमरोलॉजी, मूत्र चिकित्सा और अन्य संदिग्ध विषयों पर प्रवचन (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी)।
गार्डनर, मार्टिन (1999), "कार्लोस कास्टानेडा और न्यू एज एंथ्रोपोलॉजी,"

स्केप्टिकल इन्क्वायरर में, वॉल्यूम 23, नंबर 5, सितंबर/अक्टूबर।
गार्डनर, मार्टिन (1996), वियर्ड वॉटर एंड फ़ज़ी लॉजिक (बफ़ेलो, एनवाई: प्रोमेथियस बुक्स)।
गार्डनर, मार्टिन (1978), "श्वेत और भूरा संगीत, फ्रैक्टल वक्र और एक-ओवर-एफ उतार-चढ़ाव," साइंटिफिक अमेरिकन में, अप्रैल।
गार्डनर, मार्टिन (1957 [1952]), विज्ञान के नाम पर सनक और भ्रांतियाँ (न्यूयॉर्क: डोवर पब्लिकेशन्स)।
गेस्लर, नॉर्मन (1991), "पंथों का उदय," न्यू इंग्लैंड इंस्टीट्यूट फॉर रिलीजियस रिसर्च में व्याख्यान, 2 नवंबर।
घोष, सनंदा लाल (1980), मेजदा: परमहंस योगानंद का परिवार और प्रारंभिक जीवन (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
गिन्सबर्ग, एलेक्स (2004), "पूर्व अनुयायियों ने 'घटिया' श्री की आलोचना की," न्यूयॉर्क पोस्ट में, 23 मई
(http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy28.html).
गिरि, स्वामी सत्येश्वरानंद (1992), बाबाजी, खंड III: मूल क्रिया के स्वामी (सैन डिएगो: संस्कृत क्लासिक्स)।
474 गुरुओं का पर्दाफाश

गिरि, स्वामी सत्येश्वरानंद (1991बी), क्रिया: सच्चा मार्ग ढूँढना (सैन डिएगो: संस्कृत क्लासिक्स)।
Giri, Swami Satyeswarananda (1991), Babaji, Volume II: Lahiri Mahasay, The Polestar of Kriya (San Diego: The Sanskrit Classics).
गिउलियानो, जेफ्री (1989), डार्क हॉर्स: जॉर्ज हैरिसन का गुप्त जीवन (टोरंटो: स्टोडार्ट पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड)।
गिउलियानो, जेफ्री (1986), द बीटल्स: ए सेलिब्रेशन (एगिनकोर्ट, ओंटारियो: मेथुएन पब्लिकेशन्स)।
गोवा, हेलेन (1999), "सेक्स और विलक्षण स्वामी," द सैन फ्रांसिस्को वीकली में,

10 मार्च
(http://www.rickross.com/reference/ananda/ananda1.html).
गॉफमैन, इरविंग (1961), पागलखाने: मानसिक रोगियों और अन्य कैदियों की सामाजिक स्थिति पर निबंध (गार्डन सिटी, एनवाई: एंकर बुक्स)।
गोल्डबर्ग, मिशेल (2001), "अछूत?" सैलून में, 25 जुलाई (http://dir.salon.com/people/feature/2001/07/25/baba/index.html)
गोल्डहैमर, जॉन डी. (1996), अंडर द इन्फ्लुएंस: द डिस्ट्रक्टिव इफेक्ट्स ऑफ ग्रुप डायनेमिक्स (बफ़ेलो, एनवाई: प्रोमेथियस बुक्स)।
गोल्डमैन, अल्बर्ट (1991), एल्विस: द लास्ट 24 आवर्स (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन पेपरबैक्स)।
गोल्डमैन, अल्बर्ट (1981), एल्विस (न्यूयॉर्क: एवन)।
गुडरिक-क्लार्क, निकोलस (2004 [1994]), नाज़ीवाद की गुप्त जड़ें: गुप्त आर्य पंथ और नाज़ी विचारधारा पर उनका प्रभाव (न्यूयॉर्क: न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस)।
गुडरिक-क्लार्क, निकोलस (2003 [2001]), ब्लैक सन: आर्यन कल्ट्स, एसोटेरिक नाज़ीवाद और पहचान की राजनीति (न्यूयॉर्क: न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस)।
गुडस्टीन, लॉरी (1998), "हरे कृष्णा धर्म ने बोर्डिंग स्कूलों में अतीत में हुए दुर्व्यवहार का खुलासा किया," न्यूयॉर्क टाइम्स में, 9 अक्टूबर (http://www.rickross.com/reference/krishna/krishna5.html) ग्रंथसूची 475

गॉर्डन, जेम्स (1987), द गोल्डन गुरु: भगवान श्री रजनीश की विचित्र यात्रा (लेक्सिंगटन, एमए: द स्टीफन ग्रीन प्रेस)।
गोरस्की, टिमोथी एन. (2001), "धोखेबाजों, ठगों और साँप के तेल बेचने वालों पर सुनवाई: वरिष्ठ नागरिकों को वृद्धावस्था-रोधी उत्पादों के विपणन का प्रचार और आशा," संयुक्त राज्य सीनेट विशेष समिति में वृद्धावस्था पर, 10 सितंबर (http://www.quackwatch.org/ 01QuackeryRelatedTopics/Hearing/gorski2.html)
गोल्ड, मार्टिन (1998), "ट्रैवोल्टा को विचित्र समलैंगिक मुकदमे में घसीटा गया,"

स्टार में, 18 अगस्त (http://www.rickross.com/reference/scientology/Scien58.html)
गौर्ले, स्कॉट आर. और रोज़मेरी एडमिस्टन (1997), "एडिडाम नॉर्थकोस्ट में आता है," नॉर्थकोस्ट जर्नल वीकली में (http://www.rickross.com/reference/adida/adida4.html)
गोविंदन, मार्शल (1997), मैं बाबाजी का शिष्य कैसे बना (ईस्टमैन, क्यूबेक: बाबाजी की क्रिया योग और प्रकाशन, इंक.)।
ईश्वर कृपालु है (2000), "बारबरा मार्क्स-हबर्ड आदि दा से मिलती हैं" (http://lightmind.com/thevoid/daism/hubbard-leela.html)
ग्राउट, जेम्स (2003), "विलियम द कॉन्करर की मृत्यु" (http://itsa.ucsf.edu/~snlrc/britannia/hastings/williamdeath.html)
गुरुनेट (2003), "श्री अरबिंदो: उनके जीवन का अवलोकन" (http://gurusoftware.com/Gurunet/AurobindoMother/Aurobindo.htm)
ज्ञान, सतीश चंद्र (1980), शिवानंद और उनका आश्रम (मद्रास, भारत: द क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी)।
ज्ञानमाता, एस. (1984), केवल ईश्वर: एक संत का जीवन और पत्र (लॉस एंजिल्स: आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप)।
हाजदू, डेविड (2003), "हसलिंग एल्विस," द न्यू यॉर्क रिव्यू ऑफ बुक्स में (http://www.nybooks.com/articles/16598)
हॉल, एलिजाबेथ (1975), "सूफी परंपरा: 'कुछ गुरु स्पष्ट रूप से पाखंडी हैं, और वे इसे मुझसे छिपाने की कोशिश नहीं करते, वे सोचते हैं कि मैं भी उनमें से एक हूँ,'" साइकोलॉजी टुडे में, जुलाई।
476 गुरुओं का पर्दाफाश

हैमिल्टन, क्रेग (1999), "उत्कृष्टता पर्याप्त नहीं है: एंथनी रॉबिंस के साथ एक साक्षात्कार," व्हाट इज एनलाइटनमेंट? अंक 15 (http://www.wie.org/j15/robbins.asp)
हैमिल्टन, रोज़मेरी (1998), हेलबेंट फॉर एनलाइटनमेंट: अनमास्किंग सेक्स, पावर,

एंड डेथ विद ए नोटोरियस मास्टर (ऐशलैंड, ओआर: व्हाइट क्लाउड प्रेस)।
हैनी, क्रेग और फिलिप जी. ज़िम्बार्डो (1998), “अमेरिकी जेल नीति का अतीत और भविष्य: स्टैनफोर्ड जेल प्रयोग के पच्चीस साल बाद,” अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 53 (पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.prisonexp.org/pdf/ap1998.pdf)
हैनी, क्रेग और फिलिप जी. ज़िम्बार्डो (1975), "द ब्लैकबोर्ड पेनिटेंटियरी: हाई स्कूल और जेल में अंतर करना कठिन है," साइकोलॉजी टुडे में, जून।
हैनी, क्रेग, विलियम कर्टिस बैंक्स और फिलिप जी. ज़िम्बार्डो (1973), "एक नकली जेल में अंतरवैयक्तिक गतिशीलता," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिमिनोलॉजी एंड पेनोलॉजी, 1 (पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.prisonexp.org/pdf/ijcp1973.pdf)
हार्पर, मार्विन हेनरी (1972), गुरु, स्वामी और अवतार (फिलाडेल्फिया, पीए: द वेस्टमिंस्टर प्रेस)।
हार्पर, टॉम (2001), “गुरु ने यौन आरोपों को खारिज किया,” द स्टार में, 14 जनवरी
(http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba5.html).
हैरिस, लिस (1994), "ओ गुरु, गुरु, गुरु," न्यू यॉर्कर में, 14 नवंबर
(http://www.ex-cult.org/Groups/SYDA-Yoga/leave.txt).
हैरिस, माइकल (1991 [1990]), अपवित्र आदेश: माउंट कैशल में त्रासदी (न्यूयॉर्क: पेंगुइन बुक्स)।
हार्वे, एंड्रयू (2000), द रिटर्न ऑफ द मदर (बर्कले, सीए: फ्रॉग, लिमिटेड)।
हार्वे, बॉब (2000a), “वह व्यक्ति जिसे आस्तिक ईश्वर मानते हैं,” द ओटावा सिटिजन में, 19 दिसंबर
(http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba4.html).

हार्वे, पीटर (2000), बौद्ध नैतिकता का परिचय: नींव, मूल्य और मुद्दे (कैम्ब्रिज, इंग्लैंड: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस)।
हसन, स्टीवन (2000), बंधनों को मुक्त करना: लोगों को स्वयं सोचने के लिए

सशक्त बनाना (सोमरविले, एमए: फ्रीडम ऑफ माइंड प्रेस)।
हसन, स्टीवन (1990 [1988]), कल्ट माइंड कंट्रोल का मुकाबला (रोचेस्टर, वीटी: पार्क स्ट्रीट प्रेस)।
हातेंगडी, एम. यू. (1984), नित्यानंद: दिव्य उपस्थिति (कैम्ब्रिज, एमए: रुद्र प्रेस)।
हौशेर, टिलमैन (2002), "कल्ट अपोलॉजिस्ट एफएक्यू" (http://home.snafu.de/tilman/faq-you/cult.apologists.txt)
हॉकेन, पॉल (1976), द मैजिक ऑफ फाइंडहॉर्न (न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स)।
हेवर्ड, जेरेमी और फ्रांसिस्को वरेला (1992), जेंटल ब्रिजेस: कन्वर्सेशन्स विद द दलाई लामा ऑन द साइंसेज ऑफ माइंड (बोस्टन, एमए: शंभला)।
हीथ, क्रिस (2000), "कार्लोस सैंटाना का महाकाव्य जीवन," रोलिंग स्टोन में, 16 मार्च (न्यूयॉर्क: स्ट्रेट एरो; http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy18.html)
हिसलोप, जॉन (1978), सत्य साई बाबा के साथ वार्तालाप (सैन डिएगो, सीए: बर्थ डे पब्लिशिंग कंपनी)।
हिचेंस, क्रिस्टोफर (2001), लेटर्स टू ए यंग कंट्रैरियन (कैम्ब्रिज, एमए: बेसिक बुक्स)।
हिचेंस, क्रिस्टोफर (1998), "हिज मटेरियल हाइनेस," सैलून में, 13 जुलाई (http://www.salon.com/news/1998/07/13news.html)
हिचेंस, क्रिस्टोफर (1995), द मिशनरी पोजीशन: मदर टेरेसा इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस (न्यूयॉर्क: वर्सो)।
हॉफर, एरिक (1951), द टू बिलीवर (सैन फ्रांसिस्को, सीए: हार्पर एंड रो, पब्लिशर्स)।

होम्स, डेविड एस. (1988), "शारीरिक उत्तेजना पर ध्यान बनाम विश्राम का प्रभाव: एक दूसरा मूल्यांकन," माइकल ए. वेस्ट, एड., द साइकोलॉजी ऑफ मेडिटेशन (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस) (http://www.american-buddha.com/meditation.arousal.htm)
होम्स, डेविड एस. (1984), "ध्यान और दैहिक उत्तेजना में कमी। प्रयोगात्मक साक्ष्य

की समीक्षा," अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 39(1)।
हू, स्टेफ़नी (2005), "मंगोलिया में कई लोग साम्यवाद के लिए उदासीन हैं" (http://www.boston.com/news/world/asia/articles/2005/05/21/many_in_mongolia_nostalgic_for_communism?mode=P F).
होर्गन, जॉन (2003ए), तर्कसंगत रहस्यवाद: विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच की सीमा से संदेश (न्यूयॉर्क: हॉटन मिफ्लिन कंपनी)।
होर्गन, जॉन (2003), "पूर्णतः प्रबुद्ध गुरु का मिथक" (http://www.johnhorgan.org/work8.htm)
होर्गन, जॉन (1999), "द एंटी-गुरुस" (http://www.johnhorgan.org/work5.htm).
ह्यूस्टन, जीन (2006), "बायो" (www.jeanhouston.org/bio.html)
ह्यूस्टन, जीन (1982), द पॉसिबल ह्यूमन: ए कोर्स इन एक्सटेंडिंग योर फिजिकल, मेंटल, एंड क्रिएटिव एबिलिटीज (लॉस एंजिल्स: जे. पी. टार्चर, इंक.)।
हबनर, जॉन और लिंडसे ग्रुसन (1990 [1988]), मंकी ऑन ए स्टिक: मर्डर, मैडनेस, और हरे कृष्णा (न्यूयॉर्क: पेंगुइन बुक्स)।
हुचज़र्मेयर, विल्फ्रेड (1998), माँ: एक संक्षिप्त जीवनी (सिल्वर लेक, WI: लोटस प्रेस)।
इनर कल्चर (1935), "इनर कल्चर न्यूज़," इनर कल्चर में, दिसंबर (http://www.ananda.it/en/yogananda/india1935/india9.html).
इंटीग्रल (2004), "इतिहास" (http://web.archive.org/web/20031205084501/www.integralinstitute.org/history.htm)
ग्रंथसूची 479

इंटीग्रल (2003), "इंटीग्रल इंस्टीट्यूट" (http://www.integralinstitute.org)
इंटीग्रलनेकेड (2005), "माइकल मर्फी" (http://www.integralnaked.org/talk.aspx?id=35).

इंटीग्रलनेकेड (2004), “केन विल्बर कौन है?” (http://www.integralnaked.org/contributor.aspx?id=1)
जैक्सन, डेवोन (1996), “ब्लेस यू, सर, मे आई जॉग अनदर?” आउटसाइड पत्रिका में, अक्टूबर
(http://outside.away.com/outside/magazine/1096/9610febl.html).
जैकबसेन, जेफ (2004), "लिसा मैकफर्सन" (http://www.lisamcpherson.org)
जेम्स, विलियम (1990), धार्मिक अनुभव की विविधताएँ (न्यूयॉर्क: विंटेज बुक्स/लाइब्रेरी ऑफ अमेरिका)।
जेनकिंस, फिलिप (2001), मिस्टिक्स एंड मेसियस: कल्ट्स एंड न्यू रिलीजन्स इन अमेरिकन हिस्ट्री (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)।
ज्वेल (1999), “1985 में भक्त कैसे ‘विद्रोही’ बन गए” (http://lightmind.com/archives/daism-05/ daism-05.mv?module=view&viewid=3252&row=270)
जॉन, बुब्बा फ्री (1974), गार्बेज एंड द गॉडेस: द लास्ट मिरेकल्स एंड फाइनल स्पिरिचुअल इंस्ट्रक्शंस ऑफ बुब्बा फ्री जॉन (लोअर लेक, सीए: द डॉन हॉर्स प्रेस)।
जॉन, दा फ्री (1985), द डॉन हॉर्स टेस्टामेंट (मिडलटाउन, कैलिफोर्निया: द डॉन हॉर्स प्रेस)। प्रस्तावना http://www.beezone.com/Wilber/ken_wilbur_praise.html पर उपलब्ध है।
जॉन, दा फ्री (1980), व्हाइट हाउस द्वारा जल्द ही ईश्वर के अस्तित्व का वैज्ञानिक प्रमाण घोषित किया जाएगा! (मिडलटाउन, कैलिफोर्निया: द डॉन हॉर्स प्रेस)। प्रस्तावना
http://www.beezone.com/Wilber/onherocults.html.
जॉनसन, के. पॉल (1994), द मास्टर्स रिवील्ड: मैडम ब्लावत्स्की और द मिथ ऑफ द ग्रेट व्हाइट लॉज (न्यूयॉर्क: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस)।

जॉय, डब्ल्यू. ब्रुघ (1990), हिमस्खलन: अंधेरे और प्रकाश पर विधर्मी प्रतिबिंब

(न्यूयॉर्क: बैलांटाइन बुक्स)।
कमला (1964), द फ्लॉलेस मिरर (नेवादा सिटी, कैलिफोर्निया: क्रिस्टल क्लैरिटी पब्लिशर्स)।
काशी (2004), “काशी सेंटर फॉर एडवांस्ड स्पिरिचुअल स्टडीज प्रस्तुत करता है भगवान दास जप संगीत कार्यक्रम और कार्यशाला” (http://www.kashi.org/Flyers/BhagDas.pdf)
Kashi (2003), “Ma Jaya Sati Bhagavati” (http://www.kashi.org/bio.htm).
कस्तूरी, एन. (1971), द लाइफ ऑफ भगवान श्री सत्य साईं बाबा (सांता एना, सीए: साईं बाबा सोसाइटी)।
कैट्ज़, डोनाल्ड (1992), होम फ़ायर्स (न्यूयॉर्क: हार्पर कॉलिन्स)।
कौफमैन, रॉबर्ट (1995 [1972]), इनसाइड साइंटोलॉजी/डायनेटिक्स: हाउ आई जॉइंड डायनेटिक्स/साइंटोलॉजी एंड बिकेम सुपरह्यूमन (http://www.factnet.org/Books/InsideScientology/?FACTNet)
कौर, नाउ अवेयर (1998), “3HO—क्या यह एक विषाक्त आस्था प्रणाली है?” (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho44.html)
काज़लेव, एलन (2003), "केन विल्बर और आदि दा" (http://www.khiper.net/topics/Wilber/Da.html)
कीगन, पॉल (2002), “योगी गलत व्यवहार कर रहे हैं,” बिजनेस 2.0 में, सितंबर (http://www.rickross.com/reference/general/general478.html).
कीन, एम. लामर (1977), द साइकिक माफिया (न्यूयॉर्क: डेल पब्लिशिंग कंपनी, इंक.)।
केनेडी, डोमिनिक (2001), “आत्महत्या, सेक्स और गुरु,” द टाइम्स ब्रिटिश न्यूज में, 27 अगस्त (http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba11.html)
केंट, स्टीफन ए. (2001), नारों से मंत्रों तक: वियतनाम युद्ध के उत्तरार्ध में सामाजिक विरोध और धार्मिक रूपांतरण (सिराक्यूज़, न्यूयॉर्क: सिराक्यूज़ यूनिवर्सिटी प्रेस)। ग्रंथसूची 481

खालसा, कमलापदी कौर (1994), “जादुई सूप में: पंथ जीवन के बीस वर्षों पर ध्यान (योगी भजन के 3HO के भीतर)” (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho19.html)
खालसा, कमलापति कौर (1990), “द डिसफंक्शनल 3एचओ फैमिली,” इन विज़न्स (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho72.html)
खालसा, शक्ति परवा कौर (1996), कुंडलिनी योग: शाश्वत शक्ति का प्रवाह (न्यूयॉर्क: पेरिगी)।
केजर्नस्मो, केजेटिल (1997), "फ़ायरवॉकिंग का एक प्रारंभिक अनुभवजन्य अध्ययन"
(http://www.skepsis.no/english/subject/firewalk/kpreemp1).
क्लेन, आरोन ई. और सिंथिया एल. क्लेन (1979), माइंड ट्रिप्स: द स्टोरी ऑफ कॉन्शियसनेस-रेजिंग मूवमेंट्स (गार्डन सिटी, एनवाई: डबलडे एंड कंपनी)।
क्लिमो, जॉन (1998), चैनलिंग: पैरानॉर्मल स्रोतों से सूचना प्राप्त करने पर जांच (बर्कले, सीए: नॉर्थ अटलांटिक बुक्स)।
नाइट, स्टीव (2004), “उरी गेलर: कालानुक्रमिक ग्रंथसूची” (http://www.zem.demon.co.uk/index.htm)
कोस्टलर, आर्थर (1960), द लोटस एंड द रोबोट (न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो पब्लिशर्स, इंक.)।
कॉर्नफील्ड, जैक (2000), आफ्टर द एक्सटेसी, द लॉन्ड्री: हाउ द हार्ट ग्रोज़ वाइज़ ऑन द स्पिरिचुअल पाथ (न्यूयॉर्क: बैंटम)।
कॉर्नफील्ड, जैक (1993), ए पाथ विद हार्ट: ए गाइड थ्रू द पेरिल्स एंड प्रॉमिसेस ऑफ ए स्पिरिचुअल लाइफ (न्यूयॉर्क: बैंटम)।
क्रेमर, जोएल और डायने अल्स्टैड (1993), द गुरु पेपर्स: मास्क ऑफ अथॉरिटेरियन पावर (बर्कले, सीए: फ्रॉग, लिमिटेड)।
क्रैसनर, पॉल (1993), कन्फेशंस ऑफ ए रेविंग, अनकन्फाइंड नट: मिसएडवेंचर्स इन द काउंटर-कल्चर (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
क्राउस, डैनियल (2000), “रू द डे,” सैलून में, 25 अगस्त (http://dir.salon.com/people/feature/2000/08/25/roos/index.html)

कृपाल, जेफ़री (1995), काली की संतान: रामकृष्ण के जीवन और शिक्षाओं में रहस्यवाद और कामुकता (शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस)। कृपाल के कार्य की एक आलोचना के लिए, एक भिक्षु द्वारा।
रामकृष्ण आदेश, त्यागानंद (2000) देखें। अपने आलोचकों को कृपाल की प्रतिक्रिया के लिए देखें
http://www.atman.net/kalischild/index.html.
Kripalu (2003), “Kripalu Center for Yoga and Health” (http://www.kripalu.org).
कृष्णमूर्ति, जिद्दू (1969), अर्ली राइटिंग्स, खंड 1 (बॉम्बे: चेतना)।
क्रिया योग चर्चा बोर्ड (2001), “क्रिया योग चर्चा बोर्ड” (http://www.boards2go.com/boards/board.cgi?&user=Kriya).
क्रियानंद, स्वामी (1979), द पाथ: ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए वेस्टर्न योगी (नेवादा सिटी, सीए: आनंदा पब्लिकेशन्स)।
क्रियानंद, स्वामी (1974 [1973]), आगे का मार्ग: महान गुरु परमहंस योगानंद द्वारा विश्व भविष्यवाणियाँ, उनके शिष्य स्वामी क्रियानंद द्वारा टिप्पणी के साथ संपादित (नेवादा सिटी, सीए: आनंदा प्रकाशन)।
कुनक्ल, टॉम (2001), “जॉर्ज डब्ल्यू बुश और मूनिज़,” द नेशनल एक्ज़ामिनर में, 9 जनवरी (http://www.rickross.com/reference/unif/unif106.html)
लेक काउंटी (1985), “आध्यात्मिक गुरु के प्रति विश्वासी ‘समर्पण’ करते हैं,” लेक काउंटी रिकॉर्ड-बी में, 4 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida13.html)
लालिच, जानजा (2004), बाउंडेड चॉइस: ट्रू बिलीवर्स एंड करिस्मेटिक कल्ट्स (बर्कले, सीए: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस)।
लालिच, जंजा (1997), "सीएनएन इंटरव्यू विद यान्या [एसआईसी] लालिच" (http://www.rickross.com/reference/heavensgate/gate25.html)

लामा, दलाई (1999), नए सहस्राब्दी के लिए नैतिकता (न्यूयॉर्क: रिवरहेड बुक्स)।
लामा, दलाई (1996), बियॉन्ड डॉगमा: डायलॉग्स एंड डिस्कोर्स (बर्कले, कैलिफोर्निया: नॉर्थ अटलांटिक बुक्स)। ग्रंथसूची 483

लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1997), "ओकम्स रेजर: क्रिटिकल एसेज" (http://elearn.mtsac.edu/dlane/paranormal.htm)
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1996ए), "द पैराडॉक्स ऑफ दा फ्री जॉन" (http://vm.mtsac.edu/~dlane/datext.html)
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1996), "केन विल्बर की आलोचना" (http://elearn.mtsac.edu/dlane/kendebates.htm, अधिक सुगमता के साथ यहां भी पोस्ट किया गया है)
http://www.geoffreyfalk.com/books/LaneMenu.asp).
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1995), द एनचांटेड लैंड (http://elearn.mtsac.edu/philosophy/quest.htm)
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1994), एक्सपोजिंग कल्ट्स: व्हेन द स्केप्टिकल माइंड कंफ्रंट्स द मिस्टिकल (न्यूयॉर्क: गारलैंड पब्लिशिंग; पाठ ऑनलाइन उपलब्ध)
http://www.geocities.com/eckcult/cults.html).
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1993), "मैं चेहरे क्यों नहीं खाता: शाकाहार के लिए एक न्यूरोएथिकल तर्क" (http://articles.animalconcerns.org/ar-voices/archive/faces.html)
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1992), राधास्वामी परंपरा: गुरु उत्तराधिकार का एक आलोचनात्मक इतिहास
(http://vm.mtsac.edu/~dlane/radhabook.html).
लेन, डेविड क्रिस्टोफर (1983), एक आध्यात्मिक आंदोलन का निर्माण: पॉल ट्विटचेल और एकंकार की अनकही कहानी (डेल मार, कैलिफोर्निया: डेल मार प्रेस; पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है)
http://www.geocities.com/eckcult/index.html).
लेन, डेविड क्रिस्टोफर और स्कॉट लोव (1996), दा: फ्रैंकलिन जोन्स का अजीब मामला (http://vm.mtsac.edu/~dlane/dabook.html)

लैंगोन, माइकल डी., संपादक (1995 [1993]), पंथों से उबरना: मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक दुर्व्यवहार के पीड़ितों के लिए मदद (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी)।
लाराबी, मार्क (2000), "राजनीशी के दो सदस्यों ने दोषी ठहराया," द ओरेगोनियन में, 16 दिसंबर (http://www.rickross.com/reference/rajneesh/rajneesh6.html)
484 गुरुओं का पर्दाफाश

लासेटर, जूडिथ (1995), "कैलिफ़ोर्निया योग शिक्षक संघ आचार संहिता," योग जर्नल में, नवंबर/दिसंबर (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho52.html)
लैटिन, डॉन (1994), "सबसे अधिक बिकने वाले बौद्ध लेखक पर यौन शोषण का आरोप," 10 नवंबर
(http://www.american-buddha.com/sogyal.htm).
लैटिन, डॉन (1985ए), "हिप्नोटिक दा फ्री जॉन - सत्य की खोज करने वाले समूह का स्वेंगाली," सैन फ्रांसिस्को एग्जामिनर में, 5 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida12.html)
लैटिन, डॉन (1985), "गुरु पर यौन-दासता का मुकदमा: फ्री जॉन के फिजी द्वीप पर ड्रग्स, सामूहिक यौन संबंध की कहानियां," सैन फ्रांसिस्को एग्जामिनर में, 3 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida16.html)
लेटन, डेबोरा (1998), मोहक जहर: पीपल्स टेम्पल में जीवन और मृत्यु की एक जॉनस्टाउन उत्तरजीवी की कहानी (न्यूयॉर्क: एंकर बुक्स)।
लेहनेर्ट, टोमेक (1998), रोग्स इन रोब्स: एन इनसाइड क्रॉनिकल ऑफ ए रीसेंट चाइनीज-तिब्बती इंट्रीग इन द कर्मा काग्यू लीनेज ऑफ डायमंड वे बुद्धिज्म (नेवादा सिटी, सीए: ब्लू डॉल्फिन पब्लिशिंग)।
लेवी, गुएंटर (2000 [1964]), कैथोलिक चर्च और नाज़ी जर्मनी (कैम्ब्रिज, एमए: दा कैपो प्रेस)।
लेडेकर, मैरी (1985), "मुकदमे ने संप्रदाय के सदस्यों के लिए शांति भंग कर दी," मैरिन इंडिपेंडेंट-जर्नल में, 5 अप्रैल (http://www.rickross.com/

reference/adida/adida10.html)
लिफ़्टन, रॉबर्ट (1989), विचार सुधार और समग्रतावाद का मनोविज्ञान: चीन में ब्रेनवाशिंग का एक अध्ययन (चैपल हिल, एनसी: उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय प्रेस)।
लाइट, सर्च फॉर (2003), "शॉर्ट लाइफ-स्केच" (http://www.searchforlight.org/TheMother_lifeSketch.htm)
लाइटमाइंड (2004), दाइज़्म रिसर्च इंडेक्स (http://lightmind.com/library/daismfiles/) ग्रंथसूची 485

एलएनआई (2003), "नित्यानंद संस्थान और स्वामी चेतानंद का इतिहास" (http://www.leaving-nityananda-institute.org)
लोवे, स्कॉट (1996), "फ्रैंकलिन जोन्स का अजीब मामला" (http://www.american-buddha.com/franklin.jones.htm)
लुटियंस, एलिजाबेथ (1972), ए गोल्डफिश बाउल (लंदन: कैसल एंड कंपनी)।
लुटियंस, मैरी (1988), कृष्णमूर्ति: खुला द्वार (लंदन: जॉन मरे)।
लुटियंस, मैरी (1983), कृष्णमूर्ति: पूर्ति के वर्ष (लंदन: जॉन मरे)।
लुटियंस, मैरी (1975), कृष्णमूर्ति: जागृति के वर्ष (न्यूयॉर्क: एवन बुक्स)।
मैकडोनाल्ड, सारा (2003 [2002]), होली काउ: एन इंडियन एडवेंचर (न्यूयॉर्क: ब्रॉडवे बुक्स)।
मैकेन्ज़ी, विक्की (1999), केव इन द स्नो (लंदन: ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग पीएलसी)।
मैकेन्ज़ी, विक्की (1995), पश्चिम में पुनर्जन्म (न्यूयॉर्क: मार्लो एंड कंपनी)।
महर्षि महेश योगी (1995), अस्तित्व का विज्ञान और जीने की कला: पारलौकिक ध्यान (न्यूयॉर्क: पेंगुइन)।
महर्षि, रमण, रॉबर्ट पॉवेल के साथ, संपादक (2000), रमण महर्षि के साथ वार्ता: स्थायी शांति और खुशी को साकार करना (कार्लस्बाद, सीए: इनर डायरेक्शंस)।
माल्को, जॉर्ज (1970), साइंटोलॉजी: द नाउ रिलीजन (न्यूयॉर्क: डेलाकोर्ट प्रेस; पूर्ण पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है)
http://www-2.cs.cmu.edu/~dst/Library/Shelf/malko/malko.htm).

मलिया, जोसेफ (1998), "चर्च मशहूर हस्तियों के प्रभाव का इस्तेमाल करता है," बोस्टन हेराल्ड में, 5 मार्च
(http://www.rickross.com/reference/scientology/
Scien39.html).

मैंडेलकोर्न, फिलिप, संपादक (1978), स्वयं को जानना: स्वामी सच्चिदानंद की आवश्यक शिक्षाएँ (गार्डन सिटी, एनवाई: एंकर बुक्स)।
मंगलवाड़ी, विशाल (1992), गुरुओं की दुनिया (शिकागो, आईएल: कॉर्नरस्टोन प्रेस)।
मैनसेउ, पीटर और जेफ शार्लेट (2004), किलिंग द बुद्धा: ए हेरेटिक्स बाइबल (न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस)।
मारिन, पीटर (1995), स्वतंत्रता और इसकी असंतोष (साउथ रॉयलटन, वीटी: स्टीयरफोर्थ प्रेस)।
मार्शल, ऐनी (1963), भारत में गुरु की खोज (लंदन: विक्टर गोलान्ज़, लिमिटेड)।
मार्शल, जॉन (1980), "फाइलें दिखाती हैं कि जासूस ने महिला के अंतरंग शब्दों की रिपोर्ट की," ग्लोब एंड मेल में, 25 जनवरी (http://www.rickross.com/
reference/scientology/canada/canada6.html)
मेसन, बॉबी एन (2003), एल्विस प्रेस्ली (न्यूयॉर्क: वाइकिंग पेंगुइन)।
मास्टर्स, रॉबर्ट (1991 [1988]), देवी सेखमेट: पांचवें मार्ग के मनो-आध्यात्मिक अभ्यास (सेंट पॉल, एम.एन.: ल्यूवेलिन प्रकाशन)।
मास्टर्स, रॉबर्ट और जीन ह्यूस्टन (1972), माइंड गेम्स: द गाइड टू इनर स्पेस (न्यूयॉर्क: डेल पब्लिशिंग कंपनी)।
माता, दया (1971), केवल प्रेम (लॉस एंजिल्स: आत्म-साक्षात्कार फैलोशिप)।
माता, दुर्गा (1992), दिव्य प्रेम की परमहंस योगानंद त्रयी (बेवर्ली हिल्स, सीए: जोन वाइट पब्लिकेशन्स)।
मात्सकिस, एफ़्रोडाइट (1996), आई कांट गेट ओवर इट: ए हैंडबुक फॉर ट्रॉमा सर्वाइवर्स (ओकलैंड, सीए: न्यू हार्बिंगर पब्लिकेशन्स, इंक.)।
मैककैफर्टी, डेनिस (1999), "पुराने भगवान, नई बोतलें," सैलून में, 20 अक्टूबर

(http://www.salon.com/books/feature/1999/10/20/osho/)
ग्रंथसूची 487

मैकडरमॉट, रॉबर्ट ए., संपादक (1984), द एसेंशियल स्टाइनर: रुडोल्फ स्टाइनर के बुनियादी लेखन (सैन फ्रांसिस्को, सीए: हार्पर एंड रो, प्रकाशक)।
मैकगीही, ओवरटन (1991), "पूर्व अनुयायियों का कहना है कि स्वामी ने यौन अनुग्रह की मांग की थी," रिचमंड टाइम्स-डिस्पैच में, 2 अगस्त (http://www.rickross.com/reference/yogaville/yogaville8.html)
मेहता, गीता (1979), कर्मा कोला (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
मेयर, बारबरा (1992), "साक्षात्कार: जेरी गार्सिया," ट्राइसाइकिल में: द बुद्धिस्ट रिव्यू, स्प्रिंग 1992।
मिशेल, पीटर (1992), कृष्णमूर्ति, प्रेम और स्वतंत्रता (वुडसाइड, सीए: ब्लूस्टार कम्युनिकेशन कॉर्पोरेशन)।
मिडल, फैब्रिस (2004), चोग्याम ट्रुंगपा: उनका जीवन और दृष्टि (बोस्टन, एमए: शंभला)।
माइल्स, बैरी (1989), गिन्सबर्ग: एक जीवनी (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
मिलग्राम, स्टेनली (1974), ओबीडिएंस टू अथॉरिटी (न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो)।
मिलर, रसेल (1987), बेयर-फेस्ड मसीहा: एल. रॉन हबर्ड की सच्ची कहानी (टोरंटो: की पोर्टर बुक्स लिमिटेड; पूरा पाठ ऑनलाइन http://www.discord.org/~lippard/bfm पर उपलब्ध है)।
मिल्ने, ह्यू (1986), भगवान: वह भगवान जो असफल रहा (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
माइनर, रॉबर्ट एन. (1999), धार्मिक, आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष: ऑरोविले और धर्मनिरपेक्ष भारत (अल्बानी, एनवाई: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस)।
मोटोयामा, हिरोशी (2000 [1992]), कर्म और पुनर्जन्म: आध्यात्मिक विकास और ज्ञानोदय की कुंजी (लंदन: पियाटकुस)।
एमएसएस (2003), कर्मयोगी (पॉन्डिचेरी, भारत: द मदर्स सर्विस सोसाइटी; पाठ ऑनलाइन http://www.motherservice.org/ Life & Teachings/Life and Teachings.htm पर उपलब्ध है)।

मुखर्जी, दादा (1996), द नियर एंड द डियर: स्टोरीज़ ऑफ़ नीम करोली बाबा एंड हिज़ डिवोट्स (सांता फ़े, एनएम: हनुमान फाउंडेशन)।
मुक्तानंद, स्वामी (1999), द परफेक्ट रिलेशनशिप: द गुरु एंड द डिसाइपल (साउथ फॉल्सबर्ग, एनवाई: एसवाईडीए फाउंडेशन)।
मुक्तानंद, स्वामी (1996), गणेशपुरी के भगवान नित्यानंद (साउथ फॉल्सबर्ग, एनवाई: एसवाईडीए फाउंडेशन)।
मुक्तानंद, स्वामी (1981), आप कहाँ जा रहे हैं? आध्यात्मिक यात्रा के लिए एक मार्गदर्शिका (साउथ फॉल्सबर्ग, एनवाई: एसवाईडीए फाउंडेशन)।
मुक्तानंद, स्वामी (1978), चेतना का खेल: एक आध्यात्मिक आत्मकथा (साउथ फॉल्सबर्ग, एनवाई: एसवाईडीए फाउंडेशन)।
मर्फी, माइकल (1992), शरीर का भविष्य: मानव प्रकृति के आगे के विकास में अन्वेषण (लॉस एंजिल्स: जेरेमी पी. टार्चर, इंक.)।
मर्फी, पैट्रिक (2000), "गुरु के साम्राज्य को घोटालों ने घेर लिया," द एज (ऑस्ट्रेलिया), 12 नवंबर
(http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba2.html).
मुसोलिनी, बेनिटो (1927), "विज्ञान और धर्म," ईस्ट-वेस्ट पत्रिका, मई/जून, खंड 2, अंक 4
(http://www.mysticalportal.net/2-4.html).
मस्टर, नोरी जे. (1997), आत्मा का विश्वासघात: हरे कृष्णा आंदोलन की सुर्खियों के पीछे मेरा जीवन (शिकागो: इलिनोइस विश्वविद्यालय प्रेस)।
नाहर, सुजाता (1989), मिर्रा द ऑकल्टिस्ट (पेरिस: इंस्टिट्यूट डी रेचेर्चेस एवोल्यूशन्स)।
नमन, मर्द (1980), "शुद्ध लोग," न्यू वेस्ट में, दिसंबर (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho1.html)
नेशनल पोस्ट (2000), "'हैव रैबिट, विल ट्रैवल': योगिक फ्लायर की नेचुरल लॉ पार्टी लोगों की कल्पना को पकड़ने में विफल रही," नेशनल पोस्ट (यूके), 9 फरवरी (http://www.rickross.com/reference/tm/tm7.html) ग्रंथसूची

नेरी, वॉल्ट (1985ए), “पागल ज्ञान ने दिमाग को झुका दिया, पूर्व-पंथवादियों का कहना है,” लेक काउंटी रिकॉर्ड-बी में, 11 अप्रैल। (http://web.archive.org/web/20031227113341/lightgate.net/archives/daism-02/daism-02.mv?module=view&viewid=715&row=228)
नेरी, वॉल्ट (1985), “पार्टियों की गुप्त जानकारी रखने वाले आंतरिक समूह”, लेक काउंटी रिकॉर्ड-बी में, 12 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida7.html).
निकेल, जो (2002), “साइचिक पेट्स एंड पेट साइकिक्स,” स्केप्टिकल इन्क्वायरर, वॉल्यूम 26, नंबर 6, नवंबर/दिसंबर (http://www.csicop.org/si/2002-11/pet-psychic.html)
निकेल, जो (2001), रियल-लाइफ एक्स-फाइल्स: इन्वेस्टिगेटिंग द पैरानॉर्मल (लेक्सिंगटन, केवाई: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ केंटकी)।
निकेल, जो (1998), लुकिंग फॉर ए मिरेकल: वीपिंग आइकॉन्स, रेलिक्स, स्टिग्माटा, विज़न्स एंड हीलिंग क्यूर्स (एमहर्स्ट, एनवाई: प्रोमेथियस बुक्स)।
निखिलानंद, स्वामी (1996), विवेकानंद: एक जीवनी (कलकत्ता: अद्वैत आश्रम)।
निखिलानंद, स्वामी, अनुवादक (1984 [1942]), श्री रामकृष्ण का सुसमाचार (न्यूयॉर्क: रामकृष्ण विवेकानंद केंद्र)।
निरोदबरन (1990), श्री अरबिंदो सभी युगों के लिए: एक जीवनी (पॉन्डिचेरी: श्री अरबिंदो आश्रम)।
निस्बेट, मैट (2000), "द फिजिक्स इंस्ट्रक्टर हू वॉक्स ऑन फायर," जेनरेशन sXeptic में, 25 अक्टूबर (http://www.csicop.org/genx/firewalk/index.html)
नित्यात्मानंद, स्वामी (1967), श्रीएम दर्शन (कलकत्ता: जनरल प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड)।
निक्सन, बॉब (2004), “आग पर चलना समझाया गया,” “द स्केप्टिक” जर्नल में (http://www.skeptics.com.au/journal/firexplain.htm)
नॉर्डक्विस्ट, टेड (1978), आनंदा सहकारी ग्राम: एक नए युग के धार्मिक समुदाय की

मान्यताओं, मूल्यों और दृष्टिकोणों का एक अध्ययन (उप्साला, स्वीडन: बोर्गस्ट्रॉम्स ट्राइकेरी एबी)।
490 गुरुओं का पर्दाफाश

ओक्स, लेन (1997), भविष्यवाणिय करिश्मा: क्रांतिकारी धार्मिक व्यक्तित्वों का मनोविज्ञान (सिराक्यूज़, एनवाई: सिराक्यूज़ यूनिवर्सिटी प्रेस)।
ओट्स, रॉबर्ट एम. (1976), सेलिब्रेटिंग द डॉन (न्यूयॉर्क: पुटनाम)।
ओचिओग्रोसो, पीटर (1996), संप्रदायों का आनंद: विश्व की धार्मिक परंपराओं के लिए एक उत्साही मार्गदर्शिका (न्यूयॉर्क: इमेज बुक्स)।
ओडाज्निक, वी. वाल्टर (1993), गैदरिंग द लाइट: ए साइकोलॉजी ऑफ मेडिटेशन (बोस्टन, एमए: शंभला पब्लिकेशन्स, इंक)।
ओल्डमीडो, हैरी (2004), जर्नीज़ ईस्ट: 20वीं सदी में पूर्वी धार्मिक परंपराओं के साथ पश्चिमी मुठभेड़ (ब्लूमिंगटन, आईएन: वर्ल्ड विजडम)।
ऑलसन, हेलेना (1979), महर्षि "433" पर: महर्षि महेश योगी की संयुक्त राज्य अमेरिका की पहली यात्रा की कहानी (लॉस एंजिल्स)।
ऑरवेल, जॉर्ज (1980 [1949]), “गांधी पर विचार,” जॉर्ज ऑरवेल के एकत्रित निबंध, पत्रकारिता और पत्र, खंड 4: आपकी नाक के सामने, 1945-1950, सोनिया ऑरवेल और इयान एंगस, संपादक (हार्मंड्सवर्थ: पेंगुइन)।
पेन, जेफ़री (1998), फादर इंडिया: हाउ एनकाउंटर्स विद एन एन्शिएंट कल्चर ट्रांसफॉर्म्ड द मॉडर्न वेस्ट (न्यूयॉर्क: हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स, इंक.)।
पामर, सुसान जे. और अरविंद शर्मा (1993), द रजनीश पेपर्स: स्टडीज इन ए न्यू रिलीजियस मूवमेंट (दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स)।
पंचेन, नगारी और पेमा वांगयी (1996), परफेक्ट कंडक्ट: एसेर्टेनिंग द थ्री वोव्स (बोस्टन, एमए: विजडम पब्लिकेशन्स)।
पार्ट्रिज, एरिक (1947), शेक्सपियर की अश्लीलता (न्यूयॉर्क: रूटलेज)।
पॉलसेन, नॉर्मन (1984), क्राइस्ट कॉन्शियसनेस (साल्ट लेक सिटी, यूटी: द बिल्डर्स पब्लिशिंग कंपनी)। ग्रंथसूची 491

पीट, एफ. डेविड (1997), अनंत क्षमता: डेविड बोहम का जीवन और समय (रीडिंग,

एमए: एडिसन-वेस्ली)।
पेनी, बॉब (1993), साइंटोलॉजी में सामाजिक नियंत्रण: फंसाने के तरीकों पर एक नज़र
(http://www-2.cs.cmu.edu/~dst/Library/Shelf/xenu/scs.html).
पेरेज़-रिवस, मैनुअल (2000), "शांति की खोज", वाशिंगटन पोस्ट में, 6 जुलाई (http://www.rickross.com/reference/tm/tm10.html).
फेल्प्स, रिचर्ड (1997), "महिला ने कामुक स्वामी के लिए 1.8 मिलियन डॉलर जीते," द फिलाडेल्फिया डेली न्यूज, राष्ट्रीय संस्करण (एसोसिएटेड प्रेस के माध्यम से), 5 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/swami_rama/swami_rama1.html)
पिग्नोट्टी, मोनिका (1989), माई नाइन लाइव्स इन साइंटोलॉजी (http://www.factnet.org/Books/9LivesScientology/ nine_lives.html?FACTNet).
प्लैनेटसेव (2001), "सेक्स स्कैंडल भिक्षु ने पद छोड़ा," 18 अक्टूबर (http://web.archive.org/web/20041128090733/ http://www.planetsave.com/ViewStory.asp?ID=1515)
PLANS (2004), "वाल्डोर्फ स्कूलों के बारे में हमारी चिंताएँ" (http://www.waldorfcritics.org/active/concerns.html)
प्रेमानंद, बसवा (2005), "चमत्कारों की एक भारतीय संशयवादी की व्याख्या" (http://www.mukto-mona.com/Articles/yuktibaadi.htm)
प्रेमानंद, बसवा (1994), विज्ञान बनाम चमत्कार, खंड 1 (http://www.indian-skeptic.org/html/svm_cont.htm)
प्रेसमैन, स्टीवन (1993), अपमानजनक विश्वासघात: वर्नर एरहार्ड की एस्ट से निर्वासन तक की अंधेरी यात्रा (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
राधा, स्वामी शिवानंद (1992), फ्रॉम द मेटिंग डांस टू द कॉस्मिक डांस: सेक्स, लव, एंड मैरिज फ्रॉम ए योगिक व्यूप्वाइंट (कूटेने बे, बीसी: टाइमलेस बुक्स)।
राधा, स्वामी शिवानंद (1978), पश्चिम के लिए कुंडलिनी योग (कूटेने बे, बीसी: टाइमलेस बुक्स)।

राडज़िक, जोडी (2005), “पेडस्टलाइज़ेशन के खतरे” (http://www.globalserve.net/~sarlo/Yworship.htm)
रे, स्टीफन (1991), “गुरु दृश्य: हाँ, वे अभी भी इसमें लगे हुए हैं! (सेलिब्रिटी पंथ अनुयायी),” कॉस्मोपॉलिटन में, अगस्त (http://www.rickross.com/reference/ramtha/ramtha1.html)
रैफ़्टरी, मैरी और इओइन ओ'सुलिवन (2001), सफर द लिटिल चिल्ड्रन: द इनसाइड स्टोरी ऑफ़ आयरलैंड्स इंडस्ट्रियल स्कूल्स (न्यूयॉर्क: कंटीनम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप)।
राजेंद्र (1976), नए युग की यात्रा (सुमनेटाउन, पीए: कृपालु योग आश्रम)।
रामकृष्ण (2003), "श्री रामकृष्ण: जीवनी" (http://www.ramakrishna.org/Rmk.htm)
रामपा, टी. लोबसांग (1956), द थर्ड आई (न्यूयॉर्क: बैलांटाइन बुक्स)।
रैंडी, जेम्स (2003ए), “स्विफ्ट: जेआरईएफ का ऑनलाइन न्यूज़लेटर,” 14 मार्च (http://www.randi.org/jr/031403.html)
रैंडी, जेम्स (2003), “स्विफ्ट: जेआरईएफ का ऑनलाइन न्यूज़लेटर,” 17 अक्टूबर (http://www.randi.org/jr/101703.html)
रैंडी, जेम्स (2002), “स्विफ्ट: जेआरईएफ का ऑनलाइन न्यूज़लेटर,” 28 जून (http://www.randi.org/jr/062802.html)
रैंडी, जेम्स (2000), “टिप्पणी,” 8 दिसंबर (http://www.randi.org/jr/12-08-2000.html)
रैंडी, जेम्स (1995), गुप्त और अलौकिक के दावों, धोखाधड़ी और धोखे का एक विश्वकोश (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
रैंडी, जेम्स (1993), नोस्ट्राडामस का मुखौटा: दुनिया के सबसे प्रसिद्ध द्रष्टा की भविष्यवाणियाँ (बफ़ेलो, एनवाई: प्रोमेथियस बुक्स)।
रैंडी, जेम्स (1982), फ़्लिम-फ़्लैम! साइकिक्स, ईएसपी, यूनिकॉर्न और अन्य भ्रम (बफ़ेलो, न्यूयॉर्क: प्रोमेथियस बुक्स)। ग्रंथसूची 493

रॉलिंसन, एंड्रयू (1997), द बुक ऑफ एनलाइटेंड मास्टर्स: वेस्टर्न टीचर्स इन ईस्टर्न ट्रेडिशन्स (शिकागो, आईएल: ओपन कोर्ट)।
रीड, रिचर्ड (2001), "गुरु की पकड़ में," द ओरेगोनियन में, 15 जुलाई (http://www.oregonlive.com/special/guru/index.ssf?/news/oregonian/lc_11gside15.frame)
रीव, क्रिस्टोफर (2002), नथिंग इज़ इम्पॉसिबल (न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस)।
रीव्स, जे (2005), "एफबीआई अलबामा बॉय स्काउट्स सदस्यता की जांच करता है" (http://abcnews.go.com/US/wireStory?id=442654)
रिच, ट्रेसी आर. (2001), "यहूदी धर्म 101" (http://www.jewfaq.org/moshiach.htm)
रिचर्डसन, जॉन एच. (1993), "कैच अ राइजिंग स्टार," प्रीमियर में, सितंबर (http://www.rickross.com/reference/scientology/Scien12.html).
रिडेल, कैरोल (1990), द फाइंडहॉर्न कम्युनिटी: क्रिएटिंग ए ह्यूमन आइडेंटिटी फॉर द 21st सेंचुरी (फाइंडहॉर्न, स्कॉटलैंड: फाइंडहॉर्न प्रेस)।
रिनपोचे, पत्रुल (1998), मेरे परिपूर्ण शिक्षक के शब्द (बोस्टन, एमए: शंभला)।
रॉबिन्स, जॉन (1987), डाइट फॉर ए न्यू अमेरिका (वालपोल, एनएच: स्टिलपॉइंट पब्लिशिंग)।
रॉबिन्स, थॉमस और डिक एंथोनी, संपादक (1982), इन गॉड्स वी ट्रस्ट: अमेरिका में धार्मिक बहुलवाद के नए पैटर्न (न्यू ब्रंसविक, एनजे: ट्रांजैक्शन बुक्स)।
रोडार्मर, विलियम (1983), "स्वामी मुक्तानंद का गुप्त जीवन," कोइवोल्यूशन क्वार्टरली में (http://www.ex-cult.org/Groups/SYDA-Yoga/leave.txt)
रॉस, रिक (2005सी), "चेतावनी संकेत" (http://www.rickross.com/warningsigns.html)
रॉस, रिक (2005बी), "दीपक चोपड़ा" (http://www.rickross.com/groups/deepakchopra.html)

रॉस, रिक (2005), “फ्रेडरिक लेन्ज़” (http://www.rickross.com/groups/lenz.html)
रॉस, रिक (2004डी), "नार्कोनॉन" (http://www.rickross.com/groups/scientology.html#Narconon)
रॉस, रिक (2004सी), “चर्च यूनिवर्सल एंड ट्रायम्फेंट एंड एलिजाबेथ क्लेयर प्रॉफेट” (http://www.rickross.com/groups/cut.html).
रॉस, रिक (2004बी), “लिसा मैकफर्सन—एक साइंटोलॉजिस्ट की मृत्यु” (http://www.rickross.com/groups/scientology.html#mcpherson)
रॉस, रिक (2004ए), “पादरी दुर्व्यवहार” (http://www.rickross.com/groups/clergy.html)
रॉस, रिक (2004), “न्यू जर्सी के रिक ए. रॉस संस्थान में आपका स्वागत है” (www.rickross.com)
रॉस, रिक (2003e), “एपी ने साइंटोलॉजी से संबंधित कार्यक्रम और न्यूयॉर्क शहर के अग्निशामकों के बारे में न्यूयॉर्क टाइम्स की कहानी उठाई,” कल्ट न्यूज़ में, 5 अक्टूबर (http://www.cultnews.com/archives/week_2003_10_05.html).
रॉस, रिक (2003डी), “श्री चिनमोय ने सेक्स, ब्रह्मचर्य और एक अच्छा गुरु कैसे बनें, इस पर चर्चा की” (http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy21.html).
रॉस, रिक (2003सी), “क्या एक योग वेबसाइट ‘पंथ’ समूहों को बढ़ावा दे रही है?” कल्ट न्यूज़ में, 24 मार्च (http://www.cultnews.com/2003_03_23_archive.html).
रॉस, रिक (2003बी), “गोल्डी हॉन ‘पंथ’ नेता के जन्मदिन समारोह में शामिल होंगी,” कल्ट न्यूज़ में, 18 अगस्त (http://www.cultnews.com/archives/week_2003_08_17.html)
रॉस, रिक (2003a), “टाइम पत्रिका ने एक ‘पंथ’ गुरु की योजना का प्रचार किया,” कल्ट न्यूज़ में, 31 जुलाई

(http://www.cultnews.com/archives/week_2003_07_27.html).
रॉस, रिक (2003), “क्या डिक एंथोनी एक पूर्णकालिक पेशेवर ‘पंथ समर्थक’ हैं?” कल्ट न्यूज़ में, 27 मार्च (http://www.rickross.com/reference/apologist/apologist44.html) ग्रंथसूची 495

रॉस, रिक (2002बी), “क्या पंथ का प्रभाव बढ़ रहा है?” कल्ट न्यूज़ में, 13 नवंबर (http://www.rickross.com/reference/apologist/apologist45.html).
रॉस, रिक (2002a), “क्या इतने सालों बाद भी पागल हो?” कल्ट न्यूज़ में, अगस्त 1
(http://www.cultnews.com/archives/week_2002_07_28.html).
रॉस, रिक (2002), “हॉलीवुड का एक और ‘कल्ट’ क्रेज,” कल्ट न्यूज में, अगस्त 20
(http://www.cultnews.com/archives/week_2002_08_18.html).
रॉस, रिक (1998), “वीरता के कारनामे आत्मा की आंतरिक शक्ति को दर्शाते हैं,” 3 नवंबर
(http://www.rickross.com/reference/srichinmoy/srichinmoy17.html).
रॉयल्टी (2003), “विलियम द कॉन्करर: द कॉन्करर का बचपन” (http://www.royalty.nu/Europe/England/Norman/WilliamI.html).
रुडिन, जेम्स और मार्सिया रुडिन (1980), जेल या स्वर्ग? नए धार्मिक पंथ (फिलाडेल्फिया, पीए: फोर्ट्रेस प्रेस)।
रुडिन, मार्सिया (1996), कैंपस में पंथ: निरंतर चुनौती (बोनिता स्प्रिंग्स, एफएल: अमेरिकन फैमिली फाउंडेशन)।
रसेल, पीटर (1977), द टीएम टेक्निक: एन इंट्रोडक्शन टू ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन एंड द टीचिंग्स ऑफ महर्षि महेश योगी (बोस्टन, एमए: रूटलेज एंड केगन पॉल)।
रसेल, रॉन (2001ए), “सच्चाई को उजागर करना: बेन एर्स्किन कहते हैं कि वह स्वामी के नाजायज बच्चे हैं और वह इसे साबित करने का मौका चाहते हैं,” न्यू टाइम्स

लॉस एंजिल्स में, 29 नवंबर (http://www.rickross.com/reference/selfreal/selfreal4.html)
रसेल, रॉन (2001), "भक्त का पुत्र," न्यू टाइम्स लॉस एंजिल्स में, 5 जुलाई (http://www.rickross.com/reference/selfreal/selfreal3.html).
रसेल, रॉन (1999), "स्वामी की वापसी," न्यू टाइम्स लॉस एंजिल्स में, 1-7 जुलाई (http://www.rickross.com/reference/selfreal/selfreal2.html).
496 गुरुओं का पर्दाफाश

रटर, पीटर (1989), वर्जित क्षेत्र में सेक्स: जब सत्ता में बैठे पुरुष—चिकित्सक, डॉक्टर, पादरी, शिक्षक और अन्य—महिलाओं के भरोसे पर विश्वासघात करते हैं (लॉस एंजिल्स: जेरेमी पी. टार्चर, इंक.)।
साल्किन, एलन (2002), "वायु का सम्राट," योग जर्नल में, सितंबर/अक्टूबर (http://www.yjevents.com/views/738_1.cfm)
सनत, आर्येल (1999), कृष्णमूर्ति का आंतरिक जीवन (व्हीटन, आईएल: थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस)।
सैनेला, ली (2001), द विजनरी लाइफ (http://www.skaggs-island.org/humanistic/sannella/ visionarylife.html)
सच्चिदानंद, स्वामी (1977), गुरु और शिष्य (पोम्फ्रे सेंटर, सीटी: इंटीग्रल योग प्रकाशन)।
सैवेज, डैन (2005), "सैवेज लव" (http://www.thestranger.com/current/savage.html)
शेल, ओरविल (2001), वर्चुअल तिब्बत: हिमालय से हॉलीवुड तक शांगरी-ला की खोज (न्यूयॉर्क: हेनरी होल्ट एंड कंपनी, इंक.)।
शूमाकर, माइकल (1992), धर्म लायन: एलन गिन्सबर्ग की जीवनी (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
श्वार्ट्ज, जॉन (2004), "1971 में नकली जेल ने 'सामान्य' और 'राक्षस' के बीच एक पतली रेखा दिखाई," न्यूयॉर्क टाइम्स में, 6 मई (http://query.nytimes.com/gst/abstract.html?res=F40D11FB34590C758CDDAC0894DC404482&incamp=archive:search)

श्वार्ट्ज, टोनी (1996), व्हाट रियली मैटर्स: सर्चिंग फॉर विजडम इन अमेरिका (न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स)।
स्कॉट, आर. डी. (1978), ट्रांसेंडेंटल मिसकॉन्सेप्शन्स (सैन डिएगो, सीए: बीटा बुक्स)।
सीडमैन, बैरी एफ. (2001), "चिकित्सा युद्ध: क्या वैकल्पिक और मुख्यधारा की चिकित्सा कभी मित्र बन पाएगी?" स्केप्टिकल इन्क्वायरर, खंड 25, अंक 1, जनवरी/फरवरी में प्रकाशित।
(http://www.csicop.org/si/2001-01/medicine-wars.html).
ग्रंथसूची 497

सीडमैन, पीटर (1985), "जेडीसी अधिकारियों ने स्वीकार किया कि 76 के बाद भी यौन प्रयोग जारी रहे," मिल वैली रिकॉर्ड में, 10 अप्रैल (http://www.rickross.com/reference/adida/adida8.html)
सेल्फ, जेन (1992), 60 मिनट्स और वर्नर एरहार्ड की हत्या: कैसे अमेरिका के शीर्ष रेटेड टेलीविजन शो का इस्तेमाल एक ऐसे व्यक्ति को नष्ट करने के प्रयास में किया गया जो बदलाव ला रहा था (ह्यूस्टन, TX: ब्रेकथ्रू पब्लिशिंग)।
सेनोट, चार्ल्स एम. (1992), ब्रोकन कोवेनेंट: द स्टोरी ऑफ फादर ब्रूस रिट्टर फॉल फ्रॉम ग्रेस (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर)।
सिएमोन-नेटो, उवे (2002), "बौद्ध धर्म के बाल यौन शोषण करने वाले भिक्षु," यूपीआई में (http://www.american-buddha.com/pedophile.monks.htm)
Shambhala (2003), "Vidyadhara Chögyam Trungpa" (http://www.shambhala.org/teachers/vctr/ctrbio.html).
शपिरो, मार्क (2002), उदास आँखों के पीछे: जॉर्ज हैरिसन का जीवन (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
शेरमर, माइकल (1997), व्हाई पीपल बिलीव वियर्ड थिंग्स: स्यूडोसाइंस, सुपरस्टिशन, एंड अदर कन्फ्यूशन्स ऑफ आवर टाइम (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन एंड कंपनी)।
शेरिल, मार्था (2000ए), ब्रुकलिन से बुद्ध (http://www.american-

buddha.com/buddha.brook.htm)
शेरिल, मार्था (2000), द बुद्धा फ्रॉम ब्रुकलिन (न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस)।
शाय, डेविड (2004), "ईएसटी और द फोरम से संबंधित मनोवैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के सार"
(http://www.rickross.com/reference/landmark/landmark22.html).
सिल, नरसिंह पी. (2004), व्यक्तिगत ईमेल संचार।
सिल, नरसिंह पी. (1998), रामकृष्ण रिविजिटेड: ए न्यू बायोग्राफी (लैनहैम, एमडी: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ अमेरिका, इंक.)।
सिल, नरसिंह पी. (1997), स्वामी विवेकानंद: एक पुनर्मूल्यांकन (मिसिसॉगा, ओएन: एसोसिएटेड यूनिवर्सिटी प्रेसेस)।
498 गुरुओं का पर्दाफाश

सिल्वरमैन, स्टीव (2003), "विलियम द कॉन्करर" (http://home.nycap.rr.com/useless/william_the_conqueror).
साइमन, स्टेफ़नी (2004), "मवेशी वीडियो ने कोषेर मांस बहस को जन्म दिया" (http://failedmessiah.typepad.com/failed_messiahcom/kosher_meat_scandal/).
सिंगर, मार्गरेट टी. (2003 [1995]), कल्ट्स इन अवर मिडस्ट: द कंटिन्यूइंग फाइट अगेंस्ट देयर हिडन मेनेस (सैन फ्रांसिस्को, सीए: जॉन विली एंड संस, इंक.).
सिंगर, मार्गरेट टी. और जानजा लालिच (1996), क्रेज़ी थेरेपीज़: वे क्या हैं? क्या वे काम करते हैं? (सैन फ्रांसिस्को, सीए: जोसे-बास पब्लिशर्स)।
सिंह, सिरी स्कैंडल (2000), "'द मास्टर' से और अधिक भविष्यवाणियाँ और अवलोकन"
(http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho18.html).
सिंह, सिरी स्कैंडल (1998ए), "3एचओ फाउंडेशन शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम" (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho9.html)
सिंह, सिरी स्कैंडल (1998), "'द मास्टर' से भविष्यवाणियाँ" (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho13.html)

सिंह, सिरी साइंटिफिक (1999), "मास्टर के मुख से और अधिक" (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho55.html)
शिवानंद, स्वामी (1958), शिवानंद की आत्मकथा (शिवानंदनगर, भारत: योग-वेदांत वन अकादमी प्रेस)।
स्कोल्निक, एंड्रयू (1991), "महर्षि आयुर्वेद: गुरु की विपणन योजना दुनिया को शाश्वत 'परिपूर्ण स्वास्थ्य' का वादा करती है," JAMA में, अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन का जर्नल, 2 अक्टूबर (http://web.archive.org/web/20040419100603/ http://www.aaskolnick.com/mav.html)
स्लोस, राधा आर. (2000), जे. कृष्णमूर्ति के साथ छाया में जीवन (लिंकन, एनई: आईयूनिवर्स.कॉम, इंक.)।
स्मिथ, रयान (2004), "कैंपस सुरक्षा सम्मेलन में लक्षित पंथ" (http://www.uofaweb.ualberta.ca/arts/nav02.cfm?nav02=27097&nav01=18478) ग्रंथसूची 499

एसआरएफ (1976), परमहंस योगानंद, स्मृति में: गुरु का जीवन, कार्य और महासमाधि (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
स्टाइनर, रुडोल्फ (1963 [1923]), अटलांटिस और लेमुरिया (मोकेलुम्ने, सीए: स्वास्थ्य अनुसंधान)।
स्टाइनर, रुडोल्फ (1959), कॉस्मिक मेमोरी: पृथ्वी और मनुष्य का प्रागितिहास (वेस्ट न्याक, एनवाई: रुडोल्फ स्टाइनर पब्लिकेशन्स, इंक.)।
स्टाइनर, रुडोल्फ (1947), उच्चतर दुनियाओं का ज्ञान और उसकी प्राप्ति (हडसन, एनवाई: एंथ्रोपोसोफिक प्रेस)।
स्टोर, एंथोनी (1996), फीट ऑफ क्ले: संत, पापी और पागल: गुरुओं का एक अध्ययन (न्यूयॉर्क: द फ्री प्रेस)।
स्ट्रेली, केट रॉबर्ट डी. सैन सौसी के साथ (1987), द अल्टीमेट गेम: भगवान श्री रजनीश का उदय और पतन (सैन फ्रांसिस्को, सीए: हार्पर एंड रो, पब्लिशर्स)।
स्टर्लसन, स्नोर्री (1997), हीमस्क्रिंगला—नॉर्वेजियन किंग्स (सिएटल, डब्ल्यूए: द वर्ल्ड वाइड स्कूल;

http://www.worldwideschool.org/library/books/hst/european/heimskringla/HeimskringlaVolume6/chap97.html).
सुलिवन, केली (2003), “धार्मिक संप्रदाय के नेता ने स्थानीय चर्च स्थल का दौरा किया,” चारिहो टाइम्स में, 10 जुलाई (http://www.rickross.com/reference/ananda/ananda7.html)
टार्लो, लूना (1997), द मदर ऑफ गॉड (ब्रुकलिन, एनवाई: प्लोवर प्रेस)।
दिसट्रुथ (2001), “आदि दा की काल्पनिक दुनिया से ‘पागल ज्ञान’ के विकृत उदाहरण” (http://www.luckymojo.com/esoteric/religion/tt200112adidabubbafreejohnscandal.txt)
थॉम्पसन, ज्योफ (2000), “थाईलैंड के भिक्षुओं के पीछे घोटाले,” एबीसी ऑनलाइन न्यूज़ में, शुक्रवार, 24 नवंबर (http://www.abc.net.au/pm/stories/s216493.htm)
थर्मन, रॉबर्ट ए. (2004), अनंत जीवन: अच्छी तरह से जीने के लिए सात गुण (न्यूयॉर्क: रिवरहेड बुक्स)।
500 गुरुओं को बेनकाब करना

टाइम (1977), “योगी भजन का संश्लेषित सिख धर्म,” टाइम में, 5 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/3ho/3ho94.html)
टोबियास, मैडलीन लैंडौ और जानजा लालिच (1994), कैप्टिव हार्ट्स, कैप्टिव माइंड्स: फ्रीडम एंड रिकवरी फ्रॉम कल्ट्स एंड अदर एब्यूसिव रिलेशनशिप्स (अलामेडा, कैलिफोर्निया: हंटर हाउस; जोया से संबंधित अंश ऑनलाइन उपलब्ध है) (http://www.kashiashram.com/blinded.htm)
टॉड, डगलस (2001), “पवित्र व्यक्ति? यौन शोषणकर्ता? दोनों?” वैंकूवर सन में, 27 फरवरी
(http://www.rickross.com/reference/saibaba/saibaba6.html).
टोस्कानी, ओलिवर, और अन्य। (2000), काकास: द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ पू (लॉस एंजिल्स: टास्चेन अमेरिका, एलएलसी।)।
ट्रान्सनेट (2004), “बेशर्म मन” (http://www.trancenet.org/chopra/index.shtml)

ट्रान्सनेट (2003), “ट्रान्सनेट: स्वतंत्र टीएम अनुसंधान संग्रह” (http://onwww.net/trancenet.org/research/index.shtml)
ट्रिमोंडी, विक्टर और विक्टोरिया ट्रिमोंडी (2003), दलाई लामा की छाया: तिब्बती बौद्ध धर्म में कामुकता, जादू और राजनीति, अनुवादक मार्क पेनी (http://www.trimondi.de/SDLE/Index.htm)
ट्रुंगपा, चोग्याम (1981), लक्ष्य के बिना यात्रा: बुद्ध का तांत्रिक ज्ञान (बोल्डर, सीओ: प्रज्ञा प्रेस)।
ट्रुंगपा, चोग्याम (1977), तिब्बत में जन्म (बोस्टन, एमए: शंभला पब्लिकेशन्स, इंक.)।
ट्रुंगपा, चोग्याम (1973), कटिंग थ्रू स्पिरिचुअल मैटेरियलिज्म (बोल्डर, सीओ: शंभला पब्लिकेशन्स, इंक)।
टर्नर, जोसेफ (2001), “जोसेफ टर्नर कौन हैं?” टॉमी रायडेन, संपादक, “आर्य क्रिया सूचना” में।
(http://www.tommyryden.com/kriya/turners_life.htm).
ट्वोरकोव, हेलेन (1994 [1989]), अमेरिका में ज़ेन: पाँच शिक्षक और एक अमेरिकी बौद्ध धर्म की खोज (न्यूयॉर्क: कोडान्शा अमेरिका, इंक)।

त्यागानंद, स्वामी (2000), काली की संतान का पुनरीक्षण: या, क्या किसी ने दस्तावेज़ीकरण की जाँच नहीं की?
(http://home.earthlink.net/~tyag/Home.htm).
अंडरवुड, मिक (2005), “सामाजिक प्रभाव—अनुरूपता” (http://www.cultsock.ndirect.co.uk/MUHome/cshtml/socinf/conform.html)
अंडरवुड, बारबरा और बेट्टी अंडरवुड (1979), होस्टेज टू हेवन: फोर इयर्स इन द यूनिफिकेशन चर्च बाय एन एक्स मूनी एंड द मदर हू फॉट टू फ्री हर (न्यूयॉर्क: क्लार्कसन एन पॉटर, इंक)।
वैन डे वेटेरिंग, जानविलेम (2001 [1999]), आफ्टरज़ेन: एक ज़ेन छात्र के अनुभव जो अपने कान पर बाहर है (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।

वैन डे वेटेरिंग, जानविलेम (1999 [1973]), द एम्प्टी मिरर: एक्सपीरियंस इन ए जापानी ज़ेन मॉनेस्ट्री (न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस)।
वैन डेर ब्राक, आंद्रे (2003), एनलाइटनमेंट ब्लूज़: माई इयर्स विद एन अमेरिकन गुरु (राइनबेक, एनवाई: मोंकफिश बुक पब्लिशिंग कंपनी)।
वैन वोल्फेरेन, कारेल (1990), जापानी शक्ति का रहस्य: एक राज्यविहीन राष्ट्र में लोग और राजनीति (न्यूयॉर्क: विंटेज बुक्स)।
वॉन, फ़्रांसिस (1982), "संतुलन का प्रश्न: नए धार्मिक आंदोलनों में स्वास्थ्य और विकृति विज्ञान," जर्नल ऑफ़ ह्यूमनिस्टिक साइकोलॉजी में।
वर्नोन, रोलैंड (2001), स्टार इन द ईस्ट: कृष्णमूर्ति, द इन्वेंशन ऑफ ए मसीहा (न्यूयॉर्क: पालग्रेव)।
विक्टोरिया, ब्रायन डाइज़ेन (2003), ज़ेन वॉर स्टोरीज़ (न्यूयॉर्क: रूटलेजकर्ज़न)।
विक्टोरिया, ब्रायन (डेज़ेन) ए. (1997), ज़ेन एट वॉर (न्यूयॉर्क: वेदरहिल, इंक.)।
विवेकानंद, स्वामी (1947), स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनाएँ (हॉलीवुड, कैलिफ़ोर्निया: वेदांत प्रेस और बुकशॉप)।
502 गुरुओं का पर्दाफाश

वोस्पर, सिरिल (1997 [1971]), द माइंड-बेंडर्स: साइंटोलॉजी (लंदन: नेविल स्पीयरमैन; पूरा पाठ ऑनलाइन http://members.chello.nl/mgormez/books/vosper/ पर उपलब्ध है)।
वेकफील्ड, मार्जरी (1996), गवाही: मार्जरी वेकफील्ड की आत्मकथा (http://www-2.cs.cmu.edu/afs/cs/ Web/People/dst/Library/Shelf/wakefield/testimony.html)
वेकफील्ड, मार्जरी (1993), द रोड टू ज़ेनू: ए नैरेटिव अकाउंट ऑफ लाइफ इन साइंटोलॉजी
(http://www-2.cs.cmu.edu/~dst/Library/Shelf/xenu/).
वेकफील्ड, मार्जरी (1991), अंडरस्टैंडिंग साइंटोलॉजी (टैम्पा, एफएल: कोएलिशन ऑफ कंसर्न्ड सिटिजन्स; पूर्ण पाठ ऑनलाइन http://www-2.cs.cmu.edu/~dst/Library/Shelf/wakefield/us.html पर उपलब्ध है)।
वाल्डमैन, एमी (2002), "पुराने रजनीश कम्यून ने मृत्यु के बाद हल्कापन

अपनाया," न्यूयॉर्क टाइम्स में, 11 दिसंबर (http://www.rickross.com/reference/rajneesh/rajneesh10.html)
वॉकर, डेविड (1968), विलियम द कॉन्करर (लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)।
वालेस, एमी (2003), सॉर्सरर्स अप्रेंटिस: माई लाइफ विद कार्लोस कास्टानेडा (बर्कले, सीए: फ्रॉग, लिमिटेड)।
वालिस, रॉय (1976), पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग: साइंटोलॉजी का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण (लंदन: हेनेमैन एजुकेशनल बुक्स लिमिटेड)।
वॉल्स, जेनेट (2003), "क्या मैडोना ब्रिटनी स्पीयर्स को कबालाह में परिवर्तित कर रही हैं?" एमएसएनबीसी पर, 11 सितंबर (http://www.rickross.com/reference/kabbalah/kabbalah42.html).
वॉल्स, जेनेट (2002), "क्या साइंटोलॉजी एल्विस को बचा सकती थी?" एमएसएनबीसी पर, 1 अक्टूबर (http://www.rickross.com/reference/scientology/celebrities/celebrities11.html)
वालरस, एसआरएफ (2004), "एसआरएफ वालरस चर्चा मंच" (http://www.angelfire.com/blues/srfwalrus) ग्रंथसूची 503

वॉल्श, रोजर (1999), आवश्यक आध्यात्मिकता: दया, प्रेम, आनंद, शांति, दृष्टि, ज्ञान और उदारता विकसित करने के लिए विश्व के धर्मों से अभ्यास (न्यूयॉर्क: जॉन विली एंड संस, इंक.)।
वॉल्श, रोजर और फ्रांसेस वॉन, संपादक (1993), पाथ्स बियॉन्ड ईगो: द ट्रांसपर्सनल विजन (लॉस एंजिल्स: जेरेमी पी. टार्चर, इंक.)।
वॉल्श, रोजर और फ्रांसेस वॉन, संपादक (1988), ए गिफ्ट ऑफ हीलिंग: ए कोर्स इन मिरेकल्स से चयन (लॉस एंजिल्स: जेरेमी पी. टार्चर, इंक.)।
वाल्टर्स, जे. डोनाल्ड (2002), आनंदा नामक स्थान: अग्निपरीक्षा जिसने आज दुनिया के सबसे सफल सहकारी समुदायों में से एक को जन्म दिया (http://www.ananda.org/inspiration/books/place/index.html).
वाल्टर्स, जे. डोनाल्ड (1995), "श्री जे. डोनाल्ड वाल्टर्स का बयान: 6 सितंबर – 30

नवंबर, 1995”
(http://www.anandaawareness.com/walters_testifies.html).
वार्ड, टिम (1998), व्हाट द बुद्धा नेवर टॉट (टोरंटो: सोमरविले हाउस पब्लिशिंग)।
वार्नर, ब्रैड (2004), “ज्ञानोदय ब्लूज़” (http://www2.gol.com/users/doubtboy/enlightenmentblues.html)
वार्नर, ब्रैड (2003), हार्डकोर ज़ेन (बोस्टन, एमए: विजडम पब्लिकेशन्स)।
वार्नर, जूडी (1990), हृदय का परिवर्तन (यॉर्क बीच, मेन: सैमुअल वेइसर)।
वाशिंगटन, पीटर (1995 [1993]), मैडम ब्लावत्स्की का बबून: रहस्यवादियों, माध्यमों और बेमेल लोगों का इतिहास जिन्होंने अमेरिका में अध्यात्मवाद लाया (न्यूयॉर्क: शॉकेन बुक्स)।
वातानाबे, टेरेसा (1998), “शिक्षक या अत्याचारी?” एल.ए. टाइम्स में, 15 अगस्त (http://www.themotherofgod.com/latimes.htm)
वेब, जेम्स (1976), द ऑकल्ट एस्टैब्लिशमेंट (ला साले, आईएल: ओपन कोर्ट)।
504 गुरुओं को बेनकाब करना

वेबस्टर, कैथरीन (1990), “हिमालय के स्वामी राम के विरुद्ध मामला,” योग जर्नल में, दिसंबर (http://www.rickross.com/ reference/swami_rama/swami_rama2.html)
वेबस्टर, रिचर्ड (1990), ईशनिंदा का संक्षिप्त इतिहास: उदारवाद, सेंसरशिप और "द सैटैनिक वर्सेज" (ऑक्सफोर्ड: द ऑरवेल प्रेस)।
वेल्च, क्रिस (1995), टीनएज वेस्टलैंड: द अर्ली इयर्स (सरे, इंग्लैंड: कैसल कम्युनिकेशंस)।
वेल्च, डेविड (2001), हिटलर: एक तानाशाह का प्रोफाइल (न्यूयॉर्क: रूटलेज)।
वेटिग, हन्ना (2002), “‘विश्व का राजा’ ‘योगिक उड़ान’ के माध्यम से शांति का उपदेश देता है,” द डेली स्टार में, 11 नवंबर (http://www.rickross.com/reference/tm/tm41.html)
क्या ज्ञानोदय??! (2005), “क्या ज्ञानोदय??! स्व-घोषित ‘गुरु’ एंड्रयू कोहेन पर एक अनसेंसर्ड नज़र” (http://whatenlightenment.blogspot.com)
व्हीलर, केट (1994), “एक नई आध्यात्मिक नैतिकता की ओर,” योग जर्नल, मार्च/

अप्रैल
(http://www.anandainfo.com/new_ethic.html).
व्हाइट, जॉन (1997), “ईश्वर-साक्षात्कार का अनुभव,” नोउमेनन में: अद्वैत परिप्रेक्ष्य के लिए एक न्यूज़लेटर (http://www.noumenon.co.za/html/summer_1997.html)
वीनर, सीता (1972), स्वामी सच्चिदानंद (न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स)।
विकिपीडिया (2003), "दलाई लामा" (http://en.wikipedia.org/wiki/Daलाई_लामा)।
विल्बर, केन (2002), “साइडबार ए: कैप्टन कुक को किसने खाया? उत्तर आधुनिक युग में एकीकृत इतिहासलेखन” (http://wilber.shambhala.com/html/books/boomeritis/cook/part3.cfm)
विल्बर, केन (2001ए), ए थ्योरी ऑफ एवरीथिंग: एन इंटीग्रल विजन फॉर बिजनेस, पॉलिटिक्स, साइंस एंड स्पिरिचुअलिटी (बोस्टन, एमए: शंभला)।
ग्रंथसूची 505

विल्बर, केन (2001), “मैकडर्मॉट को प्रतिक्रिया” (http://www.integralworld.net/mcdermott2.html)
विल्बर, केन (2000ए), वन टेस्ट: द जर्नल्स ऑफ केन विल्बर (बोस्टन, एमए: शंभला)।
विल्बर, केन (2000), इंटीग्रल साइकोलॉजी: चेतना, आत्मा, मनोविज्ञान, चिकित्सा (बोस्टन, एमए: शंभला)।
विल्बर, केन (1998बी), “आदि दा के मामले पर एक अद्यतन” (http://wilber.shambhala.com/html/misc/adida_update.cfm)
विल्बर, केन (1998ए), “आदि दा समुदाय को पत्र” (http://www.beezone.com/Wilber/ken_wilbers_letter.html)
विल्बर, केन (1998), द आई ऑफ स्पिरिट: एन इंटीग्रल विजन फॉर ए वर्ल्ड गॉन स्लाइटली मैड (बोस्टन, एमए: शंभला)।
विल्बर, केन (1996ए), “आदि दा का मामला” (http://wilber.shambhala.com/html/misc/adida.cfm)

विल्बर, केन (1996), ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ एवरीथिंग (बोस्टन, एमए: शंभला)।
विल्बर, केन (1995), सेक्स, इकोलॉजी और आध्यात्मिकता (बोस्टन, एमए: शंभला)।
विल्बर, केन (1991), ग्रेस एंड ग्रिट: ट्रेया किलैम विल्बर के जीवन और मृत्यु में आध्यात्मिकता और उपचार (बोल्डर, सीओ: शंभला)।
विल्बर, केन (1983बी), एक सामाजिक ईश्वर: धर्म की एक नई समझ की ओर (बोल्डर, सीओ: शंभला)।
विल्बर, केन (1983ए), अप फ्रॉम ईडन (बोल्डर, सीओ: शंभला)।
विल्बर, केन (1983), आई टू आई (बोल्डर, सीओ: शंभला)।
विल्बर, केन (1982), द होलोग्राफिक पैराडाइम एंड अदर पैराडॉक्सेस (बोल्डर, सीओ: शंभला)।
विल्बर, केन (1977), चेतना का स्पेक्ट्रम (व्हीटन, आईएल: थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस)।
506 गुरुओं का पर्दाफाश

विली, डेविड (2002), "अग्निचलन मिथक बनाम भौतिकी" (http://web.archive.org/web/20031203013713/http://www.pitt.edu/~dwilley/fire.html)
विल्स, गैरी (2000), पोप का पाप: धोखे की संरचनाएँ (न्यूयॉर्क: डबलडे)।
विल्स, गैरी (1972), बेयर रुइन्ड चोयर्स: डाउट, प्रोफेसी, एंड रेडिकल रिलीजन (गार्डन सिटी, एनवाई: डबलडे एंड कंपनी, इंक.)।
विल्सन, इयान (1988), द ब्लीडिंग माइंड (लंदन: वेडेनफेल्ड और निकोलसन)।
विन, डेनिस (2000 [1983]), द मैनिपुलेटेड माइंड: ब्रेनवाशिंग, कंडीशनिंग और इंडोक्ट्रिनेशन (कैम्ब्रिज, एमए: मालोर बुक्स)।
महिला #2 (1995), "क्रॉस-शिकायत को खारिज करने के लिए क्रॉस-प्रतिवादियों के विशेष प्रस्ताव के समर्थन में XXX की घोषणा" (http://www.anandaawareness.com/woman_2.html)
योगानंद, परमहंस (1998), योगी की आत्मकथा (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।

योगानंद, परमहंस (1987 [1953]), धर्म का विज्ञान (लॉस एंजिल्स: आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप)।
योगानंद, परमहंस (1986), द डिवाइन रोमांस (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
योगानंद, परमहंस (1985), सभी में एक को देखना (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
योगानंद, परमहंस (1984 [1956]), एसआरएफ पाठ (लॉस एंजिल्स: आत्म-साक्षात्कार फैलोशिप)।
योगानंद, परमहंस (1982), मनुष्य की शाश्वत खोज (लॉस एंजिल्स: आत्म-साक्षात्कार फेलोशिप)।
योगानंद, परमहंस (1946), योगी की आत्मकथा (नेवादा सिटी, सीए: क्रिस्टल क्लैरिटी;
http://www.ananda.org/inspiration/books/ay/index.html).

युक्तेश्वर, स्वामी श्री (1977), द होली साइंस (लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप)।
ज़ैब्लॉकी, बेंजामिन (2001), “एंथनी की निकास लागत विश्लेषण की आलोचना में पद्धतिगत भ्रांतियाँ”
(http://www.rci.rutgers.edu/~zablocki/Anthony.htm).
ज़ैब्लॉकी, बेंजामिन (1998), “नए धार्मिक आंदोलनों का जन्म और मृत्यु” (http://www.rci.rutgers.edu/~zablocki/birth%20and%20death%20of%20new%20religious%20movements.htm)
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी. (2004बी), “बुराई के मनोविज्ञान पर एक स्थितिवादी परिप्रेक्ष्य: यह समझना कि कैसे अच्छे लोग अपराधियों में बदल जाते हैं,” ए. जी. मिलर, एड., द सोशल साइकोलॉजी ऑफ़ गुड एंड एविल (न्यूयॉर्क: गिलफोर्ड प्रेस; अध्याय पाठ ऑनलाइन उपलब्ध है http://www.prisonexp.org/pdf/evil.pdf)
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी. (2004ए), “सत्ता अच्छे सैनिकों को ‘बुरे सेब’ में बदल देती

है," द बोस्टन ग्लोब में, 9 मई (http://www.boston.com/news/globe/editorial_opinion/oped/ articles/2004/05/09/power_turns_good_soldiers_into_bad_apples/).
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी. (2004), "स्टैनफोर्ड जेल प्रयोग स्लाइड शो" (http://www.prisonexp.org)
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी. (2002), "मन नियंत्रण: मनोवैज्ञानिक वास्तविकता या बेबुनियाद बयानबाजी?" एपीए मॉनिटर, वॉल्यूम 33, नंबर 10, नवंबर (http://www.apa.org/monitor/nov02/pc.html) में।
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी. (1971), "कारावास की शक्ति और विकृति," कांग्रेसनल रिकॉर्ड में (क्रम संख्या 15, 25 अक्टूबर)। न्यायपालिका समिति की उपसमिति संख्या 3 के समक्ष सुनवाई, प्रतिनिधि सभा, बानवेवीं कांग्रेस, प्रथम सत्र, सुधार, भाग II, जेल, जेल सुधार और कैदियों के अधिकार: कैलिफ़ोर्निया (वाशिंगटन, डी.सी.: अमेरिकी सरकारी मुद्रण कार्यालय; पाठ ऑनलाइन http://www.prisonexp.org/pdf/congress.pdf पर उपलब्ध है)।
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी., क्रिस्टीना मैस्लाच और क्रेग हैनी (2000), "स्टैनफोर्ड जेल प्रयोग पर विचार: उत्पत्ति, परिवर्तन, परिणाम," थॉमस ब्लास द्वारा संपादित, ओबीडिएंस टू अथॉरिटी: मिलग्राम प्रतिमान पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य 508 गुरुओं को निथारना

(महवाह, एनजे: एर्लबाम; अध्याय का पाठ ऑनलाइन http://www.prisonexp.org/pdf/blass.pdf पर उपलब्ध है)।
ज़िम्बार्डो, फिलिप जी., क्रेग हैनी, विलियम कर्टिस बैंक्स और डेविड जैफ़े (1973), "मन एक दुर्जेय जेलर है: एक पिरानडेलियन जेल," द न्यू यॉर्क टाइम्स मैगज़ीन में, 8 अप्रैल (पाठ ऑनलाइन http://www.prisonexp.org/pdf/pirandellian.pdf पर उपलब्ध है)।
ज़ोल, राहेल (2005), "बिशप: नए यौन शोषण के दावे 1,000 से ऊपर" (http://www.usatoday.com/news/religion/ 2005-02-18-bishops-abuse_x.htm?POE=NEWISVA)
ज़ुप्प, एड्रियन (2003), "बुद्ध क्या करेंगे? दलाई लामा लड़ाई क्यों नहीं छेड़ेंगे?"

काउंटरपंच में, 11/13 अक्टूबर (http://www.counterpunch.org/zupp10112003.html)

अनुमति

इस पुस्तक में प्रयुक्त सामग्री के कॉपीराइट धारकों का पता लगाने का हर संभव प्रयास किया गया है। यदि किसी रचना का उपयोग बिना अनुमति के किया गया हो तो लेखक और संपादक क्षमा चाहते हैं और यदि किसी से परामर्श नहीं लिया गया हो तो हमें सूचित करने में प्रसन्नता होगी। निम्नलिखित प्रकाशनों से उद्धरण देने की अनुमति के लिए हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं:
डोडी बेलामी (1995) के लेख, "एकांकर: एक पूर्व सदस्य आंदोलन का पुनरावलोकन करता है," से उद्धरण, सैन डिएगो रीडर की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
मिक ब्राउन (2000) के लेख "दिव्य पतन" से उद्धरण, द डेली टेलीग्राफ सैटरडे मैगज़ीन की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
स्टीफन बटरफील्ड (1994) की पुस्तक, द डबल मिरर: ए स्केप्टिकल जर्नी इनटू बुद्धिस्ट तंत्र, से उद्धरण, नॉर्थ अटलांटिक बुक्स द्वारा प्रकाशित, कॉपीराइट © 1994 स्टीफन टी. बटरफील्ड। प्रकाशक की अनुमति से पुनर्मुद्रित।
सुसान कोहेन (2002a) के लेख, “स्वामी सच्चिदानंद, इंटीग्रल योगा इंस्टीट्यूट, योगाविले—एक उत्तरजीवी की कहानी” से उद्धरण, रिक रॉस और रॉस इंस्टीट्यूट की अनुमति से पुनः प्रकाशित।
(www.rickross.com)

लेक काउंटी (1985) के लेख, "आस्तिक आध्यात्मिक गुरु के प्रति 'समर्पण' करते हैं," से उद्धरण, लेक काउंटी रिकॉर्ड-बी की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
जॉन मार्शल (1980) के लेख, "फाइलों से पता चलता है कि जासूस ने महिला के अंतरंग शब्दों की सूचना दी थी," से उद्धरण, द ग्लोब एंड मेल की अनुमति से

पुनर्प्रकाशित।
वॉल्ट नियरि (1985) के लेख, "इनर सर्कल प्रिवी टू पार्टीज़" से उद्धरण, लेक काउंटी रिकॉर्ड-बी की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
नरसिंह पी. सिल (1998) की पुस्तक, रामकृष्ण रिविजिटेड: ए न्यू बायोग्राफी से उद्धरण, यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ अमेरिका, इंक. की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
आंद्रे वैन डेर ब्राक (2003) की पुस्तक, एनलाइटनमेंट ब्लूज़: माई इयर्स विद एन अमेरिकन गुरु से उद्धरण, मोंकफिश बुक पब्लिशिंग कंपनी की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

गर्भपात, 31, 97, 404 एंथ्रोपोसोफी, 216-7, 219 अब्राहम, 401, 427 यहूदी-विरोधी, 42, 203-5 अबू ग़रीब, 327, 333, 346 एंटीक्राइस्ट, 437 एसीआईएम (चमत्कारों का एक कोर्स), 388-9 सर्वनाश संबंधी मान्यताएँ, 137, 185, 197
एक्टन, लॉर्ड, 445 207, 285, 366, 413, 433 एडम, 427 अपोलॉजिस्ट, पंथ, 358, 393, 450 एडम्स, डगलस, 304 एप्पलव्हाइट, मार्शल, 104, 324, 416,
एडलर, 389 439 परलोक, 237; पुनर्जन्म भी देखें कुंभ युग, 107 कृषि युग, 49, 51, 114-5, 177, 309, पुरातत्व, 407
326, 330, 379-80, 410, 421 तीरंदाजी (और ज़ेन), 39, 52, 293
अहिंसा, 84 मूलरूप, 24 अहरिमन, 218 एरेन्ड्ट, हन्ना, 173, 346 एड्स, 124-5, 137, 183, 300, 303, 377, एरियोसोफिस्ट, 398-9
405 अर्जुन, 246, 295
ऐटकेन, रॉबर्ट, 172 आर्केट, रोसन्ना, 108, 129 आकाशिक अभिलेख, 216, 220 अरुणाचला, पर्वत, 24, 438 अकोंग, 113, 124, 187 आसन, 193, 266 अलया स्टिचरी, 293 एश, सोलोमन (अनुरूपता अध्ययन)
अल्कोहल, 3, 14, 38, 51, 75, 85, 96, 119, का), 154, 363
121, 124, 145, 179, 310, 411, असिमोव, इसहाक, 99
430, 449 एस्ट्रल

एल्ड्रिन, बज़, 105 शरीर/वास्तविकता, 17-8, 24, 28, 30,
अल्हबर्न, थॉमस, 149-50 111, 152-3, 179, 218, 220,
अल्का, 159, 174 232, 262, 386, 429-30 अल्बर्ट, रिचर्ड; देखें दास, राम मून नरभक्षी दास, 153, 445-
अल्फा पुरुष, 326, 328, 335, 444 6 अमरनाथ, 15 यात्रा, 429-30, 442 अम्मा (ची), 380, 392, 400 ज्योतिष, 269 अनैतिकता, 340-1 असुर, 18 एम्फ़ैटेमिन, 93 शरण, 297, 322, 367 अमृतानंद; देखें अम्मा(ची) अटैक, जॉन, 96-9, 101-2, 389 अमृतानंदमयी; देखें अम्मा(ची) नास्तिकता, 272 एमाइल नाइट्राइट, 396 अटलांटिस, 216 आनंद समुदाय, 237, 258-9, 263, ऑगस्टीन, सेंट, 198
282, 287, 382; वाल्टर्स, औम केंद्र, 86 भी देखें
जे. डोनाल्ड ऑरा, 28, 220, 386, 429, 432, 442
आनंदमय, ब्र., 278, 403 अरबिंदो, 17-23, 86, 168, 246, 262,
एंडरसन 268-9, 297, 380, 393, 399-400,
जूली, 157 423, 438
पामेला, 238 ऑशविट्ज़, 205

Avatars, 5-6, 10-11, 19-21, 26, 62, 77, Bhikshus, 114
86-7, 141, 147-8, 222, 229, 238, भूमि, 191 246-7, 294-6, 352, 369, 392, 399, द्विस्थान, 232 401-2, 410, 412, 415, 423, 438, मनोवैज्ञानिक बंधन, 29, 123, 296, 448 313-4, 358-9
आयुर्वेदिक चिकित्सा, 68 बायोफीडबैक, 82
जैव आतंकवाद, 382
बाबा बाइसेक्सुअलिटी, 70, 184, 373
मेहर, 352-7, 393, 399, 423, 434 ब्लैकमेल, 266 नीम करोली, 70-2, 74, 128, 328, ब्लैकमोर, सुसान, 269, 387, 430

356, 411 मूत्राशय नियंत्रण, 369, 437
सत्य साई, 3, 76-81, 203, 260-1, ब्लावत्स्की, मैडम, 27-8, 153, 218, 292, 298, 356, 370, 380, 238, 291, 399, 392-4, 396, 406, 423, 427, ब्लो जॉब्स, 334, 431, 434-5, 437, ब्लूप्रिंट्स, 287-8
शिरडी साईं, 77, 328 बोधिसत्व, vii, 41, 48, 70, 113, 116, उपासनी, 328, 352, 410 125-6, 175-6, 188, 360, 389, 396,
बाबाजी, 237, 246-7, 254, 264-6, 290, 401, 450-1
353, 423 बोहेम, डेबोरा बोलिवर, 51, 322,
बैकेनेलिया, 210 397, 451
बेली, डेविड और फेय, 77, 79, 298, बोहम, डेविड, 30, 32-3, 35, 221, 271,
412 372, 374, 393
बेकर, रिचर्ड, 46-9, 258, 382, 412, बॉन्डर, सानियल, 148
442-3 बोनो, सन्नी, 96, 422
Balasuriya, 201 Boomeritis, 17
बॉलरूम डांसिंग, 127 बोवी, डेविड, 371, 425
बलोनी, 231, 296, 416 ब्राह्मण, 24, 37, 76
बार्बिट्यूरेट्स, 365 ब्रेनवाशिंग, 145, 320, 340, 350,
बार्डो क्षेत्र, 179 357-9, 361-2, 423-4, 426, 433,
बेसलाइन, 123, 164, 364 440; माइंड कंट्रोल भी देखें
बेटसन, ग्रेगरी, 46, 115 ब्रांच डेविडियन; देखें कोरेश, डेविड
बीटल्स, 2, 59-64, 97, 237-8, 369-70, ब्रांड, स्टीवर्ट, 46
394, 437 ब्रैंडेन, नथानिएल, 400-1
सिर कलम करना, 249, 295, 302 ब्रेनन, बारबरा एन, 213, 229, 429
बेनेडिक्ट, 202, 314 ब्रेवर, मार्क, 104, 384
बर्कशायर, 164 ब्रोगन, पेट्रीसिया बर्क, 317
बेयरस्टीन, बैरी, 79 वेश्यालय, 2, 14, 210, 251, 295; यह भी देखें
भगवद् गीता, 32, 56, 246 वेश्यालय
भगवती, माँ जया सती (जोया), 69, ब्रंटन, पॉल, 24, 352, 354-5

72-4, 315, 356, 393-4, 400, 403- बुन्यान, पॉल, 90 4, 406, 416, 423 बर्बैंक, लूथर, 233-5
भजन, योगी, 3, 107-11, 338, 361, बर्क, एबॉट जॉर्ज, 247, 269
423-4 बरोज़
Bharati, Agehananda, 18, 149, 189- William S., 95, 115, 181
90, 230-1, 328, 330, 378 कैथरीन, 183; यह भी देखें
मोंक, 381 जेटसुनमा इंडेक्स 513

बटरफील्ड, स्टीफन, 113, 117, 121, क्लोहेसी, डेविड, 327
124, 126, 277, 279, 282, 324, क्लाउसो, इंस्पेक्टर, 122
328, 336, 377, 379, 395, 412, कोहेन, एंड्रयू, 3-4, 71, 158-75, 183,
419, 437, 451 232, 306, 312-3, 316, 322, 329,
353, 356, 371, 374, 388, 393-4,
कैडी, पीटर/एलीन, 212-3, 215, 221-396, 413, 419, 423, 425-7, 439,
2, 224, 226, 236, 380 443-4
सीज़र, जूलियस, 246 लियोनार्ड, 97 कैंपबेल, जून, 122, 188, 377 कोल्ट्रेन, जॉन, 78 कैपलान, मारियाना, 177, 378, 393-6, साम्यवाद, 133, 200, 202, 204, 245,
404, 410-1, 416, 444 290, 362, 433
कैप्रा, फ्रिटजोफ, 272 रखैलें, 198 कार्लिन, जॉर्ज, 272 स्वीकारोक्ति, 197-8, 205, 207, 360, 381-कैरोल, रॉबर्ट, 219, 240, 253, 388 2, 415 कास्टानेडा, कार्लोस, vii, 231, 414, 423, अनुरूपता, 154-5, 224, 277-9, 319,
451 324, 332, 342, 363-4, 390, 435,
जाति, 24-5, 36-7, 56, 279, 297, 346, 448
399 कन्फ्यूशियस, 92, 292
कैथोलिक धर्म, 4, 15, 197-210, 240, 277, जादूगरी, 79, 437
291, 298-9, 308-9, 316-8, 326-7, कूपर, पॉलेट, 97, 100-2, 373, 434-

336, 340, 344, 351-2, 360, 380-2, 5
391, 415, 421, 425, 435, 440, 443 क्राउन, 153-5, 220, 337, 341, 370
केसी, एडगर, 268 कोरीडन, बेंट, 95, 98, 100, 102 चाह, अजान, 190, 376 दाह संस्कार, 186 चक्र, 89, 135, 183, 442 क्रिटेंडन, जैक, 444 चैनलिंग, 28, 183, 212-4, 222, 258, क्रॉली, एलेस्टर, 98
263, 269, 388, 451 क्रूस पर चढ़ाना, 209, 292
चैपलिन, चार्ली, 31 क्रूसेड्स, 210, 434 चैपमैन, ग्राहम, 289 कनिंलिंगस, 251 चारडिन, टेइलहार्ड डी, 200, 385 कंट, 10, 252, 295, 409 चटर्जी, अरूप, 404, 406 साइक्लोप्स, 217 चेनरेज़िग, 176
चेतनानंद, 169 दा विंची, लियोनार्डो, 21-2, 267, 269, चिन्मय, 3, 86-91, 356, 392, 423 301-2, 446 हैजा, 219, 222 दा, आदि, 3-4, 77, 125, 141-57, 163, चोपड़ा, दीपक, 60, 194, 442-4 168, 220, 232, 292, 306-7, 323, चौधरी, बिक्रम, 266 328, 330, 337-8, 341, 352-3, 356, क्रिस्टोफर, मिलबोर्न, 241, 243-4 363, 371, 374-5, 394-5, 401, 416, चर्चिल, विंस्टन, 18, 246 419, 423, 426-7, 429, 431, 436, सियाल्डिनी, रॉबर्ट, 154, 334, 362-3, 365 438-9 दूरदर्शिता, 28, 149, 190, 216, 219- दलाई लामा; देखें लामा, दलाई
20 दर्शन, 19, 71-2, 128, 134, 369-70,
क्लॉस, सांता, 427-8, 447 392 क्लीज़, जॉन, 291 डार्विन, चार्ल्स, 27, 200, 218-9, 234 क्लेमेंस, पॉल, 384 दास, भगवान, 70-1, 73-5, 114-6, चतुर हंस, 243-4 119, 277, 404, 434 क्लिंटन, 384-5, 443 लामा सूर्या, 169
514 गुरुओं का पर्दाफाश

दास, राम, 69-70, 72-4, 81, 115, 127- फ्यूरस्टीन, जॉर्ज, 11, 18, 24, 118,
8, 231, 315, 367, 384, 393-4, 404, 131-2, 142, 144-5, 170, 323, 355, 411, 416 374-5, 379, 394
डेविस, रॉय यूजीन, 263 फेनमैन, रिचर्ड, 430

डेकालॉग, 206 फाइंडहॉर्न, 4, 212-5, 221-6, 287, 356,
डेकॉइस, 393-4 390
भ्रम, 105, 153, 219, 307, 320, अग्नि पर चलना, 239, 400, 443
354, 394-5, 397-8, 417, 426, 447 फ्लिन, माइकल, 102
डेमेरोल, 396 फ्लिंट, लैरी, 447
पदावनति, 154, 306 फ्रैंकन, अल, 421-2
देसाई, योगी अमृत, 4, 192-4, 333 लोबान, 218
देवास, 213 बिरादरी, 361-3
देवी, सावित्री, 399 फ्री जॉन
डेविल्स, 5, 49, 283, 301, 351, 418, 437 दा; दा, आदि देखें
धर्मा, 42, 46, 124, 126, 182-4, 232, शॉनी, 144
451 फ्रीमेसन, 27, 202-3
मधुमेह, 15 फ्रायड, सिगमंड, 389
डायनेटिक्स, 96, 99-100 मेंढक, 342-3
तानाशाह, 257, 321, 349
डिल्बर्ट, 287, 289 गैलीलियो, 405
डिल्डो, x, 144, 157, 313, 341, 396, 436 गांधी, महात्मा, 58, 83-5, 139, 237,
डायनासोर, 22, 387 260, 280, 392, 410
डायोक्लेटियन, 202 गार्बो, ग्रेटा, 31, 237
डबलडे, एबनेर, 27 गार्सिया, जेरी, 70
डॉयल, थॉमस, 200, 209, 391 गेलर, उरी, 442
सपने, 112, 244-5, 293 नरसंहार, 362, 421
ड्रुइड्स, 214 घोष, राखल, 7
दुर्गानंद, 130-1 गिन्सबर्ग, एलन, 46, 90, 115, 120, 124,
न्यायालय, 161-2 181, 258
डायकेमा, 114 गोएबल्स, जोसेफ़, 398
गोलक, 189
सम्राट, 49 गुडॉल, जेन, 392

नए कपड़े, 146, 155, 325, गोपियाँ, 32-3, 292
334 गोर्बाचेव, मिखाइल, 442
एफेबोफिलिया, 4, 396 गोस्वामी
विषुव, 268 अमित, 169, 272
एरहार्ड, वर्नर, 3, 95, 103-6, 366, विजयकृष्ण, 8
380, 383-4, 423, 434 गोविंदन, मार्शल, 265
एस्लेन, 48, 291, 390 ग्रेस्कलैंड, 238
एस्ट, 3, 104-5, 384 ग्रेटफुल डेड, 60, 62, 70
मल, 132, 221, 374 महान श्रृंखला (अस्तित्व की), 17
ग्रिफिन, मर्व, 64
फेयरबैंक्स, डगलस, 352 दहलीज का संरक्षक, 218
फेथफुल, मैरिएन, 59, 115 गुएन्थर, हर्बर्ट वी., 115, 231, 384
फैरो, मिया, 2, 60-1, 67 गुरजिएफ, 291, 419
एफबीआई, 3, 102, 303 गुरुमयी, 132, 400, 423
सामंतवाद, 49, 189, 378 हेगेलिन, जॉन, 58 अनुक्रमणिका 515

हाइकु, 45, 122 होर्गन, जॉन, 35, 39, 124, 163, 168, हकुगेन, 41-2 172, 174-5, 387 हैलिफ़ैक्स, जोन, 395-7 होस्किन्स, सिरिल; देखें रम्पा, टी. लोब-
मतिभ्रम, 1, 101, 417, 431, 446- गाया
8 ह्यूस्टन, जीन, 384-7
हनुमान, 9, 71, 384 हबर्ड, एल. रॉन, 3, 95-102, 115, 359, हरे कृष्णा, 62-3, 97, 264, 323, 380, 389, 423, 426, 434, 436; देखें
350, 356, 369, 413 भी साइंटोलॉजी से संबंधित हैं।
हार्मैन, विलिस, 388 ह्यूगनोट्स, 250 हैरिसन, जॉर्ज, 62-3, 78, 237-8, हटन, लॉरेन, 54, 57
266, 425 हक्सले, एल्डस, 31, 97
हार्वे, एंड्रयू, 126, 134, 185, 367, हाइपोथर्मिया, 429
376, 400, 415-6, 437
हसन, स्टीव, 4, 149, 196-7, 309, बेवकूफ
311, 318, 324, 342, 351, 360, करुणा, सातवां, 167, 170, 355

364, 372, 418-20 सहिष्णुता, 355, 411
हेस्टिंग्स, बैटल ऑफ़, 247-8, अनाचार, 48, 209, 248, 296, 313, 320,
हॉकेन, पॉल, 47, 213-4, 224, 373-4, 408-9, 411, 421, हेवर्ड, जेरेमी,
180-1, इंडेक्स लिब्रोरम प्रोबिटोरम, 200, हृदय गति, "रुकी हुई," 242, 428,
इनेडिया, 240, स्वर्ग, 131, 160, 232, 382, 441, पूछताछ, 202, 210,
308, 385, 405, स्वर्ग द्वार, 104, 322, 324, 365, मादक पदार्थ, 92, 375;
अल्कोहल भी देखें
416, 439 अंतर्ज्ञान, 192, 271, 275-6, 285, 290,
हेगेल, 387 293, 405 हाइजेनबर्ग, वर्नर, 103 इशरवुड, क्रिस्टोफर, 9 हेलिवेल,
टैनिस, 384
उभयलिंगी, 80, 203 जादूवाला, 79 हेरोइन, 395-6 जैगर, मिक, 46, 59, 425
हेरिगेल, यूजेन, 39 जनकानंद, राजसी, 246, 255, 273 पदानुक्रम, 17, 27,
30, 82, 111, 190, जीसस, 6, 12, 27, 73-5, 77, 81, 104,
210, 317, 324-6, 332, 341, 348, 110, 143, 161-2, 183, 205, 237-8,
356, 377-8, 393, 404, 441, 448 246-7, 253, 262, 265-6, 292, 308,
हिले, बेसिल, 271 352, 356, 369, 384, 388, 394, हिमलर, हेनरिक, 399
397, 421, 423, 426-7, 433-6, 447 हीनयान बौद्ध धर्म, 119 जेटसुनमा,
183-6, 287, 293, 308, 322, हिचेंस, क्रिस्टोफर, 189, 405 356, 371,
391, 400, 413-4, 423 हिटलर, एडॉल्फ, 4, 18-9, 166, 175, 201-2,
यहूदी, 3, 97, 158, 166, 175, 202-4, 233,
204, 246, 290, 398-9, 432 427; यह भी देखें यहूदी धर्म
हॉजसन, रोजर, 237 जोन्स होम्स, डेविड, 67 जिम, 4, 104, 150-1, 310,
356, होलोकॉस्ट, 97, 109, 111 364-5, 397, 413, 416, 419,
होमोइरोटिसिज्म, 8, 13, 72 423, 427, 433, 438-9 होमोफोबिया, 134,
140, 302, 405, 416, फ्रैंकलिन; देखें दा, आदि
442 जॉनस्टाउन, 120, 148, 156, 324-5, 345,
समलैंगिकता, 8, 28, 63, 80, 98, 130, 364-5, 382, 414, 445
180, 205, 267, 269-70, 277, 373, जोपलिन, जेनिस, 62
405 जोसेफसन, ब्रायन, 60

जॉय, डब्ल्यू ब्रुग, 223-4 कुन्ले, ड्रुक्पा, 373-5, 379, 409, 432,
जोया; देखें भगवती, मां जया सती 442
यहूदी धर्म, 197, 203 क्योसाकु, 40, 44
जंग, कार्ल, 232-3, 389
जंगल, 226, 365-6, 376 लालिच, जंजा, 74, 104, 154, 314, 321-
बृहस्पति, 111, 262, 430 2, 324, 406, 409, 434, 439
लामा
काग्य वंश, 188 दलाई, x, 46, 48, 113, 176-80,
केन, व्हिटनी, 157 182-3, 187, 190-1, 221, 236,
कैसर विल्हेम, 246 245, 297, 330, 368, 373-4,
काल फोर्स, 307 377-8, 388, 398, 405, 409,
कमला, 259 423, 442-3
कांट, इम्मानुएल, 200 कर्मापा, 116, 186-7, 297, 308,
कपलौ, फिलिप, 39, 41-3 377-8
कराओके, 3, 92, 381 लेन, डेविड, 152, 220, 232, 264, 337,
कर्म, 88, 108, 161, 173, 218, 230, 387, 418, 424, 430, 434
250, 284, 287, 294-5, 310, 415, भाषा, लोडिंग, 207 447 लीडबीटर,
चार्ल्स, 26, 28-30
केम्पटन, सैली; देखें दुर्गानंदा लेमुरिया, 216-7
करमापा लामा; लामा, करमापा लेनिन, व्लादिमीर, 104, 406 देखें
कीटिंग, चार्ल्स, 406 लेनन, जॉन, 78, 238, 386
Keech, Mrs., 285 Lenz, Frederick, 89
केरोएक, जैक, 127 लेप्रेचॉन, 384, 396, 446
खान, चंगेज़, 246 लर्नर, माइकल, 443-4
Khyenpa, Dusum; see Lama, Kar- Letterfrack school, 316-7
मापा उत्तोलन, 2, 64, 232
कोएस्टलर, आर्थर, 39, 84-5, 276, 402-3, लिफ़्टन, रॉबर्ट जे., 207

428 लिंडबर्ग, चार्ल्स, 246
को रेश, डेविड, 4, 104, 166, 351, 365, लायंस, 260, 318, 320, 386
397, 423, 433 लिसिएक्स, थेरेस ऑफ़, 199, 340
कोवाल्स्की, एड, 341, 444 लोलिता, 376
कृपालु, 4, 169, 192-5, 323, 333, 373, लोज़ोविक, ली, 394, 444
451 लुकास, जॉर्ज, 261-2
Kripalvananda, 192-3 Luciana, Sal, 156
कृष्णा लूसिफर, 262
लॉर्ड, 7, 21, 27, 32, 56, 62, 246, लाइसेंको, 234
272, 292, 352, 392, 397,
401, 438 मा, आनंद मोई, 380, 402, 423
खरगोश; हरे कृष्ण का माचो व्यवहार देखें, 40, 170
कृष्णमूर्ति, जिद्दू, 2, 26, 28-37, 78, मैकिएल, पिता, 207
138, 245, 393, 423, 441 मैडोना, 108, 238
क्रिया योग, 159, 227-9, 237-9, 247, मेज़ुमी; रोशी, माएज़ुमी देखें
257, 263-5, 290, 300, 327 माफिया, 63, 99
क्रियानंद, 237, 243, 245-8, 255-7, मैग्डलीन, मैरी, 134, 246
259-61, 263, 269, 291 मैजिक(के) 2-3, 24, 66, 78, 93, 98, 188,
कुंडलिनी, 30, 107-8, 111, 129, 142, 190, 218-9, 241, 386, 437,
451
159, 192-3, 229, 269, 277, 386 मशरूम, 75, 277 अनुक्रमणिका 517

Maharajji; see Baba, Neem Karoli Merwin, William, 117-21,
124, 337, Maharishi Mahesh Yogi, 2, 58-68, 76, 348, 379
103, 163, 230, 356, 369, 383, मेस्केलिन, 396
390, 422 मसीहा, 26, 31, 100, 136, 138, 162,
महर्षि, रमण, 23-5, 76, 159, 351-2, 398-9, 423, 427; यह भी देखें
168, 172-3, 297, 380, 399, 423, अवतार
438 माइकल एंजेलो, 21-2
महासमाधि, 253 मिडलर, बेट्टे, 298 महाशय, लाहिड़ी, 237, 246-7, 264,

मिलारेपा, 113, 377, 395
423 मिलग्राम, स्टेनली, 155, 343-5, 347-8,
मैत्रेय, 27-8, 96, 113, 126 366 मंडेला, नेल्सन, 87 मन नियंत्रण, 57, 320-1, 333, 342, मैनिचियन, 198 358-60, 362-4, 418, 420, 426, मैनसन, चार्ल्स, 97, 289, 366, 390, 432, 440; ब्रेनवाशिंग भी देखें
397, 416, 423 मिशनरी उत्साह, 308
मंत्र, 34-5, 59, 62-3, 165, 187, 229 मिशेल मराडियागा, कार्डिनल ऑस्कर रोड्री-एडगर, 129
गेज़, 201 जोनी, 115
मारिजुआना, 110, 135, 396 छेड़छाड़, 68 मरीन, 324, 440 मोना लिसा, 22 मार्पा, 395 मूनीज़, 284, 315, 318, 324, 342, 350 मार्क्स-हबर्ड, बारबरा, 150, 171 1, 356, 413-4, 418-9 मसाज, 56, 97, 109, 259 माँ हस्तमैथुन, 28, 135, 171, 180, 184, सेंटर, 228, 239, 292, 296, 300
192, 206-7, 230, 251, 334, 375, डिवाइन, 2, 9-11, 19, 72, 236, 294,
381-2, 435 392, 402, 404
माता मीरा; देखें मीरा, माता
पावर, 231, 238, 248, 255-7, 263, द (ऑरोबिंदो का), 18-23, 400,
269, 272-3, 278, 284, 287, 423 295, 369, 400, 403 विश्व, 37
दुर्गा, 235, 248, 255 माउंट कैशल, 201
Tara, 267-9, 302, 391, 400 Mudras, 178, 193
मैटेरियलाइजेशन, 28, 77-9, 394 मुहम्मद, 352, 397, 401 मात्सकिस, एफ्रोडाइट, 313 अली, 87 माया, ix, 5, 307, 418 मुक्तानंद, 3, 115, 128-32, 138, मायाई भारतीय, 407 142-3, 356, 366, 370, 393, 396, मैककार्टनी, पॉल, 61, 425 400, 416, 422-3, 438, 443, 445, मेडिसिन 448
विकल्प, 99, 221, 331 मर्फी, माइकल, 10, 48, 384, 390
एंथ्रोपोसोफिकल, 219 मुसोलिनी, 246, 257, 290
पंथों में देखभाल, 63, 197, 199, 283, मिस, कैरोलिन, 224

287, 396 मिथक, 6, 23-4, 70, 74, 99, 120, 141,
मीरा, माँ, 400, 415-6, 423 192, 217, 244-5, 292, 375, 399, मेहता,
गीता, 276, 267, 376 407, 414, 418, 436, 448, 452 मेल्टन, जे. गॉर्डन,
364
मेनिंगर फाउंडेशन, 82 नानक, गुरु, 109 मासिक धर्म, 7, 202 नैन्टेम्बो, 41
518 गुरुओं का पर्दाफाश

नेपोलियन, 21, 156, 246 पैरानॉर्मल, 79, 388, 429-31, 447
नार्सिसिज्म, 20, 142, 174 पैरासाइकोलॉजी, 2, 241, 243, 269, 297,
नारकोनॉन, 96 387, 428-30, 432
नशीले पदार्थ, 276-7, 396 पार्सनिप, 333
नरोपा, 115-7, 119-20, 126-7, 146, पास्कल, ब्लेज़, 510
181, 185, 348, 443 पासवॉक अस्पताल, 448
नाज़ी, 118, 173, 204, 233, 271, 321, फसह, 426
349, 364, 398-9, 441 पतंजलि, 64, 84
नेक्रोफिलिया, 94, 381 पैथोलॉजी, 101, 194, 224, 315, 324,
नीरो, 49, 202 349, 382, 390, 421, 436
नेटल्स, बोनी लू, 104, 324, 439 पितृसत्ता, 62, 185, 326, 406-7
न्यूमैन, थेरेसे, 240-1, 246, 297 पॉलसेन, नॉर्मन, 247-8, 261-2, 446
न्यूरोसिस, 29, 314 पावलोव, 29, 104, 170
नाइट्रस ऑक्साइड, 138-40, 396 शांतिवादी, 321, 441
नित्यानंद, 128, 131, 138, 222, 236, बाल यौन शोषण, 4, 7, 9, 72, 81,
104, 201-3,
370, 445 205, 210, 291, 396, 404, 421, 431 संस्थान, 169 लिंग, 2,
8, 10, 252, 374, 376
नॉर्मंडी, 247, 249 पर्ल्स, फ़्रिट्ज़, 134, 389
नोस्ट्राडामस, 137 पेयोट, 277
निडाहल, लामा ओले, 187, 308 पफंगस्ट, ऑस्कर, 244
निंगमा वंश, 126, 168, 182-3, भय, विचारधारा से प्रेरित, 197, 207, 309

377 पिकफोर्ड, मैरी, 352
पिकस्टोन, एच.ई.वी., 234
ओडिपल कॉम्प्लेक्स, 72 पिग्नोटी, मोनिका, 100, 452
ओलम हा-बा, 203 पिलास्र्की, डैनियल, 202
ओलकॉट, हेनरी, 27 दलाल, 111, 251
ओनो, योको, 62, 78, 87, 105, 386 पिप्सक्वीक्स, 403
सत्तामीमांसीय वास्तविकता, 430-2 साहित्यिक चोरी, 27, 418
ओफेलिया, 252, 295 पोलान्स्की, रोमन, 390
ओपेनहाइमर, जे. रॉबर्ट, 372 बहुविवाह, 139, 157, 373
ऑर्गैज़्म, 181 पूंजा, 71, 159-62, 172-3
सामूहिक यौन संबंध, x, 396 पोप, 197-99, 201, 204, 248, 327, 404
ऑर्गोन, 181 अलेक्जेंडर VI, 210
ओर्मे-जॉनसन, 65 बेनेडिक्ट XVI, 202
ऑर, लियोनार्ड, 265 जॉन XII, 198
ऑर्वेल, जॉर्ज, 345, 422 जॉन पॉल द्वितीय, 179
ओशो; रजनीश पियस IX, 198 देखें
बहिष्कृत, 56, 347, 362 पायस X, 200, 340
ओजोन, 171 पायस XI, 257
पायस XII, 200, 204-5, 207
Padmasambhava, 113 yogic, 58, 82, 107, 272
मूर्तिपूजा, 406 अश्लील सामग्री, 3, 93, 102, 126, 144,
पाम, तेनज़िन, 114, 178, 185, 309 375
पाल्युल वंश, 183 उत्तरआधुनिकतावाद, 49, 115, 326, 330,
Paramatman, 8 421
पैरानोइया, 101-2, 105, 113, 165, 194, प्रभुपाद, 62-3; हरे भी देखें
203, 284, 378, 389 कृष्ण सूचकांक 519

प्राण, 193 रामकृष्ण, 2, 6-11, 13, 72, 143, प्रणाम, 72, 273-4 153,
222, 237, 292, 300, 328, प्रैट, मोना; देखें माता, तारा 356, 376, 379,

384, 392-3, 396, प्रेमानंद, बसवा, 242, 392 399-400, 422-3, 427, 431, 435, प्रेमानंद, 264 437, 441, 447 प्रेस्ली रम्पा, टी. लोबसांग, 190, 231
एल्विस, 238, 369-70, 427 रैंड, ऐन, 400-1।
लिसा मैरी, 97; यवोन, 49, 317
प्रिसिला, 97 रैंडी, जेम्स, 64-5, 79, 137, 183, 239,
प्रेस्टन, केली, 97, 102 268, 428-30 व्यभिचार, 300, 405, 411 बलात्कार, ix, 48, 63, 80, 130, 209, 311, प्रोनाम, 273-4 313, 410 वेश्यावृत्ति, 93, 111, 135, 140, 162, रैटज़िंगर, जोसेफ, 202
180, 251, 381; वेश्यालय भी देखें; रेवेन्सक्रॉफ्ट, 399
यह भी देखें: वेश्यालय पुनर्जन्म, 265
प्रूनिंग, 292 रीव, क्रिस्टोफर, x, 98, 238, 448 साइलोसाइबिन, 396; मैजिक मश भी देखें - पुनर्जन्म, 2, 13, 21-2, 31, 62, 96,
कमरा नंबर 104, 113, 134, 139, 162, 176-7,
मानसिक, 235, 285 180-3, 185-6, 188, 244-7, 250,
स्तर, 24, 386 267, 269-70, 295, 301, 310, 392,
मनोविकार, 231, 448 415, 446-7 पुराण, 10, 268 पुनर्जागरण, 16, 230 शुद्धिकरण, 200, 202, 257 रेक्सरोथ, केनेथ, 127 प्यूरिटन, x, 409-11 रिंगो, 60, 62, 369, 371, 425 पायथन, मोंटी, 162, 288, 291, 383 रिनपोचे
दिलगो ख्येनत्से, 126, 183
क्वालुडेस, 396 कालू, 188 क्वाड्रंट्स, 220 पेनोर, 168-9, 182-3, 185-6, 414
सेरकोंग, 262
राधा, शिवानंद, 229-30, 276, 287, सोग्याल, 297
369-70 रिपर, जैक द, 432
रेनबो, 112, 244, 431 ऋषिकेश, 53, 60-1, 230, 331 राजगोपाल, 19, 22, 24 रिटर, ब्रूस, 208 राजसी; देखें जनकानंद, राजसी रामोहाल्स, 216 रजनीश, 3, 133-40, 163, 246, 276, रॉबिंस
287, 294, 306, 313, 316, 321, एंथोनी, 128, 443

338, 342, 356, 370, 376, 380, जॉन, 424
382-3, 389-90, 395, 403, 413, टॉम, 357-8, 425
416, 419, 421, 423, 426, 433, रॉडिक, अनीता, 169, 171
436 रॉनस्टैड, लिंडा, 48
Rajneeshpuram, 136-7, 366, 369, 382, Roshi
396, 403, 445 क्षेत्रफल, 38
रामा, 7, 9, 352 कटागिरी, 44
स्वामी, 2, 82-5, 287, 395, 410, माएज़ुमी, 38
423 हत्या, 42
ज़ेन मास्टर, 89 रूलेट, कैथोलिक, 205
रमैया, योगी; योगियार रूसो, जीन जैक्स, 200 देखें
520 गुरुओं का पर्दाफाश

Rubaiyat, 283 Shankaracharya, 82, 255
रुद्रानंद (रूडी), 142 शाओलिन, 183
रसेल, बर्ट्रेंड, 31 शीला, 137, 316, 382-3
रटर, पीटर, 408 शीन, चार्ली, 102
भेड़, 87, 320, 398
साडे, मार्क्विस डी, 308 शेल्ड्रेक, रूपर्ट, 170
सैडिज्म, 224, 251, 316-7, 325-7, 332-5, शिव, 10-2, 15, 77, 130, 192, 229,
344-7, 349, 361, 364, 448 399, 401
सैडोमासोकिज़्म, 340 सिद्ध, 24, 113, 129, 131, 256, 438
सागन, कार्ल, 389 सिद्धियाँ, 64, 153
साल्मोनेला, 137, 140, 403 सीगलमैन, जिम, 101, 416-7, 420
Samadhi, 8-9, 12, 73, 133, 236, 253, Sikhism, 107-9
270 सिंह, कृपाल, 262, 264 निर्विकल्प, 428 शिवानन्द, 53-4, 169, 229-30, 370,
समाया, 116, 122 423

संघ, 162, 164-5, 378-9, 381, 420, संशयवाद, 64, 78, 99, 121, 153-4,
445 219, 242, 276-7, 387, 389, 429
Sannyasis, 135, 306 Slavery, 95, 152-3, 259, 262, 354, 420,
सैंटाना, कार्लोस, 72, 89-91 446
सरकोफैगस, 237, 250 स्नाइडर, गैरी, 46, 122, 258
Sarvastivadin, 114 Socrates, 51
शैतान, ix, 5, 63, 205, 283-4, 294, 418, सोएन/सोयेन/सो-ऑन, 41, 50
420; माया सोगकु भी देखें, 41
सच्चिदानंद, 2, 11, 53-7, 125, 222, सोगेन, 41
229, 356, 444 सोग्याल, 297
सटोरी, 133, 168; समाधि स्पैंगलर, डेविड, 214 भी देखें
बलि का बकरा, 202, 316-7 रीढ़, 9, 24, 30, 192, 235, 384
स्किज़ोफ्रेनिया, 101-2, 175, 446 स्प्रिंगस्टीन, ब्रूस, 55, 89
श्लिट्ज़, मर्लिन, 430 स्टालिन, जोसेफ, 200, 202, 234, 246
शूकमैन, हेलेन, 388 स्टार ट्रेक, 183
शुओन, फ्रिथजॉफ़, 401-2 स्टीगर, ब्रैड, 264
साइंटोलॉजी, viii, 3, 95-102, 104, 106, स्टाइनर, रुडोल्फ, 215-20, 399
115, 156, 207, 273, 350, 356, स्टोएन, टिम, 439 359, 373, 416,
418, 434-6, 448, स्टोनहेंज, 246 452 स्टूजेस, तीन, 117
स्क्रॉफ़ुला, 247 स्ट्राविंस्की, इगोर, 31
स्क्रूज, 147 आत्महत्या, 34, 120, 266, 311-2, 364-6,
सीगल, स्टीवन, 182, 186, 189 373, 393; जॉनस्टाउन भी देखें
सेलिगमैन, मार्टिन, 312 अधीक्षक की भूमिका (स्टैनफोर्ड में)
सेंजर, 218 जेल अध्ययन), 307, 319-21, 325,
Shabd yoga, 220, 262, 387 331, 334, 341, 344, 379
शेक्सपियर, विलियम, 21, 250-3, 270, सुपरट्रैम्प, 237
295-6 सुरमांग मठ, 112, 114
शक्ति, 77, 143 सटक्लिफ, स्टुअर्ट, 67

शमन, 179, 185 सुजुकी
Shankar, Ravi, 59, 237 D. T., 27, 39, 41, 43, 127
शंकरा, 13, 82, 255 शुनर्यु, 45-6, 50, 123 अनुक्रमणिका 521

स्वान, इंगो, 430 उस्ताशी, 204 स्वेज़, पैट्रिक, 97
SYDA, 129, 131-2; मुक्तन-वज्र भी देखें
आप, गुरुमाई गार्ड, 122 भी देखें
सिफिलिस, 252, 296 नरक, 308-9, 411
Vajradhatu, 119, 126, 187
Taimni, I. K., 277 Vajrayana Buddhism, 117, 119, 121, Tantra, 3, 10, 35, 55, 75, 107-8, 111, 125-6, 178, 277, 336
115, 117, 122, 134, 178, 277, 409 वैन डेर ब्राक, आंद्रे, 4, 160, 162-7,
Targ, Russell, 218 169, 306-7, 312-3, 329, 413, Tassajara, 46-8 419 Tate, Sharon, 390 Van Houten, Leslie, 289-90 Taylor, James, 129 Varela, Francisco, 180-1 Tendzin, Ozel, 116, 124-6, 183, 187, Vatican, 200, 202, 204, 335, 372
451 वॉन, फ्रांसिस, 371, 373, 387-8
टेरेसा, मदर, 208, 340, 404-6 वेद, 10, 62, 64, 96, 328, 356 थैंक्सगिविंग, 172, 274 शाकाहार, 61, 275, 398, 424-6 थियोसोफी, 2, 26-8, 30-1, 37, 217-8, वेलिकोव्स्की, इमैनुएल, 220
238, 270, 398, 418 Vibhuti, 77, 79, 394
थेरवाद बौद्ध धर्म, 51 विपश्यना, 127 थीटन, 96, 434 विष्णु, 399 थोरो, 281 विश्वामित्र, 72 थुरमन, 46, 442-3, 449 विवेक, 134, 246, 395 ति; देखें नेट्टल्स, बोनी लू विवेकानन्द, 2, 6, 8, 11-6, 22-3, 143, तिगुनाइत, राजमणि, 83-5 153, 230, 237, 380, 422-3, 437 टिक्कुन, 443 वॉन डुलिंगर, जे. एच., 399 तिलोपा, 117 वूडू, 100 तीर्थ, शंकराचार्य भारती वायुरिज्म, 134
कृष्णा, 255
यातना, 68, 134, 189, 308, 360, 362 वेकफील्ड, मार्जरी, viii, 95, 98,

100, अधिनायकवाद, 173, 257, 345, 358-9, 102, 273, 339, 359, 416
391 वाल्डोर्फ स्कूल, 215-7
टाउनशेंड, पीट, 352, 354 वालेस, एमी, viii, 414, 451 ट्रैवोल्टा, जॉन, 96-7, 436 वालरस, एसआरएफ, 292, 302, 325 ट्रिमर, शेली, 236 वाल्श, रोजर, 23, 387-9, 405 ट्रुंगपा, चोग्याम, 3, 112-27, 163, वाल्टर्स, जे. डोनाल्ड, 236-7, 248, 257-
168, 178, 181, 183, 187-8, 231, 60, 263, 382, 391, 403; यह भी देखें
279, 282, 310, 318, 322, 336-7, Kriyananda
348, 356, 366, 377-9, 384, 393-6, वाट्स, एलन, 39, 46, 127, 141
412-3, 416, 419, 422-3, 443, 445, वीवर, डेनिस, 237
451 वीज़र, 55
तुलकुस, 112-3, 115, 182-4, 186, 188-9, वेलवुड, जॉन, 115, 384, 394
244-5, 378, 414-5, 431 पश्चिम, लुई जोल्योन, 365
ट्विचेल, पॉल, 264 व्हिटसन, जूडिथ स्कच, 388
वेश्यालय, 14, 73, 295, 396; देखें
यूनिसेफ, 302-3, 385 और वेश्यावृत्ति उपनिषद, 34, 232 विक्का, 407
522 गुरुओं का पर्दाफाश

विल्बर, केन, 4, 44, 130, 166-7, 171-2, युगास, 268
181, 183, 232, 269, 341, 350, युक्तेश्वर, 227-8, 237, 246-7, 268, 353, 366, 376, 383-4, 387, 389, 423, 434 393, 401-2, 414, 427, 442-4
और आत्महत्या/पत्नी को छोड़ना, 310-12, ज़ाज़ेन, 39, 363
359 ज़ेन, 2, 27, 38-52, 104, 114, 139, 167-
और वेलिकोव्स्की, 220 8, 172, 190, 293, 322, 330, 338, ब्रेन-डेड, 428
356, 363, 379, 382, 396-7, 450-1 का ज्ञानोदय, 168, 231, 300,

ज़िम्बार्डो, फिलिप, 305
374-5, 432, 449 स्टैनफोर्ड जेल अध्ययन, vi, 305-
एसीआईएम पर, 388 321, 324-5, 332-4, 341-9, आदि दा पर, 141-2, 147-53, 155-6 358-9, 361, 364, 366, 423, एंड्रयू कोहेन पर, 167, 169-70, 441
175 “वयस्क सहमति” में, 319
अरबिंदो पर 17-8 और हाई स्कूलों पर 347-8, ब्रेनवाशिंग पर 356-7 और "सीखी हुई लाचारी" पर, चोग्याम ट्रुंगपा पर 120-1, 312-3, 339
125 खराबी, 310, 318-9
बकवास को हराने वाले ज़ेन पर, 39-40 व्यक्तिहीनता पर, 306 गीक्स पर, 181 "अच्छे" गार्डों पर, 334-6, महर्षि पर, 23-4 345-6, 349 हस्तमैथुन पर, 334 से रिहाई/पैरोल पर, 307, मदर टेरेसा पर, 405 324 रुडोल्फ स्टेनर पर, 219-20 शक्तिहीनता पर, 307
वायरटैपिंग, 137-8, 140, 382 विशेषाधिकार, 306
चुड़ैलें, 63, 384 सम्मान में, 305, 316, 319,
डायन-शिकार, 202, 210, 362, 434 324, 327, 332, 344,
346-7
Xenu/Xemu, 96, 100, 426 रोल-प्लेइंग इन, 320-1, 345
सैडिज्म इन, 316-7, 325-7,
यशोधरा, 287 332-5, 344-7, 349
योडा, 262 “धीमी गति से अवरोहण” में, 343
योगानंद, परमहंस, viii, 4, 62, “उपद्रवी” में, 317,
102, 159, 161, 227-303, 326, 353, 325, 344 392, 400, 402, 418, 421-3, 426-7,
434, 445; क्रिया योग और परफ्यूम सेंट, 241-2, 297 भी देखें
और थेरेसे न्यूमैन, 240-1,
246, 297
आहार संबंधी सलाह, 275
शवों का संरक्षण, 253-4
हरम, 296-7
नियमों और रचनात्मकता पर, 280

246-7 की भविष्यवाणियाँ
धड़कन रोक देने वाली तरकीब, 242, 297
पुनर्जन्म, 246-7
योग्याकार्ता, 264-5

के बारे में

लेखक

जॉफ्री डी. फाल्क (www.geoffreyfalk.com) द साइंस के लेखक हैं।
आत्मा के बारे में: चेतना और वास्तविकता की संरचना पर,
“नॉर्मन आइंस्टीन”: केन विल्बर और हिप का विघटन
लाइक मी: इयर्स इन द लाइफ ऑफ ए “पर्सन ऑफ हेयर”। उन्होंने मैनिटोबा विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और भौतिकी का अध्ययन किया। इसके बाद, उन्होंने एक बेहतरीन कंप्यूटर प्रोग्रामर के रूप में अपनी पहचान बनाई। वर्तमान में वे अपना समय लेखन और सॉफ्टवेयर विकास के बीच बांटते हैं।
(www.crmfrontiers.com), और संगीत रचना (www.myspace)
.com/geoffreyfalk).